रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 5

चमक

कुरान की बुद्धिमता और आध्यात्मिकता पर विचार

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रह:

भाग 5

चमक

कुरान की बुद्धिमता और आध्यात्मिकता पर विचार

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

TUGHRA BOOKS

न्यु जर्सी

11 10 09 08 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1873-1960।

[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]

ग्लेम्स: कुरानिक ज्ञान और आध्यात्मिकता पर चिंतन / बेदिउज्जमां सईद नूरसी; हुसैन अकारसू द्वारा अनुवादित।

पी. सेमी.

सूचकांक शामिल है.

आईएसबीएन 978-1-59784-132-0 (कपड़ा)

1. कुरान - आलोचना, व्याख्या, आदि। 2. इस्लाम - प्रार्थनाएँ और भक्ति। I. अकारसू, हुसैन। II. शीर्षक।

BP252.S86213 2008बी

297.8'3--डीसी22

2008050107

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

सईद नूरसी और रिसाले-ए नूर ix

पहली चमक

पैगम्बर योना की प्रार्थना के साथ ईश्वर की शरण लेना 3

दूसरी चमक

बीमारियाँ और पैगंबर अय्यूब की प्रार्थना के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ की तलाश ... 11

तीसरी चमक

सब कुछ नाशवान है, सिवाय ईश्वर और उसे प्रसन्न करने वाले अच्छे कर्मों के....23

चौथी चमक

सुन्नत का राजमार्ग 33

पांचवीं और छठी झलक

(क्रमशः 11वें और 29वें ग्लेम्स में शामिल) 44

सातवीं चमक

सूरत अल-फ़तह के अंत में भविष्यवाणियाँ ....

47 एक अनुलेख 54

आठवीं चमक

(सिक्क-ए-तस्दिक़-ए- गायबी के भाग के रूप में प्रकाशित)................................. 59

नौवीं चमक

(अन्य पुस्तक में शामिल) 59

दसवीं चमक

(अनुवाद में शामिल नहीं) 59

ग्यारहवीं चमक

सुन्नत की सीढ़ी और बीमारियों का मारक
धर्म में नवीनताएँ 63

बारहवीं चमक

ईश्वर द्वारा प्रदान किया जाने वाला पोषण सात स्तर
आकाश और पृथ्वी का 83

तेरहवीं चमक

शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की शरण लेने का अर्थ और बुद्धिमता.....95

चौदहवीं चमक

हदीस का अर्थ, “पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है।” क्लोक के लोग बसमाला का
अर्थ, मूल्य और रहस्य 125

पंद्रहवीं चमक

(रिसाले-ए-नूर में शामिल पुस्तकों की 'विषय-वस्तु' से मिलकर) 140

सोलहवीं चमक

संतों की भविष्यवाणियों के सच होने की शर्तें सबसे अधिक
वर्तमान में मुसलमानों के सामने तात्कालिक समस्या मुक्ति और सफलता की उम्मीद
सर्वशक्तिमान ईश्वर से की जानी चाहिए, ईश्वर के दूत की दाढ़ी के बालों का दौरा, गर्म और
काले कीचड़ भरे पानी के सोते में सूर्य का अस्त होना, धुल-क़रनैन द्वारा बनाया गया
अवरोध और गोग और मागोग, अदृश्य की पाँच चीज़ें 143

सत्रहवीं चमक

इस्लामी विचार, विश्वास, विश्वदृष्टि से संबंधित महत्वपूर्ण नोट्स,
और कार्रवाई 159
परिचय 159

अठारहवीं चमक

(सोज़लर [शब्द] के अंत में 'लेमा'ट' के रूप में प्रकाशित) 191

उन्नीसवीं चमक

मितव्ययिता पर 195

बीसवीं चमक

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर 209

इक्कीसवीं चमक

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर 225

बाईसवीं चमक

सांसारिक लोग लगातार सैद नूरसी के परलोक में हस्तक्षेप क्यों करते हैं? क्या सैद नूरसी का लक्ष्य अपने लिए सत्ता और सामाजिक स्थिति सुरक्षित करना है? कुछ स्थानीय अधिकारियों द्वारा क्रूर व्यवहार के उत्तर 239

तेईसवीं चमक

प्रकृति पर या प्रकृतिवादी नास्तिकता का खंडन 251

चौबीसवीं चमक

महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक पर मुस्लिम महिलाओं के साथ एक “बातचीत” 275

उन महिलाओं के साथ “बातचीत” जो मेरी विश्वासी बहनें हैं आख़िरत का 280

पच्चीसवीं चमक

बीमार लोगों के लिए पच्चीस उपचार 289

छब्बीसवीं चमक

बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना 313

सत्ताईसवीं चमक

(तारीख-ए-हयात [सैद नूरसी की जीवनी] में शामिल) 369

अट्ठाईसवीं चमक

पारिस्थितिकी तंत्र और संतुलन में मक्खियों का स्थान कुछ
वायु तत्व के पहलू दिव्य वाणी पर चर्चा क्यों
कुरान कहता है कि लोहा और मवेशी ऊपर से भेजे गए हैं
अच्छे कर्मों में तुरंत पुरस्कार मिलता है, और बुरे कर्मों में तुरंत दंड मिलता है स्पष्ट अर्थ के
नीचे छिपा हुआ इच्छित अर्थ सोने का समय ईश्वर का आशीर्वाद पुकारने पर

और शांति पैगम्बर मुहम्मद पर हो अस्तित्व या सत्ता की पारलौकिक एकता की व्याख्या धार्मिक त्यौहारों पर हमें क्या करना चाहिए शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा और उसके कुछ प्रलोभनों पर अल्प जीवन के दौरान अविश्वास के लिए न्याय कैसे चिरस्थायी दंड हो सकता है जासूसी करने वाले जिन्न और बुरी आत्माओं और स्वर्ग से उनके निष्कासन पर 373

एक बहुत ही मूल्यवान, महत्वपूर्ण बिंदु 389
एक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु 390
“यह भी अच्छा है” 393
अस्तित्व की पारलौकिक एकता के सिद्धांत के बारे में
(वहदत अल-वुजूद) 395

उनतीसवीं चमक

ईश्वर की असीम महानता पर विचार 409

तीसवीं चमक

भगवान के छः नामों के बारे में जिनका व्यापक प्रभाव है
अभिव्यक्तियाँ.. 427

एक प्रार्थना 497
सूचकांक 517
ईश्वर के नामों और गुणों की सूची 535

सईद नूरसी और रिसाले-ए नूर

S नूरसी (1877-1960) की उपलब्धियाँ, व्यक्तित्व, चरित्र और निरंतर प्रभाव उन्हें बीसवीं सदी का एक महत्वपूर्ण मुस्लिम व्यक्ति बनाते हैं। इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के सबसे प्रभावी और गहन प्रतिनिधि, उन्होंने अपना जीवन इस्लाम के प्रति प्रेम और जोश से भरा हुआ बिताया, तर्क के आधार पर एक बुद्धिमान और मापा हुआ सक्रियता का अनुसरण किया और कुरान और पैगंबर के उदाहरण का अनुसरण किया। उनके द्वारा अपनाए गए उच्च आदर्श और दुनिया और अपने समय के साथ उनकी गहरी परिचितता के साथ-साथ उनकी सादगी, तपस्या, कोमलता, निष्ठा, शुद्धता, विनम्रता और संतोष के बारे में पहले ही बहुत कुछ कहा और लिखा जा चुका है।

सईद नूरसी वैश्विक संकट के दौर में जी रहे थे। भौतिकवाद विजयी था, साम्यवाद व्यापक था, और मुसलमानों से इस्लाम को अस्वीकार करने का आग्रह किया जा रहा था।

पश्चिम की वैज्ञानिक और सैन्य जीत से स्तब्ध और आधुनिक विचारों से प्रभावित होकर, मुसलमानों को अपनी जड़ों और कभी-कभी अपने विश्वास से जुड़ाव खोने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा था। हालाँकि, सईद नूरसी ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें समग्र पुनरुत्थान की प्रबल आशा जगाई। उनके लेखन ने इस्लाम की सच्चाई को दिखाया और बढ़ते हुए विचलन का विरोध किया। ईश्वर पर भरोसा करते हुए और इस्लाम की सच्चाई में अपने दृढ़ विश्वास के साथ, और मुस्लिम दुनिया के भविष्य के बारे में अपनी शक्तिशाली आशा से प्रेरित होकर, उन्होंने इस्लाम का बचाव किया और एक नई पीढ़ी को आगे बढ़ाने की कोशिश की जो इस्लाम का सही प्रतिनिधित्व करेगी।

सम्पूर्ण मुस्लिम जगत के साथ-साथ उसके लोगों की आहों और विलापों को व्यक्त करते हुए विश्वास, आशा और आकांक्षाओं के बारे में उन्होंने कहा:

एक्स चमक

> मैं अपने दुखों को सह सकता हूँ, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों पर आने वाली विपत्तियों से उत्पन्न दुखों ने मुझे कुचल दिया है। मैं मुस्लिम दुनिया पर पड़ने वाले हर आघात को पहले अपने दिल पर पड़ने वाले आघात के रूप में महसूस करता हूँ।
>
> इसीलिए मैं इतना हिल गया हूँ.... अस्सी साल से ज़्यादा की ज़िंदगी में मैंने दुनियावी सुख नहीं चखा है। मेरी ज़िंदगी जंग के मैदानों, जेलों या दूसरी तकलीफ़देह जगहों पर गुज़री है। उन्होंने मेरे साथ एक अपराधी जैसा व्यवहार किया है, मुझे एक शहर से दूसरे शहर निर्वासित किया है, मुझ पर लगातार नज़र रखी है। ऐसा कोई उत्पीड़न नहीं हुआ है जिसका मैंने स्वाद न चखा हो, ऐसा कोई उत्पीड़न नहीं हुआ जिसका मैंने सामना न किया हो। मुझे न तो जन्नत की परवाह है और न ही नर्क से डर। अगर मैं अपने देश के लोगों की आस्था को सुरक्षित देखूँगा, तो मुझे नर्क में जलने की भी परवाह नहीं होगी, क्योंकि जब मेरा शरीर जल रहा होगा, तो मेरा दिल गुलाब के बगीचे में जलने जैसा होगा। (तारीहचे-ए हयात [जीवनी], नेसिल, इस्तांबुल: 1996, खंड 2, पृष्ठ 2206)

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का उपयोग युवा नास्तिकों को पैदा करने के लिए किया जा रहा था और शून्यवाद व्यापक था; जब ऐसी चीजें सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर की जा रही थीं; और जब विरोधियों को सताया जा रहा था, तब सईद नूरसी ने लोगों के पुनरुत्थान के लिए काम किया, उन्हें आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रशिक्षण भी दिया।

कई समकालीनों ने स्पष्ट रूप से या मौन रूप से उन्हें बीसवीं सदी के तुर्की या यहां तक कि मुस्लिम दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण विचारक और लेखक के रूप में स्वीकार किया। इसके बावजूद और एक नए इस्लामी धार्मिक और बौद्धिक पुनरुत्थान के उनके नेतृत्व के बावजूद, वे ईश्वर के एक विनम्र सेवक बने रहे। उनके जीवन ने विनम्रता की उनकी समझ को दर्शाया: "प्रसिद्धि की इच्छा दिखावा और दिखावे के समान है, एक 'जहरीला शहद' जो हृदय की आध्यात्मिक जीवंतता को बुझा देता है।

सईद नूरसी ने मुस्लिम दुनिया की लंबे समय से चली आ रही "बीमारियों" का निदान किया और सबसे प्रभावी इलाज की पेशकश की। कुरान और सुन्ना (पैगंबर के तरीके या परंपराओं) के साथ-साथ इस्लामी परंपरा और प्राकृतिक घटनाओं (ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के संकेत माने जाते हैं) पर अपनी गतिविधि को आधार बनाते हुए, उन्होंने क्रमशः इस्लाम के स्तंभों को साबित करने; विश्वास, पूजा, नैतिकता और अच्छे आचरण की आवश्यकता; और समकालीन मुसलमानों के सामने आने वाले कुछ सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी की जीवन कहानी

ओटोमन काल में

सईद नूरसी का जन्म 1877 में पूर्वी अनातोलिया के बिटलिस के नूर्स में हुआ था और उन्होंने जिले के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों से सामान्य मदरसा (पारंपरिक) शिक्षा प्राप्त की थी।

धार्मिक स्कूल) शिक्षा प्राप्त की, जब वे चौदह वर्ष के थे। उन्होंने जल्द ही अपने शिक्षकों को पीछे छोड़ दिया और बेदिउज्जमां (युग का आश्चर्य) की उपाधि प्राप्त की। यह मानते हुए कि आधुनिक विज्ञान और तर्क भविष्य का मार्ग है, उन्होंने धर्मनिरपेक्ष स्कूलों में धार्मिक विज्ञान और धार्मिक स्कूलों में आधुनिक विज्ञान पढ़ाने की वकालत की।

13 अप्रैल, 1909 को विद्रोह के बाद, वह उन कई विद्वानों में से एक थे जिन्हें अशांति भड़काने के लिए अंधाधुंध तरीके से गिरफ्तार किया गया और कोर्ट मार्शल किया गया। हालाँकि, जब वह कुछ हद तक शांति बहाल करने में कामयाब रहे, तो उन्हें बरी कर दिया गया।

पूर्वी अनातोलिया लौटकर उन्होंने सिखाया कि इस्लाम सरकार में स्वतंत्रता की अनुमति देता है और तानाशाही को अस्वीकार करता है। बाद में उन्होंने इन भाषणों को मुनाज़रत (चर्चा) में संग्रहित किया।

1911 में, दमिश्क की उमय्यद मस्जिद में उपदेश देते हुए, उन्होंने कहा कि निराशा की वृद्धि, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सच्चाई की कमी, युद्धप्रियता, विश्वासियों के बीच संबंधों की अनदेखी, व्यापक निरंकुशता और अहंकार के कारण मुसलमान पराजित हो रहे हैं। फिर उन्होंने अपना इलाज पेश किया: आशा, सच्चाई, भरोसेमंदता, आपसी प्रेम, परामर्श, एकजुटता और इस्लाम के अनुसार स्वतंत्रता। इन पर निर्माण करते हुए, उन्होंने जोर देकर कहा कि इस्लाम में निहित सच्ची सभ्यता दुनिया पर हावी होगी।

पूर्वी अनातोलिया के वान में एक विश्वविद्यालय के लिए नए सुल्तान से सहायता लेने के लिए इस्तांबुल लौटते हुए, उन्होंने अंततः पर्याप्त धनराशि प्राप्त की - 19,000 स्वर्ण लीरा। दुर्भाग्य से, विश्वविद्यालय के पूरा होने से पहले ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, सईद नूरसी ने कोकेशियान मोर्चे पर और पूर्वी अनातोलिया में स्वयंसेवकों की एक रेजिमेंट की कमान संभाली। कमांडरों ने उनकी वीरता की प्रशंसा की। उन्होंने युद्ध के दौरान कुरान की टिप्पणी, इशारत अल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत) के अपने प्रसिद्ध परिचय को (अपने छात्रों को) लिखवाया।

अंततः पकड़े जाने के बाद, उन्होंने उत्तर-पश्चिमी रूस के कोस्त्रोमा में कैदियों के शिविर में दो साल से अधिक समय बिताया। रूसी क्रांति के दौरान, सैद नूरसी भाग निकले और इस्तांबुल लौट आए। पदक प्राप्त करने और सभी सरकारी नियुक्तियों को अस्वीकार करने के बाद, वह सेना की सिफारिश पर दार अल-हिकमत अल-इस्लामिया (धार्मिक अकादमी) में शामिल हो गए। जब साम्राज्यवादी यूरोप ने ढह चुके ओटोमन राज्य पर आक्रमण किया, ताकि वह जो कुछ भी कर सकता था, उसे हड़प सके, तो सैद नूरसी ने इस्तांबुल में ब्रिटिश उपस्थिति और तुर्की के आक्रमण का विरोध किया।

1922 में, अठारह आधिकारिक निमंत्रण प्राप्त करने के बाद, सईद नूरसी अंकारा गए और ग्रैंड नेशनल असेंबली में उनसे मुलाक़ात हुई।

19 जनवरी, 1923 को उन्होंने असेंबली में एक प्रभावशाली भाषण दिया जिसमें धार्मिक दायित्वों के पालन के महत्व पर जोर दिया गया। आठ महीने बाद वे वैन चले गए और प्रार्थना और शिक्षण के लिए खुद को समर्पित कर दिया।

तुर्की गणराज्य में

बहु-जातीय, बहु-धार्मिक ओटोमन राज्य के पतन और तुर्की स्वतंत्रता संग्राम के बाद, तुर्की के नए गणराज्य की स्थापना हुई (1923)। गणतंत्र की स्थापना के बाद 1930 के दशक के अंत तक की अवधि में बड़ी संख्या में सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधार लागू किए गए। अंततः, गणतंत्रवाद, राष्ट्रवाद, लोकलुभावनवाद, राज्यवाद, धर्मनिरपेक्षता और क्रांति (अर्थात राज्य और समाज में निरंतर परिवर्तन) के सिद्धांतों को नए तुर्की का मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक सिद्धांतों के रूप में "आधिकारिक रूप से" स्वीकार किया गया।

1925 में जब दक्षिण-पूर्वी तुर्की में विद्रोह हुआ, तो सईद नूरसी ने विद्रोहियों के समर्थन के आह्वान को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि मुसलमानों को एक-दूसरे से नहीं लड़ना चाहिए और कुछ अपराधियों के लाभ के लिए कई निर्दोष लोग मारे जाएँगे। हालाँकि, लोगों पर उनके प्रभाव के कारण, सरकार ने उन्हें दक्षिण-पश्चिमी अनातोलिया के बुरदुर में निर्वासित कर दिया, जहाँ उन्हें निगरानी में रखा गया। फिर उन्हें बर्ला भेजा गया, जो बर्दुर के उत्तर-पश्चिम में स्थित इस्पार्टा की सीमाओं के भीतर पहाड़ों से घिरा एक दूर-दराज का गाँव है।

हालाँकि, उन्हें ईश्वर की सर्वव्यापकता और उनके प्रति पूर्ण समर्पण में सच्ची सांत्वना मिली। रिसाले-ए-नूर संग्रह (प्रकाश के पत्र), शब्द और पत्र की मूल रचनाएँ बारला में लिखी गई थीं। हाथ से बनाई गई प्रतियाँ जल्द ही पूरे तुर्की में प्रसारित की गईं।

1935 में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और एस्कीशेर क्रिमिनल कोर्ट में उनके मुक़दमे की पूरी अवधि के दौरान वे अपने 125 छात्रों के साथ ग्यारह महीने तक जेल में रहे। हालाँकि उन्होंने हमेशा विद्रोह और सार्वजनिक शांति और व्यवस्था के उल्लंघन का विरोध किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि समाज के हित में भी किसी व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता, लेकिन उन पर सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट करने का आरोप लगाया गया। जब उनसे रिपब्लिक के बारे में उनकी राय पूछी गई, तो उन्होंने जवाब दिया: "मेरी जीवनी, जो आपके हाथों में है, यह साबित करती है कि आप में से किसी के भी जन्म से पहले मैं एक धार्मिक रिपब्लिकन था।" ग्यारह महीने की हिरासत के बाद, उन्हें बरी कर दिया गया।

अपनी रिहाई के बाद, 1936-1943 तक, उन्होंने कस्तमोनू (तुर्की के उत्तरी तट के पास काला सागर क्षेत्र में एक छोटा सा शहर) में सात साल का निर्वासन झेला। इन वर्षों के दौरान, उन्होंने रिसाले-ए-नूर का एक बड़ा हिस्सा लिखा ।

1943 में डेनिज़ली क्रिमिनल कोर्ट में उनके साथ उनके 126 छात्रों पर मुकदमा चलाया गया

इस्तांबुल में गुप्त रूप से ईश्वर के अस्तित्व पर एक ग्रंथ छपवाने के लिए मुकदमा चलाया गया। सईद नूरसी पर एक सूफी संप्रदाय बनाने और एक राजनीतिक समाज का आयोजन करने का आरोप लगाया गया था। एक बार फिर उन्हें 1944 तक हिरासत में रखा गया, इस दौरान उन्होंने अन्य कैदियों को पढ़ाया और रिसाले-ए नूर के कुछ हिस्सों का निर्माण किया। अंततः उन्हें बरी कर दिया गया लेकिन उन्हें एक बार फिर आंतरिक निर्वासन के अधीन किया गया, इस बार मध्य तुर्की के अफ्योन में एमिरदाग में।

1948 में उनके और उनके 53 छात्रों के खिलाफ अफ्योन क्रिमिनल कोर्ट में एक नया मामला खोला गया और उन्हें अफ्योन जेल में 20 महीने की सजा सुनाई गई। हालांकि, 1956 में उन्हें और उनके छात्रों को सुप्रीम कोर्ट ने निर्दोष करार दिया।

अपनी रिहाई के बाद, वह कुछ समय के लिए एमिरदाग, इस्पार्टा, अफ्योन, इस्तांबुल और अन्य जगहों पर रहे। 1950 में, बहुदलीय प्रणाली शुरू की गई और धर्म पर प्रतिबंधों में ढील दी गई। इसके बाद सईद नूरसी को केवल एक बार 1952 में गिरफ्तार किया गया, जब उन पर गाइड फॉर यूथ के प्रकाशन के लिए मुकदमा चलाया गया था।

उन्हें सर्वसम्मत निर्णय से बरी कर दिया गया।

23 मार्च, 1960 को उरफा में बेदीउज्जमां की मृत्यु पर कोरोनर ने उनकी संपत्ति एक साधारण वस्त्र और 20 लीरा निर्धारित की। उन्होंने इस दुनिया को पूरे सम्मान, गरिमा और जीत के साथ छोड़ा। उनकी रचनाएँ, इस्लाम और मानवता के इस नायक की असली विरासत, 6,000 पन्नों का रिसाले-ए-नूर संग्रह, अत्यधिक प्रभावशाली है और ईश्वर की ओर वापस जाने के लिए हमारा मार्गदर्शन करने वाला एक प्रकाश स्तंभ है।

रिसाले-ए नूर

सईद नूरसी के दृष्टिकोण से मुसलमानों की समस्याएं

रिसाले-ए नूर सईद में नूरसी ने मुस्लिम दुनिया के विघटन का कारण बताया है।

गिरावट को विश्वास की नींव के कमज़ोर होने के रूप में देखा जा सकता है। वैज्ञानिक भौतिकवाद और नास्तिकता के निरंतर हमलों के साथ, इस कमज़ोरी को सैद नूरसी ने मुस्लिम दुनिया पर मंडरा रहे इनकार और संदेह के एक बड़े बादल के रूप में देखा।

इसे बेअसर करने के लिए, उन्होंने यह निर्णय लिया कि जब दुनिया में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के तहत अंतरात्मा या विश्वास और विचार की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया गया, तो इस्लाम अब भौतिक " जिहाद" की मांग नहीं करता, उन्होंने " **कुरान के हीरे जैसे सिद्धांतों के साथ शब्द का** जिहाद " किया, जिसका उद्देश्य इस्लाम को उसके शुद्ध विश्वास की नींव से पुनर्निर्मित करके विश्वास को मजबूत करना था।

उनके समय में और हमारे समय में, ईश्वर और पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के प्रति अज्ञानता, धार्मिक आदेशों की अनदेखी, उदासीनता

दोनों दुनियाओं में समृद्धि की इस्लामी गतिशीलता और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान की अज्ञानता मुस्लिम पिछड़ेपन के प्रमुख कारण थे। उन्होंने कहा कि मुसलमान केवल आधुनिक वैज्ञानिक और धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवस्थित विचार के माध्यम से इस पिछड़ेपन से बच सकते हैं, और केवल सच्चा ज्ञान प्राप्त करके ही खुद को भटकाव से बचा सकते हैं।

अज्ञानता मुस्लिम गरीबी, आंतरिक संघर्ष और अन्य समस्याओं का स्रोत थी। इस्लाम की सच्चाई की अज्ञानता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अज्ञानता के साथ मिलकर, विशाल बंजर मैदानों और मुसलमानों की गरीबी का कारण बनी।

सईद नूरसी ने अपनी पुस्तक सुनुहाट ("**प्रेरणा**") **और** लेमीत के ग्रंथ ("प्रेरणाओं का ग्रंथ") में ओटोमन पतन की व्याख्या निम्नलिखित शब्दों में की है
सोज़लर ("शब्द") के अंत में "ग्लिम्स") :

> नियति ने यह विपत्ति इसलिए आने दी क्योंकि हमने इस्लाम के आदेशों का पालन नहीं किया। सर्वशक्तिमान निर्माता चाहता था कि हम प्रतिदिन निर्धारित प्रार्थना करें, जो हमें चौबीस घंटे के दिन में से केवल एक घंटे के लिए ही व्यस्त रखे। लेकिन हमने ऐसा करने में लापरवाही बरती। बदले में, हमें चार साल के प्रशिक्षण, परेशानियों और निरंतर लामबंदी के अधीन करके, उसने हमें एक तरह की प्रार्थना करने के लिए मजबूर किया। वह चाहता था कि हम अपनी शारीरिक आत्माओं को साल में एक महीने उपवास करने के लिए मजबूर करें, लेकिन हमें उन पर दया आ गई।
>
> बदले में उसने हमें चार साल तक रोज़ा रखने को कहा। वह चाहता था कि हम उसके दिए हुए माल का चालीसवाँ हिस्सा ज़रूरतमंदों और गरीबों में बाँट दें, लेकिन हम कंजूस थे। बदले में उसने हमसे कई सालों की जमा की हुई ज़कात छीन ली। वह चाहता था कि हम अपनी ज़िंदगी में एक बार हज पर जाएँ, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया। बदले में उसने हमें चार साल तक एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर दौड़ाया।

इसी समय, वे मुस्लिम बुद्धिजीवी, जिनसे आम जनता मार्गदर्शन और मुक्ति की उम्मीद करती थी, वैज्ञानिक भौतिकवाद और भौतिकवादी दर्शन पर आधारित इनकार के हिंसक तूफान की ओर आकर्षित हुए। पिछली सदी में विज्ञानवाद, बुद्धिवाद और प्रत्यक्षवाद में निहित मानव-केंद्रित विश्वदृष्टि से उभरने के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान और विज्ञान-विरोधी चर्च के बीच विरोधाभासों से, इस तूफान ने धीरे-धीरे यूरोप से ईसाई धर्म में उसके अधिकांश विश्वास को छीन लिया।

इतिहास में बेमिसाल इस प्रक्रिया ने इस्लाम की "इमारत" को हिलाकर रख दिया जो पहले से ही बहुत से दिलों और दिमागों (व्यक्तिगत और सामुदायिक) में पुरानी और सड़ चुकी थी। सईद नूरसी का मानना था कि इस "इमारत" की रक्षा आधुनिक लोगों की सभी क्षमताओं के सामने इस्लाम के मूल तत्वों को प्रस्तुत करके की जा सकती है। साथ ही, मुसलमानों के कार्यों में इस्लामी नैतिक गुणों और विश्वास की सच्चाइयों की पूर्णता को प्रदर्शित करना था।

विश्वास, ईश्वर का ज्ञान और उपासना

गणतंत्र से पहले ही सईद नूरसी “पुराने सईद” से “नए सईद” में बदल चुके थे; यानी, वे सार्वजनिक जीवन से दूर हो गए और इस्लाम के विचार, विश्वास, उपासना और नैतिकता के मुख्य सिद्धांतों की रक्षा और व्याख्या करने में खुद को समर्पित करने लगे। उनके शब्द उनके और उनके छात्रों द्वारा हस्तलिखित रिसाले-ए-नूर की प्रतियों के माध्यम से कई लोगों तक पहुँचे।

बेदीउज्जमां का इस्लाम के बारे में ठोस, विद्वत्तापूर्ण ज्ञान, साथ ही साधारण लेकिन धर्मपरायण लोगों के साथ कठिनाई और उत्पीड़न सहने और उन्हें शिक्षा देने के उनके जीवन के अनुभव ने उन्हें आधुनिक लोगों को इस्लाम और विश्वास को स्पष्ट रूप से सरल शब्दों में और इस तरह से समझाने में सक्षम बनाया जो उनके अनुभवों और विश्वदृष्टि को समझ सके। विश्वास और अविश्वास दोनों का विश्लेषण करते हुए, उन्होंने ईश्वर और उनकी एकता, पैगंबरी और शारीरिक पुनरुत्थान, और पूजा के मानवीय कर्तव्य की कुरान की अवधारणा को समझाने और साबित करने के लिए स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण तर्कों का उपयोग किया।

आसानी से समझ में आने वाले "दृष्टांतों", तुलनाओं और स्पष्टीकरणों का उपयोग करते हुए, सैद नूरसी ने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए, जो दर्शाते हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक खोजें वास्तव में धर्म की सच्चाइयों का समर्थन और सुदृढ़ीकरण करती हैं। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि और सभी आंतरिक और बाहरी सुविधाओं को संबोधित करने की कुरानिक पद्धति का उपयोग किया, ताकि लोगों को सृष्टि की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्यों को समझने के लिए ब्रह्मांड और उसके कामकाज का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

इससे, बदले में, हमें एक सृष्टिकर्ता के गुणों और परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारे अपने कर्तव्यों को सीखने की ओर अग्रसर होना पड़ता है।

सईद नूरसी ने ब्रह्माण्ड की वास्तविक प्रकृति को उसके रचयिता के व्यापक संकेत के रूप में समझाया, तथा स्पष्ट तर्कों के माध्यम से दिखाया कि जब ब्रह्माण्ड को इस प्रकार पढ़ा जाए तो विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया जा सकता है।

चूंकि विश्वास आधुनिक विज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और नास्तिकता से अछूता और दृढ़ रहता है।

विश्वास के इस ढांचे में सभी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति केवल ब्रह्मांड के कामकाज को उजागर करती है। यदि ब्रह्मांड को इस प्रकार एक विशाल और असीम रूप से जटिल और अर्थपूर्ण एकीकृत पुस्तक के रूप में देखा जाता है जो अपने एकल लेखक का वर्णन करती है, तो सभी खोज और प्रगति विश्वास को मजबूत, गहरा और विस्तारित करती हैं। इसलिए, विश्वासियों की सबसे बुनियादी ज़रूरतें - ईश्वर को उसके सबसे सुंदर नामों और गुणों के साथ पहचान कर उसकी पूजा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना - पूरी हो जाती हैं। उन्होंने विश्वास और पूजा की अनिवार्यताओं और कुरान के मुख्य उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया: ईश्वरीय अस्तित्व की व्याख्या करना और उसे साबित करना और

एकता, पैगम्बरत्व, पुनरुत्थान, तथा उपासना और न्याय की आवश्यकता। उन्होंने अपने द वर्ड्स, द लेटर्स, और लाहिकालर में विभिन्न स्थानों पर इसकी व्याख्या की है।

(परिशिष्ट):

> सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम ईश्वर में विश्वास है। मानवता का सबसे श्रेष्ठ पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है; आत्मा का सबसे शुद्ध आनंद और हृदय का सबसे शुद्ध आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और निर्मल आनंद ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं।

> विश्वास केवल नकल पर आधारित संक्षिप्त पुष्टि तक सीमित नहीं है; बल्कि, इसके विकास की डिग्री और चरण हैं। यह एक बीज की तरह है जो एक पूर्ण विकसित, फल देने वाले पेड़ में विकसित होता है; जैसे दर्पण में या पानी की एक बूँद में सूर्य की छवि समुद्र की सतह पर और स्वयं सूर्य की छवि। विश्वास में ईश्वर के नामों और ब्रह्मांड में निहित वास्तविकताओं से संबंधित इतने सारे सत्य शामिल हैं कि सबसे उत्तम विज्ञान, ज्ञान और गुण ईश्वर के बारे में विश्वास और ज्ञान है जो तर्क और जांच पर आधारित विश्वास से उत्पन्न होता है। जबकि नकल पर आधारित विश्वास को आधुनिक विचारों द्वारा उठाए गए संदेह और सवालों के माध्यम से खारिज किया जा सकता है, तर्क और जांच पर आधारित विश्वास में ईश्वर के नामों की संख्या जितनी ही डिग्री और स्तर होते हैं। जो लोग विश्वास के आधार पर सत्य के प्रत्यक्ष अवलोकन से विश्वास की निश्चितता प्राप्त करते हैं वे ब्रह्मांड का एक प्रकार के कुरान के रूप में अध्ययन करते हैं।

> कुरान, ब्रह्मांड और मानवता एक सत्य की तीन तरह की अभिव्यक्तियाँ हैं। वाणी के दिव्य गुण से निकलने वाले कुरान को लिखित या रचित ब्रह्मांड माना जा सकता है। शक्ति और इच्छा के दिव्य गुणों से उत्पन्न ब्रह्मांड को सृजित कुरान माना जा सकता है। चूँकि ब्रह्मांड कुरान का प्रतिरूप है और एक तरह से सृष्टि के दिव्य नियमों का संग्रह है, इसलिए ब्रह्मांड का अध्ययन करने वाले विज्ञानों को इस्लाम के अनुकूल होना चाहिए। इसलिए अब (जब विज्ञान प्रबल होता है) और भविष्य में (ज्ञान का युग), सच्चा विश्वास तर्क और जाँच पर आधारित होना चाहिए; ब्रह्मांड में ईश्वर के "संकेतों" पर निरंतर चिंतन पर; और प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक घटनाओं पर। विश्वास कोई अंधी नकल पर आधारित चीज नहीं है; बल्कि, इसे बुद्धि या तर्क और हृदय दोनों को आकर्षित करना चाहिए, क्योंकि यह तर्क की स्वीकृति और पुष्टि को हृदय के अनुभव और समर्पण के साथ जोड़ता है।

> विश्वास की एक और डिग्री है: सत्य के प्रत्यक्ष अनुभव से आने वाली निश्चितता। यह नियमित पूजा और चिंतन पर निर्भर करता है। ऐसे विश्वास वाले लोग किसी भी आपत्ति को चुनौती दे सकते हैं। तो, हमारा पहला

> और सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह है कि आप इस ईमान को हासिल करें और पूरी ईमानदारी और पूरी तरह से अल्लाह के लिए इसे दूसरों तक फैलाएँ। एक हदीस में है कि तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि कोई तुम्हारे ज़रिए ईमान अपना ले, बजाय इसके कि तुम दुनिया के मालिक बन जाओ।

संक्षेप में, सईद नूरसी का तर्क है कि ईमान का अर्थ है इस्लाम को उसकी सम्पूर्णता में अपनाना।

ज्ञान की भूमिका

सईद नूरसी ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चा ज्ञान इस दुनिया में और आने वाले समय में खुशी देता है, और मानवता इस दुनिया में ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से परिपूर्ण होने के लिए आई है। इस प्रकार "हृदय की अंतर्दृष्टि के बिना ज्ञान अज्ञान है," क्योंकि हमारे दिमाग को प्रकट धार्मिक सत्य को आत्मसात करने की आवश्यकता है, जिसके लिए हमारा हृदय एक दर्पण है। "प्रकट सत्य तर्कसंगत है, लेकिन तर्क अपने आप इसे प्राप्त नहीं कर सकता है।"

दिल की अंतर्दृष्टि कुरान से आती है; दिमाग की अंतर्दृष्टि कुरान से आती है।
अन्य विज्ञानों से। वह लिखते हैं:

> ब्रह्माण्ड और सभी प्राणियों की वास्तविकता ईश्वरीय नामों पर आधारित है। प्रत्येक प्राणी की वास्तविकता एक या अनेक नामों पर आधारित है।
> सभी विज्ञान और कलाएँ एक नाम पर आधारित हैं और उसी पर निर्भर हैं। दर्शनशास्त्र का सच्चा विज्ञान सर्वज्ञ (अल-हकीम) नाम पर आधारित है, सच्ची चिकित्सा सर्व-चिकित्सा (अश-शफी) नाम पर, ज्यामिति सर्व-निर्धारक (अल-मुकद्दिर) नाम पर, इत्यादि। जिस तरह प्रत्येक विज्ञान एक नाम पर आधारित है और अंततः उसी पर समाप्त होता है, उसी तरह सभी कलाओं, विज्ञानों और मानवीय पूर्णता की वास्तविकताएँ ईश्वरीय नामों पर आधारित हैं।

सैद नूरसी का निष्कर्ष है कि ईश्वर के नाम पर ब्रह्मांड का अध्ययन करके प्राप्त ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। विज्ञान ब्रह्मांड की व्याख्या करता है, जो ईश्वर की प्रतीकात्मक रचना है और जो स्वयं से परे एक सत्य की ओर इशारा करता है।

द ग्लेम्स

द ग्लेम्स की सामग्री पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि

ऊपर वर्णित कुरानिक तरीके से, यह विश्वास की मुख्य सच्चाइयों को साबित करता है और समझाता है। साथ ही, यह इन सच्चाइयों और कुरान की आयतों के बारे में नास्तिकों की आलोचनाओं का जवाब देता है। इसके उदाहरण बारहवीं, चौदहवीं और सोलहवीं ग्लेम्स के हिस्से हैं, जो पूछे गए सवालों के जवाब में लिखे गए थे।

बेदीउज्जमान ने अपने शिष्यों के माध्यम से इस पुस्तक को लिखा है। ग्लेम्स के अन्य भाग, विशेष रूप से तेईसवें भाग में, प्रकृति पर प्रसिद्ध ग्रंथ, तथा तीसवें भाग के छठे बिंदु में, ईश्वरीय आत्म-निर्वाह पर चर्चा, प्रकृतिवादी और भौतिकवादी दर्शन का सहज रूप से समझने योग्य तरीके से खंडन करते हैं।

इस्लाम को ऐसे दर्शन से प्रतिस्थापित करने के प्रयासों और इन प्रयासों के साथ आए नवाचारों के मद्देनजर, बेदिउज्जमां द्वारा पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के आचरण (सुन्नत) के पालन पर जोर देना , विशेष रूप से ग्यारहवीं झलक में देखा जा सकता है, और चौथी झलक में सुन्नियों और शियाओं के बीच संघर्ष के मुख्य बिंदुओं में से एक को हल करना - "इमामत" का प्रश्न।

पहली और दूसरी झलकें विश्वास के लिए एक शक्तिशाली सुदृढ़ीकरण हैं क्योंकि वे एकेश्वरवाद के मुख्य प्रश्नों में से एक को स्पष्ट रूप से संबोधित और उत्तर देते हैं, अर्थात, दुख और स्पष्ट बुराई के निर्माण में सच्चा ज्ञान और उद्देश्य। बेदीउज्जमान योना और अय्यूब की कहानियों के एक सरल वर्णन से इन कहानियों के आंतरिक अर्थ और महत्व और इस जीवन में दुख और क्लेश का सामना करते समय अपनाने के लिए सही दृष्टिकोण और आचरण पर आगे बढ़ते हैं। तीसरी झलक बताती है कि कैसे ईश्वर ने मनुष्यों को प्रेम की क्षमता और अनंत काल की लालसा से सुसज्जित किया है और कैसे समय के रहस्यों का मानवीय अनुभव शाश्वत और परलोक की वास्तविकता का संकेत है।

ग्लेम्स रिसाले-ए-नूर के पहले दो खंडों (शब्द और पत्र) से इस मायने में अलग है कि यह विश्वास के सामाजिक प्रभावों पर अधिक हद तक विचार करता है। उदाहरण के लिए, बीसवीं ग्लेम्स, ऑन सिंसियरिटी, यह प्रदर्शित करती है कि ईमानदारी समाज में विभाजन को ठीक करने और एकता प्राप्त करने का साधन है। उन्नीसवीं ग्लेम्स मितव्ययिता के महत्वपूर्ण इस्लामी सिद्धांत को प्रोत्साहित करती है, जिसका बेदीउज्जमां खुद सबसे बेहतरीन उदाहरण थे। पच्चीसवीं ग्लेम्स बीमारों और छब्बीसवीं ग्लेम्स बुजुर्गों को संबोधित करती है। ये दोनों ग्लेम्स बीमारों और बुज़ुर्गों के लिए ईमानदारी और गर्मजोशी भरी संवेदना से भरी हैं।

इसके अलावा, यह ध्यान देने योग्य है कि उनतीसवें पत्र के छठे खंड में, बेदीउज्जमां ने बताया कि समाज के छह मुख्य वर्गों में से, अधर्म युवाओं को केवल सतही और अस्थायी खुशी दे सकता है। बीमार, बूढ़े, कमजोर और गरीब, बच्चों और धर्मपरायण लोगों के लिए यह कुछ भी नहीं दे सकता। इस प्रकार, इस्पार्टा के अधिक आबादी वाले केंद्र में स्थानांतरित होने पर, उन्होंने द ग्लेम्स के उपर्युक्त भागों को लिखा, जिसमें दिखाया गया कि कैसे सच्चा विश्वास और इस्लाम समाज के सभी वर्गों की जरूरतों को पूरा करता है, और इस दुनिया और परलोक दोनों में सच्ची खुशी प्रदान करता है।

अट्ठाईसवीं झलक, विभिन्न विषयों पर लघु कृतियाँ, कुरान की आयतों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है, उनतीसवीं झलक रिसाले-ए- नूर के मार्ग का सार-चिंतनशील विचार-सार प्रस्तुत करती है, तथा तीसवीं झलक, जो कि सर्वाधिक महत्व का एक अन्य ग्रंथ है, छः दिव्य महानतम नामों, या छः दिव्य नामों की सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों की व्याख्या करती है।

विशेष बाधाओं और विशेष परिस्थितियों में लिखे जाने के बावजूद, रिसाले-ए-नूर और वर्तमान कार्य एक सार्वभौमिक कुरानिक तरीके की व्याख्या करते हैं और सार्वभौमिक समस्याओं से इस तरह निपटते हैं जो समकालीन मानव जाति की जरूरतों को संबोधित करता है। इसे तुर्की और दुनिया भर में इसके निरंतर प्रसार और स्वीकृति का कारण माना जा सकता है।

पहली चमक

पहली चमक

नबी योना की प्रार्थना के साथ परमेश्वर की शरण लेना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अंततः उन्होंने अंधकार के पर्दे (मछली के पेट, समुद्र और अंधेरी, बरसाती रात से बने) में पुकारा: "आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, आप महिमावान हैं (इसमें आप किसी भी दोष से बिल्कुल परे हैं)।

मैं भी अत्याचारियों में से हूँ।" (21:87)

उसने अपने रब को पुकारा कि, "निश्चय ही मुझपर मुसीबत आ पड़ी है, और तू अत्यन्त दयावान है।" (21:83)

फिर यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया है, और वही सिंहासन का स्वामी है।" (9:129)

अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा रक्षक है! (3:173)

सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अलावा किसी के पास शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

हे सनातन, आप सनातन हैं, हे सनातन, आप सनातन हैं!

जो लोग ईमान लाए, उनके लिए यह मार्गदर्शन और आरोग्य है। (41:44)

4 चमक

इसके बाद छह झलकियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक ऊपर दिए गए धन्य छंदों और वाक्यांशों से निकलने वाली कई रोशनियों में से एक का वर्णन करती है।

इन आयतों और वाक्यांशों को प्रत्येक 33 बार पढ़ना, विशेष रूप से शाम की प्रार्थना और रात्रि की प्रार्थना के बीच, बहुत पुण्यदायी है।

पैगम्बर योना (उन पर और हमारे पैगम्बर पर शांति और आशीर्वाद हो) की प्रार्थना सबसे शक्तिशाली प्रार्थना है, और ईश्वर से हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने का सबसे प्रभावी साधन है। आगे पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) के प्रसिद्ध अनुभव का सारांश दिया गया है।

उसे समुद्र में फेंक दिया गया और एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। समुद्र में तूफान था और रात अशांत और अंधेरी थी; किसी भी दिशा से आशा का कोई संकेत नहीं दिख रहा था। उस स्थिति में, उसने प्रार्थना की:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, और मैं भी अत्याचारियों में से हूँ।

यह प्रार्थना उसके लिए मुक्ति का त्वरित साधन थी। उसकी प्रार्थना की शक्ति निम्नलिखित बातों में निहित है:

उस स्थिति में ऐसा कोई स्पष्ट साधन या कारण नहीं था जिसके द्वारा योना उद्धार पा सकता था; उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो व्हेल और समुद्र, तथा रात और आकाश को नियंत्रित कर सके, यदि उसे बचाना था। रात, समुद्र और व्हेल उसके विरुद्ध एकजुट थे। केवल वही व्यक्ति जो इन तीनों को अपने अधीन कर सके, योना को उद्धार के किनारे पर ला सकता था। यदि सारी सृष्टि योना की दास और सहायक बन जाती, तो भी यह कोई लाभ नहीं होता।

इसका मतलब यह है कि परिणामों के उत्पादन में स्पष्ट साधन और कारणों का अपना कोई हिस्सा नहीं होता। चूँकि योना ने निश्चितता की नज़र से देखा कि कारणों के कारण के अलावा कोई शरण नहीं है, और चूँकि वह ईश्वर की पूर्ण एकता और दुनिया पर उसके प्रभुत्व के अपने सर्वोच्च विश्वास के माध्यम से

ब्रह्माण्ड में, पूरी तरह से अनुभव किया गया कि ईश्वर की समग्र अभिव्यक्तियों के अतिरिक्त, जो समस्त सृष्टि पर सर्वोच्च शासन करती हैं, प्रत्येक वस्तु के लिए विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ भी हैं और सर्व-दयालु होने के नाते, उनकी प्रार्थना ने रात्रि, समुद्र और व्हेल को उनके अधीन करने का साधन प्रदान किया।

ईश्वर की एकता के प्रति उनके दृढ़ विश्वास के प्रकाश में, जिसका सब पर पूर्ण नियंत्रण है, व्हेल का पेट उनके लिए एक पनडुब्बी बन गया, और पहाड़ जैसी लहरों से दहाड़ता भयानक समुद्र एक शांत मैदान बन गया, भ्रमण के लिए एक सुखद स्थान। ईश्वर की एकता पर आधारित और उसकी घोषणा करने वाली उनकी प्रार्थना ने आकाश को सभी चीजों से मुक्त करने का भी काम किया।

बादलों और चाँद को लालटेन की तरह उसके सिर पर चमकने के लिए। वे चीज़ें जो उसे चारों तरफ़ से दबा रही थीं, उसे डरा रही थीं, अब उसके सामने दोस्ताना चेहरा दिखा रही थीं। इस तरह वह मोक्ष के किनारे पहुँच गया, जहाँ एक लौकी के पौधे के नीचे उसने पूरी तरह से महसूस किया कि उसके प्रभु ने उस पर किस हद तक कृपा की है।

अब हम उस स्थिति से सौ गुना अधिक भयावह स्थिति में हैं

जिसे पैगम्बर योना ने, शांति से, सबसे पहले स्वयं पाया था। हमारी रात भविष्य है। जब हम अपने धार्मिक दायित्वों के प्रति असावधानी के साथ अपने भविष्य को देखते हैं, तो यह उनकी रात से सौ गुना अधिक अंधकारमय और भयावह होता है। हमारा समुद्र यह गतिशील, अस्थिर पृथ्वी है। इस समुद्र की प्रत्येक लहर अपने साथ हजारों शवों को लाती है, और इसलिए यह उनके समुद्र से हजार गुना अधिक भयावह है। हमारी मछली हमारी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की वासनाओं और सनकियों से बनी है, जो हमारे शाश्वत जीवन को नष्ट करने का प्रयास करती है। ऐसी मछली उसकी मछली से हजार गुना अधिक हानिकारक है। क्योंकि उसकी मछली सौ साल की उम्र को नष्ट कर सकती थी, जबकि हमारी मछली एक ऐसे जीवन को नष्ट करना चाहती है जो करोड़ों साल तक चलेगा।

यह हमारी सच्ची स्थिति है, हमें पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) के समान कार्य करना चाहिए; सभी साधनों और कारणों से दूर होकर, हमें सीधे अपने प्रभु की शरण लेनी चाहिए, जो कारणों का कारण है। हमें कहना चाहिए:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, और मैं भी अत्याचारियों में से हूँ।

हमें अवलोकन से प्राप्त होने वाली निश्चितता के साथ समझना और जानना चाहिए कि केवल वही, हमारा प्रभु, जो भविष्य को अपने आदेश के अधीन रखता है, संसार को अपने पूर्ण नियंत्रण में रखता है, और हमारी दुष्टतापूर्ण आत्माओं को अपने निर्देशन में रखता है, वही हमसे भविष्य की हानि, इस संसार की हानि, तथा हमारी दुष्टतापूर्ण आत्माओं की वासनाओं और इच्छाओं को दूर कर सकता है, जो हमारी उपेक्षा और पथभ्रष्टता के कारण हमारे विरुद्ध एकजुट हो गई हैं।

आकाश और पृथ्वी के रचयिता के अलावा और कौन सा ऐसा व्यक्ति है जो हमारे हृदय में होने वाली हर बात को, उसके सूक्ष्मतम और गुप्त विचारों तक को जान सकता है, और परलोक की स्थापना करके, हमें संसार की अनगिनत दमघोंटू लहरों से बचाकर हमारे लिए भविष्य को रोशन कर सकता है? अनिवार्य रूप से विद्यमान परमेश्वर के अलावा कोई भी, कोई भी व्यक्ति किसी भी तरह से हमारी सहायता या हमें बचा नहीं सकता; हम केवल उसकी इच्छा और अनुमति से ही बच सकते हैं।

जैसा कि मामला था, योना की प्रार्थनाओं का नतीजा यह हुआ कि व्हेल उसके लिए एक सवारी या जहाज बन गई और समुद्र एक शांत मैदान बन गया; रात उसके लिए चाँद की रोशनी से शांत हो गई। हमें भी यही प्रार्थना करनी चाहिए:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, और मैं भी अत्याचारियों में से हूँ।

इस वाक्य के साथ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, हमें अपने भविष्य पर खुदा की रहमत की दुआ करनी चाहिए; इस वाक्यांश के साथ कि तू महिमावान है, हमें अपनी दुनिया पर रहमत की दुआ करनी चाहिए; इस वाक्यांश के साथ कि मैं भी उन ज़ालिमों में से हूँ (जिन्होंने अपने ऊपर ज़ालिम किया है), हमें अपनी रूह पर रहमत की दुआ करनी चाहिए। इस तरह हमारा भविष्य कुरान से रोशन माहौल में ईमान की रोशनी से रोशन हो सकता है, और हमारी रात का खौफ और खौफ शांति और खुशी में तब्दील हो सकता है। साथ ही, जब हम सालों और सदियों की लहरों के बीच इस धरती पर सफर करते हैं, एक ऐसा समुद्र जिस पर अनगिनत प्राणी सवार हुए हैं, और जिसमें से अनगिनत लोग जीवन और मृत्यु के क्रम से शून्य में फेंक दिए गए हैं, हमें इस्लाम की सच्चाई के जहाज पर सवार होना चाहिए, जो बुद्धिमान कुरान के घाटों में बनाया गया है, ताकि हम सुरक्षा और मुक्ति के किनारे पर जीवन का अपना कर्तव्य पूरा कर सकें।

समुद्र का तूफ़ान और उथल-पुथल एक स्क्रीन पर बदलते दृश्यों की तरह, हमेशा नए-नए दिखने वाले मनभावन दृश्यों की एक श्रृंखला बन जाएगा, और भयावह अकेलेपन और भय को पैदा करने के बजाय वे हमारे दिमाग को प्रबुद्ध करेंगे और हमें अपने आस-पास की हर चीज़ पर चिंतन करने और सबक सीखने के लिए प्रेरित करेंगे। कुरान के मार्गदर्शन और सत्य और असत्य के मानदंड द्वारा दी गई शिक्षा के आधार पर, हमारी आत्मा अब हम पर सवार नहीं होगी, बल्कि हमारी सवारी बन जाएगी। जब हम इस पर सवार होंगे, तो यह हमें अनंत जीवन प्राप्त करने में मदद करेगी।

संक्षेप में, मनुष्य की प्रकृति व्यापक है; जैसे हम मलेरिया के संक्रमण से पीड़ित होते हैं और कांपते हैं, वैसे ही हम धरती के भूकंप और कंपन से भी पीड़ित होते हैं, और पुनरुत्थान के दिन पूरी सृष्टि को होने वाले शक्तिशाली झटकों से भी पीड़ित होंगे। जैसे हम एक सूक्ष्म जीव से डरते हैं, वैसे ही हम आकाशीय पिंडों के बीच दिखाई देने वाले एक उल्कापिंड से भी डरते हैं। जैसे हम अपने घर से प्यार करते हैं, वैसे ही हम पूरी दुनिया से भी प्यार करते हैं। जैसे हम अपने छोटे से बगीचे से प्यार करते हैं, वैसे ही हम अनंत और शाश्वत स्वर्ग से भी प्यार करते हैं, और हम इसे बहुत प्यार करते हैं। इसलिए, ऐसे प्राणी की पूजा की वस्तु, भगवान, हमारे

शरण, हमारा उद्धारकर्ता और हमारा लक्ष्य केवल वही हो सकता है जिसकी शक्ति की मुट्ठी में पूरा ब्रह्मांड है, और जिसकी आज्ञा के तहत एक ही समय में परमाणु और ग्रह दोनों हैं। इसलिए मनुष्यों को लगातार प्रार्थना करने की ज़रूरत है, योना की तरह, उस पर शांति हो:

> तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, और मैं भी अत्याचारियों में से हूँ।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

दूसरी चमक

दूसरी चमक

पैगंबर अय्यूब की प्रार्थना के माध्यम से बीमारियाँ और स्वास्थ्य लाभ की खोज

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> और अय्यूब ने अपने रब को पुकारा कि "निश्चय ही मुझपर मुसीबत आ पड़ी है, और तू अत्यन्त दयावान है।" (21:83)

T धैर्य के नायक, पैगंबर अय्यूब की प्रार्थना, उन पर शांति हो, कई लोगों के लिए ठीक होने के साधन के रूप में प्रभावी साबित हुई है जिन्होंने अपने कष्टों के दौरान इसे पढ़ा है। इस आयत को ध्यान में रखते हुए, हमें अपनी प्रार्थना में कहना चाहिए: "वास्तव में, संकट ने मुझे घेर लिया है; और आप दयालु लोगों में सबसे दयालु हैं।"

नीचे इस प्रसिद्ध अनुभव का सारांश दिया गया है:
पैगम्बर अय्यूब, उन पर शांति हो।

अय्यूब लंबे समय तक कई घावों और घावों से पीड़ित रहा, फिर भी उसने अपनी बीमारी को बहुत धैर्य के साथ सहन किया, यह सोचकर कि बदले में उसे बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा। लेकिन बाद में, जब उसने महसूस किया कि वह अब अपने हृदय और जीभ से परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता, जो परमेश्वर के ज्ञान और स्मरण का स्थान हैं, तो उसे डर लगा कि उसकी आराधना का कर्तव्य प्रभावित होगा, और इसलिए उसने प्रार्थना में कहा, अपने आराम के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की आराधना के लिए, "मुझ पर विपत्ति आई है, और तू दयालुओं में सबसे दयालु है!" सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने इस ईमानदार, अस्वीकृत प्रार्थना को स्वीकार किया।

उसने अय्यूब से बहुत ही चमत्कारी तरीके से प्रार्थना की और उसे पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया तथा उसमें अपार करुणा प्रकट की।

इस प्रकार, इस ग्लेम में पाँच बिंदु शामिल हैं:

पहला बिंदु

पैगंबर अय्यूब (उन पर शांति हो) के शारीरिक घावों और बीमारियों के अनुरूप, हमारे पास आंतरिक, आध्यात्मिक बीमारियाँ हैं। यदि हमारा आंतरिक अस्तित्व बाहर की ओर मुड़ जाए, और हमारा बाहरी अस्तित्व अंदर की ओर मुड़ जाए, तो हम पैगंबर अय्यूब की तुलना में अधिक घावों और बीमारियों के साथ दिखाई देंगे। हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक पाप और हमारे मन में आने वाले प्रत्येक संदेह के कारण हमारे अंदर घाव होते हैं।

हमारे हृदय और आत्मा में शांति बनी रहे।

पैगंबर अय्यूब (उन पर शांति हो) के घाव इस तरह के थे कि वे उनके संक्षिप्त, सांसारिक जीवन को खतरे में डाल रहे थे, लेकिन हमारे आंतरिक घाव हमारे अनंत लंबे, अनंत जीवन को खतरे में डालते हैं। हमें अय्यूब की प्रार्थना की ज़रूरत उससे हज़ारों गुना ज़्यादा है। उसके घावों और बीमारियों ने उसके दिल और जीभ को प्रभावित किया, जबकि पापों से उत्पन्न घाव, इन घावों से उत्पन्न प्रलोभन और संदेह, दिल के आंतरिक आयाम को नुकसान पहुँचाते हैं, जो विश्वास का स्थान है, इस प्रकार, - हम ऐसी चीज़ों से ईश्वर की शरण लेते हैं - हमारे विश्वास को नुकसान पहुँचाते हैं। वे उस आध्यात्मिक आनंद को भी रोकते हैं जो जीभ से धार्मिक पाठ से मिलता है, जो हृदय में विश्वास की व्याख्या करता है, इस प्रकार इसे पाठ से दूर कर देता है।

घृणा.

पाप हृदय में प्रवेश करता है, उसे अंधकारमय और कठोर बनाता है जब तक कि वह विश्वास की रोशनी को बुझा न दे। प्रत्येक पाप का एक मार्ग होता है जो अविश्वास की ओर ले जाता है। जब तक कि उस पाप को परमेश्वर से क्षमा मांगकर तुरंत नष्ट नहीं कर दिया जाता, तब तक वह एक कीड़े से बढ़कर एक साँप बन जाता है जो हृदय को कुतरता है।

उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति गुप्त रूप से कोई शर्मनाक पाप करता है और उसे बहुत शर्म आती है, उसे डर लगता है कि कहीं दूसरे लोग उसके इस कुकृत्य के बारे में न जान जाएँ, तो उसे स्वर्गदूतों और आध्यात्मिक प्राणियों का अस्तित्व बर्दाश्त करने में बहुत मुश्किल लगता है। फिर वे चाहते हैं कि उनके अस्तित्व को नकारने के लिए कोई सबूत हो। इसी तरह, अगर कोई व्यक्ति जो नर्क की सज़ा के लायक कोई बड़ा पाप करता है, वह भगवान से माफ़ी माँगकर खुद को पाप से बचाने की कोशिश नहीं करता, तो वह पूरे दिल से नर्क के अस्तित्व की कामना करेगा, और अगर उसे कोई प्रोत्साहन मिले तो वह नर्क के अस्तित्व को नकारने की हिम्मत करेगा।

फिर, लोग आमतौर पर अपने वरिष्ठों से थोड़ी सी भी फटकार सुनकर दुखी और व्यथित महसूस करते हैं। इसलिए जो व्यक्ति अपने सेवकाई के कर्तव्य को पूरा करने में आलस्य दिखाता है, जैसे कि अनंत काल के प्रभु के बार-बार आदेश के बावजूद दैनिक अनिवार्य प्रार्थना करने में विफल होना, वह बहुत व्यथित महसूस करेगा और चाहेगा कि सेवकाई का ऐसा कोई कर्तव्य न हो।

बदले में, इस इच्छा से ईश्वर को नकारने की इच्छा पैदा होगी, जो ईश्वर के प्रति शत्रुता को दर्शाता है। यदि उनके हृदय में ईश्वर के अस्तित्व के बारे में कोई संदेह उत्पन्न होता है, तो वे इसे निर्णायक प्रमाण के रूप में पकड़ने के लिए इच्छुक होंगे। इस प्रकार, उनके सामने विनाश का एक बड़ा द्वार खुल जाएगा। वह अभागा व्यक्ति यह नहीं जानता कि भले ही सेवकाई का कर्तव्य थोड़ा कष्ट या परेशानी देता हो, लेकिन ईश्वर के अस्तित्व को नकारने से वे खुद को आध्यात्मिक परेशानियों का लक्ष्य बनाते हैं जो लाखों गुना अधिक कष्टदायक हैं।

मच्छर के काटने पर दुखी होते हुए भी वे साँप के काटने का स्वागत करते हैं।
और भी कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, लेकिन ये तीन उदाहरण इस बात को समझने के लिए पर्याप्त हैं कि " परन्तु जो उन्होंने स्वयं कमाया है, वह उनके दिलों में ज़ंग लगा चुका है" (83:14)।

दूसरा बिंदु

जैसा कि दिव्य नियति के अर्थ के विषय में छब्बीसवें वचन में स्पष्ट किया गया था , लोगों को निम्नलिखित तीन कारणों से आपदाओं और बीमारियों के बारे में शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है:

पहला कारण: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने शरीर के जिस वस्त्र को लोगों को पहनाया है, उसे अपनी कला का प्रकटीकरण बनाया है। उसने लोगों को एक मॉडल बनाया है जिसके द्वारा वे शरीर के वस्त्र को काट-छाँट कर बदल सकते हैं, इस प्रकार अपने विभिन्न नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित कर सकते हैं। जिस प्रकार सर्व-उपचारक का नाम बीमारों को स्वस्थ करके प्रकट होता है, उसी प्रकार सर्व-उपचारक का नाम भूख की संतुष्टि के माध्यम से पहचाना जाता है।

वह समस्त प्रभुत्व का स्वामी है, तथा अपने प्रभुत्व में अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है।

दूसरा कारण: जीवन आपदाओं और बीमारियों के माध्यम से परिष्कृत, परिपूर्ण और मजबूत होता है, और अपना उद्देश्य पूरा करता है। आराम और सुविधा के सोफे पर नीरस रूप से जीया गया जीवन अस्तित्व नहीं माना जा सकता और न ही इसकी सेवा करता है। बल्कि, यह लगभग गैर-अस्तित्व के समान है।

तीसरा कारण: यह संसार परीक्षा का क्षेत्र है, सेवा का धाम है।
यह आनंद का स्थान नहीं है या उन चीजों के लिए पुरस्कृत होने का स्थान नहीं है जो प्रति-

ईश्वर के उद्देश्य से निर्मित। इसलिए बीमारियाँ और दुर्भाग्य - जब तक वे धर्म को नुकसान नहीं पहुँचाते और धैर्यपूर्वक सहन किए जाते हैं - सेवा और पूजा के पूर्ण रूप से अनुरूप होते हैं, और इसे मजबूत भी करते हैं। चूँकि ऐसी बीमारियाँ और दुर्भाग्य प्रत्येक घंटे की पूजा को एक दिन के बराबर बना देते हैं, इसलिए व्यक्ति को शिकायत करने के बजाय धन्यवाद देना चाहिए।

पूजा दो तरह की होती है, सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक का मतलब है वह पूजा जो हम नियमित रूप से करते हैं। जहाँ तक नकारात्मक पूजा का सवाल है, यह तब होती है जब दुर्भाग्य या बीमारी से पीड़ित व्यक्ति अपनी कमज़ोरी और लाचारी को महसूस करता है, अपने दयालु भगवान की शरण लेता है, उन पर ध्यान केंद्रित करता है, उनसे प्रार्थना करता है और इस तरह शुद्ध पूजा करता है। इस तरह की पूजा में पाखंड नहीं घुस सकता। अगर कोई धैर्यपूर्वक सहन करता है, दुर्भाग्य के बदले में मिलने वाले पुरस्कारों पर ध्यान केंद्रित करता है, और धन्यवाद देता है, तो बीतने वाला हर घंटा पूजा में बिताया गया पूरा दिन माना जाएगा।

एक बार मैं अपने एक भाई मुहाजिर हाफिज अहमद की गंभीर बीमारी के कारण बहुत चिंतित था। लेकिन मेरे दिल में आया कि मुझे उसे बधाई देनी चाहिए क्योंकि उसका बिताया हर मिनट पूरे दिन की इबादत के बराबर था। वह खुद भी अपनी बीमारी को धैर्य और कृतज्ञता के साथ झेल रहा था।

तीसरा बिंदु

जैसा कि हमने एक या दो वचनों (शब्दों में शामिल) में बताया है , जब भी कोई व्यक्ति अपने पिछले जीवन के बारे में सोचता है, तो उसकी जुबान पर पीड़ा, खुशी या राहत की बात आती है। यानी, वह या तो पछताता है या भगवान को धन्यवाद देता है, यह कहते हुए कि, "सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान के लिए हैं।"

लोगों को पछतावे का कारण वह पीड़ा है जो पिछले सुखों के खत्म होने से पैदा होती है। सुखों का खत्म होना अपने आप में एक दर्द है।
कभी-कभी अस्थायी सुख लगातार पीड़ा का कारण बनता है, और उस पर ध्यान केंद्रित करना घाव पर छेद करने जैसा होगा, जिससे पश्चाताप फूट पड़ेगा।

फिर भी, भूतकाल के क्षणिक कष्टों के समाप्त होने से आत्मा में जो निरन्तर आनन्द अनुभव होता है, वह मनुष्य को यह कहने के लिए प्रेरित करता है कि, "सभी प्रशंसाएँ और धन्यवाद ईश्वर के लिए हैं।" मनुष्यता की इस सहज प्रवृत्ति के अतिरिक्त, यदि कोई दुर्भाग्य के बदले में परलोक में मिलने वाले पुरस्कार पर विचार करता है और सोचता है कि एक संक्षिप्त जीवन पुरस्कार में बिताया गया एक लम्बा जीवन माना जाएगा और इससे अच्छाई आएगी, तो वह केवल धैर्य दिखाने के बजाय, कृतज्ञता दिखाएगा। इसलिए, मनुष्य केवल धैर्य दिखाने के बजाय, कृतज्ञता दिखाएगा।

कहना चाहिए, “अविश्वास और गुमराही को छोड़कर हर स्थिति के लिए सारी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के लिए है।”

लोग कहते हैं, “कठिन समय अंतहीन लगता है।” वास्तव में ऐसा होता है, लेकिन इसलिए नहीं कि ऐसे समय कष्टदायक होते हैं, जैसा कि लोग आमतौर पर कल्पना करते हैं, बल्कि इसलिए कि वे महत्वपूर्ण परिणाम देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक लंबा जीवन देता है।

चौथा बिंदु

जैसा कि इक्कीसवें वचन के पहले पड़ाव में बताया गया था, यदि कोई व्यक्ति ईश्वर द्वारा दी गई धैर्य की शक्ति को निराधार भय और चिंताओं पर बर्बाद नहीं करता है, तो यह धैर्य हर दुर्भाग्य के लिए पर्याप्त होगा। लेकिन यदि कोई व्यक्ति वर्तमान दुर्भाग्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अतीत के दुर्भाग्य या भविष्य के कल्पित दुर्भाग्य पर धैर्य की शक्ति बर्बाद करता है - एक ऐसी स्थिति जो निराधार आशंकाओं और चिंताओं के प्रभाव में होने के कारण होती है - क्योंकि वह चीजों और घटनाओं की प्रकृति से अनजान है और इस क्षणभंगुर जीवन को ऐसे देखता है जैसे कि यह शाश्वत है, तो उसका धैर्य वर्तमान के दुर्भाग्य का सामना करने में सक्षम नहीं होगा। नतीजतन, लोग शिकायत करना शुरू कर देते हैं। लोग इस तरह से शिकायत करते हैं जैसे कि - भगवान न करे! - वे दूसरों से ईश्वर के बारे में शिकायत कर रहे हों। सबसे अनुचित और यहां तक कि पागलपन भरे तरीके से, वे शिकायत करते हैं और अधीरता दिखाते हैं।

यदि बीता हुआ दिन दुर्भाग्य का प्रतीक था, तो दुख चला गया है और केवल शांति रह गई है; दुख चला गया है और उसके समाप्त होने का आनंद रह गया है; परेशानी चली गई है और पुरस्कार रह गया है। इसलिए व्यक्ति को शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि खुशी से धन्यवाद देना चाहिए। व्यक्ति को दुर्भाग्य से नाराज नहीं होना चाहिए, बल्कि उससे प्रेम करना चाहिए। दुर्भाग्य में बीता हुआ क्षणभंगुर जीवन का कोई भी हिस्सा दुर्भाग्य के कारण शाश्वत, धन्य जीवन माना जाता है। इसलिए अतीत में झेले गए दुखों के दोहराव के बारे में चिंता करना और ऐसी चिंताओं पर अपने धैर्य का कुछ हिस्सा बर्बाद करना पागलपन है।

जहाँ तक भविष्य की बात है, चूँकि वे अभी तक नहीं आए हैं, इसलिए संभावित बीमारियों या दुर्भाग्य के बारे में सोचना और शिकायत करके अधीरता दिखाना और तनाव या थकावट महसूस करना भी मूर्खता है। यह उतना ही हास्यास्पद है जितना कि भविष्य की भूख या प्यास के बारे में अभी शिकायत करना, उनके बारे में अभी सोचना और ऐसे संभावित कष्टों से बचने के लिए दिन भर खाना-पीना।

यह आत्म-उत्पीड़न इतना हास्यास्पद है कि इससे पीड़ित व्यक्ति अब दया और करुणा का पात्र नहीं रह जाता।

संक्षेप में, जिस प्रकार कृतज्ञता से ईश्वरीय उदारता बढ़ती है, उसी प्रकार कृतज्ञता से ईश्वरीय कृपा भी बढ़ती है। शिकायतें दुर्भाग्य को बढ़ाती हैं, तथा दया के लिए कोई उचित कारण नहीं छोड़तीं।

प्रथम विश्व युद्ध के शुरुआती वर्ष में, एर्ज़ुरम में एक नेक इंसान एक भयंकर बीमारी से पीड़ित था। मैं उससे मिलने गया और उसने मुझसे शिकायत करते हुए कहा, "सौ रातों से मैं तकिये पर सिर रखकर सो नहीं पाया हूँ।" मुझे उसके लिए बहुत दुख और दया महसूस हुई। अचानक मेरे मन में एक विचार आया और मैंने कहा:

> भाई, तुम्हारे पिछले सौ कष्टमय दिन अब सौ सुखमय दिनों के समान हैं। इसलिए उनके बारे में सोचो और शिकायत मत करो; बल्कि उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में देखो और कृतज्ञ रहो। जहाँ तक भविष्य के दिनों की बात है, क्योंकि वे अभी तक नहीं आए हैं, इसलिए अपने परम दयालु, परम दयालु प्रभु की दया की शरण लो। बिना मार खाए मत रोओ, किसी ऐसी चीज़ से मत डरो जो अस्तित्व में नहीं है, और किसी ऐसी चीज़ को अस्तित्व का रंग मत दो जो अस्तित्व में नहीं है। वर्तमान समय पर ध्यान लगाओ; इस समय के लिए तुम्हारी धैर्य शक्ति पर्याप्त होगी।

> एक मूर्ख सेनापति की तरह व्यवहार न करें, जो दुश्मन की सेना के बाएं विंग के साथ मिलकर उसके दाएं विंग को मजबूत करने के बावजूद, दुश्मन के दाएं विंग के लड़ने के लिए तैयार होने से पहले ही अपनी सेना को केंद्र में बाएं और दाएं फैला देता है। इस तरह वह अपने केंद्र को कमजोर कर देता है और दुश्मन उसे कम से कम प्रयास में नष्ट कर देता है।

मैंने जोड़ा:

> भाई, उस मूर्ख सेनापति की तरह मत बनो! वर्तमान समय के विरुद्ध अपनी सारी शक्तियाँ जुटाओ। ईश्वरीय दया और दूसरे सांसारिक पुरस्कारों के बारे में सोचो; विचार करो कि तुम अपने संक्षिप्त, क्षणभंगुर जीवन को कैसे एक लंबे, चिरस्थायी जीवन में बदल सकते हो। इसलिए, कटु शिकायत करने के बजाय, खुशी से धन्यवाद दो।

बहुत राहत महसूस करते हुए उन्होंने कहा, "सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान को है, मेरी बीमारी अब यह पहले की तुलना में दसवां हिस्सा रह गया है।"

पांचवां बिंदु

इस बिन्दु में तीन बातें शामिल हैं।

पहली बात: वास्तविक और हानिकारक दुर्भाग्य वह है जो धर्म और व्यक्ति के धार्मिक जीवन को प्रभावित करता है। धर्म के मामले में दुर्भाग्य से बचने के लिए व्यक्ति को हमेशा ईश्वर के दरबार में आंसू बहाकर शरण लेनी चाहिए और मदद के लिए पुकारना चाहिए। हालांकि, जो दुर्भाग्य धर्म या व्यक्ति के धार्मिक जीवन को प्रभावित नहीं करता, वह सत्य की दृष्टि से दुर्भाग्य नहीं है। कुछ ऐसे दुर्भाग्य हैं जो धर्म और व्यक्ति के धार्मिक जीवन को प्रभावित नहीं करते।

भाग्य दयालु ईश्वर की ओर से दयालु चेतावनियाँ हैं। उस चरवाहे के बारे में सोचिए जो अपनी भेड़ों पर पत्थर फेंकता है जब वे दूसरे के खेत में घुस जाती हैं; भेड़ों को लगता है कि पत्थर उन्हें किसी हानिकारक कार्य से बचाने के लिए चेतावनी के तौर पर है, इसलिए वे खुशी-खुशी पीछे हट जाती हैं। इसी तरह, कई ऐसे दुर्भाग्य हैं जो वास्तव में ईश्वरीय चेतावनियाँ और चेतावनी हैं; कुछ अन्य पापों के प्रायश्चित और क्षमा के लिए काम आते हैं, जबकि कुछ धार्मिक कर्तव्यों के प्रति लापरवाही से उत्पन्न होते हैं, और हमें हमारी मानवीय असहायता और कमजोरी की याद दिलाते हैं, इस प्रकार हमें एक तरह की शांति और स्थिरता प्रदान करते हैं।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, दुर्भाग्य के रूप में मानी जाने वाली बीमारियाँ दुर्भाग्य नहीं हैं, बल्कि ईश्वर की कृपा और शुद्धिकरण का साधन हैं। एक पैगंबरी परंपरा है जो कहती है, "जैसे पेड़ को हिलाने पर उसका पका हुआ फल गिर जाता है, वैसे ही बुखार की कंपकंपी से पाप भी गिर जाते हैं।"1

पैगंबर अय्यूब (उन पर शांति हो) ने अपनी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना नहीं की, बल्कि जब उनकी बीमारी ने उनकी जीभ से ईश्वर को याद करने और उनके दिल में विश्वास की सच्चाइयों और इसी तरह के विषयों पर चिंतन करने में बाधा उत्पन्न की, तो उन्होंने पूजा के उद्देश्य से उपचार की मांग की। हमें भी, जब वह प्रार्थना कर रहे हों, तो अपना प्राथमिक उद्देश्य, पाप करने से उत्पन्न हमारे आंतरिक और आध्यात्मिक घावों को ठीक करना होना चाहिए।

यदि शारीरिक बीमारियाँ हमारी पूजा में बाधा डालती हैं, तो हम उनसे बचने के लिए ईश्वरीय दरबार में शरण ले सकते हैं। हालाँकि, हमें विनम्रता और विनती के साथ शरण लेनी चाहिए, न कि विरोध और शिकायत के तरीके से। चूँकि हम अपने भगवान के रूप में ईश्वर से प्रसन्न हैं, इसलिए हमें अपने प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के रूप में जो कुछ भी वह हमें देता है, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस तरह से विलाप करना और शिकायत करना कि हम ईश्वरीय नियति और आदेश पर आपत्ति करते हैं, ईश्वरीय नियति की आलोचना करने का एक रूप है, ईश्वर की करुणा के विरुद्ध आरोप लगाना। जो व्यक्ति ईश्वरीय नियति की आलोचना करता है, वह अपने सिर को निहाई से टकराकर तोड़ देता है। जो व्यक्ति ईश्वर की दया में दोष ढूंढता है, वह अनिवार्य रूप से उससे वंचित हो जाएगा। बदला लेने के लिए टूटे हुए हाथ का उपयोग करने से केवल हाथ को और अधिक नुकसान पहुंचेगा। इसी तरह, जो व्यक्ति दुर्भाग्य से पीड़ित होने पर विरोध और शिकायत के साथ प्रतिक्रिया करता है, वह केवल अपने दुर्भाग्य को बढ़ाता है।

दूसरा मामला: शारीरिक दुर्भाग्य तब बढ़ता है जब उसे बड़ा देखा जाता है, और जब उसे छोटा देखा जाता है तो वह छोटा हो जाता है। उदाहरण के लिए, हमें लगता है कि हमने रात में कुछ देखा है। अगर हम उस पर इस तरह ध्यान केंद्रित करें जैसे कि वह कोई वास्तविक चीज़ हो, तो वह घटित हो जाता है।

---

1 अल-बुखारी, अल-जामी अस-साहिह, "मर्दा" 2; इब्न माजा, सुनान, "तिब्ब" 18.

बड़ा होता है, लेकिन अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो यह गायब हो जाता है। एक अन्य उदाहरण के रूप में, यदि हम मधुमक्खियों के हमलावर झुंड को भगाने का प्रयास करते हैं, तो वे और अधिक आक्रामक हो जाएंगे, लेकिन अगर हम उन पर कोई ध्यान दिए बिना आगे बढ़ते हैं, तो वे तितर-बितर हो जाएंगे। इसी तरह, जब शारीरिक दुर्भाग्य को बड़ा माना जाता है और उस पर ध्यान दिया जाता है, तो वह बढ़ता है, और चिंता उन्हें शरीर में घुसने और दिल में जड़ जमाने का कारण बनती है। यह अतिरिक्त रूप से आंतरिक दुःख को जन्म देगा, जो बदले में बाहरी, शारीरिक दुर्भाग्य को खुद को बनाए रखने का कारण बनता है।

हालाँकि, अगर ईश्वरीय आदेश के प्रति समर्पण और ईश्वर पर भरोसा करके चिंता को दूर कर दिया जाए, तो शारीरिक दुर्भाग्य धीरे-धीरे कम हो जाएगा, सूख जाएगा और गायब हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे एक पेड़ जिसकी जड़ें कट गई हों। मैंने एक बार इस वास्तविकता का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित कहा था:

हे असहाय, दुर्भाग्य पर विलाप करना छोड़ दो और भगवान पर भरोसा रखो,
क्योंकि जान लो कि यह विलाप एक भूल है जो बाद में परेशानी का कारण बनती है
मुश्किल;
यदि आपको वह मिल गया है जो आपको दुःख देता है, तो जान लें कि दुर्भाग्य एक उपहार है जो शांति
और खुशी लाता है।
लेकिन यदि तुम उसे नहीं पा सको तो जान लो कि सारा संसार दुख और दुर्भाग्य का स्थान
है, जिसका विनाश निश्चित है।
अतः जब तुम्हारे ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी है (जैसे कि इस क्षणभंगुर संसार को परलोक का क्षेत्र बनाने
में समर्थ होना),
तुम एक तुच्छ दुर्भाग्य पर विलाप क्यों करते हो?
आओ, भगवान पर भरोसा रखें और दुर्भाग्य के सामने मुस्कुराएँ
ताकि वह मुस्कुरा भी सके, क्योंकि जब वह मुस्कुराता है तो उसकी शक्ति कम हो जाती है और वह बदल जाता है।

यदि युद्ध करते समय कोई शत्रु की ओर देखकर मुस्कुरा दे, तो शत्रुता, चाहे वह कितनी भी कटु क्यों न हो, कम हो जाएगी, मेल-मिलाप में बदल जाएगी, और यहां तक कि समाप्त भी हो जाएगी।
ठीक उसी प्रकार, यदि कोई ईश्वर पर भरोसा रखते हुए दुर्भाग्य का सामना करता है, तो परिणाम वही होगा।

तीसरी बात: हर युग की अपनी अलग विशेषताएँ होती हैं। ईश्वरीय आदेशों की अनदेखी के इस युग में दुर्भाग्य ने अपना स्वरूप बदल लिया है। यह दुर्भाग्य नहीं है, बल्कि कुछ खास व्यक्तियों के लिए ईश्वरीय कृपा है।
बार.

मैं विशेष रूप से इस समय बीमारी से पीड़ित लोगों को भाग्यशाली मानता हूं -
बशर्ते उनकी बीमारी उनके विश्वास या धार्मिक जीवन को प्रभावित न करे - और इसलिए मैं बीमारी या कुछ अन्य प्रकार के दुर्भाग्य का विरोध नहीं कर सकता। न ही मैं उन पर दया कर सकता हूँ। जब भी कोई बीमार युवक मुझसे मिलने आता है, मैं उसे देखता हूँ,

अपने साथियों की तुलना में, अपने धार्मिक कर्तव्यों और परलोक के प्रति अधिक चिंतित और समर्पित होने के कारण। इससे मुझे यह विचार आता है कि बीमारी ऐसे लोगों के लिए दुर्भाग्य नहीं है, बल्कि ईश्वरीय कृपा है। क्योंकि, हालांकि बीमारी ऐसे व्यक्ति के लिए उनके संक्षिप्त, क्षणिक सांसारिक जीवन में कुछ परेशानी का कारण बनती है, वास्तव में यह उनके शाश्वत जीवन के लिए फायदेमंद है। इसे पूजा का एक रूप माना जाता है। यदि यह व्यक्ति ठीक हो जाता है, तो वह अपनी बीमारी के दौरान की आध्यात्मिक स्थिति को बनाए रखने में सक्षम नहीं होगा और युवावस्था के नशीले लालच और वर्तमान समय की अनैतिकता के कारण अपव्यय में पड़ सकता है।

निष्कर्ष

अपनी असीम शक्ति और असीम दया को प्रदर्शित करने के लिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानव जाति को असीमित जन्मजात नपुंसकता या असहायता के साथ-साथ गरीबी या अभाव के साथ बनाया है। उन्होंने इसे एक मशीन के रूप में भी बनाया है जो उनके नामों के अनगिनत उदाहरणों को प्रदर्शित करने के लिए असीमित प्रकार के दर्द और असंख्य प्रकार के सुखों को प्राप्त करने की क्षमता रखती है।

उस मानव मशीन के भीतर सैकड़ों यंत्र हैं, जिनमें से प्रत्येक के अपने विशेष दर्द और सुख, कर्तव्य और पुरस्कार हैं। यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड में प्रकट सभी दिव्य नाम, जो कि वृहद स्तर पर मानव के उदाहरण की तरह है, मानव में भी प्रकट होते हैं, जो कि सूक्ष्म ब्रह्मांड है।

जो कुछ भी मनुष्य के लिए लाभदायक है, जैसे कि अच्छा स्वास्थ्य, भूख और सुख, मनुष्य को धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करता है, मशीन को कई मामलों में अपने कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है, और इस प्रकार मनुष्य एक कारखाना बन जाता है जो धन्यवाद पैदा करता है। इसी तरह, बीमारी, दर्द और अन्य चीजें जो दुख और परेशानी को भड़काती हैं, उस मशीन में अन्य तंत्रों को गति प्रदान करती हैं, जो मानव स्वभाव में निहित असहायता, कमजोरी और गरीबी की खानों को चलाती हैं। वे मनुष्य को ऐसी स्थिति में डालते हैं जहाँ वे मदद और शरण माँगने के लिए तैयार होते हैं, लेकिन केवल एक जीभ से नहीं बल्कि उसके सभी अंगों की जीभ से। इस प्रकार मनुष्य एक चलती हुई कलम की तरह बन जाता है जिसमें उन कष्टों के कारण हज़ारों अलग-अलग कलम होते हैं। मनुष्य अपने जीवन के इतिहास को अपने जीवन के पृष्ठ पर या एक पटिया पर अंकित करते हैं जो अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया से संबंधित है; वे इसे एक ऐसा मंच बनाते हैं जहाँ दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं और मानव सर्व-महिमावान प्राणी द्वारा रचित एक स्तोत्र की तरह बन जाता है, इस प्रकार वह अपनी रचना द्वारा अपेक्षित कर्तव्य को पूरा करता है।

तीसरी चमक

तीसरी चमक

ईश्वर और उसे प्रसन्न करने वाले अच्छे कर्मों को छोड़कर सब कुछ नाशवान है

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हर चीज़ नाशवान है, सिवाय उसके “चेहरे” के। न्याय और अधिकार केवल उसी का है, और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे। (28:88)

उन्होंने ऊपर बताई गई आयत के अर्थ को प्रतिध्वनित करते हुए, 'हे सदा रहने वाले, तू सदा रहने वाला है! हे सदा रहने वाले, तू सदा रहने वाला है!' वाक्यांश दोहराया , जो दो महत्वपूर्ण सत्यों को व्यक्त करता है। यही कारण है कि नक्शबंदिया के सूफी संप्रदाय के कुछ बुजुर्गों ने इसे एक निश्चित संख्या में दोहराना एक विशेष प्रार्थना बना दिया है, इसे एक संक्षिप्त नक्शी प्रार्थना के रूप में अपनाया है। चूंकि यह वाक्यांश उस महान आयत के अर्थ को प्रतिध्वनित करता है जिसका अर्थ ऊपर उल्लेख किया गया है, इसलिए हम इसके महत्वपूर्ण सत्य में शामिल कुछ बिंदुओं की जांच करेंगे।

पहला बिंदु

जब पहली बार यह वाक्य पढ़ा जाता है, तो हे सनातन, तू सनातन है! ईश्वर के अलावा हर चीज़ से दिल को काट देता है, जैसे कि किसी बड़ी हृदय शल्य चिकित्सा का रूप ले रहा हो। यह इस प्रकार होता है:

अपनी व्यापक प्रकृति के कारण ही मनुष्य लगभग समस्त सृष्टि से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य की व्यापक प्रकृति में प्रेम करने की असीम क्षमता भी शामिल है। इसके लिए मनुष्य को प्रेम करना चाहिए।

कारण, मनुष्य पूरी सृष्टि से प्रेम करता है। वे इस विशाल संसार से ऐसे प्रेम करते हैं मानो वह उनका घर हो; वे अनन्त स्वर्ग से ऐसे प्रेम करते हैं मानो वह उनका बगीचा हो। हालाँकि, सृष्टि का जो भी हिस्सा मनुष्य प्रेम करता है, वह नहीं रहता; वह सब विदा हो जाता है। इसलिए मनुष्य निरंतर वियोग की पीड़ा सहता है, और उसका असीम प्रेम असीम पीड़ा का साधन बन जाता है।

यह हमारी गलती है कि हम इतनी पीड़ा झेलते हैं, क्योंकि हमें प्यार करने की असीम क्षमता इसलिए दी गई है ताकि हम इसे उस एक की ओर मोड़ सकें जिसके पास अनंत, शाश्वत सौंदर्य है। मनुष्य तब गलती करता है जब वह नश्वर प्राणियों से प्यार करने की इस क्षमता का दुरुपयोग करता है और बदले में वियोग की पीड़ा के रूप में दंड भुगतता है।

और इसलिए, जब पहली बार पढ़ा जाता है, तो हे सनातन, आप सनातन हैं! वाक्यांश का अर्थ है कि व्यक्ति स्वयं को इस त्रुटि से शुद्ध कर रहा है और नश्वर सृष्टि को त्यागने से पहले उसे त्यागकर स्वयं को उससे आसक्ति से मुक्त कर रहा है, उसने अपने प्रेम को सनातन, प्रियतम तक सीमित कर दिया है। वे जो कह रहे हैं वह है, "एकमात्र सच्चा सनातन आप ही हैं! आपके अलावा बाकी सब नश्वर है। कोई भी नश्वर वस्तु निश्चित रूप से स्थायी प्रेम की वस्तु नहीं हो सकती; उसे अनंत काल के लिए बनाए गए हृदय द्वारा शाश्वत रूप से प्रेम नहीं किया जा सकता। चूँकि वे असंख्य प्रियतम नश्वर हैं और मुझे छोड़कर जाने के लिए बाध्य हैं, इसलिए मैं घोषणा करता हूँ, हे सनातन, आप सनातन हैं! और वे मुझे छोड़कर जाने से पहले उन्हें छोड़ दें। केवल आप ही सनातन हैं, और मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि प्राणी केवल आपके द्वारा बनाए जाने पर ही जीवित रह सकते हैं। इस प्रकार, उन्हें आपके प्रेम के कारण प्रेम किया जाना चाहिए। अन्यथा वे हृदय की आसक्ति के योग्य नहीं हैं।"

इस अवस्था में मानव हृदय असंख्य प्रेम-वस्तुओं को त्याग देता है। इन वस्तुओं की सुन्दरता और मनोहरता पर नश्वरता की छाप देखकर वह आसक्ति को तोड़ देता है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह प्रत्येक प्रियतम के लिए स्वयं को घाव देता है।

दूसरा वाक्य हे सनातन, आप सनातन हैं! उन घावों के लिए मरहम और इलाज दोनों का काम करता है। वह है: "हे सनातन! चूँकि आप सनातन हैं, इसलिए यह पर्याप्त है, आपने हर चीज़ की जगह ले ली है, और जो कुछ भी मौजूद है वह सिर्फ़ आपके अस्तित्व के कारण ही मौजूद है।"

वास्तव में, सृष्टि में जो भी सौंदर्य, कृपा या पूर्णता है, जो प्रेम के कारण हैं, वे वास्तव में शाश्वत ईश्वर की सुंदरता, कृपा और पूर्णता के संकेत हैं, और उनकी फीकी छायाएं हैं जो अनेक आवरणों के माध्यम से प्रतिबिम्बित होती हैं। यह भी कहा जा सकता है कि वे उनके सर्वसुंदर नामों के प्रकटीकरण की छायाओं की छायाएं हैं।

दूसरा बिंदु

मनुष्य में अमरता के प्रति एक भावुक प्रेम होता है। यह प्रेम ऐसा है कि कल्पना की क्षमता के कारण, मनुष्य सबसे पहले उस हर चीज़ में अमरता की कल्पना करता है जिसे वह प्यार करता है, और यही कारण है कि वह उससे प्यार करता है।

जब भी वे अपने प्रिय की मृत्यु के बारे में सोचते हैं या देखते हैं, तो वे अपने अस्तित्व की गहराई से चिल्ला उठते हैं। वियोग से उत्पन्न होने वाले सभी विलाप वास्तव में अमरता के प्रेम से उत्पन्न होने वाले रोने की व्याख्याएँ हैं। यदि मनुष्य अमरता को समझने में सक्षम नहीं होते, तो वे किसी भी चीज़ से प्रेम नहीं कर सकते। यह भी कहा जा सकता है कि शाश्वत क्षेत्र और शाश्वत स्वर्ग के अस्तित्व का एक कारण यह है कि मनुष्य अपने स्वभाव में अमरता के तीव्र प्रेम के कारण अमरता की उत्कट अभिलाषा रखते हैं, और समस्त मानवता स्वाभाविक रूप से अमरता के लिए प्रार्थना करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि महामहिम के शाश्वत परमेश्वर ने मनुष्यों की इस तीव्र, कभी न मिटने वाली, सहज अभिलाषा और उनकी प्रभावी, शक्तिशाली प्रार्थना को स्वीकार किया है कि उन्होंने इस क्षणभंगुर दुनिया में मरने के लिए बाध्य मानवता के लिए एक शाश्वत क्षेत्र बनाया है।

क्या यह सोचना संभव है कि उदार, दयालु सृष्टिकर्ता हमारे पेट की तुच्छ इच्छा और स्वभाव की जीभ के माध्यम से एक अस्थायी स्थायित्व या जीवन के लिए की गई प्रार्थना को स्वीकार करेगा, और असंख्य प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाएगा - क्या यह संभव है कि ऐसा उदार, दयालु सृष्टिकर्ता एक जबरदस्त जन्मजात आवश्यकता से उत्पन्न होने वाली सभी मानवता की भावुक इच्छा को स्वीकार नहीं करेगा, और एक सार्वभौमिक, गहरी जड़ वाली वास्तविकता के आधार पर मौखिक और सहज रूप से अमरता के लिए निरंतर प्रार्थना करेगा? भगवान न करे, एक लाख बार! यह असंभव है कि वह इसे स्वीकार न करे। इसका अस्वीकार कभी भी उसकी बुद्धि, उसके न्याय, उसकी दया और उसकी शक्ति के अनुरूप नहीं हो सकता।

चूँकि मनुष्य अमरता से बहुत प्रेम करते हैं, इसलिए उनकी सभी पूर्णताएँ और सुख अमरता पर निर्भर हैं। और चूँकि अमरता केवल उस सनातन महामहिम के लिए है और उस सनातन के नाम भी सनातन हैं, और चूँकि उस सनातन के दर्पण उस सनातन के रंग को धारण करते हैं, जो उसकी अभिव्यक्तियों को दर्शाता है, और उन्हें किसी प्रकार की अमरता का वरदान प्राप्त है, इसलिए निश्चित रूप से मनुष्य के लिए सबसे ज़रूरी बात, उसका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य, उसके साथ संबंध बनाना है।

अनन्त परमेश्वर के मार्ग पर जो कुछ भी खर्च किया जाता है, उसे किसी न किसी प्रकार की अमरता प्राप्त होती है।

तो, दूसरा हे सनातन, तू सनातन है! इस सत्य को व्यक्त करता है। मानवता के अनगिनत आध्यात्मिक घावों के लिए उपचार प्रदान करने के अलावा, यह अमरता की तीव्र इच्छा को संतुष्ट करता है जो मनुष्य में निहित है।

इसकी प्रकृति.

तीसरा बिंदु

इस दुनिया में, समय का चीज़ों की मृत्यु और क्षय पर बहुत ही विविध प्रभाव पड़ता है। हालाँकि चीज़ें और प्राणी एक दूसरे के भीतर संकेंद्रित वृत्तों की तरह मौजूद रहते हैं, लेकिन वे क्षय और मृत्यु में बहुत भिन्न होते हैं।

जैसे कि सेकंड, मिनट और घंटे गिनने वाली घड़ी की सुइयां दिखने में एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, लेकिन गति के मामले में अलग-अलग होती हैं, वैसे ही मनुष्य के शरीर, आत्मा, हृदय और आत्मा के क्षेत्र भी एक-दूसरे से अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, जबकि शरीर का जीवन, अस्तित्व और सहनशक्ति हर दिन या घंटे तक सीमित होती है, और हालाँकि उसे अतीत या भविष्य की कोई चेतना नहीं होती, हृदय का अस्तित्व और जीवन का एक विस्तृत क्षेत्र होता है जो कई दिनों तक फैला होता है, अतीत, वर्तमान और भविष्य दोनों में। जहाँ तक आत्मा का सवाल है, उसका जीवन और अस्तित्व का क्षेत्र वर्तमान दिन से पहले के वर्षों से लेकर उसके बाद के वर्षों तक फैला हुआ है।

इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए, जब हम परम दयालु, परम महिमावान परमेश्वर की आराधना में समय बिताते हैं, उसके ज्ञान और प्रेम से युक्त होते हैं, उसकी स्वीकृति और प्रसन्नता की खोज करते हैं, जो हृदय और आत्मा के जीवन का स्रोत है, तो इस संसार में हमारा क्षणभंगुर जीवन अनन्त जीवन के बीज को समाहित कर लेता है और उसका परिणाम होता है। यह अनन्त जीवन का प्रभाव ग्रहण करता है।

सचमुच, उस सनातन परमेश्वर के ज्ञान और प्रेम में उसकी प्रसन्नता के लिए बिताया गया एक सेकंड एक वर्ष के बराबर है। यदि उसे उसके लिए नहीं जिया जाए, तो एक वर्ष एक सेकंड से अधिक नहीं रहता। यह भी कहा जा सकता है कि उसकी प्रसन्नता के लिए बिताया गया एक सेकंड अमरता प्राप्त करता है। ईश्वरीय सत्य और आदेशों की अनदेखी करने वाले लोगों द्वारा इस संसार में बिताए गए सौ वर्ष वास्तव में केवल एक सेकंड हैं।

एक प्रसिद्ध कहावत है, "एक क्षण का वियोग एक वर्ष के बराबर होता है, और एक वर्ष का मिलन एक सेकंड के बराबर तेजी से बीत जाता है।" मैं इसके पूर्णतया विपरीत कहता हूँ कि, अनन्त महामहिम की प्रसन्नता की सीमा के भीतर ईश्वर के लिए एक क्षण का मिलन एक व्यक्ति के लिए खुलने वाली खिड़की है।

एक साल नहीं, बल्कि शायद एक हज़ार साल, गुमराही में बिताए गए-
ईश्वरीय सत्य और आदेशों की अवहेलना और अनदेखी दूसरे की तरह है।

एक और कहावत है जो इसकी पुष्टि करती है: "जब शत्रुओं की संगति में हो तो विशाल पृथ्वी एक प्याले के समान है, जबकि शत्रुओं की संगति में सुई की आँख
दोस्तों का रिश्ता एक विस्तृत क्षेत्र की तरह है।"

ऊपर कही गई पहली बात का सच्चा अर्थ यह है कि चूंकि नश्वर प्राणियों के साथ मिलन क्षणभंगुर है, इसलिए वह चाहे कितना ही लम्बा क्यों न हो, वह बहुत कम समय का होता है। ऐसे मिलन में एक वर्ष एक सेकण्ड के समान बीतता है, और वह एक भ्रम है। वह किसी दिवास्वप्न के समान होता है, जो पश्चाताप का कारण बनता है, या किसी स्वप्न के समान होता है, जो दुःख लाता है। अमरता की चाह रखने वाला मानव हृदय एक वर्ष के मिलन में क्षण भर का भी सुख ले सकता है। जहाँ तक वियोग का प्रश्न है, तो उसका एक क्षण एक वर्ष नहीं, अनेक वर्षों के समान हो जाता है। क्योंकि वियोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। चिरकाल की अभिलाषा रखने वाला हृदय वियोग के कारण वर्षों तक विनाश सहता है, चाहे वह वियोग एक सेकण्ड का ही क्यों न हो, क्योंकि वह असंख्य वियोगों को जन्म देता है। भूत और भविष्य का सारा समय भौतिक और सांसारिक प्रेमों के वियोग से भरा हुआ है।

इस मामले के संबंध में हम कहते हैं:

> हे लोगों! क्या तुम अपने संक्षिप्त और व्यर्थ जीवन को लम्बा, अमर, लाभदायक और फलदायी बनाना चाहते हो? यह चाहना मनुष्य होने की स्वाभाविक आवश्यकता है; इसलिए अपना जीवन उस सनातन परमेश्वर के मार्ग पर लगाओ। क्योंकि जो कुछ भी सनातन परमेश्वर की ओर मुड़ता है, उसे अमरता की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है।

चूँकि हर कोई जुनूनी रूप से लंबी उम्र की कामना करता है और अमरता के लिए तरसता है, और चूँकि इस क्षणभंगुर जीवन को अनंत जीवन में बदलने का एक साधन है, निश्चित रूप से कोई भी व्यक्ति जो अभी भी अपनी मानवता को बचाए रखता है, वह उस साधन की तलाश करेगा और उस संभावना को वास्तविकता में बदलने की कोशिश करेगा, उसके अनुसार कार्य करेगा। प्रश्न में साधन इस प्रकार हैं: ईश्वर के लिए जो कुछ भी करना चाहिए वह करो, ईश्वर के लिए दूसरों से मिलो, और ईश्वर के लिए काम करो।

"परमेश्वर के लिए, परमेश्वर के खातिर, और परमेश्वर के कारण" के दायरे में कार्य करें।
तब आपके जीवन के सभी मिनट वर्षों के समान हो जायेंगे।

तथ्य यह है कि कुरान शक्ति और भाग्य की रात को एक हजार महीनों के बराबर या उससे भी बेहतर मानता है, जो कि लगभग अस्सी महीने है।

वर्षों, इस सत्य को इंगित करता है।2 साथ ही, स्वर्गारोहण3 जिसे हमारे पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कुछ ही मिनटों में किया, लेकिन जिसका समय के विस्तार से कई वर्षों का प्रभाव पड़ा - एक तथ्य जिसे संतत्व और सत्य के लोगों द्वारा निर्विवाद रूप से स्वीकार किया गया - इस सत्य को साबित करता है और तथ्यात्मक रूप से इसका प्रदर्शन करता है। स्वर्गारोहण के कुछ मिनट हजारों वर्षों के बराबर लंबे, व्यापक और व्यापक थे। क्योंकि पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, स्वर्गारोहण के माध्यम से स्थायित्व की दुनिया में प्रवेश किया, और उस दुनिया के कुछ मिनट इस दुनिया के हजारों वर्षों का गठन करते हैं।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, समय का विस्तार एक सर्वविदित तथ्य है जिसे कई संतों ने अनुभव किया है। ऐसा कहा जाता है कि कुछ संतों ने एक दिन का काम एक मिनट में कर दिया, कुछ ने एक साल के काम एक घंटे में पूरे कर दिए और कुछ अन्य ने एक मिनट में पूरी कुरान पढ़ ली।

सत्य और ईमानदारी वाले ऐसे लोग कभी भी जानबूझकर झूठ बोलने का साहस नहीं करते।
इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने समय के विस्तार के तथ्य को देखा है, जिसे अब तक व्यापक रूप से और सर्वसम्मति से रिपोर्ट किया गया है।

समय के विस्तार का एक उदाहरण जिसकी पुष्टि सभी कर सकते हैं, वह है सपनों में अनुभव किया जाना। जाग्रत दुनिया में एक दिन या कई दिन लग जाते हैं उन घटनाओं, शब्दों, सुखों और दुखों का अनुभव करने के लिए जिन्हें कभी-कभी एक मिनट के सपने में अनुभव किया जाता है।

संक्षेप में, निश्चय ही मनुष्य नश्वर है, किन्तु उसे अमरता के लिए तथा एक शाश्वत परमेश्वर के दर्पण के रूप में सृजा गया है, तथा उसे ऐसे कर्तव्य सौंपे गए हैं जो शाश्वत फल उत्पन्न करते हैं, तथा उसे ऐसा रूप दिया गया है जो शाश्वत परमेश्वर के शाश्वत नामों का माध्यम है।

ऐसी स्थिति में, ऐसे प्राणी का सच्चा कर्तव्य यह है कि वह अपनी सारी क्षमता और क्षमता के साथ अपने भीतर विद्यमान उस शाश्वत, शाश्वत परमेश्वर के नाम को दृढ़तापूर्वक धारण करे।

---

2 कुरान में लिखा है:

हमने इसे (क़ुरआन को) नियति और शक्ति की रात में उतारा है। तुम क्या समझते हो कि नियति और शक्ति की रात क्या है? नियति और शक्ति की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रूह अपने रब की अनुमति से उसमें हर काम के लिए उसके फ़ैसले के साथ उतरते हैं। यह फ़ज़्ल के निकलने तक के लिए निहायती रहमत और निश्चिंतता है। (97:1-5)

सर्वशक्तिमान ईश्वर भाग्य और शक्ति की रात को छिपा कर रखता है ताकि लोग हर रात का महत्व समझें और उस दौरान उसकी पूजा करें। ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) सलाह देते हैं कि हम इसे रमज़ान के पवित्र महीने की आखिरी दस रातों में देखें। (त्र.)

3 स्वर्गारोहण (अल-मिराज): पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की चमत्कारी यात्रा, रूपों की सीमा से परे अस्तित्व के क्षेत्रों के माध्यम से, जिसके दौरान उन्होंने ईश्वर के सर्वोच्च संकेतों को देखा।

जो चीजें उसे पसंद हैं उनकी सीमाओं को पार करना और अनंत काल के मार्ग पर उसकी ओर बढ़ना। जैसे उनकी जीभ कहती है, “हे सनातन, आप ही सनातन हैं!”, वैसे ही उनका हृदय, आत्मा, मन और उनकी अन्य सभी क्षमताएँ भी होनी चाहिए

उच्चारण:

> वह शाश्वत है! वह शाश्वत है, समय में अप्रतिबंधित है! वह सर्वव्यापी है! वह सर्वव्यापी है! वह खोजा जाने वाला है! वह प्रिय है! वह वांछित है! वह पूजित है!

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

> हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना!

चौथी चमक

चौथी चमक

सुन्नत का राजमार्ग

इस ग्रंथ के लिए शीर्षक “सुन्नत का राजमार्ग” उपयुक्त है।

हालाँकि इमामत और खिलाफत का मामला गौण महत्व का है, लेकिन धर्मशास्त्र और धर्म के मूल तत्वों में इसे अत्यधिक महत्व दिया गया है और इस पर चर्चा की गई है। इसलिए, चूँकि इसका कुरान और आस्था के प्रति हमारे बुनियादी कर्तव्य से संबंध है, इसलिए यहाँ इस पर आंशिक रूप से चर्चा करना उचित है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है, उसके लिए तुम पर बहुत दुःख है, वह तुम्हारे लिए बड़ा चिंतित है और ईमानवालों के लिए दयावान है। फिर भी यदि वे तुमसे मुँह फेर लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया है और वही अर्श का स्वामी है।" (9:128-129)

कह दो, "मैं तुमसे इसके बदले में कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, परन्तु अपने निकट सम्बन्धियों से प्रेम करो।" (42:23)

वह दो स्थानों पर इन शक्तिशाली श्लोकों में निहित अनेक महान सत्यों में से दो को इंगित करेगा।

पहला स्टेशन

इस स्टेशन में चार प्वाइंट हैं।

पहला बिंदु

यह ईश्वर के सबसे महान् दूत - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की अपने समुदाय के प्रति पूर्ण दया और करुणा को उजागर करता है।

जैसा कि विश्वसनीय स्रोतों में वर्णित है, जबकि अन्य सभी, यहां तक कि अन्य नबियों को भी, यह महसूस होगा कि क़ियामत के दिन उनके लिए बहुत सारी परेशानियां होंगी, ईश्वर के सबसे महान दूत - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने लोगों के लिए पूरी तरह से चिंतित होंगे और पुकारेंगे, "मेरे समुदाय! मेरे समुदाय!" साथ ही, जैसा कि समय और कुछ गुप्त सत्यों और घटनाओं को जानने वाले संतों द्वारा विश्वसनीय रूप से वर्णित और पुष्टि की गई है, जब वह नवजात थे, तो उनकी मां ने उन्हें अपने समुदाय के लिए प्रार्थना करते हुए सुना, "मेरे समुदाय! मेरे समुदाय!" इसके अलावा, उनके पूरे जीवन इतिहास और उनके द्वारा प्रदर्शित और प्रचारित किए गए आचरण के प्रशंसनीय, उच्च मानक उनकी पूर्ण करुणा और स्नेह को प्रदर्शित करते हैं, अपने पूरे समुदाय से उनके लिए प्रार्थना करने के लिए कहकर (ताकि उन्हें अधिक शक्ति मिल सके और अपने संदेश को पहुंचाने और अपने समुदाय के मामलों से निपटने में अधिक सफल हो सकें), उन्होंने दिखाया कि वह उन सभी की खुशी के बारे में चिंतित थे और इस प्रकार उन्होंने अपनी असीम करुणा प्रदर्शित की। अतः आप समझ सकते हैं कि ऐसे स्नेही और दयालु नेता के मार्ग का अनुसरण न करना कितनी बड़ी कृतघ्नता और अन्याय होगा।

दूसरा बिंदु

पैगंबरी के अपने सार्वभौमिक और सर्वव्यापी कर्तव्यों के बीच, सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कुछ विशेष, छोटे तत्वों के लिए बहुत दया दिखाई। सतही तौर पर देखा जाए तो ऐसे तत्वों के लिए उनकी महान करुणा पैगंबरी के मिशन के सर्वोच्च महत्व के साथ असंगत लग सकती है। लेकिन वास्तव में, चूंकि ऐसे छोटे तत्व एक श्रृंखला में अनुकरणीय कड़ी थे जो पैगंबरी के सार्वभौमिक कर्तव्य की पूर्ति का साधन बनेंगे, इसलिए श्रृंखला की खातिर ऐसी कड़ियों को असाधारण महत्व दिया गया।

उदाहरण के लिए, महानतम पैगंबर -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने हसन और हुसैन के प्रति उनके बचपन में जो असाधारण दया दिखाई और उन्हें जो महान महत्व दिया, वह केवल पारिवारिक संबंध के कारण उनके प्यार से उत्पन्न नहीं हुआ था; बल्कि उनके प्रति उनका स्नेह इसलिए था क्योंकि वे एक असाधारण महत्वपूर्ण समुदाय की उत्पत्ति, उदाहरण और सूचक के रूप में कार्य करेंगे जो पैगंबर के माध्यम से स्थापित धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करेगा।

वास्तव में, जब सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने हसन को, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, अपनी असाधारण दया से अपनी बाहों में लिया और उनके सिर को चूमा, तो उन्होंने ऐसा केवल उनके प्रति अपने प्रेम और स्नेह के कारण ही नहीं किया, बल्कि पैगंबरी के मिशन के कुछ महदी-जैसे[5] उत्तराधिकारियों और मुहम्मद के पवित्र शरिया के वाहकों जैसे ग़ौथ अल-आज़म शाह जिलानी[6] के लिए भी किया, जो उनके धन्य, प्रकाश-प्रसारक वंशजों में से होने वाले थे। उन्होंने पैगंबरी की नज़र से देखा कि वे भविष्य में क्या पवित्र सेवा करेंगे, और उन्हें मंजूरी दी और उनकी सराहना की, और अपनी स्वीकृति और प्रोत्साहन के संकेत के रूप में हसन के सिर को चूमा।

इसके अलावा, उन्होंने हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की गर्दन को चूमा और इस तरह उनके प्रति अपनी असाधारण करुणा और उनके प्रति अपने असाधारण महत्व को दर्शाया। यह न केवल हुसैन के लिए था, बल्कि जैन अल-अबिदीन और जाफर अस-सादिक जैसे कई महदी जैसे प्रकाश फैलाने वाले व्यक्तियों के लिए भी था, जो उनके उज्ज्वल वंशजों में प्रतिष्ठित इमाम के रूप में दिखाई देंगे, और इस्लाम धर्म और संदेशवाहक के मिशन के कारण भी।

पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के पास एक ऐसा दिल था जो अदृश्य से निश्चित ज्ञान प्राप्त कर सकता था, और रोशन आँखें थीं जिनके साथ वह इस दुनिया में खुशी के युग से अनंत काल की ओर सर्वोच्च सभा के स्थान का निरीक्षण कर सकते थे, स्वर्ग और पृथ्वी को देख सकते थे।

---

4 हसन और हुसैन, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पोते हैं, उनकी प्यारी बेटी फातिमा और उनके चचेरे भाई अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के माध्यम से। (ट्र.)

5 महदी उस व्यक्ति की उपाधि है जिसके बारे में वादा किया गया है कि वह इस्लामी पंथ और जीवन को पुनर्जीवित करने और दुनिया में न्याय स्थापित करने के लिए समय के अंत में आएगा। (ट्र.)

6 अब्दुल-कादिर अल-जिलानी (मृत्यु 1166): सबसे प्रसिद्ध सूफी गुरुओं में से एक। न्यायशास्त्र और हदीस के छात्र, वे **अपने युग के** कुतुब (आध्यात्मिक ध्रुव) और ग़ौथ अल-अज़म **(सबसे बड़ी सहायता) के रूप में जाने जाते थे।** उन्होंने किताब अल-घुन्याह, फ़ुतुह अल-ग़ैब और अल-फ़तह अर-रब्बानी लिखीं ।

धरती से स्वर्ग में फ़रिश्तों पर नज़र रखना, आदम के समय से अतीत के अंधेरे पर्दों में छिपी घटनाओं पर नज़र रखना और भविष्य को भेदना।7 उन्हें सर्वशक्तिमान के कुछ प्रकार के दर्शन का भी वरदान प्राप्त था।8 उस महान पैगम्बर ने निश्चित रूप से आध्यात्मिक ध्रुवों को देखा था

(आध्यात्मिक नेता), और इमाम जो नबूवत के कर्तव्यों के उत्तराधिकारी होंगे, और महदी जैसे व्यक्ति, जो हसन और हुसैन से उतरेंगे, और उनकी ओर से उनके सिर को चूमेंगे। इसलिए, शाह जिलानी को हसन को मिले चुम्बन का हिस्सा मिला है।

तीसरा बिंदु

एक व्याख्या के अनुसार, आयत का अर्थ, ' मैं इसके लिए (ईश्वर के धर्म को आप तक पहुँचाने के लिए) तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, बल्कि (मैं तुमसे) अपने निकट संबंधियों के प्रति प्रेम माँगता हूँ' (42:23) यह है कि सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने संदेशवाहक के कर्तव्य को पूरा करने के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं माँगा, लेकिन उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम दिखाने के लिए कहा।

इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि इसका अर्थ यह है कि रसूल अपने परिवार के लिए लाभ की खोज कर रहा था, फिर भी, ईश्वरीय घोषणा के अनुसार, निस्संदेह तुममें सबसे श्रेष्ठ, सबसे सम्माननीय व्यक्ति वह है जो ईश्वर के निकट धर्मपरायणता, धार्मिकता और ईश्वर के प्रति श्रद्धा में सर्वश्रेष्ठ है (49:13), रसूल के मिशन में पारिवारिक संबंध नहीं, बल्कि ईश्वर से निकटता शामिल है।

उत्तर: अपनी भविष्यदर्शी दृष्टि से, सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने देखा कि उनका परिवार इस्लाम की दुनिया में एक प्रकाश फैलाने वाले वृक्ष की तरह बन जाएगा। मानव पूर्णता की प्राप्ति में हर स्तर और स्तर पर लोगों का मार्गदर्शन और निर्देश करने वालों की भारी संख्या उनके वंशजों में से होगी। उन्होंने देखा कि प्रार्थना के अंतिम भाग में उनके समुदाय की उनके परिवार के लिए प्रार्थना, "हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद और हमारे स्वामी मुहम्मद के परिवार पर अपनी कृपा बरसाओ, जैसा कि तुमने इब्राहीम और इब्राहीम के परिवार पर अपनी कृपा बरसाई थी। निस्संदेह, आप सर्व-प्रशंसनीय, सर्वोत्कृष्ट हैं," स्वीकार की जाएगी। दूसरे शब्दों में, जिस तरह इब्राहीम के लोगों में प्रकाश फैलाने वाले मार्गदर्शकों की भारी संख्या थी

---

7 अल-बुखारी, अल-जामी अस-सहीह, "रिकाक़" 44, "मवाक़ित अस-सलाह" 11, मनाकिब, 1; मुस्लिम, अल-जामी अस-सहीह, "मुनाफिकुन" 28, "फडेल" 136; एट-तिर्मिज़ी, सुनान, "ज़ुहद" 9, "तफ़सीर सुरा" 42. (ट्र.)

8 एट-तिर्मिज़ी, "तफ़सीर सूरा" 53; अत-तबरानी, अल-मुअज़म अल-कबीर, 11:332; अल-हकीम, अल-मुस-तद्रक, 2:629. (ट्र.)

अपने वंश से निकले पैगम्बरों में, उन्होंने अपने परिवार में सबसे महान मार्गदर्शकों और विद्वानों को देखा, जो सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी कर्तव्यों को पूरा करेंगे और आध्यात्मिक मार्गों पर नेतृत्व करेंगे, इस्लाम और उसके अभ्यास की शिक्षा देंगे - ऐसे लोग जो इस्लाम में वह कार्य करेंगे जो इसराइल के पैगम्बरों ने इसराइल की संतान के इतिहास में किया था। इसी वजह से उन्हें यह घोषणा करने का आदेश दिया गया कि, मैं तुमसे इसके लिए (भगवान के धर्म को तुम तक पहुँचाने के लिए) कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, लेकिन (मैं तुमसे) अपने निकट रिश्तेदारों के लिए प्रेम माँगता हूँ, उन्होंने अपने समुदाय से अपने परिवार से प्रेम करने के लिए कहा। इसकी पुष्टि करने वाली कई अन्य घोषणाओं में से एक में, उन्होंने आदेश दिया, "मैं तुम्हारे लिए दो अनमोल चीजें छोड़ता हूँ। यदि तुम उन्हें मजबूती से थामे रहोगे, तो तुम्हें मुक्ति मिलेगी। वे हैं ईश्वर की किताब और मेरा परिवार।"9 क्योंकि पैगम्बर की सुन्नत का स्रोत और संरक्षक उनका परिवार था और वे सबसे पहले हर तरह से इसका पालन करने के लिए जिम्मेदार थे।

यह सत्य, जिसे सबसे महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने घोषित किया था, बाद की पीढ़ियों में किताब और सुन्ना के अनुसरण के शीर्षक के तहत प्रसारित किया गया है - पैगंबर का मार्ग। इसका मतलब यह है कि अपने परिवार को अपने समुदाय के ध्यान में लाकर उन्होंने अपने संदेशवाहक के मिशन के संबंध में अपनी सुन्ना के महत्व पर जोर दिया। इसलिए, जो व्यक्ति सुन्ना का पालन करना छोड़ देता है, वह न तो पैगंबर के परिवार से संबंधित माना जा सकता है और न ही उनका सच्चा दोस्त बन सकता है।

इसके अलावा, वह अपने समुदाय को अपने परिवार के इर्द-गिर्द इकट्ठा करना चाहता था, क्योंकि ईश्वर की इच्छा से, वह जानता था कि समय के साथ उसका परिवार बढ़ेगा और इस्लाम कमज़ोर होने वाला है। इसलिए, एकजुटता में लोगों का एक बहुत ही मज़बूत समूह ज़रूरी था ताकि यह इस्लाम की दुनिया की आध्यात्मिक और नैतिक प्रगति का साधन और केंद्र बन सके। ईश्वर की इच्छा से, उसने इस बारे में सोचा और अपने समुदाय को अपने परिवार के इर्द-गिर्द इकट्ठा करना चाहा।

हालाँकि पैगम्बर के परिवार के सदस्य हमेशा दूसरों से ईमान और विश्वास में आगे नहीं थे, फिर भी वे इस्लाम के प्रति समर्पण और समर्थन के मामले में उनसे बहुत आगे थे। क्योंकि वे इस्लाम के प्रति इसलिए प्रवृत्त थे क्योंकि सबसे पहले तो वे ईश्वर के रसूल के ही परिवार से थे।

पारिवारिक संबंधों से मिलने वाला समर्थन या पक्षपात आसानी से नहीं छोड़ा जा सकता, चाहे वह कितना भी कमज़ोर क्यों न हो और भले ही वह समर्थन या पक्षपात अन्याय का कारण क्यों न हो। इसलिए, विशेष रूप से जब यह विचार किया जाए कि जिस सत्य का पालन पैगम्बर के परिवार ने किया और जिसके पालन में (सत्य)

---

9 मुस्लिम, "फ़ैडेल" 37; एट-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 77; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:14. (ट्र.)

उनकी महिमा दुनिया की सबसे शक्तिशाली, मौलिक और गौरवशाली सच्चाई है, और जिसके लिए उनके कई सदस्यों ने अपने प्राणों की आहुति दी, क्या उनके लिए कभी उसका समर्थन छोड़ना संभव था? यह उनके इस्लाम के प्रति पूर्वनिर्धारित, अडिग निष्ठा के कारण ही था कि पैगंबर के परिवार ने इस्लाम धर्म के पक्ष में सबसे छोटी निशानी को भी स्वीकार कर लिया, जैसे कि वह एक शक्तिशाली सबूत हो। क्योंकि इस्लाम के प्रति उनकी स्वेच्छापूर्ण निष्ठा पारिवारिक संबंधों के माध्यम से समर्थित थी। अन्य लोग इसकी सच्चाई के प्रति आश्वस्त हो गए और कुछ शक्तिशाली सबूत देखने के बाद ही समर्थन दिया।

चौथा बिंदु

तीसरे बिन्दु के सम्बन्ध में हम संक्षेप में उस विषय की जांच करेंगे जो शिया और अहल-उल-सुन्ना वल-जमा के बीच विवाद का बिन्दु बन गया है और जिसे इस सीमा तक बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया है कि वह ईमान के सिद्धांतों से सम्बन्धित पुस्तकों और विश्वास के मूल तत्वों में पाया जाता है।

अहल अल-सुन्ना वल-जमा का कहना है कि अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, सही मार्गदर्शित खलीफाओं में योग्यता के मामले में चौथे स्थान पर थे। अबू बकर अस-सिद्दीक, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, पहले खलीफा बने क्योंकि वह अधिक योग्य थे और इसलिए खलीफा बनने के लिए अधिक उपयुक्त थे। शिया दावा करते हैं कि खिलाफत अली का अधिकार था, और उनके साथ अन्याय हुआ था। वह बाकी सभी से श्रेष्ठ थे। उनके तर्कों का सारांश इस प्रकार है: अली की योग्यताओं के बारे में कई पैगंबरी परंपराएं हैं; अली संतों के भारी बहुमत के पूर्वज और आध्यात्मिक मार्गों के स्रोत थे - उन्हें "संतत्व के राजा" के रूप में जाना जाता है; पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने उनमें और पैगंबर के परिवार के सदस्यों में बहुत रुचि दिखाई, जो अली के वंशज थे; पैगंबर की बेटी फातिमा के पति के रूप में, वह पैगंबर के वंशजों के पिता थे। शिया दृष्टिकोण के अनुसार, ये सभी बातें यह प्रदर्शित करती हैं कि 'अली अन्य लोगों से श्रेष्ठ थे और खिलाफत उनका अधिकार था; वे मानते हैं कि यह उनसे छीन ली गई थी।

शियाओं के दावों का उत्तर : ' अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, ने बार-बार स्वीकार किया कि पहले तीन खलीफा खिलाफत के हकदार थे। उन्होंने बीस साल से अधिक की अवधि के लिए उनकी खिलाफत के दौरान उनका पालन किया और उनका अनुसरण किया, और उनकी खिलाफत में शेख अल-इस्लाम10 का पद संभाला। ये वास्तविकताएँ शियाओं के दावों का खंडन करती हैं। इसके अलावा-

---

10 शेख अल-इस्लाम का पद सर्वोच्च धार्मिक अधिकारी का प्रतीक है। (ट्र.)

इस्लाम की जीत और पहले तीन खलीफाओं के समय में उसके दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष और अली के समय में आंतरिक संघर्ष भी इस्लामी खिलाफत के बारे में शियाओं के दावों का खंडन करते हैं। ये सभी सुन्नी दावों का समर्थन करते हैं।

प्रश्न: शिया दो समूहों में विभाजित हैं: एक संत-मुस्लिम शिया हैं।

दूसरे समूह के लोग खलीफा के शिया हैं। अगर हम यह भी मान लें कि दूसरे समूह के लोग गलत हैं, जो उनके राजनीतिक, उद्देश्यपूर्ण पक्षपात से उपजा है, तो भी पहले समूह के लोग कोई जानबूझकर राजनीतिक रवैया नहीं रखते। हालांकि, वे दूसरों का समर्थन करते हैं। यानी, सूफी संप्रदायों के कुछ संत अली को श्रेष्ठ और खिलाफत के अधिक हकदार मानते हैं और अपने दावों में खिलाफत के शियाओं की पुष्टि करते हैं।

उत्तर : हमें अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को दो दृष्टिकोणों से देखना चाहिए। एक दृष्टिकोण उनकी व्यक्तिगत पूर्णता और पद का है, और दूसरा दृष्टिकोण पैगंबर के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करना है। यह सामूहिक व्यक्तित्व, एक तरह से, सबसे महान पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की आवश्यक प्रकृति को प्रकट करता है।

पहले दृष्टिकोण के संबंध में, सभी सत्यापनकर्ता विद्वान, जिनमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण 'अली खुद शामिल हैं, अबू बकर और 'उमर को प्राथमिकता देते हैं, और इस्लाम की सेवा और ईश्वर से निकटता में उनके पदों को उच्चतर मानते हैं। दूसरे दृष्टिकोण के लिए, पैगंबर के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व के प्रतिनिधि के रूप में, जो मुहम्मदी सत्य के एक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, 'अली का कोई समान नहीं है। इस प्रकार, जब हम 'अली के बारे में अत्यधिक प्रशंसनीय पैगंबरी परंपराओं की जांच करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि वे इस दूसरे बिंदु से संबंधित हैं। एक सटीक रूप से वर्णित परंपरा जो इस तथ्य की पुष्टि करती है, कहती है, "हर दूसरे पैगंबर के वंशज उसी से हैं। मेरे वंशज 'अली' के हैं।"12

अली के बारे में प्रशंसात्मक परंपराएं अन्य तीन खलीफाओं की तुलना में अधिक हैं और वे इतने व्यापक क्यों हो गए हैं, इसका कारण यह है कि अली पर गलत हमले और उनके अपमान के सामने

---

11 मुहम्मदी सत्य सार्वभौमिक सत्तामूलक, नैतिक और आध्यात्मिक सत्य या अर्थ है जिसे पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - प्रस्तुत करते हैं। (ट्र.)

12 अत-तबरानी, अल-मुअजम अल-कबीर, 3:43; अद-दयालामी, अल-मुस्नद, 1:172.

उमय्यदों13 और ख़ारिजियों14 ने, जो सत्य के पक्षधर थे, उनके बारे में परंपराओं को दूर-दूर तक प्रचारित किया। चूँकि अन्य सही मार्ग पर चलने वाले खलीफ़ाओं को ऐसी आलोचना या अपमान का लक्ष्य नहीं बनाया गया था, इसलिए उनके बारे में परंपराओं को फैलाने की कोई ज़रूरत नहीं समझी गई।

इसके अतिरिक्त, ईश्वर के महानतम रसूल -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने पैगम्बरी की दृष्टि से देखा कि अली - ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - भविष्य में दुखद घटनाओं और आंतरिक असंतोष का अनुभव करेंगे, और उन्हें निराशा से बचाने के लिए और उनके समुदाय को उनके बारे में बुरी राय बनाने से बचाने के लिए, उन्होंने उन्हें सांत्वना दी और अपने समुदाय को महत्वपूर्ण परंपराओं के साथ निर्देशित किया जैसे कि "जिसका मैं मालिक हूं, अली भी उनके मालिक हैं।"15

संतत्व के शियाओं द्वारा अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के प्रति अत्यधिक प्रेम और उन्हें पहले तीन खलीफाओं से श्रेष्ठ मानना, जो सूफी मार्ग पर चलने के प्रभाव में हुआ, उन्हें खिलाफत के शियाओं जितना उत्तरदायी नहीं बनाता। क्योंकि अपने मार्ग के कारण, संतत्व के मार्ग पर चलने वाले लोग अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को प्रेम से देखते हैं। प्रेम स्वभाव से अत्यधिक होता है, और वास्तव में प्रेमी को उस पद से बड़ा देखना चाहता है, जो वास्तव में प्रेमी के पास है।

प्रेम की अधिकता के लिए उन्मादियों को क्षमा किया जा सकता है, बशर्ते कि 'अली को श्रेष्ठ मानना', जो उनके प्रेम से उत्पन्न होने वाली भावना है, अन्य सही मार्गदर्शित खलीफाओं के प्रति अपमान या शत्रुता की ओर न ले जाए और इस्लाम की आवश्यक शिक्षाओं से परे न जाए।

जहाँ तक खिलाफत के शियाओं का सवाल है, चूँकि उनका दृष्टिकोण राजनीतिक पूर्वाग्रह के प्रभाव में है, इसलिए उन्हें आक्रोश या आक्रामकता से बचाया नहीं जा सकता, और वे इस मामले में माफ़ी पाने का अपना अधिकार खो देते हैं। चूँकि फ़ारसी राष्ट्रीय गौरव उमर के हाथों घायल हुआ था, इसलिए वे इस तरह से कार्य करते हैं कि

---

13 उमय्यद इस्लाम के शुरुआती इतिहास में कुरैश (मक्का के मूल निवासी) से संबंधित एक शक्तिशाली कबीला था। इसके कई सदस्यों ने इस्लाम और पैगंबर का विरोध किया, लेकिन बाद में उन्होंने आम तौर पर इस्लाम स्वीकार कर लिया। उनके नेता अबू सुफ़यान के बेटे मुआविया इब्न अबी सुफ़यान ने अली के खिलाफ़त के दौरान उनका विरोध किया और उनके बाद खलीफ़ा बन गए। इस प्रकार, उम-अय्यद राजवंश का शासन, जो लगभग नब्बे साल तक चला, मुआविया की खिलाफ़त के साथ शुरू हुआ। (ट्र.)

14 ख़ारिजियों ने अली का समर्थन किया था, लेकिन बाद में उनका विरोध किया और उनके साथ युद्ध किया क्योंकि अली ने स्वीकार किया था कि यह उनके और मुआविया के पक्ष के मध्यस्थों के निर्णय पर निर्भर करेगा कि ख़लीफ़ा के लिए कौन अधिक हकदार है। उन्होंने एक शक्तिशाली देशद्रोही समूह बनाया और कई बार सरकार के खिलाफ़ विद्रोह किया। (ट्र.)

15 एट-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 19; इब्न माजा, सुनान, "मुक़द्दिमा" 11; अहमद इब्न हनबल, अल-मुस्नद, 1:84, 118; . (ट्र.)

ऐसा लगता है कि यह कहावत इस बात की पुष्टि करती है कि, “अली के प्यार के कारण नहीं बल्कि उमर के प्रति नफ़रत के कारण”; वे अली के प्रति प्रेम के रूप में अपने बदले की भावना प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, अम्र इब्न अल-अस का अली के विरुद्ध विद्रोह और उमर इब्न साद का हुसैन के विरुद्ध दुखद युद्ध,16 अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, ने शियाओं को उमर के नाम के प्रति तीव्र घृणा और शत्रुता का अनुभव कराया।

संतत्व प्राप्त शियाओं को अहल अल-सुन्ना व-जमा की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि अहल अल-सुन्ना व-जमा अली को नीचा नहीं दिखाते; बल्कि वे उनसे सच्चे दिल से प्यार करते हैं। लेकिन वे अपने प्यार में अति करने से बचते हैं, क्योंकि इसे रिवायतों में खतरनाक बताया गया है।17 रिवायतों18 में अली के अनुयायियों की पैगंबर की प्रशंसा अहल अल-सुन्ना व-जमा को संदर्भित करती है।

जमाअत। अली के अनुयायी जो उनसे उसी तरह प्यार करते हैं जिस तरह से उनसे प्यार किया जाना चाहिए, वे अहल अल-सुन्ना वल-जमाअत हैं, जो सत्य के लोग हैं। जिस तरह ईसा मसीह (उन पर शांति हो) से अत्यधिक प्रेम उन ईसाइयों के लिए खतरनाक है जो उन्हें ईश्वर मानते हैं, उसी तरह प्रामाणिक परंपराओं में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अली से अत्यधिक प्रेम खतरनाक है।

प्रश्न: यदि संतत्व के शिया यह आपत्ति करते हैं कि एक बार अली की असाधारण श्रेष्ठताएं स्वीकार कर ली गईं, तो अबू बकर सिद्दीक को उनके ऊपर रखना संभव नहीं है, तो इसका उत्तर इस प्रकार है:

उत्तर : जब अबू बकर सिद्दीक अकबर और उमर फारूक आज़म (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की व्यक्तिगत श्रेष्ठताएं और खिलाफत के दौरान पैगम्बर से प्राप्त इस्लामी कर्तव्यों के निर्वहन में उनकी उपलब्धियों को, अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की असाधारण व्यक्तिगत श्रेष्ठताओं और खिलाफत के लिए उनके संघर्षों के साथ तौला जाता है, जो उन्हें उन दुखद घटनाओं के कारण झेलने के लिए मजबूर होना पड़ा, जो एक निश्चित अविश्वास का परिणाम थीं, तो अहल सुन्नाह का मानना है कि अबू बकर, उमर या उस्मान धुअन-नूरैन का वजन भारी है और इसलिए वे उन्हें उच्च दर्जा प्राप्त समझते हैं।

इसके अलावा, जैसा कि बारहवें और चौबीसवें अनुच्छेद में दर्शाया गया है
नबूवत एक ऐसा उच्च पद है कि संत-पद की तुलना में, नबूवत का एक छोटा सा रूप एक महान व्यक्ति से श्रेष्ठ है-

---

16 हुसैन, 'अली के छोटे बेटे और पैगंबर के छोटे पोते ने मुआविया के बाद यज़ीद की खिलाफत को स्वीकार नहीं किया और उसका विरोध किया। 681 में इराक के कर्बला में अपने परिवार के अधिकांश सदस्यों के साथ उन्हें दुखद रूप से शहीद कर दिया गया।' उमर इब्न साद यज़ीद की सेना का कमांडर था जिसने उन्हें मार डाला। (ट्र.)

17 अन-नासाई, सुनान, 5:137; अहमद इब्न हनबल, अल-मुस्नद, 1:160। (ट्र.)

18 अत-तबरानी, अल-मुअज़म अल-अवसत, 6:354-355। (ट्र.)

संतत्व की स्थापना। इस दृष्टिकोण से, अहल अल-सुन्ना इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अबू बकर और उमर की खिलाफत के दौरान सफलता यह दर्शाती है कि ईश्वर ने उन्हें पैगंबरी के कर्तव्यों के उत्तराधिकार और ईश्वर के रसूल द्वारा लाए गए कानूनों की स्थापना में अधिक हिस्सा दिया था। चूँकि अली की व्यक्तिगत श्रेष्ठताएँ, ईश्वर उनसे प्रसन्न हों, पैगंबरी के कर्तव्यों के उत्तराधिकार से प्राप्त होने वाले अधिक हिस्से से आगे नहीं बढ़ीं, इसलिए उन्होंने अबू बकर और उमर के लिए शेख अल-इस्लाम (इस्लाम के सबसे बड़े विद्वान और मुख्य मुफ़्ती) के रूप में काम किया - शेखैन अल-मुकर्रमैन (दो महान सरदार या मुख्य नेता) - उनकी खिलाफत के समय में, और उन्होंने उनका सम्मान किया। अहल अल-सुन्ना, सत्य के लोग, उन शेखों से प्यार और सम्मान कैसे न करें, जिन्हें अली ने ईमानदारी से प्यार और सम्मान दिया है? आइये इस सत्य को एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करें:

एक बहुत धनी व्यक्ति के तीन बेटों में से एक को उसके पिता की विरासत से बीस सिक्के चांदी के और चार सिक्के सोने के दिए गए, जबकि दूसरे को पांच सिक्के चांदी के और पांच सिक्के सोने के दिए गए, तथा तीसरे को तीन सिक्के चांदी के और पांच सिक्के सोने के दिए गए।

स्पष्ट है कि अंतिम दो को मात्रा में कम, लेकिन गुणवत्ता में अधिक मिलता है। (अर्थात, अंतिम दो को दिया गया एक अतिरिक्त सोने का सिक्का पहले वाले को मिलने वाले अतिरिक्त पंद्रह चांदी के सिक्कों से अधिक मूल्यवान है।) जैसा कि इस उदाहरण में है, पैगंबरी के कर्तव्यों के उत्तराधिकार और ईश्वर के रसूल द्वारा लाए गए कानूनों की स्थापना से ईश्वर की निकटता के सोने में शेखान के हिस्से की थोड़ी अतिरिक्त मात्रा, ईश्वर की निकटता के चांदी में अली के हिस्से की बहुत अधिक मात्रा से भारी है जो उनके संतत्व और व्यक्तिगत उत्कृष्टताओं की पूर्णता से आती है। हमें इस बिंदु पर तुलना करनी चाहिए। लेकिन अगर साहस, ज्ञान और संतत्व के दृष्टिकोण से उनकी एक-दूसरे के साथ तुलना की जाती है, तो परिणाम बदल जाते हैं।

इसके अलावा, 'अली पैगंबर के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व और मुहम्मदी सत्य का प्रतिनिधित्व करने के मामले में अतुलनीय है, जो कि उस सामूहिक व्यक्तित्व में पैगंबर के पूर्ण उत्तराधिकार के रूप में प्रकट हुआ था, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। क्योंकि यह बिंदु खुद पैगंबर की अतुलनीय महानता और सार्वभौमिक मिशन से संबंधित है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

जहाँ तक खिलाफत के शियाओं का सवाल है, वे अहल अल-सुन्ना वल-जमा के सामने कोई ठोस दावा नहीं कर सकते। हालाँकि खिलाफत के शिया अली के प्रति असाधारण प्रेम का दावा करते हैं, लेकिन उनके सिद्धांतों का मतलब यह है कि अली ने अनैतिक व्यवहार किया। क्योंकि , वास्तव में वे उसका अपमान करते हैं, और उनके वे कहते हैं कि

हालाँकि अबू बकर और उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने अन्याय किया और उनके साथ अन्याय किया, अली ने दिखावा किया कि वह उनसे सहमत हैं। शिया की शब्दावली में, उन्होंने दिखावा किया। यानी वह उनसे डरता था और पाखंडी तरीके से काम करता था। प्रेम उस व्यक्ति को कैसे देख सकता है जो इस्लाम का नायक था, जिसने "अल्लाह का शेर" की उपाधि प्राप्त की थी, और जो सत्यनिष्ठ और भरोसेमंद लोगों का सेनापति और मार्गदर्शक था, एक पाखंडी कायर के रूप में जिसने बीस साल से अधिक समय तक उन लोगों से प्रेम करने और उन्हें स्वीकार करने का दिखावा किया, जिनसे वह डर के कारण प्यार नहीं करता था और जो गलत काम करने वालों का अनुसरण करने के लिए सहमत हो गया था? अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) इस तरह के प्रेम से इनकार करेंगे।

अहल अल-सुन्ना, सत्य के लोगों का पंथ, किसी भी तरह से विवादास्पद नहीं है-

लगाए ' या , न ही उस पर अनैतिक तरीके से काम करने का आरोप लगाया। ऐसे असाधारण व्यक्ति को किसी भी युग की कायरता का आरोप बिना, वे कहते हैं, "अगर अली ने पहले तीन सही मार्गदर्शित खलीफाओं को सही नहीं माना होता, तो वह उन्हें एक पल के लिए भी नहीं पहचानते, न ही उनका पालन करते। चूँकि उन्होंने उन्हें सही और बेहतर माना, इसलिए उन्होंने इस्लाम के लिए समर्पित वीरता और ऊर्जा को सत्य के मार्ग पर समर्पित कर दिया।"

संक्षेप में, किसी भी मामले में अति पर जाना अच्छा नहीं है। सच्चाई बीच के रास्ते में है, और यही अहल अल-सुन्ना ने चुना है। लेकिन, दुर्भाग्य से, थोड़ी सी हद तक ही सही, कुछ खारिजाइट और वहाबी विचारों ने अहल अल-सुन्ना की आड़ में सुन्नी विचार और पंथ में घुसपैठ की है, और राजनीति के कुछ अनुयायी और विधर्मी अली की आलोचना करते हैं, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो। वे कहते हैं - अल्लाह न करे - चूँकि अली राजनीति को नहीं समझते थे, इसलिए वे खिलाफत के लिए आवश्यक क्षमता या योग्यता प्रदर्शित नहीं कर पाए और इसलिए उन्होंने अच्छी तरह शासन नहीं किया। उनके अनुचित आरोपों के कारण, शिया या अलवी अहल अल-सुन्ना के प्रति नाराजगी महसूस करते हैं। फिर भी अहल अल-सुन्ना के पंथ या बुनियादी मान्यताएँ

ना ऐसे विचारों को जन्म नहीं देते; बल्कि, वे विपरीत रुख का बचाव करते हैं।

अहल-अल-सुन्ना की निंदा इसलिए नहीं की जा सकती क्योंकि उनके विचार खारिजियों या कुछ विधर्मियों के हैं। बल्कि, अहल-अल-सुन्ना, अली का अनुसरण करने में अलावी से ज़्यादा संगत हैं। अपने उपदेशों और प्रार्थनाओं में वे अली की प्रशंसा के शब्द कहते हैं जिसके वे हकदार हैं। खास तौर पर संतों और शुद्ध विद्वानों ने, जिनमें से ज़्यादातर अहल-अल-
उल्लेख सुन्ना से जुड़े हैं, अली को एक मार्गदर्शक और संतों का राजा माना है। अलावी या शिया को अहल-अल-सुन्ना के खिलाफ़ नहीं खड़ा होना चाहिए; उन्हें खारिजियों और विधर्मियों को नज़रअंदाज़ करना चाहिए जिन्होंने अलावी और अहल-अल-सुन्ना दोनों की दुश्मनी को उचित ठहराया है।

शियाओं में से कुछ ने तो अहले सुन्नत के विरोध के लिए सुन्नत की नमाज़ें भी छोड़ दी हैं। यहाँ जो कुछ कहा गया है वह काफी है, क्योंकि इस मामले पर विद्वानों ने पर्याप्त चर्चा की है।

और इसलिए, अहले सुन्ना, सत्य के लोगों और अलावी, जिन्होंने पैगंबर के परिवार के प्रेम को एक मार्ग के रूप में अपनाया है! बिना किसी देरी के अपने बीच इस अर्थहीन, अन्यायपूर्ण और हानिकारक विवाद और झगड़े को समाप्त करें। अन्यथा, विधर्मी आंदोलन जो अब इतने मजबूत और प्रभावशाली हैं, आपको एक दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए एक हथियार बना देंगे, और आप दोनों को एक के बाद एक कुचल दिया जाएगा। चूंकि आप ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं और इसलिए कई पवित्र ग्रंथ हैं

आपके बीच जो बंधन भाईचारा और एकता पैदा करते हैं, उनके लिए यह आवश्यक है कि आप उन तुच्छ बातों को छोड़ दें जो विभाजन उत्पन्न करती हैं।

दूसरा स्टेशन

यह आयत में निहित एक अन्य सत्य के बारे में है, कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है, उसके लिए तुम्हारा दुःख अत्यन्त कष्टदायक है, वह तुम्हारे लिए बड़ा चिंतित है, और ईमान वालों के लिए बड़ा दयावान तथा दयालु है।

फिर यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया है और वही सिंहासन का स्वामी है।" (9:128-129)

पांचवीं और छठी झलक

ये दो झलकियाँ क्रमशः ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, वह कितना बढ़िया संरक्षक है और ईश्वर के अलावा कोई ताकत या शक्ति नहीं है, वाक्यांशों के बारे में हैं। वे अरबी में लिखे गए थे और उनतीसवीं झलक में शामिल किए गए थे, क्योंकि वे बौद्धिक ज्ञान के बजाय ईश्वर की याद और चिंतन से संबंधित हैं।

[19] इसे द ग्लेम्स में द इलेवन्थ ग्लेम के नाम से लिखा और शामिल किया गया।

सातवीं चमक

सातवीं चमक

सूरत अल-फ़तह के अंत में भविष्यवाणियाँ

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह ने अपने रसूल के लिए जो स्वप्न देखा था, उसे वास्तव में सत्य सिद्ध किया है (और अवश्य पूरा करेगा) : यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम पूर्ण सुरक्षा के साथ, अपने सिर मुंडाकर या बाल छोटे करवाकर, मस्जिदे हराम में प्रवेश करोगे और तुम्हें किसी बात का भय नहीं होगा। किन्तु वह सदैव जानता है जो तुम नहीं जानते, और (इसीलिए तुम्हें इस वर्ष मस्जिद में प्रवेश न करने दिया) इससे पहले ही तुम्हें लगभग विजय प्रदान कर दी है। वही है जिसने अपने रसूल को ईश्वरीय मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा है, ताकि उसे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे। (अपने वादे की सत्यता और अपने रसूल के मिशन के लिए) एक गवाह के लिए अल्लाह ही पर्याप्त है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं; और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफिरों के विरुद्ध दृढ़ और अटल हैं, और आपस में दयावान हैं। तुम उन्हें (नमाज़ में निरन्तर) झुकते और सजदा करते, अल्लाह से अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता और प्रसन्नता की खोज करते देखते हो। उनके चेहरों पर सजदा के निशान हैं। तौरात में उनका यही वर्णन है; और इंजील में उनका वर्णन इस प्रकार है: जैसे बीज ने अपनी शाखा को अंकुरित किया, फिर उसे मजबूत किया, और फिर अपने तने पर मजबूती से उग आया, जिससे बोने वालों को खुशी हुई; (जिससे) यह अविश्वासियों को उनके (ईमान वालों) प्रति क्रोध से भर देता है। अल्लाह ने उन सभी लोगों से जो उनमें से ईमान लाए और अच्छे, नेक काम किए, क्षमा (अप्रत्याशित आशीर्वाद लाने के लिए) और एक जबरदस्त इनाम का वादा किया है। (48:27-29)

सूरत अल-फ़तह[20] की ये आख़िरी तीन आयतें कई मायनों में चमत्कारी हैं। क़ुरआन की चमत्कारिकता या अद्वितीयता के दस व्यापक पहलुओं में से, भविष्य की ख़बर देने का इसका पहलू सात या आठ तरीक़ों से प्रदर्शित होता है। (दूसरे शब्दों में, इसमें सात या आठ भविष्यवाणियाँ हैं।)

पहली भविष्यवाणी

अल्लाह ने अपने रसूल के लिए जो सपना देखा था, उसे सच साबित कर दिया है (और निश्चित रूप से उसे पूरा करेगा), यहाँ तक कि आयत के अंत में हमें मक्का की विजय की निश्चित खबर मिलती है, इससे पहले कि वह घटित हो। यह दो साल बाद हुआ, ठीक वैसे ही जैसे आयत में भविष्यवाणी की गई थी।

दूसरी भविष्यवाणी

प्रारंभ में हुदैबिया की संधि को इस्लाम के हितों के विरुद्ध माना गया और यह सोचा गया कि इसमें कुरैश विजयी होंगे।
जबकि उसने तुम्हें इससे पहले ही एक निकट विजय प्रदान कर दी थी, और कहा था कि वास्तव में यह संधि एक महान विजय होगी और आगे की विजयों की कुंजी होगी।

हुदैबिया की संधि के बाद मुसलमानों को अब मक्का के हमलों का तलवार से प्रतिरोध नहीं करना पड़ा; इसके बजाय, कुरान की शानदार सच्चाइयों को फैलाने के लिए एक शांतिपूर्ण माहौल मिला, और इसने लोगों के दिलों और दिमागों पर विजय प्राप्त की। इस संधि में, दोनों पक्ष एक-दूसरे को जान गए। इस्लाम के गुणों और कुरान की रोशनी ने हठ और कबायली कट्टरता के परदे फाड़ दिए और बहुत प्रभावी साबित हुए। उदाहरण के लिए, युद्ध के महारथी खालिद इब्न वालिद और राजनीति और कूटनीति के महारथी अम्र इब्न अल-अस जैसे लोग, जो हार स्वीकार नहीं कर सकते थे, कुरान से हार गए, जिसने संधि में खुद को प्रकट किया। मदीना में इस्लाम के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारिता में स्वेच्छा से समर्पित होने के बाद, खालिद ने इस्लाम और उसकी विजय की सेवा करना शुरू कर दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न: सृष्टि के गौरव के साथियों और सारे संसार के पालनहार (उस पर शांति और आशीर्वाद हो) के प्रिय की उहुद के अंत और हुनैन के आरंभ में मुश्रिकों के सामने हुई असफलताओं में क्या बुद्धिमत्ता थी?

---

20 सूरत अल-फ़तह (अध्याय 48) हुदैबिया की संधि के ठीक बाद अवतरित हुई, जो कि अल्लाह के रसूल और मक्कावासियों के बीच सन् 627 में, रसूल के मदीना प्रवास के पांच वर्ष बाद हस्ताक्षरित हुई थी। (अनुवाद)

२१ मुसलमानों को उहुद की लड़ाई के दूसरे चरण में झटका लगा, जो कि अल्लाह के रसूल के मदीना प्रवास के तीन साल बाद, 625 में हुआ था।

उत्तर : मुश्रिकों में खालिद जैसे बहुत से लोग थे, जो भविष्य में उस समय के प्रमुख साथियों के बराबर होंगे।

इसलिए, ताकि उनके शानदार भविष्य के बारे में सोचकर उन्हें पूरी तरह से अपमानित न किया जाए, ईश्वरीय ज्ञान ने उन्हें उनके भविष्य के अच्छे कामों के लिए तत्काल पुरस्कार दिया और उनके सम्मान को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया। यानी, अतीत के साथियों को भविष्य के साथियों ने हराया, ताकि वे भविष्य के साथी तलवार की बिजली के डर से नहीं, बल्कि सच्चाई की चमक के लिए जोश के साथ इस्लाम में प्रवेश करें, और ताकि उनकी अंतर्निहित वीरता पूरी तरह से अपमानित न हो।

तीसरी भविष्यवाणी

यह कहते हुए कि, तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है, आयत कहती है, "तुम निश्चित रूप से पूरी सुरक्षा के साथ काबा की परिक्रमा करोगे।" हालाँकि, उस समय, न केवल मक्का के आसपास के इलाके और कुरैश जनजाति बल्कि अरब प्रायद्वीप के अधिकांश रेगिस्तानी लोग भी शत्रुतापूर्ण थे। इसलिए, यह भविष्यवाणी करते हुए कि, "तुम निश्चित रूप से पूरी सुरक्षा के साथ काबा की परिक्रमा करोगे," आयत कहती है कि मुसलमान पूरे अरब प्रायद्वीप को अपने अधीन कर लेंगे, सभी कुरैश इस्लाम स्वीकार कर लेंगे, और पूरे अरब में पूरी सुरक्षा स्थापित हो जाएगी। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी।

चौथी भविष्यवाणी

वही है जिसने अपने रसूल को ईश्वरीय मार्गदर्शन और सत्य के धर्म के साथ भेजा है ताकि वह उसे सभी धर्मों पर हावी कर दे। वह पूरी तरह से निश्चितता के साथ भविष्यवाणी करता है कि सबसे महान रसूल, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, जो धर्म सभी धर्मों पर विजय प्राप्त करेगा। हालाँकि, उस समय, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म, (और बौद्ध धर्म) के सैकड़ों मिलियन अनुयायी थे और रोम, फारस और चीन जैसे विश्व-प्रमुख राज्यों के आधिकारिक धर्म थे, जिनके पास करोड़ों लोग थे। आयत में कहा गया है कि वह धर्म जिसे मुहम्मद अरब ने, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, एक ऐसे व्यक्ति ने बनाया जो अभी तक अपने छोटे से क्षेत्र को भी जीतने में असमर्थ था।

मादीना के केंद्र में पैगंबर की मस्जिद से तीन मील उत्तर में उहुद पर्वत के किनारे। हुनैन की लड़ाई की शुरुआत में उन्हें इसी तरह का झटका लगा, जो हुनैन की घाटी में मक्का की विजय के ठीक बाद मुसलमानों और कुछ पड़ोसी जनजातियों की सहयोगी सेनाओं के बीच हुआ था। (अनुवाद)

सभी धर्मों पर विजय प्राप्त होगी तथा सभी राज्यों पर विजय प्राप्त होगी।
और यह सबसे स्पष्ट और सबसे निश्चित तरीके से होता है। भविष्य ने इस भविष्यवाणी को सच साबित कर दिया, इस्लाम की रोशनी पूर्व में प्रशांत महासागर से पश्चिम में अटलांटिक महासागर तक फैल गई।

पांचवी भविष्यवाणी

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफ़िरों के मुक़ाबले में दृढ़ और दृढ़ हैं, और आपस में दयावान हैं। तुम उन्हें (नमाज़ में) रुकूअ और सजदा करते हुए देखते हो।

ये कथन हमें सहाबा के प्रमुख गुणों और उच्च विशेषताओं के बारे में बताते हैं, जिसने उन्हें पैगम्बरों के बाद सबसे अधिक गुणी मानव पीढ़ी बनाया। जबकि उनके स्पष्ट अर्थ में वे सहाबा के प्रत्येक वर्ग के लिए विशेष रूप से उत्कृष्ट गुणों को व्यक्त करते हैं, वे स्पष्ट रूप से चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं के उत्तराधिकार के क्रम का संकेत देते हैं जो पैगम्बर के बाद उत्तराधिकारी होंगे, और प्रत्येक का उल्लेख उनकी विशेष, विशिष्ट श्रेष्ठताओं के साथ करते हैं। ये इस प्रकार हैं:

जो लोग उनके साथ हैं, वे अबू बकर सिद्दीक की ओर इशारा करते हैं, जो पैगंबर के सबसे करीबी दोस्त होने के कारण प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध थे, और उनकी मृत्यु के बाद मरने वाले और उनके साथ शामिल होने वाले पहले व्यक्ति थे। अविश्वासियों के खिलाफ अडिग रहना स्पष्ट रूप से उमर को संदर्भित करता है, जो भविष्य में अपनी विजयों से कई देशों को दंग कर देगा, और अपने न्याय से अन्यायियों को कांपने पर मजबूर कर देगा। आपस में दयालु होने के कारण, कुरान उस्मान की ओर इशारा करता है, जो भविष्य में जब सबसे गंभीर मतभेद के लिए जमीन तैयार की जा रही थी, तो अपनी पूर्ण दयालुता और करुणा से कुरान पढ़ते हुए गलत तरीके से शहीद होना पसंद करेंगे ताकि मुसलमानों का खून न बहाया जाए। अंत में, आप उन्हें (नमाज में लगातार) झुकते और सजदा करते हुए, ईश्वर से अनुग्रह और उनकी स्वीकृति और प्रसन्नता की खोज करते हुए देखते हैं, जो उन परिस्थितियों की ओर इशारा करता है जिनमें अली भविष्य में खुद को पाएंगे। हम पढ़ते हैं कि 'अली पूरी तरह से खिलाफत के हकदार थे और उन्होंने इसे बहादुरी से निभाया, और वह उन युद्धों के लिए जिम्मेदार नहीं थे जिनमें उन्हें ईश्वर की कृपा की खोज में अपनी खिलाफत के दौरान शामिल होना पड़ा। यह इस तथ्य की ओर भी इशारा करता है कि 'अली को नमाज़ में झुकने और सजदे में जाने के लिए जाना जाता था, उन्होंने हमेशा पूर्ण तपस्या और ईश्वर की पूजा को प्राथमिकता दी।

, कुंआ-

छठी भविष्यवाणी

यह भाग, " उनके निशान उनके चेहरों पर हैं, जो सजदे से चिह्नित हैं। यह उनका वर्णन है जो तौरात में अदृश्य के बारे में दो जानकारी देता है:

पहला: हमें तौरात में वर्णित साथियों के गुणों के बारे में बताया गया है, जो कि महान पैगंबर को नहीं पता था, क्योंकि वह पढ़ने में असमर्थ थे। जैसा कि उन्नीसवें पत्र में उल्लेख किया गया है, और वह दस हज़ार संतों के साथ आया (व्यवस्थाविवरण, 33: 2), तौरात पैगंबर के साथियों को संदर्भित करता है। अर्थात्, उनके साथी पवित्र उपासक, धर्मी और संत होंगे। हालाँकि तौरात को कई भाषाओं में अनुवादित करके काफी हद तक भ्रष्ट कर दिया गया है, लेकिन यह अपनी कई आयतों के साथ सूरत अल-फ़तह के हिस्से की पुष्टि करता है, उनके चेहरे पर उनके निशान हैं, जो सजदे से चिह्नित हैं। तौरात में उनका यही वर्णन है।

अदृश्य के बारे में दूसरी जानकारी यह है: वाक्यांश, यह टोरा में उनका वर्णन है, भविष्यवाणी करता है कि साथी और उनके बाद आने वाली पीढ़ी पूजा में ऐसी डिग्री प्राप्त करेगी कि उनका आध्यात्मिक प्रकाश उनके चेहरों पर चमकेगा, और उनके माथे पर निशान स्पष्ट होंगे, जैसे कि उनके बार-बार सजदे करने से संतत्व की किसी तरह की मुहर लगी हो। भविष्य ने इस भविष्यवाणी को अपनी पूरी स्पष्टता और निश्चितता के साथ साबित किया। ज़ैन अल-अबिदीन जैसे कई प्रसिद्ध व्यक्ति[22]

और तौस अल-यमानी,[23] जिन्होंने मतभेद और राजनीतिक उथल-पुथल की हैरान करने वाली घटनाओं के बीच दिन-रात एक हजार रकात की नमाज़ अदा की और सुबह की नमाज़ को रात के वज़ू या देर शाम की नमाज़ के साथ अदा किया (यानी, उन्होंने पूरी रात नमाज़ में बिताई), के अर्थ को प्रदर्शित किया और भविष्यवाणी को साबित किया। यह तौरात में उनका विवरण है।

सातवीं भविष्यवाणी

यह खंड, और सुसमाचार में उनका वर्णन: एक बीज की तरह जिसने अपना अंकुर अंकुरित किया है, फिर उसने इसे मजबूत किया है, और फिर अपने तने पर मजबूती से उग आया है, जिससे बोने वाले को खुशी हुई है-

[22] अली इब्न हुसैन ज़ैन अल-अबिदीन (मृत्यु 712)। चौथे खलीफा अली इब्न अबी तालिब के पोते, अली के छोटे बेटे हुसैन के माध्यम से, भगवान उनसे प्रसन्न हों। वह अपनी भक्ति, अच्छे स्वभाव, उदारता और गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए प्रसिद्ध थे। उनका उपनाम ज़ैन अल-अबिदीन (ईश्वर के उपासकों का आभूषण) रखा गया था। (ट्र.)

[23] तौस इब्न कैसन अल-यमानी, साथियों के बाद की पीढ़ी के प्रमुख व्यक्तियों में से एक। (ट्र.)

(इस प्रकार) यह अविश्वासियों को उनके (ईमान वालों) प्रति क्रोध से भर देता है, और इसमें अदृश्य के सम्बन्ध में दो सूचनाएँ भी हैं:

पहला है सुसमाचार में साथियों के विषय में की गई भविष्यवाणी, जो थी
अनपढ़ पैगंबर के लिए अज्ञात, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

पुराने नियम में ईश्वर के दूत और उनके साथियों के बारे में ऊपर वर्णित आयतों और अन्य आयतों के अतिरिक्त, जैसे कि तुम उन्हें लोहे की छड़ से तोड़ दोगे (भजन संहिता 2:9), सुसमाचार में भी ऐसी कई आयतें हैं, जैसे कि मैं अब तुम्हारे साथ अधिक बातचीत नहीं करूंगा, क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है (यूहन्ना 14:30)।24 इन आयतों में भविष्यवाणी की गई थी कि एक पैगंबर आएगा, जिसे जिहाद छेड़ने का दायित्व सौंपा जाएगा; कि वह संसार का शासक होगा।

इस तरह की आयतों से यह समझा जा सकता है कि शुरू में सहाबा कम और कमज़ोर नज़र आते थे। फिर भी, बीजों की तरह, वे बढ़ते, घने होते और ताकत पाते। जब वे इस हद तक पहुँच जाते कि वे अपने क्रोध से काफ़िरों को दबा देते, तो वे बहुत से लोगों पर विजय प्राप्त कर लेते और अपने पैग़म्बर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, को दुनिया का शासक साबित कर देते। इसलिए, इंजील के विवरण सूरत अल-फ़तह की आयतों के अर्थ को ठीक से दर्शाते हैं , जिनकी हमने यहाँ जाँच की है।

---

24 सुसमाचारों में ईश्वर के दूत, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और उनके पवित्र साथियों, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो, के बारे में कई अन्य आयतें हैं। उदाहरण के लिए, फिर भी मैं तुमसे सच कहता हूँ। यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि मैं चला जाऊँ; क्योंकि अगर मैं नहीं जाऊँगा, तो सहायक (परकलित) तुम्हारे पास नहीं आएगा; लेकिन अगर मैं चला जाऊँगा, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। और जब वह आएगा, तो वह दुनिया को पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में दोषी ठहराएगा (यूहन्ना, 16: 7-8);

यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम ने कभी पवित्रशास्त्र में यह नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का पत्थर बन गया। यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्भुत है। इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा, और उस जाति को दिया जाएगा जो उसका फल लाए। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; पर जिस पर यह गिरेगा, उसे पीस डालेगा।" (मत्ती 21:42–4); जब सहायक (परकलित) आएगा, ... सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा (यूहन्ना 15:26); मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। और जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा (यूहन्ना 16:12–14); और अब यूहन्ना की गवाही यह है, जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को यह पूछने के लिए भेजा, “तू कौन है?” उसने कबूल किया, और इनकार नहीं किया; बल्कि कबूल किया, “मैं मसीह नहीं हूँ।” और उन्होंने उससे पूछा, “तो फिर क्या? क्या तू एली-याह है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” “क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है?” और उसने उत्तर दिया, “नहीं।” तब उन्होंने उससे पूछा, “तू कौन है, कि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें? तू अपने विषय में क्या कहता है?” उसने कहा: “मैं जंगल में पुकारनेवाले की आवाज़ हूँ: ‘प्रभु का मार्ग सीधा करो,’ जैसा भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा।” (यूहन्ना 1:19–23)। (अनुवाद)

दूसरा पहलू: आयत का यह हिस्सा इस बात की ओर संकेत करता है कि यद्यपि सहाबा हुदैबिया की संधि स्वीकार करने के समय अपेक्षाकृत कमज़ोर और संख्या में छोटे थे, फिर भी थोड़े समय में वे बढ़ गए और ऐसी शक्ति और वैभव प्राप्त कर लिया कि जिस समय ईश्वरीय शक्ति के हाथों से धरती के मैदान में रोपी गई मानव जाति उस वृक्ष के समान थी जिसकी टहनियाँ ईश्वरीय धर्म और ज्ञान के प्रति असावधानी के कारण छोटी, कमज़ोर, दोषपूर्ण और फलहीन थीं, वे तेज़ी से बढ़ेंगी, मज़बूत होंगी और बहुत सारे फल देंगी। उस समय की महान शक्तियाँ उन पर क्रोध से भर जाएँगी, ईर्ष्या और जलन में संघर्ष करेंगी।

भविष्य ने इस भविष्यवाणी को बहुत ही शानदार ढंग से सच साबित कर दिया।

इस भविष्यवाणी में एक और संकेत है: यह अपेक्षा की जाती है कि साथियों को केवल तभी जबरदस्त इनाम का वादा किया जाना चाहिए जब उनकी महत्वपूर्ण गुणों के लिए प्रशंसा की जाती है। हालाँकि, यह श्लोक क्षमा और जबरदस्त इनाम के वादों के साथ समाप्त होता है। यह सुझाव देता है कि भविष्य में आंतरिक संघर्षों के कारण साथियों के बीच गंभीर दोष दिखाई देंगे।

क्योंकि क्षमा दोषों के अस्तित्व को इंगित करती है। ऐसे समय में सहाबा द्वारा सबसे अधिक माँगी जाने वाली चीज़, सबसे बड़ा उपकार, क्षमा होगी और सबसे बड़ा पुरस्कार क्षमा के कारण दंड का न होना होगा। जैसा कि क्षमा शब्द से यह संकेत मिलता है, इसका संबंध सूरा के आरंभ में दिए गए वाक्य से भी है , कि ईश्वर आपकी (ऐ रसूल) पिछली और आने वाली गलतियों को क्षमा करे। इस वाक्य में रसूल के लिए उल्लिखित क्षमा लाक्षणिक है, क्योंकि रसूल अचूक हैं। यदि इसे शाब्दिक रूप से भी लिया जाए, तो यह पैगंबरी के पद के अनुकूल क्षमा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, चूंकि इसमें पैगंबर के व्यक्तित्व में सहाबा के लिए क्षमा की शुभ सूचना है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, यह क्षमा के माध्यम से आयत में एक और सूक्ष्मता जोड़ता है

सूरा के अंत में साथियों से वादा किया गया था ।

कुरान में दस बुनियादी चमत्कारी पहलू हैं। सूरत अल-फ़तह के अंत में ऊपर बताई गई तीन आयतों में ग़ैब की स्पष्ट ख़बर देने के कई उदाहरण हैं , जिनमें से यहाँ केवल सात उदाहरण दिए गए हैं। चूँकि तीनों आयतों में से अंतिम आयत सहाबा को संदर्भित करती है, इसलिए यह अपने वाक्यांशों के साथ उनकी स्थितियों और हालातों को भी संदर्भित करती है। जिस तरह यह उनके गुणों को उनके शाब्दिक अर्थ में चित्रित करती है, उसी तरह इसके अक्षरों की कुछ निश्चित संख्याओं में पुनरावृत्ति प्रसिद्ध सहाबा के वर्गों की ओर संकेत करती है,

जैसे बद्र, उहुद, हुनैन, हॉल25 और स्वीकृत निष्ठा26 के लोग। इसमें कई अन्य रहस्य भी हैं।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

* * *

एक उपसंहार

के अंतिम छंदों में संकेतित कुछ भविष्य की घटनाओं के संबंध में

सूरत अल-फ़तह, इसी तरह की भविष्यवाणियां निम्नलिखित आयतों में पाई जाती हैं:

> और हमने उन्हें सीधा मार्ग दिखाया। जो कोई अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, तो वही लोग उन लोगों में से होंगे जिन्हें अल्लाह ने (पूर्ण मार्गदर्शन) प्रदान किया है - अर्थात् नबी, सच्चे लोग, गवाह और नेक लोग। वे कितने अच्छे साथी हैं! (4:68-69)

हम इनमें से अनेक उत्कृष्ट बिंदुओं में से दो का उल्लेख करेंगे।

छंद.

---

25 हॉल के लोग वे गरीब साथी थे जो मदीना में पैगंबर की मस्जिद के बगल वाले हॉल में रहते थे। उन्हें पैगंबर ने विद्वान और हदीसों के प्रसारक बनने के लिए विशेष रूप से शिक्षित किया था। अबू हुरैरा, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, उनमें सबसे प्रसिद्ध थे। (अनुवाद)

26 स्वीकृत बैअत के लोग वे साथी थे जिन्होंने हुदैबिया की संधि पर हस्ताक्षर होने से पहले हुदैबिया में एक पेड़ के नीचे ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के प्रति बैअत की थी। जब अफ़वाहें फैलीं कि उस्मान इब्न अफ़्फ़ान, जिन्हें मुसलमानों के छोटे हज करने के इरादे से बातचीत करने के लिए मक्का भेजा गया था, मारे गए हैं, तो ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने अपने साथियों से कहा कि वे खुद की रक्षा के लिए उनके प्रति बैअत करें, भले ही वे मारे जाएं। वे काबा की ज़ियारत करने और छोटे हज करने के इरादे से आए थे। हालाँकि, जब उन्हें अप्रत्याशित प्रतिक्रिया मिली और उन्हें लगा कि उनका उद्देश्य बहुत ख़तरे में है, तो वे एक ही शरीर की तरह पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के इर्द-गिर्द एकजुट हो गए। उनका कोई और इरादा नहीं था, सिवाय ईश्वर के उद्देश्य की सेवा करने के ताकि उनकी स्वीकृति और अच्छी प्रसन्नता प्राप्त हो सके। ईश्वर उनके दिलों में इरादे की शुद्धता और वफ़ादारी से बहुत प्रसन्न हुआ। इसलिए, इस निष्ठा को बाद में स्वीकृत निष्ठा कहा गया। (ट्र.)

पहला बिंदु

जिस तरह कुरान में चमत्कारिक व्याख्या की गई है, वह अपने स्पष्ट, स्पष्ट अर्थों और अवधारणाओं के माध्यम से सत्य को व्यक्त करता है, उसी तरह इसमें अपनी शैली और रचना में कई संकेतात्मक अर्थ भी शामिल हैं। इसकी प्रत्येक आयत में अर्थ के कई स्तर हैं। चूँकि कुरान ईश्वर के सर्वव्यापी ज्ञान से उत्पन्न हुआ है, इसलिए यह संभव है कि ये सभी अर्थ अभिप्रेत हों।

कुरान की व्याख्या को मानवीय वाणी की तरह एक या दो अर्थों तक सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि मानवीय वाणी सीमित मस्तिष्क और व्यक्तिगत इच्छा की उपज है।

यही कारण है कि कुरान के विद्वान व्याख्याकारों ने इसकी आयतों में निहित अनगिनत सत्यों की व्याख्या की है। अभी भी कई और सत्य हैं जिन्हें व्याख्याकारों ने अस्पष्ट छोड़ दिया है। अपने स्पष्ट अर्थों के अलावा, कुरान में बहुत महत्वपूर्ण ज्ञान है, विशेष रूप से इस्तेमाल किए गए अक्षरों और इसके संकेतों में।

दूसरा बिंदु

इस श्लोक में कहा गया है,

> पैगम्बर, और सच्चे लोग (जो ईश्वर के कार्य के प्रति वफादार हैं और जो कुछ वे करते और कहते हैं, उसमें सत्यनिष्ठ हैं), और गवाह (जो छिपे हुए ईश्वरीय सत्य को देखते हैं और अपने जीवन से उसकी गवाही देते हैं), और धर्मी लोग (अपने सभी कार्यों और कथनों में और सब कुछ सही करने के लिए समर्पित हैं)।
> वे साथी के रूप में कितने उत्कृष्ट हैं!

सूरत अल-फातिहा की आयत की व्याख्या करता है , उन लोगों का मार्ग जिन पर आपने अनुग्रह किया है, और स्पष्ट करता है कि मानव जाति में वे कौन हैं जिन्हें ईश्वर के मार्गदर्शन के साथ विशेष रूप से अनुग्रहित किया गया है और जिनके अनुसरण का हमें आदेश दिया गया है।

वे पैगम्बर हैं, जिनके मुखिया मुहम्मद, ईश्वर के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ईश्वर के मार्ग के प्रति वफादार सच्चे लोग, छिपे हुए ईश्वरीय सत्य को देखने वाले गवाह और अपने जीवन से उसकी गवाही देने वाले, और वे जो अपने सभी कार्यों और कथनों में नेक हैं और जो सब कुछ सही करने के लिए समर्पित हैं। ये लोग सीधे रास्ते पर चलने वालों के नेता हैं, वे लोग जो सच्चे ईश्वरीय आशीर्वाद से संपन्न हैं। आयत इस प्रकार के लोगों को विशेष रूप से इस्लाम की पहली पीढ़ी के रूप में इंगित करती है, और सुझाव देती है कि उनके बाद एक बेहतरीन पीढ़ी आएगी जिसे तबीउन कहा जाएगा - वे जो साथियों के उत्तराधिकारी होंगे और उनका बेहतरीन तरीके से अनुसरण करेंगे। आयत यह भी बताती है कि

इन पांच समूहों के नेताओं या प्रमुखों को उनकी सबसे प्रसिद्ध विशेषताओं और उनके भविष्य के जीवन के सबसे प्रमुख पहलुओं के साथ संदर्भित करता है, इस प्रकार कुरान की चमत्कारी प्रकृति का एक पहलू प्रदर्शित करता है, अर्थात भविष्य की खबर देना।

जैसा कि आयत में पैगम्बरों ने स्पष्ट रूप से ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की ओर संकेत किया है, उसी तरह सत्यवादी भी सबसे पहले अबू बकर अस-सिद्दीक (सत्यवादी) की ओर संकेत करते हैं, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो। यह हमें संकेत द्वारा सूचित करता है कि वह पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के उत्तराधिकारी होंगे, उनके बाद दूसरे स्थान पर होंगे, और उन्हें मुस्लिम समुदाय द्वारा विशेष रूप से पैगम्बर के बाद सभी सत्यवादियों में सबसे प्रमुख के रूप में अस-सिद्दीक की उपाधि से उल्लेख किया जाएगा।

गवाहों (जो छिपे हुए ईश्वरीय सत्य को देखते हैं और अपने जीवन से उसकी गवाही देते हैं) के साथ , यह आयत उमर, उस्मान और अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की ओर इशारा करती है। यह संकेत देता है कि उन्हें खिलाफत का वरदान मिलेगा और वे शहादत देकर इस्लाम की सच्चाई की गवाही देंगे, इस प्रकार शहादत उनके अन्य गुणों में शामिल हो जाएगी।

धर्मी लोगों के वाक्यांश के साथ , यह आयत सुफ्फा (मदीना में पैगंबर की मस्जिद से सटे एक हॉल में रहने वाले साथी), बद्र और स्वीकृत निष्ठा (हुदैबिया में पैगंबर को दी गई निष्ठा) के लोगों को संदर्भित करती है; और यह कहकर कि वे साथियों के लिए कितने बढ़िया हैं, यह स्पष्ट रूप से हमें उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है, यह दर्शाता है कि उनके बाद की पीढ़ी ने कितने बढ़िया तरीके से काम किया। यह हसन का भी उल्लेख करता है, भगवान उनसे प्रसन्न हों, जिन्होंने पांचवें खलीफा के रूप में पैगंबर की परंपराओं की पुष्टि की, जिसमें भविष्यवाणी की गई थी, "मेरे बाद, खिलाफत तीस साल तक चलेगी,"27 और "यह मेरा पोता हसन है, लोगों का एक महान गुरु! भगवान उसके माध्यम से दो महान समूहों (मुसलमानों के) में सामंजस्य स्थापित करेंगे।"28 इस प्रकार, यह आयत हसन की खिलाफत के महान मूल्य की ओर ध्यान आकर्षित करती है, भले ही यह अवधि कम रही हो।29

संक्षेप में, जिस तरह सूरतुल फतह की आखिरी आयत में चार राह-ए-हकीम खलीफाओं का ज़िक्र है, उसी तरह यह आयत भी पहले वाले की पुष्टि करके, उनके भविष्य के पदों और परिस्थितियों का संकेत देती है, इस तरह भविष्य की कुछ ख़बरें देती है। इस चमत्कारी प्रकृति की झलकें, नाम-

---

[27] एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 48; अबू दाऊद, "सुन्ना" 9. (ट्र.)

[28] अल-बुखारी, "सुलह" 9; एट-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 30।

29 चूँकि यह आयत अपने शब्दों के साथ पैगम्बर, अबू बकर, उमर, उस्मान और अली का उल्लेख करती है, यह अली के बड़े बेटे हसन का भी उल्लेख करती है, "हसुना" शब्द के साथ, जिस क्रिया से इसमें "हसन" (जिसका अर्थ है सुंदर, उत्कृष्ट) शब्द आया है। (अनुवाद)

भविष्य की कुछ ख़बरें या अदृश्य का एक आयाम बताना, जो कि कुरान की चमत्कारी प्रकृति का एक पहलू है, कुरान में इतने ज़्यादा हैं कि उन्हें ऊपर बताए गए कुछ लोगों की तरह सीमित नहीं किया जा सकता। जो लोग कुरान की आयतों के सिर्फ़ शाब्दिक अर्थ पर विचार करते हैं, वे उन्हें चालीस या पचास तक सीमित रखते हैं, इसका कारण यह है कि वे कुरान को सतही तौर पर देखते हैं। कभी-कभी एक ही आयत में चार या पाँच भविष्य की घटनाओं का संकेत हो सकता है।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

आठवीं चमक

यह पुस्तक सिक्के-ए-तस्दीक-ए-गायबी (अदृश्य समाचार की पुष्टि) के भाग के रूप में प्रकाशित हुई है ।

नौवीं चमक

उनकी झलक अस्तित्व की एकता के दृष्टिकोण के कुछ सूक्ष्म मामलों के बारे में है। वे कुछ अन्य ग्रंथों में बिखरे हुए पाए जाते हैं।

दसवीं चमक

यह कुछ दुर्भाग्यों से संबंधित है जो ईश्वर के उद्देश्य में प्रयास करने में लापरवाही दिखाने वाले कुछ लोगों के लिए एक दयालु ईश्वरीय चेतावनी के रूप में घटित होते हैं। उन्हें अनुवाद में शामिल नहीं किया गया है।

ग्यारहवीं चमक

ग्यारहवीं चमक

सुन्नत की सीढ़ी और धर्म में नवीनताओं की बीमारी के लिए मारक

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है, उसके लिए तुम्हारा दुःख अत्यन्त कष्टदायक है, वह तुमपर बड़ा दयावान है और ईमानवालों पर बड़ा दयावान है। (9:128)

Tउनकी यह आयत एक राजमार्ग खोलती है और सुन्नाह, पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के मार्ग की ओर एक सीढ़ी स्थापित करती है।

> फिर यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया है और वही सिंहासन का स्वामी है।" (9:129)

> (ऐ रसूल) कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ, ताकि अल्लाह भी तुमसे प्रेम करे और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे।" (3:31)

इन दो महान श्लोकों में सैकड़ों महत्वपूर्ण बातें समाहित हैं,
ग्यारह को संक्षेप में समझाया जाएगा।

पहला बिंदु

पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा, "जो कोई मेरी सुन्नत का पालन करेगा, जबकि मेरी कौम भ्रष्ट हो जाएगी, उसके लिए सौ शहीदों का सवाब है।"

---

30 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, 5:315; अल-बहाकी, सुनान, "ज़ुहद" 118. (ट्र.)

बेशक, पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सुन्नत का पालन करना असाधारण मूल्य का है। यह और भी अधिक मूल्यवान है, खासकर ऐसे समय में जब धर्म में नवीनताएँ प्रचलित हैं। खासकर जब मुस्लिम समुदाय भ्रष्ट हो गया है, पैगम्बर के एक साधारण व्यवहार का भी पालन करना इस्लाम में दृढ़ विश्वास और गहरी श्रद्धा का प्रतीक है। पैगम्बर द्वारा स्थापित इस्लामी नियमों का पालन करना और उनकी सुन्नत (उनकी जीवन शैली) का पालन करना सबसे महान पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की याद दिलाता है। यह याद व्यक्ति को ईश्वर की निरंतर संगति का एहसास कराती है। जब कोई व्यक्ति कम से कम महत्व के व्यवहारों और खाने, पीने या सोने जैसे दैनिक जीवन के व्यवहारों में भी पैगम्बर का अनुसरण करता है, तो ऐसे सामान्य व्यवहार और स्वाभाविक कार्य पुण्य की इबादत और शरीयत के कार्य बन जाते हैं। क्योंकि, जो व्यक्ति ऐसे रोजमर्रा के कार्यों में भी पैगम्बर का अनुसरण करता है, उसने सबसे महान पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का अनुसरण करने के बारे में सोचा है और इसे शरीयत द्वारा अनुशंसित आचरण के अच्छे शिष्टाचारों में से एक मानता है। फिर यह विचार उन्हें पैगंबर को शरिया लाने वाले के रूप में याद करने के लिए प्रेरित करता है। इस स्मरण के माध्यम से, उनके दिल सर्वशक्तिमान ईश्वर, शरिया के विधानकर्ता की ओर मुड़ते हैं। इससे एक तरह की आध्यात्मिक संतुष्टि और पूजा की भावना मिलती है।

इस प्रकार, जो व्यक्ति सुन्नाह को जीवन पद्धति के रूप में उचित रूप से अपनाता है, वह अपने आदतन कार्यों को भी उपासना में बदल लेता है, तथा अपने पूरे जीवन को फलदायी और पुरस्कार देने वाला बना सकता है।

दूसरा बिंदु

इमाम रब्बानी अहमद फ़ारूक़ी,31 ईश्वर उन्हें पवित्र करे, कहते हैं, "अपनी आध्यात्मिक यात्राओं में विभिन्न श्रेणियों से गुज़रते हुए, मैंने संतों के समूहों में सबसे शानदार, भव्य, आकर्षक, स्वस्थ और विश्वसनीय लोगों को देखा, जो पैगंबर की सुन्नत का पालन करते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो उनके मार्ग का सिद्धांत है। यहाँ तक कि इस समूह के साधारण संत भी अन्य समूहों के प्रतिष्ठित संतों की तुलना में अधिक शानदार दिखाई दिए।"

---

३१ इमाम रब्बानी, अहमद फ़ारूक अल-सरहंदी (मृत्यु 1624): कई लोगों द्वारा उन्हें "दूसरी सहस्राब्दी के पुनरुत्थानकर्ता" के रूप में स्वीकार किया गया, विशेष रूप से इस्लामी आध्यात्मिकता में। सरहंद (भारत) में जन्मे और इस्लामी विज्ञान में पारंगत, उन्होंने सूफीवाद से कई भ्रष्ट तत्वों को हटा दिया। उन्होंने शाह आलमगीर या अवरंगज़ेब (मृत्यु 1707) को भी पढ़ाया, जिन्होंने विद्वानों की एक समिति बनाई थी जिसने हनफ़ी कानून का सबसे व्यापक संग्रह तैयार किया। (ट्र.)

इमाम रब्बानी, द्वितीय सहस्राब्दि के नवीकरणकर्ता, ईश्वर उन्हें पवित्र करे, सत्य बोलते हैं। जो व्यक्ति सुन्ना को अपने मार्ग का आधार बनाता है, वह ईश्वर के प्रियतम की सुरक्षा में ईश्वर का प्रिय बनने के मार्ग पर है, उस पर शांति और आशीर्वाद हो।

तीसरा बिंदु

एक बार मैंने एक आंतरिक परिवर्तन का अनुभव किया, जिसके दौरान एक मार्गदर्शक से रहित होने और मेरी दुष्ट आत्मा के अभिमान के कारण, मेरी बुद्धि और हृदय एक भयंकर आध्यात्मिक तूफान में सत्य के बीच लड़खड़ा रहे थे। वे इधर-उधर उछल रहे थे, कभी प्लीएडीज से जमीन पर तो कभी जमीन से प्लीएडीज पर।

इस परिवर्तन के दौरान, मैंने देखा कि, जहाज़ों में दिशा खोजने और आगे बढ़ने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कम्पास की तरह, पैगंबर के उच्च सुन्ना के सिद्धांत, जिनमें अच्छे व्यवहार से संबंधित सिद्धांत भी शामिल हैं, असंख्य खतरनाक, अंधेरे रास्तों पर बिजली के स्विच की तरह थे। और जब भी, उस आध्यात्मिक यात्रा के दौरान, मैंने खुद को बहुत दबाव में पाया, बहुत भारी बोझ से दबा हुआ, मैंने उस स्थिति के बारे में सुन्ना के सिद्धांतों का पालन किया और आराम महसूस किया जैसे कि मैं उन सभी बोझों से मुक्त हो गया हूँ। उनके प्रति समर्पण करके, मैं संदेह से बच गया, यानी, इस बारे में झिझक या चिंता से कि कोई निश्चित कार्य सही या लाभकारी है या नहीं। जब भी मैंने उनका अनुसरण करना छोड़ दिया, मैंने देखा कि तीव्र दबाव था। ऐसे कई रास्ते थे जिनके लिए यह पता लगाना संभव नहीं था कि वे कहाँ ले जाते हैं।

बोझ भारी था और मैं पूरी तरह से शक्तिहीन था। मेरी दृष्टि कमज़ोर थी और अनुसरण करने का रास्ता अंधकारमय था। जब भी मैं सुन्नत पर अड़ा रहा, सब कुछ प्रकाशित हो गया और अनुसरण करने का सुरक्षित रास्ता दिखाई दिया। मुझे लगा कि बोझ हल्का हो गया है और दबाव हट गया है। अपने इन अवलोकनों के माध्यम से, मैंने इमाम रब्बानी द्वारा अपनी आध्यात्मिक यात्रा में निकाले गए निष्कर्ष की पुष्टि की।

चौथा बिंदु

एक बार, मृत्यु के बारे में सोचने, "मृत्यु एक वास्तविकता है" की पुष्टि करने और दुनिया की क्षणभंगुरता और गुज़रने से उत्पन्न मनोदशा के कारण, मैंने खुद को एक अजीब दुनिया में कल्पना की। मुझे एक दृष्टि मिली जिसमें मैं एक लाश थी जो तीन बड़ी लाशों के सिर पर खड़ी थी।

एक: मैं उन सभी जीवित प्राणियों की अमूर्त लाश के सिर पर एक कब्र के पत्थर की तरह था, जिनका मेरे जीवन से संबंध था और जो अतीत की कब्र में प्रवेश कर गए थे।

दो: मैं एक बिंदु था जो शीघ्र ही मिट जाएगा, एक चींटी जो शीघ्र ही मर जाएगी, इस सदी के चेहरे पर, जो पृथ्वी के कब्रिस्तान में अतीत की कब्र के शीर्ष पर कब्र का पत्थर था, जहां मानव जाति के जीवन से संबंध रखने वाले सभी प्रकार के जीवित प्राणियों की विशाल लाशें दफन थीं।

तीन: चूँकि क़यामत के दिन ब्रह्मांड का मरना तय है, इसलिए मैंने कल्पना की कि यह वास्तव में मर चुका है। मैंने खुद को उस विशाल इकाई की मृत्यु की पीड़ा से भयभीत और उसकी मृत्यु पर आश्चर्यचकित पाया, और अपनी मृत्यु को भी देखा, जो भविष्य में निश्चित रूप से होने वाली है, जैसे कि घटित हो चुकी हो।
मेरी मृत्यु के बाद, जैसा कि यदि वे आपसे दूर हो जाते हैं... में कहा गया है, सभी प्राणी, मेरे सभी प्रियजन, मुझसे मुंह मोड़ लेंगे, मुझे त्याग देंगे और मुझे अकेला छोड़ देंगे। मेरी आत्मा को अनंत काल के बाद के भविष्य की ओर ले जाया जा रहा था, जो एक असीम महासागर जैसा था। इसे स्वेच्छा से या अनिच्छा से इसमें डाला जाएगा।

उस अत्यंत विचित्र और दुःखद मनोदशा में, यह आयत, यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें, तो कह दो: "मेरे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है; उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है। मैंने उसी पर भरोसा किया है, और वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी है," ने ईमान और कुरान को मेरी सहायता के लिए लाया। यह आयत एक सुदृढ़ और विश्वसनीय नाव की तरह बन गई, और मेरी आत्मा पूर्ण विश्वास और आनंद के साथ आयत के अंदर चली गई। मुझे समझ में आया कि इसके स्पष्ट अर्थ के अलावा, इस आयत का एक सांकेतिक अर्थ भी था, जिसने मुझे सांत्वना दी और मुझे संतुष्टि और संतुष्टि दी।

शांति।

अपने स्पष्ट अर्थ के साथ यह आयत महानतम पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - से कहती है:

> यदि गुमराह लोग मुँह मोड़ लें, तुम्हारी शरीयत और सुन्नत से विमुख हो जाएँ और क़ुरआन की बात न मानें, तो चिंता न करो। कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है। मैं उसी पर भरोसा करता हूँ। वह तुम्हारे बदले दूसरों को खड़ा करेगा जो मेरा अनुसरण करेंगे। उसका शासन सिंहासन हर चीज़ को घेरे हुए है। न तो विद्रोही उसकी सीमा से बच सकते हैं और न ही सहायता माँगने वाले बेबस रह सकते हैं।"

अपने सांकेतिक अर्थ के साथ, यह श्लोक कहता है:

> हे मानव और हे लोगों के नेता और मार्गदर्शक! यदि सभी प्राणी तुम्हें त्यागकर मृत्यु के मार्ग पर चले जाएं, यदि जीव तुम्हें छोड़कर मृत्यु के मार्ग पर दौड़ पड़ें, यदि मनुष्य तुम्हें त्यागकर कब्रिस्तान में प्रवेश करें, और यदि असावधानी और गुमराह लोग तुम्हारी बात न मानें और अंधकार में गिर जाएं, तो चिंता न करो; कह दो, "मेरे लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ही पर्याप्त है। जब वह है, तो सब कुछ है। चूँकि ऐसा है, इसलिए जो चले गए हैं वे अस्तित्व में नहीं गए हैं। वे उसके दूसरे लोक में जा रहे हैं। उनके स्थान पर वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी अपने असंख्य सैनिकों में से दूसरों को भेजेगा। जो लोग कब्रिस्तान में प्रवेश कर गए हैं, वे पूरी तरह से नष्ट नहीं हुए हैं। वे दूसरे लोक में जा रहे हैं। वह उनके स्थान पर दूसरों को भेजेगा जो कर्तव्यनिष्ठ हैं। और जो लोग गुमराह हो गए हैं, उनके स्थान पर वह अपने आज्ञाकारी सेवकों को भेज सकता है जो सीधे मार्ग पर चलेंगे। वह हर चीज की जगह लेता है। सभी चीजें उसकी कृपा और सम्मान की एक अभिव्यक्ति के बराबर नहीं हो सकतीं।"

और इसलिए, कविता के सांकेतिक अर्थ के कारण, तीन भयानक लाशें, जिन्होंने मुझे भय से भर दिया था, दूसरे रूप ले चुकी थीं। जीवन और मृत्यु, और अलगाव और प्रस्थान, ज्ञान को प्रदर्शित करने वाली एक गतिविधि बन गई, एक शिक्षाप्रद गतिविधि, कर्तव्यों की पूर्ति के लिए एक यात्रा, एक सेना से मुक्ति, और कर्तव्यों का निर्वहन, एक सर्व-महान व्यक्ति के शासन, पर्यवेक्षण और संरक्षण के तहत, जो अपनी बुद्धि और दया के आधार पर सर्वज्ञ, सर्व-दयालु, सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-शक्तिमान भी है। ब्रह्मांड आने और जाने वाली गतिविधियों के चक्कर में अपना कर्तव्य निभाता है।

पांचवां बिंदु

महान कविता,

> (ऐ रसूल) कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ, ताकि अल्लाह भी तुमसे प्रेम करे..." (3:31)

यह स्पष्ट रूप से घोषित करता है कि सुन्नाह का पालन करना कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है। तार्किक न्याय-विधि में से, इस श्लोक में सबसे शक्तिशाली और स्पष्ट न्याय-विधि है जिसे सशर्त या अनन्य न्याय-विधि कहा जाता है। यह इस प्रकार है:

सशर्त न्यायवाक्य के उदाहरण के रूप में, यह कहा जाता है, "यदि सूर्य उदय होता है, तो दिन होगा।" इस न्यायवाक्य का सकारात्मक निष्कर्ष है, "सूर्य उदय हो चुका है, इसलिए दिन हो चुका है।" नकारात्मक निष्कर्ष है, "दिन का समय नहीं है, इसलिए सूर्य उदय नहीं हुआ है।" ये दोनों निष्कर्ष अपने तर्क में स्पष्ट हैं।

ठीक उसी तरह, ऊपर वर्णित आयत कहती है, "यदि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं, तो आप ईश्वर के प्रियतम का अनुसरण करेंगे। यदि आप उनका अनुसरण नहीं करते हैं, तो इसका अंतिम अर्थ यह है कि आप ईश्वर से प्रेम नहीं करते हैं।" ईश्वर के प्रति प्रेम का अर्थ है ईश्वर के प्रियतम की उच्च सुन्नत का पालन करना। जो व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करता है, वह निश्चित रूप से उसकी आज्ञा का पालन करेगा। ईश्वर की आज्ञाकारिता का सबसे स्वीकार्य, सबसे सीधा, सबसे सीधा और सबसे छोटा मार्ग निस्संदेह वह मार्ग है जिसे ईश्वर के प्रियतम ने प्रदर्शित किया और उसका अनुसरण किया।

यह स्वयंसिद्ध है कि कृपालु परम दयालु, जिसने ब्रह्मांड को इतने सारे वरदानों से भर दिया है, वह इन वरदानों के बदले में चेतन प्राणियों से धन्यवाद मांगेगा। और महामहिम सर्वज्ञ परम दयालु, जिसने ब्रह्मांड को कला के इतने सारे चमत्कारों से सजाया है, निश्चित रूप से और स्पष्ट रूप से सबसे प्रतिष्ठित चेतन प्राणियों को अपना संबोधनकर्ता और व्याख्याकार तथा अपने सेवकों का नेता बनाएगा जो उन्हें वह सब बताएगा जो वह चाहता है कि वे करें या न करें। साथ ही, सर्व दयालु परम दयालु, जिसने ब्रह्मांड को अपनी असंख्य अभिव्यक्तियों से अनुग्रहित किया है

कृपा और पूर्णता, निस्संदेह और स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति को सेवकाई का सबसे उत्तम कर्तव्य सौंपेंगे जो सबसे व्यापक है और जिसके पास उनकी कृपा, पूर्णता, नाम और कला को प्रतिबिंबित करने का सबसे उत्तम उपाय और साधन है, जिसे वह प्यार करते हैं और प्रदर्शित करना चाहते हैं। वह इस प्राणी के व्यक्तित्व और आचरण को दूसरों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण बना देंगे और उन्हें उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे ताकि उनका व्यक्तित्व और अच्छा आचरण उनमें भी प्रकट हो सके।

संक्षेप में, ईश्वर के प्रति प्रेम के लिए उच्च सुन्नत का पालन करना आवश्यक है और इसका परिणाम भी यही है। वह व्यक्ति कितना खुश है जिसका सुन्नत का पालन करने का हिस्सा बहुत बड़ा है! उस व्यक्ति पर धिक्कार है जो सुन्नत की कद्र नहीं करता बल्कि धार्मिक नवाचारों में लिप्त रहता है!

छठा बिंदु

सबसे महान रसूल -उन पर सलाम और शांति हो - ने घोषणा की, "धर्म में सभी नवाचार गुमराही हैं, और सभी गुमराहियाँ नरक की आग में हैं।"32 अर्थात्, आयत के अनुसार, आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म मुकम्मल कर दिया है (5: 3), शरिया के नियमों और सुन्नत के सिद्धांतों के पूरा हो जाने के बाद, नए आविष्कार करना या नए आविष्कार करना।

---

[32] अन-नासाई, "इदायन" 22; अत-तबारानी, अल-मुजम अल-कबीर, 9:97। (ट्र.)

धर्म में नवीनता, जिसका अर्थ है कि कोई यह सोचता है कि ये नियम और सिद्धांत दोषपूर्ण हैं और इनमें सुधार किया जा सकता है, गुमराही है और नरक की आग के योग्य है।

सुन्ना में कई डिग्री हैं। इसके कुछ सिद्धांत या आदेश अनिवार्य हैं; उन्हें अनदेखा या त्यागा नहीं जा सकता। उन्हें शानदार शरिया में विस्तार से वर्णित किया गया है। वे धर्म के स्थापित, निर्विवाद नियमों में से हैं और उन्हें किसी भी तरह से बदला नहीं जा सकता।

सुन्ना की दूसरी श्रेणी में पूजा और अभ्यास के अतिरिक्त कार्य शामिल हैं। ये भी दो श्रेणियों में आते हैं। एक श्रेणी पैगंबर की पूजा के अतिरिक्त कार्यों से बनी है, जो मुसलमानों के लिए बहुत पुण्य और अत्यधिक सराहनीय हैं। इनका वर्णन शरीयत की किताबों में भी किया गया है। उन्हें बदलना नवाचार है।

एक अन्य श्रेणी में पैगंबर के वे व्यवहार शामिल हैं जिन्हें अच्छे आचरण या अच्छे, सराहनीय आचरण के रूप में माना जाता है। इनका उल्लेख पैगंबर की जीवनी में किया गया है। इनका पालन न करना नवाचार नहीं माना जाता है, बल्कि यह पैगंबर के व्यवहार और अच्छे आचरण का विरोध करता है और इन कार्यों और अच्छे आचरण या शिष्टाचार के सिद्धांतों से प्राप्त होने वाली रोशनी से वंचित करता है। पैगंबर के अच्छे आचरण या आचरण की एक और श्रेणी भी है, जिसमें पैगंबर के रोजमर्रा के कार्य, व्यवहार और व्यवहार शामिल हैं, जो विश्वसनीय, सर्वसम्मति से बताई गई परंपराओं के माध्यम से जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए, बोलने, खाने, पीने, सोने और सामाजिक संबंधों के संबंध में अच्छे शिष्टाचार दिखाने वाली कई पैगंबर की प्रथाएँ हैं।

जो व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में इन अच्छे आचरणों का पालन करता है, वह अपने दैनिक आचरण को उपासना के रूप में बदल देता है, तथा उनसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक विकिरण और लाभ प्राप्त करता है। इनमें से सबसे छोटे आचरण का पालन करने से सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की याद आती है, तथा हृदय को प्रकाश मिलता है।

सुन्ना के नियमों और सिद्धांतों में सबसे महत्वपूर्ण वे हैं जो इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीक या चिह्न हैं। ये इबादत के ऐसे काम हैं जिन्हें मुसलमानों के पूरे समुदाय को करना ज़रूरी है और इसलिए ये आम सामाजिक अधिकारों और कर्तव्यों में शामिल हैं। अगर समुदाय के कुछ लोग इन्हें करते हैं तो इससे पूरे समुदाय को फ़ायदा होता है और इसके विपरीत अगर कोई ऐसा काम नहीं करता तो पूरा समुदाय ज़िम्मेदार बन जाता है। इस्लाम के ऐसे संकेतों के प्रदर्शन में कोई पाखंड या दिखावा नहीं हो सकता और इन्हें खुलेआम घोषित और निभाया जाता है।

भले ही उन्हें उपासना के अतिरिक्त कार्यों में शामिल किया जाए, फिर भी वे व्यक्तिगत अनिवार्य कार्यों की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सातवां बिंदु

उच्च सुन्नत का प्रत्येक नियम और अभ्यास अच्छे आचरण का संकेत देता है।
सुन्नत में ऐसी कोई चीज़ शामिल नहीं है जो प्रकाश न दे या अच्छे आचरण और आचरण की शिक्षा न दे। सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने घोषणा की, "मेरे रब ने मुझे सिखाया और शिक्षित किया है, और उन्होंने मुझे कितनी अच्छी तरह से सिखाया और शिक्षित किया है!"33 जो कोई पैगंबर की जीवनी का अध्ययन करता है और उनके आचरण को जानता है, वह निश्चित रूप से समझ जाएगा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने प्रिय में सभी प्रकार के अच्छे आचरण को एकत्र किया है। जो व्यक्ति अपनी सुन्नत को त्याग देता है, वह अच्छे आचरण को त्याग देता है, और इस कहावत का पात्र बन जाता है, "एक बुरे आचरण वाला व्यक्ति ईश्वर की कृपा से वंचित हो जाता है।" इसका अर्थ है आत्म-विनाश।

प्रश्न: जो अदृश्य है, उसे जानने वाला, जो सब कुछ देखता और जानता है, उसके सामने कोई अच्छा व्यवहार कैसे रख सकता है? जो परिस्थितियाँ शर्म और शर्मिंदगी का कारण बनती हैं, उन्हें उससे छिपाया नहीं जा सकता। एक तरह का अच्छा व्यवहार यह है कि शरीर के उन अंगों को ढकें जिन्हें हमें ढकना चाहिए और घृणित स्थितियों को छिपाएँ। अदृश्य को जानने वाले से कुछ भी छिपाना असंभव है।

जवाब : सबसे पहले, सर्वशक्तिमान निर्माता, जो विशेष रूप से चाहता है कि उसकी कला को सुंदर रूप में दिखाया जाए, घृणित चीजों को ढकता है और उन्हें सजाकर अपनी नेमतों की ओर ध्यान आकर्षित करता है; वह यह भी चाहता है कि उसके जीव और सेवक अन्य सचेत प्राणियों के लिए सुंदर रूप में दिखाए जाएँ। बदसूरत स्थितियों में उनका दिखना उसके नामों, जैसे कि दयालु, सुशोभित, सूक्ष्म और बुद्धिमान, के विरोध का एक रूप है और अच्छे शिष्टाचार के विपरीत है। इसलिए, पैगंबर की उच्च सुन्नत के अनुसार, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, सर्वशक्तिमान निर्माता के नामों की सीमाओं के भीतर पूरी तरह से अच्छा व्यवहार करना है।

दूसरे, जहाँ तक डॉक्टरों का सवाल है, वे किसी ऐसे व्यक्ति के सबसे निजी अंग को देख सकते हैं, जिसके साथ विवाह करना वैधानिक रूप से निषिद्ध नहीं है; जब आवश्यक हो तो इसे डॉक्टर को दिखाया जा सकता है। इसे अच्छे शिष्टाचार के विरुद्ध नहीं माना जाता है; बल्कि, चिकित्सा की प्रकृति इसकी माँग करती है। लेकिन यही डॉक्टर निषिद्ध अंगों को नहीं देख सकता है।

[33] अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 1:225; अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, 18:228। (ट्र.)

न तो कोई व्यक्ति अपने पेशेवर पेशे से बाहर किसी व्यक्ति को जानता है, न ही अच्छे शिष्टाचार उसे दिखाने की अनुमति देते हैं।

सर्वशक्तिमान निर्माता के अनेक नाम हैं, और प्रत्येक नाम की अपनी विशेष अभिव्यक्तियाँ हैं। उदाहरण के लिए, क्षमाशील नाम का अस्तित्व इसका अर्थ है कि क्षमा किए जाने वाले पाप हैं, और सर्व-आवरण नाम का अस्तित्व दोषों के अस्तित्व को इंगित करता है जिन्हें छिपाया जाना चाहिए।

इसी तरह, दयालु और सुंदर नाम यह नहीं चाहता कि कुरूपता दिखाई दे, जबकि सुंदरता, कृपा और पूर्णता को दर्शाने वाले नाम जैसे कि सूक्ष्म, दयालु, बुद्धिमान और दयालु सभी प्राणियों को सुंदर होना चाहिए और यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से कार्य करना चाहिए। कृपा, सुंदरता और पूर्णता के नाम प्राणियों की सुंदर अवस्थाओं और अच्छे आचरण के माध्यम से स्वर्गदूतों, आत्मिक प्राणियों, जिन्न और मानव जाति के सामने सुंदरता का प्रदर्शन करेंगे। इस प्रकार, उच्च सुन्नत में निहित अच्छे आचरण या शिष्टाचार के सिद्धांत इन उच्च आचरणों के संकेत और नमूने हैं।

आठवां बिंदु

फिर भी यदि वे तुमसे मुँह फेर लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है..."

> तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है, उसके लिए तुम्हारा दुःख अत्यन्त कष्टदायक है, वह तुमपर बड़ा दयावान है और ईमानवालों पर बड़ा दयावान है। (9:128)

यह आयत अल्लाह के सबसे महान रसूल की अपनी कौम के प्रति पूर्ण स्नेह और दयालुता को दर्शाती है, और फिर भी यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें....., तो इसमें निम्नलिखित कथन है:

> ऐ इंसानों और ऐ मुसलमानों! स्नेही रसूल तुम्हें असीम स्नेह के साथ मार्गदर्शित करता है, अपनी सारी शक्ति और ऊर्जा तुम्हारे लाभ के लिए खर्च करता है, और अपने द्वारा लाए गए नियमों और अपने उच्च सुन्नत के सिद्धांतों के साथ तुम्हारे आध्यात्मिक घावों को ठीक करता है। इसलिए, तुम्हें यह जानना चाहिए कि उसकी सुन्नत और उसके द्वारा बताए गए नियमों से मुंह मोड़ना कितना अनुचित और अनुचित है, जिसका अर्थ है उसके स्वयं-स्पष्ट स्नेह का खंडन और उसकी सबसे स्पष्ट दयालुता की निंदा करना।

> और ऐ प्यारे रसूल, ऐ दयालु नबी! अगर वे आपकी इस असीम कृपा और दयालुता को न पहचानें और मूर्खता के कारण आपकी सहायता न करें या आपकी बात न सुनें, तो चिंता न करें। वह सर्वशक्तिमान है, जिसके अधीन आकाश और धरती की सेनाएँ हैं और जिसकी प्रभुता ईश्वर से ही चलती है।

> उसका सर्वव्यापी सर्वोच्च सिंहासन तुम्हारे लिए पर्याप्त है। वह तुम्हारे चारों ओर अपनी सच्ची आज्ञाकारी सेनाएँ इकट्ठा करेगा, और उन्हें तुम्हारी बात मानने और तुम्हारे आदेशों को स्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा।

वास्तव में मुहम्मद साहब की शरीयत और सुन्नत में कोई भी ऐसा मामला नहीं है जिसमें ज्ञान के कई उदाहरण न हों। अपनी तमाम कमियों और लाचारियों के बावजूद मैं यह दावा करता हूँ और इसे साबित करने के लिए तैयार हूँ। वास्तव में, अब तक लिखी गई सत्तर से अस्सी नूर की आयतें (रिसाले-ए-नूर) सत्तर से अस्सी सच्चे गवाह हैं जो इस बात की गवाही देते हैं कि सुन्नत और शरीयत के मामले कितने ज्ञान से भरे और सच्चे हैं।

मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। सत्तर नहीं, बल्कि सात हज़ार ग्रंथ भी, अगर मैं उन्हें लिखने में सक्षम होता, तो ज्ञान के इन उदाहरणों का वर्णन करने में सक्षम नहीं होता।

मेरे पास कई अनुभव और अवलोकन हैं कि शरिया के नियम और उच्च सुन्ना के सिद्धांत आत्मा, मन और हृदय की बीमारियों और विशेष रूप से समाज की बीमारियों के लिए सबसे फायदेमंद इलाज हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा है और जहाँ तक मैं सक्षम हूँ, प्रकाश के ग्रंथों में समझाया है कि अन्य सामाजिक और दार्शनिक सिद्धांत और सिद्धांत उनकी जगह नहीं ले सकते। अगर कुछ लोग मेरे दावे की सच्चाई पर संदेह करते हैं, तो उन्हें रिसाले -ए नूर के प्रासंगिक भागों का संदर्भ लेना चाहिए।

इससे यह समझा जा सकता है कि ऐसे व्यक्ति की सुन्नत का यथासंभव पालन करना कितना लाभदायक है, तथा यह हमारे शाश्वत जीवन के लिए, हमारे सांसारिक जीवन के लिए कितना अनुकूल और लाभदायक है।

नौवां बिंदु

संपूर्ण सुन्नाह का उसके सभी स्तरों और पहलुओं में सख्ती से पालन केवल वे लोग ही कर सकते हैं जो धर्म में सबसे आगे हैं और ईश्वर के सबसे करीब हैं।
हालाँकि, सभी के लिए इसे इरादे से और इसे अपने जीवन के तरीके के रूप में समर्थन और स्वीकार करके पालन करना संभव है। हम धार्मिक रूप से इसके अनिवार्य या अनिवार्य नियमों और सिद्धांतों का पालन करने के लिए बाध्य हैं। भले ही सुन्ना द्वारा स्थापित पूजा के अतिरिक्त कार्यों को न करने में कोई पाप न हो, लेकिन इस तरह की उपेक्षा से सवाब में काफी कमी आती है। उन्हें बदलना एक गंभीर गलती है। जहाँ तक पैगंबर के रोज़मर्रा के व्यवहारों का सवाल है, अगर हम उनका पालन करते हैं, तो ये अभ्यास पूजा के कार्य बन जाते हैं। अगर हम उनका पालन नहीं करते हैं, तो कोई सज़ा नहीं है

परन्तु हम परमेश्वर के प्रियतम के अच्छे आचरण के प्रकाश से कम लाभ उठाते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

इबादत से जुड़े नियमों में नए आविष्कारों का मतलब है नवाचार, और चूँकि नवाचार इस आयत के विपरीत है, आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया (5:3), इसलिए उन्हें अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। हालाँकि, सुरीले सूफी तरीकों द्वारा अपनाए गए नियमित पाठ और प्रार्थनाएँ, भले ही वे विभिन्न रूपों और तरीकों से हों, नवाचार नहीं माने जाते, बशर्ते कि वे मूल रूप से कुरान और सुन्ना पर आधारित हों और सुन्ना के सिद्धांतों और बुनियादी बातों का विरोध न करें। फिर भी, कुछ विद्वानों ने इन्हें भी नवाचारों के रूप में शामिल किया है, लेकिन उन्हें "स्वीकार्य नवाचार" कहा है। इमाम रब्बानी, दूसरी सहस्राब्दी के पुनरुत्थानकर्ता, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, कहते हैं:

> अपनी आध्यात्मिक यात्राओं में पंक्तियों से गुज़रते हुए, मैंने देखा कि ईश्वर के सबसे महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, से रिपोर्ट किए गए शब्दों में एक विशेष प्रकाश है; वे ऊंचे सुन्ना की किरणों से चमक रहे हैं। जब मैंने अन्य उज्ज्वल और शक्तिशाली नियमित पाठों को देखा जो उनसे रिपोर्ट नहीं किए गए थे और जब मैंने उन आध्यात्मिक अवस्थाओं को देखा जो उन लोगों से संबंधित हैं जो सुन्ना का पालन करना अपने मार्ग के पूर्ण आधार के रूप में नहीं लेते हैं, तो मैंने देखा कि उनसे ऐसा कोई प्रकाश नहीं था। इस तरह का सबसे उज्ज्वल भी पहले वाले के सबसे कम के बराबर नहीं था। मैंने इससे समझा कि ऊंचे सुन्ना की किरणें एक अमृत हैं। इसके अलावा, सुन्ना उन लोगों के लिए पर्याप्त है जो प्रकाश की तलाश करते हैं; इसके बाहर प्रकाश की तलाश करने की कोई जरूरत नहीं है।

इमाम रब्बानी जैसे सत्य और शरीयत के नायक का यह निष्कर्ष दर्शाता है कि उच्च सुन्नत दोनों दुनियाओं में खुशी की नींव है और सभी उत्कृष्टता और पूर्णता का स्रोत है।

हे ईश्वर! हमें उच्च सुन्नत का पालन करने में सक्षम बनाकर हम पर कृपा करें।

ऐ हमारे रब! जो कुछ तूने उतारा है, हम उसपर ईमान लाए हैं और रसूल का अनुसरण करते हैं। अतः तू हमें गवाहों में लिख ले (3:53)

दसवाँ बिंदु

कविता,

(ऐ रसूल) कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ, ताकि अल्लाह भी तुमसे प्रेम करे।

संक्षिप्तता का चमत्कार है, क्योंकि इस श्लोक में कई वाक्य ऐसे हैं जो केवल तीन वाक्यांशों से मिलकर बने हैं। वे इस प्रकार हैं:

श्लोक में निम्नलिखित घोषणा की गई है:

> अगर आपको ईश्वर पर भरोसा है, तो आप निश्चित रूप से उनसे प्यार करेंगे। अगर आप ईश्वर से प्यार करते हैं, तो आप उसी तरह काम करेंगे, जैसा वह प्यार करते हैं। ऐसा करने का मतलब है कि आप उस व्यक्ति के जैसा व्यवहार करेंगे, जिससे ईश्वर प्यार करते हैं। उस व्यक्ति जैसा व्यवहार करना उसके अनुसरण से संभव है। अगर आप उसका अनुसरण करते हैं, तो ईश्वर आपसे प्यार करेंगे। आपको ईश्वर से प्यार करना चाहिए, ताकि वह आपसे प्यार करें।

ये सभी वाक्य आयत की संक्षिप्त व्याख्या मात्र हैं। यहाँ जो कहा जा रहा है वह यह है कि मनुष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ लक्ष्य सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रेम से अनुग्रहित होना है। आयत यह आदेश देती है और दिखाती है कि इस श्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करने का तरीका ईश्वर के प्रियतम का अनुसरण करना, उनकी श्रेष्ठ सुन्नत का अनुसरण करना है। निम्नलिखित तीन बिंदु इस सत्य को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करेंगे।

पहला बिंदु: मानवजाति को ब्रह्मांड के निर्माता के लिए असीम, सहज प्रेम के साथ बनाया गया है। क्योंकि मानवजाति स्वाभाविक रूप से सुंदरता और अनुग्रह से प्रेम करती है, और उत्कृष्टता, पूर्णता और अनुग्रह की पूजा करती है। यह प्रेम सुंदरता, अनुग्रह, उत्कृष्टता और अनुग्रह की डिग्री के अनुपात में बढ़ता है, और अपने अंतिम बिंदु तक पहुँचता है।

इसके अलावा, मनुष्य के छोटे से हृदय में ब्रह्मांड जितना महान प्रेम समा सकता है। यह तथ्य कि स्मृति की क्षमता, जो मस्तिष्क में दाल के दाने के बराबर जगह रखती है, एक पुस्तकालय में जितने लेख होते हैं, उतने ही लेख समाहित कर सकती है, यह दर्शाता है कि मानव हृदय पूरे ब्रह्मांड को समाहित कर सकता है और इतना महान प्रेम धारण कर सकता है।

अतः, चूँकि मानव प्रकृति में अनुग्रह, कृपा, सौंदर्य और पूर्णता के लिए असीम प्रेम महसूस करने की क्षमता है; और चूँकि, जैसा कि ब्रह्मांड में प्रदर्शित उनके कार्यों द्वारा निर्णायक रूप से प्रदर्शित किया गया है, और जैसा कि प्राणियों में स्पष्ट उनकी कला की कढ़ाई द्वारा स्व-प्रमाणित रूप से स्थापित किया गया है, और जैसा कि सजीव प्राणियों में देखी गई उनकी उदारता की असंख्य किस्मों द्वारा स्पष्ट रूप से और प्रमाणित रूप से सिद्ध किया गया है, ब्रह्मांड के निर्माता के पास असीम पवित्र कृपा, सौंदर्य, पूर्णता और कृपा है, तो यह निश्चित है कि ये मानव जाति से असीम प्रेम की मांग करते हैं, जो कि सबसे व्यापक, सबसे जरूरतमंद, सबसे विचारशील और सभी सचेत प्राणियों में सबसे अधिक लालायित है।

वास्तव में, जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य में सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रेम करने की क्षमता होती है,
राजसी सृष्टिकर्ता असीम रूप से, इसलिए, उनकी कृपा, सुंदरता, पूर्णता और

कृपा करके, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को असीम प्रेम पाने का अधिकार हर किसी से ज़्यादा है। यह भी कहा जा सकता है कि एक आस्थावान व्यक्ति के जीवन, जीविका और अस्तित्व, और अपनी दुनिया और स्वयं के लिए, और सभी प्राणियों के लिए प्रेम और गहन लगाव की सभी किस्में वास्तव में इस क्षमता की अभिव्यक्तियाँ हैं। इससे भी बढ़कर, मनुष्यों की विभिन्न तीव्र भावनाएँ उस क्षमता का प्रतिबिंब हैं जिसने अलग-अलग रूप धारण किए हैं।

जैसे मनुष्य अपने सुख में आनंद लेते हैं, वैसे ही वे दूसरों के सुख से भी आनंद प्राप्त करते हैं, जिनसे वे जुड़े हुए हैं। साथ ही, जैसे वे उस व्यक्ति से प्रेम करते हैं जो उन्हें विपत्ति से बचाता है, वैसे ही वे उन लोगों से भी प्रेम करते हैं जो उनके प्रियजनों को बचाते हैं। यदि इस मनःस्थिति पर विचार करें, तो ईश्वरीय कृपा की अनंत किस्मों में से, व्यक्ति को निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिए:

> जिस प्रकार मेरे रचयिता ने मुझे अ-अस्तित्व से, जो शाश्वत अंधकार है, बचाया है तथा मुझे एक विशेष, सुन्दर संसार दिया है, उसी प्रकार जब मेरे मरने का समय आएगा, तो वह मुझे अ-अस्तित्व में जाने से भी बचाएगा, जो शाश्वत विनाश है, तथा मुझे अनन्त क्षेत्र में एक शाश्वत, सबसे शानदार संसार प्रदान करेगा। फिर, जिस प्रकार उसने मुझे बाह्य तथा आंतरिक इन्द्रियाँ तथा क्षमताएँ प्रदान की हैं, जिनके द्वारा मैं उस संसार के सभी प्रकार के आनन्द तथा सौन्दर्य का लाभ उठा सकता हूँ, तथा उसमें विचरण कर सकता हूँ तथा उसका आनन्द ले सकता हूँ, उसी प्रकार वह मेरे सभी रिश्तेदारों, प्रियजनों तथा सह-व्यक्तियों पर, जिनसे मैं बहुत प्रेम करता हूँ तथा जिनसे मेरा बहुत लगाव है, असंख्य वरदान प्रदान करता है।
>
> ये उपहार मुझे भी प्राप्त हैं, क्योंकि मैं उनकी खुशी से प्रसन्न और प्रसन्न महसूस करता हूँ।

एक व्यक्ति को इस प्रकार सोचना चाहिए और कहना चाहिए:

> चूँकि, जैसा कि कहावत में कहा गया है, “मनुष्य अपने प्रति की गई दया का दास है,” हर कोई दया को पसंद करता है, और अगर मेरा दिल ब्रह्मांड जितना विशाल होता, तो मुझे इसे उन सभी अनगिनत उपहारों के लिए प्यार से भरना चाहिए - वास्तव में मैं इसे भरना चाहता हूँ। भले ही मैं उस प्रेम को महसूस करने में असमर्थ हूँ, मैं इसे अपनी क्षमता और इरादे के माध्यम से, और उनके दाता में विश्वास और उनकी प्रशंसा के माध्यम से, और उनके लिए तड़प के माध्यम से महसूस करता हूँ।

हमें उन वरदानों के प्रति प्रेम पर विचार करना चाहिए जिनका मैंने संक्षेप में उल्लेख किया है और निष्कर्ष निकालना चाहिए कि हमें ईश्वरीय कृपा, सौंदर्य और पूर्णता के प्रति कितना महान प्रेम महसूस करना चाहिए। जो लोग ईश्वर में विश्वास नहीं करते, वे अपने अविश्वास के कारण ईश्वर के प्रति असीम शत्रुता रखते हैं, और यहाँ तक कि पूरे ब्रह्मांड के प्रति निर्दयी और अपमानजनक शत्रुता रखते हैं।

दूसरा बिंदु: ईश्वर से प्रेम करने के लिए मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सुन्नत का पालन करना आवश्यक है। ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ है वह सब करना जो उन्हें प्रसन्न करता है। जो चीजें उन्हें प्रसन्न करती हैं, वे मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के व्यक्तित्व में अपने पूर्ण रूप में प्रकट और प्रतिबिंबित होती हैं। हम पैगंबर मुहम्मद के कार्यों में दो तरीकों से उनकी तरह हो सकते हैं:

पहला: ईश्वर के प्रेम के अनुसार, उसके आदेशों का पालन करना तथा उन चीजों के दायरे में कार्य करना जो उसे प्रसन्न करती हैं, पैगम्बर का अनुसरण करना आवश्यक है, क्योंकि ईश्वर की आज्ञाकारिता में आदर्श नेता मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

दूसरा: चूँकि मुहम्मद का व्यक्तित्व मानवता पर ईश्वर की कृपा का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, इसलिए वे निश्चित रूप से ईश्वर के लिए असीम प्रेम के हकदार हैं। एक व्यक्ति स्वभाव से ही चाहता है कि वह उस व्यक्ति जैसा बने जिससे वह प्रेम करता है, यदि उसके लिए ऐसा करना संभव हो। इसलिए, जो लोग ईश्वर के प्रियतम से प्रेम करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से उनकी उच्च सुन्नत का पालन करके उनके जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए।

तीसरा बिंदु: जिस तरह सर्वशक्तिमान ईश्वर में असीम करुणा है, उसी तरह उसमें असीम प्रेम भी है। जिस तरह वह ब्रह्मांड में सभी प्राणियों को अपने बेहतरीन गुणों और सुंदरता की विविधताओं के माध्यम से खुद को असीम रूप से प्यार करता है, उसी तरह वह अपने प्राणियों से भी प्यार करता है, जिसमें विशेष रूप से वे चेतन प्राणी शामिल हैं जो उसके द्वारा खुद को प्यार किए जाने पर प्रेम से प्रतिक्रिया करते हैं। यह स्पष्ट रूप से और निश्चित रूप से समझा जा सकता है कि उस एक के प्रेम के दृष्टिकोण को अपने ऊपर लेना कितना महत्वपूर्ण और महान उद्देश्य है, जिसकी दया ही स्वर्ग की सभी सूक्ष्मताओं, सुंदरताओं, सुखों और उपहारों का निर्माण करती है। चूंकि उसने अपने वचन - कुरान में स्पष्ट रूप से आदेश दिया है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सुन्नत का पालन करके ही कोई उसके प्रेम से अनुग्रहित हो सकता है, तो यह स्पष्ट है कि इसका पालन करना मानवता का अंतिम उद्देश्य और उसका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य होना चाहिए।

ग्यारहवाँ बिंदु

इस बिन्दु में तीन बातें शामिल हैं।

पहला मामला: सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, की सुन्नत के तीन स्रोत हैं: उनके शब्द, उनके कार्य, और उनके राज्य या उनका आचरण। धार्मिक जिम्मेदारियों की डिग्री के संबंध में, वे तीन श्रेणियों में आते हैं: अनिवार्य, अतिरंजित, और अच्छे शिष्टाचार या उनके प्रथागत व्यवहार।

हम धार्मिक रूप से उन बातों का पालन करने के लिए बाध्य हैं जो अनिवार्य हैं; निषेध-इन्हें करने पर दंड और प्रतिशोध मिलता है।

विश्वासियों के रूप में, हम भी पुण्य के रूप में अति-उत्साही कार्यों को करने के लिए जिम्मेदार हैं। हालाँकि, उन्हें न करने के लिए कोई सज़ा या प्रतिशोध नहीं है। अगर हम ऐसे कार्य करते हैं, तो हमें बहुत बड़ा पुरस्कार मिलता है, लेकिन उनमें कोई भी बदलाव करना एक बड़ी गलती है, और गुमराह करना है।

जहाँ तक पैगंबर के पारंपरिक व्यवहार या प्रशंसनीय शिष्टाचार का सवाल है, उनके दैनिक जीवन या व्यवहार में उनका अनुसरण करना या उनका अनुकरण करना बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण से और मानवीय व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को ध्यान में रखते हुए अत्यधिक सराहनीय है। क्योंकि उनके प्रत्येक पारंपरिक व्यवहार में जीवन के लिए कई लाभ निहित हैं, और उनका पालन करने से, हमारे दैनिक व्यवहार पूजा के समान बन जाते हैं।

चूँकि, जैसा कि मित्र और शत्रु दोनों सहमत हैं, पैगंबर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, में सभी अच्छे नैतिक मूल्य या गुण सर्वोच्च स्तर के थे; और चूँकि, जैसा कि सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है, वह मानवता के सबसे प्रतिष्ठित और श्रेष्ठ सदस्य हैं; और चूँकि, जैसा कि उनके असंख्य चमत्कार दर्शाते हैं, उनकी व्यक्तिगत श्रेष्ठताएँ और उनके द्वारा स्थापित इस्लाम की दुनिया इसकी गवाही देती है, और ज्ञानपूर्ण कुरान की सच्चाइयाँ, जिन्हें उन्होंने व्यक्त और समझाया, पुष्टि करती हैं, कि वह सबसे उत्कृष्ट, पूर्ण व्यक्ति और सबसे पूर्ण मार्गदर्शक हैं; और चूँकि, उनके अनुसरण के परिणामस्वरूप, करोड़ों लोग पूर्णता की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं और दोनों दुनियाओं की खुशी प्राप्त कर चुके हैं; तो निश्चित रूप से उनका ऊंचा सुन्ना, उनका जीवन जीने का तरीका, अनुसरण करने के लिए सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है, काम में लाने के लिए सबसे सुरक्षित मार्गदर्शक है, और अपनाने के लिए सबसे सही कानून है। वह व्यक्ति खुशकिस्मत है जिसका सुन्ना का पालन करने में बड़ा हिस्सा है सुन्नाह को महत्वहीन समझना एक बहुत बड़ा अपराध है, और इसकी इस तरह आलोचना करना कि यह कहा जाए कि हम इसे स्वीकार नहीं करते, गंभीर रूप से गुमराह करने वाला कार्य है।

दूसरा विषय: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने बुद्धिमानी भरे कुरान में घोषणा की है: तुम निश्चित रूप से एक उत्कृष्ट चरित्र वाले हो और एक उत्कृष्ट आचरण के अनुसार कार्य करते हो (68: 4)।
प्रामाणिक, विश्वसनीय कथाओं के अनुसार, जब आयशा जैसी प्रतिष्ठित सहेली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का वर्णन करती थीं, तो वह कहती थीं, "उनका चरित्र कुरान है।"34
अर्थात्, कुरान में वर्णित सभी सद्गुणों या उत्कृष्ट नैतिक गुणों का ठोस उदाहरण पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) हैं।

---

34 मुस्लिम, "मुसाफिरुन" 139; इब्न माजा, "अहकाम" 14; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 6:91, 163. (ट्र.)

वह ही है जो इन सबका सर्वोत्तम रूप से अनुपालन करता है; वह ही है जिसका स्वभाव इनका पूर्ण रूप है।

इस प्रकार, जबकि ऐसे व्यक्ति का प्रत्येक कार्य, कथन, वचन और कृत्य मानव जाति के लिए आदर्श बनने योग्य है, यहां तक कि पागल भी समझ सकता है कि वे असावधान लोग कितने दुर्भाग्यशाली हैं जो उस पर विश्वास करते हैं और
जो लोग उसके समुदाय के हैं, फिर भी उसकी सुन्नत को महत्व नहीं देते या उसे बदलना नहीं चाहते।

तीसरा मामला: सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - एक संपूर्ण स्वभाव वाले थे जो पूरी तरह से संतुलित थे, और उन्होंने ईश्वरीय आदेश का सख्ती से पालन किया, " इसलिए, जो कुछ भी सही है (धर्म के हर मामले में) उसका पालन करो जैसा कि तुम्हें (ईश्वर द्वारा) आदेश दिया गया है" (11: 112), और उनकी जीवनी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वह अपने सभी कार्यों और स्थितियों में हमेशा संतुलित और सीधे थे। उन्होंने लगातार सभी प्रकार की अति पर जाने से परहेज किया।

उदाहरण के लिए, मूर्खता और जनवाद या कुतर्क दोनों से पूरी तरह मुक्त, बुद्धि के दो चरम बिंदु जो इसके भ्रष्टाचार को दर्शाते हैं, उनकी बुद्धि या तर्क की शक्ति हमेशा ज्ञान के अनुसार काम करती थी; यह संतुलन का बिंदु है, जिस पर ईमानदारी आधारित है। इसी तरह, उनकी क्रोध की शक्ति या क्षमता, कायरता और क्रोध दोनों से पूरी तरह दूर, इस शक्ति के चरम बिंदु जो इसके भ्रष्टाचार को दर्शाते हैं, हमेशा धन्य साहस के साथ काम करते हैं, जो मध्य बिंदु है। इसी तरह, उनकी जुनून की शक्ति, जो शीतलता और अपव्यय दोनों से पूरी तरह शुद्ध है, जो इस शक्ति के चरम बिंदु हैं, और इसलिए इसके भ्रष्टाचार को इंगित करते हैं, हमेशा और सख्ती से मध्य मार्ग या संतुलन के बिंदु के रूप में शुद्धता का पालन किया। और इसी तरह... संक्षेप में, अपने सुन्ना के सभी पहलुओं में, उनकी प्राकृतिक अवस्थाओं और रोजमर्रा की प्रथाओं में, जिसमें उनका भाषण, खाना और पीना, और शरीयत के सभी अध्यादेश शामिल हैं, उन्होंने हमेशा संतुलित रास्ता चुना और सभी प्रकार की अति और अपव्यय से परहेज किया, जो गलत काम करने और "अंधकार" का कारण बनते हैं। इस मामले के विवरण के बारे में हज़ारों किताबें लिखी गई हैं। कहावत के अनुसार, "जो बुद्धिमान और समझदार है, उसके लिए एक संकेत ही काफी है," हम समुद्र से इस बूँद को पर्याप्त मानते हैं और कहानी को यहीं समाप्त करते हैं।

हे ईश्वर, उस व्यक्ति पर कृपा करें जो सभी नैतिक श्रेष्ठताओं से युक्त है, और जिसे ईश्वरीय घोषणा से सम्मानित किया गया है, "आप निश्चित रूप से एक उत्कृष्ट चरित्र वाले हैं और एक उत्कृष्ट आचरण के अनुसार कार्य करते हैं।" यह वह है जिसने कहा: "जो कोई भी मेरी सुन्नत का पालन करता है, जब मेरी कौम भ्रष्ट हो जाती है, तो उसके लिए सौ शहीदों का इनाम है।"

वे कहते हैं: "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इस (दुनिया में मार्गदर्शन प्रदान करने के परिणामस्वरूप) मार्गदर्शन प्रदान किया। यदि अल्लाह ने हमारा मार्गदर्शन न किया होता, तो हम निश्चित रूप से सीधा मार्ग न पा सकते। हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे।" (7:43)

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

बारहवीं चमक

बारहवीं चमक

ईश्वर जो जीविका प्रदान करने का बीड़ा उठाता है
स्वर्ग और पृथ्वी के सात स्तर

यह पुस्तक कुरान के विषय में दो सूक्ष्म बिन्दुओं पर प्रकाश डालती है, जो राफेट बे द्वारा पूछे गए दो प्रश्नों के संबंध में लिखी गई है।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

आप पर और आपके भाइयों पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे, वफादार भाई, राफेट बे,

इस मुश्किल समय में आपके सवालों ने मुझे मुश्किल में डाल दिया है। आपके दो नए सवाल बहुत कम महत्व के हैं, लेकिन चूंकि वे कुरान से संबंधित दो बिंदुओं से संबंधित हैं, और पृथ्वी के बारे में सवाल कुरान के कथन के भूगोल और खगोल विज्ञान की आलोचना से जुड़ा है कि ईश्वर ने सात आसमान और उनके जैसे पृथ्वी को बनाया है (65:12), वे मुझे महत्वपूर्ण लगे। इस कारण, इस बात पर विचार किए बिना कि प्रश्न कम महत्व के हैं, कुरान की दो आयतों से संबंधित दो मुद्दों को वैज्ञानिक रूप से समझाया जाएगा।

पहला अंक

इसमें दो बिन्दु होते हैं।

पहला बिन्दु: आयतों के अनुसार,

> बहुत से प्राणी ऐसे हैं जो अपना भोजन स्वयं लेकर नहीं चलते, परन्तु अल्लाह उन्हें भी भोजन उपलब्ध कराता है, और तुम्हारे लिए भी। वह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है। (29:60)

> निस्संदेह अल्लाह ही अत्यन्त प्रदत्तकर्ता, प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है। (51:58)

जीविका सीधे सर्वशक्तिमान महामहिम के हाथों में है और उसकी दया के खजाने से आती है। चूँकि सभी जीवित प्राणियों के लिए प्रावधान पूरी सृष्टि के स्वामी के रूप में उनके द्वारा किया गया है, इसलिए किसी को भी भूख से नहीं मरना चाहिए। लेकिन हम देख सकते हैं कि बहुत से लोग भूख से या प्रावधानों के अभाव में मर जाते हैं। इस मामले की वास्तविकता इस प्रकार है:

भगवान की गारंटी एक वास्तविकता है, और कोई भी व्यक्ति भोजन की कमी के कारण नहीं मरता है। क्योंकि महामहिम सर्वज्ञ जीवधारियों के शरीरों को भेजे जाने वाले भोजन में से कुछ को चर्बी के रूप में भंडारित कर लेते हैं। वे प्रत्येक कोशिका में भेजे जाने वाले भोजन में से कुछ को भी भंडारित कर लेते हैं, और इसे एक आरक्षित भंडार के रूप में रखते हैं, ताकि जब बाहर से भोजन न आए, तो उसे खर्च किया जा सके। जिन लोगों को हम भूख से मरते हुए देखते हैं, वे इस भंडार के पूरी तरह से खत्म होने से पहले ही मर जाते हैं। इसका मतलब यह है कि वे भोजन की कमी से नहीं मरते हैं; बल्कि वे गलत विकल्पों और अभ्यासों के माध्यम से प्राप्त आदत से या उस गलत विकल्प और अभ्यास और उस आदत को छोड़ने के परिणामस्वरूप होने वाली बीमारी के कारण मरते हैं।

जीवित प्राणियों के शरीर में वसा के रूप में संग्रहित प्राकृतिक पोषण आम तौर पर चालीस दिनों के लिए पर्याप्त होता है। कुछ बीमारियों या आध्यात्मिक रूप से परमानंद की स्थिति के परिणामस्वरूप यह अवधि चालीस दिनों से भी अधिक हो सकती है। कई साल पहले (1921 में) एक अखबार में छपा था कि लंदन की जेल में बंद एक व्यक्ति बिना कुछ खाए सत्तर दिनों तक स्वस्थ रहने में कामयाब रहा।

चूँकि प्राकृतिक पोषण चालीस से सत्तर या अस्सी दिनों तक रहता है, और चूँकि ईश्वरीय नाम, सर्व-प्रदाता, पृथ्वी पर एक सर्व-समावेशी, व्यापक तरीके से प्रकट होता है; और चूँकि भोजन स्तनों और लकड़ी से एक असाधारण, अप्रत्याशित तरीके से बहता है, इसलिए, यदि दुष्ट मानवता गलत चुनाव या दुरुपयोग से हस्तक्षेप नहीं करती है, तो नाम, सर्व-प्रदाता को प्राकृतिक पोषण के भस्म होने से पहले भूखे जीवित प्राणी की सहायता करनी चाहिए, और भूख से मरने नहीं देना चाहिए। इसलिए, जिन लोगों के भूख से मरने की सूचना दी गई है, वे निश्चित रूप से प्रावधान की कमी से नहीं मरते हैं यदि वे चालीस दिनों से कम समय में मर जाते हैं। बल्कि, जैसा कि कहावत में कहा गया है, "आदतों का त्याग विनाश के कारणों में से एक है," उनकी मृत्यु या तो गलत चुनाव के माध्यम से प्राप्त आदत या

इस आदत को छोड़ने से बीमारी होती है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि भूख से कोई मौत नहीं होती है।

वास्तव में, यह देखा गया है कि भोजन की व्यवस्था शक्ति और इच्छा के सीधे अनुपात में नहीं होती। उदाहरण के लिए, जब बच्चे गर्भ में आने से पहले इच्छा और शक्ति से पूरी तरह वंचित हो जाते हैं, तो उन्हें भोजन इस तरह दिया जाता है कि उन्हें अपना मुंह हिलाने की भी जरूरत नहीं होती। फिर जब वे दुनिया में आते हैं, तब भी उनमें शक्ति या इच्छा नहीं होती, लेकिन चूंकि उनमें किसी प्रकार की क्षमता या संभावित इंद्रियां होती हैं, इसलिए उन्हें केवल अपना मुंह स्तन से चिपकाने की जरूरत होती है, और उन्हें स्तनों के स्रोतों के माध्यम से सबसे दयालु और अजीब तरीके से उत्तम, सबसे पौष्टिक और आसानी से पचने वाला भोजन दिया जाता है। जैसे-जैसे उनमें शक्ति और इच्छाशक्ति बढ़ती है, वह बढ़िया, आसानी से उपलब्ध भोजन धीरे-धीरे शिशुओं से छीना जाने लगता है। स्तनों के स्रोत सूख जाते हैं, और बच्चे का भोजन कहीं और से आता है। लेकिन चूंकि उनमें अभी भी अपना भोजन प्राप्त करने के लिए पर्याप्त इच्छा या शक्ति नहीं होती है, इसलिए सर्व-प्रदाता उनके माता-पिता की देखभाल और करुणा को उनकी सहायता के लिए भेजते हैं। जब भी उनके पास पर्याप्त शक्ति और इच्छाशक्ति होती है, तब उनका भरण-पोषण उन्हें आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता।

पोषण अपने स्थान पर बना रहता है और कहता है, "आओ और मुझे खोजो, मुझे ले लो!" पोषण हमेशा इच्छा या शक्ति के सीधे आनुपातिक नहीं होता है।
उपरोक्त शिशुओं के उदाहरण के अतिरिक्त, यह तथ्य कि इच्छाशक्ति और शक्ति में सबसे कमजोर जानवर बेहतर रहते हैं तथा उन्हें बेहतर सुविधाएं मिलती हैं, इसे सिद्ध करता है।

दूसरा बिंदु: संभावना के विभिन्न प्रकार हैं, जैसे "तर्क में संभावना", "अभ्यास के माध्यम से संभावना" और "सामान्य संभावना"। यदि कोई घटना तर्क में संभव नहीं है, यानी, यदि ठोस तर्क इसे संभव नहीं मानता है, तो इसे अस्वीकार कर दिया जाता है। यदि यह उस तरह का नहीं है जिसे अभ्यास या प्रयासों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, तो यह केवल एक चमत्कार (ईश्वर द्वारा पैगंबर के माध्यम से बनाया गया) हो सकता है। यह आसानी से ऐसा चमत्कार नहीं हो सकता है जिसे संतों द्वारा किया जा सके। यदि कोई चीज अभ्यास या सिद्धांत के माध्यम से संभव नहीं है, लेकिन ऐसा होने की सूचना दी गई है, तो इसे केवल तभी स्वीकार किया जा सकता है जब प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर इसके होने का निर्णायक प्रमाण हो।

यही कारण है कि सैय्यद अहमद बदावी की असाधारण स्थितियाँ, जो चालीस दिनों तक बिना खाए रहने में कामयाब रहे, अभ्यास के माध्यम से प्राप्त की जाने वाली संभावना की तरह हैं। यह उनके द्वारा किया गया एक असाधारण चमत्कार और उनका एक आदतन अभ्यास दोनों हो सकता है। यह यूनानी है-

---

[35] सैयद अहमद बदावी (मृत्यु 1276) इस्लाम के इतिहास में सबसे प्रसिद्ध संतों में से एक थे। (ट्र.)

सैयद अहमद बदावी, ईश्वर उन्हें पवित्र करे, आध्यात्मिक तल्लीनता की अद्भुत और आनंदमय अवस्था में थे। वे कभी-कभी, लेकिन हमेशा नहीं, चमत्कार करने के तरीके के रूप में चालीस दिनों में एक बार खाते थे। उन्होंने ऐसा शायद इसलिए किया होगा क्योंकि आध्यात्मिक तल्लीनता की उनकी अवस्थाओं के कारण उन्हें खाने की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी, जिस स्थिति में, यह एक आदत बन गई थी। यह विश्वसनीय रूप से बताया गया है कि कई अन्य संतों ने इस तरह का चमत्कार किया है। इसलिए, जैसा कि हमने ऊपर बताया, चूँकि शरीर में संग्रहीत पोषण का भंडार चालीस दिनों से अधिक समय तक रहता है, और इतने लंबे समय तक बिना खाए रहना अभ्यास के माध्यम से संभव है, और यह असाधारण लोगों के बारे में विश्वसनीय रूप से वर्णित है, तो इसे नकारा नहीं जा सकता।

दूसरा मुद्दा

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में दो महत्वपूर्ण बातें स्पष्ट की जाएंगी, क्योंकि भूगोल और खगोल विज्ञान के संकीर्ण नियमों तथा उनके अधूरे सिद्धांतों और क्षुद्र मापों के कारण वैज्ञानिक कुरान के आकाश तक पहुंचने और उसकी आयतों के तारों में अर्थ के सात स्तरों को खोजने में असमर्थ रहे हैं, और इस प्रकार उन्होंने आयतों की (जिनसे सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा की गई है और जिनकी हम व्याख्या कर रहे हैं) आलोचना की है और मूर्खतापूर्ण ढंग से उन्हें अस्वीकार करने का प्रयास भी किया है।

पहला महत्वपूर्ण मामला

यह पृथ्वी के बारे में है, जो स्वर्ग की तरह सात स्तर की है। आधुनिक वैज्ञानिक, या पृथ्वी और स्वर्ग से संबंधित विज्ञान, इस बात से इनकार करते हैं।
वे कुरान की कुछ सच्चाइयों का विरोध करने के लिए इसे एक बहाना बनाते हैं। हम इस मामले से संबंधित कुछ बिंदुओं का संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

पहला बिन्दु: सबसे पहले, किसी श्लोक का प्रत्यक्ष, मूल अर्थ एक बात है, और उससे निकाले गए अन्य अर्थ या अर्थ तथा उसे पुष्ट करने वाली बातें दूसरी बात हैं। यदि अनेक अर्थों या अर्थों में से कोई एक अर्थ-

अनुमान लगाया गया है कि अभी तक पुष्टि नहीं की जा सकी है या आवश्यक साक्ष्यों की कमी है, लेकिन मूल अर्थ को नकारा नहीं जा सकता। स्वर्ग और पृथ्वी के सात स्तरों और उनके साथ समानता के बिंदुओं के बारे में मूल अर्थ के कई हिस्सों में से, जैसा कि नीचे समझाया जाएगा, इसे इंगित करने और पुष्टि करने के लिए सात स्पष्ट वास्तविकताएं हैं।

दूसरी बात यह कि आयत में स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया है कि धरती की सात परतें हैं। आयत के स्पष्ट अर्थ में, ईश्वर वह है जिसने सात परतें बनाई हैं।

आकाश और पृथ्वी में से उनके समान (65:12) में कहा गया है कि ईश्वर ने पृथ्वी को सात आकाशों के समान बनाया है, और इसे अपने प्राणियों के लिए निवास स्थान बनाया है। इसमें स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया है कि ईश्वर ने पृथ्वी के सात स्तर बनाए हैं। आयत में आकाश और पृथ्वी के बीच समानता इस प्रकार है:

प्राणियों के लिए बनाए गए और बनाए गए निवास स्थान दोनों के संबंध में।

दूसरी बातः स्वर्ग की तुलना में पृथ्वी वास्तव में बहुत छोटी है। लेकिन जिस तरह एक मामले में हृदय शरीर के बराबर है, उसी तरह प्रदर्शनी स्थल और असंख्य दिव्य कलाकृतियों के केंद्र के रूप में पृथ्वी, ब्रह्मांड के हृदय के रूप में स्वर्ग के बराबर हो सकती है और अपने अर्थ के साथ, इसका केंद्र भी हो सकती है। इस दृष्टिकोण से, (१) पृथ्वी के सात जलवायु हैं, जैसा कि प्राचीन काल से समझा जाता रहा है; (२) यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि सात महाद्वीप हैं, अर्थात् यूरोप, अफ्रीका, ओशिनिया, दो एशिया (वर्तमान में, एक एशिया और अंटार्कटिका), और दो अमेरिका; (३) सात महान समुद्र या महासागर हैं और पृथ्वी के वे हिस्से हैं जो इसके दोनों या किसी एक गोलार्ध में हैं; (४) पृथ्वी के केंद्र से लेकर बाहरी परत तक सात सन्निहित परतें हैं;३६ (५) प्रसिद्ध सात सार्वभौमिक तत्व जिन्हें "सात स्तर" कहा जाता है, सरल, विशिष्ट तत्वों से मिलकर बने हैं जो सजीव प्राणियों के जीने के साधन हैं; (6) तीन पशु, वनस्पति और खनिज साम्राज्यों और जल, वायु, अग्नि और मिट्टी के चार मूल तत्वों से युक्त सात स्तर या क्षेत्र हैं; (7) विभिन्न जीवित और चेतन प्राणियों के सात क्षेत्र हैं, जैसे कि जिन्न, शैतान और मनुष्य, जैसा कि आध्यात्मिक खोज और अवलोकन के कई संतों द्वारा खोजा गया है; और (8) हमारे जैसे सात अन्य क्षेत्र या ग्लोब हैं, और जिनमें प्रत्येक से संबंधित जीवित प्राणी रहते हैं - और इन सभी तथ्यों का अनुमान उपर्युक्त आयत से लगाया गया है, जो कहता है कि ईश्वर वह है जिसने सात आकाश और पृथ्वी को उनके समान बनाया है।

इस प्रकार, हम सात तरीकों से यह स्थापित करने में सक्षम हुए हैं कि पृथ्वी में सात स्तर या सात प्रकार की परतें हैं। अंतिम, आठवाँ अर्थ दूसरे दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन हमारी चर्चा में शामिल नहीं है।

---

36 पृथ्वी में कई अलग-अलग परतें हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएं हैं: आंतरिक कोर, बाहरी कोर, निचला मेंटल, बाहरी मेंटल, एस्थेनोस्फीयर, लिथोस्फीयर और क्रस्ट। पृथ्वी को उसके आस-पास के वातावरण में भी देखा जा सकता है। इसके चारों ओर का वायुमंडल क्षोभमंडल, ओजोन परत, समताप मंडल, मध्यमंडल और थर्मोस्फीयर में विभाजित है। ठोस पृथ्वी को जीवमंडल, जलमंडल और पृथ्वी की आंतरिक संरचना में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें क्रस्ट, मेंटल और कोर शामिल हैं। (ट्र.)

तीसरी बात: चूँकि परम बुद्धिमान परमेश्वर कुछ भी व्यर्थ नहीं करता और कुछ भी व्यर्थ नहीं बनाता, और चूँकि अन्य प्राणी चेतन प्राणियों की सेवा करते हैं, और पूर्णता प्राप्त करते हैं, सजीवता प्राप्त करते हैं, और उनके द्वारा व्यर्थता से बचते हैं, और चूँकि परम बुद्धिमान और महिमावान सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने वायु तत्व, जल जगत और पृथ्वी की परत को असंख्य जीवित प्राणियों से आबाद किया है, और चूँकि वायु और जल प्राणियों की गति को नहीं रोकते, इसलिए पृथ्वी या पत्थर जैसे घने पदार्थ भी बिजली, एक्स-रे या इसी तरह की चीज़ों के संचरण में बाधा नहीं डालते, इसलिए निश्चय ही सर्वज्ञ पूर्णता, अमर निर्माता, निश्चित रूप से पृथ्वी के आंतरिक केंद्र से लेकर बाहरी परत तक, जहाँ हम रहते हैं, सातों समीपवर्ती परतों को, उनके सभी भागों और स्थानों सहित, निर्जन नहीं छोड़ेगा। उसने निश्चित रूप से इन क्षेत्रों को प्रत्येक के लिए विशिष्ट जीवित, चेतन प्राणियों से आबाद किया है। उन चेतन प्राणियों में देवदूत और अन्य आत्मिक प्राणी हैं। उनके लिए सबसे सघन और कठोर परत वैसी ही है जैसे मछलियों के लिए समुद्र और पक्षियों के लिए हवा। यहाँ तक कि कोर में भयंकर गर्मी भी उनके लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है।

इन चेतन प्राणियों के लिए अग्नि वैसी ही होनी चाहिए जैसी हमारे लिए सूर्य की गर्मी। चूँकि ये चेतन आत्माएँ प्रकाश से बनी हैं, इसलिए अग्नि उनके लिए प्रकाश की तरह है।

चौथा बिन्दु: अठारहवें पत्र में कुछ संतों द्वारा पृथ्वी की परतों के विषय में कुछ विचित्र चमत्कारों की आध्यात्मिक खोज के बारे में किए गए तर्कहीन वर्णन को स्पष्ट करने के लिए एक तुलना का उल्लेख किया गया है। इसका सार इस प्रकार है:

भौतिक क्षेत्र में पृथ्वी एक बीज है, जबकि मध्यवर्ती क्षेत्र या अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया में यह एक विशाल वृक्ष की तरह है जिसकी शाखाएँ स्वर्ग के कोनों तक फैली हुई हैं। आध्यात्मिक खोज के कुछ संतों ने पृथ्वी के एक क्षेत्र में राक्षसों को निवास करते देखा है जो अरबों वर्ग मील तक फैला हुआ है, लेकिन यह भौतिक पृथ्वी में नहीं है, बल्कि पृथ्वी की शाखाओं या स्तरों पर है जो आदर्श रूपों की दुनिया में परिलक्षित होते हैं। चूँकि पृथ्वी का एक प्रतीत होता है कि महत्वहीन स्तर किसी अन्य दुनिया में इतना व्यापक प्रतिबिंब है, इसलिए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पृथ्वी के सात स्तर या परतें हैं जो स्वर्ग के सात स्तरों के अनुरूप हैं। इस प्रकार, छोटी पृथ्वी को स्वर्ग के अनुरूप दिखाकर, प्रासंगिक कुरान की आयतें चमत्कारिक रूप से संक्षिप्त तरीके से उपर्युक्त और अन्य समान बिंदुओं की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण मामला

सातों आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, उसी की तसबीह करो। (17:44)

फिर उसने आकाश की ओर मार्ग निर्देशित किया और उसे सात आकाश बना दिए। (2:29)

ऊपर दी गई आयतों जैसी कई आयतें आकाश को सात स्वर्गों के रूप में वर्णित करती हैं। इस मामले की संक्षिप्त व्याख्या, जिसे इशारत अल-इजाज़ ("कुरान के चमत्कारों के संकेत") में विस्तार से समझाया गया है, इस प्रकार है:

मध्य युग के मुस्लिम दार्शनिकों और वैज्ञानिकों ने आकाश में वह सब शामिल किया जिसे शरिया ईश्वरीय सर्वोच्च सिंहासन और ईश्वरीय सर्वोच्च सीट कहता है, और इस प्रकार उन्होंने नौ आकाशों का उल्लेख एक अजीब तरीके से किया।

दर्शन और विज्ञान के उन महान व्यक्तियों के प्रभावशाली वर्णन कई शताब्दियों तक लोगों को प्रभावित करते रहे। यह प्रभाव इतना था कि कुरान के कई व्याख्याकारों को प्रासंगिक आयतों के स्पष्ट अर्थों को अपने विचारों के तरीके से मिलाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे कुरान की चमत्कारिकता एक हद तक छिप गई। इस शास्त्रीय दृष्टिकोण के विपरीत, जिसे न तो अनदेखा किया जा सकता है और न ही सुधारा जा सकता है, आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसके बिल्कुल विपरीत चला गया और लगभग आकाश के अस्तित्व को ही नकार दिया। दोनों ही चरम होने के कारण, ये दृष्टिकोण वास्तविकता को उसकी संपूर्णता में चित्रित करने में असमर्थ रहे हैं।

जहाँ तक बुद्धिमानी भरे कुरान की पवित्र बुद्धि का सवाल है, हमेशा की तरह, यह बीच का, सीधा रास्ता चुनता है और घोषणा करता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आकाश में सात स्तर बनाए हैं। गतिशील तारे आकाश में मछलियों की तरह (पानी में चलते हुए) घूमते हैं, और ईश्वर की स्तुति करते हैं। एक नबी की परंपरा कहती है, "आकाश एक रुकी हुई लहर है।"37 यानी यह एक महासागर है जिसमें लहरें स्थिर हैं।

हम इस कुरानिक सत्य को संक्षेप में निर्णायक रूप से समझाएंगे,
सात तथ्य और अर्थ के सात पहलू बताए गए हैं।

पहला तथ्य: विज्ञान और बुद्धि को यह स्वीकार करना चाहिए कि यह असीम अंतरिक्ष कोई अनंत शून्य नहीं है, बल्कि यह ईथर नामक एक प्रकार के पदार्थ से भरा हुआ है।

दूसरा तथ्य: यह एक वैज्ञानिक, तार्किक और वास्तव में अवलोकनीय वास्तविकता है कि एक प्रकार का पदार्थ है जो अंतरिक्ष को भरता है और जो आकाशीय पिंडों के बीच गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण जैसे नियमों के लिए एक कड़ी के रूप में कार्य करता है और जो प्रकाश, ऊष्मा और बिजली का संवाहक है।

तीसरा तथ्य: यह भी एक तथ्य है कि पदार्थ के रूप में ईथर, ईथर के रूप में रहते हुए भी, अन्य प्रकार के पदार्थों की तरह, विभिन्न रूप और संरचनाएं रखता है।

---

37 एट-तिर्मिज़ी, "तफ़सीर सूरा 57" 1; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 2:370। (ट्र.)

जिस प्रकार एक ही पदार्थ की तीन अवस्थाएं होती हैं - द्रव, गैसीय या ठोस - या वह तीन प्रकार की संरचनाओं जैसे जल, भाप और बर्फ का स्रोत हो सकता है, उसी प्रकार इस बात को अस्वीकार करने का कोई तार्किक कारण नहीं है कि ईथर की सात अवस्थाएं या स्तर हैं; इस कथन पर आपत्ति होने का कोई तर्कसंगत कारण नहीं है।

चौथा तथ्य: आकाशीय पिंडों का ध्यानपूर्वक अवलोकन और अध्ययन करने पर पता चलेगा कि आकाशीय स्तरों में कुछ अंतर है। उदाहरण के लिए, जिस स्तर पर आकाशगंगा नामक विशाल बादल जैसा गोला है, वह स्थिर तारों के स्तर जैसा नहीं है। इससे ऐसा लगता है कि स्थिर तारे गर्मियों के फलों की तरह पक गए हैं, जबकि असंख्य नए तारे लगातार आकाशगंगा में बादल के रूप में दिखाई देते हैं और पकने लगते हैं।

स्थिर तारों का वह स्तर किसी समझदार व्यक्ति को सौर मंडल के स्तर से अलग प्रतीत होता है। इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सात स्वर्गीय प्रणालियाँ या सात स्तर हैं जो एक दूसरे से अलग हैं।

पांचवा तथ्य: यह धारणा, प्रेरक तर्क, अवलोकन और अनुभव द्वारा स्थापित तथ्य है कि जब किसी पदार्थ पर काम किया जाता है, तो वह नए रूपों में बदल जाता है, और उससे नई सामग्री का उत्पादन होता है। उदाहरण के लिए, जब हीरे की खदान पर काम शुरू होता है, तो उसमें से राख और कोयला, साथ ही हीरे भी प्राप्त होते हैं। एक और उदाहरण देते हैं, जब आग जलाई जाती है, तो यह लपटों के साथ-साथ धुआँ और अंगारे भी पैदा करती है। इसके अलावा, जब हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को मिलाया जाता है, तो पानी, बर्फ और भाप बनते हैं। हम जानते हैं कि जब एक ही पदार्थ पर काम किया जाता है, तो नई संरचनाएँ बनती हैं और पदार्थ के नए रूप सामने आते हैं।

अतः जब सृजनात्मक शक्ति ने आकाश के पदार्थ पर कार्य करना आरम्भ किया, तो उसने अवश्य ही उससे आकाश की रचना की होगी, जिसे उसने सात आकाशों में रूपांतरित किया।

छठा तथ्य: ऊपर बताए गए सभी तथ्य अनिवार्य रूप से स्वर्गों के अस्तित्व और बहुलता दोनों की ओर संकेत करते हैं। चूँकि स्वर्ग एक से ज़्यादा हैं और ईश्वर, जो परम सत्य है, ने क़ुरआन में उन्हें सात बताया है, तो वे निश्चित रूप से सात हैं।

सातवां तथ्य: चूंकि अरबी में सात, सत्तर और सात सौ जैसे शब्द बहुलता को व्यक्त करते हैं, इसलिए सार्वभौमिक सात स्तर वास्तव में कई स्तरों का समावेश कर सकते हैं।

निष्कर्ष: सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने ईथर से सात आकाशों का निर्माण किया और उन्हें एक अत्यंत सूक्ष्म और अद्भुत प्रणाली में व्यवस्थित किया, जिसमें सितारों को बोया। चूँकि चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान मानव जाति और जिन्न के बीच समझ के सभी स्तरों से बात करने वाला एक शाश्वत संबोधन है, इसलिए निश्चित रूप से प्रत्येक स्तर को अपना हिस्सा मिलेगा।

कुरान की प्रत्येक आयत में अर्थ के अनेक स्तर होंगे, जो स्पष्ट रूप से और अंतर्निहित रूप से सभी की समझ को संतुष्ट करेंगे।

वास्तव में, कुरान का संबोधन इतना व्यापक है और इसमें अर्थ के इतने सारे स्तर समाहित हैं कि यह सबसे अशिक्षित आम लोगों से लेकर सबसे उच्च कुलीन वर्ग तक की समझ के सभी स्तरों पर विचार करता है। इससे पता चलता है कि इसकी प्रत्येक आयत में ऐसे पहलू हैं जो हर स्तर को संबोधित करते हैं। यह इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण है कि सात प्रकार के लोगों ने "सात स्वर्गों" के सार्वभौमिक अर्थ से अर्थ के निम्नलिखित सात स्तरों को समझा है:

जब से उसने सात आकाशों की रचना की है, तब से अदूरदर्शी और संकीर्ण मन वाला व्यक्ति वायुमण्डल के विषय में सोचता है, जिसमें वायु की सभी रचनाएँ हैं।
एक अन्य प्रकार का व्यक्ति, जो ब्रह्माण्ड विज्ञान से चकित है, सितारों के बारे में सोचता है, जिन्हें लोकप्रिय रूप से सात ग्रह और उनकी कक्षाओं के रूप में जाना जाता है। फिर एक और समूह हमारे जैसे सात स्वर्गीय क्षेत्रों के बारे में सोचता है, जिनमें जीवित प्राणी रहते हैं। लोगों का एक और समूह सौर मंडल को सात स्तरों में विभाजित करने और सौर मंडल जैसी अन्य सात प्रणालियों के अस्तित्व के बारे में सोचता है। और फिर मानव जाति का एक और समूह ईथर के पदार्थ को सात स्तरों में बनने के बारे में सोचता है। एक और समूह, एक व्यापक दिमाग के साथ, सितारों से सजे सभी दृश्यमान स्वर्गों को एक स्वर्ग मानता है, जो हमारी दुनिया का स्वर्ग है, और समझता है कि छह और समान स्वर्ग हैं। मानवता का सातवां और उच्चतम वर्ग सात स्वर्गों को भौतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं मानता है। बल्कि, वे समझते हैं कि सात अन्य क्षेत्र भी हैं, जैसे परलोक का क्षेत्र, अदृश्य का क्षेत्र, तथा अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों का क्षेत्र, और इनमें से प्रत्येक क्षेत्र का अपना स्वर्ग है जो उसे एक लिफाफे की तरह घेरे हुए है।

और इसलिए, इस श्लोक के कई और विशिष्ट अर्थ हैं, जैसे कि मानवता के सात वर्गों द्वारा अनुमानित अर्थ के ऊपर बताए गए सात स्तर। हर कोई अपनी समझ के स्तर के अनुसार अपना हिस्सा प्राप्त करता है और उस स्वर्गीय मेज पर अपना पोषण पाता है।

चूँकि उस श्लोक में इतने सारे सच्चे अर्थ हैं जो इसकी पुष्टि करते हैं, इसलिए सात स्वर्गों के अस्तित्व को अस्वीकार करने के बहाने इसकी आलोचना करने वाले अविवेकी दार्शनिक और भ्रमित ब्रह्मांड विज्ञानी मूर्ख बच्चों की तरह हैं जो सितारों को गिराने के लिए उन पर पत्थर फेंकते हैं। यदि श्लोक अपने अर्थों के साथ एक भी सत्य को इंगित करता है, या यदि इससे निकाले गए अर्थों में से एक भी सत्य है, तो श्लोक अपने सामान्य अर्थ में सत्य है।

इसके अलावा, भले ही इसके विशिष्ट अर्थों के बीच कविता का एक अर्थ हो

यह शब्दशः असत्य है, लेकिन जिसे आम तौर पर स्वीकार किया जाता है, इसे सार्वजनिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखने और सम्मान दिखाने के लिए अर्थों में शामिल किया जा सकता है। हमने देखा है कि इस श्लोक के कई विशेष अर्थ हैं, जो सभी सत्य हैं। अब विचार करें कि आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान या भूगोल और खगोल विज्ञान के विज्ञान कैसे गलत हैं और श्लोक के व्यापक अर्थ के प्रति अपनी आँखें बंद करके, और इसके विशेष अर्थों को अनदेखा करके, जो सभी सत्य हैं, अपनी अपूर्ण समझ के अनुसार इसका एक काल्पनिक अर्थ निकालते हैं, इस पर पत्थर फेंकते हैं। लेकिन पत्थर वापस गिरते हैं और उनके सिर तोड़ देते हैं, उनकी मान्यताओं को नष्ट कर देते हैं।

संक्षेप में, क़ुरआन सात आयतों में अवतरित हुआ, तथा इसमें सात सटीक अभिव्यक्तियाँ, सात तरह की चमत्कारिकताएँ, सात सत्य स्तर तथा सात स्तंभ हैं। चूँकि भौतिकवाद के अविश्वासी विचार या दृष्टिकोण जिन्न या शैतानों के प्रभाव वाले होते हैं तथा क़ुरआन के आकाश के सात स्तरों तक नहीं चढ़ सकते, इसलिए वे आयतों के सितारों को पहचान नहीं सकते तथा इस प्रकार झूठी रिपोर्ट देते हैं। लेकिन सत्य के उल्काएँ आयतों के सितारों से उनके सिर पर गिरती हैं, तथा उन्हें जला देती हैं। गुमराह दर्शन के जिन्न-जैसे विचारों के साथ क़ुरआन के आकाश तक चढ़ना संभव नहीं है। आयतों के सितारों पर केवल सच्ची बुद्धि की सीढ़ी तथा ईमान के पंखों पर तथा इस्लामी विचार और जीवन के तरीके से ही चढ़ा जा सकता है।

हे ईश्वर! पैगम्बरी के आकाश के सूर्य और नबूवत के आकाश के पूर्ण चन्द्रमा पर तथा उसके परिवार और साथियों पर कृपा अता कर, जो मार्ग पर चलने वालों के लिए मार्गदर्शन के सितारे हैं।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर! हे आकाशों और धरती के रब! इस ग्रंथ के लेखक (और अनुवादक) और उसके साथियों के दिलों को कुरान की सच्चाईयों और ईमान के सितारों से सजा दे! आमीन।

तेरहवीं झलक

तेरहवीं झलक

शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की शरण लेने का अर्थ और बुद्धि

इसका अर्थ है कि मैं शैतान से, जो सदा से अस्वीकृत है (परमेश्वर की दया से) परमेश्वर की शरण चाहता हूँ।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और कह दो, "ऐ मेरे रब! मैं शैतानों की उकसाहटों और उकसावे से तेरी शरण में आता हूँ। ऐ मेरे रब, मैं तेरी शरण में आता हूँ कि कहीं वे मेरे पास न आ जाएँ।" (23:97-98)

उनका ग्रंथ शैतान से बचने के लिए ईश्वर की शरण लेने के अर्थ के बारे में है। इस विषय का अध्ययन तेरह संकेतों के रूप में किया जाएगा।

चूँकि कुछ संकेतों को रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों में, जैसे छब्बीसवें वचन में, स्पष्ट रूप से समझाया गया है, इसलिए यहाँ उन पर केवल संक्षेप में चर्चा की जाएगी।

पहला संकेत

प्रश्न: चूँकि शैतानों (शैतानों) का सृष्टि में कोई हिस्सा नहीं है, और सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी दया और कृपा से सत्य के अनुयायियों का समर्थन करता है, और सत्य की आकर्षक सुंदरता सत्य के अनुयायियों को मजबूत और प्रोत्साहित करती है, और गुमराही की घृणित कुरूपता गुमराह लोगों को भी विद्रोह करती है, तो शैतान के दल की लगातार सफलता में क्या बुद्धिमत्ता है? और सत्य के अनुयायी हमेशा शैतान से बचने के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण लेने को क्यों ज़रूरी समझते हैं?

उत्तर : बुद्धि और तर्क यह है: गलत मार्गदर्शन और बुराई, अधिकांशतः, नकारात्मक और विनाशकारी हैं, तथा विलुप्ति की ओर ले जाते हैं, जबकि सही मार्गदर्शन और अच्छाई मुख्य रूप से सकारात्मक, रचनात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक हैं, तथा अस्तित्व की ओर ले जाते हैं। जैसा कि सभी जानते हैं, एक अकेला व्यक्ति एक दिन में एक इमारत को नष्ट कर सकता है, जिसे बनाने में बीस लोगों को बीस दिन लगे थे। जबकि यह सर्व-महान निर्माता की शक्ति है जो मानव जीवन का निर्माण और पोषण करती है, जिसका अस्तित्व उसने मानव शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंगों और अस्तित्व की महत्वपूर्ण स्थितियों के अस्तित्व पर निर्भर किया है, शरीर के एक हिस्से को काटकर एक अत्याचारी मृत्यु के लिए जमीन तैयार कर सकता है, जो जीवन के संबंध में विचार करने पर अस्तित्वहीन है। इस कारण से, कहावत, "विनाश आसान है," कहावत बन गई है।

इसी सच्चाई के कारण कभी-कभी गुमराह लोग सत्य के शक्तिशाली अनुयायियों पर केवल एक कमजोर ताकत से विजय प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन सत्य के अनुयायियों के पास इतना मजबूत किला होता है कि जब वे उसमें शरण लेते हैं, तो वे भयानक दुश्मन उनके पास भी नहीं आ सकते और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते। भले ही वे कुछ अस्थायी नुकसान पहुंचाते हों, जैसा कि ईश्वरीय घोषणा में कहा गया है, अंतिम परिणाम ईश्वर-भक्त, धर्मपरायण, धर्मपरायण लोगों के पक्ष में होता है।

(7:128) अनन्त प्रतिफल और लाभ उस हानि की भरपाई कर देते हैं। यह दृढ़ किला जिसमें शरण लेनी चाहिए, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शरीअत है; यह उनकी सुन्नत है।

दूसरा संकेत

प्रश्न: यह बहुत ही घिनौना और घिनौना लगता है कि शैतान, जो पूरी तरह से दुष्ट हैं, को बनाया गया है और उन्हें विश्वासियों पर हमला करने की अनुमति दी गई है, और बहुत से लोग अविश्वास में पड़ जाते हैं और उनके कारण नरक की आग में डाल दिए जाते हैं।

परम सुन्दर, परम कृपालु, वास्तव में परम दयालु और परम दयावान की दया और कृपा ही इस असीम कुरूपता और भयंकर विपत्ति को अनुमति देती है। बहुत से लोगों ने इस विषय में पूछा है, और यह एक ऐसा प्रश्न है जो बहुत से लोगों के मन में उठता है।

उत्तर : शैतान के अस्तित्व में कुछ छोटी-मोटी बुराइयाँ ज़रूर हैं, लेकिन उसका अस्तित्व कई सार्वभौमिक अच्छे परिणाम देता है और मानव को उपलब्धि और पूर्णता प्रदान करता है। एक बीज से लेकर एक विशाल वृक्ष तक जितनी भी डिग्री और रैंक होती हैं, मानवीय जन्मजात क्षमता के ग्रेड उससे कहीं ज़्यादा होते हैं। वास्तव में, सूरज के प्रतिबिंबों जितनी डिग्री होती हैं—

किसी छोटी सी चमकती हुई वस्तु में इसके प्रतिबिंब से लेकर समुद्र के ऊपर के बुलबुले से लेकर सूर्य तक

इन क्षमताओं या संभावनाओं के विकास के लिए कार्रवाई और काम की आवश्यकता होती है। विकास के तंत्र को ट्रिगर करने वाला तत्व प्रयास और संघर्ष है।

यह संघर्ष शैतान और अन्य हानिकारक एजेंटों और चीजों के खिलाफ है। अन्यथा मनुष्यों के पास स्वर्गदूतों की तरह एक स्थिर (आध्यात्मिक) स्थान या पद होता, और मानव जाति के बीच आध्यात्मिकता में कोई क्रम या अंतर नहीं होता। किसी छोटी सी बुराई से बचने के लिए हजारों अच्छे उदाहरणों को त्यागना बुद्धि और न्याय के विपरीत है।

यह सच है कि ज़्यादातर लोग शैतान की वजह से गुमराही में पड़ जाते हैं, लेकिन आम तौर पर कोई चीज़ अपनी गुणवत्ता की वजह से महत्वपूर्ण और मूल्यवान होती है, न कि उसकी मात्रा की वजह से। मान लीजिए कि किसी के पास हज़ार और

दस बीज धरती के नीचे अपने बीजों को अंकुरित होने देते हैं, और दस पेड़ बन जाते हैं और एक हज़ार सड़ जाते हैं, निश्चित रूप से, दस पेड़ों से उस मनुष्य को मिलने वाला लाभ एक हज़ार सड़े हुए बीजों से होने वाले नुकसान को कम कर देगा। इसी तरह, शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा और शैतानों के खिलाफ संघर्ष के माध्यम से, मानवता को दस परिपूर्ण लोगों के कारण लाभ, सम्मान और मूल्य प्राप्त होता है, जो सितारों की तरह मानवता को प्रबुद्ध करते हैं, निश्चित रूप से अविश्वास के लोगों द्वारा किए गए नुकसान को कम करते हैं जो इतने बुरे हैं कि उन्हें सड़ा हुआ माना जाता है। यही कारण है कि दिव्य दया, बुद्धि और न्याय ने शैतान के अस्तित्व की अनुमति दी है, और उसे मनुष्यों पर हमला करने की अनुमति दी है।

ऐ ईमान वालों! उन भयानक दुश्मनों के खिलाफ़ तुम्हारा कवच ईश्वर के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और कुरान की बेंच पर बुनी गई धार्मिकता है। तुम्हारी ढाल सबसे महान रसूल की उच्च सुन्नत है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। तुम्हारा हथियार ईश्वर की सुरक्षा में शरण लेना और उनसे अपने पापों के लिए क्षमा मांगना है।

तीसरा संकेत

प्रश्न: यह अपने पूर्ण-संतुलित और उचित वाक्पटुता और शैली के अनुसार उचित नहीं लगता कि बुद्धिमान कुरान लोगों के गुमराह होने की बहुत शिकायत करता है, और अक्सर उन पर ध्यान आकर्षित करता है, उन्हें गंभीर रूप से धमकाता है। यह ऐसा है जैसे कि यह एक शक्तिहीन व्यक्ति के खिलाफ सेनाओं को जुटा रहा हो। यह उन्हें एक छोटी सी कार्रवाई के लिए धमकाता है, जैसे कि उन्होंने हजारों अपराध किए हों। भले ही वे मूल रूप से गरीब और दुखी हैं, जिनके पास अस्तित्व के किसी भी अधिकार या प्रभुत्व का कोई दावा नहीं है, कुरान उनके साथ इस तरह से पेश आता है जैसे कि वे किसी के आक्रामक साथी हों।

परमेश्वर अपने राज्य में है, और उनसे शिकायत करता है। इसका कारण क्या है और इसमें क्या बुद्धिमत्ता है?

उत्तर : कारण और बुद्धि यह है: चूँकि शैतान और उसके अनुयायी-

उसे कुमार्ग पर चलने के लिए विवश करके, वे एक छोटे से कार्य से भी बड़ी तबाही मचा सकते हैं, और वे एक छोटे से कार्य से भी अनेक प्राणियों के साथ बहुत बड़ा अन्याय कर सकते हैं।

विचार करें कि किसी राजा के बड़े शाही व्यापारी जहाज पर सवार एक व्यक्ति किसी छोटी सी हरकत या किसी तुच्छ कर्तव्य की उपेक्षा के कारण उन सभी लोगों के प्रयासों को व्यर्थ कर सकता है, जिनका जहाज से संबंधित कोई कर्तव्य है। इसलिए, जहाज का प्रतिष्ठित मालिक उस विद्रोही व्यक्ति की शिकायत करता है और अपने उन सभी लोगों की ओर से उसे कड़ी धमकी देता है, जिनका जहाज से कोई संबंध है। और वह उसे उसकी तुच्छ हरकत पर नहीं बल्कि उसके भयानक परिणामों पर विचार करते हुए कड़ी सजा देता है, और वह भी अपने गौरवशाली नाम पर नहीं बल्कि अपनी प्रजा के अधिकारों के नाम पर।

इसी तरह, अपने छोटे से दोष और विद्रोहीपन के बावजूद, गुमराह लोग, जो शैतान की पार्टी हैं और सही मार्गदर्शन के लोगों के साथ पृथ्वी के जहाज पर मौजूद हैं, कई प्राणियों के अधिकारों का उल्लंघन कर सकते हैं और उनके महान कर्तव्यों को निष्फल कर सकते हैं। इसलिए यह शुद्ध बुद्धिमत्ता और पूरी तरह से उचित और पूरी तरह से वाक्पटुता है कि शाश्वत सम्राट उनके बारे में बहुत शिकायत करता है और उन्हें गंभीर रूप से धमकाता है, अक्सर उनके विनाश की ओर ध्यान आकर्षित करता है जैसे कि वह उनके खिलाफ बड़ी ताकतों को जुटा रहा हो। और यह स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार है, जो वाक्पटुता का आधार है; बल्कि, यह वाक्पटुता ही है क्योंकि वाक्पटुता को स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार बोलने (या लिखने) के रूप में परिभाषित किया गया है। ऐसी प्रतिक्रिया किसी भी तरह से अतिशयोक्ति नहीं है, जो शब्दों की बर्बादी होगी।

यह एक सच्चाई है कि जो व्यक्ति एक छोटे से काम से बहुत बड़ा विनाश करने वाले भयानक दुश्मनों के सामने एक असाधारण रूप से दुर्जेय गढ़ में शरण नहीं लेता है, वह बहुत कष्ट भोगता है। इसलिए, ऐ ईमान वालों! वह इस्पात का स्वर्गीय गढ़ क़ुरान है। उसमें प्रवेश करो और बच जाओ!

चौथा संकेत

आध्यात्मिक खोज के विद्वानों और संतों द्वारा यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है कि अस्तित्वहीनता शुद्ध बुराई है और अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है। अच्छाई, सुंदरता और उत्कृष्टता या पूर्णता का स्रोत आमतौर पर होता है

अस्तित्व में हैं और इसके लिए जिम्मेदार हैं। भले ही कभी-कभी वे सतही तौर पर विनाशकारी प्रतीत होते हों और गैर-अस्तित्व की ओर ले जाते हों, वे अनिवार्य रूप से रचनात्मक, सकारात्मक होते हैं और अस्तित्व की सेवा करते हैं। फिर भी कुरूपता के सभी उदाहरण, जैसे कि गुमराह करना, पाप और आपदाएँ गैर-अस्तित्व और विनाश की उत्पत्ति और सेवा करती हैं। भले ही वे कभी-कभी रचनात्मक और अस्तित्व से संबंधित प्रतीत हों, वे अनिवार्य रूप से नकारात्मक, विनाशकारी होते हैं, और दोनों ही गैर-अस्तित्व की उत्पत्ति और नेतृत्व करते हैं।

इसके अलावा, यह भी एक अवलोकनीय तथ्य है कि किसी इमारत जैसी चीज के अस्तित्व के लिए उसके सभी भागों का अस्तित्व आवश्यक है, जबकि उसका विनाश या गैर-अस्तित्व उसके किसी मुख्य भाग के गैर-अस्तित्व से संभव है।

इसके अलावा, अस्तित्व के लिए एक निश्चित कारण की आवश्यकता होती है और यह उस पर आधारित होता है, जिसे हम इसका raison d'être (अस्तित्व का कारण) कहते हैं। जबकि गैर-अस्तित्व उन चीज़ों पर आधारित हो सकता है जो गैर-अस्तित्व में उत्पन्न होती हैं और गैर-अस्तित्व की ओर ले जाती हैं।

इन दो नियमों के कारण ही, उनके द्वारा किये जाने वाले भयंकर, विनाशकारी कार्यों तथा विभिन्न प्रकार के अविश्वास, पथभ्रष्टता और बुराई के बावजूद, जिन्हें मनुष्यों और जिन्नों में शैतान माना जा सकता है, उनका सृष्टि में या अस्तित्व पर ईश्वरीय सत्ता में कोई हिस्सा नहीं हो सकता।

वे ऐसी बुराइयाँ किसी सृजनात्मक शक्ति के आधार पर नहीं करते, बल्कि वे अच्छी, सकारात्मक और रचनात्मक चीज़ों को नज़रअंदाज़ करके और अधूरा छोड़कर ऐसा करते हैं। किसी भी बुराई के लिए, जो विनाश है, अस्तित्व या आविष्कारक शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। बल्कि, गैर-अस्तित्व या किसी आवश्यक हिस्से के विनाश से उत्पन्न होने वाली कोई चीज़ एक महान विनाश या बुराई का कारण बनती है।38

चूँकि जोरास्ट्रियन इस सूक्ष्म सत्य को समझ नहीं पाए, इसलिए उन्होंने बुराई को वास्तविक अस्तित्व का श्रेय दिया, जिसे वे ईश्वर के लिए अनुपयुक्त मानते थे, और इस सिद्धांत का आविष्कार किया कि अच्छाई का एक निर्माता है, जिसे यज़दान कहा जाता है, और बुराई का एक निर्माता है, जिसे अहिरमान कहा जाता है। हालाँकि, बुराई का काल्पनिक देवता जिसे वे अहिरमान कहते हैं, शैतान है, जो अपनी विशेष स्वतंत्र इच्छा से, हमेशा बुराई करके बुराई का कारण बनता है, जिसका सृजन के कार्य में कोई हिस्सा नहीं है और न ही हो सकता है।

तो ऐ ईमान वालो! शैतानों के इस भयानक विनाश के खिलाफ़ तुम्हारा सबसे महत्वपूर्ण हथियार और मरम्मत के लिए सबसे बड़ा उपकरण है ईश्वर से क्षमा की याचना करना और यह कहकर ईश्वर की शरण माँगना कि, "मैं ईश्वर की शरण माँगता हूँ

---

38 सर्वशक्तिमान ईश्वर हमेशा अपने आप में या उसके परिणामों के कारण अच्छाई की इच्छा रखता है और करता है; वह अच्छाई बनाने के लिए अपने सभी गुणों और नामों को प्रकट करता है। लेकिन मानवता, या तो अपने मूल स्वभाव से अच्छाई से बुराई में बदल जाती है, या ईश्वर द्वारा भेजी गई अच्छाई को प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए जो किया जाना चाहिए उसे करने में लापरवाही बरतती है, या ऐसा कुछ करती है जो ईश्वर की किसी भी अच्छी, सकारात्मक अभिव्यक्ति को रद्द कर दे, उस अच्छाई को अपने लिए बुरा बना देती है। (ट्र.)

शैतान से, सदैव खारिज (भगवान की दया से)।" और आपका गढ़ पैगंबर की उच्च्य सुन्नत है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

पांचवां संकेत

अपनी भेजी हुई किताबों में, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने बार-बार जन्नत जैसे महान इनाम की खुशखबरी दी है और जहन्नम जैसी भयानक सज़ा की चेतावनी दी है। इसके अलावा, वह अक्सर मार्गदर्शन देता है और उसे बुलाता है और भलाई और जन्नत की ओर प्रोत्साहित करता है, और गुमराही से सावधान करता है और जहन्नम और दूसरी तरह की कठोर सज़ाओं की धमकी देता है। मार्गदर्शन के इन सभी साधनों और सीधे रास्ते पर चलने के बावजूद, ईमानवाले शैतान के दल की कमज़ोर, घिनौनी चालों के सामने हार सकते हैं, जो कोई वास्तविक सज़ा देने का वादा नहीं करते। यह बात मेरे दिमाग में लंबे समय तक घूमती रही। मुझे आश्चर्य हुआ कि एक ईमानवाला अपने ईमान के बावजूद अल्लाह सर्वशक्तिमान की कठोर धमकियों पर ध्यान क्यों नहीं दे सकता, और यह लापरवाही ईमान को क्यों नहीं तोड़ती। और अगर, जैसा कि कुरान में कहा गया है, शैतान की चाल हमेशा कमज़ोर होती है (4: 76), तो वे कैसे ईश्वर के खिलाफ़ विद्रोह कर सकते हैं और शैतान की हमेशा कमज़ोर चालों से हार सकते हैं? मेरे कुछ मित्रों ने, हालाँकि उन्होंने मुझसे कई बार सुनी गई सच्चाईयों की ईमानदारी से पुष्टि की थी और मेरे बारे में उनकी राय बहुत अच्छी थी और मेरे साथ उनका रिश्ता बहुत ईमानदार था, फिर भी वे एक हृदयहीन, भ्रष्ट व्यक्ति की पाखंडी प्रशंसा में बह गए और उसके पक्ष में और मेरे खिलाफ़ एक स्थिति बना ली। "सारी महिमा परमेश्वर की हो!" मैंने कहा। "क्या कोई आदमी इतना नीचे गिर सकता है? वह कितना कपटी आदमी है!" उस बेचारे आदमी के बारे में बुरी बातें करके मैंने पाप किया।

बाद में, पिछले संकेतों में वर्णित सत्य मेरे दिमाग में स्पष्ट हो गए और कई अस्पष्ट बिंदुओं को प्रकाशित किया। भगवान का शुक्र है, उस रोशनी के माध्यम से, मुझे समझ में आया कि कुरान का जोरदार प्रोत्साहन और वकालत पूरी तरह से उचित है, और विश्वासियों को शैतान के धोखे में विश्वास की कमी या उनके विश्वास में कमजोरी के कारण नहीं फंसाया जाता है। मैंने यह भी समझा कि जो लोग बड़े पाप करते हैं वे अविश्वासी नहीं बनते हैं, और मुताज़िलियों39 और कुछ ख़ारिज संप्रदायों को उनके सिद्धांत में गलती है कि जो कोई बड़ा पाप करता है वह एक नास्तिक बन जाता है।

39 मुताज़िलाइट्स या अल-मुताज़िला: मुस्लिम "तर्कवादियों" का स्कूल जो मानवीय इच्छा और एजेंसी को रचनात्मक प्रभाव प्रदान करता है, यह निष्कर्ष निकालता है कि यह मनुष्य ही है जो अपने कार्यों का निर्माण करता है। इसके अलावा, यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की विशेषताओं को नकारता है, दावा करता है कि ईश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करने के लिए पूरी तरह से बाध्य है जो विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, और उन लोगों को दंडित करते हैं जो अविश्वास करते हैं। (ट्र.)

अविश्वासी या विश्वास और अविश्वास के बीच की स्थिति में है। इसके अलावा, मुझे एहसास हुआ कि मेरे दुर्भाग्यपूर्ण दोस्त ने उतनी घृणित गिरावट और नीचता नहीं झेली थी जितनी मैंने सोची थी, हालाँकि उसने एक खलनायक के पक्ष में सच्चाई में कई निर्देशों का त्याग किया था। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया और

इस तरह से सोचने के खतरे से बचा गया क्योंकि, जैसा कि मैंने ऊपर बताया, शैतान लोगों को एक तुच्छ उकसावे के माध्यम से खतरों में डाल सकता है जो विनाश की ओर ले जाता है। इसके अलावा, मानव शारीरिक आत्मा हमेशा शैतान की बात सुनती है। और क्रोध और वासना की मानवीय शक्तियाँ दो साधन हैं जो शैतान के सुझावों को प्राप्त करते हैं और प्रसारित करते हैं।

यही कारण है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के दो नाम, क्षमाशील और दयालु, विश्वासियों के सामने सबसे व्यापक और गहन तरीके से क्षमा और करुणा के साथ पेश आते हैं। और सर्वशक्तिमान ने बुद्धिमानी भरे कुरान में घोषणा की है कि पैगंबरों के लिए उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृपा क्षमा है और उन्हें क्षमा के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं। प्रत्येक सूरा (अध्याय) की शुरुआत में पवित्र कथन, दयालु, दयालु ईश्वर के नाम पर दोहराकर और प्रत्येक वैध कार्य या कार्य की शुरुआत में इसे पढ़ने का आदेश देकर, ईश्वर संकेत देता है कि उसकी सर्वव्यापी करुणा एक गढ़ और शरण का केंद्र है। वह हमेशा के लिए खारिज किए गए शैतान से ईश्वर की शरण में आने के वाक्यांश को ढाल बनाता है, ईश्वर की शरण में आने का आदेश देकर !

छठा संकेत

शैतान की सबसे खतरनाक चालों में से एक यह है कि वह कुछ संवेदनशील और सरल-दिमाग वाले लोगों को अविश्वास की कल्पना को अविश्वास की पुष्टि के साथ भ्रमित करने का कारण बनता है। वह गुमराही की अनजाने में हुई धारणा को गुमराही के रूप में दिखाता है और ऐसे लोगों के मन में कुछ बुरे विचार और अवधारणाएँ पैदा करता है। साथ ही, किसी संभावित घटना को उसकी संभावना के जानबूझकर दृढ़ विश्वास के रूप में प्रस्तुत करके, वह लोगों को उनके विश्वास की निश्चितता के बारे में चिंता करने के लिए प्रेरित करता है। नतीजतन, ऐसे बेचारे, सरल लोग कल्पना करते हैं कि वे गुमराही या अविश्वास में पड़ गए हैं और अपने विश्वास से निराश होकर वे शैतान के लिए एक खिलौना बन जाते हैं। शैतान उनकी निराशा और इन कमज़ोरियों दोनों पर काम करता है और क्या कल्पना है और क्या वास्तविकता है, इस बात से भ्रमित होकर वे या तो पागल हो जाते हैं या वास्तव में इस निराशा में गुमराह हो जाते हैं कि अब और कुछ नहीं करना है। रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में हमारे स्पष्टीकरणों का सारांश इस प्रकार है कि शैतान की ये चालें कितनी निराधार हैं:

जैसे दर्पण में साँप की छवि नहीं काटती, अग्नि की छवि नहीं जलती, या किसी गंदी चीज़ का प्रतिबिंब गंदा नहीं करता, वैसे ही कल्पना और विचार के दर्पण में अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदारों की अनजाने में की गई छवियाँ, या गुमराही की छायाएँ, या ईशनिंदा वाले शब्दों की कल्पनाएँ आस्था को भ्रष्ट नहीं कर सकतीं, विश्वास को बदल नहीं सकतीं, या सम्मानजनक शिष्टाचार को नुकसान नहीं पहुँचा सकतीं। क्योंकि यह एक सर्वविदित सिद्धांत है कि न तो ईशनिंदा या अविश्वास की कल्पना करना क्रमशः ईशनिंदा या अविश्वास है, न ही गुमराही के बारे में अनजाने में सोचना गुमराही हो सकता है।

जहां तक आस्थावानों के बीच संदेह उत्पन्न होने का प्रश्न है, किसी चीज का घटित होना अपने आप में संभव होना विश्वास की निश्चितता को नकारता नहीं है या उसे नुकसान नहीं पहुंचाता है।
धार्मिक पद्धति के विज्ञान में यह एक स्थापित सिद्धांत है कि किसी चीज का अपने आप में घटित होना संभव होना ज्ञान से प्राप्त होने वाली निश्चितता को नकार नहीं देता। उदाहरण के लिए, हमें यकीन है कि बरला झील पानी से भरी झील के रूप में मौजूद है। हालाँकि, यह संभव है कि यह इस समय जमीन में डूब गई हो या कभी भी डूब सकती हो। लेकिन, चूँकि यह संभावना किसी ठोस संकेत या कारण से उत्पन्न नहीं होती है, इसलिए हमें इसके वास्तविक अस्तित्व पर संदेह नहीं है। क्योंकि यह एक और पद्धतिगत सिद्धांत है कि कोई भी संभावना जो सिद्ध वास्तविकता से उत्पन्न नहीं होती है, उस पर विचार नहीं किया जाना चाहिए। इन सच्चाइयों के बावजूद, जो दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ऊपर वर्णित शैतानी सुझावों के संपर्क में आता है, वह चिंता करता है कि ऐसी अवास्तविक संभावनाओं के कारण उसने विश्वास की सच्चाईयों के बारे में अपनी निश्चितता खो दी है।
एक व्यक्ति को सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के बारे में उनके मानवीय पहलुओं के कारण कई अनजाने अस्वीकृत घटनाओं के अधीन किया जा सकता है। लेकिन इनमें से कोई भी घटना विश्वास की निश्चितता को नुकसान नहीं पहुँचाती है। यदि कोई व्यक्ति सोचता है कि वे नुकसान पहुँचाते हैं, तो वह स्वयं नुकसान उठा रहा है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शैतान अपने केबल के ज़रिए दिल में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बारे में बुरी बातें फुसफुसाता है। वह व्यक्ति यह सोचकर काँप उठता है कि अगर शैतान ऐसी बातें फुसफुसा सकता है तो उसका दिल बहुत भ्रष्ट हो गया है।
जबकि, उनका डर और कांपना तथा शैतान की फुसफुसाहट का विरोध यह सिद्ध करता है कि जिन बुरी बातों की चर्चा की जा रही है, वे उनके हृदय से नहीं आती हैं; बल्कि वे शैतान के इशारे से आती हैं या सीधे शैतान द्वारा सुझाई जाती हैं।

मनुष्य की आंतरिक क्षमताओं में से एक या दो ऐसी हैं जिन्हें मैं स्पष्ट रूप से नहीं बता पाया हूँ; ये इच्छा शक्ति से अनियंत्रित होती हैं, और इनके लिए व्यक्ति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। कभी-कभी ये किसी व्यक्ति को अपने नियंत्रण में ले लेती हैं।

प्रभाव डालते हैं और सत्य पर ध्यान दिए बिना गलत काम करते हैं।
शैतान व्यक्ति को यह सुझाव देता है कि जब वे उसके प्रभाव में होते हैं, तो "तुम्हारे पास सत्य पर विश्वास करने और उसका पालन करने की क्षमता नहीं है, इसलिए तुम अनजाने में ऐसा झूठ करते हो। इसका मतलब है कि तुम्हारे भाग्य ने तुम्हें अवज्ञा और इसलिए, दुर्दशा के लिए अभिशप्त किया है।" बेचारा व्यक्ति निराशा में पड़ जाता है और नष्ट हो जाता है।

इसलिए, शैतान की उपरोक्त योजनाओं के विरुद्ध एक आस्तिक का गढ़ कुरान के अपरिवर्तनीय, मौलिक सिद्धांत और विश्वास की सच्चाईयाँ हैं जिन्हें शुद्ध, सटीक विद्वानों द्वारा निश्चित रूप से स्थापित किया गया है। और आस्तिक को शैतान की इस अंतिम योजना को अनदेखा करना चाहिए और इससे बचने के लिए ईश्वर की शरण लेनी चाहिए। क्योंकि जितना अधिक वे इसे महत्व देते हैं, उतना ही यह अपनी ओर ध्यान आकर्षित करता है और बढ़ता और फूलता है। ऐसे आध्यात्मिक घावों के लिए एक आस्तिक के लिए मारक और उपाय पैगंबर की उच्च सुन्नत है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

सातवां संकेत

सवाल: मुताज़िला के अधिकारी बुराई के निर्माण को बुराई मानते हैं, और इसलिए वे अविश्वास या गुमराही के निर्माण को ईश्वर के नाम पर नहीं मानते। ऐसा करके, वे सोचते हैं कि वे ईश्वर को किसी भी तरह के दोष या गलत काम से मुक्त रखते हैं। हालाँकि, मानवता को बुरे कामों का निर्माता मानकर वे गुमराही में पड़ जाते हैं।

मुताज़िलाइट अधिकारियों का यह भी मानना है कि कोई बड़ा पाप करने से आस्तिक अपना विश्वास खो देता है, क्योंकि ऐसा गंभीर पाप करना ईश्वर में विश्वास और नर्क की सज़ा के साथ मेल नहीं खाता। बड़े पाप करने का मतलब है ईश्वर के "क्रोध" और नर्क की अनंत सज़ा की अवहेलना करना।

अतः यदि कोई व्यक्ति, जो संसार में कारावास के भय से स्वयं को कानून के विरुद्ध कुछ भी करने से रोकता है, इनमें से कोई भी पाप करता है, तो यह निश्चित रूप से उसके अविश्वास को दर्शाता है।

उत्तर : जैसा कि छब्बीसवें वचन में बताया गया है, जो ईश्वरीय नियति और आदेश से संबंधित है, बुराई की रचना करना बुराई नहीं है; बुरा काम करना बुराई है। क्योंकि सृष्टि सभी परिणामों को कार्य से उत्पन्न होने पर विचार करती है।

किया गया। चूँकि बुराई का अस्तित्व कई अच्छे परिणामों के लिए प्रारंभिक है, अगर कोई इन परिणामों को ध्यान में रखता है, तो बुराई का निर्माण अच्छा हो जाता है। उदाहरण के लिए, आग कई अच्छे परिणाम उत्पन्न करती है। अगर, अपनी स्वतंत्र इच्छा के दुरुपयोग के माध्यम से, कुछ लोग आग को अपने लिए बुराई बनाते हैं, तो वे यह दावा नहीं कर सकते कि आग का निर्माण बुरा है। इसी तरह, शैतानों का निर्माण भी बुरा है।

कई मामलों में मानव प्रगति के कारण कई बुद्धिमान परिणाम सामने आए हैं। इसलिए, अगर कुछ लोग अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग करके और बुरे काम करके शैतान से हार जाते हैं, तो वे यह दावा नहीं कर सकते कि शैतान की रचना बुरी है। इसके बजाय, वे अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग करके खुद को ही बुरा करते हैं।

इंसान सिर्फ़ अपने काम पर ध्यान देता है, बिना यह जाने या सोचे कि इससे क्या अच्छा नतीजा निकलेगा, और इस तरह वह बुरे नतीजे को जन्म दे सकता है। लेकिन अल्लाह अपनी कृपा से बुरे काम से बहुत सारे अच्छे नतीजे पैदा करता है और इंसान द्वारा की गई किसी भी बुराई को पैदा करते समय इन नतीजों पर विचार करता है। (अगर वह उसे पैदा ही नहीं करता, तो इसका मतलब है कि उसने इंसान को जो आज़ाद इच्छाशक्ति दी है, उसे रद्द कर दिया है।) इसलिए, चूँकि पैदा करने का संबंध अच्छे नतीजों से है, इसलिए बुराई पैदा करना बुरा नहीं है, बल्कि अच्छा है। चूँकि मुताज़िला इस सूक्ष्म वास्तविकता को नहीं समझ पाए, इसलिए उन्होंने कहा कि बुराई पैदा करना बुरा है और कुरूपता पैदा करना कुरूप काम है। अल्लाह को सभी दोषों और कमियों से मुक्त रखने के लिए, उन्होंने बुराई पैदा करने का श्रेय उसे नहीं दिया और गुमराह हो गए।

उन्होंने विश्वास के छह स्तंभों में से एक की गलत व्याख्या की, अर्थात् ईश्वरीय नियति और आदेश में विश्वास करना, जिसके लिए हमें यह पुष्टि करने की आवश्यकता होती है कि चाहे हम किसी चीज को अच्छा या बुरा मानें, वह ईश्वर की ओर से है।

जहाँ तक सवाल के दूसरे भाग का सवाल है, जो इस बात से संबंधित है कि कोई व्यक्ति जो एक बड़ा पाप करता है, वह आस्तिक कैसे रह सकता है, यह पिछले संकेतों (विशेष रूप से पाँचवें) में स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि एक आस्तिक कैसे पाप कर सकता है। दूसरे, जिस तरह से मानव शारीरिक आत्मा भविष्य के एक टन सुख की तुलना में तत्काल सुख का एक औंस पसंद करती है, उसी तरह, यह एक साल के भविष्य की पीड़ा के विचार से डरकर एक तत्काल थप्पड़ से भी अधिक डर जाती है।

इसके अलावा, जब भावनाएँ प्रबल होती हैं, तो व्यक्ति तर्क के निर्णयों पर ध्यान नहीं देता। इच्छाओं और सनक के प्रभाव में, वे भविष्य के विशाल पुरस्कार के बजाय थोड़ी सी भी तात्कालिक खुशी को प्राथमिकता देते हैं। वे किसी भयानक स्थगित पीड़ा से डरने की तुलना में किसी तुच्छ वर्तमान संकट से अधिक दूर रहते हैं। क्योंकि इच्छाएँ, भावनाएँ और सनकें भविष्य के प्रति अंधी होती हैं। जब शारीरिक आत्मा उन्हें सहारा देती है, तो हृदय, जो विश्वास का स्थान है, और तर्क अब बोल नहीं सकता और पराजित हो जाता है। इसलिए, बड़े पाप करना विश्वास की कमी से नहीं, बल्कि भावनाओं, इच्छाओं और सनक के प्रबल होने के माध्यम से हृदय और तर्क की हार से उत्पन्न होता है।

इसके अलावा, जैसा कि पिछले संकेतों से समझा जा सकता है, जैसे बुराई विनाश का मार्ग है, वैसे ही बुराई और वासनाओं का मार्ग अपनाना आसान है।

और जिन्न शैतान लोगों को तेज़ी से उस ओर धकेल सकते हैं। यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य है कि यद्यपि, एक नबी की रिवायत के अनुसार, अनंत काल की दुनिया से एक मक्खी के पंख के समान एक प्रकाश, अपने शाश्वत होने के कारण, उन सभी सुखों और उपहारों के बराबर है जो एक व्यक्ति को पूरी सांसारिक जीवन से प्राप्त हो सकते हैं,40 फिर भी कुछ बदकिस्मत लोग इस क्षणभंगुर दुनिया के सुखों को अनंत दुनिया के सभी सुखों से अधिक पसंद कर सकते हैं, और इस प्रकार शैतान के नक्शेकदम पर चल सकते हैं।

उपरोक्त कारणों के कारण ही बुद्धिमानीपूर्ण कुरान बार-बार और आग्रहपूर्वक, तथा धमकी और प्रोत्साहन के साथ, विश्वासियों को पाप से रोकता है और उन्हें अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है।

बुद्धिमान कुरान के इस शक्तिशाली, लगातार दोहराए जाने वाले मार्गदर्शन ने एक बार मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि इस तरह की बार-बार की जाने वाली चेतावनियाँ और सावधानियाँ विश्वासियों को अस्थिर और अविश्वसनीय दिखाती हैं। यह उन्हें मानवीय सम्मान के साथ असंगत स्थिति में प्रस्तुत करता है। क्योंकि, जबकि एक अधिकारी को अपने वरिष्ठ से प्राप्त एक ही आदेश का पालन करना उनके लिए पर्याप्त है, अगर वरिष्ठ उसी आदेश को दस बार दोहराता है, तो अधिकारी वास्तव में नाराज हो जाएगा। वह जवाब देगा, "आप मुझ पर आरोप लगा रहे हैं; मैं विश्वासघाती व्यक्ति नहीं हूँ।" इस तथ्य के बावजूद, बुद्धिमान कुरान लगातार सबसे ईमानदार विश्वासियों को अपने आदेशों को दोहराता है।

जब इस विचार ने मेरा ध्यान खींचा, तब मैं अपने दो या तीन वफ़ादार दोस्तों के साथ था। मैं उन्हें अक्सर मानव शैतान की साज़िशों के खिलाफ़ चेतावनी देता रहता था।
उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं उन पर आरोप लगा रहा हूँ या उन्हें बुरा लग रहा है। लेकिन मैंने खुद से कहा, "मैं अपनी बार-बार की चेतावनियों से उन्हें नाराज़ कर रहा हूँ। मैं उन पर बेवफ़ाई और अस्थिरता का आरोप लगा रहा हूँ।"

फिर अचानक, मुझे ऊपर बताए गए संकेतों में बताई गई सच्चाई का एहसास हुआ। मुझे समझ में आया कि कुरान की लगातार दी गई चेतावनियाँ पूरी तरह से सटीक हैं, परिस्थिति के हिसाब से पूरी तरह से सही हैं, पूरी तरह से वाक्पटु हैं और किसी भी तरह की अतिशयोक्ति या बाहरी शब्दों से मुक्त हैं, और वे ज्ञान से भरपूर हैं। मैंने यह भी समझा कि मेरे इन वफ़ादार दोस्तों को बुरा क्यों नहीं लगा। इस सच्चाई का सारांश इस प्रकार है:

चूँकि शैतान लोगों को विनाश के मार्ग पर ले जाता है, इसलिए वे थोड़े से कामों से बहुत बुराई करते हैं। इस कारण, जो लोग सत्य और मार्गदर्शन के मार्ग पर चलते हैं, उन्हें बहुत सावधानियों और बार-बार चेतावनी और बहुत मदद की ज़रूरत होती है।
यही कारण है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने एक हजार एक नामों के माध्यम से विश्वासियों को बार-बार चेतावनी देकर सहायता प्रदान करते हैं, तथा हजारों लोगों तक अपनी सहायता पहुंचाते हैं।

---

40 अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकाम अल-कुरान, 13:7। (ट्र.)

उनकी मदद करने के लिए करुणा के हाथ बढ़ाए। वह उनके सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाता; बल्कि, वह उसे सुरक्षित रखता है। वह मनुष्य के मूल्य को कम नहीं करता, बल्कि दिखाता है कि शैतान कितनी बड़ी बुराइयाँ कर सकता है।

अतः ऐ सत्य और मार्ग पर चलने वालों! मनुष्य और जिन्न शैतानों की उपरोक्त साज़िशों से बचने का तरीका यह है कि तुम अपना मुख्यालय अहले सुन्नत के विद्यालय को बनाओ, जो सत्य के लोग हैं, और चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरआन के अपरिवर्तनीय, बुनियादी नियमों और उपदेशों के गढ़ में प्रवेश करो, और पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की उच्च सुन्नत का अनुसरण करो, जो तुम्हारा मार्गदर्शक है। इस प्रकार तुम मुक्ति पाओगे।

आठवां संकेत

प्रश्न: आपने ऊपर दिए गए संकेतों में बताया है कि चूंकि गुमराही का रास्ता आसान है और विनाश और असंयम का रास्ता है, इसलिए बहुत से लोगों ने उस रास्ते को अपनाया है। जबकि, रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य हिस्सों में, आपने स्पष्ट रूप से समझाया है कि कुफ्र और गुमराही का रास्ता इतना कठिन और परेशानी भरा है कि कोई भी इसे नहीं अपनाएगा; यह एक ऐसा रास्ता है जिस पर चलना असंभव है और ईमान और सही मार्गदर्शन का रास्ता इतना आसान और स्पष्ट है कि हर किसी को इसे अपनाना चाहिए।

जवाब : कुफ्र और गुमराही दो तरह की होती है। एक किस्म का संबंध कर्मों से होता है और यह दूसरी श्रेणी या खास किस्म का होता है। यानी यह ईमान के सिद्धांतों को नकारता है या सच्चाई को नकारता है। गुमराही का यह तरीका आसान है और इसीलिए रिसाले-ए-नूर में इसे आसान बताया गया है।

दूसरे प्रकार का अविश्वास और गुमराही दिल और दिमाग का निर्णय या निष्कर्ष है। इसमें केवल विश्वास का खंडन ही नहीं होता बल्कि विश्वास के विपरीत रास्ता भी खुलता है। इसका मतलब है झूठ को स्वीकार करना और सच के विपरीत को जानबूझकर स्वीकार करना। यह अस्वीकृति नहीं है ताकि यह आसान हो, बल्कि गैर-अस्तित्व की स्वीकृति है और इसे केवल गैर-अस्तित्व को साबित करके ही स्वीकार किया जा सकता है। नियम के अनुसार, "अस्वीकृति को साबित नहीं किया जा सकता है," जाहिर है इसे साबित करना आसान नहीं है।

यह इस तरह का अविश्वास और गुमराही है जिसे रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य हिस्सों में इतना कठिन और परेशानी भरा दिखाया गया है कि इसे स्वीकार करना और इसका पालन करना लगभग असंभव है। थोड़ी सी भी चेतना वाला कोई भी व्यक्ति इस तरह के रास्ते पर नहीं चलेगा। इसके अलावा, जैसा कि इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से समझाया गया है

रिसाले-ए-नूर, यह मार्ग इतना भयंकर कष्ट और इतना घुटन भरा अंधकार से भरा है कि थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति इसका अनुसरण करने की इच्छा या प्रयास नहीं करेगा।

प्रश्न: तो फिर, अधिकांश लोग इतनी पीड़ादायक स्थिति को कैसे सहन कर सकते हैं? अँधेरा और परेशानी भरा रास्ता?

उत्तर : वे इसमें गिर गये हैं और स्वयं को इससे बाहर नहीं निकाल सकते। इसके अतिरिक्त, चूंकि मानवता में वनस्पति और पशु शक्तियां अपने विकल्पों और कार्यों के अंतिम परिणामों को नहीं देख सकती हैं, इसलिए तर्क और उचित विचार की कमी मानवीय क्षमताओं पर हावी हो जाती है, इसलिए वे बाहर निकलकर अस्थायी, आसानी से उपलब्ध आनंद के साथ खुद को सांत्वना नहीं देना चाहते हैं।

प्रश्न: गुमराही में इतना भयानक दर्द और भय होता है कि अविश्वासी व्यक्ति न केवल जीवन से आनंद प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि वह जी भी नहीं सकता। वे उस दर्द से कुचले जाते हैं और उस भय से लगभग मर जाते हैं। क्योंकि, चूँकि वे मनुष्य हैं, उनमें असंख्य इच्छाएँ होती हैं और वे जीवन से बहुत जुड़े होते हैं, तो जो व्यक्ति अविश्वास के कारण मृत्यु को एक शाश्वत अलगाव और अस्तित्वहीनता के रूप में देखता है, और हमेशा जीवित प्राणियों को नष्ट होते देखता है और जिन्हें वह प्यार करता है उन्हें मृत्यु के माध्यम से अनंत "अस्तित्वहीनता" में जाते हुए देखता है, वह कैसे जीवित रह सकता है? वे जीवन से आनंद कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर : वे एक बहुत ही अजीब शैतानी कुतर्क के माध्यम से खुद को धोखा देते हैं, और जीते रहते हैं। वे मानते हैं कि उन्हें सुख मिल रहा है। मैं एक प्रसिद्ध दृष्टांत के माध्यम से उनकी स्थिति को इंगित करूँगा।

ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने शुतुरमुर्ग से कहा, "तुम्हारे पास पंख हैं, इसलिए उड़ो!" लेकिन उसने अपने पंख मोड़ लिए और कहा, "मैं ऊँट हूँ," और उड़ा नहीं। इस तरह वह शिकारी के जाल में फँस गया। शिकारी उसे न देख ले, इसके लिए शुतुरमुर्ग ने अपना सिर धूल में दबा लिया। अपने विशाल शरीर को खुला छोड़कर, उसने खुद को शिकारी का निशाना बना लिया। इस पर, उन्होंने उससे कहा, "तुम कहते हो कि तुम ऊँट हो, इसलिए बोझ उठाओ!" लेकिन उसने अपने पंख फैलाए और उत्तर दिया, "मैं एक पक्षी हूँ," और बोझ उठाने की परेशानी से बच गया। अंत में, वह भोजन और रक्षक दोनों से वंचित रह गया, और शिकारी उसे ले गया।

इसी तरह, कुरान की स्वर्गीय घोषणाओं के सामने, पूर्ण अविश्वास ज्यादातर संदेहवाद में बदल गया है। इसलिए, अगर उनसे कहा जाए, "तुम सोचते हो कि मृत्यु शाश्वत अस्तित्वहीनता है। वह फाँसी, जिस पर तुम सोचते हो कि तुम अस्तित्वहीनता में भेजे जाओगे, तुम्हारी आँखों के सामने खड़ी है। जो व्यक्ति उन्हें लगातार अपनी आँखों के सामने देखता है, वह जीवन से कैसे आनंद प्राप्त कर सकता है?" कुरान की सार्वभौमिक दया और सर्वव्यापी प्रकाश से जो हिस्सा उन्हें मिला है, उसके कारण वे उत्तर देंगे, "मृत्यु शाश्वत अस्तित्वहीनता नहीं है-

अनन्त जीवन हो सकता है।" या शुतुरमुर्ग की तरह, वे अपने सिर को असावधानी की रेत में डुबो देते हैं ताकि मृत्यु का नियत समय उन्हें न देख सके, न ही कब्र उन्हें घूर सके, न ही चीजों का क्षय उन पर तीर चला सके।

संक्षेप में, शुतुरमुर्ग की तरह, जब वे अपने संदेह के कारण मृत्यु को शाश्वत अस्तित्वहीन मानते हैं, तो कुरान और अन्य स्वर्गीय पुस्तकों की निर्णायक घोषणाएँ जो परलोक से संबंधित हैं, अविश्वासियों को एक अवसर प्रदान करती हैं, और वे इस पर अड़े रहते हैं। यह उन्हें हमेशा मृत्यु और शाश्वत अस्तित्वहीनता के भय से बचाता है। यदि उनसे कहा जाए, “चूँकि हमें एक शाश्वत क्षेत्र में जाना है, इसलिए हमें यहाँ धार्मिक दायित्वों की कठिनाइयों को सहन करना चाहिए ताकि हम वहाँ एक अच्छा जीवन जी सकें,” तो उनका संदेह उन्हें उत्तर देने के लिए प्रेरित करता है, “शायद ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, इसलिए मैं किसी ऐसी चीज़ के लिए काम क्यों करूँ जो अस्तित्व में नहीं है?” जैसे वे कुरान द्वारा प्रदान की गई स्थायित्व की संभावना के कारण शाश्वत विलुप्ति की पीड़ा से बचा हुआ महसूस करते हैं, वैसे ही वे संदेहपूर्ण अविश्वास द्वारा प्रदान किए गए शाश्वत जीवन के अस्तित्वहीनता की संभावना के कारण धार्मिक दायित्वों को पूरा करने की कठिनाइयों से भी बचा हुआ महसूस करते हैं। इस प्रकार, उनके दृष्टिकोण से, अविश्वासियों का मानना है कि उन्हें इस जीवन से विश्वासियों की तुलना में अधिक आनंद मिलता है। हालाँकि, इस शैतानी कुतर्क से उत्पन्न विचार अत्यंत सतही, अलाभकारी और अस्थायी है।

इस प्रकार, बुद्धिमान कुरान में अविश्वासियों के लिए भी कुछ प्रकार की दया है, क्योंकि यह उन्हें एक हद तक इस दुनिया के जीवन को उनके लिए नरक में बदलने से बचाता है। यह उन्हें एक प्रकार का संदेह प्रदान करता है जिसके माध्यम से वे जीवन जीना जारी रख सकते हैं। अन्यथा, वे इस दुनिया में नरक जैसी आध्यात्मिक पीड़ा झेलेंगे, और यह एक जीवित नरक होगा जो अंततः उन्हें आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करेगा।

अतः ऐ ईमान वालों! पूरे भरोसे और ईमान के साथ क़ुरआन की शरण में प्रवेश करो, जो तुम्हें हमेशा के विनाश और इस दुनिया और आख़िरत के जहन्नमों के एहसास और अनुमान से बचाता है। और पूरी शिद्दत और कृतज्ञता के साथ बुलंद सुन्नत की शरण में प्रवेश करो, और इस दुनिया में दुख और आख़िरत में अज़ाब से बचो!

नौवां संकेत

प्रश्न: मार्गदर्शन पाने वाले लोग, जिनमें पैगम्बर भी हैं, विशेष रूप से सृष्टि के गौरव, उनमें से सबसे महान हैं, उन पर और अन्य लोगों पर कृपादृष्टि हो।

पैगम्बरों पर ईश्वर की कृपा हो और वे ईश्वर की कृपा के पात्र हैं। यद्यपि उन्हें ईश्वरीय सहायता और दया प्राप्त होती है, फिर भी वे कभी-कभी शैतान के दल के गुमराह लोगों के हाथों पराजित क्यों हो जाते हैं? इसके अलावा, क्या कारण था और क्या पाखंडियों में यह बुद्धि थी कि वे सीधे मार्ग को स्वीकार किए बिना गुमराही पर अड़े रहे, जबकि नबियों की मुहर की नबूवत और संदेशवाहकी सूर्य की तरह उज्ज्वल थी, और उनके मार्गदर्शन के प्रयास कुरान की चमत्कारिकता पर आधारित और समर्थित थे, जो इतने प्रभावशाली थे जैसे कि वह सबसे बड़ा अमृत था, और कुरान की सच्चाई गुरुत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियम से भी अधिक आकर्षक थी?

उत्तर : इन भयानक प्रश्नों को हल करने के लिए, एक गहन सिद्धांत की व्याख्या की जानी चाहिए। यह इस प्रकार है:

ब्रह्मांड के सर्व-प्रतापी रचयिता के दो प्रकार के नाम हैं, एक जो उनकी महिमा से उत्पन्न हुए हैं या उनसे संबंधित हैं और दूसरे जो उनकी कृपा और सौंदर्य से उत्पन्न हुए हैं या उनसे संबंधित हैं। दोनों में से प्रत्येक नाम स्वयं को स्वयं के विशेष अभिव्यक्तियों में प्रदर्शित करता है। यह सृष्टि में विपरीतों के अस्तित्व को एक दूसरे के साथ संयोजित करने का कारण बनता है। हालाँकि, चूँकि विपरीत एक दूसरे के पूरक और सहायता करने के लिए मौजूद हैं, वे आमतौर पर रक्षात्मक या आक्रामक स्थिति में होते हैं। यह टकराव, परिवर्तन और रूपांतरणों का मूल है, लेकिन प्रगति और विकास में सहायक होता है। संघर्ष विशेष रूप से और अधिक प्रभावी रूप से मानव जाति के जीवन में लागू होता है, जो सृष्टि के वृक्ष का सबसे व्यापक फल है। मानव जाति हमेशा परस्पर विरोधी दलों में विभाजित होकर अस्तित्व में रही है। हालाँकि मानव जाति के जीवन में संघर्ष ने विपत्तियाँ पैदा की हैं, यह मानव प्रगति का तंत्र भी है। मार्गदर्शन करने वालों की कभी-कभार होने वाली पराजय ने उन्हें सदैव ही उस असावधानी की नींद से जगाया है, जिसमें वे बार-बार गिर जाते थे, तथा मार्गदर्शन के मूल तत्वों को पुनः खोजते हैं, तथा पहले से कहीं अधिक मजबूती से उनसे चिपके रहते हैं।

गुमराह लोगों की कभी-कभार होने वाली जीत का एक महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार है:

सभी प्रकार के गुमराह करने वाले कामों में लापरवाही और चूक होती है, खास तौर पर अविश्वास में। लापरवाही और चूक बहुत आसान है और इसके लिए किसी सकारात्मक, रचनात्मक कार्रवाई की आवश्यकता नहीं होती। गुमराह करने का मतलब है विनाश, जो बेहद आसान है और न्यूनतम कार्रवाई के जरिए संभव है। यह आक्रामकता की ओर भी जाता है और इसलिए दूसरों को बहुत नुकसान पहुंचा सकता है। इन वजहों से और अत्याचार की प्रवृत्ति और दिलों में पैदा होने वाले डर की वजह से, गुमराह करने वाले नेता खास तौर पर लोगों की नज़रों में ताकतवर होते हैं।

लोगों का। इन सबके अलावा, मानवता, जो स्वभाव से परिणामों के प्रति अंधी है और आसानी से उपलब्ध सुखों की आदी है, में कुछ वनस्पति और पशु शक्तियाँ हैं जो सुखों का पीछा करती हैं, संतुष्टि की माँग करती हैं, और जिन्हें नियंत्रित करना मुश्किल है। वे हृदय और तर्क जैसी मानवीय क्षमताओं को उनके कर्तव्यों को त्यागने के लिए मजबूर करती हैं जो सच्ची मानवता के लिए आवश्यक हैं और जो मानवता के अंतिम लक्ष्य से संबंधित हैं।

इसके विपरीत, मार्गदर्शन करने वालों का पवित्र मार्ग, विशेष रूप से सर्वलोक के रब के प्रियतम और अन्य सभी पैगम्बरों का मार्ग, अस्तित्व, निर्माण और मरम्मत की खोज करता है, तथा सकारात्मक कार्य, कुछ सीमाओं का पालन, परिणामों का विचार, उपासना और सेवा, तथा शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा को कठोर नियंत्रण में रखना, तथा मनुष्यों पर स्वतंत्र रूप से प्रभुत्व करने की उसकी प्रवृत्ति को समाप्त करना आवश्यक बनाता है। यही कारण है कि मदीना में पाखंडियों ने उस सर्वोच्च सूर्य के प्रति चमगादड़ों की तरह अपनी आँखें बंद कर लीं और उस महानतम आकर्षण शक्ति के विरुद्ध प्रतिरोध की शैतानी शक्ति से मोहित होकर, पथभ्रष्ट हो गए।

सवाल: सबसे महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, सारे जहान के रब के महबूब हैं। उनके हाथ में जो है-कुरान-वह परम सत्य है, और जो कुछ वे कहते हैं, वह सत्य है। उनकी सेना में कुछ सैनिक फ़रिश्ते हैं। वे एक मुट्ठी पानी से पूरी सेना की प्यास बुझाते हैं और चार मुट्ठी गेहूं और एक बकरे के मांस से एक हज़ार लोगों को दावत देते हैं। वे काफ़िरों की सेना पर मुट्ठी भर धूल फेंकते हैं और जब वह धूल उनकी आँखों में जाती है, तो वे सब भाग जाते हैं।

ऐसा कैसे हुआ कि इस सबसे पुण्यवान और ईश्वरीय सेनापति को, जिसने लगभग एक हजार चमत्कार किए थे, जैसे कि ऊपर उल्लेखित हैं, उहुद की लड़ाई के दूसरे चरण और हुनैन की लड़ाई की शुरुआत में झटका लगा?

उत्तर: सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को मानव जाति के लिए एक मार्गदर्शक और नेता के रूप में भेजा गया था ताकि मानव जाति उनसे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के नियमों को सीखे, उन नियमों (ब्रह्मांड और जीवन के संचालन के) का पालन करने की आदी हो जो सर्वज्ञ पूर्ण परमेश्वर की इच्छा से जारी किए गए थे, और उनकी बुद्धि के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करें। यदि सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने अपने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में हमेशा चमत्कारों और चमत्कारों पर भरोसा करके काम किया होता और उनका समर्थन किया होता, तो वह एक आदर्श मार्गदर्शक या नेता नहीं हो सकते थे।

यही कारण है कि उसने केवल तभी चमत्कार किए जब आवश्यकता थी और अविश्वासियों के इनकार को अमान्य करने और अपने विश्वास की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए।

संदेश: अपने रोजमर्रा के जीवन में, वह ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करने वाले और ब्रह्मांड और जीवन के संचालन के दिव्य नियमों का पालन करने वाले पहले व्यक्ति थे, जो भगवान के रूप में ईश्वर की बुद्धि से निकलते हैं या उस पर आधारित हैं।

(ब्रह्मांड के निर्माता, पालनहार और प्रशासक) और उनकी इच्छा को सर्व-महिमावान के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने दुश्मन का सामना करते समय कवच पहनकर सुरक्षा की मांग की और अपने सैनिकों को खाइयों में जाने का आदेश दिया। उन्हें घाव मिले और उन्होंने कष्ट सहे। इस प्रकार, उन्होंने अपने समुदाय को ईश्वर के ज्ञान के नियमों और ब्रह्मांड और जीवन के संचालन का पालन करने और उनका पालन करने में नेतृत्व किया।

दसवां संकेत

शैतान की सबसे गूढ़ धोखेबाज़ी यह है कि वह अपने अनुयायियों को ऐसा करने के लिए मजबूर करता है

उसके अस्तित्व को नकारो। चूँकि भौतिकवादी दर्शन से भ्रमित हो चुके लोग इस स्पष्ट मामले में झिझकते हैं, इसलिए मैं शैतान की इस चाल के बारे में कुछ बातें कहूँगा। वे इस प्रकार हैं:

जिस तरह से मनुष्यों में शैतान की तरह काम करने वाली शारीरिक दुष्ट आत्माएँ होती हैं, उसी तरह यह भी निश्चित है कि जिन्नों में भी निराकार दुष्ट आत्माएँ होती हैं। अगर बाद वाले भौतिक शरीर में होते, तो वे इन दुष्ट मनुष्यों के समान होते। दूसरी ओर, अगर मानव रूप में ये शैतान अपनी भौतिकता को हटाने में सक्षम होते, तो वे जिन्न-शैतानों के समान होते। यह इस अत्यंत घनिष्ठ संबंध के कारण है कि एक झूठे स्कूल ने मान लिया, "मानव रूप में अत्यधिक दुष्ट आत्माएँ मरने के बाद शैतान बन जाती हैं।"

जैसा कि सर्वविदित है, जब उच्च गुणवत्ता वाली कोई चीज़ खराब हो जाती है, तो वह कम गुणवत्ता वाली चीज़ से ज़्यादा खराब हो जाती है। उदाहरण के लिए, जब दूध और दही खराब हो जाते हैं, तो उन्हें खाया जा सकता है, लेकिन जब मक्खन खराब हो जाता है, तो उसे खाया नहीं जा सकता; यहाँ तक कि कभी-कभी वह ज़हर जैसा हो जाता है। इसी तरह, अगर मनुष्य, जो कि सबसे महान और संभवतः सबसे उच्च प्राणी है, भ्रष्ट हो जाता है, तो वह किसी भी अन्य भ्रष्ट प्राणी से ज़्यादा भ्रष्ट हो जाता है। सड़े हुए मांस की बदबू से आनंद प्राप्त करने वाले कीड़े-मकौड़ों और काटने और ज़हर देने में आनंद लेने वाले साँपों की तरह, वे गुमराही के दलदल में अपने द्वारा किए गए बुरे कामों और अपने भ्रष्ट आचरणों का आनंद लेते हैं और उन पर गर्व करते हैं, साथ ही वे गलत कामों के अंधेरे में जो नुकसान और अन्याय करते हैं, उस पर भी गर्व करते हैं। यह कहा जा सकता है कि वे शैतान की प्रकृति धारण कर लेते हैं। संक्षेप में, जिन्न-शैतानों के अस्तित्व का एक निर्णायक प्रमाण मनुष्य-शैतानों का अस्तित्व है।

दूसरा, उनतीसवें वचन में फरिश्तों या दूसरी रूहानी चीज़ों के वजूद के लिए जो अनगिनत पुख्ता सबूत पेश किए गए हैं, वही जिन्न-शैतानों के वजूद का भी सबूत हैं। हम इस बात का ज़िक्र उसी वचन से करते हैं।

तीसरा, सभी धर्म स्वर्गदूतों के अस्तित्व पर सहमत हैं, जो अच्छे कार्यों और मामलों में प्रभावी नियमों का प्रतिनिधित्व और पर्यवेक्षण करते हैं।
इसी तरह, बुद्धि और वास्तविकता की मांग है कि दुष्ट आत्माएँ या शैतान (शैतान) हों जो बुरे कामों में प्रभावी होने वाले नियमों का प्रतिनिधित्व करें और जिनका उनमें कुछ हिस्सा हो। यह भी कहा जा सकता है कि बुराई से पहले सचेत पर्दों का अस्तित्व अधिक आवश्यक है। क्योंकि जैसा कि बाईसवें वचन की शुरुआत में समझाया गया है, हर कोई हर चीज़ में आवश्यक अच्छाई नहीं देख सकता। इसलिए, स्पष्ट बुराइयों और दोषों के कारण सर्व-महान सृष्टिकर्ता पर आपत्ति न करने और उसकी दया पर आरोप न लगाने और उसकी बुद्धि की आलोचना न करने या उसके बारे में शिकायत न करने के लिए, ईश्वर और स्पष्ट रूप से बुरे कामों के बीच एक पर्दा होना चाहिए। कोई भी आपत्ति, आलोचना या शिकायत परदे की ओर निर्देशित होनी चाहिए, न कि सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता और पूर्ण रूप से सर्व-बुद्धिमान की ओर। जिस तरह से उसने मौत के फरिश्ते अजराइल को मरने वालों की नाराजगी से बचाने के लिए बीमारियों को पर्दा बनाया है, उसी तरह उसने अजराइल को, जो उस पर शांति हो, मौत के समय आत्माओं को लेने से पहले पर्दा बनाया है, ताकि मौत और इसी तरह की घटनाओं से उत्पन्न शिकायतें, जिन्हें कुछ लोग निर्दयता मान सकते हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर पर निर्देशित न हों। ठीक उसी तरह, और इससे भी अधिक निश्चित रूप से, भगवान के रूप में ईश्वर की बुद्धि शैतान के अस्तित्व की मांग करती है ताकि बुराई से उत्पन्न आपत्तियां और आलोचनाएं सर्व-महान निर्माता पर निर्देशित न हों।

चौथा, जैसे मनुष्य एक सूक्ष्म ब्रह्मांड (सूक्ष्म जगत) है, वैसे ही ब्रह्मांड भी एक वृहद मानव है। यह सूक्ष्म ब्रह्मांड उस वृहद मानव का सूचकांक और संक्षिप्त रूप है। इसलिए मनुष्यों के बीच मॉडलों के वृहद मूल वृहद मानव में अवश्य ही विद्यमान होंगे। उदाहरण के लिए, मानव स्मृति का अस्तित्व सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण है। इसी तरह, हर कोई अनुभव करता है कि हृदय के एक कोने में एक केंद्र है जो बुरे सुझावों के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है, और एक जीभ जो निराधार भय और कल्पना की शक्ति के प्रभाव में बोलती है, और जब भ्रष्ट हो जाती है, तो निराधार भय और कल्पना की शक्ति एक छोटे शैतान की तरह बन सकती है, जो अपने मालिक की इच्छा और इच्छाओं के विपरीत कार्य करती है। ये सभी दुनिया में राक्षसी शैतानों के एक निश्चित प्रमाण हैं। क्रमशः कान और जीभ के रूप में कार्य करते हुए, हमारे हृदय में शैतानी केंद्र और निराधार भय और कल्पना की शक्ति अस्तित्व का सुझाव देती है।

बाहरी दुनिया में एक दुष्ट प्राणी है जो पूर्व में फूंक मारता है और बाद वाले को बोलने पर मजबूर करता है।

ग्यारहवाँ संकेत

बुद्धिमानीपूर्ण कुरान में चमत्कारिक रूप से कहा गया है कि गुमराह लोगों द्वारा किए गए बुरे कार्यों से ब्रह्मांड क्रोधित हो जाता है, और सार्वभौमिक तत्व (जैसे आकाश और पृथ्वी, इसके महासागर, नदियाँ और पहाड़) क्रोधित हो जाते हैं, और अन्य सभी चीजें और प्राणी उग्र हो जाते हैं। अर्थात्, जल प्रलय में डूबे नूह की क़ौम पर आकाश और पृथ्वी के आक्रमण का उल्लेख करके, तथा समूद और आद के लोगों, अर्थात् नबियों सालेह और हूद की क़ौम के लोगों के हठी अविश्वास पर वायु तत्व के प्रकोप का, तथा फ़िरऔन की क़ौम पर जल और समुद्र के तत्वों के प्रकोप का, तथा क़ोरह पर पृथ्वी के तत्वों के प्रकोप का, तथा जैसा कि आयत में कहा गया है, क्रोध से लगभग फटने वाला (67:8), अविश्वासियों पर जहन्नम के क्रोध और प्रकोप का, तथा अविश्वासियों और गुमराह लोगों पर कुछ अन्य तत्वों और प्राणियों के प्रकोप का,41 कुरान गुमराह लोगों और विद्रोही शेर को चमत्कारिक और सबसे प्रभावी ढंग से रोकता है।

प्रश्न: इन निकम्मे लोगों के पाप, जो निरपेक्ष हैं, क्यों होते हैं?
क्या हम परमेश्वर के सामने पूर्णतया शक्तिहीन होकर, ब्रह्माण्ड के क्रोध का कारण बन सकते हैं?

उत्तर : **जैसा कि** रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में दर्शाया गया है और पिछले संकेतों में, अविश्वास और गुमराही एक भयानक आक्रमण और अपराध है जो पूरे अस्तित्व से संबंधित है। ब्रह्मांड से और इसके निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों से जो अपेक्षित है, वह है मानवता द्वारा सृष्टिकर्ता की पूजा करना और ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ उसका जवाब देना। हालाँकि, सृष्टिकर्ता की मान्यता को अस्वीकार करके, अविश्वास और गुमराह करने वाले लोग उस सर्वोच्च उद्देश्य को रद्द कर देते हैं-

---

41 सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आद जनजाति पर पत्थरों की एक आंधी भेजी, जो सात रातों और आठ दिनों तक चलने वाले रेत के तूफान में नष्ट हो गई (7: 72; 11: 58; 23: 27; 26: 120; 69: 7), और लूत के लोगों के शहरों को नष्ट कर दिया, उन पर पत्थरों की एक बुरी बारिश भेजकर (7: 84; 11: 82-83; 15: 73-74)। एक भयानक तूफान ने समूद जनजाति, पैगंबर सालेह के लोगों को जकड़ लिया (7: 78; 11: 67; 15: 83; 69: 6), और शुऐब के लोगों को (7: 91; 11: 94; 26: 189)। कोरा मूसा के लोगों में से एक था, लेकिन उसने फिरौन के साथ मिलकर उनके साथ विश्वासघात किया और उन पर अत्याचार किया, और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया। अंत में, सर्वशक्तिमान ने पृथ्वी को उसे और उसके धन को निगलने के लिए मजबूर कर दिया (28:81)। परमेश्वर ने नूह के लोगों को, उस पर शांति हो, जलप्रलय में डूबने के लिए मजबूर किया (7: 64; 11: 42-44), और फिरौन, हामान और उनके सैनिकों को समुद्र में डूबने के लिए मजबूर किया (10: 90; 20: 77-78; 26: 65-66)। (ट्र.)

जो कि प्राणियों के अस्तित्व का अंतिम कारण है, तथा इसके जारी रहने का कारण है। यह सभी अस्तित्व के अधिकारों का उल्लंघन है।
इसके अलावा, चूंकि वे सभी प्राणियों पर प्रकट होने वाले दिव्य नामों के प्रकटीकरण को नकारते हैं और इसलिए, उन अभिव्यक्तियों के दर्पण होने के कारण उन्हें उनका सच्चा, उच्च मूल्य देने से इनकार करते हैं, वे पवित्र नामों का अपमान करते हैं और सभी प्राणियों के मूल्य को कम करते हैं और उन्हें अपमानित करते हैं।
इसके अलावा, जबकि सभी प्राणी भगवान के एक अधिकारी हैं जिन्हें एक महान कर्तव्य सौंपा गया है, अविश्वास के कारण वे अपमानित होते हैं और केवल बेजान, क्षणभंगुर और अर्थहीन चीजें बनकर रह जाते हैं; इस प्रकार अविश्वासी पूरे अस्तित्व के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।

इस प्रकार, चूँकि अपनी सभी किस्मों में तथा प्रत्येक की मात्रा के अनुसार, गलत मार्गदर्शन, ब्रह्माण्ड की रचना में प्रभु की बुद्धिमत्ता तथा इसके अस्तित्व की निरंतरता के लिए सर्वशक्तिमान के उद्देश्यों का तिरस्कार करता है, इसलिए ब्रह्माण्ड, जिसमें जो कुछ भी है, वह गलत मार्गदर्शन तथा विद्रोह करने वाले लोगों से क्रोधित हो जाता है।

हे अभागे मनुष्य, जो शारीरिक रूप से छोटा है, लेकिन जिसके अपराध और गलतियां गंभीर हैं, और जिसके पाप और शर्मनाक कृत्य बहुत बड़े हैं! यदि तुम पूरे अस्तित्व के क्रोध और घृणा से बचना चाहते हो, तो तुम्हें बुद्धिमानी भरे कुरान के पवित्र क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए और सबसे महान पैगंबर की उच्च सुन्ना का पालन करना चाहिए, जिन्होंने कुरान को हम तक पहुंचाया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। तो उस क्षेत्र में प्रवेश करो और सुन्ना का पालन करो!

बारहवां संकेत

इस संकेत में चार प्रश्न और उत्तर शामिल हैं।

पहला प्रश्न: नरक में अनन्त दण्ड कैसे न्याय हो सकता है?
सीमित जीवन में किये गये कुछ पापों का प्रतिफल?

उत्तर : जैसा कि पूर्वोक्त संकेतों में, और विशेष रूप से ग्यारहवें में, स्पष्ट रूप से समझा जा चुका है, अविश्वास और कुमार्ग का अपराध एक असीम अपराध है, और यह अनंत अधिकारों का उल्लंघन है।

दूसरा सवाल: शरिया में यह कहा गया है कि जहन्नुम की सज़ा इंसान के कर्मों के बदले में मिलती है, जबकि जन्नत तो एक शुद्ध ईश्वरीय कृपा है। इसका क्या कारण है?

उत्तर : जैसा कि पिछले संकेतों से स्पष्ट है, चाहे उनकी स्वतंत्र इच्छा कितनी भी नगण्य और आंशिक क्यों न हो, और भले ही उनकी स्वतंत्र इच्छा और क्रिया का सृजन में कोई हिस्सा न हो, मनुष्य भयंकर विनाश और विनाश का कारण बन सकते हैं।

बुराइयाँ। विनाश और बुराइयाँ बहुत आसान हैं और उन्हें थोड़ी सी कार्रवाई से लाया जा सकता है। साथ ही, चूँकि उनकी बुराई करने वाली आत्मा हमेशा नुकसान और बुराई की ओर झुकती है, इसलिए मनुष्य स्वयं किसी भी तुच्छ कार्य के परिणामस्वरूप होने वाली बुराइयों के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। क्योंकि उनकी बुराई करने वाली आत्मा ने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा है और उन्होंने खुद ही ऐसा किया है। चूँकि बुराइयों का मतलब विनाश होता है और वे सकारात्मक और रचनात्मक नहीं होती हैं, इसलिए मनुष्य-सेवक के रूप में-कार्य करने वाले बन जाते हैं, और चूँकि वे ऐसा करना चाहते हैं और करते हैं, इसलिए ईश्वर, परम सत्य, कार्य बनाता है। इसलिए उस असीम अपराध के बदले में, वे निश्चित रूप से अनंत दंड के पात्र हैं।

जहाँ तक अच्छे कर्मों का सवाल है, चूँकि वे निर्माण और अस्तित्व को दर्शाते हैं और सृष्टिकर्ता को अस्तित्व में आने की आवश्यकता होती है, इसलिए मनुष्य की आंशिक स्वतंत्र इच्छा और क्रिया उनका रचनात्मक कारण नहीं हो सकती। मनुष्य उनका सच्चा अभिकर्ता नहीं हो सकता। इसके अलावा, शारीरिक आत्मा कभी भी अच्छे कर्मों की इच्छा नहीं रखती; यह ईश्वरीय दया है जो उनकी माँग करती है और मनुष्यों को उन्हें करने के लिए प्रेरित करती है, और ईश्वरीय शक्ति उन्हें अस्तित्व में लाती है। मनुष्य केवल विश्वास, इच्छाओं या इरादों के माध्यम से ही उन पर अपना अधिकार जता सकता है। एक बार जब वे उन पर अधिकार कर लेते हैं, तो ये अच्छे कर्म उन सभी असीम ईश्वरीय उपहारों के लिए धन्यवाद बन जाते हैं जो उन्हें पहले दिए गए थे, जैसे अस्तित्व और विश्वास के उपहार।

लेकिन जन्नत जिसका वादा खुदा ने किया है, वह पूरी तरह रहमान की मेहरबानी के तौर पर दी जाएगी। जाहिर तौर पर यह एक इनाम है, लेकिन असल में यह एक शुद्ध मेहरबानी है।

संक्षेप में, बुराई का कारण मनुष्य की बुराई करने वाली आत्मा है, इसलिए मनुष्य दंड का हकदार है, जबकि अच्छे कर्मों का कारण ईश्वर में निहित है, इसलिए उनका निर्माता भी ईश्वर ही है। मनुष्य केवल विश्वास के माध्यम से स्वामित्व का दावा कर सकते हैं; वे यह नहीं कह सकते, “मैं अपना इनाम मांगता हूँ”; बल्कि, वे ईश्वर से अपील कर सकते हैं, “मुझे आपकी कृपा की उम्मीद है।”

तीसरा प्रश्न: जैसा कि ऊपर दिए गए स्पष्टीकरण से समझा जा सकता है, चूँकि बुराई फैलने, संक्रमण, व्याप्ति और अतिक्रमण के माध्यम से बढ़ती है, इसलिए बुराई को एक हज़ार के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। जबकि, चूँकि एक अच्छा काम निर्माण या अस्तित्व को दर्शाता है, और नौकर की रचना या शारीरिक आत्मा की इच्छा से गुणा नहीं होता है, या नहीं होता है, इसलिए इसे बिल्कुल भी दर्ज नहीं किया जाना चाहिए या इसे एक के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। तो, एक बुरे काम को एक और एक अच्छे काम को दस से लेकर एक हज़ार तक क्यों दर्ज किया जाता है?

उत्तर : ऐसा करके, परमेश्वर, परम सत्य, अपना अस्तित्व प्रदर्शित करता है।
असीम दया और उसकी करुणा की कृपा।

चौथा सवाल: गुमराह लोगों की सफलताएं और उनकी ताकत और सही राह पर चलने वालों पर उनकी जीत से पता चलता है कि कोई ताकत और सच्चाई है जिससे वे समर्थित हैं। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि सही राह पर चलने वाले लोग कुछ कमज़ोरी से पीड़ित हैं या गुमराह लोगों के पास कुछ सच्चाई है?

उत्तर : नहीं, न तो गुमराह लोगों के पास कुछ सत्य है, न ही सत्य के लोगों को कोई कमजोरी होती है। लेकिन अफसोस की बात है कि कुछ साधारण लोग जो अदूरदर्शी हैं और जिनमें तर्क की कमी है, वे डगमगाते हैं और संदेह करते हैं, जिससे उनका विश्वास खराब होता है। क्योंकि वे कहते हैं, "यदि सत्य के लोग (अपने विश्वास और मार्ग में) पूरी तरह से सच्चे होते, तो उन्हें इतनी हार और अपमान का सामना नहीं करना पड़ता। क्योंकि सत्य में सारी शक्ति है, और जैसा कि मूल सिद्धांत में कहा गया है, सत्य ऊंचा है और हमेशा जीतता है, और इसे पराजित नहीं किया जा सकता, शक्ति सत्य में निहित है। इसलिए, यदि गुमराह लोगों के पास जो सत्य के लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं, उनके पास सच्ची शक्ति और समर्थन का बिंदु नहीं होता, तो वे इस हद तक विजयी और सफल नहीं हो सकते थे।"

जैसा कि पिछले संकेतों में दर्शाया गया है, न तो सत्य के लोगों की हार उनकी शक्ति की कमी और सत्य के बिना होने से होती है, न ही गुमराह लोगों की जीत उनकी शक्ति या समर्थन के सच्चे बिंदु होने के कारण होती है। इसलिए, अपनी संपूर्णता में, पिछले संकेत इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करते हैं। यहाँ, हम केवल कुछ हथियारों की ओर इशारा करेंगे जो गुमराह लोग लोगों को धोखा देने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जैसे:

मैंने बार-बार देखा है कि मतभेद और अशांति के लोग, जो आबादी का दस प्रतिशत हैं, बाकी नब्बे प्रतिशत धर्मी लोगों को हरा देते हैं। बड़े आश्चर्य में, मैं इसके कारणों पर विचार कर रहा हूँ और समझ गया हूँ कि उनकी जीत उनकी शक्ति के कारण नहीं है, बल्कि उनके द्वारा मतभेद और अशांति, नीचता और विनाश पैदा करने के कारण है, यह मार्गदर्शन करने वाले लोगों के बीच मतभेदों का फायदा उठाने, उनके बीच संघर्ष बोने और उनके चरित्र में कमजोरियों और मानव स्वभाव में भ्रष्टाचार की खानों की तरह बुरी क्षमताओं को काम में लाने, स्वार्थी भावनाओं, झुकावों, हितों और महत्वाकांक्षाओं को भड़काने, निरंकुशता, आत्म-गौरव, प्रसिद्धि और महिमा की ओर शारीरिक आत्मा की प्रवृत्ति की पाखंडी चापलूसी करने और लोगों के उनके निर्मम विनाश के डर के कारण है। इस तरह के शैतानी उपकरणों के माध्यम से, वे अस्थायी रूप से सत्य के लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं। लेकिन जब से

अन्तिम, सुखद परिणाम ईश्वर-भक्त, धर्मपरायण लोगों के पक्ष में है (7:128), और इस सिद्धांत के कारण कि सत्य महान है और सदैव प्रबल होता है, तथा इसे पराजित नहीं किया जा सकता, इसके अतिरिक्त कि इससे जो लाभ होगा वह महत्वपूर्ण नहीं है, उनकी अस्थायी विजय उनके लिए नरक तथा सत्यवादियों के लिए स्वर्ग अर्जित करने का साधन होगी।

इस प्रकार, चूँकि गुमराही के कारण कमज़ोर लोग खुद को सक्षम दिखाने लगते हैं, और इस प्रकार, तुच्छ लोग प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं, इसलिए स्वार्थी, प्रसिद्धि चाहने वाले और दिखावटी लोग सत्य के लोगों के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं ताकि वे थोड़े से काम से खुद को शक्तिशाली दिखा सकें और दूसरों को डराकर, आतंकित करके और नुकसान पहुँचाकर खुद के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें। वे विनाश करके प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, जो उनकी शक्ति या योग्यता से नहीं, बल्कि उनके पास उस सच्ची शक्ति और योग्यता की कमी से आता है जो किसी स्वीकार्य उपलब्धि के लिए आवश्यक है। यह कहावत बन गई है कि ऐसे ही एक प्रसिद्धि चाहने वाले ने पूजा स्थल को गंदा कर दिया ताकि लोग उसके बारे में बात करें। उसकी प्रसिद्धि की चाहत ने उसे लोगों के अभिशाप का स्वागत करने के लिए मजबूर किया।

हे बेचारे मनुष्य! तू अनंत काल की दुनिया के लिए पैदा किया गया है, लेकिन इस क्षणभंगुर दुनिया से मोहग्रस्त है! इस आयत पर कान लगा, न आकाश और न पृथ्वी उन पर रोती है (44: 29)। यह स्पष्ट रूप से घोषणा करता है कि आकाश और पृथ्वी एक दूसरे से अलग नहीं हैं।

, जो मानवता से जुड़े हुए हैं, गुमराह लोगों में से किसी की मौत पर रोते नहीं हैं, बल्कि वे इस पर खुश होते हैं। आयत इस बात की ओर इशारा कर रही है कि आकाश और धरती सीधे मार्ग पर चलने वालों की मौत पर रोते हैं और उनका अलग होना नहीं चाहते क्योंकि पूरी कायनात सच्चे दिल से ईमान वालों से जुड़ी हुई है और उनसे खुश है। क्योंकि ईमान वाले लोग ईमान के ज़रिए कायनात के रचयिता को पहचानते हैं, इसलिए वे कायनात की कीमत समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं और उससे प्यार करते हैं। गुमराह लोगों के विपरीत, वे इसका तिरस्कार नहीं करते और न ही इससे दुश्मनी रखते हैं।

ऐ इंसान, ज़रा सोचो! तुम ज़रूर मरोगे। अगर तुम अपनी रूह और शैतान की पैरवी करोगे तो तुम्हारे पड़ोसी और तुम्हारे रिश्तेदार भी तुम्हारी मौत से खुश होंगे क्योंकि उन्हें तुम्हारे बुरे कामों से राहत मिलेगी। लेकिन अगर तुम शैतान से अल्लाह की पनाह मांगोगे जो हमेशा अल्लाह की रहमत से खारिज है और क़ुरआन और रहम करने वाले के महबूब की पैरवी करोगे तो आसमान और ज़मीन सब कुछ खत्म हो जाएगा।

,

और उनमें रहने वाले सभी प्राणी तुम्हारे वियोग में दुखी होंगे और तुम्हारे तथा उनमें से प्रत्येक के पद के अनुसार रोएँगे। तुम्हें एक शानदार, शोकपूर्ण विदाई देकर, वे संकेत देंगे कि तुम्हारे पद के अनुसार तुम्हें एक पद मिलेगा।

अनंत काल के राज्य में आपका स्वागत है जहाँ आप कब्र के द्वार से प्रवेश करेंगे।

तेरहवां संकेत

इसमें तीन बिंदु शामिल हैं।

पहला बिंदु

शैतान की सबसे कपटपूर्ण चालों में से एक यह है कि वह संकीर्ण हृदय और संकीर्ण मन वाले अदूरदर्शी लोगों को विश्वास के सत्य की व्यापकता और महानता के बारे में धोखा देता है। वह कहता है, "ऐसा कहा जाता है कि एक ही सत्ता सभी कणों और आकाशगंगाओं और अन्य विद्यमान चीज़ों और प्राणियों पर उनके सभी अवस्थाओं में प्रभुत्व और प्रशासन करती है। कोई व्यक्ति ऐसे असाधारण रूप से महान, समझ से परे मामले पर कैसे विश्वास कर सकता है? कोई व्यक्ति इसे अपने दिल और दिमाग में कैसे समझ सकता है?" मानवीय कमज़ोरी और सीमित समझ का फ़ायदा उठाकर, वह अविश्वास की भावना को जगाता है।

उत्तर: शैतान की इस चाल को चुप कराने वाली सच्चाई यह है कि ईश्वर महान है। इसका सच्चा उत्तर भी यही है कि ईश्वर महान है। इस्लाम के चिह्नों में से ईश्वर महान है के बार-बार दोहराए जाने का एक उद्देश्य इस चाल को मिटाना है। क्योंकि मनुष्य की सीमित शक्ति और संकीर्ण मन ईश्वर महान है के प्रकाश में ऐसे असीम महान सत्यों को देख सकता है और उनकी पुष्टि कर सकता है। वे ईश्वर महान है के बल पर इन सत्यों को बनाए रख सकते हैं और उन्हें इस धन्य चिह्न के दायरे में रख सकते हैं। सच्चे मनुष्य जब संदेह करने लगते हैं, तो अपने दिल से निम्नलिखित बातें कहते हैं:

यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि ब्रह्मांड का प्रशासन और निर्देशन सबसे व्यवस्थित तरीके से किया जाता है। वास्तव में, इस तरह के असाधारण कार्य के लिए इसके अस्तित्व और रखरखाव के लिए एक अद्भुत कला और असीम रूप से अद्भुत संगठन की आवश्यकता होती है। इसे दो तरीकों से समझाया जा सकता है। या तो एक सर्वशक्तिमान, सर्व-इच्छुक शाश्वत ईश्वर, जिसके अस्तित्व की गवाही ब्रह्मांड के सभी कण देते हैं, इस सबसे आश्चर्यजनक कार्य को पूरा कर सकता है, या प्रत्येक प्राणी, बल्कि ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में पूर्ण दिव्यता, सर्वव्यापी ज्ञान और असीम शक्ति होनी चाहिए ताकि ब्रह्मांड का पूरी तरह से संतुलित, असाधारण रूप से व्यवस्थित और सबसे विशिष्ट रूप से सुशोभित अस्तित्व और दिशा संभव हो सके। पहले तरीके से यह विशाल पदार्थ अद्भुत है लेकिन समझाने में आसान है, जबकि दूसरा तरीका, जो कि ब्रह्मांड का सबसे बड़ा और सबसे बड़ा अस्तित्व है, ब्रह्मांड का सबसे बड़ा अस्तित्व है।

अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ना, असीम रूप से अनुचित और अकल्पनीय है।

संक्षेप में, यदि कोई व्यक्ति एक, असीम रूप से महान और सर्वशक्तिमान प्रभुता के सबसे उचित अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता है, तो वह सबसे अनुचित, अकल्पनीय मार्ग का अनुसरण करने के लिए बाध्य महसूस करेगा। यहां तक कि शैतान भी असंभवता का मार्ग नहीं सुझा सकता, अनंत भव्यता की वास्तविकता को नकारता है, जो ब्रह्मांड के अस्तित्व और प्रशासन के लिए बिल्कुल आवश्यक है।

दूसरा बिंदु

शैतान की एक और महत्वपूर्ण योजना यह है कि वह मनुष्यों से अपनी गलतियों को स्वीकार न करने के लिए कहता है ताकि वह उनके लिए क्षमा मांगने और ईश्वर में शरण लेने के मार्ग को रोक सके। वह मानवीय शारीरिक आत्मा के अहंकार को भी भड़काता है ताकि आत्मा एक वकील की तरह खुद का बचाव कर सके, खुद को सभी दोषों से मुक्त रख सके।

शैतान की बात मानने वाला दुष्ट आत्मा अपने दोषों को देखना नहीं चाहता। अगर वह उन्हें देखता भी है, तो वह उन्हें विभिन्न तरीकों से स्पष्ट करता है। जैसा कि कहावत में कहा गया है, संतोष की आंख दोषों के प्रति अंधी होती है, जो व्यक्ति अपनी आत्मा पर विचार करता है, वह अपने दोषों को नहीं देखता। चूँकि वे अपने दोषों को नहीं देखते, इसलिए वे उन्हें स्वीकार नहीं करते। परिणामस्वरूप, वे न तो ईश्वर से क्षमा माँगते हैं और न ही उनकी शरण लेते हैं, और इस तरह शैतान के खिलौने बन जाते हैं। यदि पैगंबर यूसुफ जैसे महान पैगंबर, उन पर शांति हो, कहते हैं, मैं अपने आप को त्रुटिहीन नहीं कहता, क्योंकि निश्चित रूप से मानव आत्मा हमेशा बुराई का आदेश देती है, सिवाय इसके कि मेरा भगवान दया करे (12: 53), तो कोई अपनी शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा पर कैसे भरोसा कर सकता है?

जो अपनी आत्मा को दोषी मानता है, वह अपने ही दोष देखता है।

और अपनी गलतियों को स्वीकार करके परमेश्वर से क्षमा की याचना करता है। जो व्यक्ति परमेश्वर से क्षमा की याचना करता है, वह शैतान और गलतियाँ करने से परमेश्वर की शरण लेता है।

जो व्यक्ति ईश्वर की शरण में जाता है, वह शैतान की बुराइयों से बच जाता है। अपने दोषों को न देखना, पहले किए गए दोषों से भी बड़ा दोष है। अपने दोषों को न स्वीकारना एक बहुत बड़ा दोष है। यदि कोई व्यक्ति किसी दोष को देख लेता है, तो वह दोष नहीं रह जाता।

जो अपनी गलती स्वीकार करता है, वह क्षमा का हकदार है।

तीसरा बिंदु

शैतानी षड्यंत्रों में से एक जो मानव सामाजिक जीवन को भ्रष्ट करता है, वह यह है कि शैतान लोगों को एक बुरे कर्म के कारण एक आस्तिक के सभी गुणों को छिपाने के लिए मजबूर करता है।

आस्तिक द्वारा किए गए कार्य। शैतान की इस योजना पर ध्यान देने वाले अन्यायी लोग उस आस्तिक के प्रति शत्रुता महसूस करते हैं। हालाँकि, जब सर्वशक्तिमान ईश्वर न्याय के दिन अपने सर्वोच्च तराजू पर पूर्ण न्याय के साथ जिम्मेदार प्राणियों के कर्मों का वजन करेगा, तो वह उनके अच्छे कर्मों के विरुद्ध उनके बुरे कर्मों को मापकर न्याय करेगा। इसके अलावा, चूँकि बुराई को जन्म देने वाले और भी कई कारण हैं और ऐसे कार्य करना आसान है, इसलिए वह कभी-कभी एक ही अच्छे काम की वजह से कई बुराइयों को खत्म कर सकता है।

इसलिए, हमें इस संसार में उस ईश्वरीय न्याय के अनुरूप कार्य करना चाहिए।
अगर किसी व्यक्ति के अच्छे कर्म या पुण्य उसके बुरे कर्मों से अधिक हैं, चाहे वह गुण या परिमाण के मामले में हो, तो वह व्यक्ति प्रेम और सम्मान का पात्र है। इससे भी बढ़कर, हमें उसके किसी एक गुण के कारण उसके प्रति क्षमा भाव रखना चाहिए। लेकिन, अपने स्वभाव में अन्याय करने की जन्मजात प्रवृत्ति के कारण और शैतान के उकसावे के कारण, मनुष्य एक ही बुराई के कारण एक व्यक्ति के सौ गुणों को भूल सकता है, और अपने मुसलमान भाई या बहन से दुश्मनी महसूस कर सकता है, इस प्रकार पाप अर्जित कर सकता है। एक मक्खी के पंख की तरह जो आंख को ढक लेती है, जिससे पहाड़ उससे छिप जाता है, अपनी नफरत और द्वेष की भावना के कारण, मनुष्य अंधा हो जाता है और दूसरे ईमान वालों के गुणों को भूल जाता है, चाहे वे पहाड़ जितने भी महान क्यों न हों, एक मामूली बुरे काम के कारण, और उनके प्रति दुश्मनी रखता है, और मानव सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का साधन बन जाता है।

इसी तरह की एक और योजना के ज़रिए शैतान सही और सीधी सोच को भ्रष्ट करता है, और विश्वास की सच्चाइयों के बारे में सही तर्क को नष्ट करता है। यह इस प्रकार है:

शैतान एक छोटे से नकारात्मक संकेत के माध्यम से विश्वास की सच्चाई के संबंध में सैकड़ों प्रमाणों पर आधारित सकारात्मक निर्णय को नष्ट करने का प्रयास करता है।
फिर भी, यह एक स्थापित सिद्धांत है कि किसी चीज़ के अस्तित्व या सत्य को प्रदर्शित करने वाला एक सकारात्मक प्रमाण सौ खंडनों से बेहतर है। किसी चीज़ के अस्तित्व या घटित होने के पक्ष में एक गवाह का बयान उसके गैर-अस्तित्व या गैर-घटना के सौ दावों से बेहतर है।

निम्नलिखित तुलना के माध्यम से इस सत्य पर विचार करें:
एक महल है जिसमें सैकड़ों दरवाजे हैं। अगर इसका एक दरवाजा खोल दिया जाए तो लोग महल में प्रवेश कर सकते हैं और बाकी बंद दरवाजे खोल सकते हैं। अगर इसके सभी दरवाजे खुले हों, सिर्फ़ कुछ को छोड़कर, तो कोई यह दावा नहीं कर सकता कि महल में प्रवेश नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार, विश्वास की सच्चाई वह महल है। प्रत्येक प्रमाण एक कुंजी है जो एक दरवाजा खोलती है। यदि कोई एक दरवाजा बंद रहता है, तो विश्वास की सच्चाई नहीं हो सकती

त्यागा हुआ और अस्वीकार किया हुआ। शैतान, फिर भी, एक ऐसा दरवाज़ा दिखाता है जो किसी कारण से या असावधानी या अज्ञानता के कारण बंद रह गया है, और सभी सकारात्मक सबूतों की उपेक्षा करवाता है। यह कहकर कि, "इस महल में प्रवेश नहीं किया जा सकता; बल्कि, यह कोई महल नहीं है, और इसमें कुछ भी नहीं है," वह लोगों को धोखा देता है।

तो, हे शैतान की चालों से पीड़ित बेचारे इंसान! अगर तुम एक स्वस्थ धार्मिक, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन चाहते हो, और अच्छी सोच, सही दृष्टिकोण और एक शुद्ध, स्वस्थ दिल चाहते हो, तो अपने कर्मों और अपने मन और दिल में जो कुछ भी आता है, उसे कुरान के स्पष्ट, बुनियादी सिद्धांतों और उपदेशों और पैगंबर की बुलंद सुन्नत के तराजू पर तौलना, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। हमेशा कुरान और बुलंद सुन्नत को अपना मार्गदर्शक बनाओ, और कहो, "मैं शैतान से ईश्वर की शरण चाहता हूँ, जो हमेशा के लिए खारिज कर दिया गया है (ईश्वर की दया से)", सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण मांगो।

निष्कर्ष में, ऊपर दिए गए तेरह संकेत तेरह कुंजियाँ हैं। इन कुंजियों से, कुरान के चमत्कारिक व्याख्या वाले निम्नलिखित सूरा के किलेबंद किले के द्वार को खोलो, जो बताता है, मैं शैतान से, जो हमेशा के लिए खारिज कर दिया गया है (भगवान की दया से) ईश्वर की शरण में आता हूँ:

मैं ईश्वर की शरण में आता हूँ। उस ईश्वर के नाम पर जो अत्यंत दयालु और दयावान है।

कह दो, "मैं मनुष्यों के पालनहार, मनुष्यों के स्वामी, मनुष्यों के पूज्य की शरण चाहता हूँ, उस शैतान की बुराई से जो मनुष्यों, जिन्नों और मनुष्यों के दिलों में फुसफुसाता है।"

इसमें प्रवेश करो और सुरक्षा पाओ।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

और कहो, "ऐ मेरे रब! मैं शैतानों की उकसावे और उकसावे से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।"

चौदहवीं झलक

चौदहवीं झलक

हदीस का अर्थ, "पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है।" क्लोक के लोग बसमाला का अर्थ, मूल्य और रहस्य

इसमें दो स्टेशन हैं। पहला स्टेशन दो सवालों का जवाब है।

पहला स्टेशन

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

आप पर शांति हो, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो।

मेरे प्रिय और वफादार भाई, राफेट बे!

बैल और मछली पर खड़ी धरती के बारे में आपने जो सवाल पूछा है उसका जवाब रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में मिलता है।

ऐसे प्रश्नों के संबंध में, चौबीसवें वचन की तीसरी शाखा में बारह महत्वपूर्ण सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। वे सिद्धांत दिशा-निर्देश हैं जो पैगंबरी परंपराओं के विभिन्न अर्थों की धारणा की अनुमति देते हैं और उनमें महत्वपूर्ण मानक शामिल हैं जिनके द्वारा उनके बारे में संदेह दूर किए जा सकते हैं। चूँकि कई चीजें मुझे व्यस्त रहने से रोक रही हैं-

अपने आप को विद्वत्तापूर्ण विषयों में व्यस्त रखते हुए, मैं आपके प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं दे सकता। इसलिए, मैं आपके वर्तमान प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दूंगा।

आप कहते हैं कि कुछ होजा (धार्मिक शिक्षक) कहते हैं कि पृथ्वी एक बैल और एक मछली पर टिकी है, जबकि भूगोल के अनुसार पृथ्वी अंतरिक्ष में भ्रमण करने वाला एक ग्रह है। न तो कोई बैल है और न ही कोई मछली इसे थामे हुए है।

उत्तर : इब्न अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) द्वारा वर्णित एक प्रामाणिक पैगंबरी परंपरा है। उन्होंने ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से पूछा, "पृथ्वी किस पर टिकी है?" उन्होंने कहा, "पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है।"[42] यह भी वर्णित है कि यह प्रश्न दो बार पूछा गया था और उनके एक उत्तर में, उन्होंने कहा कि यह बैल पर टिकी है, और दूसरे में, मछली पर। हदीस के कुछ विद्वानों ने इस परंपरा को कुछ इस्राएली स्रोतों से ली गई कुछ अंधविश्वासी कहानियों के प्रकाश में समझाया है। विशेष रूप से, कुछ इस्राएली विद्वान जो मुसलमान बन गए, उन्होंने बैल और मछली के बारे में कहानियाँ सुनाईं जो उन्हें पहले के शास्त्रों में पैगंबरी परंपरा के साथ मिली थीं, और परंपरा का अर्थ कुछ अजीब तरह से बदल दिया। अभी के लिए, मैं तीन सिद्धांत लिखूंगा ताकि हम ऐसी परंपराओं को सही ढंग से समझ सकें और मैं आपके द्वारा पूछे गए परंपरा को तीन अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखूंगा।

पहला सिद्धांत

जब बनी इसराइल के कुछ विद्वान मुसलमान बन गए, तो उनका पूर्व ज्ञान "मुस्लिम" हो गया और उसे इस्लाम से संबंधित माना जाने लगा।
हालाँकि, उनके पूर्व ज्ञान में त्रुटियाँ थीं और ये त्रुटियाँ इस्लाम से संबंधित नहीं हैं।

दूसरा सिद्धांत

ज्ञान के हाथों से अज्ञान के हाथों में जाते समय, समय बीतने के साथ, रूपक को वास्तविकता माना जाता है। उदाहरण के लिए, बचपन में एक बार चाँद को ग्रहण लगा था। मैंने अपनी माँ से इसके बारे में पूछा। उन्होंने जवाब दिया कि चाँद को साँप ने निगल लिया था। मैंने पूछा कि चाँद क्यों दिखाई देता रहता है। उन्होंने समझाया, "आसमान के साँप कांच की तरह होते हैं, और वे दिखाते हैं कि उनके अंदर क्या है।"

---

[42] अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 4:636; एट-तबरानी, जामी अल-बयान, 1:153.. (ट्र.)

बचपन की यह याद लंबे समय तक मेरे साथ रही। मैं इस बारे में सोचते हुए कहता था, "मेरी माँ जैसे समझदार लोग इस तरह के निराधार अंधविश्वास को कैसे दोहरा सकते हैं?" जब मैंने बाद में खगोल विज्ञान का अध्ययन किया तो मुझे एहसास हुआ कि जो लोग मेरी माँ की तरह बोलते थे, वे तुलना को वास्तविकता मानते थे।

क्योंकि, चंद्र ग्रहण के दौरान चंद्रमा पृथ्वी की छाया के कुछ हिस्से से होकर गुजरता है। यह तभी हो सकता है जब चंद्रमा पूर्ण हो और जब सूर्य, पृथ्वी की छाया वास्तव में दो शंकु के आकार के घटकों से बनी होती है, एक दूसरे के अंदर घोंसला बनाती है। ग्रहण होने के लिए एक और शर्त है। , और चंद्रमा बिल्कुल एक सीध में हैं, या एक सीध में होने के बहुत करीब हैं।
यह तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी के साथ अपनी कक्षा के दो प्रतिच्छेद बिंदुओं में से एक के पास होता है। एक रूपक का उपयोग करते हुए, शास्त्रीय खगोलविदों ने दो घटकों को "दो महान साँप" कहा। उन्होंने दो प्रतिच्छेद बिंदुओं को "सिर" और "पूंछ" कहा। जब चंद्रमा सिर पर आता है और सूर्य

पूंछ के बीच में धरती आ जाती है और चंद्रमा ग्रहणग्रस्त हो जाता है। ऊपर दिए गए रूपक के अनुसार, "चंद्रमा साँप के मुँह में प्रवेश कर गया है।"
इस प्रकार, जब यह उत्कृष्ट, वैज्ञानिक रूपक आम लोगों की भाषा में आया, तो समय बीतने के साथ, यह विचार उत्पन्न हुआ कि एक ऐसा साँप मौजूद था जो चंद्रमा को निगल सकता था।

अपने कर्तव्यों के दृष्टिकोण से और एक पवित्र, बढ़िया रूपक के साथ जो एक महत्वपूर्ण सत्य को इंगित करता है, दो महान स्वर्गदूतों को बैल (थावर) और मछली (हट) के नाम दिए गए थे। जब यह रूपक पैगंबर की उच्च, पवित्र भाषा से आम लोगों की भाषा में आया, तो इसे एक वास्तविकता के रूप में व्याख्या किया गया, और धन्य स्वर्गदूतों ने एक बड़े बैल और एक भयानक मछली के साथ स्थान बदल दिया।

तीसरा सिद्धांत

जिस तरह कुरान रूपकों और तुलनाओं का उपयोग करता है, और अपने दृष्टांतों और उपमाओं के माध्यम से आम लोगों को सबसे सूक्ष्म और गहन बातें सिखाता है, उसी तरह पैगंबरी परंपराओं में भी रूपक हैं जिनमें परिचित तुलनाएं हैं जिनके माध्यम से बहुत गहन सत्य व्यक्त किए गए हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने कुछ अन्य स्थानों (पत्र, "उन्नीसवां पत्र") में वर्णित किया है, एक बार पैगंबर की उपस्थिति में एक तेज आवाज सुनाई दी। उन्होंने कहा, "यह एक चट्टान की आवाज है जो सत्तर वर्षों से नीचे की ओर लुढ़क रही है और जो अब नीचे पहुँच गई है

नरक की सबसे निचली गहराई।"43 एक घंटे बाद, खबर आई कि एक कुख्यात पाखंडी, जो हाल ही में सत्तर वर्ष का हुआ था, मर गया। यह खबर बताती है कि ईश्वर के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, इस शानदार दृष्टांत से क्या अभिप्राय रखते थे।

अब मैं उस परम्परा के तीन पहलुओं के बारे में बताऊंगा जिसके बारे में आपने पूछा था:

पहला: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने चार स्वर्गदूतों को नियुक्त किया है, जिनमें से एक को ईगल (नासिर) कहा जाता है, जो स्वर्ग पर अपने पूर्ण प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व और निरीक्षण करते हैं। उन्हें "दिव्य सिंहासन और स्वर्ग के वाहक" कहा जाता है। उन्होंने पृथ्वी पर अपने प्रभुत्व का निरीक्षण और प्रतिनिधित्व करने के लिए दो स्वर्गदूतों को भी नियुक्त किया है।

, जो स्वर्ग की एक छोटी बहन है और

ग्रहों का मित्र। इनमें से एक देवदूत को बैल (थावर) और दूसरे को मछली (हट) कहा जाता है। उसने उन्हें ये नाम इसलिए दिए हैं क्योंकि:

पृथ्वी मुख्य रूप से भूमि और जल से बनी है। जल में मछलियाँ रहती हैं, जबकि कृषि, जो मानव जाति के लिए आजीविका का मूल साधन है, भूमि का उपयोग करती है, जो बैलों के कंधों पर टिकी होती है। चूँकि पृथ्वी पर नियुक्त दोनों फ़रिश्ते सांसारिक प्राणियों और जीवन के कमांडर और पर्यवेक्षक दोनों हैं, इसलिए उनका बैलों और मछलियों से ज़रूर कोई न कोई संबंध होगा। हो सकता है कि - सच्चा ज्ञान ईश्वर के पास है - ये दोनों फ़रिश्ते ईश्वरीय आदेशों के प्रकटीकरण की अमूर्त दुनिया और अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया में बैल और मछली के रूप में दर्शाए गए हों।44 इसलिए, इस प्रतिनिधित्व और इन फ़रिश्तों के पर्यवेक्षण कार्य के संदर्भ के रूप में, साथ ही साथ पृथ्वी के प्राणियों में से इन दो महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए एक संकेत होने के नाते, पैगंबर की चमत्कारी अभिव्यक्ति की भाषा ने कहा, "पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है," और एक बहुत ही बढ़िया, संक्षिप्त वाक्य में गहन सत्य का एक पृष्ठ व्यक्त किया।

दूसरा पहलू: अगर पूछा जाए कि यह सरकार किस पर टिकी है, तो जवाब होगा, "यह तलवार और कलम पर टिकी है।" यानी सरकार टिकी है।

---

43 मुस्लिम, "जन्नाह" 31, "मुनैकुन" 15; इब्न हनबल, अल-मुस्नद, 2:371. (ट्र.)

44 धरती एक जहाज है जिसे भगवान ने बनाया है और जो अंतरिक्ष के आस-पास के महासागर में चल रहा है, और एक हदीस के अनुसार, यह आख़िरत की खेती है, यानी एक कृषि योग्य भूमि जिसे हम आख़िरत में काटने के लिए बोते हैं। इसलिए यह स्पष्ट है कि मछली का नाम उस फ़रिश्ते के लिए कितना उपयुक्त है जो उस विशाल अचेतन जहाज़ को ईश्वर के आदेश से सुव्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण तरीक़े से उस महासागर पर चलाता है, और बैल का नाम उस फ़रिश्ते के लिए कितना उपयुक्त है जो ईश्वर की अनुमति से उस कृषि योग्य भूमि की निगरानी करता है। (अनुवाद)

सेना की तलवार की ताकत और साहस पर और नौकरशाही की प्रशासनिक क्षमता और न्याय पर। इसी तरह धरती जीवों का निवास स्थान है और जीवों का सेनापति मानवता है। समुद्र के किनारे रहने वाले अधिकांश लोगों की आजीविका का साधन मछली पकड़ना है और समुद्र के किनारे न रहने वाले अधिकांश लोगों की आजीविका का साधन कृषि है और इसलिए वे बैलों पर निर्भर हैं जबकि मछली भी उनके लिए व्यापार का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसलिए, जैसे कहा जाता है कि एक राज्य तलवार और कलम पर खड़ा होता है, वैसे ही यह भी दावा किया जा सकता है कि धरती बैल और मछली पर टिकी हुई है। क्योंकि अगर बैल काम करना बंद कर दे और मछली

यदि एक ही प्रजनन ऋतु में सैकड़ों हजारों अण्डे का उत्पादन बंद हो जाए, तो मानव जीवन को भारी नुकसान होगा।

इस प्रकार, एक अत्यंत चमत्कारी, उच्च और बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर के रूप में, महानतम पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने कहा, "पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी हुई है।" उन्होंने हमें असाधारण रूप से संक्षिप्त तरीके से, इस बारे में एक व्यापक सत्य बताया कि किस हद तक मानव जाति का जीवन पशु जगत के जीवन से जुड़ा हुआ है।

तीसरा पहलू: प्राचीन खगोल विज्ञान का मानना था कि सूर्य आकाश में यात्रा करता है। उन्होंने इसकी यात्रा के हर तीस डिग्री को एक नक्षत्र कहा। यदि नक्षत्रों में तारों के बीच उन्हें एक दूसरे से जोड़ने के लिए काल्पनिक रेखाएँ खींची जाती हैं, तो ये रेखाएँ एक अवसर पर शेर का आकार, दूसरे पर तराजू का आकार, तीसरे पर बैल का आकार और तीसरे पर मछली का आकार दिखाती हैं। नक्षत्रों को इन आकृतियों के नाम से पुकारा जाता था। आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार, सूर्य यात्रा नहीं करता। इस प्रकार, अब नक्षत्र निष्क्रिय और बेकार हैं। हमने सीखा है कि यह नहीं है

सूर्य नहीं, बल्कि पृथ्वी जो यात्रा करती है। इस प्रकार, इन निष्क्रिय स्वर्गीय नक्षत्रों के बजाय, उनके समकक्षों को पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के साथ छोटे आकार में मौजूद होना चाहिए। यानी, स्वर्गीय नक्षत्रों को पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के साथ दर्शाया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि प्रत्येक महीने पृथ्वी इनमें से किसी एक नक्षत्र की छाया में आती है। यह ऐसा है मानो

पृथ्वी की वार्षिक कक्षा एक दर्पण है जिसमें आकाशीय तारामंडल प्रतिबिंबित होते हैं।

जैसा कि पहले बताया गया है, धरती कहाँ है, इस बारे में सवाल ईश्वर के सबसे महानतम रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से दो बार पूछा गया था। अपने एक उत्तर में उन्होंने कहा कि यह बैल पर है, और दूसरे में उन्होंने कहा, "यह मछली पर है।" एक वैज्ञानिक वास्तविकता की ओर इशारा करते हुए जिसे कई शताब्दियों बाद ही समझा जा सका, उन्होंने एक अवसर पर कहा

यह पैगम्बर की चमत्कारी भाषा के लिए उपयुक्त है, "यह बैल पर है," क्योंकि जब उन्होंने यह उत्तर दिया तो उस समय पृथ्वी बैल (वृषभ) के नक्षत्र के काल्पनिक रूप में थी। जब यही प्रश्न दूसरी बार पूछा गया और उन्होंने उत्तर दिया कि पृथ्वी मछली पर है, तो पृथ्वी उस समय मछली (मीन) के नक्षत्र की छाया में थी।

इन उत्तरों के साथ, ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने एक ऐसी वास्तविकता की ओर संकेत किया जिसे केवल दूर के भविष्य में ही समझा जा सकेगा। दूसरे शब्दों में, उन्होंने संकेत दिया कि पृथ्वी का कर्तव्य सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने से पूरा होता है और यह तथ्य कि आकाशीय नक्षत्र निष्क्रिय हैं और पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के साथ-साथ नक्षत्र ही काम कर रहे हैं। ईश्वर सबसे बेहतर जानता है कि क्या सही है।

इस्लाम के बारे में कुछ पुस्तकों में इस पैगम्बरी परंपरा के संबंध में अजीब, अनुचित कहानियां या तो पहले की इस्राएली पुस्तकों से उधार ली गई हैं या हदीस के कुछ विद्वानों की रूपक या व्याख्याएं हैं, जिन्हें कुछ लापरवाह लोगों ने हदीस समझ लिया और उन्हें ईश्वर के सबसे महान पैगंबर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - से जोड़ दिया।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

दूसरा प्रश्न: यह क्लोक के लोगों के बारे में है।

मेरे भाई! अल्लाह के सबसे महान रसूल -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने अली, अली की पत्नी और रसूल की बेटी फातिमा और उनके बेटों हसन और हुसैन को, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, उस मुबारक चादर से ढक दिया जो उन्होंने पहन रखी थी, और उनके लिए दुआ की और यह आयत पढ़ी, " ऐ (पैगंबर के) परिवार के सदस्यों, अल्लाह केवल यही चाहता है कि वह तुमसे सभी घृणित चीजों को दूर कर दे, और तुम्हें अत्यंत पवित्रता तक पवित्र कर दे।" (33: 33)

क्लोक के लोगों के बारे में आपके प्रश्न के संबंध में, जो अनुत्तरित रह गया है, जिसमें इस घटना में निहित सूक्ष्म सत्य और अर्थों को छोड़ दिया गया है, संदेशवाहक के मिशन से संबंधित ज्ञान के कई उदाहरणों में से केवल एक को समझाया जाएगा। यह इस प्रकार है:

45 मुस्लिम, "फ़दाएल अस-सहाबा" 61; एट-तिर्मिधि, "तफ़सीर सूरा 33" 7. (ट्र.)

ईश्वर के सबसे महानतम रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने अपनी पैगम्बरी की आंख से, जो अदृश्य और भविष्य को भेदती थी, देखा कि तीस या उससे अधिक वर्षों के बाद साथियों और उनके बाद आने वाली पीढ़ी के बीच गंभीर संघर्ष और मतभेद शुरू हो जाएगा, और खून बहेगा। उन्होंने यह भी देखा कि उनमें से सबसे प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित तीन होंगे - अली, हसन और हुसैन - जिन्हें उन्होंने अपने लबादे से ढक दिया। अली को निर्दोष घोषित करने और मुस्लिम समुदाय के सामने उन्हें दोषमुक्त करने के लिए, हुसैन के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए, तथा हसन को मुआविया के साथ संधि करने के लिए बधाई देने के लिए, ताकि मुसलमानों के बीच गंभीर मतभेद को दूर किया जा सके, जो उनकी एकता को बाधित कर रहा था, तथा हसन द्वारा अर्जित सम्मान और मुस्लिम समुदाय को दिए जाने वाले महान लाभ की घोषणा करने के लिए, तथा यह भी घोषित करने के लिए कि फातिमा के वंशजों को शुद्ध और सम्मानित किया जाएगा और वे पैगम्बर के परिवार या घराने के लोगों की उच्च उपाधि के हकदार होंगे, उसने उन्हें लबादा ओढ़ाया, इस प्रकार स्वयं को और इन चारों को लबादे के पांच लोगों की उपाधि दी।

निस्संदेह अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, सही खलीफा थे।
हालाँकि, उनकी खिलाफत के दौरान बहाया गया खून बहुत महत्वपूर्ण था और इसलिए, पैगम्बरी के मिशन के लिए यह आवश्यक था कि पैगम्बर मुस्लिम समुदाय के सामने अपने खिलाफत के दौरान हुए खून-खराबे और असहमति की घटनाओं के लिए खुद को निर्दोष घोषित करें। इस प्रकार, इस परंपरा के साथ, ईश्वर के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने अली की बेगुनाही की घोषणा की और खारिजियों को, जिन्होंने उन पर गलत तरीके से गलती और पाखंड का आरोप लगाया था, और उमय्यद के आक्रामक पक्षधरों को चुप रहने का आदेश दिया। उमय्यद और खारिजियों के कट्टरपंथी पक्षधर, जिन्होंने अली के बारे में अतिवादी दृष्टिकोण अपनाया और उन पर गलत मार्गदर्शन का आरोप लगाया, और शिया, जो हुसैन की वास्तव में हृदय विदारक शहादत के कारण विपरीत चरम पर चले गए, धर्म में नवीनताएँ पेश कीं और खुद को इस्लाम के दो बुजुर्गों, अबू बकर और उमर से मुक्त घोषित किया, भगवान उनसे प्रसन्न हों, ने इस्लाम के लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया है।

इस प्रकार, चद्दर की घटना और उससे संबंधित प्रार्थना के माध्यम से, ईश्वर के महानतम रसूल -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने अली और हुसैन -अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, को उन पर लगाए जाने वाले आरोपों से मुक्त कर दिया, और अपनी कौम को गलत राय रखने से बचा लिया।

उनमें से। उन्होंने, अपने संदेशवाहक के मिशन के कारण, हसन को भी बधाई दी, भगवान उनसे प्रसन्न हों, उन्होंने मुविया के साथ संधि पर हस्ताक्षर करके मुस्लिम समुदाय के साथ जो अच्छा किया, और घोषणा की कि फातिमा के धन्य वंशज, भगवान उनसे प्रसन्न हों, जिन्हें पैगंबर के परिवार के रूप में जाना जाता है, उन्हें बहुत सम्मान दिया जाएगा, और मरियम की मां की तरह, जिन्होंने कहा, "मैं उसे [मरियम] और उसके वंश को शैतान से सुरक्षा के लिए आपके पास सौंपता हूं, जो ईश्वर की दया से हमेशा के लिए खारिज कर दिया गया है," (3: 36), फातिमा खुद अपने वंशजों के कारण महान, अतिरिक्त सम्मान अर्जित करेगी।

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद पर, उनके पवित्र, धार्मिक, धर्मपरायण और गुणी परिवार पर, तथा उनके साथियों पर, जो ईश्वर के मार्ग में प्रयत्नशील हैं, महान, कृपापात्र और अच्छे हैं, कृपा प्रदान कर। आमीन।

दूसरा स्टेशन

मैं बसमाला के असंख्य रहस्यों में से छह का वर्णन करता हूँ : ईश्वर के नाम पर, जो सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय है। ईश्वरीय दया के बारे में बसमाला से एक उज्ज्वल प्रकाश ने दूर से मेरे मंद मन को छुआ। मैं इसे "रहस्यों" के बीस से तीस खंडों में नोट के रूप में कैद और दर्ज करना चाहता था। अफसोस, मैं अभी तक ऐसा नहीं कर पाया हूँ, और मेरे बीस से तीस को घटाकर छह कर दिया गया है। हालाँकि यह विशेष रूप से मेरे लिए संबोधित है, मैं इसे अपने सख्त भाइयों के अनुमोदन के लिए इस उम्मीद के साथ संदर्भित करता हूँ कि यह उन लोगों को लाभान्वित कर सकता है जिनके साथ मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ हूँ और जिनकी आत्माएँ मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। तर्क मन के बजाय दिल को संबोधित करता है, और तर्कसंगत प्रमाणों के बजाय आंतरिक अनुभव और आनंद को ध्यान में रखता है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

[रानी] ने कहा: "सरदारों, यहाँ मुझे सम्मान के योग्य एक पत्र दिया गया है। यह सुलैमान की ओर से है, और यह है: ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है।" (27:29–30)

पहला रहस्य

ब्रह्मांड, पृथ्वी और मानवता के चेहरे पर प्रभुता के तीन चिह्न अंकित हैं। वे एक दूसरे के भीतर हैं, और प्रत्येक में एक पैटर्न है-

दूसरों का टर्न:

दिव्यता: हम इसे इस बात में देखते हैं कि कैसे ब्रह्मांड में सभी संस्थाएँ एक दूसरे की मदद और सहयोग करती हैं, और कैसे उनके बीच एक सामान्य अंतर्संबंध और पारस्परिकता है। संदर्भ है ईश्वर के नाम पर।

ईश्वरीय दयालुता: हम इसे पौधों और जानवरों के स्वभाव, पालन-पोषण और प्रशासन में समानता, अनुपात, व्यवस्था, सामंजस्य, अनुग्रह और दया में देखते हैं। इसका संदर्भ सर्व-दयालु है, ईश्वर के नाम पर, सर्व-दयालु।

ईश्वरीय करुणा: हम इसे दयालुता की सूक्ष्मताओं, स्नेह के सूक्ष्म बिंदुओं और मानवीय व्यापक प्रकृति के चेहरे पर करुणा की किरणों में देखते हैं। इसका संदर्भ सर्व-दयालु है, ईश्वर के नाम पर, सर्व-दयालु, सर्व-दयालु।

इस प्रकार, बसमाला दिव्य परम एकता की तीन मुहरों का पवित्र शीर्षक है, जो ब्रह्मांड के पृष्ठ पर एक चमकदार रेखा और उस एकता की एक शक्तिशाली किरण और सुनहरा धागा बनाती है। हमारे ऊपर से प्रकट, टिप मानवता पर टिकी हुई है, ब्रह्मांड और उसके फल का एक लघु रूप।

बसमाला विश्व को दिव्य सिंहासन से जोड़ती है, तथा यह हमारे लिए सच्ची मानवता के सिंहासन तक पहुंचने की सीढ़ी है।

दूसरा रहस्य

ईश्वरीय एकता (जो पूरे ब्रह्मांड में ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण के माध्यम से खुद को प्रदर्शित करती है) व्यक्तिगत प्राणियों की असीम बहुलता में स्पष्ट है। इन नामों की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति में हमारे दिमाग को अभिभूत न करने के लिए, कुरान, व्याख्या का एक चमत्कार होने के नाते, लगातार एकता के भीतर ईश्वरीय पूर्ण एकता की अभिव्यक्ति को दोहराता है - व्यक्तिगत रूप से प्राणियों पर कुछ ईश्वरीय नामों की केंद्रित अभिव्यक्ति।

इस सादृश्य पर विचार करें: सूर्य अपने प्रकाश में असंख्य चीजों को समाहित करता है। लेकिन अपने मन में इसके प्रकाश की समग्रता को बनाए रखने के लिए, हमें एक विशाल वैचारिक और बोधगम्य शक्ति की आवश्यकता होगी। इसलिए सूर्य को भुलाए जाने से बचने के लिए, सभी चमकती हुई वस्तुएं इसके गुणों (प्रकाश और ऊष्मा) को यथासंभव सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करती हैं और इस प्रकार स्वयं को सूर्य के रूप में प्रकट करती हैं, और वे गुण (गर्मी, प्रकाश और रंग स्पेक्ट्रम) उन वस्तुओं को समाहित करते हैं जो सूर्य के सामने होती हैं।

इसी तरह - ईश्वर के लिए सबसे उत्कृष्ट विशेषता46 लागू होती है - जिस तरह ईश्वर की एकता, उसका शाश्वत रूप से प्रार्थित होना, और उसके दिव्य नाम हर चीज में प्रकट होते हैं, खासकर जीवित चीजों में और खासकर हमारे दर्पण जैसे स्वभाव में, जीवों से संबंधित प्रत्येक दिव्य नाम ईश्वरीय एकता के माध्यम से सभी प्राणियों को शामिल करता है। इस प्रकार, कुरान लगातार हमारा ध्यान ईश्वरीय एकता के भीतर ईश्वरीय एकता की मुहर की ओर आकर्षित करता है, ताकि हमारा मन एकता से अभिभूत न हो जाए और हमारे दिल शुद्ध और पवित्र सार के प्रति लापरवाह न हो जाएं। इसलिए, यह बसमाला है जो ईश्वरीय पूर्ण एकता या विशिष्टता की मुहर के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं को इंगित करता है।

तीसरा रहस्य

दिव्य दया ब्रह्मांड को आनंदित करती है। यह अंधकारमय प्राणियों को प्रकाश और जीवन की चिंगारी देती है, तथा अपनी अंतहीन आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत प्राणियों का पोषण और उत्थान करती है। यह ब्रह्मांड को मानवता की ओर निर्देशित करती है, जैसे एक पेड़ अपने फल की ओर निर्देशित होता है, तथा हमारी सहायता के लिए तत्पर होता है। यह असीम स्थान को भरती है तथा उसे प्रकाशित करती है, अन्यथा शून्य और खाली दुनिया को आनंदित करती है। क्षणभंगुर मानवता के लिए, दिव्य दया अनंत काल और अनंत काल से पहले और बाद में एक, शाश्वत द्वारा संबोधित और प्रिय प्राणी का पद भी नियुक्त करती है। चूँकि दिव्य दया इतनी शक्तिशाली सत्य है, इतनी आमंत्रित करने वाली, सौम्य, सहायक और प्रेम के योग्य है, इसलिए कहो: ईश्वर के नाम पर, जो सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय है, और इस सत्य से चिपके रहो, तथा अंतहीन उजाड़ और आवश्यकता से बचो। शाश्वत सम्राट के निकट आओ, और वह बनो जिसे वह संबोधित करता है, मित्रता करता है, और उस दया की किरणों और मध्यस्थता के माध्यम से प्यार करता है।

सभी सत्ताएँ उद्देश्य और दूरदर्शिता के साथ मानवता के इर्द-गिर्द क्यों एकत्रित होती हैं, और हमारी ज़रूरतों को पूर्ण सुव्यवस्था और अनुग्रह के साथ पूरा करने के लिए क्यों तत्पर रहती हैं? क्या वे हमें पहचानती हैं और इसलिए हमारी मदद करने के लिए दौड़ती हैं - भले ही यह तर्कहीन हो, लेकिन कई मामलों में असंभव है, क्योंकि इसके लिए ज़रूरी है कि हम, जिनके पास कोई शक्ति नहीं है, सबसे शक्तिशाली, पूर्ण संप्रभु की शक्ति प्राप्त करें? या क्या यह मदद दृश्यमान ब्रह्मांड के पर्दे के पीछे एक परम शक्तिशाली की पहचान के माध्यम से हम तक पहुँचती है? दूसरे शब्दों में, वह एक, सर्वज्ञ और सर्व-दयालु, हमें जानता है और हम पर दया करता है, और ब्रह्मांड की सभी सत्ताओं को हमारी सेवा में लगाता है।

---

46 कुरान, 16: 60. इस आयत का उल्लेख किया गया है, हालाँकि हमें कभी-कभी ईश्वरीय सत्ता के लिए अमूर्त सत्यों को समझाने के लिए तुलना की आवश्यकता होती है, लेकिन वास्तव में वह सभी तुलनाओं से परे है। इसके अलावा, ईश्वरीय सत्यों को समझाने के लिए सबसे उत्कृष्ट तुलनाएँ की जानी चाहिए। (अनुवाद)

इस पर विचार करें: वह सर्वशक्तिमान, जो सभी प्राणियों को आपकी सहायता के लिए अपने हाथ आगे करके आपकी ओर मोड़ता है, वह आपको कैसे नहीं जानता और देख सकता है? वह आपको जानता है और अपनी दया से आपको सिखाता है कि वह आपको जानता है। इसलिए उसे जानो, और श्रद्धापूर्वक दिखाओ कि तुम जानते हो। दृढ़ विश्वास के साथ समझो कि दिव्य दया, जो बुद्धि, ज्ञान, अनुग्रह और शक्ति के साथ मौजूद है, ब्रह्मांड को आपकी सेवा के अधीन करती है, भले ही आप एक तुच्छ, क्षणभंगुर, पूरी तरह से कमजोर, शक्तिहीन और जरूरतमंद प्राणी हों। निस्संदेह, ऐसी दया के लिए पूर्ण और सच्ची कृतज्ञता के साथ-साथ ईमानदार और उत्साही श्रद्धा की आवश्यकता होती है। इसलिए कहो, ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है, क्योंकि यह ऐसी भावनाओं को व्यक्त और व्याख्या करता है। इसे उसकी दया में प्रवेश का साधन बनाओ, और अत्यंत दयालु के दरबार में एक सिफ़ारिशकर्ता बनाओ।

ईश्वरीय दया की उपस्थिति और वास्तविकता सूर्य की तरह स्पष्ट है।
जिस प्रकार ताने-बाने को केन्द्र में रखकर तथा क्रमबद्ध करके एक केन्द्र-रूपी चित्रपट बुना जाता है, उसी प्रकार दिव्य नामों के प्रकटीकरण से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैले हुए प्रकाशमान धागे, दया की छाप के भीतर ऐसी करुणा की एक मुहर, ऐसी दयालुता की एक चित्रपट, ऐसी कृपा का एक नमूना बुनते हैं, जो सूर्य की तुलना में अधिक चमक से मन पर अंकित हो जाता है।

वह दयालु और दयालु, जो हर चीज़ को जीवन की सेवा में लगाता है; जो आत्म-बलिदान में अपनी करुणा प्रदर्शित करता है, इस करुणा की असाधारण मिठास, पौधों और जानवरों में मातृत्व; वह जो जीवित जीवन को मानवता के अधीन करता है और इस तरह हमारी महत्ता और स्थिति को ईश्वरीय प्रभुत्व के बेहतरीन और प्यारे ताने-बाने के साथ-साथ अपनी दया की चमक के रूप में प्रदर्शित करता है - उसने अपनी दया को अपनी जीवित प्राणियों और मानवता के लिए स्वीकार्य मध्यस्थ बनाया है। इसलिए, यदि आप वास्तव में मनुष्य हैं, तो कहें, ईश्वर के नाम पर, जो सर्व-दयालु, सर्व-दयालु है, और इस मध्यस्थ को खोजें।

दिव्य दया के अलावा और कुछ भी नहीं है जो सभी पौधों और जानवरों की प्रजातियों को जीवन देता है, उनका पालन-पोषण करता है या उनका प्रबंधन करता है। दिव्य दया न तो किसी को अनदेखा करती है और न ही किसी को दूसरे के साथ भ्रमित करती है, बल्कि सही समय पर और सही क्रम, बुद्धि और अनुग्रह के साथ प्रत्येक को ऊपर उठाती है। यह पृथ्वी की सतह पर दिव्य एकता की मुहर लगाती है। जिस तरह से इस दया का अस्तित्व पृथ्वी के प्राणियों के अस्तित्व की तरह निश्चित है, उसी तरह से प्राणी भी इस दया की वास्तविक अभिव्यक्तियों या वास्तविकता के प्रमाण हैं।

दया और ईश्वरीय एकता की मुहर पृथ्वी और मानवता की प्रकृति पर अंकित है। हम पर अंकित दया ब्रह्मांड पर अंकित करुणा और दया से कम नहीं है। हमारा स्वभाव व्यापक है, क्योंकि हम बुनाई के केंद्र में हैं और हम दिव्य नामों का केंद्र बिंदु हैं।

जो तुम्हें यह चेहरा देता है, जो इस पर दया और एकता की मुहर लगाता है, वह तुम्हें तुम्हारे हाल पर कैसे छोड़ सकता है? वह तुम्हें कैसे महत्वहीन मान सकता है, तुम्हारे कार्यों के प्रति कोई सम्मान नहीं रख सकता है, और इस तरह सारी सृष्टि को, जो तुम्हारे लिए निर्देशित है, व्यर्थ और बेकार कैसे बना सकता है? वह सृष्टि के वृक्ष को कैसे बेकार और सड़े हुए फलों से सड़ा बना सकता है?

क्या वह अपनी पूर्ण, निर्विवाद दया को अस्वीकार कर देगा, जबकि वह सूर्य की तरह स्पष्ट है, और उसकी बुद्धि, जो प्रकाश की तरह स्पष्ट है?

आप उस दया के सिंहासन पर ईश्वर के नाम से चढ़ सकते हैं, जो दयालु और दयावान है। प्रत्येक कुरानिक सूरा, सभी सार्थक पुस्तकों और अच्छे कार्यों की शुरुआत को देखकर इसके महत्व को समझें। इस वाक्यांश के महत्व के लिए सबसे निर्णायक तर्क इमाम शफीई जैसे प्रमुख इस्लामी विद्वानों की टिप्पणी है: "हालाँकि बसमाला एक ही आयत है, लेकिन इसे कुरान में 114 बार उतारा गया है।"

चौथा रहस्य

दिव्य एकता के सामने जो कि व्यक्तिगत प्राणियों की असीम बहुलता के भीतर प्रकट होती है, यह घोषणा करना कि, केवल आप ही की हम पूजा करते हैं (1:5) सभी के लिए पर्याप्त नहीं है - हमारे मन वास्तविकता से भटक जाते हैं। हमें पृथ्वी जितना व्यापक हृदय रखना होगा ताकि हम व्यक्तिगत संस्थाओं की समग्रता में निहित एकता के पीछे उसकी एकता में एक को देख सकें ताकि हम कह सकें, केवल आप ही की हम पूजा करते हैं, और केवल आप ही से हम सहायता चाहते हैं (1:5)। इस प्रकार, दिव्य एकता की मुहर प्रत्येक व्यक्तिगत संस्था और प्रजाति पर स्पष्ट होनी चाहिए, और दिव्य एकता की मुहर दिव्य दया की मुहर के भीतर मौजूद होनी चाहिए, ताकि हर स्तर पर हर कोई शुद्ध और पवित्र एक की ओर मुड़ सके और कह सके-

---

[47] अल-शफीई, मुहम्मद इब्न इदरीस (मृत्यु 820): मुस्लिम कानूनी विद्वान, शफीई कानूनी स्कूल के संस्थापक। उन्होंने इस्लामी कानूनी विचारों का एक नया संश्लेषण विकसित किया। उन्होंने मुख्य रूप से इस बात पर चर्चा की कि इस्लामी कानून के स्रोत क्या थे और उन्हें समकालीन घटनाओं पर कानून द्वारा कैसे लागू किया जा सकता है। उनके अर-रिसाला ने उन्हें "मुस्लिम न्याय-विवेक का जनक" कहलाने का हकदार बनाया। (ट्र.)

और जो कहता है, कि हम केवल तेरी ही उपासना करते हैं, और केवल तुझ से ही सहायता मांगते हैं (1:5), उसी को सीधे संबोधित करो।

इस महान सत्य के कारण ही बुद्धिमानी से क़ुरआन ने व्यक्तिगत विवरण को समग्रता के साथ, छोटे को बड़े के साथ, विशेष को सामान्य के साथ जोड़ दिया है। मन को भटकने से और दिल को डूबने से रोकने के लिए, आत्मा को सीधे अपनी सच्ची उपासना की वस्तु को खोजने की अनुमति देने के लिए, क़ुरआन ने हमारी रचना और वाणी का उल्लेख किया है, और हमारे व्यक्तित्व में अनुग्रहों और ज्ञान के सूक्ष्म विवरणों का उल्लेख किया है, साथ ही आकाश और पृथ्वी के निर्माण का भी उल्लेख किया है। यह सत्य चमत्कारिक रूप से दिखाया गया है और उसकी निशानियों में से आकाश और पृथ्वी का निर्माण और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों में विविधता है (30:22)।

ब्रह्मांड में विभिन्न प्रकार और डिग्री के टिकट हैं जो दर्शाते हैं कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जिसने हमें बनाया है, हमें बनाए रखता है और हमें निर्देशित करता है। हालाँकि ये टिकट, विभिन्न आकारों के संकेंद्रित वृत्तों में मौजूद हैं, असंख्य प्राणियों की बहुलता के पीछे एकता को प्रदर्शित करते हैं, फिर भी यह बहुलता के भीतर एकता है और इसलिए, भक्तों को सीधे ईश्वर को संबोधित करने में सक्षम नहीं कर सकते हैं।

इस प्रकार ईश्वरीय एकता की छाप प्रत्येक वस्तु पर होनी चाहिए; अर्थात्, प्रत्येक वस्तु और प्रजाति पर ईश्वर के नामों की सघन अभिव्यक्ति के माध्यम से यह प्रदर्शित होना चाहिए कि यह ईश्वर ही है जिसने इसे बनाया है, इसका पालन-पोषण करता है और इसका निर्देशन करता है, ताकि बहुलता मन को ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में शुद्ध और पवित्र एक को देखने से विचलित न कर सके, और ताकि हृदयों के लिए एक रास्ता खुल सके जिससे वे सीधे ईश्वर की ओर मुड़ सकें और उनसे बात कर सकें।

साथ ही, दिव्य एकता की मुहर पर एक अत्यंत आकर्षक डिजाइन, एक चमकदार रोशनी, एक सुखद मिठास, एक मनभावन सौंदर्य और एक शक्तिशाली सत्य रखा गया है ताकि हमारा ध्यान और दिल उस ओर आकर्षित हो सके। दया की शक्ति और शक्ति संवेदनशील प्राणियों का ध्यान उस ओर खींचती है, और उन्हें एकता की मुहर प्राप्त करने, पूर्ण एकता के एक पर ध्यान केंद्रित करने और इस तरह सीधे उससे संबोधित करने में सक्षम बनाती है, यह घोषणा करते हुए कि, केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही हम सहायता चाहते हैं (1:5)।

इस प्रकार, ईश्वर के नाम पर, जो दयालु और दयावान है, आरंभिक अध्याय (सूरत अल-फातिहा) का सूचकांक और कुरान का सार होने के नाते, इस महान सत्य का संकेत और व्याख्याकार है। जो कोई भी खुद को इससे सुसज्जित करता है, वह ईश्वरीय दया के स्तरों से होकर यात्रा कर सकता है; जो कोई भी इसे बोलने का कारण बनता है, वह ईश्वरीय दया के रहस्यों को जान सकता है और ईश्वरीय करुणा और दया की रोशनी देख सकता है।

पांचवा रहस्य

एक परंपरा है कि ईश्वर ने मानवता को दयालु के रूप में बनाया है। कुछ सूफियों द्वारा इसकी अतिशयोक्तिपूर्ण व्याख्या विश्वास के मूल सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है। कुछ परमानंद सूफी कहते हैं कि हमारा

आध्यात्मिक प्रकृति "सर्व-दयालु के रूप में है।" अपने चिंतनशील और आध्यात्मिक समाधि में डूबे हुए, वे गलत विचार व्यक्त करने के लिए क्षमा किए जा सकते हैं। अगर दूसरे ऐसे विचारों को स्वीकार्य मानते हैं, तो वे गलती कर रहे हैं।

शुद्ध और पवित्र ईश्वर, जो ब्रह्मांड को इतनी आसानी से आदेश और संचालित करता है जैसे कि वह एक महल या घर हो, जो आकाशगंगाओं के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि वे कण हों और उन्हें ज्ञान और अनुग्रह के साथ अंतरिक्ष में यात्रा करवाता है, जो सबसे छोटे कणों को ऐसे भेजता है जैसे कि वे आज्ञाकारी अधिकारी हों, उसका कोई समान या प्रतिद्वंद्वी नहीं है, कोई भागीदार या विपरीत नहीं है। उसके अनुसार, उसके जैसा कुछ भी नहीं है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है (42:11), उसका कोई रूप, समान या समकक्ष नहीं है। कुछ भी उससे मिलता-जुलता या उसके जैसा नहीं है। दूसरी ओर, उसके अनुसार, और उसके लिए स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे उदात्त गुण लागू होता है, और वह पराक्रम में महान, सर्वज्ञ है (30:27), मानवता रूपक और तुलना के माध्यम से उसके कार्यों, गुणों और नामों की कल्पना कर सकती है। इस प्रकार, परंपरा का इच्छित अर्थ है, "मानवता का रूप, अपनी संपूर्णता में, ईश्वरीय नाम सर्व-दयालु को दर्शाता है।"

यह दिव्य नाम ब्रह्माण्ड और पृथ्वी पर प्रकट होने वाले सभी नामों के प्रकाशों के माध्यम से ईश्वर की पूर्ण प्रभुता के असंख्य प्रमाणों के माध्यम से स्पष्ट होता है। उसी प्रकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर भी हमारे व्यापक रूप में, जो ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप है, पूर्ण रूप से प्रकट होता है।

निम्नलिखित सादृश्य से एक और संकेत प्राप्त किया जा सकता है: चेतन सृष्टि और मानवता अनिवार्यतः विद्यमान उस एक के साक्ष्य के स्थान हैं, जो सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय है, उसके प्रमाण और दर्पण हैं।

ये प्रमाण इतने निश्चित, स्पष्ट और प्रत्यक्ष हैं कि जैसे हम कह सकते हैं कि सूर्य को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण "सूर्य का रूप है (या सूर्य जैसा है)" (सूर्य के प्रकाश के शानदार प्रमाण पर जोर देते हुए), हम यह भी कह सकते हैं, "मानवता में सर्व-दयालु का रूप है," जो हमारे सर्व-दयालु के स्पष्ट प्रमाण और उनके साथ पूर्ण संबंध होने पर जोर देता है। इसलिए, अस्तित्व की एकता में अधिक संयमित और संतुलित विश्वासियों ने कहा, "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है," जो प्रमाण की स्पष्टता और संबंध की पूर्णता को व्यक्त करता है।

हे ईश्वर, हे दयालु, दयालु। हे ईश्वर के नाम पर, हे दयालु, दयालु, दयावान, दया करो।

हम पर कृपा करें जैसा कि आपकी दयालुता के अनुरूप है। इस वाक्यांश के रहस्यों को हमारी समझ के लिए खोलें, जैसा कि आपकी दयालुता के अनुरूप है। आमीन।

छठा रहस्य

हे दुखी मानवता, अनंत नपुंसकता और कभी न खत्म होने वाली ज़रूरतों के बोझ तले दबी हुई! दया के महत्व को एक साधन और मध्यस्थ के रूप में समझें। यह एक राजसी संप्रभु का साधन है जिसकी सेना में विशाल आकाशगंगाएँ और सूक्ष्म कण पूर्ण आज्ञाकारिता और सामंजस्य के साथ मिलकर सेवा करते हैं। अनंत काल का वह राजसी संप्रभु बिल्कुल धनी और आत्मनिर्भर है, उसे किसी चीज़ या किसी की ज़रूरत नहीं है। सब कुछ उसके अधिकार और निर्देशन के अधीन है, उसकी महिमा और भव्यता के आगे आज्ञाकारी, उसकी महिमा के आगे भयभीत और नतमस्तक। हे मानव! दया आपको उस परम धनी, स्वतंत्र और शाश्वत संप्रभु की उपस्थिति में ऊपर उठाती है जो आपसे मित्रता करता है और आपको अपना प्रिय सेवक कहकर संबोधित करता है।

फिर भी, जिस तरह सूरज की रोशनी आपको अपने दर्पण के माध्यम से अपना प्रतिबिंब प्रदान करती है, हालांकि आप उसके करीब नहीं जा सकते, उसी तरह उसकी दया का प्रकाश भी शुद्ध और पवित्र एक, अनंत काल के सूर्य को हमारे करीब लाता है, हालांकि हम उससे असीम रूप से दूर हैं। इसलिए, हे मानव! जो कोई इस दया को पाता है, वह अचूक प्रकाश का शाश्वत खजाना पाता है। इस दया तक सबसे महान पैगंबर की सुन्नत के माध्यम से पहुंचा जा सकता है, जो इसके सबसे शानदार उदाहरण और प्रतिनिधि हैं, इसकी सबसे वाक्पटु आवाज और संदेशवाहक हैं, जिन्हें कुरान सभी दुनियाओं के लिए दया के रूप में प्रस्तुत करता है, उन तक ईश्वर की कृपा को बुलाकर पहुंचा जा सकता है, क्योंकि इस प्रार्थना का उद्देश्य दया है। ईश्वरीय दया के जीवित अवतार के लिए दया की प्रार्थना के रूप में, यह सभी दुनियाओं के लिए दया तक पहुँचती है। इसलिए उस तक पहुँचने के लिए इस प्रार्थना का उपयोग करें, और उसे वह साधन बनाएँ जिसके द्वारा आप सर्व-दयालु की दया तक पहुँच सकते हैं। सभी मुसलमान सभी दुनियाओं के लिए दया के लिए इस प्रार्थना को बार-बार कहते हैं , जो दया का पर्याय है। ऐसा करना इस बात का शानदार प्रदर्शन है कि दया का उपहार कितना मूल्यवान है, तथा उसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

निष्कर्ष रूप में, पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - दया के खजाने में सबसे कीमती रत्न और उसके द्वारपाल दोनों हैं।

दया की पहली और सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और दयावान है, और उपयोग करने की सबसे आसान कुंजी है पैगंबर पर ईश्वर के आशीर्वाद और शांति के लिए प्रार्थना करना या पुकारना।

हे ईश्वर! ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयावान, उस व्यक्ति पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें जिसे आपने सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजा है, जैसा कि आपकी दया और सम्मान के योग्य है, और उसके परिवार और साथियों पर। हमें दया प्रदान करें ताकि हम आपके अलावा किसी भी प्राणी से दया की आवश्यकता से मुक्त हो जाएं। आमीन।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

पंद्रहवीं झलक

T इसमें पहले से लेकर चौदहवें तक के शब्द, पत्र और झलकियाँ शामिल हैं । चूँकि उन्हें संबंधित खंडों में शामिल किया गया है, इसलिए उन्हें यहाँ अलग से शामिल नहीं किया गया है।

सोलहवीं झलक

सोलहवीं चमक

संतों की भविष्यवाणियों के सच होने की शर्तें

वर्तमान समय में मुसलमानों के सामने सबसे तात्कालिक मुद्दा

मुक्ति और सफलता की उम्मीद सर्वशक्तिमान ईश्वर से की जानी चाहिए

ईश्वर के दूत की दाढ़ी से संबंधित बालों का दर्शन करना

सूरज गर्म और काले कीचड़ भरे पानी के झरने में डूब रहा है

बाधा धुल-क़रनैन और गोग और मागोग द्वारा बनाई गई

अदृश्य की पाँच बातें

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

आप पर सदैव शांति बनी रहे, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद बना रहे!

आपके प्रिय और वफादार भाई होजा साबरी, हाफ़िज़ अली, मेसुत, मुस्तफ़ा, हुसरेव, राफ़ेट, बेकिर बे, रुस्तु, लुत्फ़ुस, हाफ़िज़ अहमद, शेख मुस्तफ़ा और अन्य!

मैं महसूस करता हूं कि मुझे आपको चार मामलों के बारे में संक्षेप में लिखना चाहिए जिन पर कई लोगों ने चर्चा की है।

पहला जिज्ञासु प्रश्न

हमारे भाइयों में से कुछ, जैसे कि आदरणीय चप्रज़ादे अब्दुल्लाह, ने पूछा, "आध्यात्मिक खोज के कुछ संतों ने भविष्यवाणी की थी कि अहल अल-सुन्नाह

पिछले रमज़ान में राहत और सफलता मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आध्यात्मिक खोज के ऐसे संत लोग गलत भविष्यवाणियाँ क्यों करते हैं?

मैंने उन्हें जो उत्तर दिया उसका सारांश इस प्रकार है:

एक भविष्यसूचक परंपरा कहती है कि कभी-कभी विपत्ति आने का अनुमान लगाया जाता है (जो इसके योग्य होते हैं), लेकिन यदि इस बीच कुछ दान दिया जाए, तो वे इसका सामना कर सकते हैं और इसे दूर कर सकते हैं।48 यह परंपरा दर्शाती है कि किसी कार्य के बदले में दिया गया दिव्य निर्णय कुछ शर्तों के कारण रद्द किया जा सकता है। इसलिए, आध्यात्मिक खोज के संत लोगों को जिन निर्णयों का ज्ञान हो गया है, वे कुछ शर्तों पर निर्भर हैं, और यदि वे शर्तें मौजूद नहीं हैं, तो निर्णय को व्यवहार में नहीं लाया जाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय के बारे में निर्णय की तरह जो अंतिम नहीं है, लेकिन कुछ शर्तों पर निर्भर है, संबंधित निर्णय दिए जाते हैं और मिटाने और पुष्टि करने की पट्टिका पर लिखे जाते हैं, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका की एक प्रकार की नोटबुक है, (जिस पर भाग्य के सभी अंतिम, निर्णायक निर्णय दर्ज किए जाते हैं)। यह अत्यंत दुर्लभ है कि आध्यात्मिक खोजें सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका में प्रवेश कर सकती हैं; उनमें से अधिकांश इतनी दूर तक नहीं बढ़ सकती हैं।

यह वास्तविकता बताती है कि पिछले रमज़ान या धार्मिक त्यौहार क़ुरबानी या कुछ अन्य समयों के बारे में आध्यात्मिक खोजों पर आधारित भविष्यवाणियाँ सच नहीं हुईं क्योंकि उनके होने के लिए आवश्यक शर्तें पूरी नहीं हुईं। उन्हें बनाने वालों ने झूठ नहीं बोला, न ही वे अपनी खोजों में ग़लत थे, क्योंकि वे तय हो चुके थे लेकिन वे इसलिए नहीं हुए क्योंकि जिन शर्तों पर उनका होना था वे पूरी नहीं हुईं।

आश्रित उपस्थित नहीं थे।

यह एक वास्तविकता है कि अहले सुन्नत के बहुमत की सच्ची प्रार्थनाएँ धार्मिक पाखंडों और नवाचारों को दूर करने का एक कारण बन सकती थीं। लेकिन चूँकि रमज़ान के मुबारक महीने में मस्जिदों में कुछ अन्य नवाचारों का अभ्यास किया गया था, इसलिए वे प्रार्थनाओं की स्वीकृति में बाधा बन गए, और अपेक्षित राहत नहीं मिली। जैसा कि ऊपर वर्णित पैगंबरी परंपरा में घोषित किया गया है, दान देने से विपत्तियों को दूर किया जाता है, उसी तरह बहुमत की सच्ची प्रार्थना आम राहत को आकर्षित करती है। लेकिन चूँकि मस्जिदों में नवाचारों के कारण आकर्षण की आवश्यक शक्ति नहीं बनी, इसलिए अपेक्षित राहत और सफलता नहीं मिली।

---

48 एट-तिर्मिधि, "ज़का" 28; अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, 3:245; अल-अजलुनी, कशफ अल-खफा', 2:30. (ट्र.)

दूसरा जिज्ञासु प्रश्न

पिछले दो महीनों की अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों में, शायद मुझे और मेरे जिन भाइयों से घनिष्ठ संबंध हैं, उनके लिए परिस्थितियों को कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए था। लेकिन, उस स्थिति पर ध्यान दिए बिना, मैंने मुझ पर अत्याचार करने वाले सांसारिक लोगों के पक्ष में एक विचार प्रस्तुत किया। कुछ लोग आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने कहा, "आप उन पाखंडी और विधर्मी शीर्ष अधिकारियों की नीतियों के बारे में क्या सोचते हैं जो आप पर अत्याचार करते हैं; आप उनके बारे में कुछ क्यों नहीं करते?" मेरे उत्तर का सारांश इस प्रकार है:

मुसलमानों के सामने इस समय सबसे बड़ा ख़तरा उनके दिलों का भ्रष्ट हो जाना और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और दर्शन के कारण गुमराह होकर उनके ईमान को नुकसान पहुँचना है। इसका एकमात्र समाधान प्रकाश है। हमें प्रकाश प्रस्तुत करना चाहिए ताकि दिलों को सुधारा जा सके और ईमान को बचाया जा सके। अगर हम राजनीति की गदा से काम लें और उन पर हावी हो जाएँ, तो वे काफ़िर पाखंडी बन जाएँगे। पाखंडी लोग काफ़िरों से भी बदतर हैं। इसलिए इस समय गदा दिलों को सुधारने के काम नहीं आती; यह दिलों में कुफ्र को छिपाकर पाखंड में बदल देती है। इस समय मेरे जैसा शक्तिहीन व्यक्ति गदा और प्रकाश का एक साथ इस्तेमाल नहीं कर सकता। इसलिए मैं अपनी पूरी ताकत से प्रकाश को थामे रहने के लिए बाध्य हूँ; मुझे किसी भी रूप में राजनीति की गदा के बारे में नहीं सोचना चाहिए। जहाँ तक शारीरिक जिहाद की माँग का सवाल है, इस समय हम पर इसका कोई दायित्व नहीं है। गदा उस व्यक्ति के लिए ज़रूरी है जो इसका इस्तेमाल कर सकता है और इसका इस्तेमाल करना चाहिए ताकि काफ़िरों और धर्मत्यागियों के हमलों के खिलाफ़ एक दीवार खड़ी की जा सके। जहाँ तक हमारा सवाल है, हमारे पास सिर्फ़ दो हाथ हैं। अगर हमारे पास सौ हाथ भी हों, तो वे सिर्फ़ प्रकाश का इस्तेमाल करने के लिए ही काफ़ी होंगे। हमारे पास गदा थामने के लिए कोई हाथ नहीं है।

तीसरा जिज्ञासु प्रश्न

वर्तमान सरकार के प्रति ब्रिटिश और इटालियन जैसी विदेशी ताकतों की शत्रुता से इस्लामी जोश को बढ़ावा मिलना चाहिए था जो सदियों से इस देश की सरकार के लिए सच्चा सहारा और नैतिक शक्ति का स्रोत रहा है और इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों और चिह्नों के कुछ हद तक पुनरुद्धार और विधर्मी नवाचारों को हटाने का साधन बन गया है। हालांकि यह संभव था, फिर भी आपने युद्ध का कड़ा विरोध क्यों किया, शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रार्थना क्यों की और उन नवाचारियों की सरकार को बड़ा समर्थन क्यों दिया? क्या इसका मतलब नवाचारों का अप्रत्यक्ष समर्थन नहीं है?

उत्तर : हम राहत, मुक्ति, उल्लास और सफलता चाहते हैं, लेकिन अविश्वासियों की तलवार से नहीं। अविश्वासियों की तलवार को बुमर होने दो-

वे खुद पर ही आरोप लगाते हैं; हमें उनकी तलवारों से निकलने वाली किसी भी चीज की जरूरत नहीं है। वास्तव में, यह इस्लाम और मुसलमानों के उन पश्चिमी विद्रोही दुश्मनों का ही नतीजा है जिन्होंने उन पाखंडियों को आस्था रखने वाले लोगों के खिलाफ खड़ा किया है और हमारे खिलाफ विधर्मियों को खड़ा किया है।

इसके अलावा, युद्ध की विपत्ति हमारी कुरान की सेवा के लिए पूरी तरह से हानिकारक है। अगर हमारे सैकड़ों मूल्यवान भाई कुरान की सेवा को छोड़ दें और अपने हाथों में शारीरिक जिहाद की गदा ले लें तो यह बहुत बड़ी कीमत होगी । जिस तरह सर्वशक्तिमान एक मिनट में बादलों के वातावरण को साफ कर देता है और आसमान के साफ चेहरे पर चमकता हुआ सूरज दिखाता है, उसी तरह वह इन काले और निर्दयी बादलों को भी हटा सकता है और इस्लामी जीवन की सच्चाइयों को सूरज की तरह दिखा सकता है। वह उन्हें बिना खर्च या परेशानी के हमें प्रदान कर सकता है। हम उसकी दया से उम्मीद करते हैं कि वह हमें उन्हें बहुत अधिक कीमत पर नहीं बेचेगा। वह इस देश की सरकार के शीर्ष पर बैठे लोगों के दिमाग को अंतर्दृष्टि और सही निर्णय दे और उनके दिलों को ईमान दे। इतना ही काफी होगा।

चौथा जिज्ञासु प्रश्न

वे पूछते हैं, “चूँकि जो आप अपने हाथों में पकड़े हुए हैं वह प्रकाश है, गदा नहीं, और प्रकाश का विरोध नहीं किया जाना चाहिए, न ही उससे भागना चाहिए, न ही इसे प्रदर्शित करने से कोई नुकसान होता है, तो आप अपने दोस्तों को एहतियात बरतने की सलाह क्यों देते हैं, और उन्हें रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों को लोगों को दिखाने से क्यों रोकते हैं?”

इस सवाल का संक्षिप्त जवाब यह है: शीर्ष पर बैठे ज़्यादातर लोग "नशे में" हैं; वे रिसाले-ए-नूर को नहीं पढ़ते, यहाँ तक कि उसके कुछ हिस्से भी नहीं; अगर वे उसे पढ़ते भी हैं, तो उसे समझ नहीं पाते। वे उसका गलत अर्थ निकालते हैं और उस पर हमला करते हैं। रिसाले-ए-नूर को इस तरह की घटनाओं से मुक्त रखने के लिए

हमलों के समय, उन लोगों को ऐसे कामों को तब तक नहीं देखना चाहिए जब तक कि वे अपने होश में न आ जाएं। इसके अलावा, कई बेईमान लोग हैं, जो द्वेष या महत्वाकांक्षा (कुछ सांसारिक लाभों के लिए) या डर के कारण, प्रकाश को नकार देते हैं या उससे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। यही कारण है कि मैं अपने भाइयों को सलाह देता हूँ कि वे सावधान और सतर्क रहें और सत्य को उन लोगों के हाथों में न दें जो इसके अयोग्य हैं, न ही ऐसे काम करें जो सांसारिक लोगों के संदेह को भड़काएँ।

निष्कर्ष

आज मुझे राफ़त बे का पत्र मिला। पैग़म्बर की दाढ़ी के बालों को विभिन्न स्थानों पर रखे जाने के बारे में उनके प्रश्न के संबंध में मैं निम्नलिखित कहना चाहता हूँ:

जैसा कि प्रासंगिक पैगम्बरी परंपराओं से समझा जाता है, सबसे महान पैगंबर -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की धन्य दाढ़ी से सीमित संख्या में बाल गिरे और साथियों द्वारा एकत्र किए गए।

हालाँकि उनकी संख्या केवल चालीस से साठ के बीच थी, फिर भी हज़ारों जगहों पर उनकी धन्य दाढ़ी के बाल होने की बात ने मुझे एक बार उनके बारे में बहुत सोचने पर मजबूर कर दिया। मुझे लगा कि ये सिर्फ़ उनकी धन्य दाढ़ी के बाल नहीं हैं, बल्कि वे बाल भी हैं जो उनके धन्य सिर से तब गिरते थे जब वे अपना सिर मुंडवाते थे; साथियों ने, जिन्होंने उनसे कुछ भी नहीं खोया, इन्हें संभाल कर रखा। इनकी संख्या हज़ारों में हो सकती है और ये हज़ारों जगहों पर मौजूद बालों के बराबर हो सकती है।

उस समय मुझे यह भी आश्चर्य हुआ कि क्या यह प्रामाणिक रूप से स्थापित किया गया है कि सभी मस्जिदों में पाए जाने वाले बाल पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के हैं, इसलिए उन्हें देखना स्वीकार्य है। अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि बालों के ऐसे लटों को देखना महान पैगंबर पर ईश्वर की कृपा और शांति को बुलाने और उनके प्रति अपने प्रेम और सम्मान को व्यक्त करने का एक साधन है। साधन के रूप में कार्य करने वाली किसी चीज के लिए उसके मूल स्वरूप पर विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। यदि किसी बाल के लट को महान पैगंबर के रूप में देखा जाता है, लेकिन यह वास्तव में पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का नहीं है, यदि इसे आम तौर पर उनका माना जाता है और यह सम्मान, सम्मान व्यक्त करने और पैगंबर पर ईश्वर की कृपा और शांति को बुलाने के साधन के रूप में कार्य करता है, तो यह प्रामाणिक रूप से स्थापित करना आवश्यक नहीं है कि क्या वह लट वास्तव में पैगंबर की थी। जब तक इसके विपरीत कोई सबूत नहीं है, यह पर्याप्त है। क्योंकि मुस्लिम लोगों की सामान्य स्वीकृति एक तरह का सबूत है।

अगर कुछ नेक, सावधान लोग स्वीकृत धर्मपरायणता, या एहतियात, या सर्वोत्तम और निस्संदेह के लिए वरीयता के आधार पर ऐसे मामलों पर आपत्ति उठाते हैं, तो उनकी आपत्तियाँ उनके अपने तक ही सीमित हैं। भले ही वे इन बालों की यात्रा को धर्म में एक नवीनता के रूप में मानते हों, यह स्वीकार्य नवाचारों में शामिल है, क्योंकि यह ईश्वर के सबसे महान रसूल पर ईश्वर की कृपा और शांति को बुलाने का एक साधन है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। अपने पत्र में, राफ़ेत बे ने कहा कि इस मामले ने भाइयों के बीच विवाद पैदा कर दिया। मैं अपने भाइयों को सलाह देता हूं कि उन्हें ऐसे तर्कों से बचना चाहिए जो संघर्ष और कलह का कारण बनते हैं। उन्हें बिना विवाद के विचारों के आदान-प्रदान के रूप में मामलों पर चर्चा करने की आदत डालनी चाहिए।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

आप पर सदैव शांति बनी रहे, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद बना रहे!

सेनिकेंट के मेरे प्यारे, वफादार भाई, इब्राहिम, सुक्रू, हाफ़िज़ बेकिर, हाफ़िज़ हुसेन, और माननीय हाफ़िज़ रेसेप!

विधर्मी लोग लंबे समय से आपके द्वारा बताए गए तीन मामलों पर आपत्ति जताते रहे हैं।
हाफ़िज़ तेवफिक के माध्यम से व्यक्त किया गया।

पहला अर्थ इस आयत का स्पष्ट अर्थ है, यहाँ तक कि जब वह (ज़ुल-क़रनैन)49 सूर्य के अस्त होने के स्थान पर पहुँचा, तो उसने उसे गर्म और काले कीचड़ भरे पानी के एक सोते में डूबते देखा (18: 86)।

दूसरा प्रश्न यह है कि ज़ुल-क़रनैन की बाधा कहां है?

तीसरा, यीशु के समय के अंत में आने की प्रतिज्ञा के बारे में है और
दज्जाल (ईसा विरोधी) को मारना ।

इन सवालों के जवाब लंबे हैं। फिर भी, मैं इनका जवाब संक्षेप में दूंगा।

आपका पहला प्रश्न

चूंकि कुरान आम लोगों, जो कि बहुसंख्यक हैं, की समझ के स्तर पर विचार करता है, तथा इस तरह बोलता है जिसे हर कोई समझ सकता है, इसलिए इसमें अक्सर रूपकों, उपमाओं, रूपकों और दृष्टान्तों का प्रयोग किया जाता है।
तो यह वाक्य, उसने सूरज को गर्म और काले कीचड़ भरे पानी के झरने में डूबते देखा, यह व्यक्त करता है कि धुल-क़रनैन ने अटलांटिक महासागर के तट पर सूरज को डूबते देखा, जो ऐसा लग रहा था जैसे वह जहाँ खड़ा था वहाँ से उबलता हुआ, कीचड़ भरा झरना हो, या उसने उसे ज्वालामुखी के आग से भरे, धुएँ से भरे गड्ढे में डूबते देखा। कहने का मतलब यह है कि धुल-क़रनैन एक ऐसे बिंदु पर आगे बढ़ गया जहाँ से उसने अटलांटिक महासागर के किनारे एक दलदल को गर्मियों की भीषण गर्मी में भाप बनते देखा, और उसने समुद्र में सूरज को स्पष्ट रूप से डूबते देखा, जो उसे उस दलदल के पीछे एक बड़ा तालाब लग रहा था। या उसने सूरज को, आकाश की आँख को, एक ज्वालामुखी के शिखर पर एक नए, आग से भरे गड्ढे में छिपा हुआ देखा, जो चट्टानों, मिट्टी और लावा को उगल रहा था।

इस वाक्य के साथ, बुद्धिमान कुरान की चमत्कारिक रूप से वाक्पटु अभिव्यक्ति हमें कई बातें सिखाती है। सबसे पहले, यह हमें बताता है कि ज़ुल-क़रनैन

---

49 ज़ुल-क़रनैन के लिए, क़ुरान, 18:83-98 देखें।

एक बहुत ही गर्म गर्मी के दौरान उत्तरी अफ्रीका में अटलांटिक महासागर की ओर आगे बढ़े और तब उन्होंने देखा कि महासागर एक उबलते हुए तालाब की तरह था। अपनी प्रगति के दौरान, उन्होंने एक ज्वालामुखी का विस्फोट भी देखा।

यह सर्वविदित है कि सूर्य की गति प्रत्यक्ष है और पृथ्वी की गति को इंगित करती है। अतः इसका अस्त होना भी प्रत्यक्ष है, किन्तु उपरोक्त आयत में इसका उल्लेख नहीं है। वसंत शब्द एक रूपक है। दूर से देखने पर विशाल समुद्र एक छोटे से तालाब जैसा प्रतीत होता है। ऐसा समुद्र जो दलदलों के पार दिखाई देता है और जिसमें से गर्मी के कारण धुंध और भाप उठती है, उसकी तुलना गर्म, कीचड़ भरे झरने से की जा सकती है। वसंत के लिए 'ऐन' का प्रयोग , जिसका अरबी में अर्थ सूर्य या आँख भी होता है, वाक्पटुता के संबंध में अत्यधिक अर्थपूर्ण और उपयुक्त है।[50] यह वर्णन है कि दूर से ज़ुल-क़रनैन की आँखों को क्या दिखाई दिया, और यह कुरान के स्वर्गीय संबोधन की भव्यता और महानता के लिए उपयुक्त है, जो सर्वोच्च दिव्य सिंहासन से आता है और आकाशीय पिंडों को आदेश देता है, कि यह कहता है कि वशीभूत सूर्य, जो दयालु एक के अतिथिगृह में दीपक का कर्तव्य निभाता है, अटलांटिक महासागर जैसे प्रभु के झरने में छिपा हुआ है। अपनी चमत्कारी शैली के साथ, कुरान समुद्र को एक गर्म झरने और भाप से भरी आंख के रूप में प्रस्तुत करता है। और यही वह तरीका है जिससे समुद्र स्वर्गीय आँखों को दिखाई देता है।

संक्षेप में कहें तो, ज़ुल-क़रनैन ने दूर से विशाल अटलांटिक महासागर को कीचड़ भरे झरने की तरह देखा। हालाँकि, कुरान की नज़र हर चीज़ के बहुत करीब है और इसलिए, वह उसे उस तरह नहीं देख पाता जैसा ज़ुल-क़रनैन ने देखा था, जो दूरी से प्रभावित था।
जबकि यह हमें बताता है कि ज़ुल-क़रनैन की नज़र में समुद्र कैसा दिखाई दिया, कुरान यह भी सुझाव देता है कि यह "स्वर्ग" से संबंधित है, और वहाँ से आया है, और यही कारण है कि यह पृथ्वी को कभी महल, कभी पालने और कभी पृष्ठ के रूप में देखता है। इस प्रकार, विशाल, वाष्पशील अटलांटिक महासागर को झरना कहना कुरान की भव्यता और महानता को दर्शाता है।

आपका दूसरा प्रश्न

ज़ुल-क़रनैन का अवरोध कहाँ है? गोग और मागोग कौन थे?

जवाब : बहुत पहले मैंने इन मामलों पर एक ग्रंथ लिखा था। उस समय इसने विधर्मियों को चुप करा दिया था। लेकिन अब यह मेरे पास नहीं है, न ही मेरे पास कोई है।

---

50 गर्म, कीचड़ भरे वसंत में " वसंत" ('आयन) शब्द वाक्पटुता के दृष्टिकोण से एक सूक्ष्म अर्थ सुझाता है: जब आकाश सूर्य की अपनी आँख से धरती के चेहरे पर दिव्य सौंदर्य और कृपा को देखता है, और धरती समुद्र की अपनी आँख से ऊपर दिव्य भव्यता को देखती है, तो ये दोनों आँखें एक दूसरे के भीतर बंद हो जाती हैं, और धरती के चेहरे पर मौजूद आँखों को बंद कर देती हैं। एक शब्द के साथ, कुरान हमें चमत्कारिक रूप से इन तथ्यों की याद दिलाता है और आँखों के दैनिक कर्तव्यों के अंत की ओर इशारा करता है।

स्मृति कार्य मेरी मदद करने के लिए। इसके अलावा, इन मामलों का संक्षिप्त विवरण चौबीसवें वचन की तीसरी शाखा में पाया जा सकता है। इसलिए मैं केवल कुछ बिंदुओं पर संक्षेप में बात करूंगा, जो इस प्रकार हैं:

पुष्टि करने वाले विद्वानों के अनुसार, धुल-करनयन का नाम, जिसमें धू प्रत्यय है, जिसका अर्थ है होना या अधिकार करना, दर्शाता है कि वह सिकंदर महान नहीं था। इस तरह की उपाधियाँ यमन के राजाओं द्वारा इस्तेमाल की जाती थीं, इसलिए वह यमन के उन राजाओं में से एक हो सकता है जो पैगंबर अब्राहम के समय रहते थे, और जिन्हें खादर ने पढ़ाया था।[51] हालांकि, मैसेडोनियन सिकंदर ईसा से लगभग तीन शताब्दी पहले रहते थे, और उन्हें अरस्तू ने पढ़ाया था।

मानवता का स्थापित, ज्ञात इतिहास लगभग चार हज़ार साल पुराना है। इतिहास का यह अपूर्ण, संक्षिप्त दृष्टिकोण पैगम्बर इब्राहीम (उन पर शांति हो) से पहले के समय के बारे में सटीक जानकारी नहीं दे सकता। यह या तो अंधविश्वासी जानकारी देता है, या कुछ तथ्यों को नकारता है, या केवल बहुत ही संक्षिप्त जानकारी प्रदान कर सकता है। ज़ुल-क़रनैन को शुरुआती समय से ही सिकन्दर के नाम से क़ुरान की टिप्पणियों में जाना जाने लगा, या तो इसलिए कि उसे सिकन्दर के नाम से भी जाना जाता था, इसलिए वह प्राचीन काल का सिकन्दर था, या इसलिए कि क़ुरान में वर्णित विशेष घटनाएँ सार्वभौमिक तथ्यों की युक्तियाँ हैं, और कई शक्तिशाली राजा और विजेता हुए जो सिकन्दर मैसेडोनियन की तरह थे और जिन्होंने ज़ुल-क़रनैन की तरह काम किया। ज़ुल-क़रनैन, जिसका मार्गदर्शन पैगम्बरों के मार्गदर्शन से मिलता-जुलता था, ने अत्याचारी और उत्पीड़ित लोगों के बीच एक दीवार खड़ी की, जिससे क्रूर जनजातियों द्वारा आक्रमण को रोका जा सके। धुल-करनयन की तरह, कुछ अन्य शक्तिशाली विश्व-विजेताओं और राजाओं ने, या तो पैगंबरों या आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा निर्देशित, जो मानवता के आध्यात्मिक क्षेत्र के राजा हैं, पहाड़ों के बीच अवरोधों और पहाड़ की चोटियों पर गढ़ों का निर्माण किया जो उत्पीड़कों से उत्पीड़ितों को बचाने के महत्वपूर्ण साधन थे। उन्होंने उन्हें या तो अपनी भौतिक शक्ति से बनाया या उनके निर्माण के लिए मार्गदर्शन और निर्देश दिए। फिर उन्होंने उनके अंदर कस्बों और गढ़ों के चारों ओर दीवारें बनाईं, और बाद में तोपखाने और युद्धपोत बनाए। इन अवरोधों या दीवारों में सबसे प्रसिद्ध, चीन की महान दीवार, जो हजारों मील की दूरी तय करती है, जंगली जनजातियों के हमलों को रोकने के लिए बनाई गई थी जिनका कुरान में याजूज और माजूज (गोग और मागोग) के रूप में उल्लेख किया गया है और

51 अल-खद्र के लिए, कुरान, 18:60-82 देखें। पैगंबर मूसा, उन पर शांति हो, ने उनके साथ एक रहस्यमय यात्रा की, जिसके दौरान उन्होंने दिव्य नियति के रहस्यों और घटनाओं के आंतरिक अर्थों और वास्तविक कारणों को सीखा। (ट्र.)

कई बार पूरब से पश्चिम तक मानवता की सभ्य दुनिया पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया। इस दीवार की तरह, जिसने सदियों तक उन बर्बर लोगों के हमलों को रोका, कुछ अन्य अवरोध भी कुछ धुल-क़रनैन जैसे फ़ारसी राजाओं के प्रयासों से काकेशस के पहाड़ों में, दरबंद के क्षेत्र में, कुछ उत्तरी लूटपाट करने वाले लोगों के हमलों को रोकने के लिए बनाए गए थे। इस तरह की कई बाधाएँ हैं। चूँकि बुद्धिमान कुरान पूरी मानवता को संबोधित करता है, इसलिए अपनी तरह की एक विशेष घटना का उल्लेख करके, यह सभी समान घटनाओं का उल्लेख कर रहा है। यही कारण है कि ज़ुल-क़रनैन और गोग और मागोग के कबीलों के बारे में कुरान के टीकाकारों की कहानियाँ और विचार अलग-अलग हैं।

इसके अलावा, बुद्धिमान कुरान कभी-कभी एक घटना से दूसरी दूर की घटना की ओर चला जाता है क्योंकि उनके बीच घनिष्ठ संबंध हैं। इस संबंध से अनजान व्यक्ति सोचता है कि दोनों घटनाएँ समय के हिसाब से करीब थीं। इस प्रकार, कुरान दुनिया के अंतिम विनाश का उल्लेख बैरियर के विनाश के संबंध में करता है, समय में उनके बीच निकटता के कारण नहीं, बल्कि विषयों के संबंध के कारण। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह बैरियर नष्ट हो गया था या नष्ट हो जाएगा, उसी तरह दुनिया भी नष्ट हो जाएगी। साथ ही, जिस तरह पहाड़, भगवान द्वारा स्थापित दृढ़ अवरोध, दुनिया के विनाश के साथ नष्ट हो जाएंगे, उसी तरह बैरियर भी, पहाड़ की तरह दृढ़ है, जो दुनिया के विनाश पर धूल में मिल जाएगा। भले ही यह समय के साथ होने वाले झटकों से क्षतिग्रस्त हो जाए, लेकिन अधिकांश भाग के लिए यह बरकरार रह सकता है। उदाहरण के लिए, ज़ुल-क़रनैन के बैरियर के उदाहरणों में से एक होने के नाते, चीन की महान दीवार हजारों सालों से बची हुई है। इसे प्राचीन इतिहास की एक लंबी, अर्थपूर्ण, पत्थर जैसी पंक्ति के रूप में समझा जाता है, जो मानव हाथ से पृथ्वी के पृष्ठ पर लिखी गई है।

आपका तीसरा प्रश्न

यीशु (उन पर शांति हो) द्वारा दज्जाल (मसीह विरोधी) को मारे जाने के बारे में आपके प्रश्न के पहले और पंद्रहवें पत्रों में संक्षिप्त लेकिन पर्याप्त उत्तर हैं।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

आप पर सदैव शांति बनी रहे, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद बना रहे!

मेरे प्यारे, आत्म-त्यागी, वफादार भाइयों, होजा साबरी और हाफ़िज़ अली!

यद्यपि आप उन पाँच अदृश्य चीज़ों के बारे में अपने प्रश्न का विस्तृत उत्तर चाहते हैं, जिनका केवल ईश्वर ही सटीक ज्ञान रखता है और जिनका उल्लेख सूरह लुकमान के अंत में किया गया है,

[52] दुर्भाग्य से न तो मेरा मूड

न ही शारीरिक परिस्थितियाँ इस तरह के उत्तर की अनुमति देती हैं। मैं इस मामले से संबंधित कुछ बिंदुओं पर ही बात कर सकता हूँ। जैसा कि आपके प्रश्न से समझा जा सकता है, कुछ विधर्मियों ने कुरान की इस घोषणा की आलोचना की है कि केवल ईश्वर ही जानता है कि बारिश कब होगी और गर्भ में क्या है; ये पाँच अदृश्य चीजों में से हैं जिनका सटीक ज्ञान केवल ईश्वर को है।

उनका कहना है कि वेधशालाओं से बारिश का समय पता लगाया जा सकता है और एक्स-रे के ज़रिए भ्रूण का लिंग पता किया जा सकता है। उनके दावे के मुताबिक, इन पाँच चीज़ों के बारे में जानकारी पाना संभव है।

उत्तर : बारिश का सही समय किसी विशेष नियम पर निर्भर नहीं करता। यह पूरी तरह से ईश्वर की पूर्ण इच्छा पर निर्भर करता है, और दया के खजाने से आता है। इस तथ्य के पीछे ज्ञान के कई उदाहरणों में से एक इस प्रकार है:

ब्रह्मांड में सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान वास्तविकताएँ प्रकाश, अस्तित्व, जीवन और दया हैं। ये चार चीज़ें सीधे और विशेष रूप से ईश्वरीय शक्ति और इच्छा पर निर्भर हैं। अन्य चीज़ों और घटनाओं में, स्पष्ट कारण और साधन, और नियमित "कानून" एक निश्चित सीमा तक ईश्वरीय शक्ति और इच्छा के कार्यों और निष्पादन के सामने परदे के रूप में कार्य करते हैं।

लेकिन, अस्तित्व, जीवन, प्रकाश और दया के संबंध में ऐसे कोई पर्दे काम नहीं करते। क्योंकि सृष्टि में इन पर्दों को हिस्सा देने का उद्देश्य अदृश्य की चर्चा के तहत पाँच चीज़ों में लागू नहीं होता। चूँकि अस्तित्व में सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकताएँ दया और जीवन हैं, और चूँकि बारिश जीवन और दया का साधन है, वास्तव में यह शुद्ध दया है, तो इसके और ईश्वरीय इच्छा के बीच कोई मध्यस्थ नहीं हो सकता, और कोई भी नियम और नियम उस इच्छा को नहीं छिपा सकते। इस प्रकार, हर किसी को हर स्थिति में और हर समय ईश्वर के प्रति आभार और उनकी पूजा करने की आवश्यकता महसूस करनी चाहिए, और उनसे बारिश के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। अगर बारिश किसी विशेष नियम पर निर्भर होती, तो लोग उस नियम पर भरोसा करते और धन्यवाद और प्रार्थना का द्वार बंद हो जाता।

---

52 जिस आयत पर बात हो रही है वह यह है: आख़िरत का ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह के पास है (और वह कब आएगी) और वही बारिश बरसाता है (ठीक उसी समय और जगह पर जिसे सिर्फ़ वही जानता है) और वही जानता है कि गर्भ में क्या है। कोई भी जीव नहीं जानता कि वह कल क्या काटेगा और कोई भी जीव नहीं जानता कि वह किस जगह मरेगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है (31:34) (अनुवाद)

सूर्य के उदय होने से मानव जाति को बहुत लाभ होता है। लेकिन चूँकि यह एक नियमित नियम से बंधा हुआ है, इसलिए हम इसके उदय होने के लिए न तो प्रार्थना करते हैं और न ही धन्यवाद देते हैं।
और चूँकि मनुष्य हर सुबह इसके उगने का समय जानते हैं, इसलिए इसे केवल ईश्वर को ज्ञात अदृश्य चीजों में से नहीं माना जाता। लेकिन चूँकि हर बारिश का सही समय किसी निश्चित, नियमित नियम का पालन नहीं करता, इसलिए लोग ईश्वरीय दरबार में प्रार्थना और विनती के साथ शरण लेने और इसके लिए धन्यवाद देने के लिए बाध्य महसूस करते हैं क्योंकि वे इसे दया के खजाने से आने वाली एक विशेष कृपा मानते हैं।

इसी कारण से क़ुरआन ने बारिश के सही समय को ग़ैब की पाँच चीज़ों में शामिल किया है, जिसका सही ज्ञान सिर्फ़ ईश्वर को है। इसकी निशानियों से जो पहले ही प्रकट हो चुकी हैं, उसका अनुमान ग़ैब को जानने से नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है कि जब यह ग़ैब की दुनिया से निकलकर भौतिक दुनिया के करीब पहुँच जाती है, तो इसकी आरंभिक निशानियों से इसका अनुमान लगाना। किसी तरह के पूर्वाभास के ज़रिए हम ग़ैब की कुछ सबसे गुप्त घटनाओं के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जब वे घटने वाली होती हैं, लेकिन इसका अर्थ ग़ैब को जानना नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है कि कुछ ऐसा जानना जो घटने वाला है।

यह इतना सामान्य है कि, उदाहरण के लिए, मैं अपने तंत्रिका तंत्र की संवेदनशीलता के कारण कभी-कभी बारिश आने से चौबीस घंटे पहले भी उसे महसूस कर लेता हूँ।
इसका मतलब है कि बारिश के शुरुआती संकेत होते हैं जो किसी तरह की नमी के ज़रिए खुद को दिखाते हैं, और संकेत देते हैं कि बारिश होगी। एक कानून की तरह काम करते हुए, यह भावना या धारणा लोगों के लिए कुछ मामलों के बारे में पहले से जानकारी रखने का एक साधन बन जाती है जो अदृश्य दुनिया से निकल चुके हैं, जो अब पूरी तरह से अज्ञात नहीं हैं, लेकिन अभी तक मानव सटीक ज्ञान या प्रकट दुनिया के दायरे में प्रवेश नहीं किया है। हालाँकि, बारिश का सही समय जानना जिसे ईश्वरीय इच्छा ने अभी तक अपनी विशेष दया के खजाने से आने का फैसला नहीं किया है और इसलिए, कोई संकेत नहीं है, विशेष रूप से अदृश्य के सर्वज्ञता के लिए विशेष है।

दूसरा मामला

एक्स-रे के माध्यम से यह जानना कि माँ के गर्भ में भ्रूण नर है या मादा, उपर्युक्त आयत के भाग के अर्थ के विपरीत नहीं है, वह जानता है कि गर्भ में क्या है। क्योंकि आयत का अर्थ "गर्भ में क्या है" से भ्रूण के लिंग तक सीमित नहीं है; यह भविष्य के बच्चे के चरित्र, उसकी क्षमताओं और विशेष विशेषताओं को भी संदर्भित करता है, जो गर्भ में एक भूमिका निभाएंगे।

भविष्य के जीवन में उनकी अपनी पहचान, और यहां तक कि उसके चेहरे पर अनंत-प्रार्थना-की-अद्भुत छाप, (जो उसके भविष्य के जीवन के भाग्य या सामान्य रूपरेखा का प्रतीक है)। यह ज्ञान विशेष रूप से अदृश्य के सर्वज्ञ का है। यहां तक कि अगर मानवता के सैकड़ों-हजारों एक्स-रे जैसे दिमाग एक साथ आ जाएं, तो भी वे चेहरे पर उन अर्थों को नहीं खोज पाएंगे जो इसे अन्य सभी मनुष्यों से अलग करते हैं। तो वे बच्चे की बुनियादी विशिष्ट पहचान, प्रकृति, चरित्र और जन्मजात क्षमता को कैसे खोज सकते हैं, जो उसकी शारीरिक विशेषताओं के अर्थों से सैकड़ों गुना अधिक आश्चर्यजनक हैं?

जैसा कि हमने शुरू में कहा, अस्तित्व, जीवन, प्रकाश और दया ब्रह्मांड में सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकताएँ हैं, और उन्हें सृष्टि में सबसे प्रमुख स्थान दिया गया है। इसलिए, जीवन की व्यापक वास्तविकता का अपनी सभी सूक्ष्मताओं के साथ ईश्वरीय इच्छा और दया पर विशेष रूप से निर्भर होने का एक कारण यह है:

अपनी सभी क्षमताओं और पहलुओं के साथ, जीवन आभार, पूजा और महिमा का साधन है। इस कारण से, ईश्वरीय सत्ता, जो अकेले ही हकदार है और जिसे धन्यवाद दिया जाना चाहिए, पूजा की जानी चाहिए और महिमा दी जानी चाहिए, उसने जीवन और उसकी इच्छा और दया के बीच नियमों या भौतिक कारणों का पर्दा नहीं डाला है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर की अजन्मे बच्चों की शारीरिक और गैर-शारीरिक विशेषताओं में दो विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ हैं। एक उनकी एकता, पूर्ण एकता या अद्वितीयता को प्रदर्शित करता है, और दूसरा सभी के लिए शाश्वत-प्रार्थना है। अर्थात्, शारीरिक संरचना और अंगों और मानवीय क्षमताओं के संबंध में अन्य मनुष्यों के साथ सहमत होने से, बच्चा निर्माता की एकता का साक्षी बनता है। इस वास्तविकता की भाषा में, भ्रूण घोषणा करता है, "जिसने मुझे यह संरचना और ये अंग दिए हैं, वही सभी मनुष्यों का निर्माता भी है जो शारीरिक संरचना में मुझसे मिलते-जुलते हैं। वह सभी जीवित प्राणियों का भी निर्माता है।"

भ्रूण की यह भाषा अदृश्य (जिसका सटीक ज्ञान केवल ईश्वर को है) से संबंधित नहीं है; चूँकि यह एक निश्चित नियम का पालन करती है और अपनी प्रजाति के लिए सामान्य है, इसलिए इसे मानवता द्वारा जाना जा सकता है। यह एक ऐसी भाषा है जो अदृश्य के क्षेत्र से अवलोकनीय क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है।

अजन्मे बच्चों की शारीरिक और गैर-शारीरिक विशेषताओं में ईश्वर की दूसरी विशिष्ट अभिव्यक्ति यह है कि अपने विशेष चरित्र और जन्मजात क्षमता और विशेष चेहरे की विशेषताओं की भाषा के साथ, एक भ्रूण पूरी तरह से स्वतंत्र विकल्प और स्वतंत्रता और निर्माता की विशेष दया को व्यक्त करता है। यह भाषा बिल्कुल अदृश्य से आती है, जो

अस्तित्व में आने से पहले कालातीत ज्ञान के अलावा और कोई भी इसे नहीं देख सकता। इसका एक छोटा सा हिस्सा जो माँ के गर्भ में पता लगाया जा सकता है, उसे पूरी तरह से जानने के लिए पर्याप्त नहीं है।

संक्षेप में, भ्रूण की जन्मजात क्षमता और उसके चेहरे की विशेषताओं में ईश्वर की एकता और उसकी इच्छा और पूर्ण स्वतंत्रता के प्रमाण हैं। यदि ईश्वर चाहे और मुझे सक्षम बनाए, तो अदृश्य की पाँच चीजों से संबंधित कुछ अन्य बिंदु लिखे जाएँगे। लेकिन अभी मेरे पास और समय नहीं है और मेरी स्थिति इसकी अनुमति नहीं देती, इसलिए मैं यहीं समाप्त करता हूँ।

वह शाश्वत है, वह शाश्वत है।

नर्सी ने कहा

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सत्रहवीं झलक

सत्रहवीं झलक

इस्लामी विचार, विश्वास, विश्वदृष्टि और कार्य से संबंधित महत्वपूर्ण नोट्स

इस झलक में पंद्रह नोट्स शामिल हैं जो द फ्लावर (कुरान के बगीचे से, अल-मथनावी अल-नूरी ["प्रकाश का बीजारोपण"] में शामिल) से लिए गए हैं। यह सोचा गया था कि इसमें सत्रह नोट्स शामिल होंगे, सोलहवें नोट को इस पुस्तक में प्रकृति के ग्रंथ के शीर्षक के तहत तेईसवें चमक के रूप में शामिल किया गया है, और सत्रहवें को ईमानदारी के ग्रंथों के शीर्षक के तहत बीसवें और इक्कीसवें चमक के रूप में शामिल किया गया है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परिचय

T इस ग्लिअम (1921) के लिखे जाने से बारह साल पहले, मैंने अरबी में नोट्स में , फूल, प्रकाश, अनाज, फुहार, चिंगारी और बूंद जैसे ग्रंथों में, दिव्य एकता के बारे में कई झलकियाँ लिखीं, जो मानसिक गतिविधि, मन में यात्रा और दिव्य ज्ञान में आध्यात्मिक विस्तार की अवधि के दौरान दिव्य कृपा से मुझ पर छाईं। चूँकि वे इस तरह से लिखे गए थे कि वे एक विशाल सत्य की एक नोक और एक उज्ज्वल प्रकाश की केवल एक किरण दिखाते हैं,

53 इन ग्रंथों का बाद में तुर्की भाषा में अनुवाद किया गया, और उन्हें मेसनेवी-ए नूरिये के रूप में संक्षिप्त रूप में संकलित और प्रकाशित किया गया। उनका संपूर्ण अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और 2007 में द लाइट द्वारा अल-मथनावी अल-नूरी - सीडबेड ऑफ़ द लाइट के रूप में प्रकाशित किया गया। (ट्र.)

और चूंकि प्रत्येक नोट मुझे संबोधित करने वाले अनुस्मारक के रूप में था, इसलिए दूसरों के लिए उनका लाभ सीमित था। मेरे सबसे प्रतिष्ठित और सच्चे भाइयों में से अधिकांश अरबी नहीं पढ़ते हैं। उनके आग्रह ने मुझे उन्हें तुर्की में लिखने के लिए बाध्य किया है, कुछ संक्षेप में और कुछ विस्तार से। चूँकि विचाराधीन नोट्स में न्यू सईद के सत्य के ज्ञान से प्राप्त प्रारंभिक, स्पष्ट अनुभव शामिल हैं, इसलिए उन्हें बिना किसी आवश्यक परिवर्तन के अनुवादित किया गया है। इस कारण से, उनमें से कुछ रिसाले-ए- नूर के कुछ अन्य भागों में भी पाए जाते हैं, और कुछ को उनके मूल संक्षिप्त रूप में छोड़ दिया गया है, ताकि मूल परिष्कार खो न जाए।

पहला नोट

मैंने खुद से कहा, "हे असावधान सैद! इस बात पर अपना दिल मत लगाओ कि जब यह दुनिया नष्ट हो जाएगी तो कौन तुम्हें छोड़ देगा। तुम इस बात पर कैसे दिल लगा सकते हो कि जब तुम मरोगे तो कौन तुम्हें छोड़ देगा, जो कब्र की मध्यवर्ती दुनिया की यात्रा में तुम्हारा साथ नहीं देगा? तुम इस बात पर कैसे भरोसा कर सकते हो कि एक या दो साल में कौन तुम्हें छोड़ देगा, अपने पापों से तुम्हारा हिसाब काट देगा, और जो तुम्हें उसी क्षण छोड़ देगा जब तुम उसे प्राप्त करोगे?

यदि तुम समझदार हो, तो परलोक में होने वाली घटनाओं, अधोलोक की बदलती परिस्थितियों, संसार के कोलाहल और आक्षेपों, या अनंतकाल की यात्रा में तुम्हारा साथ न दे पाने वाली चीजों की चिंता मत करो। उनके क्षय और वियोग पर शोक मत करो। अपने स्वभाव पर विचार करो; तुम्हारी सूक्ष्म शक्तियों में एक ऐसी है, जो केवल अनंतकाल और सनातन से प्रसन्न होकर, केवल उसी की ओर उन्मुख होती है और केवल उसी के समक्ष झुकती है। यदि तुम उसे सारा संसार दे दो, तो भी वह तुम्हारी जन्मजात आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकेगी। वह तुम्हारी इंद्रियों और शक्तियों का राजा है। उस राजा की आज्ञा मानो, जो सर्वज्ञ सृजक की आज्ञा का पालन करता है, और मोक्ष पाओ।

दूसरा नोट

मैंने खुद को एक सच्चे सपने में लोगों से कहते हुए देखा, "हे मानव! यह कुरान का सिद्धांत है कि तुम्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा किसी और चीज़ को अपने से बड़ा नहीं समझना चाहिए, जिस हद तक तुम उसकी पूजा करते हो। न ही तुम्हें खुद को किसी चीज़ से बड़ा समझना चाहिए और इस तरह उसके सामने महानता और प्रभुत्व का दावा करना चाहिए। क्योंकि, जिस तरह सभी प्राणी पूजा की वस्तु होने से समान रूप से दूर हैं, वे प्राणी होने में भी समान हैं।"

तीसरा नोट

हे असावधान ! तू भ्रमवश इस अस्थाई संसार को अविनाशी और स्थायी समझ रहा है। तू चारों ओर देखता है और संसार को स्थिर और नित्य मानकर सोचता है कि तू भी स्थिर और नित्य है।

इसलिए, केवल दुनिया के अंतिम विनाश से ही आपको डर लगता है, मानो आप उस विनाश तक जीवित रहेंगे। अपने होश में आओ! क्योंकि तुम और तुम्हारी अपनी दुनिया हर पल क्षय हो रही है। इस भ्रम के कारण, तुम उस व्यक्ति की तरह हो जो एक हवेली, एक शहर या एक बगीचे को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण पकड़े हुए है। दर्पण की थोड़ी सी भी हलचल या परिवर्तन उस प्रतिबिंबित छवि में उथल-पुथल पैदा करता है जिससे व्यक्ति इतना संतुष्ट है। यह तथ्य कि प्रतिबिंबित हवेली, शहर या बगीचे के मूल स्थिर हैं, आपको लाभ नहीं पहुँचाता है, क्योंकि आपका हिस्सा केवल वही है जो दर्पण प्रतिबिंबित करता है।

आपका जीवन दर्पण है, और आपके दर्पण का आधार आपका जीवन है। इसलिए अपने दर्पण पर विचार करें और देखें कि कैसे यह और इसका प्रतिबिंब दोनों किसी भी क्षण नष्ट हो सकते हैं। चूंकि यह वास्तविकता है, इसलिए अपने जीवन, अपनी दुनिया पर वह बोझ न डालें जो वह सहन नहीं कर सकता।

चौथा नोट

जान लें कि सर्वज्ञ सृजक आम तौर पर उस चीज़ को जीवन में वापस लाता है जो बहुत मूल्यवान है। यानी, वह मूल्यवान चीज़ों को मौसम, साल और सदियों के बदलावों के ज़रिए हमेशा के लिए नष्ट नहीं होने देता; बल्कि, वह लगातार उन्हें जीवन में वापस लाता है। जब आप रोज़ाना, सालाना और हर सदी में होने वाले पुनरुत्थान के प्रकारों को देखते हैं, तो आप परमेश्वर के इस स्थापित, नियमित अभ्यास को देखते हैं।

इस प्रकार, इस नियमित अभ्यास या कानून के आधार पर, हम कहते हैं: चूंकि विज्ञान इस बात पर सहमत है कि मानवता सृष्टि के वृक्ष का सबसे उत्तम फल है और इसका सबसे अधिक महत्व और मूल्य है, और चूंकि प्रत्येक व्यक्ति अन्य जीवित प्राणियों की एक प्रजाति के समान है, तो प्रत्येक व्यक्ति को न्याय के दिन उसकी सही पहचान और शरीर, पद और रूप के साथ पुनर्जीवित किया जाएगा।

पांचवां नोट

चूँकि पश्चिमी विज्ञान और सभ्यता का ओल्ड सईद के विचारों पर कुछ हद तक प्रभाव था, इसलिए जब न्यू सईद ने मन और हृदय में यात्रा शुरू की, तो उन्होंने हृदय की बीमारी और बड़ी मुश्किलें पैदा कर दीं। इस कारण, जब न्यू सईद ने उस गलत दर्शन को झटकना चाहा और पतित होना चाहा

सभ्यता को अपने मन से निकालने के लिए, अपनी दुष्ट आत्मा के सुझावों और कानाफूसी को, जो यूरोप के पक्ष में गवाही देती थी, चुप कराने के लिए, वह यूरोप के सामूहिक व्यक्तित्व के साथ निम्नलिखित चर्चा करने के लिए बाध्य हुआ, जो एक ओर तो बहुत संक्षिप्त और दूसरी ओर बहुत लंबी है।

इसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए; यूरोप दो हैं। एक वह है जो ईसा के धर्म और इस्लामी सभ्यता से लाभ उठाता है, अपने वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों के माध्यम से मानव सामाजिक जीवन और न्याय की सेवा करता है, दूसरा वह है जो प्रकृतिवादी और भौतिकवादी दर्शन पर आधारित है और सभ्यता की बुराइयों को सद्गुण मानकर मानव जाति को दुराचार और पथभ्रष्टता की ओर धकेल रहा है। उस समय आत्मा की यात्रा करते हुए, मैंने यूरोप के इस दूसरे सामूहिक व्यक्तित्व से कहा, जो अपने हाथ में लाभकारी विज्ञान और सभ्यता के सद्गुणों के स्थान पर बेकार, हानिकारक दर्शन और भ्रष्ट सभ्यता रखता है:

हे दूसरे यूरोप, जान लो! तुमने अपने दाहिने हाथ में अंधकारमय, पथभ्रष्ट दर्शन और अपने बाएं हाथ में भ्रष्ट, हानिकारक सभ्यता ले रखी है। फिर तुम दावा करते हो कि मानवता की खुशी उनमें निहित है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे हाथ टूट जाएँ और तुम्हारी दो भेंटें तुम्हें मौत के घाट उतार दें।

हे अभागे मन, जो अविश्वास और कृतघ्नता फैलाता है! क्या भ्रष्ट अंतःकरण वाला और मानसिक या आध्यात्मिक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति महंगे कपड़ों, दिखावटी चमक-दमक और सांसारिक संपत्ति से खुश रह सकता है? क्या तू नहीं देखता कि जो व्यक्ति हर उम्मीद की पूर्ति न होने से निराश या मोहभंग हो जाता है, उसके लिए मिठास खट्टी हो जाती है, सुख दुख में बदल जाता है और दुनिया संकीर्ण हो जाती है? तेरी बुराई के संपर्क में आने वाला, जिसका दिल और आत्मा तेरे पथभ्रष्टता से पीड़ित हो गए हैं और निराश और व्यथित हो गए हैं, वह तेरी दी हुई चीज़ों से कैसे खुशी पा सकता है? क्या कोई व्यक्ति तब खुश हो सकता है जब उसका शरीर धोखे से भरी, क्षणभंगुर पैरा-डिसियाकल स्थिति में हो या जब उसकी आत्मा और दिल नारकीय पीड़ा में हों? देख, तूने इस तरह से दुखी मानवता को गुमराह किया है और उन्हें झूठे स्वर्ग में नारकीय पीड़ाएँ दी हैं।

हे मानवजाति की दुष्ट आत्मा! निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें और देखें कि आपने मानवजाति को कहां पहुंचा दिया है। हमारे सामने दो रास्ते हैं। हम एक को चुनते हैं और चलना शुरू करते हैं। हर कदम पर असहाय लोगों पर गुंडों द्वारा हमला किया जाता है जो उनका सब कुछ लूट लेते हैं, उनके घरों को नष्ट कर देते हैं और उन्हें इतनी बेरहमी से पीटते हैं कि स्वर्ग भी उनके लिए रोता है। जहाँ भी हम देखते हैं, हमें वही दृश्य दिखाई देता है, जो उत्पीड़कों की चीखों और उत्पीड़ितों के रोने और विलाप से भरा होता है। चूँकि जब दूसरे लोग पीड़ित होते हैं तो हमें दर्द होता है

दर्द, हमारी अंतरात्मा ऐसे अन्याय या विलाप को सहन नहीं कर सकती। इसलिए, जो लोग ऐसी घटनाएँ देखते हैं, वे या तो सभी मानवीय भावनाओं को त्याग देंगे और जब तक वे स्वयं सुरक्षित रहेंगे, दूसरों के विनाश की चिंता नहीं करेंगे, बर्बरता की चरम सीमा के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे, या हृदय और तर्क की माँगों को पूरी तरह से अनदेखा कर देंगे।

हे यूरोप, जो पाप और गुमराही से भ्रष्ट हो गया है और ईसा के धर्म से दूर चला गया है! तुमने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल किया है, जो दज्जाल की तरह सिर्फ़ एक आँख वाली है, मानवता को इस नारकीय स्थिति में एक "उपहार" के रूप में लाने के लिए और फिर, यह देखते हुए कि यह बीमारी इतनी लाइलाज है कि यह मानवता को सबसे ऊँचे से सबसे नीचे की ओर ले जाती है, उन्हें पशुता के सबसे निचले स्तर पर ले जाती है, तुम लोगों को बेहोश करने के लिए इलाज के रूप में आकर्षक मनोरंजन और कल्पनाएँ देते हो। हालाँकि, तुम्हारा इलाज तुम्हें मार देगा। तुमने मानवता के लिए जो रास्ता खोला है और जो खुशी तुमने उन्हें दी है, वह दृष्टांत में पहले रास्ते से मिलती जुलती है।

दूसरा मार्ग, जो बुद्धिमान कुरान ने मानव जाति को प्रदान किया है, यह है: हम देखते हैं कि हर स्थान, हर कस्बे और हर स्टेशन पर एक न्यायप्रिय सम्राट के सैनिक अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। कभी-कभी सम्राट के अधिकारी आते हैं, सरकार द्वारा उन्हें दिए गए हथियार और अन्य सामान ले जाते हैं, और उन्हें उनके डिस्चार्ज पेपर देते हैं। सैनिक प्रसन्न होते हैं, हालाँकि बाहर से वे दुखी दिखते हैं क्योंकि उनके प्यारे घोड़े और हथियार वापस ले लिए गए हैं; लेकिन अब वे सम्राट से मिल सकते हैं और उनके देश की राजधानी में लौट सकते हैं। यदि सेना-विस्थापन अधिकारी किसी ऐसे रंगरूट से मिलते हैं जो उन्हें नहीं जानता और वे उससे अपने हथियार सौंपने के लिए कहते हैं, तो वह रंगरूट उनसे कहता है, "मैं सम्राट का सैनिक हूँ और उनकी सेवा में हूँ। मेरा अंतिम गंतव्य उनके पास है। यदि उन्होंने आपको यहाँ भेजा है, तो आपका स्वागत है। यदि नहीं, तो दूर रहें, क्योंकि चाहे आप कितने भी हों, मैं आपसे लड़ूँगा - अपने लिए नहीं, क्योंकि मैं खुद का मालिक नहीं हूँ, मैं अपने सम्राट का हूँ: मेरा व्यक्तित्व और मेरे हथियार दोनों मेरे मालिक की अमानत में हैं। इसलिए मैं आपके सामने झुकूंगा नहीं, बल्कि अपने सम्राट के विश्वास को बनाए रखूंगा और उनकी शाही गरिमा और सम्मान की रक्षा करूंगा।”

यह दूसरे मार्ग पर खुशी और आनंद के हजारों उदाहरणों में से सिर्फ़ एक है। यात्रा के दौरान, हम लगातार जन्म के नाम पर खुशी और उत्सव के साथ नए सैनिकों को इकट्ठा या संगठित होते देखते हैं, जबकि कई अन्य लोग मृत्यु के नाम पर जयकारों और सैन्य बैंड के साथ विदा होते हैं। बुद्धिमान कुरान ने मानवता को यह मार्ग उपहार के रूप में दिया है। यदि लोग इसका सम्मान करते हैं और इसे मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करते हैं, तो वे इस दूसरे मार्ग में प्रवेश करेंगे। फिर उन पर कोई भय नहीं आएगा, न ही वे शोक करेंगे (10:62)।

हे दूसरे, भ्रष्ट यूरोप! तुम्हारी बहुत सी सड़ी-गली और निराधार नींवें इस प्रकार हैं। तुम कहते हो, "सभी जीवित प्राणी, सबसे बड़े देवदूत से लेकर सबसे छोटी मछली तक, अपने स्वयं के स्वामी हैं; वे अपने नाम से काम करते हैं, और अपने स्वयं के आनंद के लिए प्रयास करते हैं। उन्हें जीवन का अधिकार है, और जीवन में उनका एकमात्र उद्देश्य जीवित रहना है।" क्या तुम उनके बीच सार्वभौमिक पारस्परिक सहायता को नहीं देखते, जिसे उनके सर्व-उदार निर्माता ने उदारता के सिद्धांत के रूप में स्थापित किया है जिसका ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों में पूरी तरह से पालन किया जाता है? पौधे जानवरों की मदद करते हैं, और जानवर मानवता की मदद करते हैं। लेकिन, मान लीजिए कि पारस्परिक सहायता के इस सार्वभौमिक नियम की दयालु, उदार अभिव्यक्तियाँ संगत हैं

द्वन्द्व और विवाद के बीच, आप उपदेश देते हैं कि जीवन संघर्ष से बना है। यह कैसे सत्य हो सकता है? क्या आप यह नहीं देख सकते कि सभी खाद्य पदार्थों के कण या परमाणु शरीर की कोशिकाओं को पोषण देने में सहायता करते हैं? यह पारस्परिक सहायता प्रत्येक वस्तु द्वारा एक उदार प्रभु के आदेश का पालन करने से उत्पन्न होती है, और यह सिद्ध करती है कि कोई भी जीवित प्राणी स्वयं का स्वामी नहीं है। लेकिन आपका एक और सड़ा हुआ आधार यह है कि आप कहते हैं, "प्रत्येक वस्तु स्वयं की स्वामी है या स्वयं अपना स्वामी है।" इसका एक और स्पष्ट प्रमाण यह है कि कोई भी वस्तु स्वयं की स्वामी नहीं है: सभी जीवित प्राणियों में, सबसे अधिक सम्माननीय, सबसे व्यापक इच्छाशक्ति और सबसे व्यापक कार्य-क्षेत्र से संपन्न मनुष्य ही है। इसके बावजूद, हमारे दैनिक कार्यों में भी, जैसे सोचना, बोलना और खाना, जो हम अपनी इच्छाशक्ति और शक्ति से करते हैं, हमारा हिस्सा नगण्य है। तो जो लोग अपने इन सबसे साधारण कार्यों का सौवां हिस्सा भी स्वामी नहीं हैं, वे स्वयं पर स्वामित्व और आधिपत्य का दावा कैसे कर सकते हैं?

यदि इस सबसे सम्माननीय प्राणी को, जो स्वतंत्र इच्छा के व्यापक दायरे से संपन्न है, अपने स्वामित्व और प्रभुत्व में इतना कम हिस्सा मिलता है, तो अन्य सजीव और निर्जीव चीजें किस हद तक अपने ऊपर प्रभुत्व का दावा कर सकती हैं?

हे यूरोप! तुम इस भ्रम में इसलिए पड़े हो क्योंकि तुम्हारी प्रतिभा ने तुम्हें अपने भगवान को भूला दिया है - जो हर चीज का निर्माता है। नतीजतन, तुम्हारे सच्चे स्वरूप के बारे में इस भ्रम ने तुम्हें सभी चीजों और कार्यों को (भौतिक) कारणों से जोड़ दिया है, और ईश्वर का जो कुछ है उसे झूठे "दावेदारों" के साथ बांट दिया है। यह सभी जीवित प्राणियों को एक परमाणु के वजन की शक्ति, एक बाल की इच्छा की क्षमता, चेतना की एक चमक और जीवन की एक छोटी सी चमक के माध्यम से अपनी अंतहीन जरूरतों को पूरा करने के लिए असंख्य विरोधों और शत्रुताओं के साथ संघर्ष करने के लिए मजबूर करता है। उनके पास जो कुछ भी है (शक्ति और इच्छा, चेतना और जीवन के नाम पर) वह उनकी एक भी जरूरत को पूरा नहीं कर सकता।

जब उन पर मुसीबत आती है तो वे बहरे और अंधे कारणों से मदद मांगते हैं। लेकिन अविश्वासियों की अपीलें व्यर्थ ही जाती हैं (13:14)।

आपकी अंधकारमय और अंधकारमय प्रतिभा ने मानवता के दिन को झूठी, भ्रामक रोशनी से जगमगाती रात में बदल दिया है। वे रोशनियाँ मानवता के चेहरे पर खुशी से नहीं मुस्कुरातीं, बल्कि वे उनकी दयनीय और शोकाकुल स्थिति में उनकी मूर्खतापूर्ण खुशी का मज़ाक उड़ाती हैं।

आपकी प्रतिभा के छात्र हर जीवित प्राणी को एक दुखी प्राणी के रूप में देखते हैं जिस पर हर तरफ से अंधकार का हमला है। वे दुनिया को विलाप का घर मानते हैं, और इसमें सभी आवाज़ें मृत्यु और पीड़ा पर विलाप करती हैं। आपकी प्रतिभा से पूरी तरह से शिक्षित छात्र फिरौन और अत्याचारी बन जाते हैं, लेकिन ऐसे फिरौन और अत्याचारी कि वे सबसे नीच चीजों की पूजा करते हैं और हर लाभकारी साधन से इस तरह जुड़ जाते हैं जैसे कि ये साधन उनके स्वामी हों। वे स्पष्ट रूप से विद्रोही हैं, लेकिन सुख के लिए खुद को इतना विनम्र बनाते हैं कि वे सबसे तुच्छ लाभ के लिए शैतान के पैर भी चूमते हैं। वे बहुत शक्तिशाली प्रतीत होते हैं, लेकिन चूंकि उनके पास (अपनी आंतरिक दुनिया में) कोई सहारा नहीं है, इसलिए वे वास्तव में असीम रूप से कमजोर हैं। आपके छात्र केवल अपनी शारीरिक भूख को संतुष्ट करना चाहते हैं, देशभक्ति और आत्म-बलिदान की आड़ में अपने व्यक्तिगत लाभ का पीछा करते हैं, और अपने लालच और दंभ को संतुष्ट करने के लिए काम करते हैं। वे केवल अपने आप से प्यार करते हैं और इसके लिए सब कुछ बलिदान करते हैं।

कुरआन के सच्चे विद्यार्थी ईश्वर के बन्दे हैं, लेकिन वे इतने सम्मानित बन्दे हैं कि वे किसी बड़े से बड़े प्राणी या हित के सामने भी अपने आपको छोटा नहीं समझते और जन्नत के परम लाभ को भी अपनी इबादत का लक्ष्य नहीं बनाते। वे नम्र और विनम्र हैं, लेकिन केवल अपने रचयिता के सामने और उसकी आज्ञा से ही अपने आपको नम्र करते हैं और दोनों लोकों में समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए अपने आपको खपाते हैं। वे दरिद्र हैं, लेकिन अपने दयालु रब ने जो कुछ उनमें रखा है, उसके कारण वे सब से स्वतंत्र हैं; वे दुर्बल हैं, लेकिन अपने रब की शक्ति के कारण सब से बलवान हैं, जिसकी शक्ति असीम है। इस क्षणभंगुर संसार को जीवन का लक्ष्य बनाना तो दूर, वे जन्नत में प्रवेश भी नहीं चाहते और उससे प्रसन्न नहीं होते। क्या कुरआन अपने सच्चे विद्यार्थियों को इस क्षणभंगुर संसार को जीवन का लक्ष्य बनाने की अनुमति देगा, जबकि वह उन्हें अनन्त जन्नत को भी अपना अंतिम लक्ष्य बनाने की अनुमति नहीं देता? (उनका लक्ष्य केवल अपने रब की प्रसन्नता प्राप्त करना है और जन्नत तो केवल एक पुरस्कार है।)

इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि इन दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के प्रयासों का उद्देश्य क्या भिन्न है।

आप आगे छात्रों के उत्साह और आत्म-बलिदान की तुलना कर सकते हैं
अपने भ्रष्ट दर्शन के शिष्यों के साथ बुद्धिमान कुरान को इस प्रकार पढ़ाओ:

आपके भ्रष्ट दर्शन के शिष्य अपने स्वार्थ के लिए अपने परिवार से भी पलायन कर जाते हैं, यहां तक कि उनके खिलाफ मुकदमा भी दायर कर देते हैं।
जबकि कुरान के विद्यार्थी आकाश और पृथ्वी के सभी धर्मी निवासियों को अपने परिवार के सदस्य मानते हैं और उनके साथ इतना गहरा और सच्चा रिश्ता महसूस करते हैं कि वे उनके लिए प्रार्थना करते हैं, और कहते हैं, "हे ईश्वर, सभी ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं को क्षमा कर!" उनकी खुशी कुरान के विद्यार्थियों को खुश करती है। वे सबसे बड़ी चीज़ों को भी, जैसे कि ईश्वर का सर्वोच्च सिंहासन और सूर्य, ईश्वर के कर्तव्यनिष्ठ और अधीनस्थ अधिकारियों और अपने जैसे सेवकों और प्राणियों के रूप में देखते हैं।

कुरान अपने विद्यार्थियों की आत्माओं को ऐसी खुशी और उल्लास प्रदान करता है कि निन्यानबे प्रार्थना की माला के स्थान पर, यह अपने विद्यार्थियों को निन्यानबे दुनियाओं के सभी परमाणुओं को प्रार्थना की माला के रूप में देता है जो निन्यानबे ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करते हैं। यह उनसे कहता है, "इनके साथ अपनी महिमा और प्रार्थनाएँ पढ़ें!" ऐसे संत छात्रों को देखें 'अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, अर-रुफाई,54 और अश-शदीली,55 और कुरान के बारे में कि कैसे उन्होंने ब्रह्मांड में हर चीज का उपयोग किया, यहां तक कि अणुओं की जंजीरों, बारिश की बूंदों और सभी प्राणियों की सांसों तक का उपयोग भगवान की महिमा, उल्लेख और प्रशंसा करने के लिए किया।

इस प्रकार, कुरान की चमत्कारी व्याख्या को देखें और देखें कि इससे मनुष्य कैसे ऊपर उठते हैं - यद्यपि वे एक सूक्ष्म जीव से पराजित होते हैं और थोड़े से दुःख और चिंता से संकट और निराशा में चले जाते हैं, फिर भी देखें कि वे किस उच्च पद पर पहुँचते हैं, कुरान के ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन से उनकी क्षमताएँ किस हद तक विकसित होती हैं। ऐसे लोग दुनिया और उसकी सामग्री को अपने रोज़ाना के पाठों के लिए माला जपने के लिए अपर्याप्त समझते हैं, और वे अपने आह्वान, महिमा और प्रशंसा के उद्देश्य के रूप में स्वर्ग को तुच्छ समझते हैं। इसके बावजूद, वे खुद को ईश्वर के सबसे छोटे प्राणियों से बड़ा या अधिक गुणी नहीं मानते। वे अत्यंत गरिमा को अत्यंत विनम्रता और विनम्रता के साथ जोड़ते हैं। आप इससे देख सकते हैं कि भ्रष्ट दर्शन के छात्र कितने पतित हैं।

तो, उन सत्यों के बारे में जो भ्रष्ट लोगों की एक-आंख वाली प्रतिभा है
पश्चिमी दर्शनशास्त्र कुरान के मार्गदर्शन को गलत तरीके से समझता है - जो दो दुनियाओं पर विचार करता है, जो अपनी दो चमकती आँखों से उन्हें देखता है,

---

54 अहमद इब्न 'अली इब्न याह्या अर-रुफाई (1120-1184), रुफ़ैया सूफी संप्रदाय के संस्थापक हैं इस्लाम के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित संतों में से एक। (ट्र.)

55 शेख हसन अश-शादिली (मृत्यु 1258): इस्लाम के अग्रणी, सर्वाधिक प्रसिद्ध संतों में से एक। उन्होंने शादिलियाह की स्थापना की, जो सबसे महत्वपूर्ण सूफी भाईचारों में से एक है। (ट्र.)

अदृश्य को भेदते हुए, तथा अपने दोनों हाथों से दोनों संसारों में मानवजाति की खुशी की ओर संकेत करते हुए कहता है:

> ऐ इंसानों! जो हस्ती और माल तुम्हारे हाथ में है, वह तुम्हारा नहीं है, वह तुम्हारी अमानत है। वह मालिक का है, वह बड़ा दयावान, बड़ा कृपालु है, वह सब कुछ जानता है। वह चाहता है कि वह अपनी सम्पत्ति जो उसने तुम्हें सौंपी है, तुमसे खरीद ले, ताकि वह तुम्हारी खातिर सुरक्षित रहे, ताकि तुम उसे खो न दो। वह तुम्हें इसके बदले में बहुत बड़ी कीमत देगा।
>
> एक सैनिक की तरह, आपके पास ज़िम्मेदारियाँ और कुछ कर्तव्य हैं, इसलिए उसके नाम पर और उसके लिए कार्य करें। वह आपको वह सब प्रदान करता है जिसकी आपको ज़रूरत है और जो कुछ भी आप दूर नहीं कर सकते, उससे आपकी रक्षा करता है।
>
> आपके जीवन का उद्देश्य ईश्वर के नामों और आवश्यक गुणों की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करना है। जब दुर्भाग्य आता है, तो आप कहते हैं, "निश्चित रूप से हम ईश्वर के हैं और उनकी सेवा में हैं, और निश्चित रूप से हमें उनके पास लौटना है
>
> (2:156) तो ऐ बदकिस्मती, अगर तू उसकी इजाज़त से आई है तो स्वागत कर। हम उसी की तरफ़ लौट रहे हैं और उसके दर्शन की चाहत रखते हैं। वह जब चाहेगा हमें ज़िंदगी की ज़िम्मेदारियों और मुश्किलों से आज़ाद कर देगा। अगर ऐ बदकिस्मती, तेरे हाथ से यह सब होना है तो कोई बात नहीं।
>
> तथापि, यदि उसने तुम्हें अपने भरोसे के प्रति मेरी सच्चाई को परखने के लिए आने की अनुमति दी है, किन्तु मुझे स्वयं को तुम्हारे अधीन करने की अनुमति नहीं दी है, तो जब तक मेरे पास शक्ति है, मैं कभी भी अपने भरोसे को ऐसे व्यक्ति के अधीन नहीं करूंगा जो इसे प्राप्त करने का हकदार नहीं है।"

यह दो तरीकों की वास्तविकता को देखने में सक्षम होने के कई उदाहरणों में से एक है। लेकिन लोग मार्गदर्शन और गुमराही में भिन्न होते हैं, और असावधानी के कई स्तर होते हैं। हर कोई इस सत्य को उसके सभी स्तरों में पूरी तरह से नहीं समझ सकता। असावधानी इंद्रियों को सुन्न कर देती है। खासकर वर्तमान युग में, इसने इंद्रियों को इस हद तक सुन्न कर दिया है कि "सभ्य" लोग इस तीव्र दर्द के प्रति असंवेदनशील हैं। हालाँकि, विज्ञान में विकास के कारण बढ़ी संवेदनशीलता और हर दिन दसियों हज़ार मौतों की चेतावनियाँ अभी भी असावधानी के इस परदे को चीर सकती हैं। लेकिन यह कितना अफ़सोस की बात है कि मुस्लिम देशों में बहुत से लोग पश्चिमी लोगों की अंधी नकल करते हैं और उनके अधार्मिक विचारों और वैज्ञानिक भौतिकवाद के प्रभाव में गुमराही का रास्ता अपनाते हैं।

हे युवा लोगों, खास तौर पर मुस्लिम देशों में रहने वाले लोगों! पश्चिमी देशों की नकल करने की कोशिश मत करो! इस दूसरे यूरोप के हाथों इतनी दुर्दशा झेलने के बाद, तुम अभी भी इसके भ्रष्ट भ्रांतियों पर कैसे भरोसा कर सकते हो और उनका अनुसरण कर सकते हो? जो लोग उनके व्यभिचार में उनकी नकल करते हैं, वे अनजाने में उनके साथ जुड़ जाते हैं और खुद को और अपने परिवार को मौत की सज़ा देते हैं।

भाइयों और बहनों। ध्यान रखें कि जितना अधिक आप अनैतिकता में उनका अनुसरण करेंगे, उतना ही अधिक आप देशभक्ति के अपने दावों का खंडन करेंगे! क्या इस तरह से उनका अनुसरण करने का मतलब "राष्ट्रीय" मूल्यों के प्रति समर्पण को तुच्छ समझना और राष्ट्र का उपहास करना है? ईश्वर हमें और आपको सीधे मार्ग पर ले जाए।

छठा नोट

हे अभागे व्यक्ति, जो अविश्वासियों की बड़ी संख्या और विश्वास की कुछ सच्चाइयों को उनके द्वारा साझा रूप से अस्वीकार किए जाने से चिंतित है, और जिसके परिणामस्वरूप आपका विश्वास डगमगा गया है! जान लें कि मूल्य और महत्व का आकलन मात्रा से नहीं किया जाता है। यदि पुरुष या महिला मनुष्य नहीं रह सकते, तो वे शैतानी जानवर बन जाते हैं। जैसे-जैसे वे पशुवत लालच और भूख में आगे बढ़ते हैं, धर्म को नकारने वालों में से कई लोगों की तरह, वे पशुता में बढ़ते जाते हैं। आप देखते हैं कि यद्यपि इस दुनिया में मनुष्यों की तुलना में बहुत अधिक (वास्तविक) जानवर हैं, फिर भी मनुष्यों को पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में सभी जानवरों की प्रजातियों पर सर्वोच्चता दी गई है।

काफ़िर कौन है? वे लोग हैं जो धर्म में विश्वास नहीं रखते। वे वे लोग हैं जो दुनिया की खुशहाली के लिए बनाए गए हैं।

वे विश्वासियों पर सर्वशक्तिमान के आशीर्वाद की डिग्री को समझने में तुलना के साधन के रूप में भी काम कर सकते हैं। अंत में, वह उन्हें नरक में भेज देगा, जिसके वे हकदार हैं।

इसलिए, किसी सत्य विश्वास को अस्वीकार करने और उसे नकारने में काफ़िरों और गुमराह लोगों की सहमति का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि इनकार, चाहे पुष्टि के रूप में ही क्यों न हो, वह नकार या खंडन ही है; इसलिए, इनकार पर उनकी सहमति का कोई महत्व नहीं है। एक हज़ार इनकार करने वाले एक इनकार करने वाले के बराबर हैं। उदाहरण के लिए, अगर इस्तांबुल में दो लोगों को छोड़कर बाकी सभी ने अर्धचंद्राकार चाँद (रमज़ान की शुरुआत में) के दिखने से इनकार किया, और वे दो लोग कहते हैं कि उन्होंने इसे देखा है, तो इन दोनों की गवाही उस बड़ी भीड़ के इनकार और सहमति को अमान्य कर देगी। इसलिए, चूंकि वास्तव में अविश्वास और गुमराही नकार, इनकार, अज्ञानता और गैर-अस्तित्व की स्वीकृति है, इसलिए बड़ी संख्या में अविश्वासियों की सहमति का भी कोई महत्व नहीं होगा। विश्वास के मामलों में, जो सत्य सिद्ध हो चुके हैं तथा स्थापित हो चुके हैं, अवलोकन और अनुभव के आधार पर दो विश्वासियों का अनुमोदन बेहतर है तथा गुमराह लोगों की भीड़ की सहमति से बेहतर है।

इसका एक अन्य कारण इस प्रकार है:

पुष्टि वास्तविकता या तथ्य से संबंधित होती है, जबकि निषेध उस व्यक्ति पर निर्भर करता है जो निषेध करता है। इसलिए जो लोग विश्वास करते हैं और पुष्टि करते हैं वे एक वास्तविकता या तथ्य पर सहमत होते हैं, और उनकी पुष्टि एक दूसरे का समर्थन करती है। लेकिन चूंकि इनकार कई अलग-अलग बहानों से निकलता है और इनकार करने वालों पर निर्भर करता है, इसलिए इनकार करने वालों की सहमति में कोई ताकत या वैधता नहीं होती है। अगर एक घने बादल के कारण कुछ लोगों को छोड़कर सभी लोगों के लिए सूरज को देखना असंभव हो जाता है, तो क्या हम कह सकते हैं कि सूरज नहीं है? बिल्कुल नहीं, क्योंकि जो लोग इसे नहीं देख सकते वे कहेंगे, "मैं सूरज नहीं देख सकता", न कि, "सूरज मौजूद नहीं है।"

ऐसा इसलिए है क्योंकि, नए चाँद के उदाहरण की तरह, जो इसे आकाश में नहीं देखता है, वह कहता है, "मेरे विचार में, चाँद नहीं है। यह इसलिए नहीं दिखाई देता है कि मैं पुष्टि कर सकूँ कि यह उग आया है।" दूसरा कहता है, "मैं चाँद नहीं देख सकता, इसलिए यह अभी तक नहीं दिखा है।" हर व्यक्ति का एक कारण होता है, और हर कारण अलग-अलग कारणों से आ सकता है। चूँकि प्रत्येक का दृष्टिकोण अलग-अलग होता है, और जो कारण उन्हें वस्तु को देखने से रोकते हैं वे भी अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए उनके दावे भी अलग-अलग होते हैं; प्रत्येक दावा दूसरे दावों को पुष्ट नहीं कर सकता। लेकिन जो लोग चाँद के दिखने की पुष्टि करते हैं वे यह नहीं कहते हैं, "मेरे विचार में, नया चाँद है," बल्कि, "वास्तव में नया चाँद आकाश में दिखाई दिया है।" जो लोग इसे देखते हैं वे सभी एक तथ्य के आधार पर एक ही दावा करते हैं। फिर भी, चूँकि नकारने और अस्वीकार करने वालों के विचार सभी अलग-अलग हैं, इसलिए उनके दावे और उन्हें इन दावों तक ले जाने वाले कारण भी अलग-अलग हैं। वे वास्तविकता या तथ्य पर आधारित नहीं हैं। किसी भी निषेध को सिद्ध नहीं किया जा सकता क्योंकि ऐसे प्रमाण के लिए सर्वव्यापी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

यह एक स्थापित नियम है कि "किसी चीज़ का अस्तित्व न होना अत्यधिक कठिनाई के बिना साबित नहीं किया जा सकता है।" यदि आप किसी चीज़ के अस्तित्व का दावा करते हैं, तो बस उसे इंगित करना ही पर्याप्त है। लेकिन यदि आप उसके अस्तित्व न होने का दावा करते हैं, तो आपको पूरी दुनिया को छानना होगा ताकि आप उसके अस्तित्व को साबित कर सकें। नतीजतन, जो अविश्वासी सत्य को नकारते हैं, वे ऐसे हैं जैसे लोग एक संकीर्ण छेद से गुजरने या खाई को पार करने के लिए एक साथ आते हैं; यह बेकार है और इसका कोई वजन या मूल्य नहीं है यदि एक हजार लोग एक ही काम करने की कोशिश करते हैं। वे एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते। लेकिन जो लोग पुष्टि करते हैं वे एक तथ्य की ओर इशारा करते हैं और किसी ऐसी चीज़ के इर्द-गिर्द एक साथ आते हैं जो अपने आप में वास्तविक है। इसलिए उनकी पुष्टि एक दूसरे की पुष्टि करती है। कई लोगों द्वारा पुष्टि करना एक बड़े पत्थर को उठाने के लिए एक साथ आने जैसा है: जितने अधिक हाथ आगे बढ़ते हैं, उन्हें उतनी ही अधिक ताकत मिलती है, और यह उतना ही आसान हो जाता है।

सातवां नोट

हे अभागे, जो देशभक्ती का दावा करते हैं और मुसलमानों को सांसारिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें पश्चिमी भौतिक प्रगति का अनुकरण करने के लिए मजबूर करते हैं। सावधान रहें कि वे रस्सियाँ न टूट जाएँ जिनके द्वारा उनमें से कुछ धर्म से जुड़े हुए हैं। क्योंकि अगर कुछ लोग इस मूर्खतापूर्ण दबाव में धर्म से अपना नाता तोड़ते हैं, तो वे हमारे सामाजिक जीवन को बहुत नुकसान पहुँचाएँगे, जैसे कि वे एक घातक जहर हों। क्योंकि धर्मत्यागी पूरी तरह से बुरे हो जाते हैं और सामाजिक जीवन के लिए जहर की तरह बन जाते हैं। इस कारण से, मुसलमानों के बीच रहने वाले अन्य प्रकट धर्मों के अनुयायियों के विपरीत, जो लोग खुलेआम और बिना शर्म के बड़े पाप करते हैं, उनके साथ देशद्रोही जैसा व्यवहार किया जाता है। उनकी गवाही अदालत में स्वीकार नहीं की जाती, क्योंकि उनका विवेक दोषी और भ्रष्ट है।

हे अभागे पापी! ऐसे अपराधियों की बड़ी संख्या से धोखा मत खाओ, और यह दावा मत करो कि अधिकांश लोग तुम्हारे विचार से सहमत हैं।

क्योंकि ज़ुल्मी लोग अपने ज़ुल्म से खुश नहीं होते। ज़ुल्म की तलाश किए बिना ही वे खुद को उसमें पाते हैं। लगभग सभी ज़ुल्मी लोग नेक और सच्चे मुसलमान बनना चाहते हैं, अपने से बड़े लोगों को नेक और नेक देखना चाहते हैं, सिर्फ़ उन लोगों को छोड़कर - भगवान हमें ऐसे भ्रष्टाचार से बचाए! - जिनके ज़मीर धर्मत्याग के कारण भ्रष्ट हो चुके हैं और साँपों की तरह ज़हर खाने से खुशी पाते हैं।

क्या आपको लगता है कि मुसलमान कभी दुनिया से प्यार नहीं करते या उन्हें अपनी गरीबी के बारे में जागरूकता की ज़रूरत है ताकि वे दुनिया में अपने हिस्से को न भूलें? ऐसा नहीं है; बल्कि लालच बढ़ गया है और ईमान वालों को नुकसान उठाना पड़ा है। कहावत है, "लालची लोग नुकसान और निराशा के अधीन होते हैं," कहावत बन गई है।

इसके अलावा, कई कारक लोगों को संसार की ओर आमंत्रित करते हैं - व्यक्ति की शारीरिक आत्मा, आवश्यकताएं, भावनाएं, इच्छाएं, शैतान, संसार की सतही मिठास, बुरे मित्र, और इसी प्रकार की अन्य बातें - जबकि परलोक और अनन्त जीवन की ओर आमंत्रित करने वाले कारक बहुत कम हैं।

देशभक्ति की भावना और प्रयास इन कुछ लोगों में शामिल होने चाहिए। यदि आप अन्यथा कार्य करते हैं और उन्हें चुप कराते हैं और बहुतों की मदद करते हैं, तो आप शैतान के साथी बन जाएँगे।

क्या तुम सोचते हो कि हमारी गरीबी धर्म के प्रति आसक्ति के कारण हमारी तपस्वी प्रवृत्ति और संसार के त्याग से उत्पन्न आलस्य के कारण है? नहीं! क्या तुम नहीं देखते कि यूरोप के आक्रमणों और वर्चस्व के अधीन मगियान, बौद्ध और अन्य लोग हमसे अधिक गरीब हैं? क्या तुम नहीं देखते कि मुसलमानों के पास अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए जरूरत से ज्यादा है

और अच्छी तरह से जीवन व्यतीत कर सकें, लेकिन क्या यह बात सच है कि पश्चिमी देशों ने इसे उनसे छीन लिया है?

अगर आप उम्मीद करते हैं कि उनकी सभ्यता और उसके भ्रष्ट पहलुओं का अनुसरण करने से देश में बेहतर शासन और सुरक्षा होगी, तो आप गलत हैं, क्योंकि बुरे नैतिक मूल्यों और कमज़ोर, हिलते हुए विश्वासों वाले सौ अपराधियों को नियंत्रित करना और उन पर शासन करना हज़ारों धार्मिक विश्वासियों के साथ ऐसा करने से ज़्यादा कठिन है। मुसलमानों को लालच से दुनिया के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करने की ज़रूरत नहीं है।

उन्हें श्रम के अच्छे संगठन और काम के घंटों की व्यवस्था, लाभदायक सहयोग, आंतरिक सुरक्षा और आपसी विश्वास की आवश्यकता है। ये सब केवल ईश्वर के प्रति जागरूकता और धर्मनिष्ठा से ही संभव है।

आठवां नोट

हे मित्र, जो श्रम और सेवा में आनंद और प्रसन्नता को नहीं जानता, उसे यह जान लेना चाहिए कि परम सत्य भगवान ने अपनी पूर्ण दया से सेवा के लिए पुरस्कार का एक भाग सेवा में और कर्म के लिए पुरस्कार का एक भाग कर्म में शामिल किया है। इस प्रकार निर्जीव प्राणी भी सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के संबंध में भगवान की आज्ञाओं का पूर्ण उत्साह और प्रसन्नता के साथ पालन करते हैं।

मधुमक्खियाँ, मक्खियाँ और मुर्गियाँ से लेकर सूर्य और चंद्रमा तक सभी अपने काम को पूरी खुशी के साथ करते हैं। इसका मतलब यह है कि उन्हें अपने काम से इतनी खुशी मिलती है कि वे उसे पूरी तरह से करते हैं, भले ही अनजाने में और परिणामों के बारे में सोचे बिना।

प्रश्न: जीवित प्राणी आनंद प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन निर्जीव प्राणी कैसे उत्साह रख सकते हैं और आनंद प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर : निर्जीव प्राणी सम्मान, पद, पूर्णता, सौंदर्य और व्यवस्था की तलाश करते हैं, अपने लिए नहीं, बल्कि अपने भीतर प्रकट दिव्य नामों के कारण। वे अपने स्वाभाविक कर्तव्यों का पालन करके ज्योतियों के प्रकाश के नामों के दर्पण बन जाते हैं, और प्रकाशित, परिष्कृत और विकसित होते हैं।

उदाहरण के लिए, पानी की एक बूँद या कांच का टुकड़ा, जो स्वयं में महत्वहीन और प्रकाशहीन है, अपने शुद्ध हृदय से सूर्य की ओर मुड़ता है और अपने हृदय को सूर्य का सिंहासन बनाकर हमारे चेहरों पर मुस्कुराहट लाता है। इसी प्रकार, उस पानी की बूँद या कांच के टुकड़े की तरह, परम कृपा और पूर्णता के साथ सर्वशक्तिमान के नामों के प्रति अपने कर्तव्यों के माध्यम से दर्पण के रूप में सेवा करने से, अस्तित्व के सूक्ष्म कण और यौगिक साधारण वस्तुओं से अभिव्यक्ति, शोधन और प्रकाश के बहुत उच्च स्तर तक विकसित होते हैं-

वे परम ऐश्वर्य, सौन्दर्य और पूर्णता वाले उस एक के नामों के प्रकटीकरण को प्राप्त करने और प्रतिबिंबित करने से आनंद प्राप्त करते हैं, और इस प्रकार सृष्टिकर्ता की आज्ञाओं का पालन करके महान विकास प्राप्त करते हैं।

चूँकि वे अपने कर्तव्यों के कारण बहुत उच्च, परिष्कृत पद प्राप्त करते हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यदि उनमें आनंद प्राप्त करने की क्षमता है, अर्थात् यदि वे ब्रह्मांड के सामान्य जीवन का हिस्सा बनकर आनंद ले सकते हैं, तो वे अपने कर्तव्यों को पूर्ण आनंद के साथ पूरा करते हैं।

कर्तव्य पालन में आनंद के सबसे बड़े प्रमाण के रूप में, देखें कि आपकी इंद्रियाँ और अंग आपको और पूरी मानवता को जीवित रहने में कैसे सक्षम बनाते हैं। उन्हें सेवा करने में इतना आनंद मिलता है कि अगर वे और सेवा न कर सकें तो उन्हें पीड़ा होती है। देखें कि जानवरों को अपने कर्तव्यों को पूरा करने में कितना आनंद मिलता है। क्या आप नहीं देखते कि मुर्गा मुर्गियों को अपने सामने रखता है और उन्हें जो खाना मिलता है उसे खाने के लिए बुलाता है? इसे उसके आदमी से समझा जा सकता है-

वह यह काम बड़े उत्साह, खुशी और गर्व के साथ करता है। इस काम को पूरा करने से उसे जो खुशी मिलती है, वह खाने से मिलने वाली खुशी से कहीं ज़्यादा है।
इसके अलावा, मुर्गी को अपने चूज़ों का नेतृत्व करते हुए देखें। वह उनके लिए अपनी जान कुर्बान कर देगी, खुद को कुत्ते के सामने फेंक देगी। उन्हें खिलाने के लिए वह भूखी रहेगी। उसे अपने चूज़ों की सेवा करने में इतनी खुशी मिलती है कि ऐसी सेवा से भूख और मौत का डर पैदा होता है।

पशु माताएँ अपने बच्चों की रक्षा करने की कोशिश करती हैं और मातृत्व कर्तव्य में आनंद प्राप्त करती हैं, जब तक कि बच्चों को सहायता और सुरक्षा की आवश्यकता होती है। जब बच्चे खुद की देखभाल करने लायक बड़े हो जाते हैं, तो यह कर्तव्य समाप्त हो जाता है और आनंद भी समाप्त हो जाता है। लेकिन मानव माताओं के कर्तव्य कुछ हद तक जारी रहते हैं। अपनी जन्मजात कमज़ोरी और लाचारी के संबंध में, मनुष्य एक तरह से बच्चे ही बने रहते हैं और उन्हें निरंतर करुणा की आवश्यकता होती है।

अतः पशु जाति के नर और मादाओं पर विचार करो, जैसे मुर्गे और माँ मुर्गी पर, और समझो कि वे अपने कर्तव्यों को अपने स्वयं के लाभ या पूर्णता के लिए नहीं, बल्कि उस सर्व-दयालु अनुदानदाता, महाप्रतापी सृजक के लिए पूरा करते हैं, जो उन्हें नियुक्त करता है और अपनी दया से उनके कार्यों की पूर्ति में प्रसन्नता भी सम्मिलित करता है।

प्राकृतिक कर्तव्यों की मजदूरी स्वयं कर्तव्य में ही समाहित है, इसका एक और प्रमाण यह है: उन पौधों और वृक्षों को देखो जो अपने रचयिता की आज्ञाओं का पालन करते हैं। उनकी शोभा और सुगंध उन लोगों को आकर्षित करती है जो उनसे लाभ उठाना चाहते हैं, उनका उत्साह प्रदर्शित करती है, और उनके फूलों और फलों के लिए उनका स्वयं का बलिदान चौकस लोगों के लिए एक संकेत है कि उन आज्ञाओं का पालन करने में उन्हें जो आनंद मिलता है, वह अंततः उन्हें सड़ने और बलिदान करने का कारण बनता है।

नारियल और अंजीर जैसे फलदार वृक्षों को देखो, जो अपने सिर पर दूध और मिठाइयों के डिब्बे रखते हैं, और देखो कि कैसे वे अपनी स्वभावगत जीभ से दया के खजाने से दूध जैसी शुद्धतम खुराक मांगते हैं, और कैसे वे उससे अपने फलों को खिलाते हैं। वे मिट्टी खाते हैं, लेकिन अपने फलों को शुद्धतम खुराक देते हैं। एक अनार का पेड़ कीचड़ भरे पानी से संतुष्ट रहता है, लेकिन अपने फलों में अपने रब द्वारा दिया गया शुद्ध शरबत देता है। ज़मीन में पड़े बीजों को देखो और देखो कि कैसे एक बहुत ही संकरी कालकोठरी में कैदी की तरह, जो किसी बगीचे या खुली जगह में जाने की उत्सुकता से इच्छा रखता है, वे बढ़ने और हवा में अंकुर भेजने के लिए उत्सुक हैं।

यह ईश्वरीय नियम जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है, यह दर्शाता है कि निष्क्रिय चीजें सक्रिय, निरंतर नवीनीकृत होने वाली चीजों की तुलना में अधिक थक जाती हैं, क्योंकि निष्क्रिय चीजें समय और अपने जीवन की धीमी गति के बारे में शिकायत करती हैं और मनोरंजन में लिप्त होकर इसे जल्दी से जल्दी गुजारना चाहती हैं, जबकि निष्क्रिय चीजें कृतज्ञता से भरी होती हैं और नहीं चाहतीं कि उनका जीवन जल्दी से जल्दी गुजर जाए। यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है कि जो व्यक्ति आलस्य में रहता है वह अपने जीवन की शिकायत करता है, जबकि जो व्यक्ति प्रयास करता है और काम करता है वह आभारी होता है। यह भी इसी कारण से है कि कहावत है, "आराम कठिनाइयों और कठिनाइयों में निहित है, जबकि कठिनाई आराम में निहित है," कहावत बन गई है।

जब आप निर्जीव वस्तुओं को देखते हैं, तो आप पाते हैं कि उनमें साकार होने के लिए तैयार क्षमता है। ऊपर वर्णित ईश्वरीय नियम महान प्रयास और परिश्रम के माध्यम से क्षमताओं को वास्तविक क्षमताओं में विकसित करने में खुद को प्रदर्शित करता है। यह दर्शाता है कि उस गतिविधि में उत्साह और आनंद निहित है। यदि निर्जीव प्राणी का ब्रह्मांड के सामान्य जीवन में कोई हिस्सा है, तो उत्साह स्वयं में उत्पन्न होता है; अन्यथा यह उस चीज़ से संबंधित है जो इसका प्रतिनिधित्व करती है। क्या आप नहीं देखते कि जब उसका निर्माता इसे ऐसा करने का आदेश देता है तो नाजुक पानी उत्साह से कैसे जम जाता है? अपनी कमजोरी और कोमलता के बावजूद, जब एक बंद लोहे के बर्तन में पानी अपने भगवान की आज्ञा सुनता है, "बर्फ में बदल जाओ और फैल जाओ!" शून्य से नीचे के तापमान की भाषा द्वारा व्यक्त किया जाता है, तो यह इतना तीव्र उत्साह "महसूस" करता है कि यह बर्फ में बदल जाता है और कठोर लोहे को तोड़ देता है।

"सूर्य" के घूमने और उनकी यात्रा से लेकर मावलवी दरवेशों जैसे परमाणुओं के घूमने तक, ब्रह्मांड में सभी गति और प्रयास, बिना किसी अपवाद के, ईश्वरीय नियति के नियम पर निर्भर करते हैं और ईश्वरीय शक्ति द्वारा निर्धारित और नियंत्रित होते हैं। वे सृजन और प्रशासन के ईश्वरीय आदेश द्वारा खुद को प्रकट करते हैं जो ईश्वरीय शक्ति के हाथ से आगे बढ़ता है और जिसमें ज्ञान, इच्छा और आदेश शामिल होते हैं। प्रत्येक कण या परमाणु, यौगिक और जीवित प्राणी एक सैनिक की तरह है जो नियंत्रित है-

सभी उचित सैन्य क्षेत्रों और कर्तव्यों से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, आपकी आंख की एक कोशिका में एक परमाणु आपकी आंख, आपके चेहरे की नसों, आपके शरीर की नसों, और इसी तरह से आवश्यकतानुसार जुड़ा हुआ है। इसलिए हर चीज दो मामलों में सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है:

पहला यह कि अपनी अनिवार्य शक्तिहीनता के बावजूद, प्रत्येक वस्तु ऐसे कार्य करती है जिनके लिए महान शक्ति और क्षमता की आवश्यकता होती है।

दूसरा यह है कि अपनी पूर्ण अज्ञानता के बावजूद, प्रत्येक वस्तु उन सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करती है जो ब्रह्माण्ड की व्यवस्था बनाते हैं तथा उन नियमों के अनुरूप कार्य करती है जो सार्वभौमिक संतुलन को बनाए रखने में सक्रिय हैं।

परमाणु जैसी निर्जीव चीजें और मधुमक्खी जैसे छोटे जीव ब्रह्मांडीय व्यवस्था और संतुलन को नहीं जान सकते, जो कि "ब्रह्मांड की प्रकट पुस्तक" के सबसे महत्वपूर्ण मामलों में से एक है। एक निर्जीव परमाणु या मधुमक्खी जैसा छोटा जीव ब्रह्मांड की पुस्तक के मूल सिद्धांतों और नियमों को कैसे जान या समझ सकता है, जो कि सर्वशक्तिमान के हाथ में है जो आकाश के स्तरों को खोलता और बंद करता है जैसे कि वे केवल एक नोटबुक के पन्ने हों? यदि आप बेतुके ढंग से यह मान लेते हैं कि एक परमाणु के पास आँखें और दिमाग है जो उस पुस्तक के बेहतरीन लेखन को पढ़ने और समझने में सक्षम है, तो आपको उस परमाणु की गवाही को अस्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए।

सर्वज्ञ सृजक ने ब्रह्माण्ड की पुस्तक के सिद्धांतों को एक विशेष आनंद और एक विशेष आवश्यकता में असाधारण रूप से सुंदर और संक्षिप्त ढंग से मूर्त रूप दिया है। जो कुछ भी किसी विशेष आवश्यकता और विशेष आनंद से कार्य करता है, वह अनजाने में उस पुस्तक के नियमों के अनुपालन में कार्य करता है। उदाहरण के लिए, जब एक मच्छर दुनिया में आता है, तो वह तुरंत किसी व्यक्ति के चेहरे पर हमला करता है; वह अपने लिए जीवन का पानी पाने के लिए उस पर अपनी लंबी छड़ी से प्रहार करता है, और उसे पी जाता है। वह उसे मारने के लिए हमलों से बचने में एक अनुभवी योद्धा का कौशल प्रदर्शित करता है। उस छोटे, अनुभवहीन, नवजात प्राणी को लड़ने और पानी निकालने की ये कलाएँ किसने सिखाईं? अगर मैं उसकी जगह होता, तो मैं लंबे समय तक प्रशिक्षण और कई परीक्षणों के बाद ही ये कौशल सीख पाता।

आप प्रेरणा से भरपूर मधुमक्खी, मकड़ी और अपने घोंसले को मोजे की तरह बुनने वाली बुलबुल जैसे जानवरों की तुलना मच्छर से कर सकते हैं। आप पौधों के लिए भी यही तुलना कर सकते हैं। क्योंकि परम उदार, जिसकी महिमा महान है, ने प्रत्येक जीवित प्राणी को आनंद और आवश्यकता की स्याही से लिखी हुई "मार्गदर्शिका" दी है। उन्होंने इस "मार्गदर्शिका" में ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए अपने आदेशों का ए कार्यक्रम और प्रत्येक प्राणी के कर्तव्यों का संक्षिप्त विवरण शामिल किया है।

देखो कि कैसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मधुमक्खी के लिए विशेष रूप से इन आदेशों और विषयों के भाग को मधुमक्खी के सिर में अंकित किया है। इस संदूक की कुंजी वह आनंद है जो मेहनती " खजाने की मेज," मधुमक्खी के लिए विशेष है। इसके साथ, मधुमक्खियाँ संदूक खोलती हैं, कार्यक्रम पढ़ती हैं, आदेश समझती हैं, और उसके अनुसार कार्य करती हैं, आयत का अर्थ बताते हुए, और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी में प्रेरणा की (16: 68)।

जो कुछ पहले ही कहा जा चुका है, उसके आधार पर आप विश्वास के माध्यम से एक महत्वपूर्ण संदेश, अनेक में से एक संदेश प्राप्त कर सकते हैं, मेरी दया सभी चीज़ों को अपने में समाहित करती है (7:156); कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से महिमान्वित नहीं होती, परन्तु तुम उनकी प्रशंसा को नहीं समझते (17:44); और जब वह किसी चीज़ को चाहता है, तो उसका आदेश बस इतना है कि उससे कहो: “हो जा!” और वह हो जाती है। महिमा उसकी है जिसके हाथ में सभी चीज़ों की प्रभुता है, और तुम उसी की ओर लौट रहे हो (36:82–83)।

नौवां नोट

जान लें कि पैगम्बरी पूर्णता और भलाई का प्रतीक है जो मानवता द्वारा साझा की जाती है। सच्चा धर्म परम सुख और शुद्ध सौंदर्य की सबसे उत्तम अभिव्यक्ति है। विश्वास शुद्ध, पारलौकिक अच्छाई है। चूँकि एक उज्ज्वल सौंदर्य, एक व्यापक, उच्च अच्छाई, एक स्पष्ट सत्य और श्रेष्ठ पूर्णता सृष्टि में स्पष्ट हैं, इसलिए सच्चाई और सत्य स्पष्ट रूप से पैगम्बरी की ओर और पैगम्बरों के हाथों में पाए जाते हैं, जबकि गलत मार्गदर्शन, बुराई और बर्बादी विपरीत दिशा में हैं।

ईश्वर की सेवा के अनगिनत सौंदर्य और गुणों में से, केवल निम्नलिखित पर विचार करें: सेवा और उपासना के माध्यम से, पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, कई अवसरों पर ईश्वर की एकता में सभी विश्वासियों के दिलों को एकजुट करते हैं, जैसे कि पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ और शुक्रवार का सामूहिक और 'ईद (धार्मिक उत्सव दिवस) प्रार्थनाएँ। और वह उनकी ज़बानों को एक ही, एकल शब्द (ईश्वर की एकता में विश्वास का शब्द) पर लाता है। इन अवसरों पर, प्रत्येक विश्वासी सभी विश्वासियों के दिलों की आवाज़ और उनकी प्रार्थनाओं और पाठों के साथ उपासना के शाश्वत उद्देश्य के शानदार और राजसी संबोधन का जवाब देता है। उपासना के शाश्वत उद्देश्य की पूजा में यह विशाल सहमति और व्यापक एकजुटता ऐसी है जैसे कि पूरी धरती ये पाठ कर रही हो, ये प्रार्थनाएँ कह रही हो, सभी क्षेत्रों में प्रार्थना कर रही हो, इस आदेश को पूरा कर रही हो, "नमाज़ को सही तरीके से अदा करो!" सात आसमानों से ऊपर से अपने पूरे खौफ के साथ जारी किया गया।

इस आदेश का पालन करके तथा प्रार्थना करने वाले विश्वासियों की विशाल सभा में भाग लेकर, निर्बल और असहाय मनुष्य, ब्रह्माण्ड में एक छोटे कण के समान होते हुए भी, पृथ्वी और आकाश के रचयिता के प्रिय सेवक बन जाते हैं। उन्हें उसके नाम से पृथ्वी पर शासन करने का सम्मान मिलता है, तथा वे सभी चेतन प्राणियों के नेता बन जाते हैं, साथ ही ब्रह्माण्ड की रचना के अंतिम उद्देश्य भी बन जाते हैं। यदि अदृश्य जगत की तरह, पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के दौरान और उसके बाद, तथा विशेष रूप से ईद सामूहिक प्रार्थनाओं के दौरान और उसके बाद कहे जाने वाले "ईश्वर सर्व-महान है" के असंख्य उद्घोष इस भौतिक जगत में एक हो जाएँ, तो यह पूरी पृथ्वी द्वारा ईश्वर का महिमामंडन होगा।

ऐसा लगता है मानो पूरी मुस्लिम दुनिया की इय्यद की नमाज़ के दौरान धरती ज़ोर से हिल रही हो , अपने सभी क्षेत्रों और पहाड़ों के साथ ईश्वर की स्तुति कर रही हो, और कह रही हो, “ईश्वर महान है,” मक्का के मुहाने पर अराफात पर्वत की जीभ और क़िबला के दिल-काबा के सच्चे इरादे के साथ। ईश्वर की स्तुति का यह वाक्य गुफाओं की हवा में एक रूप धारण कर लेता है-विश्वासियों के मुंह बिखरे हुए हैं

पूरे संसार में - आकाश में गूँजती हुई, और मध्यवर्ती लोकों (इस संसार और अदृश्य संसारों के बीच) में गूँजती हुई।

और इसलिए, हम धरती के कण-कण की संख्या तक उस सर्वशक्तिमान की स्तुति और महिमा करते हैं, जिसने धरती को अपना ऐसा सजदा करने वाला पूजक बनाया है कि वह उसकी स्तुति और महिमा करती है, और उसने इसे अपने बन्दों के लिए पूजा का स्थान और अपने बहुत से प्राणियों के लिए पालना बनाया है। हम उसके बहुत से प्राणियों के लिए उसका धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें अपना सजदा करने वाला बनाया है।

उस महानतम रसूल की जमात, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिन्होंने हमें इस प्रकार की उपासना सिखाई।

दसवाँ नोट

परम सत्य के ज्ञान के प्रकाश तक पहुँचने के लिए, और उसके संकेतों और गवाहों के दर्पणों में उसके प्रकटीकरणों को देखने के लिए, और तर्कों और प्रमाणों के माध्यम से उसका “निरीक्षण” करने के लिए, आपको उस प्रकाश की हर किरण को, जो आपके ऊपर से गुज़रती है या आपके दिल में आती है या आपके दिमाग में आती है, आपत्ति या आलोचना की उँगलियों से या संदेह के हाथ से नहीं छूना चाहिए। न ही आपको उस किरण को पकड़ने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाने चाहिए जो आपको दिखाई देती है। बस खुद को परिस्थितियों से अलग कर लें-

असावधानी की भावनाओं से मुक्त होकर, अपने आप को उन रोशनियों के लिए खोल दो जो आती हैं, और पूरे दिल से उनकी ओर मुड़ो।

मेरा अनुभव है कि ईश्वर के ज्ञान के साक्ष्य और प्रमाण तीन प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ पानी की तरह होते हैं। आप उन्हें महसूस कर सकते हैं और देख सकते हैं, लेकिन उन्हें अपने हाथों से पकड़ नहीं सकते। अपने आप को बेतरतीब विचारों से मुक्त करें और अपने पूरे अस्तित्व के साथ उनमें लीन हो जाएँ। आलोचना की उंगलियों से उनकी जांच न करें; अगर आप ऐसा करते हैं, तो वे बह जाते हैं और खो जाते हैं। जीवन का वह पानी उंगलियों के बीच नहीं रह सकता।

दूसरी श्रेणी के लोग हवा की तरह हैं। आप उन्हें महसूस कर सकते हैं, लेकिन उन्हें देख या पकड़ नहीं सकते। दया की उन हवाओं के सामने अपना चेहरा, मुँह और आत्मा को उजागर करें। उन्हें पकड़ने के लिए आलोचना के अपने हाथों से जवाब देने के बजाय अपनी आत्मा से उन्हें साँस में लें। अपनी आलोचना और संदेह को त्याग दें, अन्यथा वे गायब हो जाएँगे। ये गवाह और सबूत हमारे हाथों में नहीं हो सकते।

तीसरी श्रेणी के लोग प्रकाश की तरह हैं। आप उन्हें देख सकते हैं, लेकिन उन्हें छू या ग्रहण नहीं कर सकते। अपने दिल की आँखों से और अपनी आत्मा की दृष्टि से उनकी ओर मुड़ें। उनके खुद आने का इंतज़ार करें। प्रकाश को हाथ में नहीं रखा जा सकता और न ही उंगलियों से खोजा जा सकता है। इसे केवल अंतर्दृष्टि के प्रकाश से ही खोजा जा सकता है। यदि आप महत्वाकांक्षी रूप से अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाते हैं, या भौतिक उपकरणों से इसे मापते हैं, तो यह इसे छुपा देगा, भले ही यह बुझ न जाए। प्रकाश भौतिक या भौतिक बंधन, प्रतिबंध या भौतिक कब्ज़े से खुश नहीं होता।

ग्यारहवाँ नोट

जान लें कि कुरान की चमत्कारिक व्याख्या की शैली में बहुत दया और स्नेह है। क्योंकि इसके अधिकांश पाठक साधारण लोग हैं। उनके दिमाग सरल हैं, और चूँकि वे सूक्ष्म चीजों को नहीं समझ सकते, इसलिए कुरान आकाश और पृथ्वी के माथे पर अंकित स्पष्ट संकेतों को दोहराता है ताकि उन्हें समझा जा सके। यह उनके सामने बड़े अक्षरों में अंकित दृश्यमान संकेत प्रस्तुत करता है, जैसे आकाश और पृथ्वी का निर्माण, आकाश से वर्षा का बरसना, और मिट्टी का पुनर्जीवित होना (प्रत्येक वसंत)। यह शायद ही कभी उन संकेतों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो छोटे, नाजुक अक्षरों में लिखे गए हैं, ताकि आम लोगों को उन्हें पढ़ने में कठिनाई न हो।

इसके अलावा, कुरान की अभिव्यक्तियाँ इतनी सहज और स्वाभाविक हैं कि ऐसा लगता है जैसे कुरान खुद एक वाचक हो। यह कागज़ों पर लिखी आयतों को पढ़ता है।

शक्ति की कलम से ब्रह्मांड को भेदना। इससे भी बढ़कर, ऐसा लगता है कि कुरान ब्रह्मांड की किताब का पाठ है और उसके आदेश की मौखिक अभिव्यक्ति है। यह शाश्वत निर्माता के आवश्यक गुणों को पढ़ता है और उसके कार्यों और कर्मों को अंकित करता है। यदि आप अभिव्यक्ति की इस वाक्पटुता को देखना चाहते हैं, तो जाग्रत और चौकस हृदय से द टाइडिंग (78) जैसे सूरा और इस तरह की आयतों को सुनें, कहो: "हे ईश्वर! सभी प्रभुत्व का पूर्ण स्वामी..." (3:26)।

बारहवाँ नोट

हे मेरे मित्रो जो ये नोट्स सुन रहे हो!

हालाँकि उन्हें गुप्त रखा जाना चाहिए, फिर भी मैं कभी-कभी अपने दिल की प्रार्थनाएँ और प्रार्थनाएँ अपने प्रभु को लिखता हूँ। ऐसा इसलिए क्योंकि मैं पूरी विनम्रता से सर्वशक्तिमान से अपेक्षा करता हूँ कि वह अपनी दया से, मेरी पुस्तक के भाषण को स्वीकार करे, जब मृत्यु मेरी जीभ को बंद कर दे। मेरी अल्पकालिक जीभ के पश्चाताप और पछतावे के शब्द मेरे अनगिनत पापों का प्रायश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

किताबों की भाषा अपेक्षाकृत अधिक स्थायी होती है, और अधिक प्रभावकारी होती है। तेरह वर्ष पहले (यह ग्रंथ 1920 में लिखा गया था), जब आत्मा में एक तूफानी परिवर्तन के परिणामस्वरूप, पुराने सईद की हंसी नए सईद के रोने में बदल गई थी - उस समय जब मैं बुढ़ापे की सुबह में जवानी की असावधानी की नींद से जागा था - निम्नलिखित प्रार्थना अरबी में लिखी गई थी। इसके एक हिस्से का अनुवाद इस प्रकार है:

> हे सर्व-दयालु प्रभु, सर्व-उदार रचयिता! मेरा जीवन और युवावस्था मेरी इच्छाशक्ति के दुरुपयोग में बीत गई है। उस जीवन और युवावस्था के फलों में से जो मेरे हाथ में बचा है, वह है केवल दर्दनाक पाप, अपमानजनक दर्द, और गुमराह चिंता और संदेह। इस भारी बोझ, बीमार दिल और शर्मिंदा चेहरे के साथ, मैं कब्र के पास जा रहा हूँ।
>
> अपने मित्रों, प्रियजनों और रिश्तेदारों की तरह, जो मर चुके हैं, मैं भी अत्यंत शीघ्रता से, अपनी स्वतंत्र इच्छा से, बिना बायीं या दायीं ओर मुड़े, स्पष्टतः कब्र के द्वार के निकट पहुंच रहा हूं।
>
> कब्र इस क्षणभंगुर क्षेत्र से अनंत काल तक के रास्ते पर स्थापित पहला भवन या द्वार है। मैं पूरी तरह से निश्चित रूप से समझ गया हूँ कि जिस दुनिया से मैं जुड़ा हुआ हूँ और जिससे मैं इतना प्यार करता हूँ, उसका नाश होना तय है, और इसलिए वह विलुप्त होने की ओर अग्रसर है। इसमें रहने वाले सभी जीव भी स्पष्ट रूप से पलायन करते हैं और काफिले में गायब हो जाते हैं। यह दुनिया उन लोगों के लिए विशेष रूप से निर्दयी और धोखेबाज है, जो मेरी तरह अपनी शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्माओं का अनुसरण करते हैं। अगर यह एक भी सुख देता है, तो बदले में हज़ार दर्द देता है। एक अंगूर के लिए, यह सौ थप्पड़ देता है।

हे सर्व-दयालु प्रभु, सर्व-उदार रचयिता! चूँकि जो कुछ भी होना है, वह निकट है, इसलिए मैंने अपना कफ़न ओढ़ लिया है, अपनी ताबूत में लेट गया हूँ, और अपने मित्रों को विदा कर रहा हूँ। जब मैं अपनी कब्र की ओर जा रहा हूँ, तो मैं अपनी मृत देह की मूक जीभ और अपनी आत्मा की मुखर जीभ से आपकी दया के दरबार में पुकार रहा हूँ, "मदद करें! मदद करें! मैं आपकी शरण में आता हूँ, हे सर्व-प्रेमी, सर्व-उदार! मुझे मेरे पापों की शर्म से बचाएँ!"

अब मैं अपनी कब्र पर पहुंच चुका हूं, और मैं अपनी कब्र के पास पड़े अपने शरीर पर खड़ा हूं, और मेरी गर्दन पर कफ़न लपेटा हुआ है।
आपकी दया के दरबार की ओर अपना सिर उठाकर, मैं पूरी ताकत से पुकारता हूँ, "मदद करें! मदद करें! मैं आपकी शरण में आता हूँ, हे सर्व-प्रेममय, सर्व-उदार! मुझे मेरे पापों के भारी बोझ से बचाएँ!"

अब मैं अपनी कब्र में जा चुका हूँ। जो लोग मुझे विदा करने आए थे, वे मुझे छोड़कर चले गए हैं।
मैं आपकी क्षमा और दया की आशा कर रहा हूँ, यह देखते हुए कि आपके अलावा कोई आश्रय और शरण नहीं है। पापों की कुरूपता, विद्रोह की राक्षसीता और इस स्थान की संकीर्णता के सामने, मैं पुकार रहा हूँ, "मदद करें! मदद करें! मैं आपकी शरण चाहता हूँ, हे सर्व-दयालु, सर्व-स्नेही, सर्व-उदार, सर्व-प्रतिदानकर्ता (अच्छाई और बुराई का)! मुझे मेरे कुरूप पापों की संगति से बचाइए। मेरा स्थान विस्तृत करें! हे ईश्वर! " हे ईश्वर! आपकी दया ही मेरा आश्रय है, और आपका प्रिय, जो समस्त लोकों का दयावान है, आपकी दया तक पहुँचने का मेरा साधन है। मैं आपसे शिकायत करता हूँ, आपके बारे में नहीं, बल्कि अपनी आत्मा और अपनी स्थिति के बारे में।

हे मेरे सर्व-दयालु रचयिता और सर्व-दयालु स्वामी और पालनकर्ता! आपका प्राणी और सेवक जिसे सैद कहा जाता है, विद्रोही, शक्तिहीन, असावधान, अज्ञानी, रोगी, दीन, पापी, बूढ़ा, दुखी और भगोड़ा दास जैसा है; लेकिन चालीस वर्ष के बाद उसने पश्चाताप किया है और आपके दरबार में वापस आना चाहता है। वह आपकी दया की शरण में आता है, अपने असंख्य पापों और भूलों, भ्रम और बीमारियों की लत को स्वीकार करता है, और अत्यंत विनम्रता से आपसे प्रार्थना करता है। यदि आप अपनी पूर्ण दया से उसे स्वीकार करते हैं, क्षमा करते हैं और उस पर दया करते हैं, तो आपसे यही अपेक्षित है। क्योंकि आप दयालुओं में सबसे दयालु हैं।

अन्यथा, आपके अलावा और कौन सा द्वार है जिसकी तलाश की जाए? आपके अलावा कोई दूसरा स्वामी नहीं है जिसके दरबार में शरण ली जा सके। आपके अलावा कोई सच्ची पूजा की वस्तु नहीं है जिसकी शरण ली जा सके!

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू एक है, तेरा कोई साझी नहीं।
इस दुनिया में बोला जाने वाला अंतिम शब्द, जो आख़िरत और क़ब्र में पहला शब्द है, वह है: मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, ईश्वर उन पर कृपा और शांति प्रदान करें।

तेरहवाँ नोट

इसमें पाँच मामले शामिल हैं जो भ्रम पैदा करते हैं।

पहली बात

यद्यपि जो लोग परम सत्य के मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं, उन्हें केवल अपने कर्तव्यों पर विचार करना चाहिए, लेकिन वे इस बात पर विचार करते हैं कि ईश्वर उनके साथ कैसा व्यवहार करेगा और उन्हें किस प्रकार जवाब देगा, और इस प्रकार वे गलती में पड़ जाते हैं। किताब अदबु **में वर्णित है-**
दीन वाद-दुनिया ("धर्म और दुनिया के मामलों में शिष्टाचार के मानकों पर पुस्तक")56 में कहा गया है कि शैतान ने पैगम्बर ईसा (उन पर शांति हो) को यह कहकर लुभाने की कोशिश की, "चूँकि हर चीज़ का एक अपरिवर्तनीय, नियत अंत है और यह ईश्वरीय नियति पर निर्भर करता है, इसलिए अपने आप को इस ऊँचे स्थान से नीचे गिरा दो, और देखो कि तुम मरोगे या नहीं।" ईसा (उन पर शांति हो) ने उत्तर दिया, "अपने सेवक को परखना ईश्वर का अधिकार है, जबकि सेवक को उसे परखने का कोई अधिकार नहीं है।" अर्थात्, सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने सेवकों को परखते हुए उनसे कहते हैं, "यदि तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हारे साथ ऐसा करूँगा; मुझे देखने दो कि तुम ऐसा करोगे या नहीं।"

लेकिन उनके सेवकों को कोई अधिकार नहीं है, न ही उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर को परखने और उनसे यह कहने की अनुमति है, "अगर मैं ऐसा करूँ, तो क्या आप ऐसा करेंगे?" ऐसा करना, ईश्वर की प्रभुता की परीक्षा लेना, बुरा आचरण है, और सेवकाई के विपरीत है। इसलिए, मनुष्यों को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, और ईश्वर के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

यह सर्वविदित है कि जब इस्लाम के नायकों में से एक जलालुद-उद-दीन ख़ावारज़्मशाह युद्ध के लिए जा रहे थे, तो उनके मंत्रियों ने उनसे कहा, "आप विजयी होंगे; सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको विजयी बनाएगा।" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे ईश्वर के मार्ग में प्रयास करने का दायित्व सौंपा गया है। मैं ईश्वर के निर्णय या कार्य करने के तरीके में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह उनका निर्णय है कि वे मुझे विजयी बनाते हैं या नहीं।" ईश्वर के प्रति समर्पण के सच्चे अर्थ की उनकी समझ के कारण, वे कई अवसरों पर आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित रूप से विजयी हुए।

---

56 यह पुस्तक अबुल-हसन अली इब्न मुहम्मद अल-मावर्दी (972-1058 ई.) द्वारा लिखी गई है। उन्हें लैटिन में अल्बोसेन के नाम से जाना जाता है। वे शफीई स्कूल से संबंधित एक मुस्लिम न्यायविद थे।
उन्होंने कुरान की व्याख्या, भाषाशास्त्र, नैतिकता और साहित्य से संबंधित विषयों पर भी लिखा। इस्लामी सरकार पर उनकी पुस्तक अल-अहकाम अस-सुल्तानिया वल-विलायत अद-दिनिया ("सरकार और धार्मिक प्राधिकरण के सिद्धांत") को इस क्षेत्र में एक क्लासिक माना जाता है। (अनुवाद)

57 जलालुद-दीन ख़ावारज़्मशाह (मृत्यु 1231) ख़ावारज़्मशाह राज्य के अंतिम सम्राट थे। उन्होंने 1220 और 1231 के बीच मंगोल साम्राज्य के संस्थापक चंगेज खान (तेमुजिन) के हमलों के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी। हालाँकि, जब उन्होंने वर्तमान तुर्की में सेल्जुक राज्य पर हमला किया, तो उन्हें कुछ खानाबदोशों ने हरा दिया और मार डाला। (ट्र.)

मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि जो काम वह अपनी इच्छा से करता है, ईश्वर उसका क्या परिणाम देगा। (इसके बजाय, उसे अपने कर्तव्यों को सर्वोत्तम तरीके से करने का प्रयास करना चाहिए।) उदाहरण के लिए, रिसाले -ए-नूर में **नए शामिल होने वाले लोग** कुछ भाइयों और बहनों में उत्साह भर देते हैं और उन्हें आगे के प्रयासों के लिए प्रेरित करते हैं।

लेकिन जब लोग उनकी बात नहीं मानते, तो यह उनके बीच के कमज़ोरों को हतोत्साहित करता है और उन्हें कुछ हद तक अपना उत्साह खोने का कारण बनता है। हालाँकि, ईश्वर के सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो सबसे महान और सबसे सार्वभौमिक गुरु और नेता और पूर्ण मार्गदर्शक हैं, ने ईश्वरीय आदेश का सख्ती से पालन किया, रसूल के पास संदेश को पूरी तरह से पहुँचाने के अलावा और कोई काम नहीं है (5: 99), और जब लोगों ने उनकी बात नहीं मानी, तो उन्होंने संदेश को और अधिक प्रयास और गंभीरता से पहुँचाया। क्योंकि आयत के अनुसार, तुम जिसे चाहो उसे सत्य का मार्गदर्शन नहीं दे सकते, लेकिन ईश्वर जिसे चाहता है मार्गदर्शन करता है (28: 56), उन्होंने पूरी तरह से समझा कि लोगों को संदेश पर ध्यान देना और मार्गदर्शन देना पूरी तरह से ईश्वर के हाथ में है। इस प्रकार, पैगंबर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कभी भी ईश्वर के काम या निर्णय में हस्तक्षेप करने की कोशिश नहीं की।

अतः हे मेरे भाइयो और बहनो! जो चीज़ तुमसे सम्बन्धित नहीं है, उसके आधार पर तुम उसमें हस्तक्षेप न करो और न ही ऐसा कोई स्थान बनाओ जहाँ से तुम अपने रचयिता की परीक्षा लो।

दूसरा मामला

पूजा केवल ईश्वरीय आदेश के रूप में और केवल उसे प्रसन्न करने के लिए की जाती है।
ईश्वरीय आदेश के लिए उपासना की आवश्यकता होती है और इसका परिणाम ईश्वरीय प्रसन्नता है। इससे अपेक्षित फल और लाभ परलोक से संबंधित हैं। हालाँकि, बशर्ते कि यह इरादा या अंतिम कारण न हो, दुनिया में बिना अपेक्षा के दिए गए फल और लाभ, उपासना या सेवा की भावना को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। वे कमज़ोरों को प्रोत्साहित करने का काम भी कर सकते हैं। लेकिन अगर ये सांसारिक लाभ वही हैं जो इरादा है और उपासना के बदले में अपेक्षित है, तो यह आंशिक रूप से उपासना को अमान्य कर देता है। यह किसी भी उपासना के कार्य को पूरी तरह से निष्फल बना सकता है।

जो लोग इस सूक्ष्म सत्य को नहीं समझते हैं, वे उदाहरण के लिए, शाह नक्शबंद का प्रसिद्ध दैनिक पाठ करते हैं,58 जिसमें सैकड़ों गुण हैं, या अल-जौशन अल-कबीर ("महान ढाल"), जिसमें हजारों गुण हैं

---

58 मुहम्मद बहाउद्दीन शाह अल-नक्शबंद (मृत्यु 1389): सबसे प्रमुख इस्लामिक आध्यात्मिक गुरुओं में से एक और सूफी नक्शबंदियाह संप्रदाय के संस्थापक। उनकी पुस्तकों में रिसालतु'एल-वारिदा, अल-अवरादु'एल-बहैय्या, हयातनामा और तन्बिहुल-ग़ाफिलिन शामिल हैं। (ट्र.)

पुण्य, उनसे मिलने वाले कुछ सांसारिक लाभों का इरादा रखते हैं। परिणामस्वरूप, उन्हें इच्छित लाभ नहीं मिलते हैं, और न ही उन्हें प्राप्त होंगे, न ही उन्हें उन्हें प्राप्त करने का अधिकार है। क्योंकि वे लाभ ऐसी प्रार्थनाओं को पढ़ने का प्राथमिक कारण नहीं हो सकते। यदि ईश्वर चाहे, तो वह उन लाभों को केवल अनुग्रह के रूप में प्रदान कर सकता है, बिना पाठक की इच्छा के। यदि वे वांछित हैं, तो यह कुछ हद तक ईमानदारी को नुकसान पहुंचाता है, और पाठ को पूजा के कार्य से अधिक कुछ नहीं बनाता है। हालांकि, कमजोर लोगों को आमतौर पर ऐसे पुण्य आह्वानों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। यदि वे उन्हें केवल ईश्वर के लिए पढ़ते हैं, लेकिन साथ ही उनके सांसारिक लाभों पर भी विचार करते हैं, तो यह हानिरहित और स्वीकार्य भी है। चूंकि ज्ञान के इस उदाहरण को ठीक से नहीं समझा जा सकता है, इसलिए कई लोग संदेह करते हैं, यहां तक कि ऐसे पाठों के मूल्य को नकारते हैं, जब उन्हें प्रमुख आध्यात्मिक गुरुओं और हमारे धर्मी पूर्वजों द्वारा वर्णित लाभ नहीं मिलते हैं।

तीसरा मामला

"वह व्यक्ति खुश है जो अपनी सीमाओं को जानता है और उनसे आगे नहीं बढ़ता।"

सूर्य का प्रतिबिंब कांच के टुकड़े में, पानी की बूंद में, तालाब में, समुद्र में, चंद्रमा में तथा अन्य सभी ग्रहों में दिखाई देता है। इनमें से प्रत्येक में अपनी क्षमता के अनुसार सूर्य का प्रतिबिंब समाहित है, तथा प्रत्येक अपनी सीमा जानता है। अपनी क्षमता के अनुसार पानी की बूंद कहती है, "मेरे पास सूर्य की छवि है", लेकिन वह यह नहीं कह सकती कि, "मैं सूर्य के लिए समुद्र जैसा दर्पण हूं।" ठीक उसी प्रकार, संतों के पास दिव्य नामों के प्रकटीकरण को प्रतिबिंबित करने की प्रत्येक की क्षमता के अनुसार अलग-अलग पद होते हैं। प्रत्येक दिव्य नाम में सूर्य के समान अभिव्यक्तियां हैं, प्रत्येक व्यक्ति के हृदय से लेकर दिव्य परम सिंहासन तक। प्रत्येक हृदय एक सिंहासन है, लेकिन वह यह नहीं कह सकता कि, "मैं भी दिव्य परम सिंहासन हूं।"

जो लोग अपनी मूल शक्तिहीनता, अभाव, दोष और दुर्गुणों को, जो उपासना और सेवा का आधार हैं, जानने के बजाय ईश्वरीय दरबार में दंडवत प्रणाम करते हैं, बल्कि ईश्वर से बड़ी अपेक्षाएं रखते हुए और अपनी उपासना के कार्यों पर गर्व करते हुए ईश्वर के मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, वे अपने छोटे हृदय को ईश्वरीय सिंहासन के बराबर मानते हैं। वे अपने बूंद जैसे पदों को संतों के सागर जैसे पदों से भ्रमित करते हैं। खुद को उन उच्च पदों के योग्य दिखाने के लिए वे बनावटीपन, दिखावे और निरर्थक आत्म-प्रशंसा का सहारा लेते हैं, जिससे उनके लिए कई कठिनाइयां पैदा होती हैं।

संक्षेप में, एक पैगंबर परंपरा कहती है, "ज्ञानी को छोड़कर सभी नष्ट हो सकते हैं, और ज्ञानी भी नष्ट हो सकते हैं सिवाय उनके जो अभ्यास करते हैं, और

जो लोग सच्चे हैं, उन्हें छोड़कर जो लोग सच्चे हैं, वे नष्ट हो सकते हैं, और सच्चे लोग गंभीर खतरे में हैं।"59 इसलिए, मोक्ष का एकमात्र साधन ईमानदारी है। ईमानदारी हासिल करना बहुत महत्वपूर्ण है। एक छोटा सा ईमानदार कार्य, बेईमानी करने वालों के समूह से बेहतर है। हमें ईमानदारी हासिल करने के लिए जो चीज प्रेरित करेगी, वह यह है कि हमें अपने धार्मिक कर्तव्यों को केवल इसलिए करना चाहिए क्योंकि वे ईश्वर के आदेश हैं और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए हैं। हमें कभी भी ईश्वर के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

हर काम में ईमानदारी की ज़रूरत होती है और हर काम ईमानदारी से किया जा सकता है। कम से कम, ईमानदारी से किया गया थोड़ा-सा प्यार भी ढेर सारे कर्तव्यपरायण प्यार से बेहतर है, जिसके लिए कुछ प्रतिफल की उम्मीद की जाती है। किसी ने इस सच्चे प्यार का वर्णन इस तरह किया है: "मैं प्यार के बदले में कोई प्रतिफल या इनाम नहीं मांगता, क्योंकि कीमत मांगने वाला प्यार कमज़ोर और क्षणभंगुर होता है।"60 सच्चा प्यार इंसानी स्वभाव में और खास तौर पर सभी माताओं में शामिल है। माताओं की करुणा में यह सच्चा प्यार सबसे ज़्यादा मात्रा में होता है। अपने बच्चों के लिए अपने जीवन का बलिदान, यहाँ तक कि अपने अनंत जीवन का भी बलिदान, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि माताएँ अपने बच्चों के प्यार के बदले में कुछ नहीं मांगतीं।

जबकि मुर्गी की सारी पूंजी उसका जीवन है, वह अपने बच्चे का सिर कुत्ते के जबड़े से बचाने के लिए अपना सिर बलिदान कर देती है।

चौथा मामला

हमें कुछ लोगों के हाथों से मिलने वाले उपहारों को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

सांसारिक साधन या अभिकर्ता मानो ये साधन या अभिकर्ता हमारे लिए ये वरदान प्रदान कर रहे हों। यदि कोई साधन या अभिकर्ता चेतना और स्वतंत्र इच्छा के बिना कुछ है, जैसे कि एक जानवर या उदाहरण के लिए एक पेड़, तो यह सीधे सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से वरदान देता है। चूंकि यह ईश्वर के नाम से देता है, इसलिए आपको इसे ईश्वर के नाम से कहते हुए प्राप्त करना चाहिए। यदि अभिकर्ता में चेतना और स्वतंत्र इच्छा है, तो उन्हें देते समय कहना चाहिए, ईश्वर के नाम से; फिर इसे प्राप्त करें, अन्यथा इसे प्राप्त न करें। क्योंकि इसके स्पष्ट अर्थ के अलावा, आयत, " उस चीज़ को न खाओ जिस पर ईश्वर का नाम नहीं लिया गया हो" (6: 121), का एक निहित अर्थ भी है, जो यह है: "किसी भी ऐसी कृपा को न खाओ जो सच्चे वरदान देने वाले को याद न करे, और उसके नाम से न दी गई हो।"

---

59 अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 2:415; अबू हामिद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 3:414। (ट्र.)

60 यह दोहा अबू तैयब अहमद इब्न हुसैन अल-मुतनब्बी (915-965) का है: अध-धा-हबी, तारिख अल-इस्लाम, पृष्ठ देखें। 103. अल-मुतनब्बी इराक में जन्मे अरब कवि थे। (ट्र.)

चूँकि ऐसा है, इसलिए देने वाले और लेने वाले दोनों को कहना चाहिए, ईश्वर के नाम पर। अगर देने वाला ईश्वर के नाम पर नहीं कहता और आपको ज़रूरत है, तो लेते समय ईश्वर के नाम पर कहिए। उनके सिर पर ईश्वरीय कृपा का हाथ देखें, आभार में उस हाथ को चूमें और उनसे ग्रहण करें। यानी, दान में देने के कार्य को देखें और दान देने के कार्य में सच्चे वरदानदाता पर विचार करें। यह विचार आभार का कार्य है। फिर अगर आप चाहें, तो उस व्यक्ति या माध्यम के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि उनके हाथों से आपको दान भेजा गया है।

जो लोग हर चीज़ को प्रत्यक्ष साधनों या एजेंटों या कारणों से जोड़ते हैं, उन्हें धोखा देने वाली बात यह है कि दो चीज़ें - हमारे उदाहरण में उपहार और साधन या एजेंट - एक साथ आती हैं; इसे "सहयोग" कहा जाता है। वे मानते हैं कि चूँकि दो चीज़ें एक साथ मौजूद हैं, इसलिए वे एक-दूसरे का कारण बनती हैं। साथ ही, चूँकि एक भाग का अस्तित्व न होना पूरे के अस्तित्व न होने का कारण हो सकता है, इसलिए एक चीज़ का अस्तित्व न होना दूसरी चीज़ के अस्तित्व न होने का कारण है, और इस प्रकार वे मानते हैं कि एक ही भाग पूरे के अस्तित्व का कारण है, या कि एक चीज़ का अस्तित्व दूसरी चीज़ का वास्तविक एजेंट या आवश्यक कारण है। यह गलत धारणा लोगों को उनके पास आने वाले उपहार को स्पष्ट, भौतिक कारणों या उसके स्पष्ट एजेंट के लिए जिम्मेदार ठहराती है, और इस प्रकार वे कृतघ्न महसूस करते हैं और उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

लेकिन, किसी वरदान का अस्तित्व कई अन्य चीजों के अस्तित्व पर निर्भर करता है, जबकि उसका अस्तित्व न होना उन चीजों में से किसी एक के अस्तित्व में न होने से संभव है। उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति बगीचे में पानी देने के लिए सिंचाई के लिए नहरें नहीं खोलता, वह बगीचे के सूखने और बगीचे में आने वाले वरदानों के न होने का कारण बन जाता है। लेकिन उन वरदानों का अस्तित्व कई अन्य आवश्यकताओं के अस्तित्व पर निर्भर करता है, और उनके अस्तित्व का मुख्य कारण, साथ ही साथ बाकी सभी चीजों का मुख्य कारण ईश्वरीय इच्छा और शक्ति है। इसलिए समझिए कि दो चीजों के एक साथ होने को एक दूसरे के अस्तित्व का वास्तविक कारण मानने की गलती कितनी स्पष्ट है, और जानिए कि वे लोग कितने गलत हैं जो अपने निर्माता या वास्तविक एजेंट की अनदेखी करके हर चीज को भौतिक कारणों या एजेंटों पर आरोपित करते हैं।

"साथ देना" एक बात है, और किसी चीज़ के अस्तित्व का अंतिम कारण दूसरी बात है। आपके पास एक वरदान आता है; किसी व्यक्ति का आपका भला करने का इरादा उस वरदान के साथ आता है, लेकिन यह आपके पास उसके आने का वास्तविक कारण नहीं है। वास्तविक कारण ईश्वरीय दया है। यह सच है कि अगर उस व्यक्ति का आपका भला करने का इरादा नहीं होता, तो वह वरदान आपके पास नहीं आता; उनके इरादे की अनुपस्थिति वरदान का कारण होती-

लेकिन व्यक्ति का इरादा कभी भी उस इनाम के अस्तित्व या आप तक आने का अंतिम कारण नहीं होता है। यह उसके अस्तित्व के लिए केवल एक शर्त या आवश्यकता हो सकती है। उदाहरण के लिए, रिसाले -ए-नूर के कुछ छात्र, जैसे कि हुस्रेव और राफ़ेत, जिन्हें कई ईश्वरीय उपकारों से सम्मानित किया गया है, वास्तविक या अंतिम कारण के साथ "साथ" को भ्रमित करते हैं, और अपने शिक्षक के प्रति बहुत आभार प्रकट करते हैं। हालाँकि, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कुरान की शिक्षाओं से लाभ उठाने के उपकार को, जो उसने उन्हें प्रदान किया है, कुरान के अर्थों की व्याख्या करने के उपकार के साथ जोड़ दिया है, जो उसने उनके शिक्षक को प्रदान किया है। वे कहते हैं, "यदि हमारे शिक्षक यहाँ नहीं आते, तो हम ये पाठ प्राप्त नहीं कर पाते, इसलिए उनकी शिक्षा हमारे लाभ का अंतिम कारण है।" हालाँकि, मैं कहता हूँ:

मेरे भाईयों! मुझ पर और आप पर अल्लाह की कृपा एक साथ हुई है; दोनों का अंतिम कारण ईश्वरीय कृपा है। आपकी तरह, मैं भी संगत या संगति को वास्तविक कारण के साथ भ्रमित करता था, और आप जैसे सैकड़ों रिसाले-ए-नूर छात्रों के प्रति बहुत आभारी महसूस करता था, जिनके पास "हीरे जैसी" कलम हैं। मैं कहता था, "अगर वे नहीं होते, तो मेरे जैसा गरीब, अर्ध-शिक्षित व्यक्ति यह सेवा कैसे कर सकता था?" लेकिन बाद में मुझे समझ में आया कि ईश्वर ने मुझे यह सेवा दी है।

सर्वशक्तिमान ने अपने उद्देश्य की सेवा करने का जो उपकार आप पर किया है, उसे मुझे अपने उद्देश्य की सेवा करने के उपकार के साथ जोड़ दिया है। इसलिए, मेरे और आपके कार्य एक दूसरे के अंतिम कारण नहीं हो सकते। आपको धन्यवाद देने के बजाय, मैं आपको उनके द्वारा आप पर किए गए उपकार के लिए बधाई देता हूं; और आपको मेरे प्रति ऋणी महसूस करने के बजाय, मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

दुर्भाग्यवश, इस मामले में कई स्तर की असावधानी बरती जा रही है।

पांचवां मामला

जिस तरह किसी समुदाय की संपत्ति को किसी एक व्यक्ति को देना गलत है, और जो व्यक्ति किसी धर्मार्थ संस्था की संपत्ति पर हाथ डालता है, वह गलत करता है, उसी तरह किसी समुदाय के श्रम के उत्पाद या उसके सभी सदस्यों के अच्छे कर्मों से होने वाले सम्मान और गुणों का श्रेय समुदाय के नेता या शिक्षक को देना समुदाय और नेता या शिक्षक दोनों के खिलाफ गलत है। ऐसा करने से नेता या शिक्षक के अहंकार की चापलूसी होती है और उनके अहंकार को बढ़ावा मिलता है। केवल एक द्वारपाल होने के बावजूद, यह उन्हें यह मानने के लिए प्रेरित करता है कि वे राजा हैं। इसके अलावा, यह उन्हें दिखावटीपन या पाखंड को बढ़ावा देकर खुद को गलत करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जो कि ईश्वर के साथ भागीदारों की एक तरह की छिपी हुई संगति है।

वास्तव में, सेनापति उस लूट, विजय या गौरव का दावा नहीं कर सकता जो उस बटालियन का है जिसने किसी महल पर विजय प्राप्त की है। इसी प्रकार, मार्गदर्शक या शिक्षक को (अपने शिष्यों पर आने वाले उपकारों का) स्रोत या मूल नहीं माना जाना चाहिए। मार्गदर्शक या शिक्षक को केवल इन उपकारों को दर्शाने वाले दर्पण के रूप में जाना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप सूर्य की गर्मी और प्रकाश को दर्पण के माध्यम से अपने पास आने के लिए सूर्य की असावधानी में, सूर्य की उपेक्षा करके, दर्पण को ही जिम्मेदार ठहराते हैं, और सूर्य के बजाय दर्पण का आभार मानते हैं, तो यह मूर्खता होगी, यहाँ तक कि पागलपन भी। दर्पण की सेवा करनी चाहिए, क्योंकि वह उपकार को ग्रहण करता है और प्रतिबिंबित करता है। मार्गदर्शक की आत्मा और हृदय एक दर्पण है; यह सर्वशक्तिमान ईश्वर से निकलने वाली रोशनी या प्रवाह को ग्रहण करता है और शिष्यों तक उनके प्रतिबिंबित होने का साधन है। इसलिए, ऐसे शिक्षक को आध्यात्मिक या बौद्धिक प्रकाश के साधन होने से अधिक उच्च दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि एक शिक्षक या मार्गदर्शक जिसे स्रोत माना जाता है, वह न तो स्रोत होता है और न ही दर्पण। शिष्यों का मानना है कि उनके इरादे की पवित्रता, ईमानदारी और अपने गुरु के प्रति उनकी निष्ठा और एकाग्रता की शक्ति के कारण उन्हें जो प्रकाश या प्रवाह प्राप्त होता है, वह शिक्षक की आत्मा के दर्पण से आता है। यह ऐसा है जैसे चुंबकत्व द्वारा अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया की एक खिड़की उस व्यक्ति के दिमाग में खुल गई है जो ध्यान से दर्पण को देखता है। वे इसमें कई अजीब चीजें देखते हैं। हालाँकि, यह वह दर्पण नहीं है जिसमें वे इन अजीब चीजों को देखते हैं, बल्कि वे उन्हें उस खिड़की में देखते हैं जो दर्पण पर उनकी चौकस निगाह के कारण उनके दिमाग में खुल गई है।

इसी प्रकार, कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी अयोग्य शेख का सच्चा शिष्य
शेख़ से ज़्यादा उन्नत हो सकता है । शिष्य फिर शेख़ का मार्गदर्शन करता है
और इस तरह वह शेख बन जाता है।

चौदहवाँ नोट

इसमें ईश्वरीय एकता के विषय में चार संक्षिप्त टिप्पणियाँ हैं।

पहली टिप्पणी

हे तू जो सृजनात्मकता को कारणों से जोड़ता है!

कल्पना कीजिए कि आप एक अद्भुत महल को विभिन्न अद्भुत रत्नों से बनते हुए देखते हैं। लेकिन कुछ रत्न केवल चीन में पाए जाते हैं, कुछ केवल स्पेन में, कुछ यमन में, जबकि कुछ अन्य साइबेरिया के अलावा कहीं और नहीं पाए जाते हैं। अगर आप देखें तो

अचानक इन बहुमूल्य रत्नों को आसानी से प्राप्त किया गया और पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण से उसी दिन ले जाया गया जिस दिन महल बनाया जा रहा था, क्या आपको संदेह होगा कि इसे बनाने वाला मास्टर बिल्डर एक चमत्कार करने वाला शासक है जो पूरी पृथ्वी पर हावी है?

और इसलिए, प्रत्येक जीवित प्राणी एक दिव्य महल है। विशेष रूप से मनुष्य महलों में सबसे सुंदर और अद्भुत है। मानवता नामक इस महल के कुछ रत्न आत्माओं की दुनिया से, कुछ अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों और सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका की दुनिया से, और अन्य वायु, प्रकाश और तत्वों की दुनिया से एकत्र किए गए हैं। मानवीय ज़रूरतें अनंत हैं, और मानवीय इच्छाएँ स्वर्ग और पृथ्वी को घेरती हैं।

और इसलिए, हे मनुष्य! चूँकि तुम ऐसे प्राणी हो, इसलिए जिसने तुम्हें बनाया है, वही एकमात्र ऐसा हो सकता है जिसके लिए दुनिया और आख़िरत उसके प्राणियों के लिए दो निवास स्थान हैं; धरती और आकाश उसके लिखे हुए पन्नों के लिए हैं, और वह हर समय को ऐसे नियंत्रित करता है जैसे कि वह एक दिन हो। इस मामले में, केवल वही है जो धरती और आकाश पर शासन करता है और दुनिया और आख़िरत की बागडोर संभालता है, जिसे मनुष्यों द्वारा पूजा जाने का अधिकार है, और वह वही है जिसकी शरण में मनुष्य को जाना चाहिए, और जिसकी ओर उन्हें एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में मुड़ना चाहिए।

दूसरी टिप्पणी

कुछ मूर्ख लोग हैं जो सूर्य को न पहचान पाने के कारण दर्पण में सूर्य का प्रतिबिम्ब देखकर उससे प्रेम करने लगते हैं। वे दर्पण से बहुत लगाव रखते हैं और उसे सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं ताकि उसमें सूर्य का प्रतिबिम्ब नष्ट न हो जाए। लेकिन अगर वे समझ लें कि दर्पण के नष्ट होने पर सूर्य नष्ट नहीं होता या लुप्त नहीं होता, तो वे अपना प्रेम केवल सूर्य से ही करेंगे।

दर्पण में छवि अपनी स्थायित्व के लिए दर्पण पर निर्भर नहीं करती; बल्कि दर्पण की स्थायित्व उस पर निर्भर करती है। दर्पण की "जीवंतता" और उसकी चमक (सूर्य के साथ) की स्थायित्व केवल सूर्य की अभिव्यक्ति की स्थायित्व और दर्पण के सूर्य की ओर मुख करके ही संभव है।

हे मानव! अपने स्वभाव, पहचान और हृदय से तुम उस दर्पण के समान हो, और तुम्हारे स्वभाव में निहित स्थायित्व का प्रेम, मूलतः दर्पण के लिए नहीं है। बल्कि, यह उस सनातन महामहिम के प्रकटीकरण के लिए है, जो अपनी क्षमता के अनुसार दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।

हालाँकि, अपनी मूर्खता के कारण, आप दर्पण को अन्य वस्तुओं की ओर मोड़ देते हैं।
ऐसी स्थिति में कहो, “हे सनातन, तू ही सनातन है!”
अर्थात्, "चूँकि आप विद्यमान हैं और शाश्वत हैं, इसलिए जो क्षणभंगुर और नश्वर हैं वे हमारे साथ जो करना चाहें करें; उन्हें करने दें, क्योंकि जो कुछ भी हमारे साथ घटित होता है, मुझे उसकी परवाह नहीं है।"

तीसरी टिप्पणी

हे मानव! सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने तुम्हारे स्वभाव में एक विचित्र विशेषता डाली है: चूँकि संसार तुम्हें अपने में समाहित नहीं कर सकता, इसलिए तुम अक्सर घुटन भरी कालकोठरी में घृणा की ध्वनि निकालते हो। फिर भी सरसों के दाने, कोशिका, स्मृति या समय के एक मिनट जैसी छोटी सी चीज तुम्हें इस कदर अपने में समाहित कर लेती है कि तुम उसमें खो जाते हो और उसकी ओर आकर्षित हो जाते हो। तुम्हारा मन और हृदय, जिसे विशाल संसार भी अपने में समाहित नहीं कर सकता, उस छोटी सी चीज में समाहित है।

और सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर ने तुम्हारे स्वभाव को ऐसी शक्तियाँ प्रदान की हैं कि उनमें से कुछ तो संसार को निगल जाने पर भी संतुष्ट नहीं होंगी। कुछ तो एक सूक्ष्म कण भी सहन नहीं कर सकते। जैसे आँख एक बाल का भार भी सहन नहीं कर सकती, जबकि सिर भारी पत्थर उठाए हुए है, वैसे ही ये शक्तियाँ एक बाल का भार भी सहन नहीं कर सकतीं, अर्थात् प्रमाद और पथभ्रष्टता से उत्पन्न तुच्छ स्थिति।

कभी-कभी तो वे बुझकर मर भी जाते हैं।

इसलिए सतर्क और सावधान रहें, हमेशा सावधानी से और डूबने के डर से काम करें।
एक निवाला, एक शब्द, एक दाना, एक नज़र, एक इशारा, एक चुंबन में मत डूबो! अपनी इतनी व्यापक क्षमताओं को मत डुबोओ कि वे पूरी दुनिया को समाहित कर सकें। क्योंकि कुछ छोटी चीजें ऐसी होती हैं जो एक ही नज़र में कई बड़ी चीजों को निगल सकती हैं। देखो कैसे आकाश और उसके तारे कांच के एक टुकड़े में समाहित हैं, और तुम्हारे जीवन के इतिहास और कार्यों के अधिकांश पृष्ठ तुम्हारी स्मृति में समाहित हैं, जो सरसों के दाने जितनी छोटी है। इस प्रकार, कुछ छोटी चीजें हैं जो एक ही नज़र में बड़ी चीजों को समाहित करती हैं और उन्हें निगल जाती हैं।

चौथी टिप्पणी

हे संसार में आसक्त! तुम्हारा निजी संसार, जिसे तुम बहुत विशाल समझते हो, कब्र के समान संकीर्ण स्थान है। किन्तु चूँकि इसकी "दीवारें" बनी हुई हैं,

"कांच" प्रतिबिंब के साथ यह उतना ही फैल सकता है जितना कि आंख देख सकती है। कब्र की तरह संकीर्ण होने के बावजूद यह एक शहर जितना बड़ा प्रतीत होता है। यह इस प्रकार है:

इस सांसारिक जीवन के भौतिक आयामों के संबंध में, अतीत, जिसे आपकी निजी दुनिया की दाईं दीवार द्वारा दर्शाया गया है, समाप्त हो चुका है और भविष्य, जिसे बाईं दीवार द्वारा दर्शाया गया है, मौजूद नहीं है। हालाँकि, जब आपकी दुनिया की दो दर्पण जैसी दीवारें एक-दूसरे का सामना करती हैं, तो वे एक-दूसरे के भीतर प्रतिबिंबित होती हैं और आपके वर्तमान समय के बिंदु पर एक साथ आती हैं, जिससे आपके लिए यह अंतर करना मुश्किल हो जाता है कि क्या वास्तविक है और क्या प्रतिबिंबित है। आपके वर्तमान की "रेखा" आपके अतीत और भविष्य में फैलती है और एक विस्तृत क्षेत्र बन जाती है। इसलिए वास्तविकता काल्पनिक चीज़ों में खो जाती है, और आप एक गैर-मौजूद दुनिया को अस्तित्व में मान लेते हैं।

जिस तरह से तेज गति से घुमाई गई छड़ी के सिरे पर एक छोटा सा बिंदु एक बड़ा वृत्त प्रतीत होता है, वास्तव में वह एक छोटा सा बिंदु होते हुए भी, उसी तरह आपकी निजी दुनिया भी आपकी असावधानी और भ्रम के कारण आपको विशाल प्रतीत होती है। यदि आप किसी विपत्ति से प्रेरित होकर उस संकीर्ण दुनिया को हिलाते हैं, तो आप अपना सिर उस दीवार से टकराएंगे, जिसे आप दूर मान रहे थे। आप निराश होंगे और नींद खो देंगे। तब आप देखेंगे कि आपकी दुनिया, जिसे आप विशाल मान रहे थे, एक कब्र से भी संकरी है और एक खस्ताहाल, संकीर्ण पुल से भी अधिक कठिन है। आपका जीवन बिजली की गति से अधिक तेजी से बीतता है, और यह एक नदी की गति से भी अधिक तेजी से बह जाता है।

सांसारिक, पशुवत जीवन और भौतिक अस्तित्व की यही प्रकृति है, पशुता से मुक्त हो जाओ, अपनी शारीरिक इच्छाओं को सीमित करो, और हृदय और आत्मा के जीवन के स्तर पर प्रवेश करो! तुम अपनी कल्पना की दुनिया से परे जीवन का एक व्यापक क्षेत्र और प्रकाश का क्षेत्र पाओगे। उस क्षेत्र और क्षेत्र की कुंजी हृदय और आत्मा को पवित्र घोषणा के साथ जागृत करना है, ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति है जो ईश्वर के ज्ञान के रहस्यों को उजागर करती है और उन्हें काम में लाती है।

पंद्रहवाँ नोट

यह छंदों के बारे में है, और इसलिए, जो कोई भी एक कण के वजन का अच्छा काम करता है, वह इसे देखेगा; और जो कोई भी एक कण के वजन का बुरा काम करता है, वह इसे देखेगा (99: 7-8), जो दिव्य नाम, सभी-रिकॉर्डिंग और संरक्षण की सबसे सार्वभौमिक अभिव्यक्ति को इंगित करता है।

यदि आप प्रकट पुस्तक - कुरान - के नमूने पर अंकित ब्रह्मांड की पुस्तक के पृष्ठों को देखें, तो आप सबसे व्यापक देख सकते हैं-

ईश्वरीय नाम का व्यापक प्रकटीकरण, जो सब कुछ रिकॉर्ड करने और सुरक्षित रखने वाला है, तथा उपरोक्त श्लोकों में व्यक्त सत्य के उदाहरण।

उदाहरण के लिए, विभिन्न पेड़ों, फूलों और पौधों के मुट्ठी भर बीज लें। फिर इन चीज़ों को, जिनमें से प्रत्येक पेड़ या फूल या पौधे के छोटे से बक्से की तरह है, और जो किस्म और कई अन्य पहलुओं में भिन्न हैं, सरल और ठोस धरती के अंधेरे में दफना दें। फिर उन्हें साधारण पानी से सींचें, जिसमें समझ की कमी है और जो चीज़ों के बीच अंतर नहीं कर सकता है, और जहाँ भी आप उसे भेजते हैं, वह बह जाता है।

अब वसंत ऋतु में, वार्षिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में वापस आएँ, और देखें! उस समय पर ध्यान दें जब इसराफिल जैसा61 वज्र का दूत वर्षा को पुकारता है, मानो तुरही बजा रहा हो और धरती के नीचे दबे बीजों में जीवन फूँकने की खुशखबरी दे रहा हो; आप देखेंगे कि, ईश्वरीय नाम, सर्व-रिकॉर्डिंग और संरक्षण के प्रकटीकरण के माध्यम से, वे बीज जो दिखने में एक दूसरे से मिलते-जुलते थे और सभी मिश्रित थे, सर्व-बुद्धिमान सृजक द्वारा जारी विकास के आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हैं।

वे उन आदेशों के अनुरूप कार्य करते हैं कि उनके कार्य चेतना, अनुभूति, उद्देश्य, इच्छा, ज्ञान और बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं। क्योंकि आप देखते हैं कि वे बीज जो एक दूसरे के समान प्रतीत होते थे, अलग हो गए हैं और एक दूसरे से अलग हो गए हैं।

उदाहरण के लिए, वह छोटा सा बीज अंजीर का पेड़ बन गया है, और उसने सर्वज्ञ सृजक की कृपा को हमारे सिरों पर फैलाना शुरू कर दिया है। वह अपनी शाखाओं पर, जो उसके हाथ हैं, उन्हें हमारे पास फैलाता है। और वे दो बीज, जो दिखने में उसके जैसे थे, एक सूरजमुखी और एक पैंसी में विकसित हो गए हैं। उन्होंने हमारे लिए खुद को सजाया है; वे हमारे सामने मुस्कुराते हैं और खुद को हमारे द्वारा प्रिय बनाते हैं। अन्य बीजों में से प्रत्येक एक अलग पेड़ या पौधा या फूल बन गया है, और प्रत्येक के लिए विशेष फल देता है। अपने रूप, गंध और स्वाद से हमारी भूख को उत्तेजित करते हुए, वे हमें अपने पास आमंत्रित करते हैं और अपने ग्राहकों के लिए खुद को बलिदान करते हैं ताकि वे वनस्पति जीवन के स्तर से पशु जीवन तक बढ़ सकें। आप अपने लिए और भी सबक सीख सकते हैं।

बीज इस तरह से विकसित होते हैं कि मुट्ठी भर बीज विभिन्न पेड़ों, फूलों और पौधों से भरा एक बगीचा बन जाते हैं। इसमें कोई गलती या त्रुटि नहीं है। वे कुरान के कथनों में व्यक्त तथ्य को प्रदर्शित करते हैं ,

---

[61] इसराफिल चार महान स्वर्गदूतों में से एक है। वह दो बार तुरही बजाएगा, पहली बार दुनिया के समग्र विनाश के संकेत और स्पष्ट कारण के रूप में और दूसरी बार सभी मृतकों को दूसरी दुनिया में जीवन देने के लिए। (ट्र.)

दयालु की रचना में कोई दोष या असंगति नहीं देखते। फिर से देखो: क्या तुम कोई दरार देख सकते हो? (६७:३) ईश्वरीय नाम, सर्व-रिकॉर्डिंग और संरक्षण के प्रकटीकरण और अनुग्रह के माध्यम से, प्रत्येक बीज अपने माता-पिता से विरासत में मिली विरासत को बिना किसी भ्रम या त्रुटि के संरक्षित और प्रदर्शित करता है। यह निश्चित रूप से इंगित करता है कि सर्व-रिकॉर्डिंग और संरक्षण करने वाला प्राणी जो रिकॉर्डिंग और संरक्षण का यह अद्भुत कार्य करता है, पुनरुत्थान के दौरान अपने संरक्षण की अधिक व्यापक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करेगा। तुच्छ और अस्थायी चीजों और घटनाओं में रिकॉर्डिंग और संरक्षण के ऐसे दोषरहित और स्पष्ट उदाहरण निर्णायक प्रमाण हैं कि मानवता के सभी अच्छे और बुरे कर्म, शब्द और कार्य, जो पृथ्वी पर प्रतिनिधि हैं और जो सर्वोच्च विश्वास को धारण करते हैं - जिनके कर्म, शब्द और कार्य शाश्वत प्रभाव और महान महत्व रखते हैं - सटीक रूप से रिकॉर्ड किए गए और संरक्षित हैं, और उनका लेखा-जोखा रखा जाएगा।

तो क्या मानवता को अपने हाल पर छोड़ दिया जाना चाहिए? भगवान न करे! बल्कि, मनुष्य अनंत काल के लिए किस्मत में है, और निश्चित रूप से उसे या तो अनंत सुख या फिर निरंतर दुख ही मिलेगा। चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे सभी कर्मों का हिसाब देना होगा, और या तो पुरस्कृत किया जाएगा या दंडित किया जाएगा।

संक्षेप में, ईश्वर की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति को रिकॉर्ड करने, संरक्षित करने और आरंभ में उल्लिखित श्लोकों की सत्यता के गवाहों की संख्या अनगिनत है। इस मामले में हम जो गवाही देते हैं, वह समुद्र से एक बूँद या पहाड़ से एक अणु मात्र है।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

अठारहवीं चमक

T यह लेमा'अत ("द फ्लैशेस", जो सोज़लर ["द वर्ड्स"] के अंत में शामिल है) और सिक्के-ए-तास-दिक-ए-गायबी ("भविष्य के समाचारों की पुष्टि की मुहर") में प्रकाशित हुआ है ।

उन्नीसवीं चमक

उन्नीसवीं चमक

मितव्ययिता पर

यह ग्रंथ मितव्ययिता और संतोष, तथा अपव्यय और अपव्यय के बारे में है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

खाओ-पीओ, परन्तु फिजूलखर्ची मत करो! (7:31)

Tउनकी कविता मितव्ययिता का निर्णायक आदेश देकर और अपव्यय को मना करके बुद्धिमत्ता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण सबक प्रस्तुत करती है। इस मामले में सात बिंदु हैं:

पहला बिंदु

सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता मानवजाति को दिए गए उपहारों के बदले में कृतज्ञता की मांग करता है। अपव्यय कृतज्ञता के विपरीत है और इसका अर्थ है कि उपहार को इस तरह से कम आंकना जिससे नुकसान हो। हालाँकि, मितव्ययिता का अर्थ है उपहार के लिए उचित सम्मान।

सच में, मितव्ययिता ईश्वरीय दया के प्रति आभार और सम्मान का एक रूप है जो दान के रूप में आती है, साथ ही यह प्रचुरता का एक निश्चित कारण है, शरीर के लिए स्वास्थ्य का एक संयम जैसा साधन है, सम्मान का एक स्रोत है जो किसी को भीख मांगने के अलावा और कुछ नहीं होने के अपमान से बचाता है, और दान में आनंद महसूस करने और दान में आनंद का स्वाद लेने का एक प्रभावी साधन है जो कुछ लोगों को स्वादिष्ट नहीं लग सकता है। जहाँ तक

अपव्यय, क्योंकि इसका अर्थ है ज्ञान के इन उदाहरणों के विपरीत चलना, इसके गंभीर परिणाम होते हैं।

दूसरा बिंदु

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने मानव शरीर को एक अद्भुत महल या सुव्यवस्थित नगर के रूप में बनाया है। मुंह में स्वाद की इंद्रिय द्वारपाल की तरह है, और तंत्रिकाएँ और रक्त वाहिकाएँ टेलीफोन या टेलीग्राफ़ तार हैं जिनके द्वारा स्वाद की इंद्रिय पेट से संवाद करती है, जो शरीर के केंद्र में है। जब कोई चीज़ मुंह में प्रवेश करती है, तो शरीर या पेट स्वाद की इंद्रिय के ज़रिए उसे जान लेता है। अगर जो चीज़ अंदर गई है वह शरीर के लिए किसी काम की नहीं है, या अगर वह कड़वी या हानिकारक है, तो स्वाद कलिकाएँ कहती हैं, "प्रवेश नहीं!" और मुंह उसे तुरंत बाहर निकाल देता है।

इस प्रकार, स्वाद की इंद्रिय केवल द्वारपाल है, जबकि शरीर के रखरखाव के संबंध में पेट प्रबंधक या राज्यपाल की स्थिति में है। इसलिए, जब एक सौ डॉलर का उपहार, उदाहरण के लिए, प्रबंधक या राज्यपाल को देने के लिए महल या शहर में आता है, तो द्वारपाल के लिए टिप के रूप में केवल पाँच डॉलर ही उचित हैं, ताकि वह अभिमानी या बिगड़ैल न हो जाए और अपने कर्तव्य को भूलकर, उन विद्रोहियों को महल में आने दे जो उसे अधिक टिप देंगे।

इस सत्य के आधार पर, मान लीजिए कि दो निवाले हैं, जिनमें से एक में पनीर या अंडे जैसे पौष्टिक खाद्य पदार्थ हैं, जिसकी कीमत केवल एक डॉलर है, जबकि दूसरा बेहतरीन बकलावा है और इसकी कीमत दस डॉलर है। दोनों निवाले अलग-अलग नहीं हैं-

शरीर में प्रवेश करने से पहले या बाद में उपयोग के लिए भोजन उपलब्ध होता है। वास्तव में, एक डॉलर का पनीर या अंडा अधिक पौष्टिक हो सकता है। मुंह में स्वाद की भावना को प्रभावित करने के दृष्टिकोण से केवल आधे मिनट का अंतर है। तीस सेकंड के आनंद के लिए एक डॉलर से दस डॉलर तक की कीमत बढ़ाना कितना निरर्थक और हानिकारक अपव्यय है।

अब, जबकि महल के प्रबंधक या शहर के गवर्नर को दिया जाने वाला उपहार एक डॉलर का है, द्वारपाल को नौ गुना ज़्यादा टिप देने से वह भ्रष्ट ही होगा। वह महल या शहर पर शासन करने का दावा करेगा। जो कोई भी ज़्यादा टिप या आनंद देगा उसे प्रवेश दिया जाएगा और अव्यवस्था या क्षति होगी। वह शव के मालिक को चिल्लाने के लिए मजबूर करेगा, "ओह! डॉक्टर को बुलाओ, और उससे मेरा तापमान कम करवाओ या इस आग को बुझाओ!"

इस प्रकार, मितव्ययिता और संतोष का अर्थ है मानवता के निर्माण और जीवन में ईश्वरीय ज्ञान के अनुरूप कार्य करना। स्वाद की इंद्रिय द्वारपाल की स्थिति में है, इसलिए इसे केवल उसका हक दिया जाना चाहिए। अपव्यय का अर्थ है ज्ञान के विपरीत कार्य करना, और इसलिए दंड का कारण बनता है। यह पेट को खराब करता है, जिससे भूख कम लगती है और स्वास्थ्य को नुकसान होता है। यह झूठी या कृत्रिम भूख के साथ खाने को प्रोत्साहित करता है जो विभिन्न खाद्य पदार्थों से उत्पन्न होती है। यह अपच और बीमारी का भी कारण बनता है।

तीसरा बिंदु

ऊपर दूसरे बिंदु में हमने कहा कि स्वाद की इंद्रिय एक द्वारपाल है।
सचमुच, यह उन लोगों के लिए द्वारपाल है जो असावधान हैं और जो आध्यात्मिकता या कृतज्ञता में आगे नहीं बढ़ पाए हैं। हमें स्वाद की इंद्रिय को संतुष्ट करने के लिए अपने स्वास्थ्य को बर्बाद नहीं करना चाहिए।

हालांकि, जो लोग वास्तव में सत्य, कृतज्ञता और आध्यात्मिकता के लोग हैं, उनकी स्वाद की इंद्रिय, जैसा कि छठे वचन में बताया गया है, ईश्वरीय दया की रसोई में पर्यवेक्षक और निरीक्षक की भूमिका निभाती है। यह ईश्वरीय उपहारों की विविधता को पहचानने और उन्हें सूक्ष्म तराजू से तौलने का काम करती है, जिनमें से प्रत्येक को भोजन और पेय की संख्या के अनुसार डिज़ाइन किया गया है, जो बदले में कृतज्ञता के रूप में पेट को सूचित करता है। इस कर्तव्य के संबंध में, स्वाद की इंद्रिय केवल एक भौतिक इकाई के रूप में शरीर की सेवा नहीं करती है, बल्कि यह हृदय, आत्मा और बुद्धि की भी सेवा करती है। इसलिए इसका स्थान पेट से श्रेष्ठ है।

बशर्ते कि कोई व्यक्ति व्यर्थ न जाए, बल्कि धन्यवाद देने का कर्तव्य पूरा करे, और ईश्वरीय कृपा की विविधताओं को पहचाने और समझे, और वैध तरीके से खाए-पीए, और बशर्ते कि वह खुद को अपमानित न करे, तो व्यक्ति उपभोग में आनंद प्राप्त कर सकता है। वे अपनी स्वाद-इंद्रिय को कृतज्ञता में इस्तेमाल करने के लिए स्वादिष्ट भोजन और पेय चुन सकते हैं। अब्दुल-कादिर अल-जिलानी का निम्नलिखित चमत्कार इसका एक ज्ञानवर्धक उदाहरण है:

एक बार, शेख अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, जो आध्यात्मिकता के महानतम स्तंभों में से एक हैं, ईश्वर उनकी पवित्रता को पवित्र करे, के पास एक शिष्य था जो एक बूढ़ी, चिंतित महिला का इकलौता बच्चा था। वह आदरणीय महिला अपने बेटे से मिलने गई तो उसने देखा कि उसका बेटा सूखी, काली रोटी का टुकड़ा खा रहा है। इस तपस्या के कारण उसकी शारीरिक दुर्बलता ने उसकी माँ की करुणा को जगा दिया। उसकी हालत पर दया करते हुए, वह महिला शिकायत करने के लिए अल-जिलानी के पास गई, और उसने देखा कि आदरणीय शेख फ्राइड चिकन खा रहे थे। उसने उनसे कहा, "हे गुरु! मेरे बेटे!

बेटा भूख से मर रहा है, लेकिन तुम चिकन खा रहे हो!" इस पर, प्रसिद्ध आध्यात्मिक ध्रुव ने चिकन से कहा, "भगवान की आज्ञा से उठो!"

कई सच्चे, भरोसेमंद और विश्वसनीय लोगों ने बताया कि मुर्गे की हड्डियाँ खुद-ब-खुद इकट्ठी हो गईं और एक ज़िंदा मुर्गे के रूप में बर्तन से बाहर निकल गईं। पवित्र आध्यात्मिक ध्रुव ने महिला से कहा, "जब आपका बेटा इस स्तर पर पहुँच जाएगा, तो वह भी चिकन खा सकता है!"62

इस कृत्य से पवित्र पोल का तात्पर्य था, "जब भी आपके बेटे की आत्मा उसके शरीर पर, और उसका हृदय उसकी शारीरिक आत्मा पर, और उसकी बुद्धि उसके पेट पर हावी हो जाती है, और वह कृतज्ञता के लिए आनंद की मांग करता है, तो वह स्वादिष्ट चीजें खा सकता है।"

चौथा बिंदु

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं, "जो व्यक्ति किफ़ायत बरतता है, उसके परिवार को रोज़ी-रोटी की कमी नहीं होती।"63

प्रचुरता और अच्छे जीवन के साधन के रूप में मितव्ययिता के असंख्य, निर्णायक प्रमाण हैं। अगर मैं अपने जीवन से उदाहरण दूं, तो मैं उन लोगों की गवाही के साथ कह सकता हूं जो मेरे साथ हैं, कि मैंने मितव्ययिता के कारण बहुत अधिक समृद्धि देखी है। यहां तक कि नौ साल पहले (1926 में), मेरे साथ बर्दुर में निर्वासित कई आदिवासी नेताओं ने अपनी कोशिश की थी।

उन्होंने मुझे ज़कात (धार्मिक रूप से अनिवार्य दान) स्वीकार करने के लिए मजबूर करने में बहुत मेहनत की ताकि मुझे अभाव या अपमान का सामना न करना पड़े। मैंने उनसे कहा, "हालाँकि मेरे पास कम पैसे हैं, लेकिन मैं किफ़ायती हूँ और थोड़े से पैसे में संतुष्ट रहने का आदी हूँ। इसलिए मैं तुमसे ज़्यादा अमीर हूँ।" मैंने उनके लगातार आग्रह को ठुकरा दिया।

यह बेहद दिलचस्प है कि दो साल बाद जिन लोगों ने मुझे ज़कात दी थी, उनमें से कुछ कर्ज में थे क्योंकि वे आर्थिक रूप से सक्षम नहीं थे। भगवान का शुक्र है कि तब से सात साल बाद भी मेरे पास जो थोड़ा पैसा था, वह मेरे लिए पर्याप्त था, क्योंकि अर्थव्यवस्था से बहुत ज़्यादा पैसे आए थे। इसने मुझे लोगों से उधार लेने या दूसरों से स्वतंत्र रहने के अपने तरीके से विचलित होने से बचाया, जो मेरे जीवन के सिद्धांतों में से एक था।

जो व्यक्ति मितव्ययिता का पालन नहीं करता, उसे निश्चित रूप से अपमानित होना पड़ता है और दूसरों से भीख मांगनी पड़ती है। आजकल लोग केवल बढ़े हुए रिटर्न पर ही पैसा उधार देते हैं।

---

62 'अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, घुन्यात एट-तालिबिन, 502; अन-नभानी, जामिउ करामत अल-अवलिया, 2:203। (ट्र.)

63 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:447। (ट्र.)

कभी-कभी बदले में उन्हें सम्मान मिलता है, कभी रिश्वत, और कभी-कभी धार्मिक पवित्र मूल्य। एक डॉलर की कीमत “एक हज़ार डॉलर” होती है।

यदि लोग मितव्ययिता का पालन करें और जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति से संतुष्ट रहें, जैसा कि आयतों में कहा गया है, " निश्चय ही अल्लाह ही सर्व-आपूर्तिकर्ता, सर्वशक्तिशाली और सर्वशक्तिमान है" (51:58), और धरती पर कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं है जो चलता-फिरता हो परन्तु उसका भरण-पोषण अल्लाह पर निर्भर हो" (11:6), तो उन्हें इतना रोज़ी प्रदान किया जाएगा कि वे उस तरह से जीवन व्यतीत कर सकें जिसकी वे अपेक्षा नहीं करते हैं। रोज़ी दो प्रकार की होती है।

एक है जीवन के लिए ज़रूरी पोषण। ऊपर दी गई आयत (11:6) कहती है कि ईश्वर ने हर जीवित प्राणी के लिए इसकी गारंटी दी है।
जब तक लोग अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग करके इस जीविका में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, तब तक उनका आवश्यक जीविका उन्हें मिल ही जाएगा। उन्हें अपने धर्म या अपने सम्मान का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ेगा।

दूसरा प्रकार वह जीविका है जो अनावश्यक है। हमारी इच्छाशक्ति, क्षमताओं और ज़रूरतों के दुरुपयोग के कारण, अनावश्यक ज़रूरतें ज़रूरी हो गई हैं और आविष्कृत रीति-रिवाज़ों के कारण, हम उनके आदी हो गए हैं। चूँकि इस तरह की जीविका की गारंटी भगवान द्वारा नहीं दी जाती है, इसलिए हमारे समय में इसे प्राप्त करना भी बहुत महंगा है। बहुत से लोग ऐसी अशुभ वस्तुओं को या तो अपने सम्मान का त्याग करके और अपमान स्वीकार करके या किसी नीच व्यक्ति से भीख माँगने या उसके पैर चूमने जैसा व्यवहार करके या धार्मिक, पवित्र मूल्यों का त्याग करके ही प्राप्त कर सकते हैं जो शाश्वत जीवन का प्रकाश हैं।

इसके अलावा, गरीबी और अभाव के इस समय में, अच्छे लोग भूखे और जरूरतमंदों के दर्द के बारे में जागरूकता के कारण अंतरात्मा की पीड़ा से पीड़ित हैं; यह अवैध आय से मिलने वाले किसी भी आनंद को खराब करता है। ऐसे विचित्र समय के दौरान, हमें इन संदिग्ध वस्तुओं में से केवल उन चीजों से काम चलाना चाहिए जो बिल्कुल जरूरी हैं। क्योंकि नियम के अनुसार, "आवश्यकता अपनी सीमा के अनुसार निर्धारित होती है," जब मजबूर किया जाता है, तो अवैध वस्तुओं को न्यूनतम आवश्यक सीमा तक ही खाया जा सकता है, इससे अधिक नहीं। केवल अत्यंत आवश्यकता होने पर ही एक मुसलमान निषिद्ध सड़ा हुआ मांस खा सकता है, और केवल तब तक जब तक कि वह भूख से न मर जाए; वे केवल इतना ही खा सकते हैं कि भूख से न मरें। इसके अलावा, कोई व्यक्ति कई भूखे, वंचित लोगों की उपस्थिति में पूरी भूख और खुशी से नहीं खा सकता है।

इतिहास से एक प्रसंग इस प्रकार है जो दर्शाता है कि मितव्ययिता ही सबसे बड़ी चीज है।
सम्मान और उत्कृष्टता का कारण:

ख़तम अत-तई,64 जो अपनी उदारता के लिए विश्व-विख्यात थे, ने एक बार एक बड़ा भोज दिया। अपने मेहमानों को बहुत-से उपहार देने के बाद, वे रेगिस्तान में घूमने के लिए निकले। उन्होंने एक गरीब बूढ़े व्यक्ति को देखा जो कंटीली झाड़ियों का बोझ उठाए हुए था जो उसकी त्वचा में चुभ रही थीं और खून बह रहा था। ख़तम ने उससे कहा, "ख़तम अत-तई एक बड़ा भोज दे रहे हैं और उपहार बाँट रहे हैं। वहाँ जाओ और तुम्हें अपने पाँच दिरहम के बोझ के बदले **पाँच सौ** दिरहम **मिलेंगे** ।" मितव्ययी बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं अपने सम्मान और गरिमा के लिए यह कंटीली बोझ उठा रहा हूँ; मैं ख़तम अत-तई के प्रति कृतज्ञ महसूस करना पसंद नहीं करता।" बाद में, उन्होंने ख़तम से पूछा, "क्या तुम्हें अपने से ज़्यादा उदार और सम्माननीय कोई मिला है?" उसने उत्तर दिया, "मुझे रेगिस्तान में एक बूढ़ा मितव्ययी व्यक्ति मिला, जो मुझसे ज़्यादा सम्माननीय, सम्माननीय और उदार था।"

पांचवां बिंदु

अपनी संपूर्ण उदारता के कारण, सर्वशक्तिमान ईश्वर एक गरीब व्यक्ति को अपनी कृपा से उसी तरह प्रसन्न करता है जैसे एक अमीर व्यक्ति को, और एक वंचित व्यक्ति को उसी तरह प्रसन्न करता है जैसे एक राजा को। वास्तव में, एक गरीब व्यक्ति को संतुष्टि और मितव्ययिता के कारण काली रोटी के एक सूखे टुकड़े से जो आनंद मिलता है, वह उस आनंद से कहीं अधिक है जो एक अमीर व्यक्ति को भूख की कमी के साथ बेहतरीन बकलवा खाने से मिलता है जो अधिक और बार-बार खाने से आता है।

यह वाकई आश्चर्यजनक है कि कुछ फिजूलखर्च, स्वार्थी लोग मितव्ययिता पर कंजूसी का आरोप लगाते हैं। भगवान न करे! मितव्ययिता गरिमा और सच्ची उदारता है। कंजूसी और कंजूसी, फिजूलखर्ची और स्वार्थी लोगों की स्पष्ट कुलीनता का छिपा हुआ, सच्चा पक्ष है। निम्नलिखित घटना, जो इस ग्रंथ के लिखे जाने के वर्ष (1935) में मेरे कमरे में हुई थी, इसकी पुष्टि करती है:

मेरे एक छात्र ने लगातार मुझसे लगभग तीन किलो शहद का उपहार स्वीकार करने के लिए कहा - जो मेरे उपहार स्वीकार न करने के सिद्धांत के विरुद्ध था।
मैंने अपने उसूलों के कारण खुद को बहुत माफ़ किया, लेकिन मैं उसे मना नहीं सका। मैंने अपने साथ रह रहे तीनों भाइयों से कहा कि वे इसे ले लें ताकि वे शाबान और रमज़ान के पवित्र महीनों में इसे खा सकें और इसे अपने साथ न रखें।

---

64 **ख़तम अत-तई इस्लाम के प्रकट होने से ठीक पहले** जाहिलियत के दौर में रहते थे । वह बहुत अमीर थे और कुछ अन्य गुणों के अलावा, बेहद उदार भी थे। उनके बेटे 'अदिय इब्न ख़तम पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के अंतिम वर्षों में मुसलमान बन गए। (ट्र.)

ताकि मीठा खाने के लिए कुछ न बचे और जो छात्र मीठा लाए उसे इनाम मिले। मैंने खुद भी एक किलो से ज़्यादा शहद लिया था।

वे तीनों भाई विनम्र थे और मितव्ययिता की सराहना करते थे। लेकिन उन्होंने परोपकारिता को प्राथमिकता दी, जो वास्तव में एक गुण है, और प्रत्येक ने दूसरों को देते हुए तीन रातों में लगभग तीन किलो शहद खा लिया, दूसरों को खुद से अधिक महत्व दिया। मुस्कुराते हुए मैंने कहा, "मैं आपको तीस से चालीस दिनों तक उस शहद का स्वाद चखाता, लेकिन आपने तीस दिनों को घटाकर तीन दिन कर दिया। मुझे आशा है कि आपको इसका आनंद मिला होगा!" लेकिन मैंने अपने एक किलो से अधिक शहद का किफ़ायती ढंग से उपयोग किया। शाबान और रमज़ान दोनों महीनों में मैंने इसे खाया, और, भगवान की प्रशंसा हो, मैंने उन भाइयों में से प्रत्येक को हर शाम उपवास खोलते समय एक बड़ा चम्मच शहद दिया। यह महत्वपूर्ण सवाब का साधन बन गया।

मेरे इस आचरण को देखने वालों को शायद यह कंजूसी लगी होगी, जबकि मेरे तीनों भाइयों के व्यवहार को उन्होंने उदारता समझा होगा।

लेकिन उस स्पष्ट कंजूसी के नीचे एक शानदार गरिमा और एक महान प्रचुरता और पुरस्कार छिपा हुआ है। अगर उन भाइयों ने अपने कार्य करने के तरीके को नहीं छोड़ा होता, जो स्पष्ट रूप से उदारता थी, तो इसका परिणाम कंजूसी से कहीं ज़्यादा शर्मनाक होता, जैसे दूसरों से भीख मांगना या अपने जीवनयापन के लिए दूसरों पर निर्भर रहना।

छठा बिंदु

मितव्ययिता और कंजूसी में बहुत अंतर है। जिस तरह विनम्रता या नम्रता एक प्रशंसनीय गुण है जो ऊपरी तौर पर आत्म-हीनता या अपमान जैसा दिखता है, लेकिन यह पूरी तरह से अलग है, और गरिमा एक और प्रशंसनीय गुण है जो जाहिर तौर पर अहंकार के समान है, लेकिन पूरी तरह से अलग है, मितव्ययिता, जो पैगंबरों के महान गुणों में से एक थी और वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान पर आधारित सार्वभौमिक व्यवस्था की नींव में से एक है-

डोम का कंजूसी से कोई लेना-देना नहीं है, जो नीचता, मतलबीपन, लालच और लोभ का मिश्रण है। आगे जो घटना है, वह इसकी पुष्टि करती है:

अब्दुल्लाह इब्न उमर, जो खलीफा उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के सबसे बड़े और सबसे प्रसिद्ध पुत्र थे, और जो पैगंबर के साथियों में सबसे प्रतिष्ठित विद्वानों में से एक थे और उनमें से सात प्रसिद्ध लोगों में से एक थे, जिन्हें अब्दुल्लाह कहा जाता था, एक बार बाजार में अर्थव्यवस्था और विश्वसनीयता के लिए केवल कुछ दिरहम की कीमत पर एक चीज को लेकर गरमागरम विवाद हो गया था , जो वाणिज्यिक जीवन के स्तंभों में से एक है।

साथी ने उसे देखा, और सोचा कि उस महान खलीफा के बेटे का व्यवहार, जिसने पुरानी दुनिया के आधे से अधिक भाग पर शासन किया था, एक अजीब तरह की कंजूसी है। वह अब्दुल्ला के पीछे-पीछे उसके घर गया। उसने देखा कि महान खलीफा ने अपने बेटे को अपने घर में ले लिया।

इमाम कुछ देर तक एक गरीब आदमी के पास रुके जो अपने दरवाजे पर खड़ा था।
फिर उसने देखा कि वह फिर से एक दूसरे गरीब आदमी के साथ बैठा है, जिससे उसकी मुलाक़ात उसके घर के दूसरे दरवाज़े पर हुई थी। अब उत्सुकतावश, साथी, जो दूर से देख रहा था, आगे बढ़ा और उन दोनों गरीब आदमियों से पूछा, “इमाम तुम्हारे साथ कुछ देर के लिए रुके थे। उन्होंने क्या किया?” उनमें से हर एक ने जवाब दिया, “उन्होंने मुझे एक सोने का सिक्का दिया।” साथी ने मन ही मन सोचा, “अल्लाह की महिमा हो! ऐसा कैसे हो सकता है कि उन्होंने बाज़ार में चंद दिरहम के लिए गरमागरम बहस की और बिना किसी को बताए पूरी खुशी और संतुष्टि में सैकड़ों दिरहम के सिक्के दे दिए ?”

वह चला गया और अब्दुल्लाह इब्न उमर से मिला, और कहा, "ऐ इमाम! मुझे समझाओ! बाज़ार में तुमने ऐसा किया, लेकिन अपने घर में तुमने ऐसा किया!" इमाम ने जवाब दिया, "बाज़ार में यह वही था जो अर्थव्यवस्था, अच्छी समझ और विश्वसनीयता और सच्चाई के संरक्षण के लिए आवश्यक है, जिस पर वाणिज्यिक जीवन आधारित है। यह कंजूसी नहीं थी। और मैंने अपने घर में जो कुछ किया वह करुणा, उदारता और भाईचारे के कर्तव्य के कारण था। पहला कंजूसी नहीं था, न ही दूसरा अतिशयोक्ति।"

इमाम अबू हनीफा के निम्नलिखित शब्द इस तथ्य की व्याख्या करते हैं: "(ज़रूरतमंदों या इसके योग्य लोगों के लिए) अच्छा करने में कोई अति नहीं हो सकती, क्योंकि बर्बादी में कोई अच्छाई नहीं है।"65

सातवां बिंदु

अपव्यय से लालच पैदा होता है और लालच के तीन परिणाम होते हैं:

पहला है असंतोष। असंतोष काम और प्रयास के प्रति उत्साह को नष्ट कर देता है, कृतज्ञता के बजाय शिकायतों का कारण बनता है, और आलस्य की ओर ले जाता है। यह असंतुष्ट व्यक्ति को आसान लाभ की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है, भले ही यह अवैध हो, बजाय वैध लाभ के। ऐसा व्यक्ति अपनी साख और यहां तक कि अपना सम्मान भी खो देता है।

लालच का दूसरा परिणाम निराशा और हानि है। लालची लोग
वे अपना लक्ष्य चूक जाते हैं, उपेक्षा का शिकार हो जाते हैं और सहायता से वंचित हो जाते हैं।

65 अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 1:262; अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अखम अल-कुरान, 7:110। (ट्र.)

वे इस कहावत की पुष्टि करते हैं, "लालची व्यक्ति निराशा और हानि के लिए अभिशप्त होता है।"66

जीवों की दुनिया में एक व्यापक नियम लालच और संतोष के परिणामों को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, पेड़ों की “प्राकृतिक” संतुष्टि उनके भोजन को जल्दी से उनके पास ले आती है और इस प्रकार संतोष का महान लाभ दर्शाता है। फिर भी, जानवर लालच में अपने भोजन का पीछा करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई का सामना करते हैं और हमेशा इसे पर्याप्त मात्रा में नहीं पा पाते हैं। यह दर्शाता है कि लालच कितना हानिकारक है।

असहाय बच्चों की संतुष्टि उनकी असमर्थता और कमजोरी से प्रकट होती है, जिसके कारण उन्हें अप्रत्याशित स्थान से दूध जैसा सुखद भोजन मिल जाता है, जबकि जंगली जानवर लालच से अपने भोजन की तलाश करते हैं, लेकिन आमतौर पर उन्हें वह अपर्याप्त और गंदा भोजन लगता है। यह भी हमारी थीसिस को स्पष्ट रूप से साबित करता है।

इसके अलावा, उनका संतुष्ट रवैया मोटी मछलियों के लिए पर्याप्त भोजन पाने का साधन है, जबकि लोमड़ी और बंदर जैसे अधिक बुद्धिमान जानवर लालच से अपने भोजन की तलाश करते हैं, लेकिन आमतौर पर दुबले-पतले होते हैं क्योंकि उन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता। यह फिर से दिखाता है कि किस हद तक लालच कठिनाई का कारण है और संतोष आसानी का कारण है।

जो लोग लालच में आकर ब्याज या छल-कपट करके जीविकोपार्जन करते हैं, उन्हें अपमान की कीमत पर अवैध और अपर्याप्त भोजन ही मिलता है, जबकि खानाबदोश, रेगिस्तानी लोग जो संतोष पसंद करते हैं, वे सम्मान के साथ और किसी भी तरह की कमी के बिना रहते हैं। यह भी हमारे दावे को साबित करता है।

अनेक विद्वान, वैज्ञानिक और साहित्यकार अपनी बुद्धि से उत्पन्न लोभ के कारण दरिद्रता और दरिद्रता से पीड़ित रहते हैं, जबकि अनेक मूर्ख, अयोग्य व्यक्ति अपने "स्वाभाविक" संतोष के कारण धनवान बन जाते हैं।67

---

66 अपव्यय के कारण उपभोक्ता बढ़ जाते हैं और उत्पादक कम हो जाते हैं। हर कोई सरकार के दरवाजे पर अपनी नज़रें गड़ाए रहता है। फिर उद्योग, शिल्पकला, व्यापार और कृषि, जिस पर सामाजिक जीवन निर्भर करता है, कम हो जाते हैं और गिर जाते हैं। परिणामस्वरूप, देश का पतन होता है और वह गरीब होता जाता है। (ट्र.)

67 उन्होंने प्रसिद्ध फ़ारसी शाह अनुशिरवन (खोसरो 1) (531-579 ई.) के बुद्धिमान मंत्री बोज़ोर्गमाहर से पूछा कि क्यों शासकों के दरवाज़ों पर विद्वान दिखाई देते थे और शासक विद्वानों के दरवाज़ों पर नहीं दिखाई देते, जबकि ज्ञान, शासन से श्रेष्ठ था।

मंत्री ने उत्तर दिया, "यह विद्वानों के ज्ञान और शासकों की अज्ञानता के कारण है।" अर्थात्, अपने अज्ञान के कारण शासक ज्ञान का मूल्य नहीं जानते; अन्यथा वे इसे प्राप्त करने के लिए विद्वानों के द्वार पर जाते। लेकिन विद्वानों के ज्ञान के कारण, वे धन और माल का मूल्य भी जानते हैं, और उन्हें शासकों के द्वार पर खोजते हैं। बोज़ोर्गमाहर ने एक मजाकिया उत्तर दिया, जिसमें विद्वानों के लालच का जिक्र था जो उनकी चतुराई से उत्पन्न होता है और उनकी गरीबी और अपमान का कारण बनता है।

हस्ताक्षर: हुस्रेव (सैद नूरसी के अग्रणी छात्रों में से एक)।

यह निर्णायक रूप से साबित करता है कि अवैध जीविका ज़रूरत और लाचारी के समानांतर आती है, न कि क्षमता या इच्छा शक्ति के साथ। क्योंकि बच्चा जितना बड़ा और मज़बूत होता जाता है, उसका जीविका उतना ही कम होता जाता है और उसे पाने में उतनी ही ज़्यादा मुश्किलें आती हैं। जैसा कि हदीस में कहा गया है, "संतुष्टि एक अटूट खजाना है,"68 संतोष अच्छे जीवन और जीवन की सहजता का खजाना है, जबकि लालच नुकसान और दुख की खान है।

लालच का तीसरा परिणाम यह है कि यह ईमानदारी को नुकसान पहुंचाता है और परलोक के लिए किए गए कर्मों को नुकसान पहुंचाता है। क्योंकि अगर कोई नेक, धार्मिक व्यक्ति लालची है, तो वह लोगों की स्वीकृति और सम्मान की तलाश करेगा। जो व्यक्ति लोगों की स्वीकृति और सम्मान के बारे में सोचता है, उसके पास पूरी ईमानदारी या इरादे की पवित्रता नहीं हो सकती। यह परिणाम बहुत ध्यान देने योग्य है।

संक्षेप में, अपव्यय से संतोष की कमी होती है। संतोष की कमी से निराशा पैदा होती है, जो काम के प्रति उत्साह को नष्ट कर देती है, आलस्य पैदा करती है और निरंतर शिकायतों के द्वार खोलती है।69 संतोष की कमी ईमानदारी को भी नुकसान पहुंचाती है और दिखावे और पाखंड के द्वार खोलती है। यह गरिमा को भी नष्ट करती है और व्यक्ति को भीख मांगने की ओर ले जाती है।

हालाँकि, मितव्ययिता संतोष की ओर ले जाती है। जैसा कि हदीस में कहा गया है, "जो संतुष्ट है उसे सम्मान मिलता है, और जो लालची है उसे अपमान सहना पड़ता है,"70
संतोष सम्मान लाता है, तथा काम और प्रयास को प्रोत्साहित करता है। यह उत्साह बढ़ाता है, तथा व्यक्ति को काम करने के लिए प्रेरित करता है। एक संतुष्ट व्यक्ति जो शाम को अपना वेतन प्राप्त करता है, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, अगले दिन फिर से उसी उत्साह के साथ काम करता है। लेकिन एक लालची व्यक्ति काम करना नहीं चाहता; यदि वह काम भी करता है, तो वह अनिच्छा से करता है।

मितव्ययिता से उत्पन्न संतोष कृतज्ञता का द्वार भी खोलता है और शिकायत का द्वार भी बंद कर देता है। संतुष्ट व्यक्ति जीवन भर कृतज्ञतापूर्ण रहता है। साथ ही, संतोष से उत्पन्न संतोष और स्वतंत्रता के कारण, वह दूसरों की स्वीकृति या सम्मान की चाह नहीं रखता। इसलिए, उसके धार्मिक कार्यों में ईमानदारी का द्वार खुल जाता है, जबकि दिखावे और पाखंड का द्वार बंद हो जाता है।

मैंने व्यापक स्तर पर अपव्यय के बड़े नुकसान को देखा है। यह इस प्रकार हुआ:

---

68 अत-तबारानी, अल-मजमा अल-अवसत, 7:84। (ट्र.)

69 जब भी तुम किसी फिजूलखर्च और असंतुष्ट व्यक्ति से मिलते हो, तो तुम शिकायतें सुनते हो। चाहे वे कितने भी अमीर क्यों न हों, उनकी जुबान हमेशा शिकायत करती है। लेकिन जब तुम सबसे गरीब लेकिन सबसे संतुष्ट व्यक्ति से मिलते हो, तो तुम सिर्फ धन्यवाद सुनते हो।

70 इब्न अल-अथिर, अन-निहाया फ़ी ग़रीब अल-हदीस, 4:114।

नौ साल पहले मैं एक धन्य शहर में गया था। चूँकि सर्दी का मौसम था, इसलिए मैं उसके धन के स्रोतों को नहीं देख पाया। शहर के दिवंगत मुफ़्ती71, भगवान उन पर दया करें, ने मुझसे कई बार कहा, "हमारे लोग गरीब हैं।" यह बात मुझे बहुत छू गई। मुझे कई सालों तक उन लोगों पर लगातार दया आती रही। आठ साल बाद गर्मियों में, मैं दूसरी बार उस शहर में गया। मैंने खेतों और अंगूर के बागों को देखा, और मुफ़्ती के शब्द याद आ गए। "अल्लाह महिमावान है!" मैंने कहा, क्योंकि खेतों और अंगूर के बागों की फ़सल शहर की ज़रूरतों से कहीं ज़्यादा थी। इसके लोगों को बहुत अमीर होना चाहिए था। मैं हैरान था।

तब मुझे समझ में आया कि वे गरीब क्यों थे, एक ऐसे तथ्य के माध्यम से जिसने मुझे कभी धोखा नहीं दिया और मुझे सच्चाई को समझने में मार्गदर्शन किया: प्रचुरता का ईश्वरीय उपहार अपव्यय के कारण गायब हो गया था। यही कारण था कि, धन के इतने प्रचुर स्रोतों के बावजूद, दिवंगत मुफ्ती ने लोगों की गरीबी के बारे में बात की।

वास्तव में, जिस प्रकार ज़कात देना और मितव्ययिता अनुभव के माध्यम से ईश्वरीय उपहारों की प्रचुरता का कारण सिद्ध हुई है, उसी प्रकार ऐसी असंख्य घटनाएं भी हैं जो दर्शाती हैं कि फिजूलखर्ची और ज़कात न देने से यह प्रचुरता गायब हो जाती है।

मुस्लिम संतों में प्लेटो तथा चिकित्सकों और मुस्लिम दार्शनिकों के गुरु, प्रसिद्ध प्रतिभाशाली अबू अली इब्न सिना ने, " खाओ और पियो, परन्तु फिजूलखर्ची मत करो!" (7:31) की चिकित्सा के दृष्टिकोण से इस प्रकार व्याख्या की है :

मैं चिकित्सा विज्ञान को दो पंक्तियों में संक्षेपित करता हूँ,
और शब्दों की सुंदरता उनकी संक्षिप्तता में निहित है:
खाना खाते समय और खाने के बाद थोड़ा-थोड़ा खाएं
एक निश्चित समय तक दोबारा कुछ न खाएं; स्वास्थ्य पाचन में निहित है।
शरीर के लिए इससे भारी कुछ भी सहन करना संभव नहीं है
पेट में एक के बाद एक भोजन डालने से बेहतर है।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

---

71 मुफ़्ती वह धार्मिक अधिकारी होता है जिसे शहरों में धार्मिक मामलों की व्याख्या करने का आधिकारिक तौर पर दायित्व दिया जाता है और धार्मिक मामलों का निर्देशन करें। (ट्र.)

72 अबू अली इब्न सिना (एविसेना) (980-1037): इस्लामी परंपरा के स्वर्ण युग के सबसे प्रमुख दार्शनिकों, गणितज्ञों और चिकित्सकों में से एक। पश्चिम में उन्हें उनके प्रसिद्ध चिकित्सा ग्रंथ अल-क़ानून "कैनन" के लिए "चिकित्सकों के राजकुमार" के रूप में भी जाना जाता है। लैटिन अनुवादों में, उनके कार्यों ने कई ईसाई दार्शनिकों को प्रभावित किया, जिनमें सबसे उल्लेखनीय थॉमस एक्विनास थे। (ट्र.)

बीसवीं चमक

बीसवीं चमक

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> हमने तुम्हारे पास सत्य के साथ यह किताब उतारी है, और उसमें कोई झूठ नहीं है। अतः तुम अल्लाह की बन्दगी करो, और उस पर सच्चे ईमान के साथ रहो, और दीन का पालन केवल उसी के लिए करो। और याद रखो कि सारे ईमान, इबादत और आज्ञाकारिता केवल अल्लाह के लिए है। (39:2-3)

> ज्ञानी को छोड़कर सभी नष्ट हो सकते हैं, ज्ञानी को छोड़कर सभी नष्ट हो सकते हैं, और जो लोग अभ्यास करते हैं वे भी नष्ट हो सकते हैं, सिवाय ईमानदार को छोड़कर, और ईमानदार लोग गंभीर खतरे में हैं।[73]

T कुरान की आयतें और ऊपर उद्धृत हदीसें बताती हैं कि इस्लाम में ईमानदारी कितनी आवश्यक है।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न

ऐसा क्यों है कि जहां ईश्वरीय मार्गदर्शन से बेखबर सांसारिक लोग, यहां तक कि गुमराह और पाखंडी लोग भी बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के सहयोग कर सकते हैं, वहीं धार्मिक लोग और विद्वान तथा सूफी तरीकों के अनुयायी प्रतिद्वंद्विता में भिन्न होते हैं।

सहमति स्वाभाविक रूप से सत्य के अनुयायियों के पक्ष में होनी चाहिए, और मतभेद और संघर्ष पाखंड और भिन्न-भिन्न मार्गों का अनुसरण करने के स्वाभाविक परिणाम हैं; ऐसा कैसे हुआ कि उन्होंने अपना स्थान बदल लिया?

---

[73] अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 2:415; अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 3:414। (ट्र.)

उत्तर

मैं इस दर्दनाक, दुखद और हृदय विदारक स्थिति के कई कारणों में से सात कारण बताऊँगा।

पहला

जिस तरह सत्य के लोगों की असहमति उनके सत्य के अभाव से नहीं आती, उसी तरह ईश्वरीय मार्गदर्शन से बेखबर सांसारिक लोगों की सहमति भी सत्य का अनुसरण करने पर आधारित नहीं है। बल्कि, आधुनिक सामाजिक जीवन श्रम के विभाजन की मांग करता है और इसने सामाजिक वर्गों, व्यावसायिक समूहों और राजनीतिक दलों के गठन का कारण बना है, जिनमें से प्रत्येक के अपने विशेष कर्तव्य, वेतन, प्रसिद्धि और लोकप्रिय सम्मान हैं।74 इसलिए, प्रतिद्वंद्विता, संघर्ष और मतभेद का लगभग कोई बिंदु नहीं है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनाए जाने वाला मार्ग चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, वे अपने हितों के लिए एक साथ आ सकते हैं।

हालाँकि, धार्मिक लोगों, खास तौर पर विद्वानों और सूफी तरीकों का पालन करने वालों के लिए, उनके कर्तव्य पूरे लोगों से संबंधित हैं, और उनके लिए कोई सांसारिक वेतन निर्धारित नहीं है, न ही उनके पास कोई निर्दिष्ट स्थान है, या प्रसिद्धि या लोकप्रिय स्वीकृति का हिस्सा है। कई लोग एक ही स्थिति की मांग कर सकते हैं, और एक ही भौतिक और अभौतिक पुरस्कार के लिए कई हाथ आगे बढ़ सकते हैं। इससे संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता हो सकती है, और कलह और असहमति सद्भाव और सहमति की जगह ले सकती है।

इस भयानक बीमारी का इलाज ईमानदारी है। यानी स्वार्थ के बजाय सच्चाई के प्रति लगाव को प्राथमिकता देना, स्वार्थी उद्देश्यों के बजाय हमेशा सच्चाई को थामे रखना, पैगम्बर के इस नियम का पालन करना कि मेरा वेतन केवल ईश्वर से ही मिलना चाहिए (10:72), लोगों से मिलने वाले किसी भी भौतिक या अभौतिक वेतन की परवाह न करना;75 और इस सिद्धांत के अनुसार कि जो कुछ भी ईश्वर के हाथ में है, वह ईश्वर के हाथ में है।

---

74 एक चेतावनी: लोगों का ध्यान और सम्मान मांगा नहीं जा सकता, बल्कि लोगों द्वारा खुद दिया जा सकता है। अगर यह दिया जाता है, तो इससे खुश नहीं होना चाहिए। अगर कोई इसे खुशी से स्वीकार करता है, तो वह ईमानदारी खो देता है और उसकी जगह दिखावा आ जाता है। अगर प्रसिद्धि और सार्वजनिक सम्मान की चाहत के बदले में लोगों का ध्यान और सम्मान मिलता है, तो यह इनाम नहीं बल्कि ईमानदारी की कमी के लिए निंदा और सजा है। ईमानदारी के लिए हानिकारक, जो सभी अच्छे कामों का जीवन है, प्रसिद्धि और लोगों का ध्यान केवल एक अस्थायी, हल्का सा आनंद है जो कब्र के दरवाजे तक रहता है, लेकिन कब्र में यातना का रूप ले लेता है। इसलिए, किसी को लोगों का ध्यान या सम्मान नहीं चाहिए, बल्कि इससे सावधान रहना चाहिए और इससे दूर भागना चाहिए। हे सभी लोगों, जो प्रसिद्धि के इच्छुक हैं और जो लोगों का ध्यान और सम्मान पाने की कोशिश करते हैं, सावधान हो जाओ!

75 हमें सहाबा की परोपकारिता या दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देने के गुण को एक सिद्धांत के रूप में अपनाना चाहिए, जिसकी क़ुरआन में प्रशंसा की गई है। हमें उपहार और दान प्राप्त करने में दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देनी चाहिए, और धार्मिक सेवा के लिए किसी सांसारिक प्रतिफल की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अगर ऐसा होता है तो हमें दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देनी चाहिए।

रसूल केवल संदेश पहुंचा रहे हैं (24: 54), यह जानते हुए कि यह अल्लाह ही है जो चाहेगा तो लोकप्रिय सम्मान और स्वीकृति प्रदान करेगा, और यह कि लोकप्रिय सम्मान और स्वीकृति प्राप्त करना धार्मिक कर्तव्यों में शामिल नहीं है, मनुष्य ईमानदारी प्राप्त कर सकता है। अन्यथा, ईमानदारी गायब हो जाएगी।

दूसरा कारण

गुमराह लोग अपनी दीनता के कारण सहमत होते हैं और सहयोग करते हैं, जबकि सही मार्ग पर चलने वाले लोग अपनी गरिमा के कारण असहमत होते हैं। यानी, चूँकि असावधान और गुमराह दुनियावी लोग सत्य पर आधारित नहीं होते, इसलिए वे कमज़ोर और अपमानित होते हैं। अपनी दीनता के कारण उन्हें शक्ति और ताकत की ज़रूरत होती है। यह ज़रूरत उन्हें दूसरों के साथ गठबंधन और मदद करने के लिए मज़बूती से पकड़ती है। उनका रास्ता चाहे कितना भी ग़लत क्यों न हो, वे सहमति बनाए रख सकते हैं। ऐसा लगता है कि वे गलत कामों में सत्य का पक्षपात, गुमराही में ईमानदारी, अधर्म में धार्मिक कट्टरता और पाखंड और मतभेद में एकता पा लेते हैं, जो उन्हें उनके उद्देश्य में सफल बनाता है। क्योंकि ईमानदारी कभी निष्फल नहीं होती, चाहे वह बुराई के लिए ही क्यों न हो। जो कुछ भी कोई ईमानदारी से मांगता है, भगवान उसे वह देता है।

लेकिन धार्मिक या सही मार्ग पर चलने वाले लोग, जिनमें विशेष रूप से विद्वान और सूफी मार्ग पर चलने वाले लोग शामिल हैं, सत्य पर आधारित होते हैं और उनमें से प्रत्येक अपने मार्ग पर केवल अपने रब को ही मानता है और उसकी सहायता पर निर्भर करता है। इसलिए वे सम्मानित होते हैं और जब उन्हें लगता है कि उन्हें ज़रूरत है, तो वे लोगों की बजाय अपने रब की ओर मदद के लिए मुड़ते हैं।

अपने मार्ग पर चलने वाले कुछ मतभेदों के कारण, उन्हें इन दूसरे मार्गों से मिलने वाली किसी भी मदद या अपने अनुयायियों के साथ गठबंधन की आवश्यकता महसूस नहीं होती। इसके अलावा, अगर उनमें अहंकार या आत्म-केंद्रितता की एक निश्चित डिग्री है, तो वे अपने मार्ग पर चलने वाले लोगों के साथ गठबंधन करने की कोशिश नहीं करते।

बिना मांगे दी गई ज़कात को ईश्वरीय कृपा समझना चाहिए और लोगों के प्रति किसी प्रकार का दायित्व अपने ऊपर नहीं डालना चाहिए। धार्मिक सेवा के बदले में कोई पारिश्रमिक नहीं मांगा जाना चाहिए और न ही प्राप्त किया जाना चाहिए। धार्मिक सेवा के लिए किसी सांसारिक प्रतिफल की मांग करना ईमानदारी को नष्ट कर देता है। समुदाय को धार्मिक सेवा करने वाले लोगों की देखभाल करनी चाहिए, जिन्हें ज़कात में से हिस्सा पाने का भी अधिकार है। लेकिन उन्हें इसकी मांग नहीं करनी चाहिए। अगर यह बिना मांगे दी जाती है, तो इसे की गई सेवा का प्रतिफल नहीं समझना चाहिए। बल्कि, व्यक्ति को पूर्ण संतोष के साथ कार्य करना चाहिए और उन लोगों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो उसी सेवा के योग्य हैं और जो अपने से अधिक प्रतिफल के हकदार हैं। इस प्रकार कार्य करके कि वे उन लोगों में शामिल हो सकें जिनकी क़ुरआन ने प्रशंसा की है, वास्तव में वे उन्हें अपने से अधिक प्राथमिकता देते हैं, भले ही उनका भाग्य गरीबी ही क्यों न हो (59: 9), व्यक्ति ईमानदारी प्राप्त कर सकता है।

76 "जो कोई खोजता है और ईमानदारी से प्रयास करता है, वह पाता है," यह एक सच्चा सिद्धांत है।

निष्ठाहीनता, खुद को सही और अपने विरोधियों को गलत मानने से सद्भाव और प्रेम की जगह मतभेद और प्रतिद्वंद्विता आ जाती है। इससे ईमानदारी खत्म हो जाती है और कर्तव्यों के पालन में पूरी तरह से असफलता मिलती है।

इस भयावह आपदा के गंभीर परिणामों के प्रति अंधेपन का इलाज

राज्य का सिद्धांत निम्नलिखित नौ सिद्धांतों में निहित है:

- हमें हमेशा सकारात्मक तरीके से काम करना चाहिए। यानी हमें अपने तरीके से प्यार से काम करना चाहिए और दूसरे सच्चे तरीकों के प्रति शत्रुता या आलोचना को अपने कर्तव्यों के पालन में बाधा बनने या अपने विचारों और कार्यों में भूमिका निभाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

- हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि, विशेष मार्ग चाहे जो भी हो-
इस्लाम के सामान्य क्षेत्र में, निश्चित रूप से इस्लाम में सहमति के अनेक बिन्दु और एकता के बंधन हैं जो प्रेम, भाईचारा और सौहार्द उत्पन्न करते हैं और इनकी आवश्यकता होती है।

- इस शर्त पर कि वे दूसरों के मार्ग की आलोचना नहीं करते, सच्चे मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह कहने का अधिकार है कि, "मेरा मार्ग सच्चा है और अधिक सुंदर है," लेकिन वे दूसरों के मार्ग की असत्यता या कुरूपता को यह कहकर नहीं दर्शा सकते कि, "केवल मेरा मार्ग ही सच्चा है," या "सुंदर मार्ग केवल मेरा है।" हमें आचरण का यह न्यायपूर्ण नियम अपनाना चाहिए।

- हमें यह विचार करना चाहिए कि सत्य के लोगों के साथ समझौता ईश्वरीय सहायता और सफलता को आकर्षित करता है, और धार्मिक जीवन में गरिमा का साधन है।

- यह समझते हुए कि सबसे शक्तिशाली व्यक्तिगत प्रतिरोध भी असफलता के अधीन है, और वास्तव में, गुमराह और गलत लोगों की सामूहिक शक्ति के हमलों के सामने असफल हो जाता है, अपनी एकजुटता के कारण, सत्य के लोगों को गुमराह करने वाली उस भयानक सामूहिक शक्ति के खिलाफ सही और न्याय को बनाए रखने के लिए समझौते के माध्यम से एक सामूहिक शक्ति का गठन करना चाहिए।

- हमें सत्य को असत्य के आक्रमण से बचाना होगा।
- हमें आत्म-केंद्रितता और अहंकार का त्याग करना चाहिए, और
- सम्मान और आत्मसम्मान की गलत अवधारणा को त्यागें, और
- प्रतिद्वंद्विता की व्यर्थ भावना त्यागें।

इन नौ सिद्धांतों का पालन करके हम ईमानदारी प्राप्त कर सकते हैं और अपने कर्तव्यों को पूरी तरह से पूरा कर सकते हैं।

तीसरा कारण

सत्य के मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच मतभेद उत्साह या आकांक्षा की कमी से उत्पन्न नहीं होता, न ही गुमराह लोगों की सहमति उच्च आदर्शों या उनके लिए महान प्रयासों से उत्पन्न होती है। बल्कि, सही मार्ग पर चलने वाले लोगों की असहमति उनके उच्च उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों के दुरुपयोग से उत्पन्न होती है, जबकि गुमराह लोगों की सहमति कमजोरी और नपुंसकता से उत्पन्न होती है जो उच्च उद्देश्य न रखने और उसके लिए प्रयास न करने से उत्पन्न होती है।

जो बात सही मार्ग पर चलने वालों को उनके उद्देश्य के लिए अपने प्रयासों का दुरुपयोग करने और इस प्रकार उनके बीच मतभेद और प्रतिद्वंद्विता की ओर ले जाती है, वह है शाश्वत पुरस्कार और परलोक से संबंधित कर्तव्यों की पूर्ति के लिए उनकी अत्यधिक आकांक्षा, जिसे शाश्वत जीवन के दृष्टिकोण से एक प्रशंसनीय गुण माना जाता है। "मैं यह पुरस्कार प्राप्त करूंगा; मुझे इन लोगों का मार्गदर्शन करने दो; उन्हें मेरी बात सुनने दो" के विचार से, वे अपने सच्चे भाइयों और बहनों के साथ प्रतिद्वंद्विता की स्थिति लेते हैं, जिन्हें वास्तव में उनके प्यार, सहायता और भाईचारे की आवश्यकता है। विद्वान लोगों का अहंकार, जो उनमें यह भावनाएँ पैदा करता है, "मेरे शिष्य शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए उनके पास क्यों जाते हैं? मेरे पास उनके जितने शिष्य क्यों नहीं हैं?", उन्हें लोगों की राय में स्थान लेने या पद के प्रति प्रेम की ओर प्रवृत्त करता है, जो एक बुरा गुण है, और उन्हें ईमानदारी खोने का कारण बनता है, जिससे उनके लिए दिखावे का द्वार खुल जाता है।

इस भूल, इस घाव, इस भयावह आध्यात्मिक बीमारी का इलाज यह है
इस प्रकार है:

ईश्वर की कृपा ईमानदारी से प्राप्त की जा सकती है, न कि अनुयायियों की अधिकता या बड़ी सफलता से। क्योंकि ईश्वर ही है जो ये सब देगा या नहीं देगा, और इसकी मांग नहीं की जा सकती। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि एक शब्द से ही व्यक्ति को मुक्ति मिल जाती है और ईश्वर की कृपा मिल जाती है।

---

77 एक हदीस हमें बताती है कि समय के अंत में, ईसा के धर्म के सच्चे अनुयायी कुरान के लोगों के साथ सहयोग करेंगे और अपने आम दुश्मनों, अर्थात् भौतिकवादियों और विधर्मियों का विरोध करने में सक्षम होंगे। इसलिए, इस समय, सत्य और धर्म के लोगों को न केवल धर्म में अपने भाइयों और बहनों के साथ, बल्कि ईसा के धर्म के सच्चे, ईमानदार अनुयायियों, विशेष रूप से उनके बीच के आध्यात्मिक नेताओं के साथ भी ईमानदारी से सहमत होने और सहयोग करने की आवश्यकता है, अपने आम दुश्मनों - धर्म के आक्रामक दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए अस्थायी रूप से आपस में विवादास्पद मामलों पर बहस करने से परहेज करना चाहिए।

अच्छा आनंद। इसलिए, मात्रा को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।
क्योंकि एक व्यक्ति का मार्गदर्शन कभी-कभी ईश्वर को हज़ारों लोगों के मार्गदर्शन जितना ही प्रिय हो सकता है। इसके अलावा, सच्चाई के प्रति ईमानदारी और लगाव के लिए यह ज़रूरी है कि हम मुसलमानों से ईमानदारी से यह इच्छा रखें कि वे किसी भी व्यक्ति या किसी भी स्कूल या मार्गदर्शन के मार्ग से लाभ उठाएँ। यह सोचना कि, “वे मुझसे शिक्षा लें और मुझे सवाब दिलाएँ!” शारीरिक आत्मा और अहंकार की चाल है।

ऐ इन्सान! हमेशा के लिए सवाब पाने के लालची और आख़िरत के मामले में अपने किए पर नाखुश! बहुत से पैगम्बर ऐसे हुए जिनके मुरीदों की तादाद सीमित थी लेकिन उन्हें नबूवत के पवित्र मिशन का सवाब बेशुमार मिला। इसलिए सच्ची कामयाबी बहुत बड़ी तादाद में मुरीदों का होना नहीं बल्कि खुदा की खुशामद हासिल करना है। तू खुद को क्या समझता है कि तू यह सोचकर कि "सब मेरी बात सुनें" अपना फ़र्ज़ भूल जाता है और खुदा की मर्ज़ी में दखल देता है? यह तो खुदा ही है जो चाहेगा कि लोग तुझे अपनाएँ और तेरे इर्द-गिर्द जमा हों। इसलिए अपना फ़र्ज़ समझ और खुदा की मर्ज़ी में दखल न दे।

इसके अलावा, यह केवल मनुष्य ही नहीं है जो सत्य का उपदेश सुनते हैं और उसका उपदेश देने वालों के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर के पास असंख्य अन्य चेतन प्राणी हैं जैसे देवदूत और अन्य आत्मिक प्राणी जो ब्रह्मांड के हर कोने में निवास करते हैं। इसलिए, यदि आप बहुत अधिक पुरस्कार चाहते हैं, तो अपने कार्यों का आधार ईमानदारी लें और केवल ईश्वर की कृपा प्राप्त करने पर विचार करें ताकि आपके मुंह से निकलने वाले धन्य शब्दों के सभी प्रतिबिंब आपकी ईमानदारी और इरादे की पवित्रता के माध्यम से जीवन प्राप्त कर सकें और असंख्य चेतन प्राणियों के कानों तक पहुँच सकें, उन्हें प्रकाशित कर सकें और आपको पुरस्कार दिला सकें। क्योंकि जब आप कहते हैं, "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं," तो ईश्वर की अनुमति से इस कथन के लाखों गुणा प्रतिबिंब हवा में अंकित हो जाते हैं। सर्वज्ञ लेखक, जो व्यर्थ या व्यर्थ कुछ भी नहीं करता है और बर्बाद नहीं करता है, ने उन धन्य शब्दों को सुनने के लिए कई कान बनाए हैं। यदि वे ईमानदारी और इरादे की पवित्रता के माध्यम से जीवन प्राप्त करते हैं, तो ये शब्द किसी स्वादिष्ट फल की तरह आत्मिक प्राणियों के कानों में प्रवेश करते हैं। अगर ईमानदारी न हो और अल्लाह की रजा उन्हें जीवन न दे तो उनकी बात नहीं सुनी जाती और उनका सवाब सिर्फ़ मुँह से की गई एक ही बात तक सीमित रह जाता है। इस तथ्य पर विशेष रूप से उन लोगों को विचार करना चाहिए जो कुरान को याद करते हैं लेकिन असहज महसूस करते हैं क्योंकि उनकी आवाज़ उतनी सुंदर नहीं है और बहुत कम लोग उन्हें सुनते हैं।

,

चौथा कारण

जिस तरह सही मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच विवादपूर्ण मतभेद उनकी अदूरदर्शिता और परिणामों को पहले से न देख पाने की वजह से नहीं होता, उसी तरह गुमराह लोगों के बीच पाप-ईमानदारी से सहमति उनकी दूरदर्शिता और परिणामों को ध्यान में रखने की क्षमता से नहीं होती। बल्कि, सत्य और सही मार्ग पर चलने वाले और शारीरिक आत्मा के अंधे आवेगों से बहकने के बावजूद सही मार्ग पर चलने वाले लोग हृदय और बुद्धि की दूरदर्शी प्रवृत्तियों का अनुसरण करते हैं, लेकिन वे ईमानदारी और सीधेपन को बनाए रखने में विफल रहते हैं और इस तरह मतभेद में पड़ जाते हैं।

जहाँ तक गुमराह लोगों की बात है, जो शारीरिक आत्मा और वासनाओं के प्रभाव में हैं और इच्छाओं और आवेगों से प्रेरित हैं जो परिणामों के प्रति अंधे हैं और भविष्य के एक टन सुख की तुलना में तत्काल सुख के एक औंस को पसंद करते हैं, वे तत्काल लाभ और तत्काल सुखों के लिए शक्तिशाली, ईमानदार गठबंधनों में एक साथ आ सकते हैं। वास्तव में, शारीरिक आत्मा के नीच और हृदयहीन उपासक तत्काल सांसारिक सुखों और लाभों के लिए ईमानदारी से एक साथ आ सकते हैं। सही मार्गदर्शन वाले लोगों से वास्तव में एक शक्तिशाली, निःस्वार्थ एकता बनाने के लिए सीधेपन और पूर्ण ईमानदारी को बनाए रखने की उम्मीद की जाती है क्योंकि वे उच्च बौद्धिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का पालन करते हैं और मानवीय पूर्णता और परलोक के फल को लक्ष्य बनाते हैं। लेकिन चूँकि वे अहंकार और आत्म-केंद्रितता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकते हैं या खुद को अति पर जाने से मुक्त नहीं कर सकते हैं, वे अपनी सहमति खो देते हैं, जो शक्ति का एक उत्कृष्ट स्रोत है, और उनकी ईमानदारी बिखर जाती है। इस प्रकार, परलोक से संबंधित उनके कर्तव्य को नुकसान पहुँचता है। इससे ईश्वर की अच्छी खुशी प्राप्त करना भी वास्तव में कठिन हो जाता है।

इस गंभीर बीमारी का इलाज है, ईश्वर के लिए प्रेम के सिद्धांत के मार्गदर्शन के साथ, सीधे मार्ग पर चलने वालों के साथ गर्व से चलना, उन्हें नेतृत्व सौंपना, अहंकार को त्यागना और यह सोचना कि जो सीधे मार्ग पर चल रहा है वह शायद हमसे बेहतर है, और इस प्रकार ईमानदारी हासिल करना, यह जानना कि ईमानदारी से किया गया एक औंस काम बिना ईमानदारी के किए गए ढेरों कामों से बेहतर है, और नेतृत्व की तुलना में अनुयायी बनना पसंद करना, जो जिम्मेदारी लाता है और इसलिए जोखिम भरा है। ऐसा करने से अहंकार, अतिवाद और असंवेदनशीलता की बीमारी से बचा जा सकता है, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया था; वह ईमानदारी हासिल करने और आख़िरत से संबंधित अपने कर्तव्यों को ठीक से पूरा करने में सक्षम हो जाता है।

पांचवा कारण

सही मार्ग पर चलने वाले लोगों का मतभेद उनकी कमज़ोरी से नहीं होता, न ही गुमराह लोगों का शक्तिशाली समझौता उनकी ताकत से होता है। बल्कि सही मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच सहमति की कमी उनकी ताकत की वजह से होती है, जो कि पूर्ण विश्वास द्वारा प्रदान किए गए सहारे के बिंदु से उत्पन्न होती है, जबकि असावधानी और गुमराह लोगों का समझौता उनकी कमज़ोरी और नपुंसकता की वजह से होता है, जो इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि उनके दिलों में कोई सहारा नहीं मिल पाता। कमज़ोर शक्तिशाली समूह बनाते हैं क्योंकि उन्हें गठबंधन और समझौते की सख्त ज़रूरत होती है। लेकिन चूँकि शक्तिशाली लोगों को इसकी ज़रूरत ज़्यादा महसूस नहीं होती, इसलिए उनकी एकता कमज़ोर होती है। शेरों को एकता की ज़रूरत नहीं होती, न ही लोमड़ियों को, और इसलिए वे अलग-अलग रहते हैं, जबकि जंगली बकरियाँ (और बैल) भेड़ियों और शेरों से खुद को बचाने के लिए झुंड बनाते हैं। इसका मतलब यह है कि कमज़ोर लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व मज़बूत होता है, जबकि शक्तिशाली लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व कमज़ोर होता है।78 क़ुरआन इस तथ्य का सूक्ष्म संकेत करता है। हालाँकि क्रिया के स्त्रीलिंग रूप का उपयोग महिलाओं के समुदाय के लिए किया जाना चाहिए था जहाँ स्त्रीत्व के दो उदाहरण हैं (महिलाएँ एक स्त्रीलिंग संज्ञा है, और बहुवचन विषय के रूप में अरबी में क्रिया के स्त्रीलिंग रूप की आवश्यकता होती है), यह क्रिया के पुल्लिंग रूप का उपयोग करता है, और शहर में महिलाओं ने कहा (12: 30)। जबकि रेगिस्तान में अरबों ने कहा (49: 14) पुरुषों के समुदाय के लिए क्रिया के स्त्रीलिंग रूप का उपयोग किया जाता है। यह प्रयोग नाजुक ढंग से यह दर्शाता है कि कमजोर, दुर्बल और कोमल महिलाओं का समुदाय एकजुटता के साथ ताकत, कठोरता और कठोरता प्राप्त करता है, और इस तरह एक प्रकार की मर्दानगी प्राप्त करता है। चूँकि यह क्रिया के पुल्लिंग रूप को उचित ठहराता है, इसलिए इस रूप का कुरानिक उपयोग सबसे उपयुक्त है। इसके विपरीत, चूँकि मजबूत पुरुष, विशेष रूप से रेगिस्तानी अरबों के लोग, अपनी व्यक्तिगत ताकत पर भरोसा करते हैं, इसलिए उनका समुदाय कमज़ोरी से ग्रस्त है, जिसमें सतर्कता और समर्थन की कमी की भावना ही जुड़ती है। यही कारण है कि उनका समुदाय एक प्रकार का स्त्रीत्व ग्रहण कर लेता है और क्रिया के स्त्रीलिंग रूप की आवश्यकता होती है; पुनः, कुरान ने इस रूप का सबसे उपयुक्त रूप से प्रयोग किया है।

[78] पश्चिम में सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली संगठनों में से एक अमेरिकी महिला अधिकार और स्वतंत्रता संगठन है, भले ही महिलाएँ मानव जाति के बीच निष्पक्ष और कमज़ोर लिंग का हिस्सा हैं। इसी तरह, राष्ट्रों में सबसे कमज़ोर और सबसे कम आबादी होने के बावजूद, अर्मेनियाई समितियाँ सबसे बड़ा त्याग और प्रतिबद्धता दिखाती हैं। ये दो तथ्य हमारी थीसिस के लिए एक और सबूत प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, ईश्वर के प्रति समर्पण और विश्वास के कारण, जो ईश्वर में विश्वास द्वारा प्रदान किया जाता है, और जो भरोसे का सबसे शक्तिशाली बिंदु है, सत्य के लोग दूसरों के सामने ज़रूरत का प्रदर्शन नहीं करते हैं या उनकी मदद नहीं मांगते हैं। यहां तक कि अगर वे कभी-कभी ज़रूरत महसूस करते हैं, तो उन्हें इस मदद को मज़बूती से थामे रखने की ज़रूरत नहीं होती है। लेकिन चूँकि सांसारिक लोग सांसारिक मामलों में मानवता के लिए समर्थन के सच्चे स्रोत की उपेक्षा करते हैं, इसलिए वे कमज़ोरी और नपुंसकता से पीड़ित होते हैं, और इसलिए बाहरी मदद और समर्थन की सख्त ज़रूरत में ईमानदारी से और यहां तक कि आत्म-बलिदान के साथ सहयोग करते हैं।

संक्षेप में, जो सत्यवादी लोग सहमति में निहित उचित शक्ति पर विचार नहीं करते या उसकी खोज नहीं करते, वे इस विचारहीनता के बुरे और हानिकारक परिणाम के रूप में मतभेद में पड़ जाते हैं। लेकिन जो गुमराह लोग झूठे रास्ते पर चलते हैं, वे अपनी कमजोरी के कारण सहमति की शक्ति को समझते हैं और सहमति प्राप्त करते हैं, और यह लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है।

सत्य के लोगों की इस बीमारी का इलाज यह है कि हम जीवन में मार्गदर्शन के रूप में ईश्वर की इस शक्तिशाली मनाही को अपनाएँ कि, एक दूसरे से विवाद न करो, अन्यथा तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी शक्ति और ऊर्जा तुमसे दूर हो जाएगी (8:46), और सामाजिक जीवन के लिए ईश्वर की यह बुद्धिमानी भरी आज्ञा कि, सदाचार और भलाई, और धर्म और धर्मपरायणता में एक दूसरे की सहायता करो (5:2)। हमें यह भी विचार करना चाहिए कि मतभेद इस्लाम के लिए कितना हानिकारक है, और यह कैसे सत्य के लोगों पर गुमराह लोगों की जीत में सहायक होता है, और अपनी जन्मजात शक्तिहीनता के प्रति जागरूकता के साथ सच्चाई के लोगों के कारवां में ईमानदारी और आत्म-बलिदान के साथ शामिल होना चाहिए। साथ ही, स्वार्थीपन को त्यागकर और व्यक्तिगत स्वार्थों को भूलकर, हमें दिखावे और दिखावे से मुक्त होना चाहिए, और इस प्रकार ईमानदारी प्राप्त करनी चाहिए।

छठा कारण

सत्य के लोगों की असहमति साहस की कमी, उच्च लक्ष्य की आकांक्षा की कमी, या उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास की कमी से उत्पन्न नहीं होती है।
न ही सांसारिक मामलों में दुनियादारी और गुमराही के ग़ाफ़िल लोगों का सच्चा सहयोग उनके साहस से, या किसी उच्च आदर्श के होने से, या उसके साकार होने के प्रयास से पैदा होता है। बल्कि, चूँकि सत्यवादी लोग ज़्यादातर आख़िरत से जुड़े लाभों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसलिए वे अपने साहस, आकांक्षाओं और प्रयासों को कई महत्वपूर्ण मामलों में बाँट देते हैं। चूँकि वे अपना समय भी समर्पित नहीं करते,

जो मानवता की सबसे बुनियादी पूंजी है, एक ही चिंता के लिए, दूसरों के साथ उनका सहयोग मजबूत नहीं हो सकता। कर्तव्यों के व्यापक क्षेत्र में उनके पास कई चिंताएँ हैं।

जहाँ तक असावधानी रखने वाले सांसारिक लोगों का प्रश्न है, चूँकि उनका एकमात्र सरोकार सांसारिक जीवन से है, इसलिए वे अपनी सारी शक्ति सांसारिक जीवन से सम्बन्धित मामलों में लगाते हैं और अपनी सारी भावनाओं और क्षमताओं से उन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। वे जो कुछ भी उनके सांसारिक सरोकारों में सहायक हो सकता है, उसे दृढ़तापूर्वक पकड़ लेते हैं। एक पागल हीरा व्यापारी की तरह जो कुछ पैसे के काँच के लिए सैकड़ों डॉलर देता है, वे अपना सारा समय, जो कि हर किसी की सबसे बड़ी पूँजी है, उन मामलों में खर्च करते हैं, जो वास्तव में पाँच पैसे के बराबर हैं और जिनके लिए सत्यवादी लोग अधिक से अधिक दस पैसे दे सकते हैं। लेकिन चूँकि इस प्रकार की आसक्ति और एकाग्रता, चाहे वह मिथ्यात्व के लिए ही क्यों न हो, ईमानदारी का प्रभाव डालती है, इसलिए सांसारिक लोग उन मामलों में सफल होते हैं और सत्यवादियों पर विजय प्राप्त करते हैं। सांसारिक लोगों की यह विजय सत्यवादियों को अपमान, अधीनता, दिखावा और दिखावे की ओर ले जाती है, जिससे वे ईमानदारी खो देते हैं। वे संसार के कुछ नीच, स्वार्थी और कायर लोगों की चापलूसी करने और उनकी चाटुकारिता करने के लिए विवश महसूस करते हैं।

हे सत्य के लोगों! हे ईश्वरीय जीवन-पद्धति और सच्चे आध्यात्मिक पथ के सत्य-प्रेमी अनुयायियों! एक-दूसरे की कमियों को नज़रअंदाज़ करके और एक-दूसरे की कमियों से आँखें मूंदकर इस कलह और मतभेद की भयंकर बीमारी का मुक़ाबला करो। पवित्र कसौटी की आयत में वर्णित अच्छे तरीके से काम करो, जब वे किसी व्यर्थ और बेकार चीज़ के पास से गुज़रते हैं, तो वे उससे गरिमा के साथ गुज़रते हैं (25: 72)। जब तुम बाहरी हमलों के अधीन हो तब आंतरिक विवादों को त्याग दो और सत्य के लोगों को पतन और अपमान से बचाने को अपना प्राथमिक, सबसे ज़रूरी और महत्वपूर्ण कर्तव्य मानो जो तुम्हारे परलोक से संबंधित है, आपस में भाईचारा, प्रेम और सहयोग का निर्माण करो, जिसका सैकड़ों क़ुरआन की आयतों और पैगंबरी परंपराओं में ज़ोर देकर आदेश दिया गया है। अपनी पूरी ताकत से अपने साथियों और धर्म में भाइयों और बहनों के साथ सांसारिक लोगों के बीच मौजूद एकता से कहीं ज़्यादा मज़बूत एकता स्थापित करो और अपने बीच किसी भी तरह की असहमति या कलह की अनुमति मत दो! कभी भी यह मत सोचिए कि, "अपना कीमती समय ऐसे तुच्छ मामलों पर खर्च करने के बजाय, मैं इसे धार्मिक पाठ, प्रार्थना और चिंतन जैसे मूल्यवान कामों पर खर्च करना बेहतर समझूंगा," जिससे एकता कमज़ोर हो जाएगी! क्योंकि जिस चीज़ को आप महत्वहीन मानते हैं, वह इस आध्यात्मिक जिहाद के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है । ठीक उसी तरह जैसे कि कुछ महत्वपूर्ण और विशेष परिस्थितियों में एक घंटे की निगरानी एक व्यक्ति द्वारा की जाती है ।

निजी तौर पर किया गया काम पूरे साल की पूजा के बराबर हो सकता है, सत्य के लोगों की हार के इस समय में धर्म से संबंधित एक छोटी सी बात पर बिताया गया एक मूल्यवान दिन एक हजार दिनों के बराबर हो सकता है। चूँकि जो कुछ भी किया जाता है वह भगवान के लिए होता है, इसलिए उसे छोटा या बड़ा, मूल्यवान या मूल्यहीन नहीं माना जाता है। ईमानदारी से भगवान के लिए खर्च किया गया एक अणु एक तारे की तरह हो जाता है। इसके अलावा, जो महत्वपूर्ण है वह नियोजित साधनों की प्रकृति नहीं है, बल्कि उसका परिणाम है। जब तक इच्छित परिणाम ईश्वर की अच्छी इच्छा है, और जो कुछ भी किया जाता है वह धार्मिक रूप से वैध है और ईमानदारी से किया जाता है, यानी पूरी तरह से भगवान के लिए, वह छोटा नहीं है, बल्कि महान है।

सातवां कारण

हक़ वालों के बीच मतभेद और प्रतिद्वंद्विता दुनिया के प्रति ईर्ष्या या लालच से नहीं आती है, न ही दुनियावी और ग़ाफ़िल लोगों की सहमति उदारता या कुलीनता से आती है। बल्कि हक़ वाले उदारता और प्रयास के लिए जोश को बनाए रखने में असमर्थ हैं, जो कि सत्य और सत्य के मार्ग पर भलाई करने के लिए प्रतिस्पर्धा के प्रशंसनीय रूप से उत्पन्न होते हैं। इस कारण से और सत्य के लिए काम करने के लिए अयोग्य कुछ लोगों की घुसपैठ के कारण, वे उस प्रशंसनीय प्रतिस्पर्धा के रूप का एक हद तक दुरुपयोग करते हैं, और प्रतिद्वंद्विता और मतभेद में पड़ जाते हैं, इस प्रकार खुद को और मुसलमानों की जमात को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं।

जहाँ तक दुनियादारी और असावधानी के लोगों का प्रश्न है, वे अपने लाभ से वंचित न हो जाएँ और अपने लाभ के लिए जिन नेताओं और साथियों की पूजा करते हैं, उन्हें नाराज न करें, इसलिए वे अपनी दीनता, कायरता और उसके लिए किसी महान लक्ष्य या प्रयास के अभाव में अपने साथियों के साथ हर कीमत पर एकता बनाते हैं, चाहे वे कितने ही पतित, विश्वासघाती और हानिकारक क्यों न हों, और अपने साथियों के साथ ईमानदारी से उस तरह से जुड़ते हैं, जो उनके सामान्य हित के लिए हो। वे अपनी ईमानदारी के कारण इस सहयोग से लाभ उठाते हैं।

इसलिए, हे विखंडित, विपत्तिग्रस्त सत्य के लोगों! चूँकि इस विपत्ति के समय में तुम ईमानदारी खो चुके हो और ईश्वर की कृपा को अपना एकमात्र लक्ष्य बनाने में असमर्थ हो, इसलिए तुमने सभी सत्य के लोगों को वर्तमान अपमान और पराजय का सामना करना पड़ा है। धर्म और परलोक से संबंधित मामलों में कोई प्रतिद्वंद्विता या ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए, और वास्तव में सत्य के दृष्टिकोण से दोनों में से कोई भी नहीं हो सकती है। ईर्ष्या और उसके परिणामस्वरूप होने वाली प्रतिद्वंद्विता के लिए

संघर्ष, विवाद और प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न होते हैं जो एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए कई हाथों के फैलने या एक ही स्थान पर कई आँखों के टिके रहने, या एक ही भोजन की मांग करने वाले कई पेटों के कारण होते हैं।

चूँकि दुनिया में बहुत से लोग एक ही चीज़ की चाहत रखते हैं और उसके लिए प्रयास करते हैं, और दुनिया इतनी संकीर्ण और अस्थायी है कि वह मानवता की असीमित इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकती, इसलिए लोग प्रतिद्वंद्विता में पड़ जाते हैं। हालाँकि, आख़िरत में प्रतिद्वंद्विता का कोई कारण नहीं है, जहाँ हर व्यक्ति को एक ऐसा बाग़ दिया जाएगा जिसमें वह पाँच सौ साल तक चल सकता है, जिसमें सत्तर हज़ार महल होंगे, और जहाँ जन्नत के हर व्यक्ति को अपने हिस्से से पूरी तरह संतुष्ट किया जाएगा।79

इसलिए परलोक में शाश्वत सुख पाने के लिए किए गए अच्छे कर्मों को लेकर कोई प्रतिद्वंद्विता या ईर्ष्या नहीं हो सकती। ईर्ष्या करने वाला या तो दिखावटी व्यक्ति है, जो अच्छे कर्मों की पूर्ति में सांसारिक परिणाम चाहता है, या फिर अज्ञानी भक्त है जो अच्छे कर्म करने का कारण नहीं जानता, या यह नहीं समझता कि अच्छे कर्मों का सार या भावना ईमानदारी है। इस प्रतिद्वंद्विता के कारण भगवान के प्यारे बंदों के प्रति किसी प्रकार की दुश्मनी महसूस करके ऐसा व्यक्ति ऐसी स्थिति बना लेता है जिससे वह इनकार कर देता है।

---

79 एक महत्वपूर्ण प्रश्न: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रिवायत है कि जन्नत में एक व्यक्ति को एक बाग़ दिया जाएगा जिसमें वह पाँच सौ साल तक चल सकता है (अत-तिर्मिज़ी, “जन्नत” 8)। हम इसे किस तरह से समझा सकते हैं ताकि लोग इसे समझ सकें?

उत्तर: इस दुनिया में हर किसी के पास एक निजी, अस्थायी दुनिया है जो खुद दुनिया जितनी ही विशाल है। हर किसी का जीवन उनकी निजी दुनिया का आधार है, जिससे वे अपनी सभी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों और क्षमताओं से लाभ उठाते हैं। हर व्यक्ति कह सकता है, "सूर्य मेरा दीपक है, और तारे मेरी मोमबत्तियाँ हैं।" अन्य सभी प्राणी उन्हें निजी तौर पर इनका स्वामित्व करने और उनसे लाभ उठाने से नहीं रोकते हैं; बल्कि, वे हर किसी की निजी दुनिया की सुंदरता और आराम को बढ़ाते हैं। इसी तरह, निजी बगीचे के अलावा जिसमें हज़ारों महल और हूरियाँ हैं, जो दुनिया की तुलना में अतुलनीय रूप से समृद्ध और अधिक सुंदर हैं, हर आस्तिक के पास पाँच सौ साल की सैर जितना बड़ा लाभ का क्षेत्र होगा। अपनी इंद्रियों के माध्यम से, जो प्रत्येक की अधिकतम सीमा तक विकसित होंगी, उन्हें उतना ही आनंद मिलेगा जितना स्वर्ग और अनंत काल उन्हें अनुमति देगा। दूसरों का आनंद स्वर्ग के सामान्य आनंद में दूसरे के हिस्से को नुकसान नहीं पहुँचाएगा; बल्कि यह इसमें वृद्धि करेगा, जिससे उसका निजी बगीचा और स्वर्ग में हिस्सा अधिक आनंददायक हो जाएगा। इस दुनिया में एक व्यक्ति को एक ऐसे बगीचे से लाभ होता है जो एक घंटे में घूमने के लिए पर्याप्त बड़ा है, एक भ्रमण क्षेत्र से जिसमें एक दिन के लिए पैदल चला जा सकता है, या ग्रामीण इलाकों से जिसमें एक महीने की पैदल यात्रा के लिए पर्याप्त जगह है, या एक महाद्वीप से जिसे पार करने में एक साल लग सकता है, उनके मुंह, कान, आंख, स्वाद की भावना और अन्य सभी इंद्रियों और क्षमताओं से। इसी तरह, अनंत काल के क्षेत्र में, एक व्यक्ति की गंध और स्वाद की इंद्रियाँ, जो इस दुनिया में केवल एक घंटे की पैदल दूरी के बगीचे से लाभ उठा सकती हैं, स्वर्ग में एक साल की पैदल दूरी के बगीचे से लाभ उठाएँगी। दृष्टि और श्रवण की क्षमताएँ, जो इस दुनिया में सीमित लाभ दे सकती हैं, स्वर्ग में एक ऐसे बगीचे से लाभ उठाएँगी जो पाँच सौ वर्षों तक चलने के लिए पर्याप्त विशाल है। प्रत्येक आस्तिक का आनंद दुनिया में अर्जित पुरस्कारों के माध्यम से उनकी इंद्रियों, भावनाओं और क्षमताओं के विकास की डिग्री के अनुपात में होगा।

ईश्वर की दया की असीम विशालता। आगे एक घटना है जो इस वास्तविकता की पुष्टि करती है:

हमारे एक भूतपूर्व साथी के मन में एक व्यक्ति के प्रति शत्रुता थी। जब हमारे साथी की उपस्थिति में उस व्यक्ति की उसके अच्छे कामों और यहां तक कि संतत्व के लिए प्रशंसा की गई, तो उसने ईर्ष्या या बेचैनी का कोई लक्षण नहीं दिखाया। लेकिन जब दूसरे ने उससे कहा, "तुम्हारा वह शत्रु साहसी और बलवान है," तो हमने देखा कि उसके अंदर ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता की तीव्र भावना भड़क उठी। हमने उससे कहा:

> संतत्व और धर्म शाश्वत जीवन के लिए हीरे के समान मूल्यवान हैं, फिर भी उनके कारण आपको अपने शत्रु से कोई ईर्ष्या नहीं हुई। लेकिन सांसारिक शक्ति बैलों में और साहस जंगली भेड़ियों में पाया जाता है, और संतत्व और धर्म के साथ तुलना करने पर वे हीरे की तुलना में कांच के टुकड़े के समान हैं।

आदमी ने उत्तर दिया:

> हम दोनों ने इस दुनिया में एक ही चीज़, एक ही पद पर अपनी नज़रें गड़ा दी हैं। जिस कदम से हम उस तक पहुँचेंगे, वह ताकत और हिम्मत जैसी चीज़ें हैं। इसलिए मैं उससे ईर्ष्या करता था। लेकिन आख़िरत में अनगिनत पद हैं। हालाँकि वह यहाँ मेरा दुश्मन है, लेकिन वहाँ वह मेरा सच्चा, प्यारा भाई हो सकता है।

हे सत्य के लोगों और आध्यात्मिक पथ के अनुयायियों! सत्य की सेवा करना एक बहुत बड़े भारी खजाने को ढोने और सुरक्षित रखने के समान है। इसे ढोने वालों की सहायता के लिए जितने अधिक शक्तिशाली हाथ दौड़ेंगे, वे उतने ही अधिक प्रसन्न और प्रसन्न होंगे। ईर्ष्या करने के बजाय, हमें इन सच्चे भाइयों और आत्म-त्यागी सहायकों की श्रेष्ठ शक्ति, प्रभावशीलता और सहायता की गर्व और प्रेमपूर्वक सराहना करनी चाहिए जो उनकी सहायता करने के लिए आगे आते हैं; फिर हम उनके साथ प्रतिद्वंद्विता क्यों करते हैं, जिससे हम ईमानदारी खो देते हैं? सांसारिक, गुमराह लोगों की नज़र में, जो स्वयं आपसे सौ गुना कम हैं, क्योंकि उनका रास्ता आपसे कम है, आप अपने आप को धर्म का दुरुपयोग करके दुनिया कमाने, अपनी आजीविका के लिए सत्य के ज्ञान का शोषण करने और सांसारिक हितों के लिए महत्वाकांक्षी और लालची प्रतिस्पर्धा करने जैसे भयानक आरोपों के लिए क्यों उजागर करते हैं?

इस रोग का एकमात्र उपचार है अपनी आत्मा की निन्दा करना तथा अपनी आत्मा के विरुद्ध दूसरों का पक्ष लेना। शास्त्रार्थ कला में विद्वानों द्वारा अपनाए गए तथा स्थापित निम्नलिखित सिद्धांत का भी पालन करना चाहिए:

"जो व्यक्ति किसी विषय पर बहस करते समय यह चाहता है कि उसका अपना सिद्धांत सत्य हो और वह इस बात से खुश हो कि उसका तर्क सही है और विरोधी पक्ष गलत और भ्रांत है, वह अन्यायी है।" ऐसा व्यक्ति भी नुकसान में रहता है, क्योंकि जब वह बहस जीतता है, तो वह कुछ नया नहीं सीखता; बल्कि, उसका संभावित अभिमान उसे और नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन अगर सत्य विरोधी पक्ष के पक्ष में निकलता है, तो वह कुछ ऐसा सीखेगा जो पहले उसे नहीं पता था और इस तरह वह कुछ लाभदायक हासिल कर लेगा, साथ ही संभावित अभिमान से भी बच जाएगा। इसलिए, एक निष्पक्ष, सत्य-प्रेमी व्यक्ति सत्य के लिए अपनी शारीरिक आत्मा के अभिमान को चोट पहुँचाता है। जब वह अपने विरोधी के हाथ में सत्य देखता है, तो वह स्वेच्छा से उसे स्वीकार करता है और उसका समर्थन करता है।

यदि धर्म, सत्य और ज्ञान के मानने वाले तथा आध्यात्मिक मार्ग के अनुयायी इस सिद्धांत को अपना लें, तो वे ईमानदारी प्राप्त करेंगे, परलोक से संबंधित अपने कर्तव्यों में सफल होंगे तथा वर्तमान दुखद पतन और दुर्दशा से भी ईश्वर की दया से बच जाएंगे।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

इक्कीसवीं चमक

इक्कीसवीं चमक

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर

इस पुस्तक को कम से कम पखवाड़े में एक बार अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर की उपस्थिति में पूर्ण भक्ति और आज्ञाकारिता के साथ खड़े रहो (2:238)।
आपस में झगड़ो मत, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी ताकत और ताकत तुमसे दूर हो जाएगी (8:46)। वह व्यक्ति वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे पवित्रता से उगाया है। और वह वास्तव में खो गया है जिसने इसे भ्रष्ट कर दिया है (91: 9-10)। मेरी आयतों को तुच्छ कीमत पर मत बेचो (2:41)।

O मेरे आख़िरत के भाइयों और बहनों और क़ुरआन की सेवा में साथियों! तुम्हें मालूम होना चाहिए-वास्तव में तुम्हें मालूम है-

इस दुनिया में, और खास तौर पर परलोक के लिए की जाने वाली सेवाओं में, सबसे महत्वपूर्ण आधार, सबसे बड़ी शक्ति, सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ, सबसे मजबूत भरोसा, सच्चाई तक पहुंचने का सबसे छोटा रास्ता, सबसे जवाबदेह प्रार्थना, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सबसे धन्य और अद्भुत साधन, सबसे श्रेष्ठ गुण और पूजा का सबसे शुद्ध रूप ईमानदारी है, या केवल ईश्वर के लिए कुछ अच्छा या कोई धार्मिक कार्य करना। चूँकि ईमानदारी में कई तरह की शक्ति और प्रकाश होते हैं, जैसे कि ऊपर बताए गए हैं, और चूँकि इस भयानक समय में, भयंकर शत्रुता के सामने, गंभीर दबाव में, और धर्म में जबरदस्त विधर्मी नवाचारों और कई तरह की गुमराही के बीच, ईश्वरीय कृपा से हमारे कंधों पर विश्वास और कुरान की सेवा करने का एक बहुत ही भारी, महत्वपूर्ण, व्यापक और पवित्र कर्तव्य डाला गया है, भले ही हम शक्तिहीन हों-

ईमानदारी, वंचना और संख्या में कम होने के कारण, हम निश्चित रूप से अपनी पूरी ताकत से ईमानदारी हासिल करने के लिए हर किसी से अधिक मजबूर हैं और हमें इसे अपने अंदर विकसित करने की सख्त जरूरत है। अन्यथा, हमारी पवित्र सेवा में हमारी उपलब्धियां आंशिक रूप से खो जाएंगी और हम इसे जारी रखने में सक्षम नहीं होंगे; हम जिम्मेदार ठहराए जाएंगे। इसके अलावा, हम ईश्वरीय निषेध में निहित गंभीर खतरे का लक्ष्य बन जाएंगे, मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य पर न बेचें (2: 41), और शाश्वत खुशी के नुकसान के लिए ईमानदारी को नुकसान पहुंचाकर और कुछ हानिकारक, निराशाजनक, अहंकारी, प्रतिकारक, पाखंडी आधार भावनाओं या तुच्छ लाभों के लिए, हम इस सेवा में अपने भाइयों और बहनों के अधिकारों का उल्लंघन करेंगे और कुरान की सेवा के कर्तव्य का उल्लंघन करेंगे, विश्वास की सच्चाइयों का अपमान करेंगे।

हे मेरे भाईयों और बहनों! महान अच्छे कामों के सामने बहुत सी हानिकारक बाधाएँ आती हैं। शैतान उन लोगों के खिलाफ़ बहुत ज़्यादा कोशिश करता है जो ये काम करने की कोशिश करते हैं। हमें इन बाधाओं और शैतानों के खिलाफ़ ईमानदारी की ताकत पर भरोसा करना चाहिए। हमें ईमानदारी को नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों से उसी तरह बचना चाहिए जैसे हम साँपों और बिच्छुओं से दूर रहते हैं। जैसा कि पैगंबर जोसेफ ने कहा था, "फिर भी मैं खुद को त्रुटि से मुक्त नहीं कहता, क्योंकि निश्चित रूप से मानव शारीरिक आत्मा हमेशा बुराई का आदेश देती है, सिवाय इसके कि मेरा भगवान दया करे" (12: 53) शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। अहंकार या बुराई का आदेश देने वाली आत्मा को अपने आप को धोखा न दें! ईमानदारी से पहले बाधाओं को दूर करने के लिए ताकि हम ईमानदारी हासिल करें और उसे बनाए रखें, निम्नलिखित सिद्धांतों को आपके लिए एक मार्गदर्शक होने दें:

आपका पहला सिद्धांत

तुम्हें अपने कामों में खुदा की रजा का पीछा करना चाहिए। अगर वह तुमसे खुश है तो चाहे पूरी दुनिया नाराज़ हो जाए, इसका कोई मतलब नहीं है। अगर वह राजी है तो इसका कोई मतलब नहीं है, भले ही दूसरे तुम्हारे विचारों और कामों को नकार दें। जब वह खुश होता है और राजी होता है तो भले ही तुम दूसरों की रजा न भी चाहो, अगर वह चाहे और उसकी बुद्धि इसकी मांग करे तो वह दूसरों को भी राजी कर देगा और तुमसे खुश कर देगा। इस कारण से, कुरान और ईमान की सेवा में खुदा की रजा का लक्ष्य रखना नितांत आवश्यक है।

आपका दूसरा सिद्धांत

आपको अपने भाई-बहनों की परमेश्वर की सेवा में आलोचना नहीं करनी चाहिए।
कुरान या ईमान की तारीफ़ न करो और अपनी हवस का प्रदर्शन करके उनकी ईर्ष्या न भड़काओ।

गुण। क्योंकि मनुष्य के हाथ एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करते, न उनकी आंखें एक दूसरे की निन्दा करती हैं, न उनकी जीभ उनके कानों का विरोध करती है, न उनका हृदय आत्मा की गलतियाँ देखता है। बल्कि, उनके अंग एक दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं, एक दूसरे की कमियों को छिपाते हैं, अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में एक दूसरे की सहायता करते हैं, और अपने कर्तव्यों को पूरा करने में एक दूसरे की मदद करते हैं।

अन्यथा, उस व्यक्ति के शरीर का जीवन समाप्त हो जाएगा, उसकी आत्मा चली जाएगी, और उसका शरीर सड़ जाएगा।

इसी तरह, किसी कारखाने के सभी घटक एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करते, न ही वे एक दूसरे पर हावी होने या श्रेष्ठता हासिल करने का प्रयास करते हैं। न ही वे एक दूसरे की कमियाँ निकालते हैं या एक दूसरे की आलोचना करते हैं, जिससे एक दूसरे का काम के प्रति उत्साह खत्म हो जाता है या दूसरों को आलस्य में धकेल दिया जाता है।

बल्कि वे एक दूसरे की मदद करते हैं ताकि वे एक साझा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी पूरी क्षमता से काम कर सकें और सच्ची एकजुटता और एकता के साथ अपने अस्तित्व के उद्देश्य की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ सकें। अगर जरा सा भी अतिक्रमण या वर्चस्व हस्तक्षेप करता है, तो यह कारखाने के कामकाज में गड़बड़ी पैदा करेगा, जिससे यह बेकार हो जाएगा। नतीजतन, कारखाने का मालिक इसे पूरी तरह से ध्वस्त कर देगा।

और इसलिए, ऐ रिसाले-ए-नूर के छात्रो जो कुरान की सेवा करते हो! हम एक सामूहिक व्यक्तित्व के सदस्य हैं जो "पूर्ण या सार्वभौमिक मानव" की उपाधि के योग्य हैं। हम एक कारखाने के घटकों की तरह हैं जो शाश्वत जीवन में शाश्वत खुशी के लिए काम कर रहे हैं। हम एक धन्य जहाज के चालक दल भी हैं जिसका लक्ष्य मुहम्मद के समुदाय को, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मोक्ष के तट पर ले जाना है, जो शांति और खुशी के निवास का तट है।

इसलिए, हमें सच्ची एकजुटता और एकता का एहसास करने की आवश्यकता है और इसके लिए हम बाध्य भी हैं, जो केवल ईमानदारी के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है और जो चार लोगों के लिए एक हजार एक सौ ग्यारह की शक्ति प्राप्त कर सकती है।

यदि तीन '1' एकजुट नहीं होते या एक साथ नहीं आते, तो उनका मूल्य केवल 3 होगा। लेकिन अगर वे एकजुट होते हैं या एक साथ आते हैं, तो उन्हें 111 का मूल्य प्राप्त होगा। चार अलग-अलग '4' 16 बनाते हैं। लेकिन अगर वे एक ही कर्तव्य की पूर्ति के लिए एक ही रास्ते पर सच्चे भाईचारे में एक साथ आते हैं, तो उनके पास 4444 की शक्ति का मूल्य होगा। इतिहास में कई घटनाएं दर्ज हैं जो इस तथ्य की गवाही देती हैं कि सच्चे भाईचारे में 16 आत्म-बलिदान करने वाले लोगों ने प्राप्त किया है

[80] चार 1 को एक साथ रखने पर 1111 बनता है। (ट्र.)

4000 से ज़्यादा लोगों की नैतिक शक्ति।81 ऐसा इसलिए है क्योंकि एक सच्चे, ईमानदार संघ में हर व्यक्ति दूसरे भाई-बहनों की आँखों से भी देख सकता है और उनके कानों से सुन सकता है। ऐसा लगता है मानो सच्ची एकजुटता और एकता में दस लोगों में से हर एक के पास बीस आँखों से देखने, दस बुद्धि से सोचने, बीस कानों से सुनने और बीस हाथों से काम करने का मूल्य और शक्ति है।

आपका तीसरा सिद्धांत

आपको पता होना चाहिए कि आपकी सारी शक्ति ईमानदारी और सच्चाई में निहित है। वास्तव में, शक्ति सच्चाई और ईमानदारी में निहित है। यहां तक कि जो लोग गलत हैं, वे भी गलत होने के बावजूद ईमानदारी के माध्यम से शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

कुरान की सेवा और ईमान इस बात का सबूत है कि ताकत सच्चाई और ईमानदारी में निहित है। हम यहाँ सात या आठ साल की सेवा में जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह मेरे अपने मूल क्षेत्र और इस्तांबुल में शिक्षा और धर्म की बीस साल की सेवा से सौ गुना अधिक है। इसके अलावा, जबकि मेरे क्षेत्र और इस्तांबुल में मेरे पास मेरे साथ काम करने वाले मेरे भाइयों और बहनों की तुलना में सैकड़ों अधिक सहायक थे, यहाँ मैं अकेला, एक अजनबी हूँ, और अन्यायी अधिकारियों की निगरानी में हूँ और उनके द्वारा सताया जा रहा हूँ। इसलिए, मुझे कोई संदेह नहीं है कि जो शक्ति हमारे यहाँ सात या आठ साल की सेवा को मेरे पिछले बीस साल की सेवा से सौ गुना अधिक सफल बनाती है, वह आपकी ईमानदारी से आती है। मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि आपकी गहन ईमानदारी के माध्यम से आपने मुझे उस दिखावे से कुछ हद तक बचाया है जो उस प्रसिद्धि और यश से उत्पन्न होता है जो

मेरी आत्मा को प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि भगवान आपको पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे और मुझे भी इसे प्राप्त करने का कारण देंगे।

आप जानते हैं कि आध्यात्मिकता के सभी नायक आपकी ईमानदारी के कारण आपका समर्थन करते हैं। यदि आप उनका निरंतर समर्थन प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए

---

81 ईमानदारी पर आधारित एकजुटता और एकता अनगिनत लाभों और फायदों का साधन होने के अलावा, भय और यहां तक कि मृत्यु के खिलाफ सबसे मजबूत ढाल और सहारा है। क्योंकि जब मृत्यु आती है, तो वह एक आत्मा को ले जाती है। जो व्यक्ति परलोक से संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ईश्वर की प्रसन्नता के मार्ग पर अपने साथियों के साथ सच्ची एकता में प्रयास करता है, उसके पास उतनी ही आत्माएं होती हैं जितनी उसके भाई-बहन। इसलिए, ऐसा व्यक्ति मृत्यु का सामना मुस्कुराते हुए करता है और कहता है, "भले ही मेरी केवल एक आत्मा मर जाए, मेरी अन्य आत्माएं जीवित रहेंगी और मुझे उतने ही पुरस्कार दिलाएंगी जितने वे दिलाती हैं। इसलिए इन आत्माओं के माध्यम से, मैं पुरस्कार के संबंध में जीवित रहूंगा; मैं केवल पाप के संबंध में मर रहा हूं।"

जैसा कि वर्णित है, वे उन्हें (धर्म में अपने भाइयों और बहनों को) अपने से अधिक पसंद करते हैं (59: 9)।

सम्मान, पद, सार्वजनिक स्वीकृति और यहाँ तक कि भौतिक लाभ जैसी चीज़ों में भी अपने भाई-बहनों की आत्माओं को अपनी आत्मा से ज़्यादा तरजीह दें, जिनसे शारीरिक आत्मा मोहित होती है। इतने उदार बनो कि तुम प्रसन्न हो कि तुम्हारा कोई मित्र, न कि तुम, उन लोगों को विश्वास का सबसे सूक्ष्म और बढ़िया सत्य बताता है जिन्हें इसकी ज़रूरत है, इस प्रकार तुम अहंकारी महसूस करने से बच जाते हो। यदि तुम ऐसे सत्य बताकर कोई पुरस्कार प्राप्त करना चाहते हो, तो यह हानिरहित है और इसमें कोई पाप नहीं है, लेकिन ईमानदारी और उदारता की भावना, जो हमेशा तुम्हारे बीच मौजूद होनी चाहिए, क्षतिग्रस्त हो सकती है।

आपका चौथा सिद्धांत

मानो आप ही अपने भाइयों और बहनों के गुणों और खूबियों को धारण करते हैं, उन पर गर्व करें और उनके लिए ईश्वर के प्रति आभारी रहें।

सूफ़ी आपस में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे कि "मार्गदर्शक में विनाश" और "संदेशवाहक में विनाश"। मैं सूफ़ी नहीं हूँ, लेकिन हमें आपस में यह सिद्धांत अपनाना चाहिए कि "भाइयों और बहनों में विनाश"। इसे भाइयों और बहनों के बीच "पारस्परिक विनाश" कहा जाता है। इसका मतलब है कि भाई और बहन एक दूसरे में नष्ट हो जाते हैं।

यानी, अपने गुणों और उनसे पैदा होने वाले गर्व को भूलकर, हर व्यक्ति अपने भाई-बहनों के गुणों और भावनाओं को अपने मन में रखकर जीता है। हमारे रास्ते का आधार भाईचारा है। मेरा तुमसे रिश्ता पिता और बच्चों या सूफ़ी मार्गदर्शक और उसके शिष्यों जैसा नहीं है। यह भाई-बहनों के बीच का रिश्ता है। ज़्यादा से ज़्यादा, मेरे शिक्षण के पद का इसमें कुछ हिस्सा हो सकता है।

हमारा तरीका भी सबसे करीबी दोस्ती का है। दोस्ती के लिए सबसे करीबी, सबसे ज़्यादा त्याग करने वाला दोस्त, सबसे ज़्यादा सराहना करने वाला साथी और सबसे उदार भाई या बहन होना ज़रूरी है। इस तरह की दोस्ती का आधार दिल से की गई ईमानदारी है। जो इस ईमानदारी को नष्ट कर देता है, वह दोस्ती के शिखर से गिर जाता है। वे संभवतः बहुत गहरे गड्ढे की तह में गिर सकते हैं। उन्हें बीच में कुछ भी नहीं मिलता जिससे वे चिपके रह सकें।

दो रास्ते हैं। यह संभव है कि जो लोग अब हमारे इस रास्ते को छोड़ देते हैं, जो कि कुरान का महान मार्ग है, वे अनजाने में विधर्म की ताकत की मदद करते हैं, जो हमारे लिए शत्रुतापूर्ण है। मुझे उम्मीद है कि ईश्वर उन लोगों को सक्षम करेगा जो कुरान के पवित्र क्षेत्र में चमत्कारिक व्याख्या के माध्यम से प्रवेश करते हैं।

रिसाले-ए-नूर को हमेशा प्रकाश, ईमानदारी और विश्वास का समर्थन करना चाहिए और कभी भी ऐसे गड्ढों में नहीं गिरना चाहिए।

ऐ मेरे क़ुरआन की सेवा में लगे दोस्तों! ईमानदारी हासिल करने और उसे बनाए रखने का सबसे प्रभावशाली तरीका है "मृत्यु का चिंतन।"

जहाँ दीर्घकालिक सांसारिक महत्त्वाकांक्षाएँ ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती हैं तथा आडम्बर और सांसारिकता का कारण बनती हैं, वहीं "मृत्यु का चिंतन" व्यक्ति को आडम्बर से घृणा करने तथा ईमानदारी प्राप्त करने की ओर ले जाता है। मृत्यु को कभी न भूलने तथा इस सांसारिक जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति पर सदैव विचार करने से व्यक्ति शारीरिक आत्मा के छल से बच सकता है। सूफी मार्ग के अनुयायी तथा सत्य के लोग जो कुरान की घोषणाओं, प्रत्येक आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना ही है (3:185), तथा तुम अवश्य मरोगे, तथा वे भी अवश्य मरेंगे (39:30) का पालन करते हैं, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा में मृत्यु के चिंतन को एक सिद्धांत के रूप में अपनाया है तथा संसार में सदैव रहने के भ्रम को दूर कर दिया है। वे स्वयं को मरते हुए, नहाए हुए तथा कब्र में दफनाए हुए कल्पना करते हैं। मृत्यु के इस दीर्घकालीन चिंतन से प्रभावित होकर, वे एक हद तक दीर्घकालिक सांसारिक महत्त्वाकांक्षाओं को त्यागने में सक्षम हो जाते हैं। ऐसे चिंतन के अनेक लाभ हैं। पैगंबर की यह उक्ति, "अक्सर उस बात को याद करो जो सुखों को दूर करती है और उन्हें कड़वा बनाती है,"[82] हमें इस तरह के चिंतन के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि, चूँकि हमारा मार्ग सूफी मार्ग नहीं है, बल्कि सत्य की ओर सीधे यात्रा करने का मार्ग है, इसलिए हमारे लिए सूफियों की तरह काल्पनिक या काल्पनिक रूप में ऐसा करना आवश्यक नहीं है। भविष्य को वर्तमान में लाने के लिए उस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हमें मन में भविष्य की ओर जाना चाहिए, और उसका चिंतन करना चाहिए।

बिना किसी कल्पना या अनुमान के, कोई व्यक्ति अपने शव को देख सकता है, जो जीवन के वृक्ष का एकमात्र फल है। आप न केवल अपनी मृत्यु देखेंगे, बल्कि कुछ दूरी पर अपने युग की मृत्यु भी देख सकते हैं।

यदि कोई थोड़ा और आगे बढ़े, तो वह संसार की मृत्यु देख सकता है, और इससे पूर्ण ईमानदारी का मार्ग खुल जाता है।

ईमानदारी प्राप्त करने का एक और महत्वपूर्ण साधन यह है कि, निश्चित, सत्यापित विश्वास और ईश्वर की कलाकृतियों - संपूर्ण सृष्टि - पर विश्वास-निर्देशित चिंतन के प्रकाश के आधार पर, जो निर्माता के ज्ञान की ओर ले जाता है, हम सर्व-दयालु निर्माता की सर्वव्यापकता का अनुभव कर सकते हैं, और उसके अलावा किसी अन्य की स्वीकृति या ध्यान की मांग किए बिना, और यह समझकर कि उसकी उपस्थिति में मदद के लिए दूसरों की ओर देखना सही नहीं है।

---

[82] एट-तिर्मिधि, "क़ियामा" 86; अन-नासाई, "जनाईज़" 3. (ट्र.)

उनके सामने सही आचरण करके हम दिखावे से बच सकते हैं और ईमानदारी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह की उपलब्धि के कई स्तर और चरण होते हैं। इंसान अपने हिस्से से जितना लाभ उठा सकता है, उतना ही फायदेमंद है। रिसाले -ए-नूर में और भी कई सच्चाईयाँ बताई गई हैं जो इंसान को दिखावे से बचा सकती हैं और ईमानदारी प्राप्त करा सकती हैं, इसलिए हम यहाँ चर्चा को यहीं खत्म कर देते हैं।

ईमानदारी को नष्ट करने वाली चीजें

ईमानदारी को नष्ट करने वाली और दिखावे की ओर ले जाने वाली अनेक बातों में से मैं दो या तीन का संक्षेप में उल्लेख इस प्रकार करूंगा:

पहला यह कि भौतिक लाभों की प्रतिद्वंद्विता धीरे-धीरे ईमानदारी को नष्ट कर देती है। इससे किसी भी सेवा के परिणाम पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, तथा वांछित भौतिक लाभ की हानि होती है।

हमारे लोगों ने हमेशा उन लोगों के लिए सम्मान का भाव रखा है जो सत्य और परलोक के लिए प्रयास करते हैं और उनकी सहायता की है। उनकी ईमानदारी और निष्ठा से की जाने वाली सेवा में हिस्सा लेने के इरादे से हमारे लोगों ने उनकी सहायता करने की कोशिश की है ताकि ऐसे लोग अपनी आजीविका कमाने में व्यस्त न रहें और इस तरह अपना समय बर्बाद न करें। हालाँकि, मदद और सम्मान की माँग या मांग नहीं की जानी चाहिए; उन्हें स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए।

न ही उनसे यह अपेक्षा करनी चाहिए और न ही यह दिखावा करना चाहिए कि उन्हें उनकी ज़रूरत है। ऐसा सहयोग बिना किसी अपेक्षा के मिलना चाहिए। अन्यथा ईमानदारी को नुकसान पहुँचेगा और व्यक्ति कुरान के इस निषेध का शिकार हो सकता है कि मेरी आयतों को तुच्छ कीमत पर मत बेचो (2:41), जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के अच्छे कर्म ईश्वर को स्वीकार्य नहीं होंगे।

इस प्रकार, शारीरिक आत्मा, पहले भौतिक लाभ की इच्छा और अपेक्षा करती है, फिर नहीं चाहती कि यह दूसरों को मिले, इस प्रकार वह सच्चे भाई या बहन या उसी सेवा में साथी के प्रति प्रतिद्वंद्विता की भावना को भड़काती है। यह ईमानदारी को नुकसान पहुँचाता है, और की गई सेवा के लिए अपवित्र है; व्यक्ति सत्य और विवेक वाले लोगों की दृष्टि में अप्रिय और अप्रिय बन जाता है। यह इच्छित भौतिक लाभ की हानि का भी कारण बनता है। इस मामले पर बहुत विस्तार से चर्चा की आवश्यकता है।

इसलिए, मैं अपनी बात यहीं समाप्त करूंगा और दो उदाहरण बताऊंगा जो मेरे सच्चे भाइयों और बहनों की ईमानदारी और उनके बीच की एकता को मजबूत करेंगे।

पहला उदाहरण यह है कि अधिक धन और शक्ति प्राप्त करने के लिए सांसारिक लोगों ने, यहां तक कि कुछ राजनेताओं, समितियों और सामाजिक जीवन के कुछ संचालकों ने भी, कॉर्पोरेट भागीदारी या कॉर्पोरेट भागीदारी के सिद्धांत को अपना लिया है।

धन का स्वामित्व। इस तरह के अभ्यास के सभी नुकसानों और दुरुपयोगों के बावजूद, वे एक अद्भुत शक्ति और लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, धन में भागीदारी के लेकिन वे इससे लाभ नहीं उठा कई नुकसान हैं और इससे संपत्ति की प्रकृति में कोई बदलाव नहीं आता है। हालाँकि प्रत्येक भागीदार सैद्धांतिक स्वामित्व का आनंद लेता है, सकते हैं। लेकिन अगर विश्वासी इस सिद्धांत को परलोक से संबंधित कार्यों में अपनाते हैं, तो इससे बिना किसी नुकसान के बहुत लाभ होगा। क्योंकि हर भागीदार उन सभी कर्मों का पूरा प्रतिफल भोगेगा।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि चार या पाँच लोगों के पास एक ही तेल का दीया है। एक व्यक्ति तेल लाता है, दूसरा बाती, तीसरा मंथली, तीसरा माचिस; वे दीया जलाते हैं। उनमें से प्रत्येक का दीया अपना है। यदि प्रत्येक के पास दीवार पर दर्पण है, तो उसके पास अपने साझा कमरे में शामिल एक अलग, परावर्तित कमरा और उसमें परावर्तित एक अलग दीपक दोनों होंगे।

इसी प्रकार, जैसा कि सत्य के लोगों ने स्वीकार किया है और ईश्वरीय दया और उदारता की व्यापकता की आवश्यकता है, परलोक के लिए खर्च की जाने वाली संपत्ति में ईमानदारी से भाग लेने, भाईचारे और बहन की एकजुटता और सहयोग, और पूर्ण एकता में संयुक्त उद्यम से उत्पन्न होने वाला पूरा सवाब और प्रकाश प्रत्येक भागीदार के खाते में जोड़ा जाएगा। इसलिए, हे मेरे भाइयों और बहनों! मुझे आशा है कि ईश्वर आपको भौतिक लाभों में प्रतिद्वंद्विता से बचाएगा। हालाँकि, यह संभव है कि सूफी पथ के कुछ अनुयायियों की तरह, आप परलोक से संबंधित लाभों के संबंध में धोखा खा सकते हैं। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि कुछ व्यक्तिगत, छोटे सवाब की तुलना कभी भी उस सवाब और प्रकाश से नहीं की जा सकती है जो एक समूह द्वारा किए गए अच्छे कार्यों से मिलता है जो एक दूसरे का समर्थन करते हैं, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में है।

दूसरा उदाहरण: अपने काम से बढ़िया नतीजे या उत्पाद पाने के लिए कारीगर अपने हुनर और मेहनत को एक साथ मिलाते हैं और खूब धन कमाते हैं। कहा जाता है कि एक बार दस लोगों ने सुई बनाने की कोशिश की, जिनमें से हर एक ने अपने-अपने तरीके से काम किया।
अपने-अपने श्रम के परिणामस्वरूप, प्रत्येक व्यक्ति दिन में तीन सुइयाँ बनाने में सक्षम था। फिर, संयुक्त उद्यम के सिद्धांत को अपनाते हुए, वे एक साथ आए, एक लोहा लाया, दूसरा भट्ठी जलाया, तीसरा सुइयों को छेदा, तीसरा उन्हें भट्ठी में रखा, तीसरा नोक को तेज किया, और इसी तरह। प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने काम के हिस्से में व्यस्त था, समय बर्बाद नहीं कर रहा था और सुई बनाने की कला में एक विशिष्ट कौशल भी हासिल कर रहा था। फिर उन्होंने अपने संयुक्त उद्यम और श्रम विभाजन के परिणाम को आपस में साझा किया। उन्होंने देखा कि तीन के बजाय, प्रत्येक व्यक्ति के पास प्रतिदिन तीन सौ सुइयाँ थीं। इस घटना को कारीगरों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित किया गया ताकि उन्हें अपने प्रयासों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जा सके।

तो हे मेरे भाईयों और बहनों! अगर सांसारिक मामलों में एकता और सहमति से इतने बढ़िया नतीजे मिलते हैं, तो आप इसे इस बात से जोड़कर देख सकते हैं कि परलोक से जुड़े कामों में मिलकर प्रयास करना कितना लाभदायक होगा, जिसका फल बंटा नहीं होता और ईश्वरीय कृपा से हर भागीदार को पूरा-पूरा मिलता है। इस बड़े लाभ को प्रतिद्वंद्विता और कपट के कारण नहीं खोना चाहिए।

दूसरी चीज़ जो ईमानदारी को नष्ट करती है, वह है अहंकार की चापलूसी करना और लोगों की नज़रों में प्रसिद्धि, यश या हैसियत के नाम पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और स्वीकृति पाने के लिए दुष्ट आत्मा को ऊंचा स्थान देना। यह आध्यात्मिक रोगों में सबसे ख़तरनाक है, जो दिखावे और आत्म-केंद्रितता की ओर ले जाता है, जिसे ईश्वर के साथ भागीदारों का एक छिपा हुआ संबंध माना जाता है।

हे मेरे भाइयो और बहनो! हम पवित्र क़ुरआन की सेवा में जिस मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं, वह सत्य पर आधारित है और सच्चे भाईचारे की मांग करता है।
भाईचारे के लिए भाई-बहनों के बीच खुद को खत्म करना और खुद से बेहतर उन्हें महत्व देना ज़रूरी है।[83] इसलिए, हमारे बीच ऐसी दुश्मनी नहीं होनी चाहिए जो लोगों की नज़र में रुतबा हासिल करने की चाहत से पैदा होती है। यह हमारे तरीके के बिलकुल उलट है। चूँकि हर व्यक्ति सभी भाई-बहनों के कुल सम्मान का आनंद ले सकता है, इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि रिसाले-ए-नूर के छात्र व्यक्तिगत, स्वार्थी, प्रतिस्पर्धी और मामूली शोहरत और यश के लिए उस महान सामूहिक सम्मान का त्याग करने से दूर रहेंगे। उन्हें इतना समझदार और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होना चाहिए कि वे ऐसी नीच, हानिकारक चीज़ों पर न गिरें। लेकिन हर किसी की आत्मा में एक बुराई करने वाली आत्मा होती है, और कभी-कभी स्वार्थी आवेग और इच्छाएँ किसी व्यक्ति को उसके दिल, दिमाग और आत्मा के बावजूद इस हद तक नियंत्रित कर सकती हैं। मैं कभी आपके दिल, दिमाग या आत्मा पर आरोप लगाने के बारे में नहीं सोचता। लेकिन शारीरिक आत्मा, आवेग, इच्छाएँ और कल्पनाएँ कभी-कभी धोखा देती हैं। इस कारण से, आपको कभी-कभी कड़ी चेतावनी दी जाती है। चेतावनियों में गंभीरता इन आवेगों, इच्छाओं और कल्पनाओं के कारण है। इसलिए, सावधानी से काम करें।

अगर हमारा तरीका किसी शेख के अधीन होने पर आधारित होता , तो एक ही पद होता या सीमित संख्या में निम्न पद होते। इन पदों के लिए कई योग्यताएँ उम्मीदवार होतीं, और इससे ईर्ष्या और स्वार्थ पैदा होता। लेकिन हमारा तरीका भाईचारे पर आधारित है।

कोई भी भाई या बहन किसी दूसरे का माता-पिता नहीं बन सकता या आध्यात्मिक मार्गदर्शक की भूमिका नहीं निभा सकता। भाईचारे में कई तरह के पद शामिल होते हैं और इसमें किसी भी तरह की भेदभाव की अनुमति नहीं होती।

---

[83] धन्य है वह व्यक्ति जो कुरान के स्वर्गीय सोते से बहते मीठे पानी का एक बड़ा कुंड पाने के लिए अपने अहंकार को, जो बर्फ के एक टुकड़े के समान है, उस कुंड में डालकर उसे पिघला देता है।

प्रतिद्वंद्विता या प्रतिस्पर्धा। भाई-बहन एक-दूसरे के सहायक और समर्थक हैं, प्रत्येक एक-दूसरे की सेवा को पूरा करते हैं। यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत पुरस्कार के लिए लालच को पोषित करना कितना हानिकारक होगा; व्यक्तिगत पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करना जो पिता के पद या आध्यात्मिक मार्गदर्शक के आधार पर होता है, चाहे उनके पास कितनी भी व्यक्तिगत उत्कृष्टता या आध्यात्मिक उपलब्धियाँ क्यों न हों, कुछ सूफ़ी मार्गों के अनुयायियों को आपस में प्रतिद्वंद्विता और असहमति से बहुत पीड़ित करता है। उनकी विशाल, पवित्र शक्ति विधर्म की आंधी का सामना नहीं कर सकती।

ईमानदारी प्राप्त करने में तीसरी बाधा भय और लोभ है। आपको छह मानवीय और शैतानी षड्यंत्रों (पत्रों में उनतीसवें पत्र का चौथा भाग) का संदर्भ देते हुए , जहाँ इस बाधा को कुछ अन्य के साथ-साथ समझाया गया है, मैं उनके सभी सुन्दर नामों को उनके साथ हमारी मध्यस्थता के रूप में प्रस्तुत करता हूँ, और दयालुओं में सबसे दयालु से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम बनाए।

हे ईश्वर! सूरतुल इखलास (ईमानदारी का कुरानिक अध्याय) के लिए, हमें अपने ईमानदार और ईमानदारी से संपन्न दासों में शामिल करें। आमीन। आमीन।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

मेरे कुछ भाइयों को एक गोपनीय पत्र

मैं अपने उन भाइयों के समक्ष दो हदीसों का एक पहलू प्रस्तुत करूंगा , जो कुरान और ईमान की सेवा करने में ऊब चुके हैं और रिसाले-ए-नूर के भागों की कई प्रतियां बनाकर उन्हें लिखने से कतराने लगे हैं, तथा इन तीन महीनों में, अर्थात् रजब, शाबान और रमज़ान में, जो अन्य समय की अपेक्षा उपासना पर अधिक ध्यान देने के महीने हैं, कुछ अतिरिक्त इबादत करना पसंद करते हैं।

कुरान और ईमान की सेवा करना वास्तव में पाँच प्रकार की इबादत है।84

---

84 हमने अपने शिक्षक से इन पाँच बातों के बारे में पूछा। हमें जो उत्तर मिला वह इस प्रकार है:

- ऐसे प्रयास गुमराह लोगों के खिलाफ कुरान और विश्वास की रक्षा करने का प्रयास करते हैं और विधर्म, जो वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण जिहाद है।
- वे विश्वास की सच्चाइयों को संप्रेषित करने में हमारी शिक्षक की सहायता करके उनकी सेवा करते हैं।
- वे मुसलमानों की आस्था के आधार पर सेवा करते हैं।
- वे लेखन के माध्यम से धार्मिक शिक्षा और ज्ञान प्रदान करते हैं।
- वे चिंतन के रूप में पूजा सुनिश्चित करते हैं, जिसमें से एक घंटा कुछ-बार एक वर्ष की अतिरिक्त पूजा के बराबर होगा।

हस्ताक्षरित: रुस्दु, हुसरेव, राफेट

पहली हदीस है, “(अंतिम निर्णय पर,) सच्चे लोगों द्वारा खर्च की गई स्याही
धर्म के विद्वानों का खून शहीदों के खून के बराबर है।''85

दूसरी हदीस है, "जो कोई मेरी सुन्नत का पालन करता है जब मेरी कौम
जो भ्रष्ट हो गया है, उसके लिए सौ शहीदों का पुरस्कार है।"86

हे भाईयों और बहनों, जो ऊब और अनिच्छा दिखाते हैं, ये दोनों

हदीसें मिलकर यह दर्शाती हैं कि काली रोशनी की एक बूंद - स्याही, जो जीवन के जल के समान है - जो विश्वास की सच्चाइयों, इस्लामी जीवन के मूल तत्वों और पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की उच्च सुन्नत की सेवा करने वाले धन्य कलमों से बहती है, इस समय न्याय के दिन आपके लिए शहीदों के खून की सौ बूंदों के बराबर काम आ सकती है।

इसलिए, इसे हासिल करने का प्रयास करें!

यदि आप कहें कि हदीस में विद्वानों का उल्लेख है, लेकिन हममें से कुछ लोग केवल लेखक हैं।

उत्तर: जो व्यक्ति इन ग्रंथों को पूर्णतः समझने के लिए एक वर्ष तक इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करता है, वह इस समय का महत्वपूर्ण, प्रतिष्ठित विद्वान हो सकता है।
रिसाले-ए-नूर के छात्र भले ही उन्हें पूरी तरह न समझ पाएं,
एक सामूहिक व्यक्तित्व है, और यह निश्चित रूप से इस समय का विद्वान है। आपकी कलम उस सामूहिक व्यक्तित्व की उंगलियाँ हैं। हालाँकि, मेरे विचार में, मैं ऐसा समझे जाने का हकदार नहीं हूँ, लेकिन मेरे बारे में आपकी अच्छी राय के कारण आपने मुझे अपना शिक्षक और एक धार्मिक विद्वान माना है। चूँकि मुझे लिखने में कठिनाई होती है, इसलिए आपकी कलम को मेरा माना जा सकता है, और आपको हदीस में वर्णित पुरस्कार मिलेगा।

नर्सी ने कहा

---

85 अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 1:6, 8; इब्न हजर अल-अस्कलानी, लिसान अल-मिज़ान, 5:225; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 6:466. (ट्र.)

86 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, 5:315; अल-बहाकी, सुनान, "ज़ुहद" 118. (ट्र.)

बाईसवीं चमक

बाईसवीं चमक

क्यों सांसारिक लोग लगातार सैद नूरसी के परलोक में हस्तक्षेप करते हैं क्या सैद नूरसी का लक्ष्य अपने लिए सत्ता और सामाजिक स्थिति सुरक्षित करना है? कुछ स्थानीय अधिकारियों द्वारा क्रूर व्यवहार के उत्तर

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

यह संक्षिप्त ग्रंथ, जो मैंने बाईस वर्ष पहले इस्पार्टा प्रांत के बारला गांव में अपने सबसे ईमानदार और भरोसेमंद भाइयों के लिए लिखा था, इस्पार्टा के गवर्नर और न्याय और सुरक्षा विभागों को प्रस्तुत करता हूं, ताकि जो लोग पच्चीस-तीस वर्षों से मुझ पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं, वे समझ सकें कि हमारे पास कोई रहस्य नहीं है। उन्हें पता होना चाहिए कि हमारा सबसे बड़ा रहस्य यह ग्रंथ है।

नर्सी ने कहा

तीन संकेत

जो कोई ईश्वर पर भरोसा रखता है, वह उसके लिए (उसकी सभी आवश्यकताओं के लिए) पर्याप्त है।
अल्लाह जो कुछ तय करता है, उसे पूरा करता है। निस्संदेह अल्लाह ने हर चीज़ का एक माप बना रखा है। (65:3)

इस मामले में तीन संकेत हैं।

पहला संकेत

मेरे व्यक्तित्व और रिसाले-ए- नूर के बारे में एक महत्वपूर्ण प्रश्न: बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं, "यद्यपि आप सांसारिक लोगों की दुनिया में हस्तक्षेप नहीं करते, फिर भी वे हर अवसर पर आपके परलोक में हस्तक्षेप क्यों करते हैं, और फिर भी किसी देश का कानून एकांत जीवन जीने वालों में हस्तक्षेप नहीं करता?"

उत्तर : इस प्रश्न का उत्तर नए सईद का मौन रहना है। वह कहता है, "ईश्वरीय नियति ही मेरे लिए उत्तर प्रदान करे।" लेकिन पुराने या भूतपूर्व सईद का शीर्षक, जिसे नए सईद ने अस्थायी रूप से उधार लिया है, निम्नलिखित कहने के लिए बाध्य होता है:

इस प्रश्न का उत्तर देने वालों में इस प्रांत की स्थानीय सरकार और उसके लोग शामिल हैं। क्योंकि यह प्रश्न मुझसे अधिक उनके लिए चिंता का विषय है। चूंकि स्थानीय सरकार, जिसमें सैकड़ों लोग हैं और जिसकी आबादी लाखों लोगों की है, मेरे पक्ष में सोचने और मेरा बचाव करने के लिए बाध्य है, तो मैं अनावश्यक रूप से अभियोक्ताओं से बात करके अपना बचाव क्यों करूं? क्योंकि मैं इस प्रांत में लगभग नौ वर्षों से हूं और मैं उनकी दुनिया से अधिकाधिक मुंह मोड़ता जा रहा हूं। मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो छिपा हुआ हो। यहां तक कि मेरे सबसे गोपनीय ग्रंथ भी सरकारी अधिकारियों और कुछ संसद सदस्यों के पास घूम रहे हैं। यदि मेरे मन में कोई विचार आता और मैं सांसारिक मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयास करता, जो चिंता और बेचैनी पैदा करने वाली बात होती, तो इस प्रांत के स्थानीय अधिकारियों को इसके बारे में पता होता। यद्यपि वे लगभग नौ वर्षों से मुझ पर निगरानी रख रहे हैं और मैंने अपने बारे में उन लोगों को निःसंकोच सब कुछ बता दिया है जो मुझसे मिलने आए हैं, फिर भी वे मेरे द्वारा कानून के विरुद्ध कुछ भी नहीं पा सके हैं जिससे वे मुझे गिरफ्तार कर सकें और दंडित कर सकें। अगर मैंने कोई ऐसा निंदनीय काम किया है जिससे इस देश की खुशियों और भविष्य को नुकसान पहुंच सकता है, तो स्थानीय अधिकारियों के सभी सदस्यों, राज्यपाल से लेकर गांव के पुलिस प्रमुख तक, को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए और इससे मुक्त होने के लिए, उन्हें उन लोगों के खिलाफ़ राई का पहाड़ बनाकर मेरा बचाव करना चाहिए जो मुझ पर आरोप लगाने में सक्षम हैं। इसलिए, मैं इस प्रश्न का उत्तर उन्हीं को सौंपता हूँ।

जहां तक इस बात का प्रश्न है कि इस प्रांत के लोगों को मुझसे अधिक मेरा बचाव करने की आवश्यकता क्यों है; मैं नौ वर्षों से इन प्रिय, मित्रवत और भाईचारे वाले लोगों की सांसारिक और शाश्वत खुशी की सेवा करने तथा लगभग एक सौ ग्रंथों के माध्यम से उनके विश्वास को मजबूत करने का प्रयास कर रहा हूं, जो कि

अपना प्रभाव प्रदर्शित किया है। इन कार्यों के कारण न तो उन्हें कोई हानि हुई है, न ही उनमें कोई उद्देश्यपूर्ण राजनीतिक झुकाव का संकेत मिला है। बल्कि, ईश्वर की प्रशंसा हो, लोगों के विश्वास की शक्ति और धर्म के प्रति उनके दृढ़ लगाव के कारण, जो उन्होंने रिसाले-ए-नूर के माध्यम से प्राप्त किया है, इस प्रांत के इस स्पार्टा ने कुछ प्रकार की पवित्रता प्राप्त की है जो कि पुराने समय के दमिश्क और मिस्र के अल-अजहर विश्वविद्यालय के समान है। इसके अलावा, रिसाले -ए-नूर ने इस प्रांत को अन्य सभी प्रांतों की तुलना में अधिक धर्मपरायणता दिलाई है, क्योंकि इसने लोगों के विश्वास की शक्ति को उनकी उपासना के प्रति उत्साह में लापरवाही और एक लापरवाह, अपव्ययी जीवन पर विजय दिलाई है। इसलिए, इन लोगों को, यहां तक कि उनके बीच अधार्मिक लोगों को भी - यदि कोई हैं - अपने स्वयं के लाभ के लिए **मुझे और** रिसाले-ए-नूर का **बचाव करने के लिए बाध्य होना चाहिए**। मेरा बचाव करना पूरी तरह से उनका अधिकार है, इसलिए मेरा यह तुच्छ अधिकार मुझे उस समय अपना बचाव करने के लिए बाध्य नहीं करता जब मैं, एक शक्तिहीन व्यक्ति, पहले ही अपना कर्तव्य पूरा कर चुका हूँ और, भगवान का शुक्र है कि हजारों छात्रों ने मेरे स्थान पर काम किया है और अभी भी काम कर रहे हैं। जिस व्यक्ति के पास इतने सारे वकील हैं, उसे अपने मामले का बचाव करने की आवश्यकता नहीं है।

दूसरा संकेत

यह एक आलोचनात्मक प्रश्न का उत्तर है।

सांसारिक लोग पूछते हैं, "आप हमसे क्यों नाराज हैं? आपने एक बार भी हमसे प्रार्थना नहीं की, और चुप रहे। आप हमारे बारे में कड़वी शिकायत करते हैं और कहते हैं कि हम आपको सता रहे हैं। लेकिन हमारे अपने सिद्धांत हैं; हमारे पास कुछ विशेष नियम हैं, जैसा कि इस युग की मांग है। आप उन्हें अपने ऊपर लागू करने से इनकार करते हैं। जो कानून लागू करता है वह अत्याचारी नहीं है, और जो कानून को स्वीकार नहीं करता वह विद्रोही है। स्वतंत्रता के इस युग में और इस नए गणतंत्र युग में, समतावाद और निरंकुशता के उन्मूलन के सिद्धांत हमारे बुनियादी कानून हैं। लेकिन आपका पिछला जीवन और वर्तमान जीवनशैली बताती है कि आप धार्मिक शिक्षक की स्थिति और एक तपस्वी के रूप में जनता का ध्यान आकर्षित करने और सार्वजनिक स्वीकृति प्राप्त करके सरकार की शक्ति और प्रभाव से परे सत्ता और सामाजिक स्थिति हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। यह एक बुर्जुआ सरकार के तहत बर्दाश्त किया जा सकता है, लेकिन हम समाजवाद और बोल्शेविज्म के सिद्धांतों को अपनाना पसंद करते हैं, जो हमारे आम लोगों की जागृति के साथ उभरे हैं। इसलिए, आपकी स्थिति हमारे सिद्धांतों के विपरीत है और हमें पसंद नहीं है। इस कारण से, आपको हमारे द्वारा आपको पहुँचाई गई परेशानी के बारे में शिकायत करने या नाराज़ होने का कोई अधिकार नहीं है।”

जवाब : अगर इंसानी सामाजिक जीवन में नई राह बनाने वाले लोग सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के ईश्वरीय नियमों के मुताबिक काम नहीं करते, तो वे प्रगति और अच्छे काम करने के अपने प्रयासों में सफल नहीं हो सकते। बल्कि उनके काम सिर्फ़ बुराई और विनाश की सेवा करते हैं। इसलिए, इंसानियत की बुनियादी प्रकृति को बदलकर और उसकी रचना में ईश्वरीय ज्ञान को खत्म करके ही इंसानों के बीच पूर्ण समानता हासिल की जा सकती है। मैं जन्म और जीवन शैली दोनों से आम लोगों की श्रेणी में आता हूं और अपने सोचने और काम करने के तरीके में कानून के सामने अधिकारों की समानता के सिद्धांत को ईमानदारी से अपनाता हूं। और अपनी सहज करुणा और इस्लाम के आदेश के कारण, मैं उन लोगों में से हूं जिन्होंने लंबे समय तक पूंजीपति वर्ग के रूप में जाने जाने वाले कुलीन वर्ग की निरंकुशता और उत्पीड़न का विरोध किया है। इसलिए मैं पूर्ण न्याय का समर्थन करता हूं और अपनी पूरी ताकत से गलत कामों, निरंकुशता और उत्पीड़न का विरोध करता हूं।

हालाँकि, बुनियादी मानव प्रकृति और सृष्टि के निर्माण में बुद्धि

मनुष्यता के सभी गुण पूर्ण समतावाद के अनुरूप नहीं हैं। क्योंकि वह सर्वज्ञ सृजक, जो अपनी शक्ति और बुद्धि की पूर्णता दिखाने के लिए एक ही वस्तु से महान परिणाम प्राप्त करवाता है या अनेक कर्तव्य पूर्ण करवाता है, तथा जिसके एक ही पृष्ठ पर अनेक पुस्तकें लिखी हुई हैं, मनुष्यता से हजारों योनियों के कर्तव्य करवाता है। इसी महत्वपूर्ण कारण से सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्यता को ऐसी प्रकृति के साथ बनाया है कि वह उसे पशु-जातियों की तरह अनेक "वर्गों" में विभाजित कर सके। उसने मनुष्यता की शक्तियों, क्षमताओं और भावनाओं को जन्म से ही सीमित नहीं किया है, जैसा कि उसने पशुओं को सीमित किया है, बल्कि उसे उन्नति और सिद्धि के असीम स्तरों तक पहुँचने की क्षमता से सुसज्जित किया है। इसी कारण से, एक ही प्रजाति होते हुए भी, मनुष्यता हजारों योनियों के समान हो गई है और उसे पृथ्वी का शासक नियुक्त किया गया है - वह प्रजाति जिसे ईश्वरीय नियमों के अनुसार संसार की समृद्धि के लिए कार्य करना चाहिए -

और ब्रह्मांड का फल या सृजन और अंत का अंतिम परिणाम बन जाते हैं

जीवित प्राणियों का सम्राट.

इस प्रकार, मानव जाति में विविधता का सबसे महत्वपूर्ण तंत्र सद्गुणों में प्रतिस्पर्धा है जो बदले में, विश्वास से उत्पन्न होता है। सद्गुणों को मानवता से केवल मानव स्वभाव को बदलकर, तर्क की शक्ति को बुझाकर, हृदय को मारकर और आत्मा को नष्ट करके ही हटाया जा सकता है। हालाँकि उन्हें इस युग के सामने फेंक दिया जाना चाहिए था, जिसने एक भयानक अत्याचार लाया है

स्वतंत्रता के पर्दे के पीछे, एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति के चेहरे पर निम्नलिखित पंक्तियाँ गलत तरीके से फेंकी गईं:

अत्याचार और अन्याय के माध्यम से स्वतंत्रता को नष्ट करना कैसे संभव हो सकता है?
यदि आप सक्षम हों तो मानव जाति से चेतना को हटाने का प्रयास करें!

इन पंक्तियों के स्थान पर मैं इस युग के समक्ष यह कहना चाहूँगा:

अत्याचार और अन्याय के माध्यम से सत्य को नष्ट करना कैसे संभव हो सकता है?
यदि आप सक्षम हों तो मानव जाति से हृदय को हटाने का प्रयास करें!

या,

अत्याचार और अन्याय के माध्यम से सद्गुणों को नष्ट करना कैसे संभव हो सकता है?
यदि आप सक्षम हों तो मानव जाति से विवेक को हटाने का प्रयास करें!

ईमान से पैदा होने वाला सद्गुण न तो ज़ुल्म और न ही निरंकुशता का कारण हो सकता है। ज़ुल्म और निरंकुशता का मतलब सद्गुण की कमी है। सद्गुणी लोग मानवीय जन्मजात शक्तिहीनता, गरीबी और विनम्रता को स्वीकार करके मानवीय सामाजिक जीवन में भाग लेना पसंद करते हैं। सारी प्रशंसा ईश्वर की है, मैंने हमेशा अपने जीवन में इसी तरह का पालन किया है और कर रहा हूँ। मैंने कभी भी अपने हिस्से पर सद्गुण का दावा नहीं किया, लेकिन मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर को उसके उपकार के लिए धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे ईमान और कुरान के ज्ञान की शाखाओं को समझने और उनकी सेवा करने का सद्गुण दिया है। सारी प्रशंसा ईश्वर की है, मैंने हमेशा इस ईश्वरीय उपकार का उपयोग उसकी मदद से इस मुस्लिम राष्ट्र के लाभ और खुशी के लिए किया है। मैंने इसे कभी दूसरों पर प्रभुत्व का साधन नहीं बनाया और हमेशा सार्वजनिक ध्यान और स्वीकृति से नफरत की और इससे परहेज किया, जिसे असावधान लोगों का बहुमत चाहता है।

और इसलिए, हे सांसारिक लोगों! यद्यपि मैंने कभी भी आपकी दुनिया में भाग नहीं लिया है, न ही भाग लेने का कोई इरादा है, जैसा कि इन नौ वर्षों की कैद के दौरान मेरे जीवन से प्रमाणित है, और न ही आपके सिद्धांतों से मेरा कोई लेना-देना है, फिर भी किस कानून के अनुसार और किस लाभ के उद्देश्य से आपने मुझ पर यह सब निगरानी और उत्पीड़न किया है? दुनिया की कोई भी सरकार इस तरह के अराजक व्यवहार की अनुमति नहीं देती है और कोई भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता है। इसलिए, यह केवल मैं ही नहीं हूं जो इस हद तक के दुर्व्यवहार से नाराज हूं; अगर उन्हें इसके बारे में पता होता, तो पूरी मानवता और यहां तक कि ब्रह्मांड भी इसे पूरी तरह से घृणित पाता और इसका कड़ा विरोध करता।

तीसरा संकेत

एक भड़काऊ, पागलपन भरा सवाल:

कुछ अधिकारी कहते हैं: चूँकि आप इस देश में रहते हैं, इसलिए आपको गणतंत्र के कानूनों का पालन करना चाहिए। लेकिन आप एकांतवास की आड़ में इन कानूनों से क्यों बचते हैं? उदाहरण के लिए, किसी ऐसे गुण या सद्गुण को मानना जो किसी के कर्तव्य से उत्पन्न नहीं होता, या उसके माध्यम से शक्ति और प्रभाव का प्रयोग करना गणतंत्र द्वारा अपनाए गए कानूनों और समानता के सिद्धांत के विपरीत है। आपके हाथ चूमे क्यों जाते हैं, जबकि आपके पास कोई आधिकारिक नौकरी नहीं है, और आप आत्म-विज्ञापन का रवैया क्यों अपनाते हैं ताकि लोग आपकी बात सुनें?

उत्तर : जो लोग कानून लागू करते हैं, उन्हें पहले खुद पर और फिर दूसरों पर लागू करना चाहिए। दूसरों पर थोपे गए सिद्धांत को खुद पर लागू न करके, आप सबसे पहले अपने ही सिद्धांतों और कानूनों का उल्लंघन और विरोध कर रहे हैं। क्योंकि आप मुझ पर पूर्ण समानता के सिद्धांत को लागू करने की मांग करते हैं। इसलिए मैं निम्नलिखित कहता हूँ:

जब भी कोई निजी सैनिक मार्शल के समान सामाजिक स्थिति और सार्वजनिक सम्मान और ध्यान साझा करता है, या जब भी कोई मार्शल खुद को एक निजी सैनिक के दर्जे तक गिरा देता है और अपने कर्तव्य के बाहर उसका कोई मूल्य नहीं होता है, या जब भी एक प्रतिभाशाली, विजयी सैन्य प्रमुख को लोगों से उसी स्तर का ध्यान और सम्मान मिलता है जो एक साधारण निजी सैनिक को मिलता है, तब आप पूर्ण समानता की बात कर सकते हैं और तदनुसार मुझसे कह सकते हैं, "अपने आप को धार्मिक शिक्षक मत कहो! किसी भी सम्मान को स्वीकार मत करो! तुम्हारे पास जो भी गुण हैं, उन्हें अस्वीकार करो! अपने ही सेवक की सेवा करो! भिखारियों का साथी बनो!"

आप कहते हैं: "सम्मान और सार्वजनिक पद तथा ध्यान कार्यालय में मिलता है और यह उन लोगों के लिए विशेष है जिनके पास आधिकारिक कर्तव्य हैं। आप बिना नौकरी वाले व्यक्ति हैं, इसलिए आप उन लोगों की तरह सार्वजनिक सम्मान स्वीकार नहीं कर सकते जिनके पास आधिकारिक नौकरी है।"

उत्तर : यदि मनुष्य केवल शरीर से बना होता और दुनिया में अमर होता, और यदि कब्र का द्वार हमेशा के लिए बंद कर दिया जाता और मृत्यु को समाप्त कर दिया जाता, और यदि कर्तव्य केवल सैन्य और सरकारी अधिकारियों तक सीमित होते, तो आपके शब्दों का कुछ अर्थ होता। लेकिन चूँकि मनुष्य केवल शरीर से बना नहीं है, इसलिए शरीर को पोषण देने के लिए हृदय, जीभ और दिमाग को नहीं निकाला जा सकता। उन्हें भी पोषण की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, चूंकि कब्र का दरवाजा बंद नहीं किया जा सकता है, और हर कोई सबसे पहले कब्र से परे भविष्य के बारे में चिंता करता है, तो जिन कर्तव्यों के लिए सार्वजनिक आज्ञाकारिता और सम्मान की आवश्यकता होती है, वे केवल राजनीतिक तक ही सीमित नहीं हैं।

और सैन्य पद जो सांसारिक जीवन से संबंधित हैं। जैसे विदेश यात्रा करने वालों को पासपोर्ट देना एक कर्तव्य है, वैसे ही अनंत काल की यात्रा करने वालों को पासपोर्ट देना और उनके अंधेरे रास्ते को रोशन करने के लिए उन्हें प्रकाश देना एक कर्तव्य है; इससे अधिक महत्वपूर्ण कोई और कर्तव्य नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति इस तरह के कर्तव्य से तभी इनकार कर सकता है जब वह मृत्यु को नकार दे और उन हजारों गवाहों की गवाही का खंडन करे जो हर दिन अपनी लाशों पर हस्ताक्षर करके इस सत्य को प्रमाणित करते हैं कि "मृत्यु एक वास्तविकता है।"

चूँकि लोगों की आवश्यक, अमूर्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नैतिक और धार्मिक कर्तव्य आवश्यक हैं, इसलिए उन कर्तव्यों में सबसे महत्वपूर्ण है अनंत काल की यात्रा के लिए पासपोर्ट प्रदान करना, कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र के अंधेरे में दिल की जेब में मशालें रखना, शाश्वत सुख की कुंजी के रूप में विश्वास, और विश्वास और उसके सुदृढ़ीकरण में शिक्षा देना। निश्चित रूप से, जो विद्वान इन कर्तव्यों को पूरा करते हैं, वे ईश्वर द्वारा उन्हें दिए गए ज्ञान के आशीर्वाद और विश्वास के गुण को कृतघ्नता से अस्वीकार नहीं करेंगे, न ही खुद को भ्रष्ट और पापियों के स्तर तक गिराएंगे। वे खुद को नीच लोगों के पाखंड और दुर्गुणों से दूषित नहीं करेंगे। इस कारण से वे एकांत पसंद करते हैं, जिसे आप पसंद नहीं करते हैं और जिसे असमानता मानते हैं।

यह सत्य होने के बावजूद, मैं यह बात तुम्हारे जैसे उन अहंकारी लोगों से नहीं कहता, जो मुझे सताते हैं और अहंकार तथा समानता के कानून के उल्लंघन में फिरौन से भी आगे जाते हैं - क्योंकि अहंकारी लोग विनम्रता को अपमान समझते हैं, इसलिए किसी को उनके सामने विनम्र नहीं होना चाहिए - बल्कि मैं यह बात निष्पक्ष, विनम्र और न्यायप्रिय लोगों से कहता हूँ:

> ईश्वर की स्तुति हो, मैं एक इंसान के रूप में अपने दोषों और जन्मजात शक्तिहीनता से अवगत हूं। मुसलमानों पर श्रेष्ठता का एक सम्मानित दर्जा मांगने के बजाय, मैं हमेशा अपने अंतहीन दोषों और तुच्छता को देखना पसंद करूंगा, ईश्वर से क्षमा मांगने में सांत्वना पाऊंगा और लोगों से सम्मान के बजाय प्रार्थनाओं के लिए कहूंगा। मुझे लगता है कि मेरे सभी साथी मेरी इस स्थिति से अवगत हैं। हालांकि, ज्ञानपूर्ण कुरान की सेवा करते हुए और विश्वास की सच्चाइयों को सिखाते हुए, उस स्थिति के लिए आवश्यक सीखने की गरिमा को बनाए रखने के लिए, उन सच्चाइयों के कारण और कुरान के सम्मान में, और गुमराह लोगों के सामने झुकने के लिए नहीं, मैं अस्थायी रूप से गरिमा का वह रवैया अपनाता हूं। मुझे लगता है कि इसका विरोध करना सांसारिक लोगों के कानूनों का अधिकार नहीं है!

एक आश्चर्यजनक प्रकार का व्यवहार: यह सर्वविदित है कि हर जगह विद्वान और शिक्षा के अधिकारी ज्ञान और शिक्षा के अनुसार निर्णय लेते हैं। वे उन सभी के प्रति सम्मान और मित्रता का भाव रखते हैं जो उनके साथ हैं।

जहाँ कहीं भी उन्हें ज्ञान और विद्या मिलती है, वे अपने पेशे के कारण वहाँ आते हैं। यहाँ तक कि जब कोई शत्रु देश का प्रोफेसर इस देश में आता है, तो विद्वान और विश्वविद्यालय के व्याख्याता उसकी विद्या के प्रति सम्मान के कारण उससे मिलने जाते हैं और उसका आदर करते हैं।

लेकिन जब (इस्तांबुल पर आक्रमण के दिनों में) ब्रिटिश पादरियों की सर्वोच्च परिषद ने शेखुल-इस्लाम के कार्यालय से पूछे गए छह प्रश्नों का छह सौ शब्दों में उत्तर मांगा, तो एक विद्वान व्यक्ति, जो शिक्षा के देशी अधिकारियों के अनादर का शिकार रहा है, ने छह शब्दों का उत्तर दिया और इसे व्यापक स्वीकृति मिली। उसी विद्वान व्यक्ति ने कुरान से प्राप्त सच्चे ज्ञान से पश्चिम के कुछ अधार्मिक दार्शनिकों के सबसे बुनियादी सिद्धांतों और विचारों का विरोध किया, और अपने विचार और विश्वास के तरीके में विजय प्राप्त की। इसके अलावा, दूसरे संविधान की घोषणा से छह महीने पहले, उन्होंने धार्मिक विद्वानों और आधुनिक विज्ञान के विद्वानों दोनों को बहस के लिए चुनौती दी, और खुद कोई सवाल नहीं पूछा, उनके सवालों के पूरी तरह से सही जवाब दिए। 87 अपना सारा जीवन इस राष्ट्र की खुशी के लिए समर्पित करने के बाद, उन्होंने उन्हें रोशन करने के लिए उनकी भाषा में लगभग सौ ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। लेकिन यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिन लोगों ने उस व्यक्ति को - एक सह-नागरिक, सह-धर्मी, मित्र और भाई को - सबसे अधिक कष्ट पहुंचाया है, जो लोग उसके प्रति शत्रुता रखते रहे हैं और वास्तव में उसका अनादर करते रहे हैं, वे औपचारिक शिक्षा और धार्मिक मामलों के विभागों के कुछ सदस्य हैं।

अब, इस बारे में आपका क्या कहना है? क्या यह सभ्यता है? क्या यह शिक्षा के प्रति समर्पण है? क्या यह देशभक्ति है? क्या यह राष्ट्रवाद है? क्या यह गणतंत्रवाद है? भगवान न करे! यह इनमें से कुछ भी नहीं है। यह ईश्वरीय नियति है जो एक विद्वान व्यक्ति को उस मित्रता के बजाय शत्रुता प्राप्त करने की अनुमति देती है जिसकी उसे आशा थी, या वह सम्मान जो उसे मिलना चाहिए था, ताकि वह ज्ञान के दिखावे के साथ कुरान और ईमान की सेवा करने के अपने पवित्र इरादे को दूषित न करे।

निष्कर्ष

एक आश्चर्यजनक हमला जो वास्तव में कृतज्ञता का साधन था

वे अत्यंत अहंकारी सांसारिक लोग अपने अहंकार में इतने संवेदनशील होते हैं कि यदि मेरे साथ उनका हालिया व्यवहार सचेतन होता, तो

---

87 यह संबोधन का तरीका नये सईद का नहीं है। यह पुराने या भूतपूर्व सईद का है।
और यह सांसारिक लोगों में से अभिमानी उत्पीड़कों पर निर्देशित है।

इसे किसी चमत्कारी कार्य या महान प्रतिभा के रूप में माना जाता है। यह इस प्रकार है:

मानो वे अपने अहंकार के संवेदनशील संतुलन के माध्यम से मुझमें कुछ हद तक दिखावटी अहंकार को देखते हैं, वे मेरे अहंकार का हिंसक तरीके से प्रतिकार करते हैं, जिसे मैंने नहीं देखा है। पिछले आठ या नौ वर्षों में, मैंने आठ या नौ बार अनुभव किया है कि उनके द्वारा अन्यायपूर्ण व्यवहार किए जाने के बाद, मैंने ईश्वरीय नियति पर विचार किया है और अपनी आत्मा की चालों की खोज की है, यह सोचते हुए कि, "भाग्य ने उन्हें मुझे परेशान करने के लिए क्यों भेजा है?" हर बार मुझे समझ में आया है कि मेरी आत्मा ने अहंकार के लिए एक स्वाभाविक, अचेतन प्रवृत्ति दिखाई है, या उसने मुझे जानबूझकर धोखा दिया है। इसलिए, मैंने निष्कर्ष निकाला है कि ईश्वरीय नियति ने इन अत्याचारियों के गलत कामों के माध्यम से मेरे साथ न्याय किया।

उदाहरण के लिए, इस गर्मी में मेरे दोस्त मेरे लिए एक बढ़िया घोड़ा लेकर आए थे जिस पर मैं सवार होकर भ्रमण क्षेत्र में गया। चूंकि मनोरंजन की स्वार्थी इच्छा

मेरे अनजाने में ही मेरे अन्दर प्रकट हुई, सांसारिक लोगों ने मेरी उस इच्छा का इतनी तीव्रता से प्रतिकार किया कि उन्होंने न केवल उस छिपी हुई इच्छा को नष्ट कर दिया, बल्कि कई अन्य चीजों के प्रति मेरी भूख को भी नष्ट कर दिया। यहाँ तक कि ऐसा हुआ कि रमजान के बाद, सुदूर अतीत के एक महान, पवित्र, संत विद्वान की हमारी सेवा के लिए एक प्रशंसात्मक संकेत मिलने पर, जिसका अर्थ था अदृश्य को भेदने का उनका एक अद्भुत कार्य, मेरी आत्मा ने, कृतज्ञता की आड़ में, मेरे भाइयों और बहनों की ईमानदारी और धर्मपरायणता और आगंतुकों द्वारा मेरे प्रति दिखाए गए सम्मान और हमारे बारे में उनकी अच्छी राय के कारण एक दिखावटी अहंकार धारण करने का प्रयास किया। अचानक, अपनी असीम संवेदनशीलता के साथ और मानो दिखावे के सबसे छोटे निशान को भी महसूस करते हुए, सांसारिक लोगों ने मुझ पर हमला कर दिया। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उनका गलत काम मेरे लिए ईमानदारी को पुनः खोजने का साधन बन गया।

और कह दो, "ऐ मेरे रब! मैं शैतानों की उकसाहटों और उकसावे से तेरी शरण में आता हूँ। ऐ मेरे रब, मैं तेरी शरण में आता हूँ कि कहीं वे मेरे पास न आ जाएँ।" (23:97-98)

हे ईश्वर! हे रक्षक! हे सर्वश्रेष्ठ संरक्षक! मुझे और मेरे मित्रों को दुष्ट आत्मा और शैतान की बुराई से, और जिन्न और मनुष्यों की बुराई से, और गुमराह लोगों और विद्रोह करने वालों की बुराई से सुरक्षित रख। आमीन। आमीन।

आमीन.

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

तेईसवीं चमक

तेईसवीं चमक

प्रकृति पर या प्रकृतिवादी नास्तिकता का खंडन

एक अनुस्मारक

T प्रकृतिवादियों का अविश्वास करने का तरीका बेहद तर्कहीन और अंधविश्वासी मान्यताओं पर आधारित है। लेकिन ऐसे प्रसिद्ध, बुद्धिमान प्रकृतिवादी दार्शनिक इस तरह के स्पष्ट रूप से अंधविश्वासी विचार को क्यों स्वीकार कर पाते हैं? सच तो यह है कि वे अपने तरीके की वास्तविकता को नहीं समझ पाते, जिससे ऐसे अंधविश्वासी विश्वासों को जन्म मिलता है, हालाँकि उन तक तर्कसंगत रूप से पहुँचना या उन्हें स्वीकार करना असंभव है। वे कुरान और विश्वास की सच्चाइयों और मूल तत्वों पर हिंसक हमला करते हैं, जो कुछ भी वे नहीं समझ पाते उसे अंधविश्वासी बताकर उसकी निंदा करते हैं और प्रकृति पर अपना अविश्वास आधारित करते हैं। कुरान की आयत, उनके रसूलों ने कहा: "क्या आकाशों और पृथ्वी के निर्माता ईश्वर के बारे में कोई संदेह हो सकता है?" (14:10), जो ईश्वर के अस्तित्व और एकता की घोषणा करता है, वास्तव में चर्चा की आवश्यकता के लिए बहुत स्पष्ट है। इसलिए, मैं यह दिखाने की कोशिश करूँगा कि ऐसा क्यों है और प्रकृतिवादी दार्शनिकों ने अपने तरीकों से जो परिणाम निकाले हैं, उनका तर्कसंगत रूप से अनुमान लगाना असंभव क्यों है। हालाँकि, चूँकि रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों में ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये जा चुके हैं , इसलिए मैं यहाँ कुछ अन्य प्रमाण प्रस्तुत करूँगा और जहाँ आवश्यक होगा, वहाँ कुछ भिन्न प्रमाणों का संक्षिप्त उल्लेख करूँगा।

परिचय

हे मानव! कुछ ऐसे भयानक वाक्य हैं जो लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अविश्वास को दर्शाते हैं। कुछ विश्वासी भी इनका इस्तेमाल करते हैं, बिना यह जाने कि इनका असल में क्या मतलब है। मैं इनमें से तीन सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों के बारे में बताऊँगा।

पहला : “कारणों ने इसे जन्म दिया है।”

दूसरा : “चीजें अपने आप बनी हैं।”

तीसरा : "यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसे आवश्यक बनाती है और इसका निर्माण करती है।"

वास्तव में, चूँकि वस्तुएँ निर्विवाद रूप से विद्यमान हैं, और, जैसा कि स्पष्ट रूप से देखा गया है, प्रत्येक वस्तु महान कलात्मकता और अनेक बुद्धिमान उद्देश्यों के साथ अस्तित्व में आती है, और चूँकि कुछ भी शाश्वत या अनादि नहीं है, और प्रत्येक वस्तु समय के भीतर अस्तित्व में आती है, तो हे अविश्वासी, या तो वस्तुएँ, उदाहरण के लिए, वह पशु, निर्जीव, अचेतन, बहरे और अंधे भौतिक कारणों द्वारा एक साथ मिलकर सार्वभौमिक ज्ञान, चेतना और इच्छा की आवश्यकता के अनुसार आविष्कृत की गई हैं, या वे स्वयं ही बनती हैं, या प्रकृति, या जिसे आप प्राकृतिक शक्तियाँ कहते हैं, उसके कारण यह अस्तित्व में आई है। एक चौथा विकल्प है जो परम ज्ञान और इच्छा के साथ मिलकर, महामहिम के सर्वशक्तिमान की शक्ति ने इसका आविष्कार किया है। चूँकि इन चार के अलावा वस्तुओं के अस्तित्व को समझाने का कोई अन्य तरीका नहीं है, यदि पहले तीन को निर्णायक रूप से असंभव सिद्ध किया जा सकता है, तो चौथा तरीका, जो कि ईश्वरीय एकता का तरीका है, अनिवार्य रूप से और निस्संदेह सत्य सिद्ध होगा।

पहला तरीका

यह सिद्धांत है कि भौतिक कारणों के एक साथ आने से चीजें अस्तित्व में आती हैं। इस तरह के रुख की असत्यता और असंभवता को दर्शाने वाले कई तर्कों में से मैं केवल तीन का उल्लेख करूंगा।

पहली असंभवता

मान लीजिए कि किसी फार्मेसी में सैकड़ों जार हैं जो अलग-अलग पदार्थों से भरे हैं। हम उनसे किसी तरह की तरल दवा या मरहम बनाना चाहते हैं। इसलिए हम फार्मेसी जाते हैं और पता लगाते हैं कि आवश्यक सामग्री क्या है और हमें प्रत्येक का कितना उपयोग करना चाहिए। हम देखते हैं कि एक चरम-

हर घटक से सटीक मात्रा लेनी चाहिए। यदि थोड़ी सी भी मात्रा कम या ज्यादा ली जाए तो दवा और मलहम दोनों ही अपने विशेष गुण खो देंगे और किसी काम के नहीं रहेंगे।

क्या यह संभव है या कल्पना की जा सकती है कि उन जार को तूफ़ान से गिरा दिया जाए और प्रत्येक घटक से बिल्कुल आवश्यक मात्रा में दवा और मरहम बन जाए? क्या इस तरह के संयोग को संभव मानने से ज़्यादा अंधविश्वास या बेतुका कुछ और हो सकता है?

इस उदाहरण में हमें प्रत्येक वस्तु, विशेष रूप से प्रत्येक जीवित वस्तु को एक सजीव मरहम और प्रत्येक पौधे को एक जीवित औषधि के रूप में सोचना चाहिए। वे बहुत सी चीज़ों से अत्यंत सटीक मात्रा में लिए गए असंख्य पदार्थों से बने हैं। भौतिक कारणों के संयोगवश एक साथ आने के कारण उनका श्रेय देना, किसी भी मरहम या औषधि के निर्माण की तुलना में कहीं अधिक असंभव और अकल्पनीय है, जो पदार्थों के सटीक मात्रा में एक साथ आने के परिणामस्वरूप होता है, जैसा कि उदाहरण में दिखाया गया है।

संक्षेप में, यह केवल एक सर्वव्यापी, असीम बुद्धि, एक अनंत ज्ञान और एक सर्वव्यापी इच्छाशक्ति द्वारा ही संभव है कि ब्रह्मांड की इस विशाल फार्मेसी में किसी भी जीवित चीज़ को पदार्थों से अत्यंत सटीक मात्रा में लिए गए अवयवों से बनाया जा सकता है और दिव्य नियति या निर्धारण और निर्णय के तराजू पर मापा जा सकता है। जो व्यक्ति यह दावा करता है कि वे अंधे, बहरे और अज्ञानी "प्राकृतिक कारणों और शक्तियों" या बाढ़ जैसे तत्वों का काम हैं, वह उस व्यक्ति से अधिक मूर्ख है जो दावा करता है कि उदाहरण में दवा जार के पलट जाने के परिणामस्वरूप स्वयं बनी है।

दूसरी असंभवता

यदि सब कुछ "प्राकृतिक कारणों" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, न कि सर्वशक्तिमान, एक और अद्वितीय के लिए, तो इसका मतलब है कि कई भौतिक तत्व और कारण हर जीवित चीज़ या प्राणी के शरीर में मौजूद होने चाहिए और काम करना चाहिए। हालाँकि, इतने सारे अलग-अलग और परस्पर विरोधी कारण और तत्व अपने आप ही एकदम सही क्रम में और बेहद सटीक माप के साथ एक साथ आते हैं, यहाँ तक कि सबसे छोटे जीव, जैसे कि एक छोटी सी मक्खी के शरीर में भी, इतना स्पष्ट रूप से अकल्पनीय है कि थोड़ी सी भी चेतना वाला व्यक्ति कह सकता है, "यह अकल्पनीय है; यह नहीं हो सकता।" वास्तव में, एक मक्खी के छोटे से शरीर का ब्रह्मांड के अधिकांश तत्वों और कारणों के साथ संबंध और जुड़ाव है; वास्तव में, यह उनका सारांश या सूचकांक है। यदि इसे शाश्वत, शक्तिशाली एक के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो उन तत्वों और भौतिक कारणों को इसमें मौजूद होना चाहिए और अपने आप ही काम करना चाहिए। यह भी आवश्यक है

कि वे उसकी आँखों की प्रत्येक कोशिका में मौजूद हों और काम करें, जो उसके शरीर के छोटे नमूने हैं। क्योंकि अगर किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए ज़िम्मेदार कारण या एजेंट भौतिक प्रकृति के हैं, तो उन्हें उसके परिणाम के तत्काल आसपास, बल्कि उसके अंदर मौजूद होना चाहिए। इसलिए, किसी मक्खी को "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए यह ज़रूरी है कि वे कारण और तत्व उसकी प्रत्येक कोशिका में मौजूद हों और काम करें। यहां तक कि कुतर्क करने वाले सबसे मूर्ख लोग भी ऐसी धारणा पर शर्मिंदा होंगे।

तीसरी असंभवता

यह एक स्थापित नियम है कि "किसी विशेष व्यक्तित्व वाली एक भी, अनोखी चीज़ केवल एक ही, अनोखे स्रोत से ही उत्पन्न हो सकती है।" यदि, विशेष रूप से, कोई चीज़ एक जीवित चीज़ है जिसका जीवन पूरी तरह से व्यवस्थित और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित है, तो यह स्वतः ही प्रदर्शित करेगा कि यह कई, अलग-अलग हाथों से उत्पन्न नहीं हुई है, जो निश्चित रूप से बहुत भ्रम और संघर्ष का कारण बनेगी, बल्कि यह एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति के हाथ से उत्पन्न हुई है। इसके अलावा, किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए असंख्य निर्जीव, अज्ञानी, अप्रतिबंधित, अचेतन, अंधे और बहरे "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों का यादृच्छिक रूप से एक साथ आना केवल असीमित संभावनाओं के बीच उनके अंधेपन और बहरेपन को बढ़ाएगा। इसलिए, किसी भी प्राणी को, जिसमें असंख्य तत्वों से परिपूर्ण क्रम और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित तरीके से बना एक अद्वितीय, विशेष व्यक्तित्व है, ऐसे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना उतना ही अनुचित होगा जितना कि एक साथ असंख्य असंभवताओं को स्वीकार करना।

इन असंभवताओं को अनदेखा करते हुए, भौतिक कारण या कारक या शक्तियाँ किसी चीज़ को सीधे संपर्क के ज़रिए प्रभावित करती हैं। हालाँकि, उनका संपर्क केवल चीज़ों या प्राणियों के बाहरी हिस्सों से होता है। लेकिन हम देखते हैं कि विशेष रूप से जीवित प्राणियों के अंदरूनी हिस्से, जहाँ भौतिक या "प्राकृतिक" कारणों या एजेंटों के हाथों का कोई संपर्क नहीं है, उनके बाहरी हिस्सों की तुलना में दस गुना बेहतर ढंग से व्यवस्थित, अधिक नाजुक और कलात्मक हैं। सबसे छोटी जीवित चीज़ें, सबसे छोटे जीव, जिन तक भौतिक या "प्राकृतिक" कारणों और एजेंटों के हाथ नहीं पहुँच सकते हैं और जिनके साथ उनका सीधा संपर्क नहीं है, यहाँ तक कि उनके बाहरी हिस्सों से भी नहीं, वे सबसे बड़े जीवों की तुलना में कला में अधिक विचित्र और अद्भुत हैं और सृजन में अधिक आश्चर्यजनक हैं। ऐसा होने पर, केवल वह व्यक्ति जो निर्जीव, अज्ञानी, अपरिष्कृत, दूरदर्शी और परस्पर विरोधी कारणों और तत्वों की तुलना में सौ गुना अधिक बहरा और अंधा है, इन प्राणियों को उन कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहरा सकता है।

दूसरा तरीका

यह दावा है कि चीज़ें अपने आप बनती हैं। यह कई मायनों में उतना ही अकल्पनीय और असंभव है। उदाहरण के तौर पर, हम उनमें से तीन को समझाएँगे।

पहली असंभवता

हे सृष्टिकर्ता को नकारने वाले! तुम असंभव को भी कई तरीकों से संभव मान सकते हो। क्योंकि तुम अस्तित्व में हो और कोई साधारण, निर्जीव या अपरिवर्तनीय पदार्थ नहीं हो। बल्कि तुम एक पूरी तरह से सुव्यवस्थित और निरंतर नवीनीकृत होने वाली फैक्ट्री या एक अद्भुत महल की तरह हो जो निरंतर परिवर्तन और नवीनीकरण से गुजरता रहता है। तुम्हारे शरीर में असंख्य कण निरंतर काम कर रहे हैं, जिनका ब्रह्मांड के साथ संबंध और पारस्परिक संबंध है, विशेष रूप से तुम्हारी प्रजाति के प्रावधान और स्थायित्व के संबंध में। तुम्हारे शरीर में मौजूद कण उन संबंधों और संबंधों को नष्ट न करने के लिए सावधान रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे पूरे ब्रह्मांड को तुम्हारे साथ संबंधों के नजरिए से देखते हैं और उसी के अनुसार अपनी स्थिति बनाते हैं।

इसलिए, यदि आप यह स्वीकार नहीं करते कि आपके शरीर के कण शाश्वत, सर्वशक्तिमान के नियम के अनुसार चलने वाले छोटे अधिकारी नहीं हैं, या उनकी सेना में से किसी एक के सैनिक नहीं हैं, या दिव्य नियति की कलम की नोक नहीं हैं, या दिव्य शक्ति की कलम की नोक नहीं हैं, तो आपकी आंख में काम करने वाले प्रत्येक कण में आपके पूरे शरीर के साथ-साथ पूरे ब्रह्मांड को देखने में सक्षम आंख होनी चाहिए, जिसके साथ आपका शरीर जुड़ा हुआ है और संबंधित है। आपको प्रत्येक कण को सौ प्रतिभाओं के बराबर बुद्धि भी देनी होगी; इसमें आपके पूरे अतीत और भविष्य, आपके पूर्वजों और वंशजों, आपके शरीर को बनाने वाले तत्वों की उत्पत्ति और आपके पोषण के स्रोतों को जानने की क्षमता होनी चाहिए। एक हज़ार प्लेटो की चेतना और ज्ञान को एक अज्ञानी कण को आरोपित करना स्पष्ट रूप से गुमराह करने वाला है।

दूसरी असंभवता

आपका शरीर भी एक अद्भुत महल जैसा है जिसमें हज़ारों गुंबद हैं और पत्थर एक दूसरे को सहारा देते हैं। बल्कि, आपका शरीर किसी भी महल से हज़ार गुना ज़्यादा अद्भुत है। क्योंकि आपके शरीर का वह महल लगातार सही क्रम में नवीनीकृत होता रहता है। भले ही हम आपकी अनदेखी करें

आत्मा, आपका हृदय और अन्य अमूर्त क्षमताएँ, जिनमें से प्रत्येक अत्यंत अद्भुत है, आपके शरीर का प्रत्येक सदस्य एक गुंबददार महल की तरह है। पूर्ण क्रम और संतुलन में एक दूसरे का समर्थन करते हुए, आपके परमाणु कला और शक्ति के चमत्कार बनाते हैं, जैसे कि आँखें और जीभ। यदि वे परमाणु उस ब्रह्मांड के निर्माता के आदेशों का पूर्ण आज्ञाकारिता में काम करने वाले अधिकारी नहीं होते, तो उनमें से प्रत्येक को शरीर के अन्य सभी परमाणुओं पर हावी होना पड़ता और उन पर हावी होना पड़ता, और कई विशेषताओं का मूल होना पड़ता जो विशेष रूप से अनिवार्य रूप से अस्तित्व में रहने वाले एक से संबंधित हैं, फिर भी एक ही समय में पूरी तरह से स्वतंत्र और आश्रित दोनों होना पड़ता। इसलिए, किसी भी अस्तित्ववान प्राणी को, जिसमें एकता और विशिष्टता के एकल एक का कार्य होने के कारण एक अद्वितीय व्यक्तित्व है, उसे बनाने वाले असंख्य परमाणुओं को जिम्मेदार ठहराना, एक स्पष्ट, सौ गुना असंभव है।

तीसरी असंभवता

अगर तुम्हारा शरीर उस सर्वशक्तिमान की कलम से न लिखा गया होता जो एक और अद्वितीय है, बल्कि प्रकृति या "प्राकृतिक" कारणों का काम होता, तो प्रकृति के उतने ही मुद्रण-खंड या साँचे होने चाहिए थे जितने उसके कोशिकाएँ और यौगिक आपके शरीर में एक दूसरे के भीतर समाहित हैं। उदाहरण के लिए, तुम्हारे हाथ में जो किताब है, उसे या तो किसी एक मुंशी ने अपने ज्ञान के आधार पर लिखा है, या अगर तुम दावा करते हो कि यह अपने आप या प्रकृति द्वारा बनाई गई है, तो उसमें जितने अक्षर हैं, उतनी ही कुंजियाँ होनी चाहिए। एक छापेखाने में उतने ही लोहे के अक्षर होते हैं जितने वर्णमाला में अक्षर होते हैं। एक शब्द लिखने के लिए उन्हें एक-एक करके व्यवस्थित करना पड़ता है, और इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक किताब के जितने अक्षर होते हैं, उतने ही लोहे के अक्षर भी एक किताब के लिए ज़रूरी होते हैं। इसके अलावा, एक तरह की सुलेख कला होती है जिसमें सिर्फ़ एक बड़ा अक्षर होता है, फिर भी, जिसमें, उदाहरण के लिए, पाँच या छह पन्नों का एक पूरा कुरानिक सूरा लिखा जा सकता है। इसका मतलब यह है कि प्रिंटिंग प्रेस में एक अक्षर लिखने के लिए हमें हज़ारों लोहे के अक्षरों की ज़रूरत होती है। इसी तरह, हर जीवित चीज़ या प्राणी ऐसे ही एक अक्षर की तरह है। इसमें ब्रह्मांड में मौजूद लगभग हर चीज़ समाहित है। इसलिए, जिस तरह किसी किताब को खुद से या उसके लोहे के अक्षरों से जोड़ने के लिए उन अक्षरों को प्रिंटिंग प्रेस में सचेत, सार्थक तरीके से खुद से एक साथ आने की ज़रूरत होती है, अगर हम किसी जीवित चीज़ या प्राणी को खुद से जोड़ते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि ब्रह्मांड के सभी परमाणु या असंख्य नमूने सचेत रूप से इसे बनाने के लिए एक साथ आए हैं। भले ही हम ऐसा न करें

इस हास्यास्पद विचार को स्वीकार करें, जिसमें जीवित प्राणी के कणों, यहां तक कि ब्रह्मांड के कणों जितनी ही असंभवताएं शामिल हैं, यह जीवन और इसकी उत्पत्ति, या एक सचेत जीवित प्राणी की कई अमूर्त क्षमताओं, जैसे कि कारण, चेतना और इच्छाशक्ति, की व्याख्या करने से असीम रूप से दूर है।

तीसरा रास्ता

यह दावा है कि "यह स्वाभाविक है; प्रकृति ने इसे आवश्यक बनाया है और इसे बनाया है।" इस दावे में कई असंभवताएँ भी शामिल हैं, जिनमें से केवल तीन निम्नलिखित हैं:

पहली असंभवता

यदि जीवित प्राणियों में देखी जाने वाली कला और रचनात्मकता, जो अनंत ज्ञान, बुद्धि और इच्छाशक्ति प्रदर्शित करती है, को निर्धारण की कलम और अनन्त सूर्य की शक्ति के लिए नहीं बल्कि अंधे, बहरे और अचेतन प्रकृति और "प्राकृतिक शक्तियों" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब है कि हम स्वीकार करते हैं कि या तो प्रकृति को हर प्राणी में इसका आविष्कार करने के लिए असंख्य मशीनें या प्रिंटिंग प्रेस मौजूद होना चाहिए या प्रकृति को हर प्राणी में ब्रह्मांड बनाने और उसे संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, इच्छाशक्ति, शक्ति और बुद्धि शामिल करनी चाहिए।

मान लीजिए कि हम हर पारदर्शी चीज़ में, हर कांच के टुकड़े या पानी के बुलबुले में सूरज का प्रतिबिंब देखते हैं। अगर हम हर पारदर्शी चीज़ में दिखने वाले सूरज को आसमान में मौजूद एक और अकेले सूरज के लिए जिम्मेदार नहीं मानते, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि सभी चीज़ों में, यहाँ तक कि उन चीज़ों में भी जो इतनी छोटी हैं कि उनमें माचिस की तीली भी नहीं समा सकती, एक छोटा सूरज है जो आसमान में मौजूद सूरज के सभी गुणों को समेटे हुए है। इसके अलावा, हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि जितने सूरज का प्रतिबिंब हर कांच के टुकड़े या समुद्र, नदी या झील आदि में मौजूद हर बुलबुले में है, उतने ही सूरज हैं।

ठीक उसी तरह, अगर सभी विद्यमान चीजें, सजीव या निर्जीव, शाश्वत सूर्य के नामों की अभिव्यक्तियों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि हर चीज, विशेष रूप से हर जीवित चीज या प्राणी, अपने आप में एक प्रकृति या शक्ति या, काफी सरल रूप से, एक देवता है, जिसके पास अनंत ज्ञान, इच्छा, शक्ति और बुद्धि है। ऐसा विचार ब्रह्मांड में असंभवताओं में सबसे झूठा और अंधविश्वासी है। जो कोई भी ब्रह्मांड के निर्माता की कला को अचेतन प्रकृति या निश्चित रूप से मानता है, वह अचेतन प्रकृति या निश्चित रूप से अचेतन प्रकृति को जिम्मेदार ठहराता है, तो यह अचेतन प्रकृति या निश्चित रूप से अचेतन प्रकृति को जिम्मेदार ठहराता है।

नाममात्र की शक्तियों में किसी भी अन्य प्राणी की अपेक्षा चेतना का अभाव अधिक होता है।

दूसरी असंभवता

अगर उन सभी पूरी तरह से व्यवस्थित, और सबसे कलात्मक और बुद्धिमानी से गढ़ी गई चीजों और प्राणियों को एक असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब यह होगा कि प्रकृति को मिट्टी के हर टुकड़े में उतनी ही फैक्ट्रियाँ और प्रिंटिंग प्रेस होनी चाहिए जितनी यूरोप में हैं ताकि मिट्टी का हर टुकड़ा वहाँ उगने वाले फूलों और फलदार पेड़ों के निर्माण और विकास का साधन बन सके। क्योंकि मिट्टी का एक बर्तन उन कई अलग-अलग फूलों को आकार और रूप देने की वास्तविक क्षमता प्रदर्शित करता है जिनके बीज उसमें दबे होते हैं। इसलिए, अगर उन फूलों को महामहिम के सर्वशक्तिमान व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो मिट्टी में प्रत्येक फूल के लिए एक अलग मशीन होनी चाहिए।

शुक्राणुओं और अंडों की तरह, सभी बीज एक ही तत्वों से बने होते हैं। प्रत्येक ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन से बना होता है, और हवा, पानी, गर्मी और प्रकाश जैसी अचेतन चीजों के प्रभावों के संपर्क में आता है। लेकिन हम देखते हैं कि प्रत्येक फूल का एक विशेष आकार, गंध और रंग होता है, और वह दूसरों से पूरी तरह अलग होता है। इसलिए, इसके लिए आवश्यक है कि उस मिट्टी में उतनी ही फैक्ट्रियाँ हों जितनी यूरोप में हैं ताकि वे सभी अलग-अलग जीवित कपड़े, हज़ारों तरह के कढ़ाई वाले कपड़े बुने जा सकें।

इस प्रकार, आप देख सकते हैं कि प्रकृतिवादियों और भौतिकवादियों के दावे कितने अनुचित हैं, तथा प्रकृति या कारणों या स्वयं वस्तुओं को रचनात्मकता का श्रेय देना कितना अवैज्ञानिक और अंधविश्वासपूर्ण है।

यदि आप पूछें: प्रकृति को अस्तित्व का श्रेय देने से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ कैसे गायब हो जाती हैं जब अस्तित्व को अद्वितीय, सभी के लिए शाश्वत रूप से वांछित माना जाता है? अस्तित्व, जो प्रकृति को दिए जाने पर अकल्पनीय है, वह ईश्वर, एक और अद्वितीय को दिए जाने पर कैसे आसान और आवश्यक हो जाता है?

उत्तर : हमने देखा है कि पृथ्वी पर प्रत्येक पारदर्शी वस्तु में एक सूर्य के अस्तित्व की व्याख्या करते समय, जिसमें महासागरों में पानी की प्रत्येक बूंद या बुलबुला भी शामिल है, यह अकल्पनीय और असंभव है कि जितने सूर्य प्रतीत होते हैं, उतने हो सकते हैं। लेकिन अगर हम उन (प्रतिबिंबित) सूर्यों को आकाश में एक ही सूर्य के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो उनके अस्तित्व की व्याख्या करना बेहद आसान है। (यह भी कहा जा सकता है कि सूर्य का अस्तित्व असंख्य परावर्तित सूर्यों के अस्तित्व को आवश्यक और अपरिहार्य बनाता है।) इसी तरह, सभी विद्यमान चीजों को एक अद्वितीय, शाश्वत रूप से सभी के लिए चाहने योग्य के लिए जिम्मेदार ठहराना उनके अस्तित्व को इतना आसान बना देता है कि हम यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाते कि उनका अस्तित्व आवश्यक है।

अनिवार्य और अपरिहार्य। उनके और उस अद्वितीय के बीच एक संबंध उनके अस्तित्व के लिए पर्याप्त है। लेकिन अगर यह संबंध टूट जाए, और हर चीज़ को प्रकृति या खुद पर छोड़ दिया जाए, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि एक मक्खी जैसे छोटे जीव को बनाने के लिए, जो ब्रह्मांड का एक छोटा सा नमूना है, अंधी और बहरी प्रकृति के पास पूरे ब्रह्मांड को बनाने और उस पर शासन करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, शक्ति और बुद्धि होनी चाहिए। यह हज़ार गुना असंभव है।

संक्षेप में, जिस प्रकार यह अकल्पनीय और असंभव है कि अनिवार्यतः अस्तित्वमान परमेश्वर के दिव्य सार में कोई साझेदार या उसके जैसा कोई हो, उसी प्रकार उसकी रचना और उसकी रचना पर प्रभुत्व में अन्यों की भागीदारी या हस्तक्षेप भी अकल्पनीय और असंभव है।

सवाल के दूसरे हिस्से के लिए, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई अन्य हिस्सों में कहा गया है, जब अस्तित्व को अद्वितीयता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी चीजों का अस्तित्व उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक चीज का। लेकिन अगर इसे "प्राकृतिक" कारणों या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक चीज का अस्तित्व उतना ही मुश्किल हो जाता है जितना कि सभी चीजों के लिए।

जब कोई व्यक्ति सेना में शामिल होता है या राज्य से अधिकारी के रूप में जुड़ा होता है, तो वह व्यक्ति उन कर्तव्यों की पूर्ति का साधन बन सकता है जो उसकी व्यक्तिगत शक्ति और प्रभाव से लाखों गुना अधिक होते हैं।

वे राज्य के नाम पर राजा को भी बंदी बना सकते हैं। फिर भी यह व्यक्ति उन सभी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपकरण और शक्ति नहीं रखता है, जिनमें वे भूमिका निभाते हैं। उनके संबंध के कारण, सेना, जो उनका समर्थन बिंदु है, ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

इसलिए, इस एक व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कोई भी कर्तव्य सेना या राज्य के कर्तव्यों जितने ही महान हो सकते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे ईश्वर के एक अधिकारी के रूप में एक चींटी फिरौन के महल को नष्ट करने में सक्षम हो, या एक मक्खी निम्रोद को मार डाले, या एक चीड़ का बीज, जो गेहूँ के दाने के आकार का हो, एक विशाल चीड़ के पेड़ के सभी भागों को उत्पन्न कर दे।88 यदि व्यक्ति का सेना के साथ संबंध तोड़ दिया जाए, और उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाए, तो या तो उसकी शक्ति केवल उसके अपने तक ही सीमित हो जाएगी, या

88 सृष्टिकर्ता से सम्बद्ध होने के कारण वह बीज ईश्वरीय नियति या निर्धारण के आदेश के अधीन कार्य करता है तथा अनेक असाधारण कर्तव्यों की पूर्ति का साधन बनता है।
यदि वह संबंध टूट जाता है, तो बीज के निर्माण के लिए एक विशाल चीड़ के पेड़ को बनाने की तुलना में अधिक क्षमता, उपकरण और कौशल की आवश्यकता होती है। चीड़ के पेड़ के सभी भाग, जो दिव्य शक्ति का कार्य है, संभावित पेड़ में मौजूद होंगे - बीज, जो दिव्य नियति का कार्य है। पेड़ को बनाने वाली फैक्ट्री एक बीज है। नियति द्वारा बीज में समाहित पेड़ उस शक्ति के साथ एक पेड़ में विकसित होता है।

उन्हें सेना से जुड़े सभी उपकरण ले जाने होंगे और सेना की शक्ति का उपयोग करना होगा, अगर उन्हें सेना के सदस्य के रूप में वही कर्तव्य निभाने होंगे जो वे करते हैं। यहां तक कि जोकर लोगों को हंसाने के लिए कहानियां और कल्पनाएं गढ़ते हैं, वे भी दूसरे मामले को बताने में शर्म महसूस करेंगे।

संक्षेप में कहें तो, जब सभी चीजों का अस्तित्व अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उसे आवश्यक और अपरिहार्य माना जाता है। लेकिन जब सभी चीजों का अस्तित्व प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वह अतार्किक, असंभव और अकल्पनीय हो जाता है।

तीसरी असंभवता

निम्नलिखित दो तुलनाएँ, जिनका उल्लेख रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में किया गया है, इस असंभवता की व्याख्या करती हैं:

पहली तुलना: एक जंगली, अशिक्षित आदमी एक महल में प्रवेश करता है जो एक विशाल रेगिस्तान में बनाया गया है और सभ्यता के सभी फलों से सजाया गया है-

हजारों अद्भुत, कलात्मक रूप से निर्मित वस्तुओं की जांच करने के बाद, चूंकि महल में कोई भी नहीं है और अपनी अज्ञानता और पर्याप्त बुद्धि की कमी के कारण, वह सोचता है कि महल में मौजूद वस्तुओं में से किसी ने महल को बनाया होगा, जो कुछ भी इसमें है। लेकिन वह जिस भी वस्तु की जांच करता है, वह अपनी कच्ची और अशिक्षित बुद्धि को भी यह विश्वास नहीं दिला पाता है कि उस वस्तु ने महल का निर्माण किया है।

बाद में उसे एक नोटबुक मिलती है जिसमें महल की विस्तृत योजना, उसकी सामग्री की सूची और उसके प्रबंधन के नियम लिखे होते हैं। यह भी असंभव है कि जिस नोटबुक में हाथ, आंखें या औजार नहीं हैं, उसने महल का निर्माण और सजावट की हो। हालाँकि, ऐसा कुछ भी दिखाई न देने के कारण जिससे वह महल के अस्तित्व का श्रेय ले सके, और चूँकि अन्य वस्तुओं की तुलना में वह नोटबुक, जिसमें महल के निर्माण, सजावट और प्रबंधन के नियम हैं, उसके अस्तित्व को समझाने में अधिक सक्षम प्रतीत होती है, इसलिए वह व्यक्ति यह कहने के लिए बाध्य होता है, “यही वह नोटबुक है जिसने महल का डिज़ाइन बनाया और बनाया, और इसे उन सभी वस्तुओं से सजाया, जिन्हें इसने बनाया और इस महल में रखा।” क्या यह सरासर मूर्खता और बकवास नहीं है?

जैसा कि इस तुलना में, एक प्रकृतिवादी जो ईश्वर को नकारता है, ब्रह्मांड के इस महल में प्रवेश करता है, जो कि ऊपर वर्णित तुलना में महल की तुलना में असीम रूप से अधिक सुव्यवस्थित और अधिक परिपूर्ण है, और जो हर जगह ज्ञान के चमत्कारों से सुसज्जित है। यह न सोचते हुए कि यह ईश्वर का काम है।

अनिवार्यतः विद्यमान प्राणी की कला, जो आकस्मिकता के क्षेत्र से परे है, और उस विचार से बचते हुए, वह उस पर ध्यान केंद्रित करता है जिसे वे गलत तरीके से "प्रकृति" कहते हैं।

प्रकृति वस्तुतः आकस्मिकता के क्षेत्र में ईश्वरीय नियति या निर्धारण की एक मण्डली है। ईश्वरीय नियति या निर्धारण इसका उपयोग अपने निर्णयों को लिखने और मिटाने के लिए करता है। दूसरे दृष्टिकोण से, प्रकृति ईश्वरीय शक्ति के नियमित कार्यों के शीर्षकों या नियमों की एक निरंतर बदलती हुई नोटबुक है, और दुनिया के स्वामी के रूप में उनकी कला के कार्यों की एक सूची है। हालाँकि, ब्रह्मांड के महल में प्रवेश करने वाला प्रकृतिवादी कहता है, “इन सभी चीजों के अस्तित्व के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है। ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता है जो इसे इस 'नोटबुक' से अधिक उपयुक्त ठहरा सके। भले ही इस अंधे, अचेतन, अज्ञानी और शक्तिहीन 'नोटबुक' को ब्रह्मांड के महल का निर्माता मानना पूरी तरह से अनुचित है, जिसके अस्तित्व के लिए स्पष्ट रूप से अनंत ज्ञान और शक्ति की आवश्यकता होती है, क्योंकि मैं शाश्वत निर्माता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, इसलिए मैं बेहतर कहूँगा कि इस 'नोटबुक' ने इस महल को बनाया है।” जिसका हम उत्तर देते हैं:

> हे मूर्ख! प्रकृतिवाद के दलदल से अपना सिर बाहर निकालो और घूमो! तुम महिमा के निर्माता को देखोगे, जिसकी गवाही परमाणुओं से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी चीजें देती हैं, प्रत्येक अपनी जीभ से, और जिसकी ओर वे अपनी उंगली से इशारा करते हैं। उस शाश्वत निर्माता के प्रकटीकरण को देखो, जिसने उस महल को बनाया है और उसका कार्यक्रम उस "नोटबुक" में लिखा है!
> उसकी पुस्तक - कुरान - पर कान लगाओ और अपने निरर्थक शब्दों से बचो!

दूसरी तुलना: **एक बेहद असभ्य, अशिक्षित व्यक्ति एक शानदार बैरक** में प्रवेश करता है। वह एक शानदार ढंग से व्यवस्थित सेना के अनुशासित कार्यों को देखता है जो अपनी ड्रिल कर रही है। एक रेजिमेंट, एक बटालियन और एक सेना कोर बैठते हैं, खड़े होते हैं, मार्च करते हैं, और हथियार उठाते और डालते हैं जैसे कि वे एक ही निजी हों। चूँकि उसका कच्चा दिमाग यह नहीं समझ सकता और इस तरह से इनकार करता है कि सेना राज्य के कानूनों के अनुसार काम करने वाले कमांडर के आदेशों के तहत काम कर रही है, वह कल्पना करता है कि सभी सैनिक एक दूसरे से रस्सियों से बंधे हुए हैं। वह सोचता है कि यह कितनी अद्भुत डोरी होगी और आश्चर्यचकित हो जाता है।

बाद में, शुक्रवार को, वह एक शानदार मस्जिद में जाता है, उदाहरण के लिए अयासोफ़िया (हागिया सोफिया)। वह देखता है कि शुक्रवार की सामूहिक प्रार्थना करने वाले मुसलमानों की मंडली एक व्यक्ति की आवाज़ पर उठती है, झुकती है, सजदा करती है और बैठ जाती है। चूँकि वह शरिया को नहीं जानता है, जो पवित्र ईश्वरीय कानूनों और सिद्धांतों का संग्रह है जो जीवन और पूजा का मार्गदर्शन करते हैं

मुसलमानों के बारे में, वह कल्पना करता है कि मण्डली के सदस्य एक दूसरे से रस्सियों से बंधे हैं जो उन्हें नियंत्रित करते हैं और उन्हें पिल्लों की तरह घुमाते हैं। अपने दिमाग में यह सबसे हास्यास्पद विचार लेकर वह मस्जिद से बाहर निकल जाता है।

इस तुलना की तरह, ईश्वर का प्रकृतिवादी इनकार करने वाला इस दुनिया में प्रवेश करता है, जो एक तरह से अनंत काल के प्रभु की अपनी असंख्य सेनाओं के लिए एक शानदार छावनी है, और दूसरी तरह से अपने सेवकों के लिए शाश्वत, सर्व-पूज्य की एक सुव्यवस्थित मस्जिद है। वह कल्पना करता है कि ब्रह्मांड के क्रम और संचालन के लिए शाश्वत प्रभु की बुद्धि ने जो नियम स्थापित किए हैं - वे नियम जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है और वास्तव में ब्रह्मांड के प्रशासन में उनके कार्यों के शीर्षक हैं -

भौतिक अस्तित्व है और पूरे ब्रह्मांड को संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान और शक्ति है। इन्हें ईश्वरीय शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराने के बजाय, वह ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन को नाममात्र अस्तित्व के इन नियमों के लिए जिम्मेदार ठहराता है, जिन्हें वह "प्रकृति" कहता है - और जिनमें कोई शक्ति, ज्ञान, बुद्धि, चेतना और इच्छा नहीं है - और जिन्हें वह "प्राकृतिक शक्तियाँ" कहता है, जो वास्तव में ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। वह इन शक्तियों को एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में मानता है जो ब्रह्मांड को निर्देशित करने में सक्षम है। यह उपर्युक्त तुलना में मनुष्य के अज्ञान से हज़ार गुना अधिक अपमानजनक अज्ञान है।

संक्षेप में, यदि वह चीज जिसे प्रकृतिवादी "प्रकृति" कहते हैं, उसकी कोई बाह्य वास्तविकता है, तो वह अधिक से अधिक एक कलाकृति हो सकती है, कोई कलाकार नहीं; वह एक डिजाइन हो सकती है, कोई डिजाइनर नहीं; वह आदेशों का एक समूह हो सकती है, आदेशों का जारीकर्ता नहीं; वह ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के नियमों का एक समूह हो सकती है, कोई कानून निर्माता नहीं; ईश्वर की गरिमा के समक्ष एक निर्मित पर्दा हो सकती है, कोई निर्माता नहीं; ईश्वर के कार्य करने के तरीके के अनुसार उत्पन्न हुई कोई चीज, कोई सृजक नहीं; केवल एक कानून हो सकता है, कोई स्वतंत्र, सचेतन शक्ति या शक्तिशाली शक्ति नहीं; और वह अंकित करने के लिए रेखाओं का एक समूह हो सकता है, कोई स्रोत, उत्पत्ति या लेखक नहीं।

निष्कर्ष के तौर पर, चूंकि वस्तुएं और प्राणी अस्तित्व में हैं और, जैसा कि इस ग्रंथ की प्रस्तावना में कहा गया है, उनके अस्तित्व को समझाने के लिए ऊपर वर्णित चार तरीकों के अलावा कोई अन्य तरीका नहीं हो सकता है, और चूंकि इनमें से पहले तीन तरीके, बताई गई असंभवताओं के कारण अमान्य सिद्ध हो चुके हैं, इसलिए आवश्यक रूप से और स्वतःसिद्ध रूप से, चौथा तरीका ही स्पष्ट रूप से एकमात्र वैध तरीका है।

यह ईश्वरीय अस्तित्व और एकता का मार्ग है। यह शुरुआत में उद्धृत आयत से संकेत मिलता है, " क्या ईश्वर, जो आकाशों और पृथ्वी का निर्माता है, के बारे में कोई संदेह हो सकता है?" (14:10), जो स्पष्ट रूप से और निस्संदेह बताता है कि ईश्वर के अस्तित्व या एकता के बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता है, और यह कि प्रत्येक-

हर चीज़ सीधे उसके शक्तिशाली हाथ से निकलती है, और आकाश और पृथ्वी उसके सर्वोच्च नियंत्रण और निर्देशन की मुट्ठी में हैं।

हे प्रकृति और प्राकृतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देने वाले! हर चीज़ की प्रकृति, चीज़ों की तरह ही, बनाई गई है, क्योंकि यह कला से भरपूर, मौलिक और अपने आप में विशिष्ट है। इसके अलावा, हर चीज़ की तरह, इसका स्पष्ट कारण भी बनाया गया है। इसके अलावा, हर चीज़ का अस्तित्व कई "उपकरणों" के अस्तित्व पर निर्भर करता है। इसलिए, एक परम शक्तिशाली होना जो किसी कारण का परिणाम है , चाहिए जो चीज़ों और उनकी प्रकृति और कारणों, और आवश्यक उपकरणों दोनों को बनाता है।

और उस सर्वशक्तिमान को अपनी रचनात्मकता और अस्तित्व पर प्रभुत्व में नपुंसक कारणों को साझा करने की क्या आवश्यकता है? भगवान ऐसा विचार न करें!
बल्कि, वह चीज़ों को उनके कारणों के साथ बनाता है ताकि वह अपने नामों और अपनी बुद्धि की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित कर सके। ऐसा करके, वह एक स्पष्ट, व्यवस्थित कारण-और-प्रभाव संबंध स्थापित करता है, और स्पष्ट कारणों को लोगों की नज़र में उसकी गरिमा और चीज़ों और घटनाओं में लोगों की दया के साथ दोषपूर्ण या असंगत के रूप में देखी जाने वाली चीज़ों के बीच एक पर्दा बना देता है।

घड़ी बनाने वाले के लिए कौन सा विकल्प ज़्यादा आसान और तर्कसंगत है? घड़ी के काग बनाना और फिर उन्हें घड़ी बनाने के लिए व्यवस्थित करना, या कागों के अंदर एक अद्भुत मशीन डालना और फिर घड़ी बनाने का काम मशीन के बेजान हाथों पर छोड़ देना? क्या दूसरा विकल्प ज़्यादा आसान और तर्कसंगत है?

क्या यह संभव है या अकल्पनीय और असंभव? अपने विवेक का उपयोग करके निर्णय लें!

या फिर एक लेखक एक किताब लिखने के लिए कलम, कागज़ और स्याही तैयार करता है। क्या उसके लिए खुद किताब लिखना ज़्यादा आसान और उचित है, या कलम, कागज़ और स्याही के अंदर एक मशीन का आविष्कार करना, जो किताब से ज़्यादा कलात्मक और ज़्यादा परेशानी वाली हो, और फिर उस अचेतन मशीन को किताब लिखने के लिए कहना, जबकि वह उसमें कोई दखल नहीं देता? क्या दूसरा विकल्प पहले से सौ गुना ज़्यादा मुश्किल नहीं है?

यदि आप कहें: यह सच है कि पुस्तक लिखने के लिए मशीन का आविष्कार करना, उसे लिखने से सौ गुना अधिक कठिन है, लेकिन इसमें आसानी भी है क्योंकि उस मशीन से एक ही पुस्तक की अनेक प्रतियां बनाई जा सकती हैं।

उत्तर : अपने नामों के असीम प्रकटीकरण और प्रभावों को अपनी असीम शक्ति के माध्यम से सदैव नवीनीकृत करके, उन्हें सदैव भिन्न-भिन्न रूपों में प्रदर्शित करने के लिए, शाश्वत डिजाइनर और लेखक ऐसी विशिष्ट पहचान और विशेषताओं के साथ चीजों का निर्माण करता है कि शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना किए जाने वाले ईश्वर के कोई भी संदेश और भगवान की पुस्तकें अन्यों के समान नहीं हैं।

विभिन्न अर्थ प्रदर्शित करने के लिए, प्रत्येक वस्तु की अपनी अलग पहचान और विशिष्ट विशेषताएं होनी चाहिए।

यदि आपके पास आँखें हैं, तो मानव मुख को देखिए: आप देखेंगे कि यद्यपि आदम के समय से सभी मानव चेहरों की संरचना और अंग एक जैसे रहे हैं, फिर भी प्रत्येक में कुछ विशेष विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य सभी से अलग करती हैं। इसलिए, प्रत्येक मानव चेहरा एक अलग, विशेष पुस्तक है। प्रत्येक को उसकी विशेष विशेषताओं के साथ बनाने के लिए एक अलग लेखन सेट और एक अलग रचना की आवश्यकता होती है। प्रत्येक के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करने और प्रत्येक को उसके स्थान पर ठीक से स्थापित करने के लिए, एक पूरी तरह से अलग कार्यशाला होनी चाहिए। भले ही हम, जो असंभव है उसे संभव मानते हुए, प्रकृति को एक प्रिंटिंग प्रेस के रूप में सोचें, प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों की एक नई व्यवस्था बनाने के अलावा, प्रत्येक शरीर के अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी कणों को "प्रकृति" के सभी कोनों से सटीक मात्रा और विशिष्ट अनुपात में एकत्र किया जाना चाहिए और उसमें सही क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए; यह प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों को व्यवस्थित करने से सौ गुना अधिक कठिन है। इन सभी चीजों को करने के लिए, अभी भी परम शक्तिशाली के सर्वव्यापी ज्ञान, इच्छा और शक्ति की नितांत आवश्यकता है। इसलिए, मशीन की यह परिकल्पना पूरी तरह से निरर्थक कल्पना है।

घड़ी और किताब की इन तुलनाओं की तरह, महिमा का निर्माता, सर्वशक्तिमान दोनों कारणों और उनके प्रभावों को एक साथ बनाता है, और अपनी बुद्धि से प्रभावों के अस्तित्व को उनके कारणों पर निर्भर बनाता है। ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए उनके पास नियमों का एक समूह है, जो वास्तव में उनके सृजन और निर्देशन के कार्यों के शीर्षक हैं। अपनी इच्छा से, उन्होंने उन कार्यों या नियमों के दर्पण के रूप में प्रत्येक चीज़ के लिए एक प्रकृति नियुक्त की है, और अपनी शक्ति से वह प्रत्येक चीज़ को उसकी प्रकृति के अनुसार बनाता है।

इसलिए, क्या इस सत्य को स्वीकार करना अधिक आसान है, जो पूर्णतः युक्तिसंगत है तथा असंख्य युक्तिसंगत प्रमाणों का निष्कर्ष है, तथा जिसके कारण हमारे पास इसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं बचता, अथवा यह मान लेना कि जिसे आप प्रकृति और प्राकृतिक कारण कहते हैं, जो अन्धा है, अचेतन है, समय और स्थान में समाया हुआ है, नश्वर है, तथा किसी भी ज्ञान या इच्छा से रहित है, उसके पास प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए आवश्यक असीमित साधन हैं, तथा वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना और निर्देशन जैसे कार्य करने में सक्षम है, जिसके लिए अनन्त ज्ञान, बुद्धि और विवेक की आवश्यकता होती है? क्या यह दूसरा विकल्प सभी संभावनाओं से परे, यहाँ तक कि अकल्पनीय नहीं है?

अविश्वासी प्रकृतिवादी उत्तर देता है: भले ही मैं आपकी व्याख्याओं के प्रकाश में यह स्वीकार कर लूं कि आज तक मैंने जो विचार-पद्धति अपनाई है, वह तर्क से परे और अस्वीकार्य है, और 'आवश्यक रूप से विद्यमान' को सभी चीजों का रचयिता मानता हूं, और कहता हूं कि 'विश्वास के लिए ईश्वर की स्तुति हो,' फिर भी मुझे एक संदेह है। यद्यपि हम स्वीकार करते हैं कि ईश्वर ही रचयिता है, लेकिन ईश्वर के प्रभुत्व की संप्रभुता के संबंध में कुछ चीजों के निर्माण में कुछ महत्वहीन कारणों की एक निश्चित भूमिका निभाने में क्या बुराई हो सकती है? क्या इसका अर्थ उसकी संप्रभुता की ओर से कोई दोष है?

उत्तर : **जैसा कि** रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में स्पष्ट रूप से बताया गया है , संप्रभुता अपने स्वभाव से ही हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है। यहां तक कि एक महत्वहीन निर्देशक या अधिकारी भी अपने बच्चे के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करता है।

उसका अधिकार। इतिहास में कुछ धार्मिक शासकों ने अपने मासूम बेटों को इस डर से मार डाला कि कहीं उनके बेटे उनके शासन में हस्तक्षेप करने की कोशिश न करें, यह दर्शाता है कि शासन में "हस्तक्षेप की अस्वीकृति का कानून" कितना मौलिक है। "दूसरों की भागीदारी को रोकने का कानून", जो संप्रभुता की स्वतंत्रता की मांग करता है, एक ही समय में एक ही स्थान पर दो संप्रभुओं के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, चाहे वह देश हो या शहर। इसने मानव इतिहास में उथल-पुथल के माध्यम से अपनी महान शक्ति दिखाई है।

इस प्रकार, यदि मानवता में सापेक्ष और क्षणिक शासन और संप्रभुता की भावना, जो शक्तिहीन है और जिसे सहायता की आवश्यकता है, दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करती है, और अपनी स्थिति में अपनी स्वतंत्रता को इतनी ईर्ष्या से बनाए रखना चाहती है, तो, यदि आप तुलना कर सकें, तो हस्तक्षेप की अस्वीकृति और भागीदारी को रोकना उस सर्वशक्तिमान के लिए कितना अपरिहार्य है, जिसकी पूर्ण संप्रभुता सृष्टि पर उसके पूर्ण प्रभुत्व पर आधारित है या उससे उत्पन्न होती है, जिसका पूर्ण शासन उसकी दिव्यता से उत्पन्न होता है, जिसकी पूर्ण स्वतंत्रता उसकी पूर्ण एकता और विशिष्टता से उत्पन्न होती है, और जिसकी पूर्ण आत्मनिर्भरता उसकी पूर्ण शक्ति से उत्पन्न होती है।

जहाँ तक आपके संदेह के दूसरे भाग का प्रश्न है, जो यह है कि यदि कुछ तुच्छ वस्तुओं के निर्माण और नियंत्रण में कुछ अंशों का श्रेय कुछ तुच्छ कारणों को दिया जाता है, और वे वस्तुएँ अपनी पूजा का कुछ अंश उन कारणों को देती हैं, तो इससे कणों से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्राणियों की पूजा में क्या हानि होती है, जो कि अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को समर्पित है, जो कि पूजा का परम विषय है?

उत्तर : ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ रचयिता ने ब्रह्माण्ड को बनाया है-

कविता एक वृक्ष की तरह है जिसका सबसे उत्तम फल चेतन प्राणी है, तथा चेतन प्राणियों में मानवता सबसे व्यापक फल है। क्या यह सच है कि

पूर्ण प्रभुता संपन्न और सर्व-स्वतंत्र शासक, वह अद्वितीयता वाला एकमात्र व्यक्ति, जिसने ब्रह्मांड की रचना की है ताकि उसे जाना और प्यार किया जा सके, दूसरों को मानवता, जो पूरे ब्रह्मांड का फल है, का स्वामित्व करने की अनुमति देगा? क्या वह मानवता के धन्यवाद और पूजा को भी दूसरों को समर्पित करने की अनुमति देगा, जिसके लिए इसे बनाया गया है, और जो इसलिए इसका सबसे श्रेष्ठ फल है?

क्या वह अपनी बुद्धि के सर्वथा विपरीत सृष्टि के परिणाम और ब्रह्माण्ड के फल को व्यर्थ और व्यर्थ कर देगा? भगवान् ऐसा विचार करने से मना करें!

इसके अलावा, क्या वह दूसरों को समर्पित प्राणियों की पूजा की अनुमति देगा, जिसका अर्थ होगा उसकी बुद्धि और प्रभुत्व का इन्कार?

जबकि वह अपने कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करता है कि वह चाहता है कि लोग उसे जानें और असीम सीमा तक उससे प्रेम करें, क्या वह सभी प्राणियों की कृतज्ञता, प्रेम और पूजा को उसके अलावा किसी अन्य के प्रति निर्देशित करने की अनुमति देकर स्वयं को भुला देगा और ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए अपने सबसे उच्च उद्देश्यों को नकार देगा?

हे मित्र, तूने प्रकृतिवाद त्याग दिया है! अब बोलने की बारी तेरी है! वह उत्तर देता है:

> ईश्वर की कृपा हो, मेरे ये दो संदेह दूर हो गये।
> आपने बहुत ही विश्वासपूर्वक समझाया है कि ईश्वर एक है और क्यों वह ही पूजा का सच्चा पात्र है, तथा उसके अलावा किसी और को पूजा का अधिकार नहीं है और वह पूजा के योग्य नहीं है। इसलिए, इस सत्य को नकारना सूर्य और दिन को नकारने की हद तक अहंकार होगा।

निष्कर्ष

जिस व्यक्ति ने प्रकृतिवाद को त्यागकर ईश्वर में विश्वास स्वीकार कर लिया है, उसने कहा, "ईश्वर की स्तुति हो; ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के विषय में अब मुझे कोई संदेह नहीं है, परन्तु फिर भी मेरे पास कुछ प्रश्न हैं।"

पहला सवाल

हम सुनते हैं कि रोज़ाना नमाज़ पढ़ने में आलस करने वाले बहुत से लोग पूछते हैं: सर्वशक्तिमान ईश्वर को हमारी इबादत की क्या ज़रूरत है? कुरान में वह उन लोगों को क्यों सख़्ती से डांटता है जो इबादत नहीं करते और उन्हें नरक जैसी भयानक सज़ा की धमकी क्यों देता है? कुरान की संयमित, सौम्य और संतुलित शैली को एक मामूली गलती के सामने इतनी सख़्ती दिखाना कैसे शोभा देता है?

उत्तर : सच में, सर्वशक्तिमान ईश्वर को आपकी पूजा की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है, न ही किसी और चीज़ की। लेकिन आपको पूजा करने की ज़रूरत है, क्योंकि वास्तव में आप आध्यात्मिक रूप से बीमार हैं। हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में संकेत दिया है कि पूजा मानवता के कई आध्यात्मिक घावों का इलाज है। अगर कोई मरीज़ किसी दयालु डॉक्टर से यह कहते हुए प्रतिक्रिया करता है कि उसे अपनी बीमारी के लिए निर्धारित दवाएँ लेनी चाहिए, तो वह कहता है, “आपको दवा की क्या ज़रूरत है? आप इस तरह से क्यों आग्रह कर रहे हैं?”, आप समझ सकते हैं कि यह कितना मूर्खतापूर्ण होगा।

जहाँ तक इबादत के फर्ज को पूरा न करने के खिलाफ़ कुरान की कड़ी धमकियों का सवाल है, जिसमें भयानक सज़ाएँ दी गई हैं, तो वह इस तरह है: अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिए, एक राजा एक साधारण व्यक्ति को उस हद तक सज़ा देता है, जिस हद तक वह उन अधिकारों का उल्लंघन करता है। इसी तरह, जो व्यक्ति इबादत नहीं करता, खास तौर पर नमाज़ नहीं पढ़ता, वह उन प्राणियों के अधिकारों का गंभीर उल्लंघन कर रहा है, जो अनंत काल के पूर्ण प्रभु की प्रजा के समान हैं। क्योंकि प्राणियों की पूर्णता महिमा और निर्माता के साथ उनके संबंध द्वारा प्रकट की गई अन्य प्रकार की पूजा के माध्यम से खुद को प्रदर्शित करती है। जो व्यक्ति इबादत नहीं करता, वह वास्तव में अपनी इबादत को नहीं देख सकता, बल्कि उसे नकार भी देता है। प्राणियों को उनकी स्थिति से हटाकर, जो कि हर एक अनंत काल के प्रार्थित ईश्वर का संदेश और उनकी पूजा के कारण उनके नामों का दर्पण है, उन्हें महत्वहीन, निर्जीव, अर्थहीन, लक्ष्यहीन और बेतरतीब ढंग से अस्तित्व में रहने वाली चीज़ों की हद तक गिराकर, इस व्यक्ति ने उनका अपमान किया है और उनकी पूर्णता को नकार दिया है।

दरअसल, हर कोई ब्रह्मांड को अपने आईने में देखता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानवता को ब्रह्मांड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में बनाया है। उसने प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मांड से बाहर एक विशेष, निजी दुनिया दी है। प्रत्येक व्यक्ति की विशेष दुनिया उसके दिल के रंग को लेती है। उदाहरण के लिए, एक हताश, रोता हुआ व्यक्ति प्राणियों को रोते और निराश देखता है, जबकि एक खुशमिजाज, आशावादी व्यक्ति उन्हें भी खुश और मुस्कुराते हुए देखता है। जो व्यक्ति गंभीर, चिंतनशील तरीके से सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा करता है, वह कुछ हद तक प्राणियों की वास्तविक पूजा और महिमा को समझ सकता है, जबकि जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, वह या तो असावधानी या इनकार के कारण, प्राणियों के बारे में किसी भी सत्य से रहित और उनकी वास्तविक पूर्णता के बिल्कुल विपरीत तरीके से सोचता है, और इस तरह उनके अधिकारों का उल्लंघन करता है।

इसके अलावा, कोई भी अपना खुद का निर्माता और मालिक नहीं है; हर कोई सर्वशक्तिमान ईश्वर का सेवक है। इसलिए, जो लोग निर्धारित नमाज़ नहीं पढ़ते हैं, वे अपनी शारीरिक, दुष्ट आत्मा से हार जाते हैं, वे खुद को नुकसान पहुँचाते हैं, हालाँकि वे अपने मालिक और मालिक के सेवक हैं। इसलिए, उनका मालिक अपने सेवकों के अधिकारों की रक्षा के लिए बुरी ताकतों से कड़ी धमकियाँ देता है-

आत्मा को आज्ञा देना, और उन्हें बहाल करना। इसके अलावा, जो व्यक्ति उपासना नहीं करता, जो कि ईश्वर की सृष्टि का उद्देश्य है या किसी व्यक्ति के अस्तित्व का अंतिम कारण है, वह ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि का उल्लंघन कर रहा है, और इसलिए वह दंड का पात्र है।

संक्षेप में, जो लोग उपासना नहीं करते, वे न केवल स्वयं ईश्वर के सेवकों के साथ अन्याय करते हैं, बल्कि ईश्वर के सेवकों के रूप में उनके द्वारा प्राप्त की गई पूर्णता से उत्पन्न प्राणियों के अधिकारों के साथ अन्याय करते हैं और उनका उल्लंघन करते हैं। जिस प्रकार अविश्वास प्राणियों का अपमान है, उसी प्रकार उपासना के कर्तव्य को पूरा न करना प्राणियों द्वारा साझा की गई पूर्णता का खंडन है। इसी प्रकार, यह ईश्वरीय ज्ञान के विरुद्ध अपराध है और इसके लिए कठोर धमकियाँ और दंड दिए जाने चाहिए। इस सत्य को व्यक्त करने के लिए ही चमत्कारी अभिव्यक्ति के कुरान ने चर्चा के अंतर्गत कठोर शैली को चुना है, जो वाक्पटुता के साथ पूर्ण रूप से मेल खाते हुए, स्थिति की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

दूसरा प्रश्न

वह व्यक्ति जिसने प्रकृतिवाद को त्याग दिया है और जो ईमान पर आ गया है, वह पूछता है: यह आश्चर्यजनक है कि जो कुछ भी उसके पास है और जो कुछ भी वह करता है, और हर पहलू में, सब कुछ पूरी तरह से ईश्वरीय इच्छा और शक्ति पर निर्भर करता है। वह असीम प्रचुरता जिसे हम अस्तित्व में स्पष्ट रूप से देखते हैं, और उन चीजों के निर्माण में असीम सहजता जो एक ईश्वर द्वारा उनके निर्माण से उत्पन्न होती हैं, और जिसे कुरान की ऐसी आयतों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है जैसे

> तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28), और प्रलय का मामला तो पलक झपकने के समान है, या उससे भी अधिक शीघ्र है (16:77),

यह दिखाओ कि यह सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य पूरी तरह से स्वीकार्य और तर्कसंगत है। हालाँकि, हम इस सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य को समझ नहीं सकते। आप इस सहजता को कैसे समझाते हैं?”

उत्तर : यह स्पष्ट रूप से और एक ठोस तरीके से समझाया गया था, जबकि इस पर टिप्पणी करते हुए कि, वह सभी चीजों पर शक्तिशाली है, जो बीसवें पत्र का दसवां वाक्यांश है। विशेष रूप से, उस पत्र के परिशिष्ट में इसे और भी स्पष्ट रूप से समझाया गया था कि जब सभी चीजों को एक, एकल निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उनका अस्तित्व एक चीज के अस्तित्व जितना आसान हो जाता है। यदि उन्हें अद्वितीयता वाले एक के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो पाप का अस्तित्व-

एक चीज़ का अस्तित्व सभी चीज़ों के अस्तित्व जितना ही मुश्किल हो जाता है; वास्तव में, एक बीज का अस्तित्व एक पेड़ के अस्तित्व जितना ही मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर सभी चीज़ों को उनके सच्चे निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो ब्रह्मांड का अस्तित्व एक पेड़ के अस्तित्व जितना ही आसान हो जाता है, और एक पेड़ का अस्तित्व एक बीज के अस्तित्व जितना ही आसान हो जाता है, और जन्नत का अस्तित्व वसंत के अस्तित्व जितना ही आसान हो जाता है, और वसंत का अस्तित्व एक फूल के अस्तित्व जितना ही आसान हो जाता है। रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में, हमने अस्तित्व में अनंत प्रचुरता के बावजूद चीजों के असीमित मूल्य के पीछे कई कारणों और बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों का उल्लेख किया है, और चीजों के अस्तित्व में आने में असीमित आसानी और गति के बावजूद हर चीज में पूर्ण कलात्मकता है। हम उनमें से केवल कुछ को संक्षेप में इस प्रकार इंगित करेंगे:

उदाहरण के लिए, यदि सौ निजी सैनिकों की कमान एक अधिकारी को दी जाए, तो उनकी कमान सौ अधिकारियों द्वारा एक निजी सैनिक की कमान संभालने से सौ गुना आसान होगी। इसी तरह, एक केंद्र या कारखाने या सरकार द्वारा सेना को सुसज्जित करना एक सैनिक को सुसज्जित करने जितना ही आसान है, जबकि कई अलग-अलग कमान केंद्रों या कारखानों द्वारा एक सैनिक को सुसज्जित करना पूरी सेना को सुसज्जित करने जितना ही कठिन है। क्योंकि सेना के लिए जितने उपकरण होंगे, उतनी ही फैक्ट्रियाँ भी होनी चाहिए।

यह देखा गया है कि एक ही बीज से और एक ही जड़ पर उगने तथा एक ही नियम से बढ़ने और पोषण पाने के कारण, हज़ारों फल देने वाले पेड़ की वृद्धि एक ही फल की वृद्धि जितनी आसान है। लेकिन अगर एक पेड़ अपनी वृद्धि के लिए कई स्रोतों पर निर्भर हो, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक फल के लिए ज़रूरी सभी ज़रूरतें अलग-अलग जगहों से उपलब्ध करानी पड़ें, तो प्रत्येक फल का उत्पादन एक पेड़ जितना ही मुश्किल हो जाएगा। एक भी बीज पैदा करना, जो पेड़ का नमूना और सूचकांक है, पेड़ के उत्पादन जितना ही मुश्किल होगा। क्योंकि पेड़ की वृद्धि और जीवन के लिए सभी पदार्थ बीज के लिए भी ज़रूरी हैं।

इस प्रकार, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि एक ही स्रोत पर निर्भर हज़ारों चीज़ों का अस्तित्व में आना, एक ही चीज़ के अनेक स्रोतों पर निर्भर रहने की तुलना में ज़्यादा आसान है। इस तथ्य की विस्तृत व्याख्या के लिए आपको रिसाले -ए-नूर के कुछ अन्य भागों का संदर्भ देते हुए , हम यहाँ केवल इसके एक महत्वपूर्ण पहलू की व्याख्या करेंगे जो ईश्वरीय ज्ञान, शक्ति और नियति से संबंधित है। यह इस प्रकार है:

आप एक अस्तित्ववान प्राणी हैं। यदि आप खुद को शाश्वत, सर्वशक्तिमान मानते हैं, तो आप समझ जाएँगे कि कैसे उसने आपको एक ही आदेश से शून्य से बनाया है, जैसे माचिस जलाना। हालाँकि, यदि आप खुद को उसके लिए नहीं, बल्कि भौतिक कारणों और प्रकृति के लिए मानते हैं, तो चूँकि

आप एक सुव्यवस्थित सारांश, एक फल और ब्रह्मांड की एक लघु सूची हैं, आपको बनाने के लिए, आपके शरीर के निर्माण के लिए आवश्यक सभी पदार्थों को ब्रह्मांड से बारीकी से छानना होगा और सटीक माप में इसके सभी कोनों से एकत्र करना होगा। क्योंकि भौतिक पदार्थों का उपयोग केवल निर्माण या संरचना के लिए किया जाता है, और भौतिक कारण केवल उनके संग्रह के साधन के रूप में काम कर सकते हैं। हर समझदार व्यक्ति जानता है और मानता है कि वे कुछ भी नहीं से वह नहीं बना सकते जो उनके पास खुद नहीं है। इसलिए, उन्हें ब्रह्मांड के सभी कोनों से एक छोटे से जीवित प्राणी के शरीर के लिए आवश्यक पदार्थों के सभी कणों को इकट्ठा करना होगा।

अब समझो कि ईश्वरीय एकता और सब कुछ उसी को सौंपने में कितनी आसानी है, और गुमराही में, ईश्वर के साथ साझीदार जोड़ने में कितनी कठिनाइयाँ हैं!

दूसरा, जब सब कुछ एक ही रचयिता को माना जाता है, तो ईश्वरीय ज्ञान के दृष्टिकोण से अस्तित्व असीम रूप से आसान हो जाता है। यह इस प्रकार है:

भाग्य एक मामले में ज्ञान के समान है। यह प्रत्येक वस्तु के लिए एक निश्चित मापदंड नियुक्त करता है, जिसे उसका विशिष्ट, अमूर्त साँचा माना जा सकता है। भाग्य द्वारा नियुक्त वह मापदंड या साँचा उसके अस्तित्व के लिए एक आदर्श का काम करता है। जब दैवी शक्ति सृजन करती है, तो वह उस नियुक्त माप के अनुसार अत्यंत सहजता से ऐसा करती है। अब, यदि उस सत्ता को असीमित, सर्वव्यापी, शाश्वत ज्ञान वाले सर्वशक्तिमान महामहिम के अधीन न किया जाए, तो न केवल हजारों कठिनाइयाँ सामने आती हैं, बल्कि उसका अस्तित्व सौ गुना अधिक अकल्पनीय हो जाता है। क्योंकि यदि दैवी भाग्य या ज्ञान द्वारा नियुक्त मापदंड न होता, तो भौतिक जगत में बनाए गए हजारों भौतिक साँचों का उपयोग एक सूक्ष्म जीव के शरीर में करना पड़ता।

तो, समझिए कि हर चीज़ को एक ही स्रोत से जोड़ने में असीम आसानी क्यों है, और क्यों कई स्रोतों को स्वीकार करने या ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ने में अंतहीन कठिनाइयाँ हैं। साथ ही, यह भी समझिए कि आयत द्वारा कितना वस्तुनिष्ठ, निर्विवाद, स्पष्ट और उच्च सत्य कहा गया है, क़यामत का मामला (ईश्वरीय शक्ति के संबंध में) पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी जल्दी (16: 77)।

तीसरा प्रश्न

जिस मित्र को सही मार्गदर्शन मिला है, वह पूछता है: दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध लोग दावा करते हैं कि कुछ भी शून्य से कुछ भी आविष्कार नहीं होता है, और

कोई भी चीज़ पूरी तरह से नष्ट नहीं होती। ब्रह्मांड का कारखाना संयोजन और विघटन के चक्र पर चलता है। क्या ऐसा है?

उत्तर : दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध वे लोग जो सृष्टि को कुरान की रोशनी में नहीं देखते, वे प्रकृति और भौतिक कारणों से जीवों के निर्माण और अस्तित्व को अकल्पनीय रूप से कठिन मानते हैं और वे दो समूहों में विभाजित हैं। एक समूह सोफिस्ट है। तर्क को त्यागकर, जो मानवता के लिए अनन्य है, वे प्रकृति और भौतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देने वाले गुमराह करने वाले मार्ग पर चलने की तुलना में ब्रह्मांड, जिसमें उनका अपना भी शामिल है, के अस्तित्व को नकारना अधिक आसान पाते हैं। इसलिए, अपने और ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारते हुए, वे पूर्ण अज्ञानता में उतर जाते हैं।

दूसरा समूह इस तथ्य से अवगत है कि प्रकृति और भौतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देना, मक्खी या बीज जैसे छोटे से प्राणी के अस्तित्व के लिए भी अंतहीन मुश्किलें खड़ी करता है, और इसलिए यह तर्कहीन है। यह उन्हें सृजन के कार्य को नकारने के लिए प्रेरित करता है, और दावा करता है कि कुछ भी शून्य से अस्तित्व में नहीं आ सकता है, और विनाश असंभव है। वे कल्पना करते हैं कि सब कुछ संयोजन, विघटन और पुनः संयोजन के चक्र में निहित है, जो परमाणुओं की यादृच्छिक गति और संयोग की हवाओं पर निर्भर है।

अब, अपने को सबसे बुद्धिमान समझने वालों की अज्ञानता देखिए और समझिए कि गुमराही लोगों को बौद्धिक दरिद्रता के किस बिंदु तक ले जा सकती है!

उस शाश्वत शक्ति पर विचार करें जिसने छह दिनों में ब्रह्मांड का निर्माण किया, और सैकड़ों हजार की एक साथ रचना और पुनर्रचना में खुद को प्रकट किया-

हर साल धरती पर मौजूद कई प्रजातियों को खत्म कर देता है और हर बसंत में छह सप्ताह में एक नई दुनिया को बदल देता है जो पहले से कहीं ज़्यादा कला और ज्ञान से भरपूर होती है!

अदृश्य लेखन को दृश्यमान बनाने के लिए उस पर रसायन लगाकर, यह शक्ति दिव्य ज्ञान में दिव्य नियति द्वारा पहले से निर्धारित और पहचाने गए चीजों और प्राणियों के मूलरूपों को बाह्य अस्तित्व प्रदान करती है। इसलिए, इस शक्ति को सृजन की क्षमता से इनकार करना और सृजन के कार्य को अस्वीकार करना सोफिस्टों की तुलना में अधिक मूर्खतापूर्ण और अज्ञानी होगा। चूंकि ये दोनों दुर्भाग्यपूर्ण समूह, जो स्वयं में पूरी तरह से नपुंसक हैं और जिनके पास आंशिक इच्छाशक्ति से अधिक कुछ नहीं है, फिर भी फिरौन की तुलना में अधिक अभिमानी और विद्रोही हैं, और प्रकृति और भौतिक कारण, जिन पर वे भरोसा करते हैं, कुछ भी नहीं से कुछ बनाने और इसे पूरी तरह से नष्ट करने में असमर्थ हैं, वे दावा करते हैं कि कुछ भी नहीं से कुछ भी अस्तित्व में नहीं है, और कुछ भी अस्तित्व में नहीं है

इस प्रकार सर्वशक्तिमान परम सत्ता को नकार कर उसे अस्तित्वहीन कर दिया गया है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास दो तरह की रचनाएँ हैं। एक है उत्पत्ति और आविष्कार। यानी, वह किसी भी चीज़ को शून्य से अस्तित्व में लाता है, साथ ही उसके लिए जो कुछ भी ज़रूरी है, उसे भी। दूसरा है बनाना और रचना करना। यानी, अपनी बुद्धि की पूर्णता और उसके कई सूक्ष्म उदाहरणों को प्रदर्शित करने के लिए, जैसे कि अपने कई नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करना, वह ब्रह्मांड के तत्वों से कुछ चीज़ें बनाता है। सर्व-प्रदाता होने के नाते, वह उन्हें अपने आदेश के अधीन परमाणु और पदार्थ भी भेजता है, और उन्हें अपने भीतर संचालित करता है।

इस प्रकार, अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाना और अस्तित्वहीनता में भेजना, परम सर्वशक्तिमान की दो निरंतर, असीम रूप से आसान क्रियाएं हैं, जो आविष्कार या उत्पत्ति तथा निर्माण या रचना दोनों करते हैं।

जो व्यक्ति यह दावा करता है कि वह शक्ति जो प्रत्येक वसंत में शून्य से लाखों जीवित प्रजातियों के रूपों और गुणों को उनकी सभी स्थितियों और अवस्थाओं के साथ बनाती है, वह जो अस्तित्व में नहीं है उसे अस्तित्व नहीं दे सकती, वह अस्तित्वहीनता का हकदार है।

जो व्यक्ति प्रकृतिवाद को त्यागकर सत्य को स्वीकार करता है, वह यह निष्कर्ष निकालता है: सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद, मैंने अस्तित्व के कण-कण तक पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लिया है, और निराधार अनुमानों और गुमराही से बच गया हूँ। और मेरा एक भी संदेह शेष नहीं रह गया है।

इस्लाम धर्म और विश्वास की पूर्णता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

चौबीसवीं चमक

चौबीसवीं चमक

महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक पर

मुस्लिम महिलाओं के साथ “बातचीत”

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों से कह दो, और ईमान वालों की स्त्रियों से भी कह दो कि वे अपने ऊपर कुछ वस्त्र डाल लें (जब वे घर से बाहर हों और ऐसे पुरुषों के सामने हों जिनसे रक्त-सम्बन्धी होने के कारण विवाह करने पर उन्हें मना नहीं किया गया हो)।

(33: 59)

उसकी आयत में औरतों को पर्दा करने का आदेश दिया गया है। हालाँकि, आधुनिक, भ्रष्ट सभ्यता कुरान के इस आदेश का विरोध करती है; यह औरतों के पर्दा करने को उनके लिए स्वाभाविक नहीं मानती, और इसे गुलामी का एक रूप मानती है।[89]

उत्तर

मैं कुरान की इस आयत में बुद्धिमत्ता के केवल चार उदाहरणों की व्याख्या करूंगा, जो यह दर्शाते हैं कि पर्दा करना महिलाओं के लिए पूरी तरह से स्वाभाविक है, और इसके विपरीत कोई भी दावा महिलाओं की जन्मजात प्रकृति के विरुद्ध है।

---

[89] अपील न्यायालय के लिए मेरे बचाव का एक हिस्सा, जिसने (एस्कीशेर) न्यायालय को चुप करा दिया: "मैं इस न्यायालय से कहता हूं: यदि पृथ्वी पर न्याय है, तो वह निश्चित रूप से उस निर्णय को रद्द कर देगा, जिसने एक ऐसे व्यक्ति को दोषी ठहराया है, जिसने कुरान की लगभग तीन लाख पचास हजार टिप्पणियों की सर्वसम्मत सहमति और एक हजार, तीन सौ पचास वर्षों के दौरान हमारे सभी पूर्वजों की आम धारणा के आधार पर, एक पवित्र, सच्चे ईश्वरीय सिद्धांत पर चर्चा की, जिसका हर शताब्दी में, करोड़ों लोगों ने उन एक हजार, तीन सौ पचास वर्षों के दौरान अपने सामाजिक जीवन में पालन किया है।"

बुद्धिमता का पहला उदाहरण

महिलाओं के लिए घूंघट करना स्वाभाविक है और उनका जन्मजात स्वभाव इसकी मांग करता है। क्योंकि महिलाएं स्वभाव से कमज़ोर, कोमल और नाजुक होती हैं, और उन्हें अपने और अपने बच्चों, जिन्हें वे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करती हैं, दोनों के लिए सुरक्षा और मदद की ज़रूरत महसूस होती है। इसलिए, उनमें खुद को प्यार करने और तिरस्कार न करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है।

इसके अलावा, हर दस में से छह या सात महिलाएँ या तो उम्र में बढ़ रही हैं या बदसूरत हैं। वे अपनी उम्र नहीं दिखाना चाहतीं और बदसूरत कहलाना नहीं चाहतीं। उनमें से कई ईर्ष्या के कारण दूसरों के संबंध में बदसूरत नहीं दिखना चाहतीं जो उनसे ज़्यादा सुंदर हैं। इसके अलावा, वे आक्रामकता या बदनामी का शिकार होने से डरती हैं और अपने पति द्वारा बेवफाई का आरोप नहीं लगाना चाहतीं। ये सभी और इसी तरह के अन्य कारक स्वाभाविक रूप से उन्हें खुद को ढकने के लिए प्रेरित करते हैं। अगर ध्यान से देखा जाए, तो यह बुजुर्ग महिलाएँ हैं जो खुद को सबसे ज़्यादा छिपाती हैं। दस महिलाओं में से केवल दो या तीन ही ऐसी होती हैं जो युवा और सुंदर दोनों होती हैं और खुद को प्रदर्शित करने में असहज महसूस नहीं करती हैं।

यह एक तथ्य है कि लोग उन लोगों की नज़रों से असहज और आहत महसूस करते हैं जिन्हें वे पसंद नहीं करते हैं, अक्सर इसे असहनीय पाते हैं। वास्तव में, अगर एक सुंदर, बेढंगे कपड़े पहने महिला दस पुरुषों में से दो या तीन की नज़रों से खुश होती है जो उससे विवाह कर सकते हैं, तो वह शेष सात या आठ की नज़रों को सहन नहीं कर सकती। साथ ही, चूँकि एक सुंदर महिला जो नैतिक रूप से भ्रष्ट नहीं है, संवेदनशील है और आसानी से प्रभावित होती है, वह निश्चित रूप से अभद्र, गंदी नज़रों से परेशान होगी, जिसका अनुभव हानिकारक साबित हुआ है, और जो वास्तव में जहरीला है। हम यहाँ तक सुनते हैं कि यूरोप में, जहाँ महिलाएँ खुद को नहीं ढकती हैं, कई महिलाएँ नज़रों से परेशान होती हैं और पुलिस से शिकायत करती हैं, कहती हैं, “ये बदमाश हमें घूरते रहते हैं और हमें परेशान करते हैं।” इसका अर्थ यह है कि आधुनिक सभ्यता द्वारा महिलाओं का पर्दा करना उनकी प्रकृति के विपरीत है, जबकि कुरान में पर्दा करने का आदेश न केवल महिलाओं की प्रकृति के अनुरूप है, बल्कि यह करुणा की इन खानों को पतन, अपमान और वास्तव में गुलामी और दरिद्रता से बचाता है, जो अनंत काल तक उनके योग्य साथी हो सकते हैं।

इसके अलावा, महिलाएं स्वभावतः अजनबी पुरुषों से डरती हैं।
डर स्वाभाविक रूप से सुरक्षा की मांग करता है। आठ या नौ महीने तक बच्चे को ले जाने के भारी बोझ को उठाने के अलावा, जो निश्चित रूप से होगा-

आठ-नौ मिनट का सुख न केवल कड़वा होता है, बल्कि आठ-नौ मिनट के अवैध सुख के बदले में आठ-नौ साल तक बच्चे के पालन-पोषण की विपत्ति भी झेलनी पड़ सकती है। जैसा कि अक्सर होता है, एक महिला को अजनबी पुरुषों से स्वाभाविक डर होता है और उसका स्वभाव उसे उनसे दूर रहने के लिए मजबूर करता है। उसकी स्वाभाविक कमजोरी उसे अजनबियों की भूख को भड़काने और उनके हमले का कारण नहीं बनने देती, यह दिखाते हुए कि उसका लबादा उसकी ढाल और गढ़ है। मुझे बताया गया कि एक जूता पॉलिश करने वाले ने राजधानी शहर में एक उच्च पदस्थ व्यक्ति की नंगी टांगों वाली पत्नी को बाजार में, दिनदहाड़े लोगों के सामने घेर लिया था। यह उन लोगों के बेशर्म मुंह पर तमाचा है जो महिलाओं के घूंघट का विरोध करते हैं।

बुद्धिमता का दूसरा उदाहरण

स्त्री-पुरुष के बीच ठोस और मजबूत संबंध, तथा प्रेम और रुचि केवल सांसारिक जीवन की आवश्यकताओं से उत्पन्न नहीं होती। वास्तव में, स्त्री केवल सांसारिक जीवन में ही अपने पति की साथी नहीं होती; वह अनंत जीवन में भी उसकी साथी होती है और वह उसका होता है। चूँकि वह ऐसी है, इसलिए उसे अपने पति, अपने शाश्वत साथी के अलावा दूसरों की नज़र अपनी सुंदरता की ओर आकर्षित नहीं करनी चाहिए, और उसे अपमानित नहीं करना चाहिए और उसकी ईर्ष्या को नहीं जगाना चाहिए। चूँकि, विश्वास के अनुसार, उसके पति का उसके साथ संबंध इस सांसारिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, इसलिए वह उसके सौन्दर्य के वर्षों के दौरान उसके प्रति केवल पशुवत प्रेम नहीं रखता, बल्कि उसे न केवल युवा और सुंदर होने पर बल्कि उसके बुढ़ापे में भी ईमानदारी से प्रेम और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वह दूसरे, अनंत जीवन में भी उसकी साथी होगी; निश्चित रूप से, मानवता की आवश्यकता है कि वह बदले में अपनी सुंदरता को केवल उसके सामने प्रस्तुत करे और अपना प्रेम केवल उसी तक सीमित रखे। अन्यथा उसे बहुत कम लाभ होगा, लेकिन बहुत कुछ खोना होगा।

इस्लाम की मांग है कि पति और पत्नी एक दूसरे के लिए एक अच्छे साथी होने चाहिए। यह विशेष रूप से धर्म के मामले में होना चाहिए। वह पति कितना खुश है जो अपनी पत्नी के अच्छे धार्मिक जीवन को देखता है और उसका अनुसरण करता है, ताकि वह शाश्वत जीवन में उसका साथ न खो दे। वह पत्नी कितनी खुश है जो अपने पति के अच्छे धार्मिक जीवन को देखती है और अपने शाश्वत मित्र को न खोने के लिए एक धर्मपरायण, धार्मिक महिला बन जाती है। उस आदमी के लिए अफसोस है जो व्यभिचार में लिप्त है, जो उसे हमेशा के लिए उसकी धार्मिक पत्नी खो देगा। वह महिला कितनी बदकिस्मत है जो अपने ईश्वर का अनुसरण नहीं करती-

वह अपने आदरणीय, पवित्र पति को खो देती है और अपने शाश्वत, धन्य मित्र को खो देती है। और हज़ारों

उन दुखी पति-पत्नी पर विपत्ति आए जो एक दूसरे का अनुसरण करते हुए अपराध और अपव्यय करते हैं, तथा एक दूसरे को नरक की आग में जाने में सहायता करते हैं!

बुद्धिमता का तीसरा उदाहरण

पति-पत्नी के बीच परस्पर विश्वास, सच्चे आदर और प्रेम से पारिवारिक जीवन में सुख संभव और निरंतर है। अभद्र पोशाक और अभद्रता इस परस्पर विश्वास, आदर और प्रेम को नष्ट कर देती है। अभद्र पोशाक पसंद करने वाली बहुत सी स्त्रियाँ चाहती हैं कि दूसरे उन्हें सुन्दर और आकर्षक पाएँ। (अधिकांश पति सोचते हैं कि अभद्र पोशाक पसंद करने वाली उनकी पत्नियाँ चाहती हैं कि दूसरे पुरुष उन्हें प्यार करें, जो उन्हें उनसे अधिक सुन्दर लगे।) हमेशा ऐसे पुरुष हो सकते हैं जो किसी भी पत्नी के पति से अधिक सुन्दर हों। उनमें से दस में से नौ को ऐसे पुरुष मिलेंगे जो उनके पति से अधिक सुन्दर होंगे। और बीस में से केवल एक पुरुष को ऐसी स्त्रियाँ नहीं मिलेंगी जो उसकी पत्नी से अधिक सुन्दर हों। तब, दम्पतियों के बीच परस्पर प्रेम और आदर के लुप्त होने के साथ-साथ, अत्यंत कुरूप और निम्न भावनाएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे:

स्वभाव से, पुरुष उन महिलाओं के प्रति कोई वासना महसूस नहीं करते हैं जो विवाह के लिए निषिद्ध संबंधों के अंतर्गत आती हैं, जैसे कि उनकी बहनें, क्योंकि ऐसे रिश्तेदारों के चेहरे उनके करीबी रिश्तेदारों के कारण स्नेह और वैध प्रेम का संकेत देते हैं, और इस प्रकार किसी भी यौन प्रवृत्ति को नहीं जगाते हैं। लेकिन शरीर के उन हिस्सों को खुला छोड़ना जिन्हें शरीयत ने करीबी रिश्तेदारों के लिए उजागर करने से मना किया है, जैसे कि पैर, कुछ नीच आत्माओं में बेहद बुरी भावनाएँ जगा सकते हैं। क्योंकि एक करीबी रिश्तेदार का चेहरा करीबी रिश्तेदारी का संकेत देता है और रिश्तेदारी की डिग्री के बाहर दूसरों के चेहरों से मिलता जुलता नहीं है। हालाँकि, एक नंगी टाँग उन भावनाओं में एक विहित अजनबी के समान ही होती है जो जगा सकती हैं। चूँकि इसमें अपने मालिक के करीबी रिश्तेदारी को याद दिलाने के लिए कोई विशिष्ट चिह्न नहीं होता है, इसलिए यह करीबी रिश्तेदारों के कुछ पुरुषों की कामुक नज़रों को आकर्षित कर सकता है जो कम चरित्र वाले होते हैं। ऐसी नज़रों का मतलब है एक ऐसा पतन जो किसी के रोंगटे खड़े कर दे।

बुद्धिमता का चौथा उदाहरण

हर कोई बच्चे पैदा करना चाहता है। कोई भी राष्ट्र या सरकार ऐसी नहीं है जो जनसंख्या वृद्धि का समर्थन न करती हो। वास्तव में, सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने घोषणा की, "विवाह करो और बढ़ो, क्योंकि पुनरुत्थान के दिन मैं तुम्हारी बड़ी संख्या पर गर्व करूंगा।

अन्य समुदायों के लिए समानता।"90 हालांकि, अभद्र पोशाक के कारण विवाहों की संख्या में कमी आती है। क्योंकि सबसे भ्रष्ट और आधुनिक युवक भी चाहता है कि उसकी पत्नी पवित्र हो। चूँकि वह नहीं चाहता कि वह अभद्र हो-

वह स्वयं की तरह अविवाहित रहना पसंद करता है, और यहां तक कि अवैध संबंधों में भी पड़ जाता है।

महिलाएं अपने पतियों के व्यवहार पर इस हद तक रोक नहीं लगा सकतीं कि वे
पुरुष अपने पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। घर के अंदरूनी मामलों की निर्देशक होने के नाते, और इसलिए अपने पति की सारी संपत्ति, संपत्ति और बच्चों की जिम्मेदारी उसी पर होती है, महिलाओं की सबसे जरूरी विशेषता वफादारी और आत्मविश्वास है। अभद्र पोशाक के कारण पति का उस पर से विश्वास उठ सकता है और वह संदेह की पीड़ा झेल सकता है। वास्तव में, साहस और उदारता, दो प्रशंसनीय गुण जब पुरुषों में पाए जाते हैं, तो महिलाओं में (पारंपरिक समुदायों में) उतने नहीं माने जाते हैं जितने पुरुषों में, क्योंकि वे विश्वास और वफादारी की कमी का संकेत दे सकते हैं। पुरुषों का प्राथमिक कर्तव्य सुरक्षा करना, भरण-पोषण प्रदान करना, दयालु होना और सम्मान करना है, लेकिन महिलाओं से अधिक वफादारी की उम्मीद की जाती है। महिलाओं के लिए अपने पतियों के व्यवहार को प्रतिबंधित करना अधिक कठिन होता है। जबकि एक महिला को साझा नहीं किया जा सकता है और

एक ही समय में एक से अधिक पुरुषों से विवाह करने पर, एक पुरुष के पास एक से अधिक स्त्रियाँ हो सकती हैं।

हमारे देश की तुलना यूरोप से नहीं की जा सकती, क्योंकि वहां द्वंदयुद्ध जैसे हिंसक तरीकों से, चाहे कितनी भी अश्लील पोशाक क्यों न पहनी जाए, सम्मान की रक्षा एक हद तक की जा सकती है। जो व्यक्ति किसी सम्माननीय, स्वाभिमानी व्यक्ति की पत्नी पर नज़र डालता है, वह ऐसा तभी करता है, जब वह अपनी जान अपने हाथ में ले चुका होता है।91

इसके अलावा, भूमध्यसागरीय देशों के लोगों को छोड़कर यूरोप के लोग अधिकांशतः ठंडे और शीत ऋतु वाले हैं, जैसा कि वहां की जलवायु में होता है।
हालाँकि, यूरोप की तुलना में मुस्लिम भूमि उष्ण है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि पर्यावरण का लोगों की नैतिकता पर प्रभाव पड़ता है। उन ठंडे देशों में, अभद्र पोशाक उन ठंडे लोगों की शारीरिक भूख और इच्छाओं को केवल अपेक्षाकृत रूप से उत्तेजित करती है, और इससे बहुत अधिक दुर्व्यवहार नहीं होता है। लेकिन अभद्र पोशाक गर्म देशों के आसानी से प्रभावित और संवेदनशील लोगों की शारीरिक इच्छाओं को लगातार उत्तेजित करती है, और बहुत अधिक दुर्व्यवहार, बर्बादी, युवा पीढ़ियों की कमजोरी और ताकत की हानि का कारण बनती है। महीने में एक बार या हर बीस दिन में प्राकृतिक जरूरतों को पूरा करने के बजाय, लोग मजबूर महसूस करते हैं

---

90 अब्दुर-रज्जाक, अल-मुसन्नाफ, 6:173; अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 1:380। (ट्र.)

91 यह ऐतिहासिक रूप से ऐसा था। (ट्र.)

ऐसा हर कुछ दिनों में करना चाहिए। चूँकि उन्हें हर महीने एक से दो हफ़्ते के लिए अपनी पत्नियों से दूर रहना पड़ता है, क्योंकि उन्हें मासिक धर्म जैसी आकस्मिकताओं का सामना करना पड़ता है, इसलिए वे अपनी शारीरिक इच्छाओं से हार जाते हैं, और अवैध संबंधों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं।

शहरी लोग ग्रामीण महिलाओं के पहनावे के बहाने महिलाओं का पर्दा नहीं हटा सकते। क्योंकि ग्रामीण महिलाओं को अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए बाहर काम करना पड़ता है और भारी काम करना पड़ता है, जिससे वे आमतौर पर घिसी-पिटी और कुछ हद तक खुरदरी हो जाती हैं। इसलिए, उनका आंशिक रूप से पर्दा न होना न तो शहरी महिलाओं की तरह ध्यान आकर्षित करता है और न ही कामुक इच्छाओं को भड़काता है। इसके अलावा, चूँकि गाँवों में भी कुछ ही बदचलन, आलसी पुरुष होते हैं, इसलिए शहरों में देखी जाने वाली बुराइयों का दसवाँ हिस्सा भी वहाँ नहीं पाया जाता। इसलिए ऐसी तुलना नहीं की जा सकती।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

उन महिलाओं के साथ “बातचीत” जो परलोक में मेरी विश्वासी बहनें हैं

मैंने कुछ महिलाओं की ईमानदारी और उत्साहपूर्ण रुचि देखी है

कुछ प्रांतों में रिसाले-ए-नूर से मुलाकात की और पाया कि मेरे निर्देशों पर उनका भरोसा मेरे भरोसे से कहीं ज़्यादा है। जब मैं तीसरी बार धन्य इस्पार्टा लौटा, जो मेद्रेसेतुज़-ज़हरा का अर्थ रखता है ,

92 मुझे

बताया गया कि ये महिलाएं, जो परलोक की मेरी धन्य बहनें हैं, मस्जिदों में दिए जाने वाले उपदेशों के रूप में मुझसे व्याख्यान सुनने की प्रतीक्षा कर रही थीं। लेकिन मैं चार-पांच अलग-अलग बीमारियों से पीड़ित हूं और दयनीय स्थिति में हूं, लगभग सोचने और बोलने में असमर्थ हूं। हालांकि, कल रात मुझे याद आया कि पंद्रह साल पहले, मैंने कुछ युवाओं के अनुरोध पर युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका लिखी थी, और कई लोगों ने इससे लाभ उठाया है। इस समय महिलाओं को मार्गदर्शक की और भी अधिक आवश्यकता है। इसलिए, अपनी दयनीय स्थिति और खराब स्वास्थ्य के बावजूद, मैं अपनी इन धन्य बहनों और युवा भाइयों, जिन्हें मैं अपनी संतान मानता हूं, के ध्यान में लाने के लिए तीन संक्षिप्त बिंदुओं में कुछ उपयोगी बातें प्रस्तुत कर रहा हूं।

---

92 मेद्रेसेतु-ज़हरा उस विश्वविद्यालय का नाम है जिसे सईद नूरसी ने उत्साहपूर्वक चाहा और अपने पूरे जीवन में वैन में स्थापित करने की कोशिश की, और जिसमें उन्होंने सुझाव दिया कि भौतिक और धार्मिक दोनों विज्ञान पढ़ाए जाने चाहिए। (ट्र.)

पहला बिंदु

चूँकि रिसाले-ए- नूर के सबसे ज़रूरी सिद्धांतों में से एक करुणा है और महिलाएँ करुणा की नायिकाएँ हैं, इसलिए वे स्वभाव से दूसरों की तुलना में रिसाले-ए-नूर से ज़्यादा जुड़ी हुई हैं । ईश्वर की स्तुति हो, यह प्राकृतिक संबंध कई जगहों पर खुद को प्रदर्शित करता है। और चूँकि इस करुणा में निहित आत्म-बलिदान का अर्थ सच्ची ईमानदारी है और बदले में कुछ नहीं माँगता, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर इस समय।

यह तथ्य कि एक माँ अपने स्वभाव के अनुसार, बिना कुछ माँगे अपने बच्चे को खतरे से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देती है, यह दर्शाता है कि महिलाएँ महान वीरता की क्षमता रखती हैं। इस वीरता को विकसित करके, वे अपने सांसारिक और पारलौकिक जीवन दोनों को बचा सकती हैं। हालाँकि, यह शक्तिशाली और मूल्यवान विशेषता विकसित नहीं हो सकती है या कुछ बुरी प्रवृत्तियों के कारण इसका दुरुपयोग हो सकता है। सैकड़ों में से एक छोटा सा उदाहरण इस प्रकार है:

एक दयालु माँ हर तरह के त्याग का जोखिम उठाती है और अपने बच्चे का पालन-पोषण इस तरह करती है कि उसके बच्चे को किसी तरह का खतरा न हो और उसे हर तरह का लाभ और सुविधा मिले। वह अपना सारा धन इस बात पर खर्च कर देती है कि उसका बेटा उच्च पद का अधिकारी बन जाए; (सिर्फ़ उसकी सांसारिक खुशी को ध्यान में रखते हुए) वह उसे कुरान की पाठशाला से निकालकर यूरोप भेज देती है। यह विचार किए बिना कि उसके बच्चे का शाश्वत जीवन खतरे में है, वह उसे किसी भी सांसारिक "कारावास" से बचाने की कोशिश करती है, और इस बात पर विचार नहीं करती कि उसे नर्क की जेल में डाला जा सकता है। अपनी अंतर्निहित दया के बिल्कुल विपरीत, वह अपने मासूम बच्चे को आख़िरत में अपना दावेदार बना देती है, जबकि उसे उसका सिफ़ारिश करनेवाला होना चाहिए। बच्चा उससे शिकायत करेगा, कहेगा, "तुमने मेरे ईमान को मज़बूत क्यों नहीं किया, और इस तरह मेरी यहाँ तबाही क्यों मचाई?" इसके अलावा, चूँकि उसे उचित इस्लामी शिक्षा नहीं मिली, इसलिए वह अपनी माँ की अद्भुत दया का दुनिया में उस तरह से जवाब नहीं दे सकता, जिस तरह से उसका हक़ है; वास्तव में, वह ऐसा बहुत ही कमज़ोरी से करता है।

यदि वह अपनी दया का दुरुपयोग न करे और अपने बच्चे को गुमराही में मरने से तथा नरक की अनन्त जेल में अनन्त नुकसान से बचाने के लिए काम करे, तो चूँकि बच्चे के सभी अच्छे कर्मों से मिलने वाले पुरस्कार के बराबर उसकी माँ के अच्छे कर्मों की पुस्तक में दर्ज किया जाएगा, वह उसकी मृत्यु के बाद लगातार उसकी आत्मा को रोशनी भेजेगा, और उसके लिए अंत में पूरे दिल से एक मध्यस्थ होगा, उसके खिलाफ़ दावेदार नहीं होगा।

इस प्रकार, वह सदाकाल तक उसका धन्य बच्चा रहेगा।

यह एक सच्चाई है कि किसी भी व्यक्ति की पहली गुरु और सबसे प्रभावशाली शिक्षक उसकी माँ होती है। इस तथ्य के बारे में, मेरी यह बात सुनिए, जिसे मैंने हमेशा अपने भीतर दृढ़ता से महसूस किया है:

मैं अस्सी साल का हूँ और मैंने बहुत से लोगों से शिक्षाएँ प्राप्त की हैं। फिर भी मैं कसम खाता हूँ कि इन शिक्षाओं में सबसे स्थायी और स्थापित शिक्षाएँ धार्मिक सलाह और निर्देश हैं जो मुझे मेरी दिवंगत माँ से मिले थे और वे हमेशा मेरे लिए ताज़ा रहे हैं। वे मेरे स्वभाव में इस तरह से रोपे गए हैं जैसे कि वे मेरे भौतिक अस्तित्व में बोए गए बीज हों। मैं देखता हूँ कि उन बीजों पर अन्य शिक्षाएँ भी गढ़ी गई हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, मैं उन सलाहों और निर्देशों को देखता हूँ जो मेरी दिवंगत माँ ने मेरे स्वभाव और आत्मा में तब रोपे थे जब मैं एक बच्चा था और वे सभी उन महान सत्यों के बीच आवश्यक बीज हैं जिन्हें मैं अब अस्सी वर्ष की आयु में देख रहा हूँ।

उदाहरण के लिए, करुणा या स्नेह मेरे मार्ग के चार सिद्धांतों में सबसे महत्वपूर्ण है और सबसे बड़ा सत्य है जिस पर रिसाले-ए-नूर आधारित है और जिसका प्रचार करता है। मैं निश्चित रूप से देखता हूं कि मुझे यह मेरी मां के दयालु आचरण और धार्मिक शिक्षाओं से मिला है।

इसलिए, इसका अर्थ है कि यदि कोई माँ अपने बच्चे का मुँह उसकी ओर से मोड़ देती है, तो वह मातृत्व की सच्ची और आत्म-त्यागी करुणा का दुरुपयोग है।

परलोक जो उसके मासूम बच्चे के लिए हीरों का खजाना है, संसार के लिए कांच के अस्थायी टुकड़ों के समान है।

यह करुणा के मामले में महिलाओं की वीरता का प्रमाण है, जो
बदले में कुछ भी नहीं मांगता और उन्हें बिना किसी व्यक्तिगत लाभ या दिखावे के अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है, कि एक मुर्गी, जो उस करुणा का एक छोटा सा नमूना है, एक शेर पर हमला करती है और अपने जीवन का बलिदान देती है ताकि वह अपने बच्चों को बचा सके।
अपने चूज़ों को बचाओ.

इस्लामी शिक्षा और आख़िरत से जुड़े कामों में सबसे कीमती और सबसे ज़रूरी उसूल ईमानदारी है। औरतों की दया में भी ऐसी ही सच्ची ईमानदारी होती है। इसलिए अगर औरतों में दया और ईमानदारी के ये दो गुण सही तरीके से विकसित हो जाएँ और उनका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो यह इस्लाम और मुसलमानों के लिए एक बड़ी जीत और समृद्धि का ज़रिया बन जाएगा। मर्दों की वीरता बदले की माँग के बिना नहीं हो सकती; वे हमेशा कई तरह से बदला माँगते हैं। कम से कम वे यश और कीर्ति तो माँगते ही हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि बदकिस्मत औरतें अत्याचारी मर्दों की बुराई और अत्याचार से बचने के लिए कमज़ोरी और नपुंसकता से पैदा होने वाले किसी और तरह के दिखावे को दिखाने के लिए मजबूर महसूस करती हैं।

दूसरा बिंदु

इस वर्ष जब मैं एकांतवास में था और सामाजिक जीवन से काफी समय से दूर था, मैंने अपने कुछ भाई-बहनों के लिए जो रिसाले-ए-नूर के छात्र हैं, दुनिया के मामलों पर एक नज़र डाली। मैंने सुना है कि

कई मित्रों ने अपने पारिवारिक जीवन के बारे में शिकायतें कीं। मैंने कहा, "यह कितना दुखद है!" लोगों और खास तौर पर मुसलमानों का खास गढ़, उनके लिए एक तरह का स्वर्ग और उनके लिए एक छोटी सी निजी दुनिया ही पारिवारिक जीवन है। "क्या यह भी टूटने लगा है?" मैंने खुद से कहा। मैंने कारण जानने की कोशिश की और मुझे पता चला कि कुछ भ्रष्टाचार फैलाने वाली समितियां युवाओं को गुमराह करके और उनकी पशुवत इच्छाओं के माध्यम से उन्हें व्यभिचार की ओर धकेलकर इस्लाम के सामाजिक जीवन और इस तरह इस्लाम धर्म को नुकसान पहुंचाने का काम कर रही हैं। मुझे यह भी पता चला कि कुछ अन्य ऐसी समितियां भी थीं जो इस तरह की गतिविधियों में शामिल थीं।

लापरवाह, नासमझ महिलाओं को गलत रास्ते पर धकेलने के लिए गुप्त और प्रभावी ढंग से काम कर रहे हैं। मुझे समझ में आ गया कि इस मुस्लिम राष्ट्र को उस तरफ से एक भयानक झटका लगा है। और इसलिए मैं आपको मेरी बहनों और भाइयों या धर्म के बच्चों को पूरी दृढ़ता के साथ बताता हूँ:

इस्लामी धार्मिक शिक्षा के अलावा कोई ऐसा साधन नहीं है जो हमें परलोक में और इस दुनिया में भी खुशियाँ प्रदान कर सके और हमारे जन्मजात श्रेष्ठ गुणों को भ्रष्ट होने से बचा सके। आपने सुना होगा कि साम्यवादी रूस में वे किस स्थिति में फँस गए हैं। रिसाले-ए-इस्लाम में कहीं कहा गया है

नूर ने कहा कि एक समझदार आदमी को अपनी जीवन-साथी के प्रति प्रेम उसकी शारीरिक, क्षणिक सुंदरता पर आधारित नहीं करना चाहिए, जो केवल पाँच से दस साल तक ही रहेगी। बल्कि उसे अपनी प्रेम-संगिनी को उसकी करुणा और अच्छे आचरण पर आधारित करना चाहिए, जो नारीत्व के लिए विशेष है, जो सबसे अच्छी और सबसे स्थायी सुंदरता है, ताकि जब वह असहाय बूढ़ी हो जाए, तो उसके पति का उसके प्रति प्रेम बना रहे।

क्योंकि उसकी पत्नी इस सांसारिक जीवन में केवल उसकी अस्थायी सहायक या साथी नहीं है, बल्कि अनंत काल तक जीवन की एक शाश्वत, प्यारी साथी है। इसलिए, जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, उन्हें एक-दूसरे के प्रति अधिक से अधिक प्रेम, सम्मान और करुणा दिखानी चाहिए। आधुनिक पारिवारिक जीवन, जो सभ्यता के आवरण के नीचे एक अस्थायी, पशुवत संगति के बाद एक शाश्वत अलगाव के अधीन है, अपनी नींव से ही नष्ट हो रहा है।

रिसाले-ए-नूर में यह भी कहा गया है कि वह पति कितना खुश होता है जो अपनी पत्नी के अच्छे, धार्मिक जीवन को देखता है और उसका अनुसरण करता है, खुद भी एक धर्मपरायण व्यक्ति बन जाता है ताकि अनंत जीवन में उसका साथ न खो दे। वह पत्नी कितनी खुश होती है जो अपने पति के अच्छे धार्मिक जीवन को देखती है और एक धर्मपरायण व्यक्ति बन जाती है

वह अपने शाश्वत मित्र को खोने से बचने के लिए पवित्र, धार्मिक महिला बन जाती है। वह इस दुनिया में अपने जीवन में परलोक की शाश्वत खुशी अर्जित करती है। बदकिस्मत है वह आदमी जो अपनी पत्नी का अनुसरण करता है, जो एक भ्रष्ट जीवन जी रही है, और उसे इसे छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश करने के बजाय, उसके साथ जुड़ जाता है। बदकिस्मत है वह महिला जो अपने पति के पापी जीवन को देखती है, और दूसरे तरीके से उसका अनुकरण करती है। और उस पति-पत्नी पर धिक्कार है जो एक-दूसरे को नरक की आग में जाने में मदद करते हैं! यानी वे एक-दूसरे को सभ्यता की बुराइयों के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

रिसाले-ए-नूर में इस प्रकार के सभी कथनों का अर्थ यह है कि सुखी पारिवारिक जीवन और दोनों लोकों में सुख, साथ ही महिलाओं के जन्मजात, उच्च गुणों का विकास इस्लामी सिद्धांतों के पालन से ही संभव है।

उपदेश.

पारिवारिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार है:

यदि कोई स्त्री अपने पति में बुरा आचरण और विश्वासघात देखती है, और केवल अपने पति को नाराज करने के लिए, उसके प्रति अपनी निष्ठा को तोड़ देती है और अपने ऊपर उसके विश्वास को नष्ट कर देती है, जैसे सेना में अनुशासन बिगड़ जाता है, तो उस परिवार का कारखाना पूरी तरह नष्ट हो जाता है। बल्कि स्त्री को अपने पति के दोषों को सुधारने का भरसक प्रयास करना चाहिए ताकि वह अपने मित्र को हमेशा के लिए बचा सके। यदि वह दूसरों को दिखाने और उनके लिए खुद को आकर्षक बनाने के प्रयास में खुद को उजागर करती है, तो वह हर तरह से खुद को नुकसान पहुंचाएगी। क्योंकि जो व्यक्ति वफादारी को छोड़ देता है, वह दुनिया में भी इसका बदला भुगतता है, क्योंकि स्वभाव से वह अजनबियों की शक्ल से डरता और परेशान रहता है। वह बीस में से अठारह अजनबियों की शक्ल नहीं सह सकती। पुरुषों के लिए, वे विवाह के लिए निषिद्ध संबंधों के बाहर सौ में से केवल एक महिला की शक्ल से असहज और परेशान महसूस करते हैं। उस संबंध में पीड़ा सहने के अलावा, महिलाओं पर बेवफाई का आरोप भी लगाया जा सकता है, और अपनी कमजोरी के कारण, वे अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकती हैं।

संक्षेप में, जिस प्रकार महिलाएं अपनी करुणा की वीरता में पुरुषों की तरह नहीं हैं और ईमानदारी, और पुरुष इस मामले में उनके बराबर नहीं हो सकते, सौ प्रतिशत महिलाएं इतना भी मासूम पुरुषों के साथ दुराचार में प्रतिस्पर्धा करने में बिल्कुल भी सक्षम नहीं हैं। इस कारण से और अपनी कमजोरी और स्वभाव के कारण, वे अजनबियों से डरती हैं और उनसे बचती हैं और अपने आप को अपने बाहरी कपड़ों के नीचे छिपाने के लिए मजबूर महसूस करती हैं, क्योंकि अगर कोई पुरुष आठ मिनट के आनंद के लिए अभद्रता करता है, तो उसे बहुत कम नुकसान होगा। लेकिन एक महिला के लिए आठ मिनट के अभद्रता के आनंद का परिणाम यह हो सकता है कि उसे इस दुनिया में आठ महीने तक भारी बोझ उठाना पड़ सकता है और उस बच्चे को पालने में कठिनाई हो सकती है।

वह अपने पहले आठ वर्षों तक असुरक्षित बच्चे के साथ रहती है। इसलिए वह पुरुषों के साथ अनैतिकता में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती और उसे सौ गुना अधिक दंड भुगतना पड़ता है।

इस प्रकार की घटनाएं दर्शाती हैं कि महिलाओं में उच्च गुणों और नैतिकता की जन्मजात क्षमता होती है, लेकिन दुराचार और अपव्यय में सांसारिक सुख पाने की नहीं।

मूलतः, वे एक खुशहाल पारिवारिक जीवन की ओर स्वाभाविक रूप से प्रवृति रखने वाले धन्य मनुष्य हैं जो इस्लामी शिक्षा और उपदेशों पर आधारित हैं। भगवान उन भ्रष्टाचार फैलाने वाली समितियों को धिक्कार है जो उन्हें भटकाने की कोशिश करती हैं! और भगवान मेरी उन बहनों को ऐसे दुष्ट दुष्टों की बुराई से बचाए। आमीन!

मेरी बहनों! मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: एक बदचलन, अनैतिक पति के अधीन रहना, जो इस्लामी नियमों की उपेक्षा करता है, एक आसान जीवन के लिए, अपने स्वभाव में संतोष और मितव्ययिता से सहायता प्राप्त करने के बजाय, मासूम किसान महिलाओं की तरह मितव्ययिता से अपना जीवनयापन करने की कोशिश करो; अपने आप को बेचने की कोशिश मत करो। अगर तुम्हारा भाग्य ऐसा है कि तुम्हें अपने लिए उपयुक्त न होने वाले पति के साथ रहना है, तो अपने भाग्य को स्वीकार कर लो। ईश्वर की इच्छा से, तुम्हारे त्यागपत्र से वह सुधर जाएगा। अन्यथा, तुम तलाक के लिए अदालत में आवेदन करोगी, जिसके बारे में मैंने हाल ही में सुना है, लेकिन यह इस्लाम के सम्मान और हमारे राष्ट्र के अच्छे नाम के अनुरूप नहीं है।

तीसरा बिंदु

मेरी प्यारी बहनों! यह बात पक्के तौर पर जान लो कि जो सुख और आनंद इस्लामी कानून के दायरे से बाहर हैं, उनसे दस गुना ज़्यादा दुख और तकलीफ़ें हैं। इसे रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में जैसे कि द वर्ड्स और ए गाइड फॉर यूथ में छठे, सातवें और आठवें शब्दों में बहुत ही स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

इसलिए इस्लाम जिन सुखों की इजाज़त देता है, उन्हीं में संतुष्ट रहो। घर में अपने मासूम बच्चों के साथ तुम्हारी मासूम बातें सौ फिल्मों से ज़्यादा आनंददायक हैं।

यह भी निश्चयपूर्वक जान लें कि सांसारिक जीवन में सच्चा सुख ईमान में और ईमान के दायरे में ही है। और आपके हर अच्छे कर्म में एक विशेष, आध्यात्मिक सुख है। जैसा कि रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है, गुमराही और बुराई दुनिया में भी अत्यंत कड़वी और गंभीर पीड़ा का कारण बनती है। मैंने स्वयं कई अवसरों पर अनुभव किया है और देखा है कि ईमान में जन्नत का बीज निहित है, जबकि गुमराही और बुराई में जहन्नम का बीज निहित है। इस वास्तविकता को रिसाले -ए-नूर में बार-बार बताया गया है। यहां तक कि रिसाले-ए-नूर का सबसे हठपूर्वक विरोध करने वाले लोग , साथ ही उनके द्वारा चुने गए न्यायालय और अधिकारी भी इसका खंडन करने में असमर्थ रहे हैं। अब, मेरे विचार में

इस स्थान पर, मुख्य रूप से महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक पर ग्रंथ, और युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका, और संक्षिप्त शब्द (शब्द 1-9, शब्दों में शामिल), आपको सिखाते हैं, मेरी धन्य, निर्दोष बहनों, और आप में से युवा, जो विश्वास में मेरे बच्चों की तरह हैं।

मैंने सुना है कि आप चाहते हैं कि मैं आपको मस्जिद में पढ़ाऊँ। लेकिन मेरी खराब सेहत और कई अन्य कारण इसकी इजाज़त नहीं देते। मैंने फैसला किया है कि मैं अपनी उन सभी बहनों को जो इस निर्देश को पढ़ती हैं और स्वीकार करती हैं, जिन्हें मैंने आपके लिए लिखा है, अपनी प्रार्थनाओं और अपने सभी आध्यात्मिक लाभों में शामिल करूँगा, जैसे कि रिसाले-ए-नूर के छात्र।

यदि आप मेरे स्थान पर कम से कम आंशिक रूप से रिसाले-ए-नूर प्राप्त करते हैं और पढ़ते हैं, तो हमारे नियम के अनुसार, आपको रिसाले-ए-नूर के सभी छात्रों की प्रार्थनाओं और आध्यात्मिक लाभों में भी हिस्सा मिलेगा , जो आपके भाई हैं।

मैं और भी लिखना चाहता था, लेकिन चूंकि मैं बहुत बीमार, कमजोर और बूढ़ा हो गया हूं, और मेरे पास रिसाले-ए-नूर की पांडुलिपियों को दुरुस्त करने जैसे कई काम हैं , इसलिए फिलहाल इतना ही काफी है।

वह शाश्वत है, वह शाश्वत है।

आपके भाई को आपकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है

नर्सी ने कहा

पच्चीसवीं झलक

पच्चीसवीं चमक

बीमार लोगों के लिए पच्चीस उपचार

यह ग्रंथ एक औषधि, एक सांत्वना, एक आध्यात्मिक नुस्खा तथा बीमार लोगों के स्वास्थ्य लाभ की कामना के लिए लिखा गया था।

एक अनुस्मारक और एक माफ़ी

उनका आध्यात्मिक नुस्खा, जो बहुत तेजी से लिखा गया था, संशोधित नहीं किया गया है और उसे वैसे ही छोड़ दिया गया है जैसा कि मेरे दिल में आया।

इसलिए मैं पाठकों से, खासकर अस्वस्थ लोगों से, अनुरोध करता हूँ कि वे इस लेख में लिखी किसी भी अप्रिय बात से आहत न हों। मैं उनसे यह भी अनुरोध करता हूँ कि वे मेरे लिए प्रार्थना करें।

वे लोग हैं जो जब कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी की ओर लौटकर जाना है। (2:156)

“और वही है जो मुझे खाना-पीना देता है और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मुझे शिफ़ा देता है।” (26:79-80)

इस पुस्तक में हम उन पच्चीस उपायों के बारे में बता रहे हैं जो बीमार या दुर्भाग्य से पीड़ित लोगों को सच्ची सांत्वना दे सकते हैं, जो मानव जाति का दसवां हिस्सा हैं।

पहला उपाय

हे अपनी बीमारी में जो लोग दुखी हैं, चिन्ता मत करो, धीरज रखो।

आपकी बीमारी आपके लिए नुकसान नहीं, बल्कि एक लाभ है, एक तरह का इलाज है। क्योंकि जीवन ऐसे ही चला जाता है जैसे

पूंजी। अगर यह कोई फल नहीं देती है, तो यह बर्बाद हो जाती है। और अगर यह आराम और लापरवाही में बीत जाती है, तो यह अल्पकालिक होती है, लगभग कोई लाभ नहीं देती। बीमारी आपकी उस पूंजी को भारी लाभ देती है। इसके अलावा, यह आपके जीवन को छोटा होने से रोकती है; यह इसे रोकती है, इसे लंबा या फैलाती है, ताकि यह अपने फल देने के बाद विदा हो जाए। इस तथ्य को इंगित करते हुए कि बीमारी से जीवन लंबा होता है, यह कहावत बहुत प्रसिद्ध और व्यापक रूप से प्रचलित है: "विपत्ति का समय बहुत लंबा होता है; आनंद का समय बहुत छोटा होता है।"

दूसरा उपाय

हे बीमार और धीरज की कमी वाले! निश्चय ही धीरज रखो और धन्यवाद दो। तुम्हारी बीमारी तुम्हारी बीमारी में बीतने वाले जीवन के प्रत्येक मिनट को एक घंटे की पूजा में बदल सकती है। क्योंकि पूजा दो प्रकार की होती है। एक वह जो की जाती है, दूसरी वह जो वास्तव में की नहीं जाती, बल्कि सह ली जाती है और इस प्रकार सच्ची प्रार्थना की ओर ले जाती है। बीमारियाँ और आपदाएँ इसी प्रकार के उदाहरण हैं। इनके माध्यम से, पीड़ित व्यक्ति अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी को गहराई से महसूस करते हैं; वे अपने दयालु सृष्टिकर्ता की शरण लेते हैं और प्रार्थना करते हैं, इस प्रकार सच्ची पूजा करने में सक्षम होते हैं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) से रिवायत है कि ईमान वालों का बीमारी में गुज़रने वाला समय इबादत में गिना जाता है बशर्ते कि वे अल्लाह के बारे में शिकायत न करें।93 रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) से रिवायत है कि कुछ मरीज़ जो शुक्रगुज़ारी के साथ धैर्य दिखाते हैं उनकी एक मिनट की बीमारी एक घंटे की इबादत के बराबर होती है और कुछ आध्यात्मिक रूप से सिद्ध लोगों की एक मिनट की बीमारी एक दिन की इबादत के बराबर होती है। इसलिए शिकायत करने के बजाय बीमारी के लिए शुक्रगुज़ार बनो, जो तुम्हारी ज़िंदगी के एक मिनट को हज़ार मिनट के बराबर बना देती है और तुम्हें लंबी उम्र देती है।

तीसरा उपाय

तुम जो अपनी बीमारी में अधीर हो! यह तथ्य कि इस दुनिया में आने वाले सभी लोग अनिवार्य रूप से चले जाते हैं, कि युवा बूढ़े हो जाते हैं, और यह दुनिया निरंतर मृत्यु और अलगाव के बीच घूमती रहती है, यह प्रमाणित करता है कि मानव जाति इस दुनिया में आनंद या सुख के लिए नहीं आई है। इसके अलावा, यद्यपि मानव जाति जीवित प्राणियों में सबसे उत्तम है, लेकिन यह दुनिया में सबसे समृद्ध प्राणी है।

---

93 अल-बुखारी, "जिहाद" 134; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:410. (ट्र.)

जीवन के साधन और वस्तुतः राजा माने जा सकने वाले मनुष्य, भूतकाल के सुखों पर विचार करने और भविष्य की परेशानियों की चिंता करने के कारण, एक दुःखद, कष्टपूर्ण जीवन जीते हैं, जो पशुओं से भी बहुत निम्न है। इससे पता चलता है कि मनुष्य इस संसार में सुख-चैन और आनंद में जीने के लिए नहीं आया है। बल्कि, विशाल पूंजी के साथ, वह आवश्यक व्यापार करके अनंत जीवन के लिए काम करने के लिए यहाँ आया है। उसे दी गई पूंजी उसका जीवनकाल है।

यदि बीमारी न होती तो अच्छा स्वास्थ्य और आराम असावधानी का कारण बनते, संसार को सुखद बनाते और लोगों को परलोक से विस्मृत कर देते।
मृत्यु और कब्र के विचार से उनका ध्यान हटाकर, अच्छा स्वास्थ्य और सहजता उन्हें जीवन की पूंजी को तुच्छ चीजों पर बर्बाद करने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन बीमारी अचानक उन्हें सचेत कर देती है, और शरीर से कहती है: "तुम अमर नहीं हो, और तुम्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ा गया है। तुम्हारा एक कर्तव्य है। अहंकार छोड़ो; जिसने तुम्हें बनाया है, उसके बारे में सोचो; जान लो कि तुम कब्र में जाओगे, और आवश्यक तैयारी करो!" इस प्रकार, इस दृष्टिकोण से, बीमारी एक सलाहकार है जो कभी धोखा नहीं देती; और यह एक चेतावनी देने वाला मार्गदर्शक है। इस कारण से, बीमारी के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें इसके लिए आभारी होना चाहिए। अगर यह बहुत परेशानी और दर्द देता है, तो हमें धैर्य दिखाना चाहिए।

चौथा उपाय

हे बीमार और शिकायत करने वाले! तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम शिकायत न करो, बल्कि धन्यवाद दो और धैर्य रखो। क्योंकि तुम्हारा शरीर, उसके सभी अंग और तुम्हारी क्षमताएँ तुम्हारी संपत्ति नहीं हैं। तुमने उन्हें नहीं बनाया है, न ही तुमने अपने शरीर के किसी अंग को किसी कारखाने से खरीदा है। वे किसी और की संपत्ति हैं। उनके मालिक को अपनी संपत्ति पर अपनी मर्जी से अधिकार है।

जैसा कि द ट्वेंटी-सिक्सथ वर्ड (द वर्ड्स में शामिल) में बताया गया है, एक बहुत अमीर और असीम रूप से कुशल कपड़े डिजाइनर एक साधारण आदमी को मॉडल के रूप में इस्तेमाल करता है ताकि मजदूरी के बदले में अपनी कलाकृतियों और अमूल्य धन का प्रदर्शन कर सके। थोड़े समय के लिए, वह मॉडल को अपने द्वारा बनाए गए गहनों से जड़े और कलात्मक ढंग से तैयार किए गए परिधान पहनाता है। जब मॉडल इसे पहनती है, तो वह परिधान में बदलाव करता रहता है। अपनी अद्भुत कला को प्रदर्शित करने के लिए, वह परिधान को काटता है, उसमें बदलाव करता है, उसे यहाँ लंबा करता है और वहाँ छोटा करता है। क्या मजदूरी पर काम करने वाले मॉडल को यह कहने का कोई अधिकार है, “झुकने और खड़े होने के आपके आदेश मुझे परेशान कर रहे हैं। इस परिधान को काटना और छोटा करना, जो मुझे और अधिक सुंदर बनाना चाहिए, मेरी सुंदरता को खराब कर रहा है।” क्या मॉडल डिजाइनर पर उसके साथ निर्दयतापूर्वक और अनुचित व्यवहार करने का आरोप लगा सकता है?

तुम जो बीमार हो! जैसा कि उस दृष्टांत में है, सर्व-महान निर्माता - अपने सर्व-सुंदर नामों की कढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए और वास्तव में आपको अधिक से अधिक "सुंदर" बनाने के लिए - आपको अपने शरीर के वस्त्र में कई, विभिन्न अवस्थाओं और स्थितियों से गुजरने का कारण बनता है, जिसमें उसने आपको पहनाया है, जो देखने, सुनने, तर्क करने और महसूस करने जैसी चमकदार क्षमताओं से सुसज्जित है। जिस तरह, भूख के माध्यम से, आप उसके नाम, सर्व-प्रदाता के बारे में सीखते हैं, उसी तरह अपनी बीमारी के माध्यम से, आप उसके नाम, सर्व-चिकित्सा को जानते हैं। चूँकि दुख और आपदाएँ उसके कुछ नामों के आदेशों और कार्यों को प्रकट करती हैं, इसलिए उनमें ज्ञान की झलकियाँ और दया की किरणें हैं, जिनके भीतर कई सुंदरियाँ हैं। यदि हमारे और उसके आदेशों और कार्यों के बीच का पर्दा हटा दिया जाए, तो आपको बीमारी के पर्दे के पीछे कई सुखद और सुंदर अर्थ मिलेंगे, जिनसे आप डरते हैं और नापसंद करते हैं।

पांचवां उपाय

हे रोग से पीड़ित लोगों! इस समय के अनुभव से मुझे यह विश्वास हो गया है कि कुछ लोगों के लिए बीमारी ईश्वरीय कृपा है, दया का उपहार है। यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ, फिर भी पिछले आठ-नौ वर्षों से अनेक युवा लोग अपनी बीमारी के कारण मेरे पास प्रार्थना करने आए हैं। मैंने देखा है कि उसी उम्र के लोगों की तुलना में, जिस किसी अस्वस्थ युवा से मैं मिला हूँ, उसने परलोक के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। वे अब युवावस्था के नशे में नहीं हैं, और असावधानी में निहित पशुवत इच्छाओं से अपने आपको कुछ हद तक बचा लिया है। इस अवलोकन के आधार पर, मैं उन्हें याद दिलाना चाहूँगा कि उनकी सहनीय बीमारियाँ ईश्वरीय कृपा हैं। मैं कहूँगा, "भाई, मैं आपकी इस बीमारी का विरोधी नहीं हूँ।

मुझे आपकी बीमारी के कारण आप पर दया नहीं आ रही है, इसलिए मैं आपके लिए प्रार्थना करूँ। जब तक बीमारी आपको पूरी तरह से जगा न दे, तब तक धैर्य रखने की कोशिश करें, और जब यह अपना कर्तव्य पूरा कर लेगी, तो ईश्वर की इच्छा से, दयालु सृष्टिकर्ता आपको ठीक कर देगा।”

मैं उनसे यह भी कहूंगा:

> अच्छे स्वास्थ्य की आपदा के कारण, तुम्हारी उम्र के बराबर के कुछ लोग असावधान हो जाते हैं, और पाँचों नमाज़ें नहीं पढ़ते; वे क़ब्र के बारे में नहीं सोचते, ईश्वर को भूल जाते हैं, और एक घंटे की सांसारिक ज़िंदगी के सतही सुख के लिए अनंत जीवन को नुकसान पहुँचाते हैं, यहाँ तक कि नष्ट कर देते हैं। लेकिन बीमारी की नज़र से तुम अपनी क़ब्र को देखते हो, जिसमें तुम किसी भी हालत में प्रवेश करोगे, और उसके आगे आख़िरत के महलों को, और

इसका मतलब यह है कि बीमारी आपके लिए अच्छा स्वास्थ्य है, जबकि आपके कुछ साथियों का अच्छा स्वास्थ्य वास्तव में उनके लिए बीमारी है।

छठा उपाय

तुम जो बीमार हो और अपने दुख की शिकायत करते हो, मैं तुमसे कहता हूँ: अपने पिछले जीवन के बारे में सोचो और सुखद, खुश दिनों और दुखद, परेशानी भरे समय को याद करो। निश्चित रूप से, तुम या तो कहोगे, “ओह!” या, “आह!” यानी, तुम्हारा दिल और जुबान या तो कहेगा, “सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान को!” या, “हाय, हाय!”

ध्यान दें कि आपको राहत की सांस लेने और यह कहने के लिए क्या प्रेरित करता है, "सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान के लिए है!" यह है कि अतीत में आपके साथ हुई पीड़ाओं और विपत्तियों के बारे में सोचना एक तरह का आध्यात्मिक आनंद जगाता है और आपके दिल को आभारी बनाता है। क्योंकि दुखों का गायब होना एक खुशी है। दुखों और विपत्तियों के चले जाने से आत्मा में एक स्थायी खुशी रह जाती है। जब यह सोच के माध्यम से जगाया जाता है, तो आत्मा से धन्यवाद के साथ एक खुशी निकलती है।

जो बात आपको “हाय, हाय!” कहने पर मजबूर करती है, वह है अतीत में आपके द्वारा भोगा गया सुखद और खुशनुमा समय। समाप्ति के माध्यम से, उन्होंने आपकी आत्मा में एक अंतहीन दर्द छोड़ दिया है, ताकि जब भी आप उनके बारे में सोचें, तो वह दर्द जाग उठे और दुख और पछतावा पैदा हो।

चूँकि एक दिन का अवैध आनंद कभी-कभी एक साल की आध्यात्मिक पीड़ा का कारण बनता है, जबकि एक दिन की अस्थायी बीमारी का दर्द कई दिनों के पुरस्कारों के साथ-साथ इसके खत्म होने का आनंद भी लाता है, इस अस्थायी बीमारी के परिणाम के बारे में सोचें जो आप अभी भुगत रहे हैं और इसके संभावित पुरस्कारों के बारे में सोचें। कहो, “यह भी बीत जाएगा, भगवान की इच्छा से!” और, शिकायत करने के बजाय, धन्यवाद दें।

एक और छठा उपाय

आप, विश्वास में भाई या बहन, जो इस दुनिया के सुखों के बारे में सोचते हैं और बीमारी से परेशान हैं! अगर यह दुनिया शाश्वत होती, और अगर अनंत काल की ओर हमारे रास्ते में मृत्यु नहीं होती, और अगर अलगाव और मृत्यु की हवाएँ नहीं चलतीं, और अगर विपत्तिपूर्ण और तूफानी भविष्य में आत्मा की "सर्दियाँ" नहीं होतीं, तो मुझे आप पर और आपके साथ दया आती। लेकिन चूँकि दुनिया एक दिन हमसे कहेगी, "अब, यह प्रस्थान का समय है!" और इन बीमारियों से आगाह हमारी चीखों पर अपने कान बंद कर लेगी, इसलिए हमें इससे पहले कि यह हमें बाहर निकाल दे, इसके प्रति अपना प्रेम त्याग देना चाहिए।

इससे पहले कि वह हमें त्याग दे, हमें अपने हृदय से उसे त्यागने का प्रयास करना चाहिए।

बीमारी हमें इस वास्तविकता की याद दिलाती है और कहती है, "आपका शरीर पत्थर और लोहे से नहीं बना है; बल्कि यह विभिन्न सामग्रियों से बना है जो कि

विभाजन और विघटन के अधीन। अहंकार छोड़ो, अपनी जन्मजात नपुंसकता से अवगत होओ, अपने स्वामी को पहचानो, अपने कर्तव्यों को जानो, और सीखो कि तुम दुनिया में क्यों आए हो!" बीमारी दिल के कान में चुपके से यह कहती है।

और चूँकि इस दुनिया के सुख और आनन्द स्थायी नहीं होते और खास तौर पर अगर वे वैध हों तो यह दुखदायी और दर्दनाक होता है, इसलिए बीमारी के कारण उनके चले जाने पर रोना मत। इसके विपरीत, बीमारी को सहन करके आप जो इबादत कर रहे हैं और उसके बाद के सवाब के बारे में सोचिए और संतुष्ट रहने की कोशिश कीजिए।

सातवां उपाय

तुम जो बीमार हो और स्वास्थ्य का सुख खो चुके हो! तुम्हारी बीमारी स्वास्थ्य में ईश्वरीय आशीर्वाद की संतुष्टि को नष्ट नहीं करती; बल्कि, यह तुम्हें उसका अधिक गहराई से स्वाद चखाती है, और उसे बढ़ाती है। क्योंकि अगर कोई चीज बिना रुके चलती रहे, तो उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। सत्य के लोग इस बात से सहमत हैं कि "चीजें उनके विपरीत के माध्यम से जानी जाती हैं।" उदाहरण के लिए, अगर अंधेरा न होता, तो प्रकाश को पहचाना नहीं जा सकता और यह कोई आनंद नहीं देता। ठंड के बिना, गर्मी को पहचाना नहीं जा सकता, और यह अप्रिय बनी रहेगी। अगर भूख न हो, तो भोजन कोई आनंद नहीं देगा। अगर प्यास न हो, तो पानी पीने से संतुष्टि नहीं मिलेगी। बीमारी के बिना, स्वास्थ्य और भूख आनंद रहित होगी।

मनुष्यों को अनेक इंद्रियाँ, अंग और क्षमताएँ प्रदान करके, ताकि वे ब्रह्माण्ड में उसकी असंख्य कृपाओं को चख सकें और पहचान सकें, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता यह दर्शाता है कि वह चाहता है कि मनुष्य उसकी सभी कृपाओं का अनुभव करें और निरंतर धन्यवाद दें।

इसलिए, जैसे वह अच्छा स्वास्थ्य और भूख देता है, वैसे ही वह निश्चित रूप से बीमारियाँ और दर्द भी देगा। मैं आपसे पूछता हूँ: अगर आपको अपने सिर, हाथ या पेट में यह तकलीफ़ नहीं होती, तो क्या आप अपने सिर, हाथ या पेट में अच्छे स्वास्थ्य के लिए ईश्वरीय कृपा की खुशी को याद करते और धन्यवाद देते? निश्चित रूप से, न केवल आपने धन्यवाद नहीं दिया होगा, बल्कि आपने इस पर विचार भी नहीं किया होगा! आपने उस अच्छे स्वास्थ्य को अनजाने में और लापरवाही से, और शायद बेवजह भी खर्च कर दिया होगा।

आठवां उपाय

ऐ बीमार और आख़िरत के बारे में सोच रहे हो! बीमारी साबुन की तरह गुनाहों की गंदगी को धो देती है और पाक कर देती है। एक हक़ीकत हदीस में है कि बीमारियाँ गुनाहों का प्रायश्चित हैं। इसमें कहा गया है, "जैसे पके हुए फल गिरते हैं

पेड़ को हिलाने से वह नष्ट हो जाता है, इसलिए बीमारी के दौरान हिलाए जाने से मोमिन के पाप भी नष्ट हो जाते हैं।”94

पाप शाश्वत जीवन में स्थायी बीमारियाँ हैं। वे इस सांसारिक जीवन में हृदय, विवेक और आत्मा के लिए भी बीमारियाँ हैं। यदि आप दृढ़ रहें और शिकायत न करें, तो आप उस अस्थायी बीमारी के माध्यम से कई स्थायी बीमारियों से बच जाएँगे। लेकिन यदि आप पापों के बारे में चिंता नहीं करते हैं, या परलोक के बारे में नहीं जानते हैं, या ईश्वर को नहीं पहचानते हैं, तो आपको ऐसी बीमारी है जो आपकी वर्तमान बीमारी से लाख गुना बदतर है। इस पर चिल्लाएँ, क्योंकि आपके हृदय, आत्मा और आत्मा का दुनिया के सभी प्राणियों के साथ संबंध है। क्षय, मृत्यु और अलगाव के माध्यम से उनके साथ आपका संबंध लगातार टूटता रहता है, जिससे आपके अंदर असंख्य घाव खुलते हैं। विशेष रूप से जब से आप परलोक के बारे में नहीं जानते हैं और मृत्यु को शाश्वत विनाश मानते हैं, यह ऐसा है जैसे कि आपका शरीर असंख्य घावों और बीमारियों से ग्रस्त है। इसलिए, आपको सबसे पहले जो करना चाहिए वह है इन असंख्य आध्यात्मिक घावों और बीमार शरीर की बीमारियों के इलाज के रूप में विश्वास की खोज करना। आपको अपने पंथ को सुधारना होगा, और इस तरह के उपचार का सबसे छोटा, सबसे सीधा तरीका है अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी की खिड़की के माध्यम से एक सर्वशक्तिमान महामहिम की शक्ति और दया को पहचानना, जिसे आपकी शारीरिक बीमारी ने लापरवाही के पर्दे के नीचे से दिखाया है।

वास्तव में, जो ईश्वर को नहीं पहचानता, वह संसार भर के क्लेशों से ग्रस्त रहता है, जबकि जो ईश्वर को पहचानता है, उसका संसार प्रकाश और आध्यात्मिक आनंद से भरा होता है। हर कोई अपने विश्वास की शक्ति के अनुसार इस बात को जानता है। शारीरिक बीमारियों का दर्द आध्यात्मिक आनंद, उपचार और विश्वास से मिलने वाले सुख के नीचे पिघल जाता है।

नौवां उपाय

हे बीमारों, अपने निर्माता को स्वीकार करो! लोग बीमारी से डरते हैं और परेशान होते हैं क्योंकि यह कभी-कभी मौत का कारण बनती है। चूँकि मृत्यु सतही और असावधान दृष्टिकोण से भयावह है, इसलिए ऐसी बीमारियाँ जो इसे जन्म दे सकती हैं, डर और चिंता का कारण बनती हैं।

इसलिए सबसे पहले यह जान लें और यकीन से मान लें कि मौत की नियत घड़ी निश्चित है और बदलती नहीं। कई बार ऐसा हुआ है कि गंभीर रूप से बीमार लोगों के पास रोते हुए स्वस्थ लोग मर गए हैं, जबकि गंभीर रूप से बीमार लोग ठीक हो गए हैं और जीवित हैं।

94 अल-बुखारी, "मर्दा'" 1, 2, 13; मुस्लिम, "बीरर" 14. (ट्र.)

दूसरी बात यह है कि मौत डरावनी नहीं है; यह वैसी नहीं है जैसी दिखती है। हमने कुरान की रोशनी के आधार पर रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में इस बात को स्पष्ट रूप से समझाया है कि ईमान वालों के लिए मौत इस जीवन के कर्तव्यों की कठिनाइयों से मुक्ति है। यह इबादत से भी राहत है, जो इस दुनिया में परीक्षाओं के मैदान में एक अभ्यास और प्रशिक्षण है। इसके अलावा, यह उन निन्यानबे रिश्तेदारों और प्रियजनों से फिर से मिलने का एक साधन है जो पहले ही दूसरी दुनिया में चले गए हैं। यह सच्ची मातृभूमि और खुशी के शाश्वत निवास में प्रवेश करने का एक साधन भी है। इसके अलावा, यह दुनिया की कैद से जन्नत के विशाल बागों की ओर एक निमंत्रण है। और यह वह समय है जब कोई व्यक्ति सेवा के बदले में दयालु निर्माता की कृपा से मजदूरी प्राप्त करता है। चूंकि यह मृत्यु की वास्तविकता है, इसलिए हमें मृत्यु को एक डरावनी चीज के रूप में नहीं, बल्कि दया और खुशी की प्रस्तावना के रूप में देखना चाहिए।

इसके अलावा, परमेश्वर के कुछ लोगों के लिए, मृत्यु का भय आतंक नहीं है
वे मृत्यु के कारण ही ऐसा नहीं करते, बल्कि वे इस आशा के कारण ऐसा करते हैं कि जीवन के कर्तव्यों को जारी रखने से उन्हें अधिक अच्छे कार्य करने से अधिक पुण्य प्राप्त होगा।

आस्थावान लोगों के लिए मृत्यु ईश्वरीय दया का द्वार है, जबकि गुमराह लोगों के लिए यह अनन्त अंधकार का गड्ढा है।

दसवां उपाय

आप जो बीमार हैं और बेवजह चिंता कर रहे हैं! आपकी चिंता आपकी बीमारी की गंभीरता के कारण है, लेकिन आपकी चिंताएँ आपकी बीमारी को और गंभीर बना देती हैं। अगर आप चाहते हैं कि आपकी बीमारी कम गंभीर हो, तो इसके बारे में चिंता न करें। यानी, अपनी बीमारी के लाभों के बारे में सोचें, इससे मिलने वाले आध्यात्मिक पुरस्कारों के बारे में सोचें और यह सोचें कि यह जल्दी ठीक हो जाएगी। चिंता करना छोड़ दें और बीमारी को जड़ से खत्म कर दें।

वास्तव में, चिंता बीमारी के बोझ को दोगुना कर देती है; आपकी शारीरिक बीमारी के अलावा, यह आपके दिल में एक अभौतिक बीमारी का कारण बनती है, जिस पर शारीरिक बीमारी निर्भर करती है और जिसके माध्यम से यह बनी रहती है। यदि वह चिंता समर्पण, त्याग और बीमारी में निहित ज्ञान के बारे में सोचने के माध्यम से गायब हो जाती है, तो बीमारी की एक महत्वपूर्ण जड़ कट जाएगी। यह कम गंभीर हो जाती है और आंशिक रूप से गायब हो जाती है। कभी-कभी एक छोटी शारीरिक बीमारी सिर्फ चिंता और आशंका के कारण दस गुना बढ़ जाती है। जब चिंता और आशंका खत्म हो जाती है, तो बीमारी का नौ दसवां हिस्सा गायब हो जाता है। बीमारी को बढ़ाने के अलावा, चूंकि चिंता ईश्वरीय ज्ञान के खिलाफ एक आरोप है, इसलिए एक बीमारी को कम करने के लिए एक उपाय है।

ईश्वरीय दया की आलोचना और सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता के बारे में शिकायत के कारण, यह विपरीत पीड़ा का कारण बनता है और बीमारी को बढ़ाता है।

वास्तव में, जिस तरह आभार व्यक्त करने से अनुग्रह बढ़ता है, उसी तरह शिकायत करने से बीमारियाँ और दुख बढ़ते हैं। इसके अलावा, चिंता अपने आप में एक बीमारी है। इसका इलाज बीमारी में निहित ज्ञान को जानना है। चूँकि अब आप बीमारी में निहित ज्ञान और उसके लाभों से अवगत हैं, इसलिए चिंता पर मरहम लगाएँ और राहत पाएँ। “आह!” के बजाय “ओह!” कहें और “हाय!” और “ओह डियर!” के बजाय “हर स्थिति के लिए भगवान की प्रशंसा हो!” कहें।

ग्यारहवां उपाय

हे विश्वासी भाई या बहन! तुम जो बीमार और अधीर हो! यद्यपि तुम्हारी वर्तमान बीमारी तुम्हें कुछ कष्ट देती है, तुम्हारी सभी पिछली बीमारियों ने तुम्हारी आत्मा के लिए एक अमूर्त संतोष उत्पन्न किया है जिसके परिणामस्वरूप तुम उनसे ठीक हो गए हो, और उन्हें सहन करने के लिए प्राप्त पुरस्कार से उत्पन्न एक आध्यात्मिक आनंद। आज से, यहाँ तक कि इस समय से भी कोई बीमारी नहीं हो सकती, इसलिए जो चीज़ मौजूद नहीं है उससे कोई दर्द नहीं हो सकता। और अगर कोई दर्द नहीं है, तो कोई दुख नहीं है। लेकिन चूँकि तुम अन्यथा कल्पना करते हो, इसलिए तुम अधीरता दिखा रहे हो। क्योंकि आज से पहले बीमारी के सभी समय, उनके द्वारा दिए गए दर्द के साथ गायब हो गए हैं, बीमारी के साथ लाए गए पुरस्कार और उनके जाने से मिलने वाले आनंद को छोड़कर। इसलिए, जब वे तुम्हें लाभ और खुशी की भावना देनी चाहिए, तो उनके बारे में सोचना और दुखी होना, या अधीर होना पागलपन है। भविष्य के दिन अभी नहीं आए हैं। अब उनके बारे में सोचना और दुःखी होना तथा उस दिन के बारे में सोचकर अधीरता दिखाना जो अस्तित्व में नहीं है, या उस बीमारी के बारे में जो अस्तित्व में नहीं है, या उस पीड़ा के बारे में जो अस्तित्व में नहीं है, और इस प्रकार गैर-अस्तित्व की तीन डिग्री को अस्तित्व का रंग देना - यदि यह पागलपन नहीं है, तो क्या है?

चूँकि बीमारी के समय ने अब तक सुख दिया है और उसके बाद के समय और बीमारियाँ और दुःख (जो तुम सोचते हो कि वे ला सकते हैं) अस्तित्वहीन हैं, इसलिए अल्लाह ने तुम्हें जो धैर्य दिया है, उसे दाएं और बाएं न बिखेरो, बल्कि उसे वर्तमान समय के दुःख के विरुद्ध सक्रिय करो। कहो, "हे धैर्यवान!" और इसे सहन करो।

बारहवां उपाय

ऐ अल्लाह ! जो बीमारी की वजह से अपनी इबादत और दुआएँ अदा नहीं कर सकते और इस बात पर पछताते हो! जान लो कि एक हदीस में है, "एक नेक, अल्लाह-

बीमारी के कारण जो श्रद्धालु विश्वासी सामान्य रूप से और नियमित रूप से प्रार्थना नहीं कर सकता, उसे भी बराबर का पुरस्कार मिलता है।''95 बीमारी बीमार व्यक्ति की अतिरिक्त प्रार्थनाओं का स्थान ले लेती है, जो यथासंभव अपनी अनिवार्य उपासना करता है और ईश्वर पर पूर्ण भरोसा रखते हुए धैर्य दिखाता है।

इसके अलावा, बीमारी लोगों को उनकी जन्मजात नपुंसकता और कमज़ोरी की याद दिलाती है, और उन्हें मौखिक रूप से और अपनी स्थिति की जीभ के माध्यम से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्यों को असीम नपुंसकता और कमज़ोरी के साथ बनाया है ताकि वे लगातार ईश्वरीय न्यायालय में शरण लें और प्रार्थना और प्रार्थना करें। चूँकि, आयत के अनुसार, कहो: "मेरे रब को तुम्हारी परवाह नहीं होती अगर तुम प्रार्थना न करते" (25:77) मानवता के निर्माण में बुद्धिमत्ता और उसके मूल्य का कारण ईमानदारी से प्रार्थना है, और चूँकि बीमारी लोगों को ऐसी प्रार्थनाओं की ओर ले जाती है, इसलिए बीमारी के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें ईश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहिए, और प्रार्थना के उस फव्वारे को बंद नहीं करना चाहिए जो बीमारियों के कारण बहता है।

तेरहवां उपाय

आप जो दुखी हैं और अपनी बीमारी की शिकायत करते हैं! बीमारी एक महत्वपूर्ण खजाना है और कुछ लोगों के लिए एक बहुत ही मूल्यवान ईश्वरीय उपहार है। हर बीमार व्यक्ति अपनी बीमारी को इस दृष्टिकोण से देख सकता है।

हमारी मृत्यु का समय हमें ज्ञात नहीं है। इसलिए लोगों को निराशा और असावधानी से बचाने के लिए और उन्हें भय और आशा के बीच में रखने के लिए और ऐसी स्थिति में रखने के लिए जिससे वे न तो दुनिया में और न ही आख़िरत में हारें, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मृत्यु के समय को गुप्त रखा है। चूँकि मृत्यु कभी भी आ सकती है, इसलिए यदि वह मनुष्य को असावधानी में जकड़ ले, तो उसके अनन्त जीवन को बहुत नुकसान पहुँचा सकती है। लेकिन बीमारी असावधानी को दूर कर देती है, लोगों को उनके परलोक के बारे में सोचने पर मजबूर कर देती है और उन्हें मृत्यु की याद दिलाती है और इस प्रकार उन्हें आख़िरत के लिए तैयार करती है। वे कभी-कभी इतना बड़ा लाभ कमा लेते हैं कि बीस दिन में वे वह पद प्राप्त कर लेते हैं जो अन्यथा वे बीस वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

उदाहरण के लिए, मेरे दोस्तों में दो नौजवान थे, अल्लाह उन पर रहम करे, इलेमा गाँव के सबरी और इस्लामकोय के वज़ीरज़ादे मुस्तफ़ा। मैं हैरानी से देखता था कि हालाँकि ये दोनों अनपढ़ थे और रिसाले-ए-नूर की नकल करके सेवा नहीं कर सकते थे, लेकिन वे ईमानदारी और ईमान की सेवा में सबसे आगे थे। मुझे नहीं पता था कि ऐसा क्यों हुआ

95 अबू दाऊद, "जनाईज़" 1; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:418।

ऐसा ही था। उनकी मृत्यु के बाद मुझे समझ में आया कि दोनों को गंभीर बीमारी थी

बीमारी। उस बीमारी से प्रेरित होकर, अन्य लापरवाह युवकों के विपरीत, जो अनिवार्य पूजा नहीं करते थे, उनमें ईश्वर के प्रति बहुत श्रद्धा थी, और उन्होंने सबसे मूल्यवान सेवाएं कीं, जिससे उन्हें परलोक के लिए लाभकारी स्थिति प्राप्त हुई। ईश्वर की इच्छा से, दो साल की बीमारी की परेशानी लाखों वर्षों के अनंत जीवन के आनंद का साधन बन गई। अब मैं समझता हूँ कि मैंने कभी-कभी उनके स्वास्थ्य के लिए जो प्रार्थनाएँ कीं, वे इस दुनिया के लिए अभिशाप थीं। मुझे उम्मीद है कि परलोक में उनकी भलाई के लिए मेरी प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाएँगी।

इस प्रकार मेरा यह मानना है कि इन दोनों ने उतना ही लाभ प्राप्त किया जितना दस वर्ष की तक़वा और परहेज़गारी से प्राप्त होता है। यदि उन्होंने कुछ युवकों की तरह अपनी जवानी और अच्छी सेहत पर भरोसा किया होता और अपने आपको लापरवाही और बरबादी में फँसने दिया होता और यदि मृत्यु, जो हमेशा घात लगाए रहती है, उन्हें उनके पापों की गंदगी के बीच में ही पकड़ लेती, तो उनकी क़ब्रें प्रकाश के उस ख़ज़ाने के बजाय बिच्छुओं और साँपों के घर होतीं।

चूँकि बीमारी में इतने लाभ हैं, इसलिए हमें इसके बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि ईश्वर पर धैर्यपूर्वक भरोसा रखते हुए, उनके प्रति कृतज्ञता और उनकी दया पर विश्वास रखते हुए इसे सहन करना चाहिए।

चौदहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो क्योंकि तुम्हारी आँखों में मोतियाबिंद है! अगर तुम जानते कि मोतियाबिंद के नीचे कितनी रोशनी और आध्यात्मिक दृष्टि छिपी है जो एक आस्तिक की आँखों को ढक सकती है, तो तुम कहोगे, "मेरे दयालु भगवान को एक लाख धन्यवाद।" मैं तुम्हें इस मरहम को समझाने के लिए एक घटना सुनाता हूँ। यह इस प्रकार है:

एक बार बरला के सुलेमान की बुआ, जिसने आठ साल तक पूरी निष्ठा से और बिना किसी को नाराज़ किए मेरी सेवा की, अंधी हो गई। मेरे हक़ से सौ गुना ज़्यादा अच्छा सोचते हुए उस नेक औरत ने मुझे मस्जिद के दरवाज़े पर पकड़ लिया और मुझसे उसकी आँखों के ठीक होने के लिए दुआ माँगी। इसलिए मैंने उस नेक औरत की नेकी को अपनी दुआ का सबब बनाया और दुआ की, "ऐ रब! उसकी नेकी के कारण उसे फिर से आँखें दे दे।" दो दिन बाद बुरदुर से एक आँख का डॉक्टर आया और उसने मोतियाबिंद हटा दिया। लेकिन चालीस दिन बाद उसकी फिर से आँखें चली गईं। मुझे बहुत दुख हुआ और मैंने उसके लिए दिल से दुआ की। मुझे उम्मीद है कि उसके परलोक के लिए दुआ कबूल हो गई होगी, वरना मेरी दुआ सबसे बड़ी ग़लत थी-

उसके लिए शाप है। क्योंकि उसकी मृत्यु में केवल चालीस दिन शेष रह गए थे; चालीस दिन के बाद वह मर गई - भगवान उस पर दया करें।

इस प्रकार, वृद्धावस्था की आंखों से बरला के दयनीय बगीचों को दु:खपूर्वक देखने के बजाय, वह चालीस हजार दिनों तक अपनी कब्र से स्वर्ग के बगीचों को देखने में सक्षम थी, क्योंकि उसका दृढ़ विश्वास था और वह पूरी तरह से धर्मी थी।

अगर कोई आस्तिक अपनी दृष्टि खो देता है और अंधे की तरह कब्र में चला जाता है, तो वह अपनी डिग्री के अनुसार, कब्र में रहने वाले दूसरे लोगों की तुलना में प्रकाश की दुनिया को बहुत ज़्यादा हद तक देख सकता है। जिस तरह इस दुनिया में हम बहुत सी ऐसी चीज़ें देखते हैं जो अंधे आस्तिक नहीं देख पाते, अगर वे इस दुनिया से ईमान के साथ जाते हैं, तो वे कब्र में रहने वाले दूसरे लोगों की तुलना में ज़्यादा हद तक देख सकते हैं। जैसे कि सबसे शक्तिशाली दूरबीनों से देखते हुए, वे अपनी डिग्री के अनुसार, स्वर्ग के बगीचों को एक फिल्म के पर्दे की तरह देख और देख सकते हैं।

इस प्रकार, धन्यवाद और धैर्य के माध्यम से आप अपनी वर्तमान आंख पर मौजूद पर्दे के नीचे एक ऐसी आंख पा सकते हैं जो प्रकाश से भरी और प्रकाश फैलाने वाली है और जिसके साथ आप धरती के नीचे रहते हुए आकाश के ऊपर स्वर्ग को देख और देख सकते हैं। वह नेत्र विशेषज्ञ जो आपकी वर्तमान आंख से पर्दा हटा देगा और आपको उस आंख से देखने में सक्षम करेगा, वह बुद्धिमतापूर्ण कुरान है।

पंद्रहवां उपाय

ऐ बीमार और आहें भरने वाले और विलाप करने वाले! बीमारी के बाहरी पहलू पर विचार न करो और आहें भरो, बल्कि उसके अर्थ पर विचार करो और संतुष्ट रहो। अगर बीमारी का अर्थ अच्छा न होता तो दयालु रचयिता अपने सबसे प्रिय बंदों को बीमारी न देता। हदीस में है, "सबसे कठिन कष्टों से पीड़ित लोग नबी हैं, फिर उनके जैसे लोग, और फिर उनके जैसे लोग।"[96] यानी जो लोग सबसे अधिक कष्ट और कठिनाई से पीड़ित हैं, वे सबसे अच्छे लोग हैं, उनमें सबसे कामिल हैं। नबियों ने, जिनमें विशेष रूप से नबी अय्यूब (उन पर शांति हो), फिर संतों ने, और फिर नबियों और संतों के बाद धर्म में सबसे आगे रहने वालों ने अपनी बीमारियों को सच्ची इबादत और रहमदिल का तोहफा माना है। उन्होंने सब्र के साथ शुक्र अदा किया है। उन्होंने इन बीमारियों को दयालु रचयिता की दया से की गई सर्जरी के रूप में देखा है।

---

[96] एट-तिर्मिधि, "ज़ुहद" 57; इब्न माजा, "फ़ितन" 23. (ट्र.)

ऐ तुम जो चिल्लाते हो और विलाप करते हो! अगर तुम इस प्रकाश फैलाने वाले कारवां में शामिल होना चाहते हो, तो धैर्य के साथ शुक्र अदा करो। क्योंकि अगर तुम शिकायत करोगे, तो वे तुम्हें अपने बीच में नहीं आने देंगे। तुम गुमराह लोगों के गड्ढों में गिर जाओगे, और एक अंधेरी राह पर चलोगे।

बेशक कुछ बीमारियाँ ऐसी होती हैं जो अगर मौत का कारण बनती हैं तो एक तरह की शहादत की तरह होती हैं। वे इंसान को एक हद तक संतत्व प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, उन ईमानवाली औरतों की तरह जो बच्चे को जन्म देते समय या उसके कारण मर जाती हैं।
जो लोग पेट में दर्द, डूबने, जलने या प्लेग से मरते हैं, उन्हें शहीद माना जाता है।98 ऐसी अन्य धन्य बीमारियाँ भी हैं, जिनके कारण मरने वाले लोगों को संतत्व की डिग्री प्राप्त करने में मदद मिलती है।

इसके अलावा, चूँकि बीमारी दुनिया के प्रति प्रेम और आसक्ति को कम करती है, इसलिए यह दुनिया से अलग होने के दर्द को हल्का करती है, जो सांसारिक लोगों के लिए बहुत दुखद है। कभी-कभी यह ऐसी विदाई को वांछनीय बना देती है।

सोलहवां उपाय

तुम जो बीमार हो और अपनी परेशानी की शिकायत करते हो! बीमारी सम्मान और करुणा को प्रेरित करती है, जो मानव सामाजिक जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा है। यह लोगों को आत्मनिर्भरता की दंभपूर्ण भावनाओं से बचाता है, जो उन्हें अमित्रता और निर्दयता की ओर ले जाती है। क्योंकि, वास्तव में नहीं, बल्कि मनुष्य अनियंत्रित और विद्रोही है, क्योंकि वह खुद को आत्मनिर्भर मानता है (96: 6-7), एक शारीरिक, बुराई करने वाली आत्मा जो अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के कारण आत्मनिर्भर महसूस करती है, वह उन कई कारणों पर विचार नहीं करती है जो भाईचारे के योग्य हैं। और वे दुर्भाग्य से पीड़ित या बीमार के प्रति करुणा महसूस नहीं करते हैं, जिन पर दया और दया दिखाई जानी चाहिए। फिर भी, जब भी वे बीमार होते हैं, तो वे अपनी जन्मजात नपुंसकता और ज़रूरतमंदी के बारे में जानते हैं, और अपने बहनों और भाइयों के प्रति सम्मान महसूस करते हैं जो इसके योग्य हैं। वे अपने विश्वासी भाइयों और बहनों का सम्मान करते हैं जो उनसे मिलने आते हैं या उनकी मदद करते हैं। और वे मानवीय दयालुता महसूस करते हैं, जो विपत्तिग्रस्त लोगों के प्रति दया और करुणा से उत्पन्न होती है - जो सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी विशेषता है। दूसरों की खुद से तुलना करते हुए, वे उनके साथ सहानुभूति रखते हैं, उनके लिए स्नेह महसूस करते हैं, और उनकी मदद करने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करते हैं।

---

97 यदि कोई गर्भवती महिला विवाह के चालीस दिन के भीतर मर जाती है तो उसे किसी न किसी प्रकार की शहादत प्राप्त हो सकती है।
जन्म देना।

98 अल-बुहारी, "जिहाद" 30; मुस्लिम, ''इमारा'' 164. (ट्र.)

कम से कम वे दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं और उन्हें सांत्वना देने के लिए उनसे मिलने जाते हैं, जो कि शरीयत के अनुसार सुन्नत का काम है,99 और इस प्रकार उन्हें सवाब मिलता है।

सत्रहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो और शिकायत करते हो कि बीमारी की वजह से अच्छे काम नहीं कर पा रहे हो! शुक्रिया अदा करो! यह बीमारी ही है जो तुम्हारे लिए सबसे नेक कामों का द्वार खोलती है। बीमारी बीमार व्यक्ति और जो लोग ईश्वर के लिए उनकी देखभाल कर रहे हैं, उनके लिए लगातार सवाब पाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है; इसके अलावा, यह प्रार्थनाओं को स्वीकार करने का एक साधन भी है।

बेशक, उन ईमान वालों के लिए बहुत बड़ा सवाब है जो बीमारों की देखभाल करते हैं। बीमारों का हालचाल पूछना और उनसे मिलना - बशर्ते कि इससे उन पर कोई कर न लगे - सुन्नत है , ऐसा काम जिसकी हमारे पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने बहुत सिफ़ारिश की है।100 यह पापों का प्रायश्चित भी है।

एक हदीस में है , जिसमें कहा गया है, "बुरे लोगों की दुआएं स्वीकार करो, क्योंकि उनकी दुआएं स्वीकार की जाती हैं।"101

खास तौर पर अगर बीमार व्यक्ति कोई रिश्तेदार है, खास तौर पर माता-पिता, तो उनकी देखभाल करना पूजा का एक महत्वपूर्ण रूप है जिससे महत्वपूर्ण पुरस्कार मिलता है। बीमार व्यक्ति के दिल को खुश करना और उसे सांत्वना देना दान देने के समान है।
भाग्यशाली वह है जो बीमार होने पर अपने माता-पिता के दिल को खुश कर देता है और उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है। वास्तव में, स्वर्गदूत भी यह कहते हुए तालियाँ बजाते हैं, "यह कितना अच्छा है, कितना धन्य है! ईश्वर उन्हें भरपूर इनाम दे!" उन अच्छे बच्चों के वफादार दृश्यों के सामने जो अपने माता-पिता की करुणा और देखभाल का जवाब देते हैं - जो समाज के जीवन में सम्मान के सबसे योग्य हैं - अपनी बीमारी के दौरान पूर्ण सम्मान और संतानवत दयालुता के साथ, मानवता की महानता दिखाते हुए।

बीमारी के दौरान बहुत खुशी और आनंद मिलता है जो बीमार व्यक्ति के आस-पास के लोगों की दया, दया और करुणा से उत्पन्न होता है; वे बीमारी के दर्द को कम कर देते हैं। बीमार व्यक्ति की प्रार्थनाओं की स्वीकार्यता बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले तीस या चालीस वर्षों से, मैं खुद उस कटिवात से ठीक होने के लिए प्रार्थना करता रहा हूँ जिससे मैं पीड़ित हूँ। हालाँकि, मुझे समझ में आया कि यह बीमारी मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में दी गई थी।

चूँकि प्रार्थना के द्वारा प्रार्थना को हटाया नहीं जा सकता, अर्थात् चूँकि प्रार्थना नहीं कर सकती

---

[99] मुस्लिम, "बीरर" 40; अबू दाऊद, "जनाईज़" 7; अत-तिर्मिधि, "जनाईज़" 2. (ट्र.)

[100] अल-बुखारी, "मर्दा'" 4, 5; मुस्लिम, "सलाम" 47.

101 इब्न माजाह "जनाईज़" 1; अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, 6:541। (ट्र.)

मैं समझ गया कि प्रार्थनाओं का उत्तर परलोक में मिलेगा, और बीमारी भी एक प्रकार की पूजा है, क्योंकि बीमारी के माध्यम से व्यक्ति अपनी जन्मजात नपुंसकता का एहसास करता है और ईश्वरीय न्यायालय में शरण लेता है ।

इसलिए, यद्यपि मैंने तीस वर्षों से स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना की है और जाहिर है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई है, फिर भी मेरे मन में कभी प्रार्थना छोड़ देने का विचार नहीं आया। क्योंकि बीमारी ही प्रार्थना का अवसर या कारण है; ठीक होना प्रार्थना का परिणाम नहीं है। यदि सर्वज्ञ और दयालु ईश्वर उपचार प्रदान करता है, तो वह अपनी शुद्ध कृपा से प्रदान करता है।

इसके अलावा, अगर प्रार्थनाएँ हमारी इच्छा के अनुसार स्वीकार नहीं की जाती हैं, तो यह नहीं कहा जाना चाहिए कि उनका उत्तर नहीं मिला है। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता हमसे बेहतर जानता है; वह हमारे लिए जो अच्छा है, वह देता है। कभी-कभी हमारे हित में वह हमारे सांसारिक जीवन के लिए हमारी प्रार्थनाओं को हमारे परलोक के नाम पर स्वीकार करता है। किसी भी स्थिति में, एक प्रार्थना जो किसी बीमारी के कारण ईमानदारी प्राप्त करती है और जो हमारी जन्मजात कमजोरी, नपुंसकता, विनम्रता और विशेष रूप से आवश्यकता से उत्पन्न होती है, वह स्वीकार किए जाने के बहुत करीब है। बीमारी इस तरह की पाप-ईमानदारी वाली प्रार्थना का साधन है। बीमार जो धार्मिक हैं और आस्तिक जो बीमारों की देखभाल करते हैं, दोनों को इस प्रार्थना का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

अठारहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो और शुक्र अदा करना छोड़ कर अब शिकायत करने लगे हो! शिकायत शिकायत करने के अधिकार से पैदा होती है। तुम्हारा कोई अधिकार नहीं छीना गया है, न ही तुमने कुछ खोया है जिसके लिए तुम शिकायत कर सको। बल्कि, तुम्हारे लिए बहुत से शुक्र अदा करना अनिवार्य है, लेकिन तुमने उसे पूरा नहीं किया। अल्लाह के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा किए बिना, जो कि तुम्हारे ऊपर उसका अधिकार है, तुम शिकायत कर रहे हो जैसे कि तुम अधिकारों की मांग कर रहे हो जो कि सही नहीं है। तुम दूसरों को देखकर शिकायत नहीं कर सकते जो तुमसे बेहतर स्वास्थ्य में हैं। बल्कि तुम्हारा काम है कि तुम उन लोगों को देखकर शुक्र अदा करो जो तुमसे खराब स्वास्थ्य में हैं और उनका शुक्र अदा करो। अगर तुम्हारा हाथ टूटा है, तो उन लोगों को देखो जिनके हाथ काटे गए हैं। अगर तुम्हारी एक आंख है, तो उन अंधों को देखो जिनकी दोनों आंखें नहीं हैं।

और परमेश्वर को धन्यवाद दें!

---

102 कुछ बीमारियाँ प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती हैं और प्रार्थना का कारण भी होती हैं। इसलिए अगर प्रार्थना बीमारी को समाप्त कर दे तो प्रार्थना उसके कारण को समाप्त कर देगी। यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती।

बेशक, किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरों को अपने से ज़्यादा फ़ायदेमंद समझे और शिकायत करे। और मुसीबतों में, हर किसी को यह अधिकार है कि वह उन लोगों के बारे में सोचे जो खुद से कमतर हैं, और इस तरह शुक्रिया अदा करे। इस सच्चाई को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर एक उपमा के साथ समझाया गया है, जिसका सारांश इस प्रकार है:

एक आदमी एक बेचारे को मीनार के शिखर पर ले जाता है। हर कदम पर वह उस बेचारे को एक अलग उपहार, एक अलग इनाम देता है। मीनार के शिखर पर ही वह उसे सबसे बड़ा उपहार देता है। यद्यपि वह उन सभी उपहारों के लिए धन्यवाद और कृतज्ञता का पात्र है, फिर भी वह दुष्ट व्यक्ति प्रत्येक कदम पर मिले उपहारों को भूल जाता है, या उन्हें महत्वहीन समझता है, और धन्यवाद दिए बिना, ऊपर देखता है और शिकायत करना शुरू कर देता है, कि "काश यह मीनार ऊंची होती, तो मैं और भी ऊपर चढ़ सकता था। यह उस पहाड़ या उस दूसरी मीनार जितनी ऊंची क्यों नहीं है?" अगर वह इस तरह शिकायत करने लगे, तो यह कितनी बड़ी कृतघ्नता है, कितना बड़ा अन्याय है!

इसी तरह, हर इंसान शून्य से अस्तित्व में आता है और चट्टान, पेड़ या जानवर न होते हुए भी इंसान बन जाता है। इसके अलावा, मुसलमान होना एक और बड़ी नेमत है। ज़्यादातर समय, हम अच्छी सेहत का आनंद लेते हैं और हमें बहुत सी नेमतें दी जाती हैं। इन सबके बावजूद, शिकायत करना और अधीरता दिखाना क्योंकि हम खुद से जुड़ी कुछ कमियों की वजह से कुछ नेमतों के लायक नहीं हैं, या इसलिए कि हम उन्हें गलत विकल्पों या दुर्व्यवहारों के कारण खो देते हैं, या इसलिए कि हम उन्हें प्राप्त करने में असमर्थ थे, और इस तरह ईश्वरीय प्रभुत्व की आलोचना करते हुए कहते हैं, "मैंने ऐसा क्या किया है कि मेरे साथ ऐसा हुआ?" आध्यात्मिक बीमारी शारीरिक बीमारी से ज़्यादा विनाशकारी है। टूटे हुए हाथ से लड़ने की तरह, शिकायत बीमारी को और भी बदतर बना देती है। समझदार व्यक्ति वह है जिसे घोषित किया जाता है,

> जो लोग जब कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौटकर जाना है। (2:156)

और सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति समर्पण में धैर्य दिखाता है, ताकि बीमारी अपना कर्तव्य पूरा कर सके और चली जाए।

उन्नीसवां उपाय

भगवान के सर्वदा चाहने योग्य होने को दर्शाने वाले शब्द के रूप में, जबकि उन्हें स्वयं किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, "सर्वसुंदर नाम" यह दर्शाते हैं कि महामहिम सर्व-दयालु के सभी नाम सुंदर हैं।

सभी प्राणियों में, सबसे सूक्ष्म, सबसे सुंदर, सबसे व्यापक दर्पण जो ईश्वर की सत्ता को दर्शाता है, जो हमेशा से सभी के लिए चाहा गया है, वह जीवन है। सुंदरता का दर्पण सुंदर है। वह दर्पण जो सुंदरता की सुंदरता को दर्शाता है-

जिस प्रकार दर्पण में ऐसी सुन्दरता के माध्यम से जो कुछ घटित होता है, वह अच्छा और सुन्दर होता है, उसी प्रकार सत्य की दृष्टि से जीवन में जो कुछ घटित होता है, वह अच्छा होता है, क्योंकि वह सर्व सुन्दर नामों की सुन्दर छापों को प्रदर्शित करता है, जो कि सर्वगुण सम्पन्न और सुन्दर हैं।

यदि जीवन हमेशा स्वस्थ और तृष्णा से भरा हुआ हो, तो यह एक अपूर्ण दर्पण बन जाता है। वास्तव में, एक अर्थ में, यह अस्तित्वहीनता और शून्यता का संकेत देता है, तथा थकावट का कारण बनता है। यह जीवन के मूल्य को घटाता है, तथा जीवन के आनंद को कष्ट में बदल देता है। अपना समय जल्दी से जल्दी गुजारने के इरादे से, ऊब के कारण लोग या तो खुद को व्यभिचार में या फिर विकर्षणों में डाल देते हैं। वे अपने मूल्यवान जीवन के प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाते हैं, मानो यह जेल की सजा हो, तथा इसे मार डालना चाहते हैं, तथा इसे जल्दी से जल्दी गुजार देना चाहते हैं। इसके विपरीत, परिवर्तन, क्रिया तथा भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में घूमने वाला जीवन अपने मूल्य को महसूस कराता है, तथा हमें इसके महत्व और आनंद को पहचानने में सक्षम बनाता है। भले ही यह परेशानियों और दुर्भाग्य का जीवन हो, लेकिन ऐसे जीवन वाला व्यक्ति नहीं चाहता कि जीवन जल्दी से गुजर जाए। वे ऊब के कारण कोई शिकायत नहीं करते; वे यह नहीं कहते, "हाय! सूरज अभी तक नहीं डूबा है," या, "अभी रात है।"

किसी अमीर और बेकार सज्जन से पूछिए जो विलासिता की गोद में जी रहा है और जिसके पास कुछ भी कमी नहीं है, "आप कैसे हैं?" आपको निश्चित रूप से एक दयनीय उत्तर सुनने को मिलेगा, जैसे, "समय कभी नहीं बीतता। चलो चौसर का खेल खेलते हैं। या चलो समय बिताने के लिए कोई और मनोरंजन ढूँढ़ते हैं।" या फिर आपको दीर्घकालिक सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से उत्पन्न शिकायतें सुनने को मिलेंगी, जैसे, "मैंने यह हासिल नहीं किया है; काश मैंने वह काम किया होता।"

फिर किसी मुसीबत में फंसे व्यक्ति या किसी मजदूर या किसी गरीब से पूछिए, "कैसे हो?" अगर वे समझदार हैं, तो वे जवाब देंगे, "मेरे रब का शुक्र है, मैं ठीक हूँ और काम कर रहा हूँ। अगर शाम इतनी जल्दी न होती, तो मैं यह काम निपटा लेता! समय बहुत जल्दी बीत जाता है और ज़िंदगी बिना रुके चलती रहती है। बेशक, मेरे पास परेशानियाँ और मुश्किलें हैं, लेकिन वे भी बीत जाएँगी। सब कुछ जल्दी बीत जाता है।" असल में, ऐसा व्यक्ति यह बता रहा है कि ज़िंदगी कितनी कीमती है और उसे इसके गुज़र जाने का कितना अफसोस है। इसका मतलब यह है कि वे ज़िंदगी के उस आनंद और मूल्य को समझते हैं जो मुश्किलों और मेहनत के साथ आता है, जबकि आराम और सेहत ज़िंदगी को कड़वा बना देती है और उसे गुज़र जाने की चाहत पैदा करती है।

हे मुसलमान भाई या बहन, जो बीमार हैं! जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में स्पष्ट रूप से और विस्तार से समझाया गया है , जान लें कि विपत्तियों और बुराइयों और यहां तक कि पापों की उत्पत्ति और संस्कृति, अस्तित्वहीनता में है।

जहाँ तक अस्तित्वहीनता का सवाल है, यह बुराई और अंधकार है। ऐसा इसलिए है क्योंकि निरंतर सहजता, मौन, जड़ता और गतिहीनता जैसी स्थितियाँ अस्तित्वहीनता और शून्यता के करीब हैं, इसलिए वे अस्तित्वहीनता के अंधकार को महसूस कराती हैं और परेशानी का कारण बनती हैं। जहाँ तक क्रिया और परिवर्तन का सवाल है, वे अस्तित्व हैं और अस्तित्व को महसूस कराते हैं। और अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है, और यह प्रकाश है।

चूँकि यह एक वास्तविकता है, इसलिए आपकी बीमारी को आपके शरीर में एक अतिथि के रूप में भेजा गया है ताकि वह आपके बहुमूल्य जीवन को शुद्ध करने, उसे मजबूत बनाने और विकसित करने के साथ-साथ आपके शरीर के अन्य अंगों और क्षमताओं को आपके अस्वस्थ अंग की सहायता करने के लिए प्रेरित करे और सर्वज्ञ निर्माता के विभिन्न नामों की छाप दिखाए। ईश्वर की इच्छा से, बीमारी अपने कर्तव्यों का पालन करके जल्दी से चली जाएगी। और वह अच्छे स्वास्थ्य से कहेगी, "अब तुम आओ, और स्थायी रूप से मेरे स्थान पर रहो, और अपने कर्तव्यों का पालन करो। यह घर तुम्हारा है। यहाँ अच्छी स्थिति में रहो।"

बीसवाँ उपाय

हे बीमार, तुम जो अपनी बीमारियों के लिए इलाज खोज रहे हो! बीमारी दो प्रकार की होती है।

एक प्रकार वास्तविक है; दूसरा काल्पनिक है। जहाँ तक वास्तविक प्रकार की बात है, महामहिम के सर्वज्ञ चिकित्सक ने पृथ्वी के अपने शक्तिशाली औषधालय में हर बीमारी के लिए एक औषधि संग्रहित कर रखी है। बिना बीमारी के, उन औषधियों को कैसे जाना और उनका आनंद लिया जा सकता है? धर्म की माँग है कि उपचार में औषधियों का उपयोग किया जाना चाहिए, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि उनका प्रभाव और उपचार सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से है।

वही है जो शिफ़ा देता है, और वही है जो दवा देता है।

कुशल, ईश्वर-चेतन डॉक्टरों की सिफारिशों का पालन करना उपचार का एक महत्वपूर्ण रूप है। क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ दुर्व्यवहार, संयम की कमी, अपव्यय, दुराचार, अपव्यय और उदासीनता और देखभाल की कमी से उत्पन्न होती हैं। एक ईश्वर-चेतन डॉक्टर निश्चित रूप से ऐसी सलाह और आदेश देगा जो इस्लामी उपदेशों के विपरीत न हों। वे दुर्व्यवहार और अपव्यय को मना करेंगे और सांत्वना देंगे। बीमार व्यक्ति को उनकी सिफारिशों और सांत्वना पर भरोसा होता है, और बीमारी कम हो जाती है, जिससे परेशानी की जगह राहत का एहसास होता है।

लेकिन जब बात काल्पनिक बीमारियों की आती है, तो सबसे कारगर दवा यही है कि उन्हें महत्व न दिया जाए।

यह जितना अधिक बढ़ता और फूलता है। यदि कोई महत्व नहीं दिया जाता है, तो बीमारी कम हो जाती है और मिट जाती है। मधुमक्खियों को जितना अधिक परेशान किया जाता है, उतना ही वे व्यक्ति के सिर के चारों ओर झुंड बनाती हैं, जबकि यदि उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है, तो वे तितर-बितर हो जाती हैं। इसके अलावा, अंधेरे में अपनी आँखों के सामने लहराते हुए धागे के टुकड़े पर जितना अधिक ध्यान दिया जाता है, उतना ही यह आपको परेशान करता है और आपको पागलों की तरह इससे दूर भागने पर मजबूर करता है। जबकि यदि आप इस पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, तो आप देख सकते हैं कि यह एक साधारण धागा है, न कि कोई साँप, और आप अपने डर और चिंता पर हँसेंगे।

अगर किसी व्यक्ति की सेहत को लेकर बेबुनियाद चिंता लंबे समय तक बनी रहे, तो वह हकीकत में बदल जाती है। यह नर्वस लोगों और बेबुनियाद डर और चिंताओं में डूबे लोगों के लिए एक बुरी बीमारी है; ऐसे लोग राई का पहाड़ बना देते हैं और उनका मनोबल टूट जाता है। खास तौर पर, अगर उनका सामना निर्दयी और अन्यायी "आधे" डॉक्टरों से होता है, तो उनकी चिंताएँ भड़क जाती हैं और बढ़ जाती हैं। अगर वे अमीर हैं, तो वे अपनी संपत्ति खो देते हैं, या फिर वे अपनी बुद्धि या स्वास्थ्य खो देते हैं।

इक्कीसवाँ उपाय

आप, विश्वास में भाई या बहन, जो बीमार हैं! आप अपनी बीमारी के कारण शारीरिक दर्द से पीड़ित हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आनंद जो आपके शारीरिक दर्द के प्रभाव को दूर करेगा, आपको घेरे हुए है। क्योंकि अगर आपके पास पिता, माता या रिश्तेदार हैं, तो आपके प्रति उनकी सबसे सुखद करुणा, जिसे आप लंबे समय से भूल चुके हैं, जागृत हो जाएगी और आप फिर से उनके दयालु नज़रिए को देखेंगे जो आपको बचपन में मिले थे। इसके अलावा, आपके आस-पास के दोस्त जो छिपे हुए और छिपे हुए रह गए हैं, वे बीमारी के आकर्षण के माध्यम से फिर से प्यार से आपकी ओर देखेंगे। इनके सामने, आपका शारीरिक दर्द नगण्य है।

साथ ही, जिनकी आप गर्व से सेवा करते हैं और जिनसे आप प्रशंसा पाने की कोशिश करते हैं, वे अब आपकी बीमारी के कारण आपकी दयालुता से सेवा करते हैं, और इस प्रकार आप अपने स्वामियों के स्वामी बन गए हैं। इसके अलावा, चूँकि आपने लोगों की सहानुभूति और मानवीय कोमलता को अपनी ओर आकर्षित किया है, इसलिए आपको कई मददगार दोस्त और दयालु साथी मिले हैं जो बदले में कुछ भी नहीं चाहते हैं। फिर, आपको अपनी बीमारी से कई थकाऊ कर्तव्यों से आराम करने का आदेश मिला है, और आप आराम कर रहे हैं। निश्चित रूप से, इन आध्यात्मिक सुखों के सामने, आपका छोटा सा दर्द आपको शिकायत करने के लिए नहीं, बल्कि धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

बाईसवाँ उपाय

हे विश्वासी भाई या बहन , जो लकवा जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं!

सबसे पहले, मैं आपको खुशखबरी देता हूं कि विश्वासियों के लिए पक्षाघात को सबसे बड़ा आघात माना जाता है।

धन्य है। मैंने बहुत समय से संत लोगों से यह बात सुनी है, लेकिन मुझे इसका कारण नहीं पता था। अब, मुझे इसका एक कारण यह याद आता है:

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की स्वीकृति और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, तथा इस संसार द्वारा आध्यात्मिक जीवन के लिए उत्पन्न किए गए बड़े खतरों से बचने के लिए, तथा शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर के लोगों ने दो सिद्धांतों का पालन करना चुना है:

पहला है मृत्यु का चिंतन। संसार को क्षणभंगुर मानकर यह समझना कि वे भी संसार में क्षणभंगुर मेहमान हैं और उनके भी कई कर्तव्य हैं, वे इस तरह से शाश्वत जीवन के लिए काम करते हैं।

दूसरा: शारीरिक, दुष्ट आत्मा और अंधी वासनाओं के खतरों से बचने के लिए, उन्होंने तपस्या, धार्मिक अभ्यास और तप के माध्यम से दुष्ट आत्मा को मारने की कोशिश की है।

और तुम, मेरे भाई या बहन, जो अपने आधे शरीर का स्वास्थ्य खो चुके हो! ऐसा करने के लिए न चाहते हुए भी, तुम्हें ये दो सिद्धांत दिए गए हैं, जो खुशी का कारण हैं, ताकि तुम्हारा शरीर तुम्हें दुनिया की क्षणभंगुर प्रकृति के खिलाफ लगातार चेतावनी दे और तुम्हें याद दिलाए कि मनुष्य नश्वर है। दुनिया तुम्हें अब और नहीं डुबा सकती, न ही असावधानी तुम्हारी आँखें बंद कर सकती है। और निश्चित रूप से, शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा आधे व्यक्ति की अवस्था में किसी को नीच वासनाओं और पशु इच्छाओं से धोखा नहीं दे सकती; वह व्यक्ति दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के परीक्षणों से जल्दी ही बच जाता है।

इस प्रकार, ईश्वर में विश्वास और समर्पण तथा उस पर निर्भरता के माध्यम से, एक आस्तिक पक्षाघात जैसी गंभीर बीमारी से थोड़े समय में लाभ उठा सकता है, बजाय संतों की तरह गंभीर परीक्षणों से गुजरने के। इस प्रकार एक गंभीर बीमारी इन लाभों के लिए एक बहुत ही मामूली विनिमय बन जाती है।

तेईसवाँ उपाय

तुम जो बीमार और दुखी हो, अकेले और अजनबी हो! जबकि तुम्हारा एकाकीपन और निर्वासन तुम्हारी बीमारी के साथ मिलकर कठोरतम हृदयों में सहानुभूति जगाता है और तुम्हारे प्रति दया और करुणा को आकर्षित करता है, निश्चित रूप से वे तुम्हारे प्रति दयालु सृष्टिकर्ता की करुणा को भी आकर्षित करेंगे, जो निश्चित रूप से बाकी सभी की सहानुभूति और करुणा का विकल्प होगा। यह वही है जो कुरान के सभी सूरों में से एक को छोड़कर सभी के आरंभ में खुद को हमारे सामने प्रस्तुत करता है जिसमें "अत्यंत दयालु और दयालु" का गुण है। अपनी करुणा की एक झलक के माध्यम से, वह सभी माताओं को अपने बच्चों को अद्भुत कोमलता के साथ पालने के लिए प्रेरित करता है, और हर वसंत में अपनी दया की एक अभिव्यक्ति के माध्यम से, वह

धरती पर कृपाओं की वर्षा करो। साथ ही, अपने सभी आश्चर्यों के साथ, स्वर्ग, जो शाश्वत सुख का निवास है, उसकी दया का एकमात्र प्रकटीकरण है। इस प्रकार, विश्वास के माध्यम से उसके साथ आपका संबंध, उसकी पहचान और अपनी बीमारी में पाई जाने वाली असहायता की आवाज़ के माध्यम से उससे विनती करना, और निर्वासन में आपका अकेलापन निश्चित रूप से उसकी दया को आपकी ओर आकर्षित करेगा।

चूँकि वह मौजूद है और वह आपकी ओर देखता है, इसलिए सब कुछ आपके लिए मौजूद है। जो लोग वास्तव में अकेले और निर्वासित हैं, वे वे लोग हैं जिनका विश्वास और समर्पण के माध्यम से उनसे कोई संबंध नहीं है, या जो उस संबंध को कोई महत्व नहीं देते हैं।

चौबीसवाँ उपाय

तुम जो मासूम बीमार बच्चों या मासूम बच्चों जैसे बुज़ुर्गों की देखभाल करते हो! तुम्हारे सामने आख़िरत के लिए एक अहम चीज़ है। इन कामों को जोश और कोशिश से अंजाम दो! मासूम बच्चों की बीमारी में भी कोई कमी नहीं होती

उनके सांसारिक जीवन से संबंधित ज्ञान के कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, उनकी बीमारियाँ उनके नाजुक शरीर के लिए व्यायाम और अभ्यास की तरह हैं, और भगवान के टीके और प्रशिक्षण की तरह हैं, ताकि वे भविष्य में दुनिया के कोलाहल और उथल-पुथल का सामना करने में सक्षम हो सकें। जैसा कि सत्यापन करने वाले विद्वानों द्वारा स्वीकार किया जाता है, वयस्कों में पापों के प्रायश्चित की तरह, मासूम बच्चों की बीमारियाँ भी टीके हैं जो भविष्य में या परलोक में उनके आध्यात्मिक जीवन, उनकी आध्यात्मिक शुद्धि और विकास की सेवा करेंगे। इसके अलावा, ऐसी बीमारियों से होने वाले पुण्य माता-पिता और विशेष रूप से उस माँ के अच्छे कर्मों की नोटबुक में दर्ज किए जाते हैं, जो दया के कारण अपने बच्चे के स्वास्थ्य को अपने से ज़्यादा प्राथमिकता देती है।

जहाँ तक बुज़ुर्गों की देखभाल का सवाल है, हमारे नबी (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से सटीक रूप से वर्णित है, और कई ऐतिहासिक घटनाओं से यह स्थापित हुआ है कि शक्तिशाली सवाब लाने के अलावा, बुज़ुर्गों की प्रार्थनाएँ, और विशेष रूप से माता-पिता की प्रार्थनाएँ प्राप्त करना, और उनके दिलों को खुश करना और उनकी ईमानदारी से सेवा करना इस दुनिया और आख़िरत में खुशी का साधन है।[103] और ऐसे कई अनुभव हैं जो स्थापित करते हैं कि जो बच्चा अपने बुज़ुर्ग माता-पिता की पूरी तरह से आज्ञा का पालन करता है, उसके बच्चे भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे, और जो बच्चा अपने माता-पिता को चोट पहुँचाता है, उसे न केवल आख़िरत में सज़ा मिलेगी, बल्कि इस दुनिया में भी कई आपदाएँ झेलनी पड़ेंगी। न केवल बुज़ुर्ग रिश्तेदारों या मासूम बच्चों की देखभाल करना, बल्कि किसी की भी स्वेच्छा से सेवा करना भी

[103] अल-बुखारी, "अदब" 1-6; मुस्लिम, "बीरर" 1-6, 9, 10; एट-तिर्मिधि, "दावत" 110।

किसी बीमार व्यक्ति पर विश्वास करना, विशेषकर यदि उसे हमारी आवश्यकता हो - क्योंकि विश्वास से ही सच्चा भाईचारा आता है - मुसलमान होने की शर्त है।

पच्चीसवाँ उपाय

हे भाई और बहन मुसलमानो, जो बीमार हो! यदि आप सबसे अधिक लाभकारी, वास्तव में सुखदायी और पवित्र औषधि चाहते हैं, जो हर बीमारी का इलाज है, तो अपना ईमान विकसित करें! अर्थात, पश्चाताप और अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा मांगने, तथा पाँचों दैनिक नमाज़ों और इबादत के अन्य कर्तव्यों के माध्यम से अपनी बीमारियों पर ईमान लागू करें - वह पवित्र इलाज - और उससे मिलने वाली औषधि।

दरअसल, इस दुनिया से मोह और लगाव के कारण, ऐसा लगता है कि सांसारिक लोगों का दुनिया जितना ही बड़ा एक बीमार सांसारिक अस्तित्व है। हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में यह स्पष्ट रूप से समझाया है कि ईमान उस बीमार अस्तित्व को तुरंत ठीक कर देता है, जो दुनिया की तरह ही मौत और अलगाव के प्रहारों के अधीन है और घावों और चोटों से “छिद्रित” है। मैं आपको थका देने के लिए चर्चा को यहीं समाप्त कर रहा हूँ।

जहाँ तक ईमान की दवा का सवाल है, यह तब अपना असर दिखाती है जब आप अपने धार्मिक कर्तव्यों को यथासंभव पूरा करते हैं। लापरवाही, व्यभिचार, शारीरिक इच्छाएँ और धार्मिक रूप से निषिद्ध मनोरंजन इस दवा के असर को रोकते हैं। चूँकि बीमारी लापरवाही को दूर करती है, भूख को कम करती है और धार्मिक रूप से अवैध सुखों में भाग लेने से रोकती है, इसलिए इसका लाभ उठाएँ। तौबा, ईश्वर से क्षमा माँगने, और प्रार्थनाओं और मिन्नतों के ज़रिए सच्चे ईमान की पवित्र दवाइयों और रोशनी का इस्तेमाल करें।

सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको स्वास्थ्य प्रदान करें और आपकी बीमारियों को आपके पापों का प्रायश्चित बना दें। आमीन। आमीन। आमीन।

> वे कहते हैं: "सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है, जिसने हमें इस तक पहुँचाया है। यदि ईश्वर ने हमें मार्ग न दिखाया होता, तो हम निश्चित रूप से सही मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे प्रभु के दूत वास्तव में सत्य के साथ आए थे।"
> (7:43)

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

> हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद साहब पर कृपा कर, जो दिलों की दवा और उनका इलाज हैं, शरीरों की अच्छी सेहत और उनकी चिकित्सा, आँखों की रोशनी और उनकी रोशनी, तथा उनके परिवार और साथियों पर कृपा कर और उन्हें शांति प्रदान कर।

छब्बीसवीं झलक

छब्बीसवीं झलक

बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना

[नोट] मैंने प्रत्येक आशा के आरंभ में अपने दुखों और कष्टों को इस प्रकार लिखा है कि वे आपको दुःखी कर सकें, इसका कारण यह है कि मैं यह दर्शाना चाहता हूँ कि पवित्र क़ुरआन में दिए गए उपचार कितने असाधारण हैं।

यह ग्लेम, जो बुजुर्गों के बारे में है, संभवतः असमर्थ रही होगी
कुछ कारणों से धाराप्रवाहता प्राप्त करना संभव नहीं है, जैसे कि निम्नलिखित:

पहला: चूंकि यह मुख्यतः मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है तथा उन पुराने दिनों को याद करके उत्पन्न मनोदशा में लिखी गई है, इसलिए अभिव्यक्ति में अनुक्रम प्राप्त करना संभव नहीं था।

दूसरा: चूँकि यह सुबह जल्दी उठने के बाद तेजी से लिखा गया था
प्रार्थना, जब मुझे थकान महसूस हुई, अभिव्यक्ति में कुछ उलझन हुई।

तीसरा: मेरे साथ लिखने के लिए हमेशा कोई नहीं रहता था, और मेरे साथ आने वाले लेखक के पास रिसाले-ए-नूर से संबंधित चार या पाँच अन्य काम थे। इसलिए चूँकि हमें इसे पूरी तरह से संशोधित करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाया, इसलिए इसमें कुछ अव्यवस्था है।

चौथा: लेखक और मैं दोनों ही इसके पूरा होने के बाद थक गए थे, और अभिव्यक्ति पर पर्याप्त रूप से विचार किए बिना शब्दों के सतही संशोधन से संतुष्ट होने के लिए बाध्य थे। इस वजह से, स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्ति की गलतियाँ हो सकती हैं। हम अनुरोध करते हैं कि उदार बुजुर्ग मेरी अभिव्यक्ति की गलतियों को अनदेखा कर देंगे और चूंकि ईश्वरीय दया धन्य बुजुर्गों के हाथों को खाली नहीं छोड़ती है जो उसके लिए खुले हैं,[104] हम आशा करते हैं कि जब वे ईश्वरीय न्यायालय की ओर अपने हाथ खोलेंगे तो वे हमें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करेंगे।

---

[104] अत-तबारानी, अल-मजमा अल-अवसत, 5:270; अल-हयथामी, मजमा' अज़-ज़वायद, 10:149. (ट्र.)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कफ. हा. या. ऐन. साद. अपने रब की अपने बन्दे ज़करियाह पर की गई दया का ज़िक्र: जब उसने अपने रब को चुपके से पुकारा और कहा: "मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं और मेरा सिर बुढ़ापे के कारण सफ़ेद बालों से चमक रहा है, और, मेरे रब, मैं कभी भी आपकी प्रार्थना में बरकत से वंचित नहीं रहा।" (19: 1-4)

इस चमक में छब्बीस आशाएँ हैं।

पहली आशा

आदरणीय बुज़ुर्ग भाई-बहन जो परिपक्वता की उम्र तक पहुँच चुके हैं: आपकी तरह मैं भी बुज़ुर्ग हूँ। उनमें निहित सांत्वना की रोशनी को आपके साथ साझा करने की इच्छा से, मैं उन आशाओं को लिखूँगा जो मुझे समय-समय पर अपने बुढ़ापे और अपने कुछ अनुभवों में मिली हैं। बेशक, मैंने जो रोशनी देखी है और उम्मीद के जो दरवाज़े देखे हैं, वे मेरी दोषपूर्ण और भ्रमित क्षमता के अनुसार देखे और खोले गए हैं। ईश्वर की इच्छा से, आपके शुद्ध और ईमानदार स्वभाव उन रोशनी को और अधिक चमकाएँगे जो मैंने देखी हैं और उन आशाओं को मज़बूत करेंगे जो मैंने पाई हैं।

आने वाली आशाओं और प्रकाश का स्रोत, झरना और फव्वारा विश्वास (ईश्वर और आस्था के अन्य स्तंभों में) है।

दूसरी आशा

एक शरद ऋतु के दिन जब बुढ़ापा मुझ पर हावी हो रहा था, दोपहर की नमाज़ के समय, मैं एक ऊँचे पहाड़ से दुनिया को देख रहा था और मैं एक दयनीय, शोकाकुल और कुछ अर्थों में अंधकारमय मनोदशा या मनःस्थिति से अभिभूत हो गया। मैंने देखा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। दिन भी बूढ़ा हो गया था, और साल भी बूढ़ा हो गया था; और दुनिया भी बूढ़ी हो गई थी। बुढ़ापे के उन सभी उदाहरणों ने मुझे महसूस कराया कि दुनिया से विदा होने और अपने प्रियजनों से अलग होने का समय करीब आ गया है, और मेरा अपना बुढ़ापा मुझे बुरी तरह से हिला रहा था। अचानक ईश्वरीय दया इस तरह प्रकट हुई कि उसने उस दयनीय उदासी और अलगाव को एक शक्तिशाली आशा और सांत्वना के उज्ज्वल प्रकाश में बदल दिया। मैं आप सभी से जो मेरे जैसे बुज़ुर्ग हैं, प्रतिज्ञा करता हूँ: दयालु सृष्टिकर्ता बुद्धिमान कुरान में सौ स्थानों पर खुद को "दयालु और दयालु" के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करता है। वह हमेशा पृथ्वी पर रहने वाले जीवित प्राणियों की सहायता के लिए अपनी दया भेजता है जो इसकी तलाश करते हैं। हर साल वह वसंत भेजता है, जिसे वह भर देता है

अदृश्य से असंख्य उपहारों और उपहारों के साथ, हम पर, जो प्रावधान के जरूरतमंद हैं, और हमारी जन्मजात कमजोरी और नपुंसकता के अनुपात में अपनी दया को प्रचुर मात्रा में प्रकट करते हैं। इस प्रकार, हमारे सर्व-दयालु निर्माता की दया105 हमारे बुढ़ापे में सबसे बड़ी आशा और सबसे शक्तिशाली प्रकाश है। हम विश्वास के माध्यम से सर्व-दयालु के साथ संबंध बनाकर और उसका पालन करके और दैनिक प्रार्थना करके उसकी आज्ञा मानकर इस दया को पा सकते हैं।

तीसरी आशा

जब मैं जवानी की रात की नींद से बुढ़ापे की सुबह जागा, तो मैंने खुद को देखा और पाया कि मेरी ज़िंदगी कब्र की तरफ़ तेज़ी से भाग रही थी, जैसे कि ढलान से नीचे की ओर जा रही हो। जैसा कि नियाज़ी मिस्री106 ने कहा,

हर दिन मेरे जीवन की इमारत से एक पत्थर ज़मीन पर गिरता है;
आत्मा बेसुध होकर सोती है और उसे पता ही नहीं चलता कि उसकी इमारत खंडहर हो चुकी है!

मेरा शरीर, मेरी आत्मा का निवास, सड़ रहा था, और उसका एक पत्थर हर दिन टूट रहा था। यह महसूस करते ही, वे उम्मीदें और महत्वाकांक्षाएँ जो मुझे दुनिया से मजबूती से जोड़े हुए थीं, टूटने लगीं। मुझे लगा कि मेरे कई दोस्तों और जिनसे मैं प्यार करता था, उनसे अलग होने का समय नज़दीक आ रहा है। मैंने उस बहुत गहरे और जाहिर तौर पर लाइलाज आध्यात्मिक घाव के लिए मरहम की तलाश की, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। फिर से नियाज़ी मिस्री की तरह मैंने कहा:

जबकि मेरा हृदय स्थायित्व चाहता था, सत्य परमेश्वर ने मेरे शरीर की नश्वरता
का न्याय किया;
मैं एक असाध्य बीमारी से पीड़ित हूँ; यह कितने अफ़सोस की बात है कि लुकमान
को इसका पता नहीं है!

फिर अचानक महिमावान पैगंबर की रोशनी और सिफ़ारिश, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो आवाज, मॉडल, अवतार, हेराल्ड हैं,

---

105 सर्वशक्तिमान ईश्वर से संबंधित या उससे संबंधित चीज़ों को कभी-कभी बड़े अक्षरों से शुरू किया जाता है और कभी-कभी छोटे अक्षरों से। उदाहरण के लिए, इस पैराग्राफ़ में “दया” को या तो बड़े अक्षर से या छोटे अक्षर से शुरू किया गया है। यदि यह ईश्वर के नाम या गुण को संदर्भित करता है, तो इसे बड़े अक्षर से शुरू किया जाता है, लेकिन यदि यह उस नाम या गुण की अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है, तो इसे छोटे अक्षर से शुरू किया जाता है। (ट्र.)

106 मेहमत नियाज़ी मिस्री (1617-1694)। उनका जन्म तुर्की के मालट्या में हुआ था और उनकी मृत्यु एजियन सागर के लिमनी द्वीप में हुई थी। वे एक सूफी शेख, कवि और विद्वान थे। इल्मिहाली तारीकत ("सूफी मार्ग के सिद्धांत"), मवादी अल-इरफान ("गूढ़ ज्ञान की तालिकाएँ"), और तेवहिद रिसालेसी (ईश्वर की एकता पर एक ग्रंथ") उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से हैं। (अनुवाद)

और ईश्वरीय दया के प्रतिनिधि, और मार्गदर्शन का जो उपहार उन्होंने मानव जाति के लिए लाया था, वह उस घाव के लिए एक अच्छा मरहम बन गया, जिसे मैंने असाध्य माना था।

आदरणीय बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं जो अपनी बुढ़ापे को मेरी तरह महसूस करते हैं! हम जा रहे हैं; खुद को धोखा देने से कोई फायदा नहीं है। भले ही हम इस पर अपनी आँखें बंद कर लें, हमें यहाँ रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी। आंदोलन चल रहा है। कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र की भूमि, जो हमें अंधकारमय और अनंत अलगाव की भूमि लगती है, क्योंकि असावधानी और आंशिक रूप से गुमराह लोगों के कारण भ्रम पैदा होते हैं, दोस्तों की बैठक की जगह है। यह वह क्षेत्र है जहाँ हम सबसे पहले ईश्वर के प्रियतम से मिलेंगे, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और हमारे सभी दोस्तों से मिलेंगे।

हम उस व्यक्ति की दुनिया में जा रहे हैं जो एक हजार तीन सौ पचास वर्षों से करोड़ों लोगों का शासक, उनकी आत्माओं का प्रशिक्षक, उनके मन का शिक्षक और उनके हृदय का प्रिय रहा है। "कर्ता जैसा ही कारण होता है" इस नियम के अनुसार, उसका पूरा समुदाय अपने अच्छे कर्मों के माध्यम से प्रतिदिन जो पुण्य अर्जित करता है, उसका समतुल्य उसके अच्छे कर्मों की पुस्तिका में जुड़ जाता है। वह ब्रह्मांड में उच्च दिव्य उद्देश्यों की प्राप्ति और प्राणियों के मूल्य की वृद्धि का साधन है। जैसा कि प्रामाणिक परंपराओं में दर्ज है और आध्यात्मिक खोज के संतों द्वारा खोजा गया है, जब वह दुनिया में आया, तो उसने कहा, "मेरा समुदाय! मेरा समुदाय!"107 वह अपने समुदाय की सहायता के लिए सबसे ऊंचे आत्म-बलिदान और अपनी मध्यस्थता के साथ भी दौड़ेगा जब हर कोई दूसरे संसार में सर्वोच्च सभा के स्थान पर केवल अपने बारे में सोचेगा, और फिर वह चिल्लाएगा, "मेरा समुदाय!

मेरी कौम!”108 हम एक ऐसे संसार में जा रहे हैं जो इस सूर्य और असंख्य संतों तथा शुद्ध विद्वानों के तारों से प्रकाशित है।

उस व्यक्ति की सिफ़ारिश का हक़दार बनने, उसके प्रकाश से लाभ उठाने और मध्यवर्ती क्षेत्र के अंधकार से बचने का साधन उसके महान उदाहरण या मार्ग (सुन्नत) का अनुसरण करना है।

चौथी आशा

जब मैं बुढ़ापे में पहुंचा तो मेरा शारीरिक स्वास्थ्य, जो हमेशा असावधानी का कारण बनता है, टूट गया। बुढ़ापे और बीमारी ने एक साथ मुझ पर हमला किया।

---

107 अस-सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा, 1:80, 85. (ट्र.)

108 अल-बुखारी, "तौहीद" 36; मुस्लिम, "ईमान" 326. (ट्र.)

वे मुझे लगातार परेशान करते रहे, लगातार परेशान करते रहे। मेरे पास दुनिया से जुड़ने के लिए कुछ भी नहीं था, न परिवार, न बच्चे, न ही कोई संपत्ति। मैंने देखा कि मेरी जीवन की पूंजी, जिसे मैंने जवानी के चक्कर में बर्बाद कर दिया था, केवल पाप और गलतियाँ ही थीं। नियाज़ी मिस्री की तरह चिल्लाते हुए मैंने कहा:

मैंने कोई व्यापार नहीं किया था; जीवन की सारी पूंजी बर्बाद हो गई थी;

मैंने सड़क तो ढूंढी, लेकिन पाया कि कारवां आगे बढ़ चुका था, जबकि मुझे इसकी जानकारी तक नहीं थी।

विलाप करते हुए मैं भी चल पड़ा, बिलकुल अकेला, एक अजनबी

रोती हुई आँखें, व्यथित हृदय, भ्रमित एवं अनभिज्ञ मन।

मैं उस समय निर्वासन में था। मुझे निराशा भरा दुख, गहरा अफ़सोस, सहायता की लालसा महसूस हुई। अचानक, चमत्कारी अभिव्यक्ति वाली कुरान मेरी सहायता के लिए आई। इसने मेरे लिए आशा का ऐसा शक्तिशाली द्वार खोला और मुझे सच्ची सांत्वना का ऐसा प्रकाश दिया कि यह किसी भी निराशा और अंधकार को दूर कर सकता था जो मुझसे सौ गुना अधिक तीव्र था।

आदरणीय बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं जिनकी दुनिया में रुचि खत्म होने लगी है, जब उन्हें इस दुनिया से जोड़ने वाले बंधन धीरे-धीरे टूट रहे हैं! क्या यह संभव है कि महिमा के निर्माता, जिन्होंने इस दुनिया को एक बेहतरीन व्यवस्थित शहर या महल के रूप में बनाया है, उस महल में अपने सबसे महत्वपूर्ण मेहमानों और दोस्तों से नहीं मिलेंगे या उनसे बात नहीं करेंगे? चूँकि उन्होंने जानबूझकर इस महल को बनाया और इसे उद्देश्यपूर्ण ढंग से व्यवस्थित और सजाया, इसलिए निश्चित रूप से - जैसे कि किसी चीज़ को बनाने वाला जानता है - जो जानता है वह बोलेगा। और चूँकि उन्होंने इस महल और शहर को हमारे लिए एक बढ़िया गेस्टहाउस और व्यापार की जगह के रूप में बनाया है, इसलिए उनके पास निश्चित रूप से एक किताब होगी जो हमारे लिए उनके संबंधों और हमसे उनकी इच्छाओं को प्रदर्शित करेगी।

ऐसी पवित्र पुस्तकों में सबसे उत्तम है कुरान, जिसमें चमत्कारिक अभिव्यक्ति है। यह चालीस मामलों में चमत्कार है और हर पल कम से कम दस करोड़ लोगों की ज़बान पर है। यह प्रकाश फैलाता है और इसका हर अक्षर कम से कम दस पुण्य और पुरस्कार प्रदान करता है, और कभी-कभी मध्यवर्ती क्षेत्र में स्वर्ग और रोशनी के दस हज़ार फल और कभी-कभी - भाग्य और शक्ति की रात के अर्थ और महत्व के कारण - तीस हज़ार। यह कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र के लिए स्वर्ग और रोशनी का फल भी प्रदान करता है। इन मामलों में इसका मुकाबला करने वाली ब्रह्मांड में कोई किताब नहीं है और कोई भी इसे आगे नहीं रख सकता है। चूँकि यह कुरान जिसे हम मानते हैं वह आकाश और पृथ्वी के सर्वशक्तिमान निर्माता का वचन है, जो उसकी पूर्ण प्रभुता, सर्वोच्च दिव्यता और सर्वज्ञता से निकला है।

दया को अपने में समाहित करके, और यह उसका आदेश और उसकी दया का स्रोत है - इसका पालन करो। इसमें हर बीमारी का इलाज है, हर परदे और अंधकार के लिए एक रोशनी है, और हर निराशा के लिए एक उम्मीद है।

इस अनन्त खजाने की कुंजी ईश्वर के प्रति विश्वास और समर्पण है, सुनो-

कुरान पर विश्वास करना, उसे स्वीकार करना और उसकी तिलावत करना।

पांचवी आशा

एक बार, जब मैं बूढ़ा हो रहा था, मेरी आत्मा ने इस्तांबुल में बोस्फोरस के ऊपर माउंट जोशुआ (युशा टेपेसी) पर एकांत में आराम की तलाश की। एक दिन उस ऊंची पहाड़ी पर, मैंने चारों ओर विस्तृत क्षितिज की ओर देखा, और बुढ़ापे की चेतावनी के माध्यम से क्षय और अलगाव का एक अत्यंत दयनीय दृश्य देखा। मैंने अपने जीवन के वृक्ष की पैंतालीसवीं शाखा, यानी पैंतालीसवें वर्ष की ऊँची स्थिति से अपने जीवन के निचले स्तरों पर एक नज़र डाली। मैंने देखा कि प्रत्येक निचली शाखा के नीचे, प्रत्येक वर्ष में, उन लोगों की असंख्य लाशें थीं जिन्हें मैं जानता था और प्यार करता था, और जिनसे मेरा किसी तरह का रिश्ता था। उन दोस्तों के बारे में सोचते हुए, जो बिछड़ गए थे, अलगाव से उत्पन्न वास्तव में दयनीय दुःख के साथ, मैं बगदाद के फ़ुज़ुली की तरह कराह उठा:109

जब मैं तुम्हारी संगति को याद करता हूँ तो रो पड़ता हूँ,

जब तक मेरे इस सूखे शरीर में सांस है, मैं चिल्लाता हूँ...

ऐसा कहते हुए, मैंने सांत्वना, प्रकाश, आशा का द्वार खोजा। अचानक, परलोक में विश्वास का प्रकाश मेरी सहायता के लिए आया, एक अमिट प्रकाश, एक अविनाशी आशा प्रदान करते हुए। यह इस प्रकार है:

मेरे जैसे बुज़ुर्ग भाईयों और बहनों! चूँकि आख़िरत है और वह हमेशा रहने वाली है, और वह इस दुनिया से कहीं बेहतर है, और चूँकि जिसने हमें पैदा किया है वह सर्वज्ञ और दयालु दोनों है, इसलिए हमें अपने बुढ़ापे पर शिकायत या अफसोस नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत, चूँकि बुढ़ापा ईमान और इबादत में परिपक्वता की उम्र तक पहुँचने का संकेत है, और जीवन के कर्तव्यों से मुक्ति और आराम करने के लिए दया की दुनिया में प्रस्थान का संकेत है, इसलिए हमें इससे प्रसन्न होना चाहिए।

109 मेहमेद फ़ुज़ुली (1490-1556)। तुर्की साहित्य के सबसे महान कवियों में से एक। वे इराक में रहते थे और उन्होंने पद्य और गद्य दोनों में कई रचनाएँ लिखीं। उनका दीवान ("कविताओं का संग्रह"), जिसे उन्होंने तुर्की, फ़ारसी और अरबी में लिखा था, उनकी रचनाओं में सबसे प्रसिद्ध है। लै-ला वु मजनूं ("लैला और मजनूं"), तर्जुमा-ए हदीस-ए अरबैन ("चालीस हदीसों का अनुवाद"), और हदीकत अस-सुआदा ("पवित्र लोगों का बगीचा") उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से हैं। (अनुवाद)

एक हदीस में कहा गया है कि एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बर भेजे गए, जो मानवता में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित हैं।110 इन सभी पैगम्बरों ने ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और अपने आध्यात्मिक अवलोकन के आधार पर सर्वसम्मति से और पूरी सहमति से यह खबर दी कि आख़िरत मौजूद है, कि इंसानों को वहाँ भेजा जाएगा, और यह कि निर्माता इसे अपने वादे के अनुसार लाएगा। इसके अलावा, एक सौ चौबीस मिलियन संतों ने आध्यात्मिक प्रकाश, खोज और अवलोकन के साथ, ज्ञान से उत्पन्न निश्चितता की डिग्री के साथ पैगंबरों की रिपोर्टों की पुष्टि की है, और आख़िरत के अस्तित्व की गवाही दी है। इसके अलावा, सर्वज्ञ निर्माता के सभी नाम, इस दुनिया में अपने प्रकटन के माध्यम से, एक शाश्वत क्षेत्र के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व को दर्शाते हैं और इसकी आवश्यकता बताते हैं। उदाहरण के लिए, शाश्वत शक्ति, जो हर वसंत में धरती के चेहरे पर मृत पेड़ों की असंख्य लाशों को "हो जाओ!" के आदेश के साथ जीवन में वापस लाती है। और यह सच है, और जो मृतकों के पुनरुत्थान के नमूने के रूप में पौधों और जानवरों की लाखों प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है, वह सबसे स्पष्ट रूप से परलोक के अस्तित्व को आवश्यक बनाता है।

इसी प्रकार, अनंत, शाश्वत बुद्धि, जो किसी भी चीज़ को व्यर्थ या उद्देश्यहीन नहीं होने देती, तथा शाश्वत दया और शाश्वत अनुग्रह, जो पूर्ण करुणा के साथ और अत्यंत अद्भुत ढंग से, सभी जीवित प्राणियों को पोषण प्रदान करता है, जिन्हें इसकी आवश्यकता है, तथा वसंत ऋतु में थोड़े समय के लिए उन्हें अपने अनेक प्रकार के श्रृंगार और सजावट को प्रदर्शित करने की अनुमति देता है, परलोक की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, मनुष्य ब्रह्मांड का सबसे उत्तम फल है और इसके निर्माता का सबसे प्रिय प्राणी है, तथा सभी प्राणियों में मनुष्य ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों के साथ सबसे अधिक निकटता से और गहराई से जुड़ा हुआ और चिंतित है। अनंत काल के प्रति तीव्र, अडिग और निरंतर प्रेम तथा स्थायित्व की महत्वाकांक्षा जो मानव स्वभाव में जन्मजात है, एक स्थायी क्षेत्र, सुख का एक शाश्वत निवास के अस्तित्व को प्रमाणित करती है जो इस क्षणभंगुर दुनिया के बाद आएगा, इतना निर्णायक रूप से कि वे परलोक को उसी निश्चितता के साथ स्वीकार करने की आवश्यकता रखते हैं जिस तरह से हम इस दुनिया के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।111

110 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 5:265; इब्न हिब्बन, अस-सहीह, 2:77. (ट्र.)

111 किसी ऐसी चीज की रिपोर्ट करना जो निश्चित रूप से मौजूद है, आसान है और उसे नकारने में अत्यधिक कठिनाई, इसे निम्न तुलना में देखा जा सकता है: यदि कोई व्यक्ति कहता है, "पृथ्वी पर एक अद्भुत बगीचा है, जिसके पेड़ों के फल दूध के डिब्बे के बराबर हैं," और दूसरा कहता है, "ऐसा नहीं है," तो दावा करने वाला व्यक्ति केवल उस जगह या उसके कुछ फलों या उसके एक सदस्य को इंगित करके अपना दावा साबित करता है। जबकि, इसे नकारने वाले को पृथ्वी का पूरा चेहरा स्कैन करके दिखाना पड़ता है। ठीक उसी तरह, भले ही हम सैकड़ों को अनदेखा कर दें

चूंकि सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक जो बुद्धिमान कुरान हमें सिखाता है वह है परलोक में विश्वास, और चूंकि यह विश्वास इतना शक्तिशाली है और यह ऐसी आशा और सांत्वना प्रदान करता है कि यदि एक व्यक्ति एक लाख बार बुढ़ापे से ग्रसित हो जाए, तो इस विश्वास से उत्पन्न सांत्वना उसका सामना करने के लिए पर्याप्त होगी, तो निश्चित रूप से हम बुजुर्गों को कहना चाहिए, "पूर्ण विश्वास के लिए सभी प्रशंसा भगवान को है," और अपने बुढ़ापे से प्यार करना चाहिए।

छठी आशा

एक बार अपनी कष्टदायक निगरानी के दौरान, एकांत को प्राथमिकता देते हुए, मैं बारला पठार (इस्पार्टा प्रांत में) में पाइन पर्वत (कैम दागी) की चोटी पर अकेला था। मुझे अपने एकांत में एक रोशनी की जरूरत थी। उस ऊंचे पहाड़ की चोटी पर एक ऊंचे देवदार के पेड़ के ऊपर छोटे से मंच पर एक रात अकेले, बुढ़ापे ने मुझे एक के भीतर एक तीन या चार अलगाव याद दिलाए। जैसा कि द सिक्स्थ लेटर (द लेटर्स में शामिल) में वर्णित है, उस एकांत, खामोश, सुदूर रात में पेड़ों की सरसराहट की उदासी भरी आवाज ने बुढ़ापे में मेरे निर्वासन में मुझे बहुत बोझिल कर दिया था। बुढ़ापे ने निम्नलिखित विचार को जन्म दिया: जैसे दिन का उजाला इस कब्र के कालेपन में बदल गया है और दुनिया ने अपना काला कफन पहन लिया है, वैसे ही तुम्हारे जीवन का दिन रात में बदल जाएगा तब मेरी आत्मा को यह उत्तर देना पड़ा: सच है कि मैं अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर हूं, लेकिन उन सभी लोगों से अलग होना और उनके लिए शोक मनाना, जो अब मर चुके हैं, जिन्हें मैंने अपने पचास वर्षों के जीवन में प्यार किया था, अपने देश से निर्वासन से कहीं अधिक दुखद और दुःखद अलगाव है।

इसके अलावा, मैं रात और पहाड़ के उदासी भरे निर्वासन की तुलना में कहीं अधिक दुःखद और पीड़ादायक निर्वासन के करीब पहुंच रहा हूं: बुढ़ापा मुझे सूचित करता है कि मैं दुनिया से पूरी तरह से अलग होने के समय के करीब पहुंच रहा हूं।

फिर मैंने इन दुखदायी वियोगों से एक प्रकाश, एक आशा की तलाश की। अचानक ईश्वर में विश्वास मेरी सहायता के लिए आया और ऐसी सहूलियत दी-

---

जन्नत की हज़ारों निशानियाँ, फल और निशानियाँ जो इसके अस्तित्व की रिपोर्ट करने वालों ने बताई हैं, उनकी रिपोर्ट की सच्चाई के लिए दो सच्चे गवाहों की गवाही ही काफी है। लेकिन अपने इनकार को साबित करने के लिए, इनकार करने वाले को असीम ब्रह्मांड और अनंत, कभी न खत्म होने वाले समय को स्कैन करना होगा और उसके गैर-अस्तित्व को साबित करना होगा। और इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाइयों और बहनों, समझिए कि आखिरत में विश्वास कितना शक्तिशाली है।

मैं इस बात से सहमत था कि जिस स्तरित वीरानी में मैं खुद को पाया था, यदि वह हजार गुना बढ़ भी जाती, तो भी उसकी सांत्वना पर्याप्त होती।

बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं! चूँकि हमारे पास एक दयालु निर्माता है, इसलिए हमारे लिए कोई निर्वासन नहीं हो सकता। चूँकि वह मौजूद है, इसलिए हमारे लिए सब कुछ मौजूद है। चूँकि वह मौजूद है और उसके पास स्वर्गदूत हैं, इसलिए दुनिया खाली नहीं है। एकाकी पहाड़ और खाली रेगिस्तान सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवकों से भरे हुए हैं। उनके सचेत सेवकों के अलावा, उनके पत्थर और पेड़ भी उनके प्रकाश और उनके कारण से देखने पर परिचित मित्र जैसे बन जाते हैं। वे हमसे बातचीत कर सकते हैं और हमें कुछ दे सकते हैं।

हमें संतोष.

ब्रह्माण्ड में प्राणियों की संख्या तथा ब्रह्माण्ड की इस विशाल पुस्तक के अक्षरों की संख्या के प्रमाण और साक्ष्य, ब्रह्माण्ड के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं।

हमारे सर्व-दयालु, सर्व-उदार, सर्व-अंतरंग और सर्व-प्रेमी रचयिता, निर्माता और रक्षक की। वे हमें जीवित प्राणियों के अंगों की संख्या और उनके द्वारा प्राप्त प्रावधान और अनुग्रहों के प्रति उनकी दया दिखाते हैं, जो सभी उनकी करुणा, दया और कृपा के साधन हैं, और उनके दरबार का मार्ग बताते हैं। उनके दरबार में सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ नपुंसकता, कमजोरी और ज़रूरतमंदी है। और नपुंसकता, कमजोरी और ज़रूरतमंदी का सबसे बड़ा समय बुढ़ापा है। इसलिए हमें बुढ़ापे से नाराज़ नहीं होना चाहिए, जो इस दरबार में एक स्वीकार्य मध्यस्थ है, बल्कि इसका स्वागत करना चाहिए।

सातवीं आशा

एक बार बुढ़ापे की शुरुआत में जब पुराने या पहले वाले सईद की हंसी नए सईद के रोने में बदल रही थी, अंकारा में कुछ सांसारिक सोच वाले लोगों ने, मुझे अभी भी पुराना सईद समझकर, वहाँ आमंत्रित किया, और मैं चला गया। शरद ऋतु के अंत में मैं शहर के किले की चोटी पर चढ़ गया, जो जीर्ण-शीर्ण था, और मुझसे कहीं अधिक बूढ़ा था। मुझे ऐसा लगा जैसे यह ऐतिहासिक घटनाओं से बना हो। वर्ष के मौसम का बुढ़ापा मेरे बुढ़ापे के साथ-साथ, किले का बुढ़ापा, मानव जाति का बुढ़ापा, शानदार ओटोमन राज्य का बुढ़ापा, और खिलाफत का प्रतिनिधित्व करने वाली सल्तनत का अंत, और दुनिया का बुढ़ापा, इन सबने मुझे उस ऊंचे किले से अतीत की घाटियों और भविष्य के पहाड़ों की ओर सबसे अधिक दुखद, दयनीय और उदास स्थिति में देखने के लिए मजबूर किया। मैंने खुद को अंकारा में एक अत्यंत अंधकारमय मानसिक स्थिति में पाया, जो बुढ़ापे के अंधकार की चार या पांच परतों से घिरा हुआ था, एक के भीतर एक, और मैंने एक प्रकाश, एक सांत्वना, एक आशा की तलाश की।

जब मैंने सांत्वना पाने के लिए दाईं ओर, यानी अतीत की ओर देखा, तो वह मुझे मेरे पिता और पूर्वजों तथा मानव जाति के विशाल कब्रिस्तान के रूप में दिखाई दिया, जिससे मुझे सांत्वना के बजाय निराशा हुई। इलाज की तलाश में मैंने बाईं ओर भविष्य की ओर देखा। यह मेरे लिए, मेरे समकालीनों और भावी पीढ़ियों के लिए एक विशाल, अंधकारमय कब्रिस्तान के रूप में दिखाई दिया, जो राहत और सांत्वना के स्थान पर भय दे रहा था। बाईं और दाईं ओर जो कुछ था, उससे भयभीत होकर मैंने वर्तमान समय की ओर देखा। मेरी असावधान और ऐतिहासिक दृष्टि को वह एक ताबूत के रूप में दिखाई दिया, जिस पर मेरी आधी-मरी, पीड़ित लाश थी, जो मरने के लिए बेताब संघर्ष कर रही थी। फिर, उस दिशा से भी निराश होकर, मैंने अपना सिर उठाया और अपने जीवन के पेड़ के शीर्ष पर देखा, और वहाँ मेरी लाश थी: वह पेड़ के शीर्ष पर आराम कर रही थी और मुझे देख रही थी। इस दिशा से भी भय महसूस करते हुए, मैंने अपना सिर नीचे किया, अपने जीवन के पेड़ के पैर की ओर, उसकी जड़ों की ओर देखा। मैंने देखा कि मेरे पैरों के नीचे की हड्डियों की धूल मेरी रचना की धूल में मिल गई थी। इससे भी कोई इलाज नहीं मिला; इसने मेरे दर्द को दोगुना कर दिया।

फिर मुझे पीछे देखने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने देखा कि यह अस्थायी दुनिया, जिसका कोई आधार नहीं है, शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में घूम रही थी। मैं अपने दर्द की दवा खोज रहा था, लेकिन यह दृश्य उसे और भी बढ़ा रहा था। उस दिशा में कोई अच्छाई न देखकर, मैंने अपने सामने देखा, मैंने अपनी नज़र आगे की ओर घुमाई। मैंने देखा कि मेरे रास्ते में एक गंभीर मैदान का प्रवेश द्वार खुला हुआ था और मुझे घूर रहा था, उसका मुंह खुला हुआ था। उसके पीछे का राजमार्ग अनंत काल की ओर जाता था और उस पर चलने वाले काफिले ने मेरी नज़र खींची। और इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता का सामना करने के लिए मेरे पास जो कुछ भी है वह केवल एक सीमित, तुच्छ इच्छाशक्ति है। चूँकि वह इच्छाशक्ति, जो उन असंख्य शत्रुओं और हानिकारक चीजों के खिलाफ एकमात्र मानवीय बचाव है, दोषपूर्ण, कम दूरी की और कमजोर है, जिसमें सृजन करने की कोई शक्ति नहीं है, वह ग्रहणशील और प्रतिबद्ध होने के अलावा कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। यह न तो पीछे मुड़कर अतीत में प्रवेश कर सकता है ताकि वहाँ से आने वाले दुखों को शांत कर सके और न ही यह भविष्य में प्रवेश कर सकता है ताकि वहाँ से आने वाले भय को रोक सके। मैंने देखा कि अतीत और भविष्य को लेकर मेरी पीड़ा और महत्वाकांक्षाएँ बेकार थीं।

जब मैं इन छह दिशाओं से आने वाले भय, एकाकीपन, अंधकार और निराशा से संघर्ष कर रहा था, तो विश्वास की रोशनी, जो चमत्कारिक अभिव्यक्ति के साथ कुरान के स्वर्ग में चमकती है, अचानक मेरी सहायता के लिए आ गई।

उन्होंने उन छह दिशाओं को इस हद तक प्रकाशित और प्रकाशित कर दिया कि यदि मैंने जो भयावहता और अंधकार देखा था वह सौ गुना बढ़ जाए, तो रोशनी

फिर भी वे उन्हें दूर करने के लिए पर्याप्त थे। एक-एक करके उन्होंने इन सभी भयावहताओं को आराम में और अकेलेपन को संगति में बदल दिया। यह इस प्रकार था:

विश्वास ने अतीत के विशाल कब्रिस्तान के उजाड़ दृश्य को खंडित कर दिया तथा पूर्ण निश्चय के साथ दिखाया कि यह मित्रों का एक परिचित और प्रबुद्ध समूह है।

विश्वास ने भविष्य को, जो असावधान आँखों को एक विशाल कब्रिस्तान के रूप में दिखाई देता है, निःसंदेह प्रसन्नता के रमणीय महलों में दयालु ईश्वर का भोज है।

ईमान ने वर्तमान समय को एक ताबूत के रूप में देखा, जैसा कि वह असावधान आँखों को दिखाई देता है, और निश्चित रूप से दिखाया कि यह आख़िरत के लिए व्यापार का स्थान और दयालु का शानदार अतिथिगृह है।

विश्वास ने निश्चितता के साथ दिखाया कि जीवन के वृक्ष के शीर्ष पर एकमात्र फल एक लाश नहीं थी, जैसा कि असावधान आँखों को लगता है, बल्कि यह कि मेरी आत्मा, जो अनन्त जीवन के लिए बनाई गई थी और अनन्त खुशी पाने की क्षमता से संपन्न थी, सितारों के माध्यम से यात्रा करने के लिए अपने जीर्ण घर को छोड़ दिया है।

अपने अर्थ और विषयवस्तु के माध्यम से, विश्वास ने दिखाया कि मेरी हड्डियां और धूल, जो मेरी रचना का स्रोत थीं, पैरों तले रौंदी गई बेकार धूल नहीं थीं, बल्कि यह मिट्टी ईश्वरीय दया का द्वार और स्वर्ग के द्वार के सामने एक पर्दा थी।

कुरान के माध्यम से ईमान ने यह भी दिखाया कि दुनिया, जो मेरी असावधान आँखों को शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में मेरे पीछे घूमती हुई दिखाई दी थी, वह सनातन सर्व-प्रार्थना के संदेशों और ईश्वर की दिव्य महिमा की कढ़ाई के पन्नों से बनी है। जब वे (ये संदेश और पन्ने, यानी दुनिया में मौजूद सभी चीजें और घटनाएँ) अपना काम पूरा कर लेती हैं, अपनी विषय-वस्तु और अर्थ को प्रकट करते हुए, वे एक के बाद एक दुनिया से विदा हो जाती हैं, और अपने अस्तित्व में अपने परिणामों को अपनी जगह पर छोड़ जाती हैं। पूरी निश्चितता के साथ दुनिया की असली प्रकृति ज्ञात हो जाती है।

कुरान की रोशनी के ज़रिए ईमान ने दिखाया कि कब्र जो एक निश्चित दूरी से खुली आँखों से मुझे देख रही है, वह किसी कुएँ का मुँह नहीं है, बल्कि प्रकाश की दुनिया का दरवाज़ा है, और कब्र से परे अनंत काल तक जाने वाला राजमार्ग शून्यता और अस्तित्वहीनता की ओर नहीं बल्कि अस्तित्व और प्रकाश के क्षेत्र और शाश्वत सुख की ओर ले जाता है। चूँकि ईमान ने इस सत्य को पूरी तरह से निश्चितता के साथ दिखाया है, इसलिए यह मेरे दुखों के लिए एक इलाज और मरहम दोनों है।

इसके अलावा, चुनने और लागू करने की बहुत मामूली क्षमता के स्थान पर, विश्वास उस सीमित मानवीय इच्छाशक्ति को एक दस्तावेज देता है जिसके माध्यम से वह एक अनंत शक्ति पर भरोसा कर सकता है और इन असंख्य शत्रुओं और अंधकार के आवरणों के सामने असीम दया से जुड़ सकता है। वास्तव में, विश्वास ही मानवीय इच्छाशक्ति के हाथ में वह दस्तावेज है। हालाँकि इच्छाशक्ति का यह मानवीय साधन अपने आप में कम दूरी का, कमज़ोर और अपूर्ण है, फिर भी - जैसे कि जब एक सैनिक राज्य की ओर से अपनी सीमित क्षमताओं का उपयोग करता है, तो वह उन क्षमताओं से कहीं अधिक कर्तव्यों का पालन करता है - विश्वास के माध्यम से, यदि उस सीमित इच्छाशक्ति का उपयोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर किया जाता है और उसके उद्देश्य में पाँच सौ साल की पैदल यात्रा के बराबर स्वर्ग भी प्राप्त होता है।

, यह हो सकता है

विश्वास शरीर से इच्छाशक्ति की लगाम छीन लेता है, जो न तो भूतकाल में प्रवेश कर सकती है और न ही भविष्यकाल में, और न ही भविष्यकाल में। वह उसे हृदय और आत्मा को सौंप देता है। चूँकि आत्मा और हृदय का जीवन-क्षेत्र शरीर की तरह वर्तमान समय तक सीमित नहीं है, और चूँकि वह भूतकाल के बहुत-से वर्षों और भविष्यकाल के बहुत-से वर्षों को अपने में समेटे हुए है, इसलिए इच्छाशक्ति अब सीमित नहीं रहती, बल्कि सर्वव्यापक हो जाती है। जिस प्रकार विश्वास की शक्ति से वह भूतकाल की गहनतम घाटियों में प्रवेश कर सकती है और भूतकाल से उत्पन्न होने वाले दुखों के अंधकार को दूर कर सकती है, उसी प्रकार विश्वास के प्रकाश से वह भविष्य के सुदूरतम पर्वतों तक भी पहुँच सकती है और वहाँ से उत्पन्न होने वाली आशंकाओं और चिंताओं को दूर कर सकती है।

और इसलिए, मेरे बुज़ुर्ग भाई-बहनों, जो मेरी तरह बुढ़ापे की तकलीफ़ों से जूझ रहे हैं! चूँकि, परमेश्वर की स्तुति हो, हम आस्तिक हैं, और विश्वास में बहुत सारे प्रकाश फैलाने वाले, आनंदमय, सुखद और संतुष्टि देने वाले ख़ज़ाने हैं; और चूँकि हमारा बुढ़ापा हमें उन ख़ज़ानों की सामग्री में और भी ज़्यादा ले जाता है, तो, निश्चित रूप से, विश्वास के साथ आने वाले बुढ़ापे के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें इसके लिए अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए।

आठवीं आशा

जिस समय मेरे सिर पर बुढ़ापे की निशानी सफ़ेद बाल आने लगे थे, मैं प्रथम विश्व युद्ध की उथल-पुथल के बाद युद्ध बंदी (रूस में) के रूप में कैद से इस्तांबुल लौटा और इसने जवानी की गहरी नींद को और भी भारी कर दिया। मुझे जो महान प्रसिद्धि और सम्मान मिला, उसके अलावा खलीफा, शेखुल-इस्लाम और सेना के कमांडर से लेकर धार्मिक स्कूलों के छात्रों तक सभी ने मुझे जो सम्मान और सम्मान दिया, वह मेरे हक़ से कहीं बढ़कर था, जवानी का नशा,

और मेरी स्थिति से उत्पन्न मनोदशा ने युवावस्था की नींद को इतना भारी बना दिया कि मुझे दुनिया शाश्वत लगने लगी और मैं उसमें इस तरह समा गया मानो अब मृत्यु है ही नहीं।

फिर, रमज़ान के पवित्र महीने में एक दिन, मैं क़ुरआन के सच्चे पाठकों को सुनने के लिए इस्तांबुल की बायज़ीद मस्जिद गया। पाठकों की ज़बानों के ज़रिए, चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला क़ुरआन अपने महान स्वर्गीय संबोधन के साथ यह घोषणा कर रहा था, हर आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना है (3: 185), जो सबसे शक्तिशाली रूप से मनुष्य और सभी जीवित प्राणियों की अपरिहार्य मृत्यु की घोषणा करता है। यह मेरे कान में प्रवेश किया, और मेरे दिल के केंद्र में खुद को स्थापित किया, मेरी लापरवाही और नशे की बेहद मोटी परतों को तोड़ दिया। मैं मस्जिद से बाहर चला गया। नींद की बेहोशी के कारण, जो इतने लंबे समय से मेरे सिर में बसी हुई थी जिसमें अब एक तूफ़ान चल रहा था और आग जल रही थी जिससे धुआं निकल रहा था, कई दिनों तक मैं खुद को एक नाव की तरह देख रहा था जो अपना रास्ता भूल गई थी।

हर बार जब मैं आईने में देखता, तो मेरे सफेद बाल मुझसे कहते, “सावधान रहो!” और इस तरह वास्तविकता मेरे सफेद बालों की चेतावनी के माध्यम से सामने आ जाती।

मैंने देखा कि मेरी जवानी, जिसने मुझे अपने सुखों से इतना मोहित कर लिया था और जिस पर मैंने इतना भरोसा किया था, मुझसे विदा ले रही थी और यह सांसारिक जीवन, जिसमें मैं इतने प्रेम से लिप्त थी, फीका पड़ने लगा था; वह दुनिया जिसे मैं इतना प्यार करती थी और जिसके साथ मेरा इतना गहरा संबंध था, मुझे विदा दे रही थी, मुझे चेतावनी दे रही थी कि मैं इस गेस्टहाउस को छोड़ कर जाऊँगी। वह खुद भी विदा लेते हुए जाने की तैयारी कर रही थी। ' हर आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना ही है' श्लोक की व्यापक सामग्री से मेरे दिल में निम्नलिखित अर्थ खुल रहे थे: मानव जाति एक आत्मा है - यह पुनर्जीवित होने के लिए मर जाएगी; पृथ्वी एक आत्मा है - यह एक शाश्वत रूप धारण करने के लिए मर जाएगी; और दुनिया भी एक आत्मा है - यह परलोक का रूप धारण करने के लिए मर जाएगी।

तो, इस अवस्था में रहते हुए, मैंने अपनी स्थिति पर विचार किया। मैंने देखा कि युवावस्था, जो सुखों की खान है, जा रही थी, और उसकी जगह बुढ़ापा ले रहा था - जो दुख का स्रोत है। जीवन, जो इतना चमकता था, विदा हो रहा था, और मृत्यु, जो स्पष्ट रूप से अंधकारमय और भयावह है, उसकी जगह लेने की तैयारी कर रही थी। प्यारी दुनिया, जिसे शाश्वत माना जाता है और जो लापरवाह लोगों की प्यारी है, अपने अंत की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी।

अपने आप को धोखा देने और अपने मन को एक बार फिर से असावधानी में डुबाने के लिए, मैंने इस्तांबुल में अपने सामाजिक पद के सुखों पर विचार किया, जो मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था, लेकिन इसका कोई फ़ायदा नहीं था। लोगों का सारा सम्मान, ध्यान और सांत्वना मुझे सिर्फ़ दरवाज़े तक ही पहुँच पाती थी।

कब्र के पास, जो मेरे बहुत करीब थी; वहाँ यह बुझ जाएगा। और जब से मैंने महिमा और प्रसिद्धि के अलंकृत आवरण के नीचे एक घृणित पाखंड, ठंडा दिखावा, आत्म-प्रशंसा और अस्थायी मूर्खता देखी, जो कि प्रसिद्धि का पीछा करने वालों का सबसे बड़ा लक्ष्य है, मैंने समझा कि ये चीजें जो मुझे अब तक गुमराह कर रही थीं, मेरे लिए कोई सांत्वना नहीं दे सकती थीं और उनमें कोई प्रकाश नहीं था।

मैं फिर बायजीद मस्जिद में कुरान की तिलावत करने वालों की ओर मुड़ा ताकि कुरान की दिव्य शिक्षा सुन सकूँ और एक बार फिर जाग उठूँ। फिर इसकी महान शिक्षा से मुझे ऐसे पवित्र आदेशों के माध्यम से शुभ सूचना मिली जैसे कि और उन लोगों को शुभ सूचना दो जो ईमान लाए हैं...

कुरान द्वारा प्रदान की गई किरणों के माध्यम से, मैंने सांत्वना, आशा और प्रकाश की तलाश की, न कि उन मामलों से परे, जिन्होंने मुझे भय, निराशा और निराशा में डाल दिया था। सर्वशक्तिमान ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है, मैंने पीड़ा के भीतर ही इलाज पाया, मैंने अंधकार के भीतर ही प्रकाश पाया, और मैंने भय के भीतर ही सांत्वना पाई।

सबसे पहले, मैंने मौत का चेहरा देखा, जो हर किसी को डराता है और जिसे सबसे भयानक चीज़ माना जाता है। कुरान की रोशनी के ज़रिए मैंने देखा कि हालाँकि मौत का पर्दा काला, अंधेरा और बदसूरत है, लेकिन ईमान वालों के लिए इसका असली चेहरा चमकदार और खूबसूरत है। हमने इस सच्चाई को रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में काफ़ी हद तक व्यक्त किया है। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने आठवें शब्द और बीसवें अक्षर में समझाया है, मौत विलुप्ति और शाश्वत अलगाव नहीं है; बल्कि यह शाश्वत जीवन का परिचय है, इसकी शुरुआत है। यह जीवन के कर्तव्यों की कठिनाइयों से आराम है, एक विमुद्रीकरण है। यह निवास का परिवर्तन है। यह अपने दोस्तों के कारवां से मिलना है जो पहले ही कब्र की मध्यवर्ती दुनिया में चले गए हैं, इत्यादि। मैंने इन जैसी वास्तविकताओं के माध्यम से मौत का सच्चा, सुंदर चेहरा देखा। यह डर के साथ नहीं बल्कि एक खास तड़प के साथ था कि मैंने मौत के चेहरे को देखा। वास्तव में, एक तरह से यह तड़प थी, और मुझे सूफियों की "मृत्यु की प्रार्थना" का कुछ अर्थ समझ में आया।

समकालीन

फिर मैंने अपनी विदा हुई जवानी को देखा, जो असावधानी में बीती थी-वह जवानी जो सबको मोहित कर देती है और जिसके चले जाने पर लोग रो पड़ते हैं। मैंने देखा कि उसके सुंदर अलंकृत वस्त्र के भीतर सबसे कुरूप, सबसे अधिक नशे में धुत्त और स्तब्ध चेहरा छिपा था। अगर मैंने कुछ वर्षों तक नशे में धुत्त और मनोरंजन करने के बदले में उसका असली स्वरूप नहीं जाना होता। अगर मैं सौ वर्ष संसार में रहता, तो भी वह मुझे इतने वर्षों तक रोता। ऐसा ही एक व्यक्ति-

बेटे ने विलाप करते हुए कहा, "काश एक दिन मेरी जवानी लौट आती, तो मैं उसे बताता कि बुढ़ापे ने मुझे कितनी परेशानियाँ दी हैं।"

वास्तव में, जो वृद्ध लोग, उस व्यक्ति की तरह, जवानी के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते, वे अपनी जवानी को याद करते हैं और पश्चाताप तथा लालसा से रोते हैं। लेकिन स्वस्थ मन और हृदय वाले ईमान वालों द्वारा उपासना, अच्छे कामों और परलोक के लिए व्यापार में बिताई गई जवानी कमाई का सबसे शक्तिशाली साधन और अच्छे काम करने का सबसे सुखद और सुखद साधन है। जो लोग अपने धार्मिक कर्तव्यों को जानते हैं और अपनी जवानी को व्यर्थ नहीं गंवाते, उनके लिए यह एक बहुमूल्य और आनंददायक ईश्वरीय उपकार है। जब इसे सच्चाई, विनम्रता और ईश्वर-चेतना में नहीं बिताया जाता, तो जवानी कई खतरों को जन्म देती है। जब इसे अनियंत्रित किया जाता है, तो यह शाश्वत सुख और इस दुनिया में जीवन को बर्बाद कर देती है। वास्तव में, कुछ वर्षों की जवानी के सुखों के बदले में, बुढ़ापे में कई वर्षों तक दुख और पीड़ा होती है।

चूँकि युवावस्था ज़्यादातर लोगों के लिए हानिकारक होती है, इसलिए हम बुज़ुर्ग लोगों को भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि हम इसके खतरों और नुकसान से बच गए हैं। हर चीज़ की तरह, युवावस्था के सुख क्षणभंगुर होते हैं। अगर युवावस्था को पूजा-पाठ और अच्छे कामों में बिताया जाए, तो उसके फल हमेशा बने रहते हैं और अनंत जीवन में युवावस्था पाने का साधन बनेंगे।

इसके बाद, मैंने दुनिया को देखा, जिसे ज़्यादातर लोग गहरे लगाव के साथ प्यार करते हैं। कुरान की रोशनी में, मैंने देखा कि तीन सार्वभौमिक दुनियाएँ हैं, एक दूसरे के भीतर:

पहला दिव्य नामों से संबंधित है; यह उनका दर्पण है।

दूसरा आख़िरत से सम्बन्धित है; उसके लिए यह एक कृषि योग्य क्षेत्र है।

तीसरा संसारिक लोगों से सम्बन्धित है; यह असावधान लोगों का क्रीडास्थल है।

इसके अलावा, इस दुनिया के भीतर हर किसी की अपनी एक खास दुनिया है। ऐसा लगता है जैसे इंसानों की संख्या के बराबर एक के भीतर एक दुनियाएँ हैं। लेकिन हर किसी की निजी दुनिया का आधार उनका अपना जीवन है। जब उनका शरीर नष्ट हो जाता है, तो उनकी दुनिया उनके सिर पर गिर जाती है, और यह उनके लिए प्रलय का दिन होता है। चूँकि असावधान लोगों को यह एहसास नहीं होता कि उनकी दुनिया की प्रकृति ऐसी है, जो इतनी जल्दी नष्ट होने वाली है, इसलिए वे इसे सामान्य दुनिया की तरह ही शाश्वत मानते हैं और इसकी पूजा करते हैं। मैंने मन ही मन सोचा, "मेरी भी एक निजी दुनिया है जो दूसरे लोगों की दुनिया की तरह जल्दी ही ढह जाएगी।

मेरी इस निजी दुनिया का, मेरे इस छोटे से जीवन का क्या मूल्य है?”

कुरान की रोशनी में मैंने देखा कि मेरे लिए और हर किसी के लिए यह दुनिया एक अस्थायी बाज़ार है जो भगवान के रास्ते पर बनाया गया है।

राहगीरों को खरीदारी करने के लिए आमंत्रित करने वाला एक गेस्टहाउस, जो हर दिन भरता और खाली होता है, शाश्वत लेखक की एक हमेशा नवीनीकृत नोटबुक, जिसमें वह लगातार लिखता और मिटाता है; हर वसंत उसका एक सुनहरा पत्र है और हर गर्मी एक अच्छी तरह से रचित स्तुति है। यह दर्पणों से बना है जो सर्व-महान निर्माता के नामों की हमेशा नवीनीकृत अभिव्यक्तियों को दर्शाता है; यह परलोक का बीज है, दिव्य दया का पुष्प है, और एक अस्थायी कार्यशाला है जो ऐसी पट्टियाँ बनाती है जिन्हें अनंत काल के क्षेत्र में प्रदर्शित किया जाएगा।

मैं उस महान् निर्माता को लाख-लाख धन्यवाद देता हूँ, जिसने दुनिया को इस तरह बनाया है। मैंने समझा कि जहाँ मानवता को दुनिया के खूबसूरत, आंतरिक चेहरों के प्रति प्रेम से संपन्न किया गया है, जो आख़िरत और ईश्वरीय नामों की ओर देखते हैं, वहीं बहुतों ने उस प्रेम को इसके क्षणभंगुर, बदसूरत, हानिकारक, असावधान चेहरे पर बर्बाद कर दिया है, और इस तरह हदीस का अर्थ समझ में आया, "इस दुनिया की मोहब्बत सभी ग़लतियों की जड़ है।"112

और इसलिए, बुज़ुर्ग भाइयों और बहनों, मैंने इस सच्चाई को बुद्धिमानी भरे क़ुरआन की रोशनी से समझा और बुढ़ापे और ईमान की चेतावनियों ने मेरी आँखें खोल दीं; मैंने इसे रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में निर्णायक सबूतों के साथ साबित किया है। मुझे एक सच्चा सुकून, शक्तिशाली उम्मीद और चमकती हुई रोशनी मिली है। मैं खुश हूँ कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ; और मैं खुश हूँ कि मेरी जवानी चली गई। तुम भी ऐसा ही करो: रोओ मत, बल्कि शुक्र अदा करो। चूँकि ईमान है और चूँकि सच्चाई यही है, इसलिए ग़ाफ़िलों को रोना चाहिए और गुमराहों को विलाप करना चाहिए।

नौवीं आशा

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान मैं युद्धबंदी के रूप में रूस के उत्तर-पूर्वी भाग के कोस्तुरमा प्रांत में था। वहां प्रसिद्ध वोल्गा नदी के किनारे तातारों की एक छोटी सी मस्जिद थी। मैं अपने मित्रों, अन्य अधिकारियों के बीच थक गया था। मैं एकांत चाहता था, फिर भी मैं बिना अनुमति के बाहर नहीं घूम सकता था। फिर उन्होंने मुझे वोल्गा के किनारे तातार क्वार्टर में उस छोटी सी मस्जिद में जमानत पर छोड़ दिया। मैं मस्जिद में अकेला रहता। वसंत करीब था। मैं उस उत्तरी भूमि की लंबी-लंबी रातों के दौरान काफी लंबे समय तक जागता रहता। उस अंधेरे निर्वासन में उन अंधेरी रातों के दौरान वोल्गा की दयनीय छींटे और बारिश की चलती हुई फुहारें और हवा का उदास झोंका मुझे अस्थायी रूप से असावधानी की गहरी नींद से जगा देता था। मैं अभी तक खुद को बूढ़ा नहीं मानता था, लेकिन जिन्होंने विश्वयुद्ध का अनुभव किया था, उन्हें बूढ़ा माना जाता था।

112 अल-बहाकी, शुआब अल-इमान, 7:338; अल-मुंधिरी, अत-तरघिब वत-तारहिब, 3:178। (ट्र.)

ऐसे दिन जो मानो इस आयत के अर्थ को प्रकट कर रहे हों, एक दिन जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (73:17), बच्चों को भी बूढ़ा बना दिया। इसलिए, हालाँकि मैं चालीस साल का था, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अस्सी साल का हूँ। उस दुखद निर्वासन और उदासी के दौरान उन लंबी, अंधेरी रातों में, मुझे जीवन और अपनी मातृभूमि के प्रति निराशा महसूस हुई। अपनी शक्तिहीनता और अकेलेपन के सामने, मेरी आशा टूट गई।

फिर जब मैं इसी हालत में था, तो हिकमत वाला कुरआन मेरी मदद के लिए आया। मेरी ज़बान ने कहा, " हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और वह कितना अच्छा रक्षक है" (3:173) और रोते हुए मेरा दिल चिल्लाया:

मैं अजनबी हूँ, मैं अकेला और कमज़ोर हूँ, और मैं शक्तिहीन हूँ:
हे मेरे परमेश्वर! मैं दया की भीख मांगता हूं, क्षमा मांगता हूं, और तेरे दरबार से सहायता की गुहार लगाता हूं!

और, अपनी मातृभूमि में अपने पुराने मित्रों के बारे में सोचते हुए, तथा नियाज़ी मिस्री की तरह, वहाँ निर्वासन में मरते हुए स्वयं की कल्पना करते हुए, मैंने निम्नलिखित कहा:

संसार के दुःख को त्यागकर,
शून्य में उड़ान भरते हुए,
निरंतर उत्साह के साथ उड़ते हुए,
मैं हर साँस में पुकारता हूँ, मित्र! मित्र!
मेरी आत्मा अपने मित्रों को खोज रही थी।

किसी भी मामले में, निर्वासन में उस लंबी, उदास, दयनीय, वियोग-पीड़ित रात में मेरी ज़रूरत और कमज़ोरी ईश्वरीय दरबार में इतनी शक्तिशाली मध्यस्थ और साधन बन गई कि अब भी मुझे इस पर आश्चर्य होता है। क्योंकि, कई दिनों बाद, मैं एक बेहद अप्रत्याशित तरीके से, अपने आप, रूसी भाषा न जानते हुए, उस दूरी को पार करके भाग गया, जिसे पैदल चलने में एक साल लग जाता। मैं ईश्वरीय कृपा से एक अद्भुत तरीके से बच गया, जो मेरी ज़रूरत और नपुंसकता के जवाब के रूप में आया। फिर, वारसॉ और ऑस्ट्रिया से गुजरते हुए, मैं इस्तांबुल पहुँच गया। इस तरह से, इतनी आसानी से बच जाना, काफी असाधारण था। मैंने लंबी उड़ान इतनी आसानी और सुविधा के साथ पूरी की कि एक रूसी-भाषी, सबसे साहसी और सबसे चालाक व्यक्ति भी शायद ऐसा करने में सक्षम न हो।

वोल्गा के किनारे मस्जिद में उस रात ने मुझे यह तय करने पर मजबूर कर दिया: मैं अपना बाकी जीवन गुफाओं में बिताऊँगा। यह काफी है कि मैं लंबे समय से लोगों के सामाजिक जीवन में घुल-मिल गया हूँ। चूँकि, आखिरकार, मैं अकेले ही कब्र में जाऊँगा, इसलिए मैं अब से अकेलेपन का आदी होने के लिए एकांत चुनूँगा।

लेकिन, अफसोस की बात है कि ये बेकार की चीजें हैं, जैसे इस्तांबुल में कई और महत्वपूर्ण दोस्त होना, और वहां की चकाचौंध भरी दुनियावी जिंदगी, और खास तौर पर

मुझे जो प्रसिद्धि और सम्मान मिला, जो मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था, उसने मुझे कुछ समय के लिए अपना फ़ैसला भूलने पर मजबूर कर दिया। ऐसा लगा जैसे निर्वासन की वह रात मेरी ज़िंदगी की आँख की पुतली और परितारिका थी, और इस्तांबुल का चमकता हुआ सफ़ेद दिन, उसका प्रकाशहीन, सफ़ेद हिस्सा, ताकि वह भविष्य का पूर्वानुमान न लगा सके, और फिर से सो गया। सिर्फ़ दो साल बाद ग़ौथ अल-जिलानी ने अपनी किताब फ़ुतुहुल-ग़ैब ("अदृश्य के बारे में विजय") के साथ एक बार फिर मेरी आँखें खोलीं ।

और इसलिए, वृद्ध पुरुषों और महिलाओं! जान लें कि बुढ़ापे की कमजोरी और शक्तिहीनता ईश्वरीय कृपा और दया को आकर्षित करने का साधन है। जैसा कि मैंने स्वयं में अनेक अवसरों पर देखा है, पृथ्वी पर दया का प्रकटीकरण इस सत्य को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। क्योंकि सबसे शक्तिहीन और कमजोर प्राणी बच्चे हैं। लेकिन यह वे ही हैं जिन्हें दया की सबसे मधुर और सबसे सुंदर अभिव्यक्ति का आशीर्वाद प्राप्त है। एक पेड़ के शीर्ष पर घोंसले में एक युवा पक्षी की शक्तिहीनता उसकी माँ को दया की अभिव्यक्ति के रूप में एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह नियुक्त करती है। उसकी माँ चारों ओर उड़ती है और उसके लिए भोजन लाती है। जैसे ही उसके पंख मजबूत हो जाते हैं और घोंसला-शिशु अपनी शक्तिहीनता को भूल जाता है, उसकी माँ कहती है, "जाओ और अपना भोजन स्वयं खोजो!" और फिर उसकी बात नहीं सुनती।

जिस प्रकार दया की यह वास्तविकता बहुत छोटे बच्चों के लिए लागू होती है, उसी प्रकार यह वृद्धों के लिए भी लागू होती है, जो कमज़ोरी और नपुंसकता में युवाओं के समान होते हैं।
ऐसे कई अनुभव हुए हैं जिनसे मुझे यह पक्का यकीन हुआ है कि जिस तरह से बच्चों को उनकी नपुंसकता के कारण ईश्वरीय कृपा से उनकी माताओं के स्तनों से अद्भुत तरीके से भोजन मिलता है, उसी तरह से मासूमियत हासिल करने वाले मोमिन बुज़ुर्गों को भी चमत्कारी रूप से भरपूर भोजन मिलता है। हदीस का एक अंश है जिसमें कहा गया है, "अगर बुज़ुर्ग अपनी पीठ झुकाकर न होते, तो तुम पर विपत्तियाँ बाढ़ की तरह बरसतीं।"113

यह स्पष्ट करता है कि परिवार की समृद्धि का स्रोत उसके बुजुर्ग लोग हैं, और ये बुजुर्ग ही हैं जो परिवार को विपत्तियों से बचाते हैं।

चूँकि बुढ़ापे की कमज़ोरी और शक्तिहीनता ही ईश्वरीय दया को इस हद तक आकर्षित करने का साधन है, इसलिए बुद्धिमानी से भरे कुरान की आयतों के ज़रिए कहा गया है कि अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे जीवनकाल में बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उनसे (शिकायत या अधीरता के संकेत के रूप में) 'उफ़!' न कहो, न ही उन्हें दूर भगाओ; और हमेशा उनसे दयालु शब्दों में बात करो। उनके लिए अपने प्रभु के पंख नीचे करो।

---

113 अत-तबारानी, अल-मुजम अल-कबीर, 22:309; अबू याला, अल-मुस्नद, 11:287. (ट्र.)

दया से नम्रता दिखाएँ और कहें: "मेरे रब, उन पर दया कर जैसे उन्होंने बचपन में मेरी देखभाल की (17: 23-24), बच्चों को अपने बुजुर्ग माता-पिता के प्रति दयालु और सम्मानपूर्ण होने के लिए पाँच तरीकों से सबसे अद्भुत ढंग से पुकारता है; चूँकि इस्लाम धर्म बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा का आदेश देता है; और चूँकि मानव स्वभाव भी बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा की माँग करता है; हम बुजुर्ग लोग निश्चित रूप से युवावस्था की भूख से उत्पन्न अस्थायी भौतिक सुखों के स्थान पर, ईश्वरीय कृपा और कोमलता की सहज मानवीय भावनाओं से पर्याप्त, निरंतर दया और सम्मान और ऐसे सम्मान और करुणा से उत्पन्न आत्मा की संतुष्टि का आनंद लेते हैं। इस मामले में, हमें अपने इस बुढ़ापे को सौ युवाओं के साथ बदलने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ कि यदि वे मुझे पुराने या पहले सईद की जवानी के दस साल दें

दसवीं आशा

रूस की कैद से लौटने के बाद इस्तांबुल में एक-दो साल तक मैं लापरवाह रहा। जिन दिनों राजनीतिक माहौल ने मेरा ध्यान खुद से हटाकर बाहरी दुनिया की ओर खींचा, मैं एक बार एयूप सुल्तान कब्रिस्तान में एक ऊंचे स्थान पर बैठा था, जहां से गोल्डन हॉर्न का नजारा दिखाई दे रहा था। मैंने इस्तांबुल के क्षितिज पर नजर डाली। अचानक मेरे मन में ऐसी स्थिति आ गई कि ऐसा लगा जैसे मेरी निजी दुनिया खत्म हो रही है और मेरी आत्मा कुछ मामलों में पीछे हट रही है। यह सोचकर कि क्या कब्र के पत्थरों पर लिखे शिलालेख मुझे ऐसा भ्रम दे रहे हैं, मैंने अपनी निगाहें हटा लीं। मैंने दूर की ओर नहीं, बल्कि कब्रिस्तान की ओर देखा। तब मेरे दिल में यह बात आई: “तुम्हारे इर्द-गिर्द का यह कब्रिस्तान इस्तांबुल को सौ गुना समेटे हुए है, क्योंकि इस्तांबुल को सौ बार खाली किया जा चुका है। तुम अपवाद नहीं हो जो उस सर्वज्ञ और शक्तिशाली के फैसले से बच सकते हो, जिसने इस्तांबुल के सभी लोगों को यहां डाला है। तुम भी जाओगे।”

मैं कब्रिस्तान से निकलकर उस अद्भुत अनुभव के साथ एयूप सुल्तान मस्जिद की एक छोटी सी कोठरी में दाखिल हुआ, जहाँ मैं पहले भी कई बार रुका था। मैंने खुद से सोचा: मैं तीन तरह से मेहमान हूँ: मैं इस छोटे से कमरे में मेहमान हूँ, मैं इस्तांबुल में भी मेहमान हूँ, और इस दुनिया में भी मेहमान हूँ। मेहमान को यात्रा के बारे में सोचना पड़ता है। जिस तरह से मैं इस कमरे को छोड़ूँगा, उसी तरह एक दिन मैं इस्तांबुल को भी छोड़ूँगा, और फिर एक दिन मैं इस दुनिया को भी छोड़ दूँगा।

इन विचारों के बीच, मेरा दिल एक बहुत ही दयनीय, गंभीर दुःख से भर गया। क्योंकि मैं सिर्फ़ एक या दो दोस्तों को नहीं खो रहा था; मैं इस्तांबुल में रहने वाले हज़ारों दोस्तों से अलग हो रहा था, और मैं इस्तांबुल से भी अलग हो रहा था, जिसे मैं बहुत प्यार करता था। और जिस तरह मैं इस दुनिया में रहने वाले लाखों दोस्तों से अलग हो रहा था, उसी तरह मैं उस खूबसूरत दुनिया से भी अलग हो रहा था, जिसे मैं प्यार करता था और जिसके साथ मैं मोहित था। यह सोचते हुए, मैं एक बार फिर कब्रिस्तान में एक ऊँचे स्थान पर गया। समय-समय पर सिनेमाघर में जाकर सोचने और सबक लेने के लिए, जिस तरह से फ़िल्म में मृत लोगों की तस्वीरें दिखाई जाती हैं, जैसे कि वे जीवित हैं, इधर-उधर घूम रहे हैं, उस पल, इस्तांबुल के सभी मृत लोग मुझे लाशों की तरह घूमते हुए दिखाई दिए।

मैंने अपनी कल्पना से कहा: चूंकि कब्रिस्तान में मौजूद कुछ लोग फिल्म के पर्दे पर चलते हुए दिखाए गए लोगों की तरह चलते हुए दिखाई देते हैं, इसलिए आपको उन लोगों को भी ऐसे देखना चाहिए जो भविष्य में कब्रिस्तान में प्रवेश करने वाले हैं, जैसे कि वे उसमें प्रवेश कर चुके हैं - वे भी लाशें हैं, जो घूम रही हैं।

अचानक, कुरान की रोशनी और ग़ौस अल-आज़म, शेख अल-जिलानी के मार्गदर्शन के ज़रिए, मेरी दुःख भरी स्थिति एक खुशहाल और आनंदमय स्थिति में बदल गई। यह कुछ इस तरह था:

उस दुखद स्थिति में, कुरान से आती रोशनी ने मुझे याद दिलाया: जब आप रूस के उत्तर-पूर्व में कोस्तुरमा में निर्वासन में थे, तो आपके कुछ अधिकारी मित्र थे। आप जानते थे कि वे मित्र एक दिन आपके लिए बहुत कुछ करेंगे।

एक दिन इस्तांबुल जाओ। यदि उनमें से किसी ने तुमसे पूछा होता, "क्या तुम इस्तांबुल जाओगे, या तुम यहीं रहोगे?" निश्चित रूप से, यदि तुम्हारे पास थोड़ी भी बुद्धि होती, तो तुम खुशी-खुशी इस्तांबुल जाना चुनते। एक हजार एक दोस्तों में से नौ सौ निन्यानबे पहले से ही इस्तांबुल में थे। केवल एक या दो वहां रह गए, और वे भी एक दिन इस्तांबुल जाएंगे। इस्तांबुल जाना तुम्हारे लिए एक दुखद प्रस्थान या दुखद अलगाव नहीं होगा। इसके अलावा, आखिरकार, तुम यहाँ आ गए और क्या तुम ऐसा करके खुश नहीं थे? तुम उस दुश्मन देश की लंबी, अंधेरी रातों और ठंडी, तूफ़ानी सर्दियों से छुटकारा पा गए। आप इस खूबसूरत इस्तांबुल में आए, जो धरती पर स्वर्ग जैसा था।

इसी तरह, बचपन से लेकर आज तक, आपके चाहने वालों में से सौ में से निन्यानबे लोग कब्रिस्तान चले गए हैं; यह आपके लिए भयावह है। आपके कुछ ही दोस्त हैं जो अभी भी इस दुनिया में हैं, और वे भी वहाँ चले जाएँगे। इस दुनिया में आपकी मृत्यु वियोग नहीं है; यह एक पुनर्मिलन है - उन सभी दोस्तों के साथ पुनर्मिलन। वे - वे हमेशा जीवित रहने वाली आत्माएँ - मिट्टी के नीचे अपने जीर्ण-शीर्ण आवास छोड़ गई हैं, कुछ सितारों की यात्रा कर रहे हैं और कुछ मध्यवर्ती क्षेत्र के स्तरों से गुज़र रहे हैं।

कुरान और ईमान इस सत्य को इतनी दृढ़ता और दृढ़ता से प्रदर्शित करते हैं कि जब तक किसी व्यक्ति में हृदय और आत्मा की कमी न हो, या जब तक कि गलत मार्गदर्शन ने उसके हृदय को दबा न दिया हो, तब तक इस पर विश्वास करना चाहिए मानो कि वह इसे देख रहा है।
क्योंकि, सबसे निश्चित रूप से और स्वयं-प्रमाणित, सर्व-दयालु और सर्व-दयालु निर्माता, जो इस दुनिया को अपने अनगिनत उपकारों और उपहारों से सजाता है और इस तरह अपने प्रभुत्व को सर्व-दयालु और देखभाल करने वाले तरीके से प्रदर्शित करता है, यहां तक कि बीज जैसी कम महत्वपूर्ण चीजों को भी संरक्षित करता है, मानवता को नष्ट या बर्बाद नहीं करेगा - जो कि उसके प्राणियों में सबसे परिपूर्ण, सबसे व्यापक और सबसे महत्वपूर्ण और प्रिय है - इसे अनंत विलुप्ति या उनसे कभी न खत्म होने वाले अलगाव में भेजकर, जिन्हें वे प्यार करते हैं। बल्कि, जैसा कि दसवें और उनतीसवें वचनों में सिद्ध किया गया है, जैसे कि एक किसान धरती पर बीज बिखेरता है, सर्व-दयालु निर्माता अस्थायी रूप से अपने उस प्यारे प्राणी को जमीन के नीचे ले जाता है, जो दया का द्वार है, ताकि दूसरे जीवन में अंकुर पैदा हो सकें।

और इस तरह, कुरान से यह याद दिलाने के बाद, कब्रिस्तान मेरे लिए इस्तांबुल से ज़्यादा प्यारा हो गया। एकांत और एकांत मेरे लिए एक अनमोल एहसास बन गया।
बातचीत और लोगों के साथ संगति से ज़्यादा मुझे कुछ और अच्छा नहीं लगता। और मैंने बोस्फोरस के सरीयर में अपने लिए एकांत जगह ढूँढ़ ली। वहाँ ग़ौथ अल-आज़म अल-जिलानी, भगवान उनसे प्रसन्न हों, अपने फ़ुतुहुल -ग़ैब ("अदृश्य के बारे में विजय") के साथ मेरे लिए एक गुरु, डॉक्टर और मार्गदर्शक बन गए, और इमाम रब्बानी, भगवान उनसे प्रसन्न हों, अपने मेकतुबात ("पत्र") के साथ एक साथी, एक कोमल हृदय वाले दोस्त और शिक्षक बन गए। तब मैं बेहद खुश था कि मैं बुढ़ापे में प्रवेश कर गया था, आधुनिक सभ्यता के सुखों को त्याग दिया था, और सामाजिक जीवन से दूर हो गया था। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया।

और इसलिए, मेरे जैसे बुढ़ापे में प्रवेश करने वाले सम्मानित लोगों और अक्सर मृत्यु को उसकी चेतावनियों के माध्यम से याद करते हैं! कुरान में ईमान की शिक्षाओं के प्रकाश के अनुसार, हमें बुढ़ापे, मृत्यु और बीमारी को अनुकूल दृष्टि से देखना चाहिए, और एक मामले में उनसे प्रेम भी करना चाहिए। चूँकि हमारे पास ईमान जैसा एक अनमोल उपहार है, इसलिए बुढ़ापा सुखद है, और बीमारी और मृत्यु भी। अगर कुछ चीजें अप्रिय हैं, तो वे हैं पाप, अपव्यय, विधर्म, धर्म में अस्वीकार्य नवाचार और गुमराही।

ग्यारहवीं आशा

कैद से लौटने के बाद, मैं अपने भतीजे अब्दुर्रहमान के साथ इस्तांबुल में कैमलिका की पहाड़ी पर एक विला में रह रहा था।

सांसारिक जीवन में, मेरी स्थिति को हम जैसे लोगों के लिए सबसे खुशहाल माना जा सकता था: मैं कैद से बचा लिया गया था, और दारुल-हिकमत अल-इस्लामिया114 ("इस्लामी ज्ञान का घर") में, हम शिक्षण के अपने पेशे के लिए सबसे उच्च स्तर पर शिक्षण और ज्ञान की सेवा में सफलता का आनंद ले रहे थे। मुझे जो सम्मान और ध्यान दिया गया, वह मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था। मैं इस्तांबुल में रहने के लिए सबसे खूबसूरत जगह कैमलिका में रह रहा था। मेरे लिए सब कुछ सही था। मैं अपने दिवंगत भतीजे अब्दुर्रहमान के साथ था, जो बेहद बुद्धिमान और आत्म-त्यागी था, और मेरा छात्र, और नौकर, और लेखक दोनों था, और जो मेरे लिए एक बेटे की तरह था।

इस स्थिति में, स्वयं को दुनिया में किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक भाग्यशाली समझते हुए, एक दिन मैंने आईने में देखा और अपने बालों और दाढ़ी में सफेद बाल देखे।

अचानक, मुझे कोस्तुरमा की मस्जिद में कैद के दौरान जो आध्यात्मिक जागृति का अनुभव हुआ था, वह फिर से शुरू हो गया। परिणामस्वरूप, मैंने उन परिस्थितियों और कारणों पर विचार करना शुरू कर दिया, जिनसे मैं आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ था और जिन्हें मैं सांसारिक जीवन में खुशी का साधन मानता था। उनमें से जिस किसी के बारे में मैंने सोचा, अब मुझे वह सब सड़ा हुआ, लगाव के योग्य नहीं, एक प्रकार का भ्रम दिखाई दिया। इस बीच, मुझे एक ऐसे मित्र के हाथों विश्वासघात और विश्वासघात का अप्रत्याशित और अकल्पनीय कृत्य सहना पड़ा, जिसे मैं सबसे अधिक वफ़ादार मानता था। मुझे दुनिया से डर लगने लगा। मैंने अपने दिल से कहा, "क्या मैं पूरी तरह से भ्रमित हो गया हूँ? मैं देखता हूँ कि बहुत से लोग हमारी स्थिति को ईर्ष्या से देखते हैं, जबकि वास्तव में हमें दया आनी चाहिए। क्या ये सभी लोग पागल हैं, या मैं अब पागल हो रहा हूँ ताकि मैं इन सभी दुनिया-प्रेमी लोगों को ऐसा देखूँ?"

वैसे भी, बुढ़ापे के कारण आई उस तीव्र जागृति के परिणामस्वरूप, सबसे पहले मैंने उन क्षणभंगुर चीज़ों की क्षणभंगुरता पर ध्यान दिया, जिनसे मैं जुड़ा हुआ था। फिर मैंने खुद पर ध्यान दिया, और पाया कि मैं पूरी तरह से शक्तिहीन हूँ। इसके बाद मेरी आत्मा, जो अनंत काल की इच्छा रखती थी और फिर भी क्षणभंगुर चीज़ों से बहुत जुड़ी हुई थी, उन्हें शाश्वत मानती थी, ने बहुत ज़ोर देकर कहा, "चूँकि मैं अपने शरीर के बारे में नश्वर हूँ, तो इन नश्वर चीज़ों से क्या अच्छा हो सकता है? चूँकि मैं शक्तिहीन हूँ, तो मैं इन शक्तिहीन चीज़ों से क्या उम्मीद कर सकता हूँ? मुझे एक सर्वशक्तिमान, शाश्वत व्यक्ति की ज़रूरत है जो मेरी बीमारियों का इलाज करे।" और मैंने खोज शुरू कर दी।

114 दारुल-हिकमत अल-इस्लामिया ("इस्लामिक ज्ञान का घर"), जिसकी स्थापना अगस्त 1918 में हुई थी, एक इस्लामी अकादमी थी। इसकी स्थापना इस्लाम से जुड़े सवालों के जवाब देने, इसके सिद्धांतों के बारे में उठाए गए संदेहों को दूर करने और इसे पढ़ाने के लिए किताबें प्रकाशित करने के लिए की गई थी। बेदीउज्जमां सईद नूरसी इसके प्रमुख सदस्यों में से एक थे। (ट्र.)

फिर, सबसे पहले, मैंने उस ज्ञान का सहारा लिया जो मैं इतने लंबे समय से पढ़ रहा था, और एक सांत्वना, एक उम्मीद की तलाश की। दुर्भाग्य से, उस समय तक मैंने अपने दिमाग को "प्राकृतिक" विज्ञान और दर्शन के विज्ञान के साथ-साथ इस्लामी विज्ञानों से भर दिया था, और गलती से उन दार्शनिक और "प्राकृतिक" विज्ञानों को व्यक्तिगत विकास और ज्ञान के साधन के स्रोत के रूप में कल्पना की थी। हालाँकि, उन दार्शनिक मुद्दों ने मेरी आत्मा को बहुत अधिक मैला कर दिया था और मेरे आध्यात्मिक विकास में बाधा उत्पन्न की थी। अचानक, सर्वशक्तिमान ईश्वर की दया और कृपा के लिए, बुद्धिमान कुरान में निहित पवित्र ज्ञान मेरी सहायता के लिए आया था। जैसा कि रिसाले-ए नूर के कई हिस्सों में समझाया गया है, इसने उन दार्शनिक मुद्दों की गंदगी को धो दिया और साफ कर दिया।

उदाहरण के लिए, "प्राकृतिक" विज्ञानों से आने वाले अंधकार के आध्यात्मिक पर्दों ने बाहरी दुनिया को मेरी आत्मा का दम घोंटने के लिए मजबूर कर दिया था। मैं जिस भी दिशा में आत्मज्ञान की तलाश में मुड़ा, मुझे उन मामलों में प्रकाश की एक किरण भी नहीं मिली, न ही मैं सांस ले पाया। और यह तब तक जारी रहा जब तक कि कुरान द्वारा सिखाई गई ईश्वरीय एकता की असाधारण तेज रोशनी ने, "अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है" की घोषणा के साथ, अंधकार के उन सभी पर्दों को हटा दिया, और मैं आसानी से सांस ले सका। लेकिन गुमराह लोगों और दार्शनिकों से जो उन्होंने सीखा था, उसके आधार पर मेरी शारीरिक आत्मा और शैतान ने मेरे तर्क और मेरे दिल पर हमला किया। भगवान का शुक्र है कि मेरी आत्मा के साथ होने वाली बहस के परिणामस्वरूप मेरे दिल की जीत हुई। उन आदान-प्रदानों को रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में वर्णित किया गया है। आगे जाने की आवश्यकता के बिना, दिल की उस जीत का एक हजारवां हिस्सा दिखाने के लिए, मैं यहां हजारों में से केवल एक प्रमाण की व्याख्या करूंगा। मुझे उम्मीद है कि यह कुछ हद तक उन बुज़ुर्ग लोगों की आत्माओं को भी शुद्ध कर सकता है, जिन्होंने अपनी युवावस्था में अपनी आत्मा को गंदा कर लिया है और अपने दिलों को बीमार कर लिया है, अपनी आत्माओं को उन बातों से खराब कर लिया है जो आंशिक रूप से गुमराह करने वाली और आंशिक रूप से तुच्छ हैं - वे बातें जिन्हें वे आधुनिक दर्शन या कुछ आधुनिक विज्ञानों के नाम पर पढ़ाते या पढ़ते हैं। और उनकी आत्माएँ उस बुराई से बच सकती हैं जो शैतान और शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा ईश्वरीय एकता के बारे में भड़काती है।

हज़ार में से एक सबूत इस प्रकार है: मेरी शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा

ने विज्ञान और दर्शन के नाम पर कहा, "अपनी प्रकृति के कारण, चीज़ों का ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन में हिस्सा है। सब कुछ एक कारण पर निर्भर करता है। फल पेड़ से और बीज मिट्टी से मांगना पड़ता है। तो तलाश करने का क्या मतलब है?

परमेश्वर से सबसे छोटी और कम से कम महत्वहीन चीज़ प्राप्त करना और उसके लिए उससे विनती करना?”

कुरान की रोशनी से ईश्वरीय आदेश का अर्थ और रहस्य स्पष्ट होता है।
तब एकता प्रकट हुई और मेरे हृदय ने मेरी आत्मा से कहा:

सबसे छोटी और सबसे कम महत्वपूर्ण चीज़, सबसे बड़ी और सबसे बड़ी चीज़ की तरह, पूरे ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति से सीधे निकलती है और उसके खजाने से निकलती है। यह किसी और तरीके से नहीं हो सकता। कारण केवल एक पर्दा है। क्योंकि, कला और सृजन के संबंध में, कभी-कभी जिन प्राणियों को हम सबसे छोटे और सबसे कम महत्वपूर्ण मानते हैं, वे सबसे बड़े प्राणियों से भी बड़े होते हैं। भले ही कला में एक मक्खी मुर्गे से बड़ी न हो, लेकिन वह उससे कम भी नहीं है। इसलिए, हमें महान और छोटे के बीच अंतर नहीं करना चाहिए। या तो सभी को भौतिक कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, या सभी को एक ही सत्ता के लिए एक साथ जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

और जिस प्रकार पहला विकल्प अकल्पनीय है, उसी प्रकार दूसरा विकल्प भी आवश्यक और अनिवार्यतः स्वीकार्य है।

क्योंकि यदि वस्तुओं और प्राणियों को एक ही सत्ता से संबद्ध कर दिया जाए, अर्थात् वह जो शाश्वत और सर्वशक्तिमान है, क्योंकि उसका ज्ञान - जिसके अस्तित्व को ब्रह्माण्ड की व्यवस्था और उसमें विद्यमान ज्ञान के असंख्य उदाहरण पूर्ण निश्चितता के साथ स्थापित और प्रदर्शित करते हैं -

सब कुछ को अपने में समाहित कर लेता है; और चूंकि सभी चीजें उसके ज्ञान में निर्धारित हैं, प्रत्येक का एक निश्चित, विशेष माप है; और चूंकि, स्पष्ट रूप से, चीजें और प्राणी, असीम रूप से कला से परिपूर्ण, निरंतर असीम आसानी से शून्य से अस्तित्व में आते हैं; और चूंकि, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई भागों में असंख्य शक्तिशाली प्रमाणों के साथ स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान एक "हो जाओ" के आदेश से किसी भी चीज का निर्माण करने में पूरी तरह सक्षम है और यह एक माचिस जलाने जितना सरल है, उसके पास असीम शक्ति है - ऐसा होने के कारण, हम चीजों के अस्तित्व में आने में जो असाधारण आसानी और सुविधा देखते हैं वह उस ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति और उस शक्ति की असीम विशालता के कारण है।

उदाहरण के लिए, यदि अदृश्य स्याही से लिखी गई पुस्तक पर उपयुक्त रासायनिक घोल लगाया जाए, तो वह पुस्तक अचानक अपना अस्तित्व प्रकट कर देती है और स्वयं ही पढ़ ली जाती है। ठीक उसी प्रकार, प्रत्येक वस्तु का विशेष रूप और स्वभाव उस शाश्वत, सर्वशक्तिमान के सर्वव्यापी ज्ञान में एक निश्चित, विशेष माप से निर्धारित होता है। अदृश्य लेखन पर लगाए गए रासायनिक घोल की तरह, अपनी असीम शक्ति और भेदक इच्छा के माध्यम से, परम सर्वशक्तिमान "हो जाओ!" की आज्ञा के साथ लागू होता है और यह ज्ञान के रूप में मौजूद प्राणी के लिए उसकी शक्ति का प्रकटीकरण है, जो उसे अत्यंत सहजता और सुविधा के साथ बाहरी अस्तित्व प्रदान करता है। वह अपनी बुद्धि की कढ़ाई को पढ़ता है।

यदि सभी चीजों को एक साथ उस शाश्वत, सर्वव्यापी के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है,
वह सर्वशक्तिमान है, सभी चीजों को जानने वाला है, फिर साथ ही साथ, उदाहरण के लिए, महान से एक मक्खी जैसी सबसे छोटी चीज के शरीर को इकट्ठा करना

संसार के विभिन्न प्राणियों में से, एक निश्चित सीमा तक, उस छोटी मक्खी के शरीर में कार्यरत कणों को भी मक्खी की रचना के रहस्यों तथा उसकी संपूर्ण कला को उसके सभी सूक्ष्मतम विवरणों में जानना होगा। क्योंकि, स्पष्ट रूप से तथा सभी बुद्धिमान लोगों द्वारा सहमत रूप से, प्राकृतिक या भौतिक कारण अस्तित्वहीनता से कुछ नहीं बना सकते। यदि वे सृजन करने में समर्थ होते, तो वे प्राणियों की अधिकांश प्रजातियों में से सबसे छोटे प्राणी के शरीर को भी एकत्रित कर रहे होते। और यदि वे इसे एकत्रित कर रहे होते, तो चाहे कोई भी सजीव प्राणी हो, क्योंकि प्रत्येक प्राणी में अधिकांश तत्वों तथा अधिकांश प्रजातियों के नमूने होते हैं, चूंकि प्रत्येक जीवित प्राणी ब्रह्मांड के बीज या उससे निकाले गए अंश के समान होता है, इसलिए उन्हें आवश्यक रूप से संपूर्ण वृक्ष या संपूर्ण पृथ्वी से सजीव प्राणी से एक बीज प्राप्त करना होगा, उन्हें सावधानीपूर्वक एक महीन छलनी में डालकर तथा अत्यंत संवेदनशील तराजू से मापकर। हालाँकि, प्राकृतिक कारण अज्ञानी और बेजान होते हैं, और उनके पास ऐसा कोई ज्ञान नहीं होता जो उन्हें कोई योजना, कोई विषय-वस्तु, मॉडल या कार्यक्रम निर्धारित करने की अनुमति दे जिसके अनुसार वे कणों को पिघलाकर किसी भी प्राणी के सटीक रूप को आकार देने के लिए ढाल सकें, बिना फैलाव या विकृति की अनुमति दिए। इसके अलावा, किसी चीज़ या प्राणी के लिए एक विशेष रूप लेने के लिए अनंत विकल्प हैं; इसके लिए आवश्यक है कि बेजान और अज्ञानी प्राकृतिक कारणों को पता हो कि उन्हें प्रत्येक चीज़ को कौन सा रूप देना चाहिए और इस प्रकार एक निश्चित, विशेष माप के अनुसार, तत्वों के कणों को इकट्ठा करना और एक साथ रखना चाहिए जो बाढ़ की तरह बहते हैं। इसलिए, जो कोई भी अपने दिल में अंधेपन से पीड़ित नहीं है, वह देखेगा कि संभावना और कारण से यह विचार कितना दूर है कि प्राकृतिक कारण इन सभी प्राणियों को बना सकते हैं, जिनमें से प्रत्येक का शरीर असाधारण रूप से सुव्यवस्थित है।

इस सत्य के परिणामस्वरूप, आयत के अर्थ के अनुसार, जिन्हें आप ईश्वर के अलावा देवता मानते हैं और पुकारते हैं, वे कभी भी एक मक्खी भी नहीं बना पाएंगे, भले ही वे सभी ऐसा करने के लिए एक साथ आ जाएं (22: 73), यदि सभी भौतिक कारण एक साथ आ जाएं और यदि उनमें इच्छाशक्ति हो, तो वे एक मक्खी के सभी तंत्रों और अंगों को उसके शरीर को बनाने के लिए सटीक क्रम और संतुलन में इकट्ठा नहीं कर सकते। यहां तक कि अगर वे उन्हें इकट्ठा करने में सक्षम थे, तो वे उस शरीर के अस्तित्व के लिए आवश्यक निर्दिष्ट माप में उन्हें बनाए या संरक्षित नहीं कर सकते थे। यहां तक कि अगर वे उन्हें इस तरह बनाए रखने या संरक्षित करने में सक्षम थे, तो वे उस शरीर में कणों को काम नहीं करवा सकते थे, जो लगातार बाहरी दुनिया से आने वाले नए कणों द्वारा नवीनीकृत या प्रतिस्थापित होते रहते हैं। इसलिए, स्वतः स्पष्ट रूप से, भौतिक कारण चीजों के स्वामित्व का दावा नहीं कर सकते हैं, और उनका सच्चा मालिक कोई और है।

वास्तव में, उनका सच्चा मालिक एक है जिसके लिए, आयत के अनुसार, आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है (31: 28), वह पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को उसी तरह से पुनर्जीवित करता है जैसे वह एक मक्खी को जीवित करता है। वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक फूल बनाता है, क्योंकि उसे बनाने के लिए चीजों को इकट्ठा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चूँकि उसके पास "हो जाओ!" का आदेश है और यह है और

चूँकि हर वसंत में, प्राणियों के शरीर बनाने वाले भौतिक तत्वों के अलावा, वह असंख्य प्राणियों के असंख्य गुणों, अवस्थाओं और रूपों को भी शून्य से बनाता है, और चूँकि हर चीज़ की योजना, मॉडल, विषय-वस्तु और कार्यक्रम उसके ज्ञान में पहले से ही निर्धारित हैं, और चूँकि सभी कण और परमाणु उसके ज्ञान और शक्ति के दायरे में चलते हैं, इसलिए वह हर चीज़ को असीम सहजता से बनाता है, मानो माचिस जला रहा हो। और कुछ भी इस गति को कम से कम भ्रमित नहीं करता है। जिस तरह ग्रह उसकी आज्ञाकारी सेना हैं, कण और परमाणु भी उसके लिए एक नियमित, सुव्यवस्थित सेना की तरह चलते हैं।

चूँकि वे उस शाश्वत शक्ति के आधार पर चलते हैं और उस शाश्वत ज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार काम करते हैं, इसलिए सभी चीजें और प्राणी उस शक्ति के आविष्कार से अस्तित्व में आते हैं। इसलिए, उन्हें इसलिए महत्वहीन नहीं समझना चाहिए क्योंकि वे शरीर में छोटे हैं। उस शक्ति के साथ अपने संबंध के कारण जो शक्ति उसमें है, उसके द्वारा एक मक्खी निम्रोद को नष्ट कर सकती है, एक चींटी फिरौन के महल को बर्बाद कर सकती है, और एक देवदार का छोटा बीज एक पहाड़ के पेड़ का बोझ उठा सकता है जो कि एक पहाड़ के बराबर है। हमने इस सत्य को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर साबित किया है। जिस तरह से सेना के सदस्य के रूप में राज्य के साथ अपने संबंध के कारण, एक साधारण सैनिक एक राजा को बंदी बना सकता है, इस प्रकार अपनी व्यक्तिगत क्षमता से कहीं अधिक, उसी तरह, शाश्वत शक्ति के साथ अपने संबंध के कारण, सभी चीजें कृपा प्राप्त कर सकती हैं और कला के चमत्कार दिखा सकती हैं जो उनके प्राकृतिक कारणों की क्षमता से लाखों गुना अधिक हैं।

संक्षेप में, यह तथ्य कि सभी चीजें अनंत कला और अनंत सहजता दोनों के साथ अस्तित्व में आती हैं, यह दर्शाता है कि वे एक शाश्वत सर्वशक्तिमान के कार्य हैं जिनके पास सर्वव्यापी ज्ञान है। अन्यथा, सैकड़ों हज़ारों असंभवताओं के कारण, संभव होने से बहुत दूर, उनका अस्तित्व बिल्कुल अकल्पनीय होगा।

इस अत्यंत सूक्ष्म, शक्तिशाली, गहन और स्वयंसिद्ध प्रमाण के माध्यम से, मेरी शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा, जो शैतान की अस्थायी शिष्या और गुमराह लोगों और पथभ्रष्ट दर्शन के प्रवक्ता थी, चुप हो गई, और, ईश्वर की स्तुति हो, पूरी तरह से विश्वास करने लगी। उसने कहा:

मुझे ऐसे सृष्टिकर्ता और प्रभु की आवश्यकता है जो मेरे हृदय की छोटी से छोटी और गुप्ततम घटनाओं तथा मेरी गुप्ततम अपीलों को जान सके।

और, जिस तरह से उसे मेरी आत्मा की सबसे छिपी हुई ज़रूरतों का जवाब देना चाहिए, उसी तरह से उसे इस शक्तिशाली दुनिया को परलोक से बदलने की शक्ति भी होनी चाहिए ताकि मुझे अनंत सुख मिल सके, और वह आसानी से एक मक्खी की तरह आकाश का निर्माण कर सके, और मेरी आँख की पुतली में एक कण रख सके जैसे कि वह आकाश के सामने एक आँख के रूप में सूर्य को बांधता है। क्योंकि जो मक्खी नहीं बना सकता, वह दुनिया के संबंध में कुछ भी नहीं कर सकता।

> मेरे दिल के ख़यालों को वह नहीं समझ सकता और मेरी रूह की पुकार नहीं सुन सकता। जो आसमानों को पैदा नहीं कर सकता, वह मुझे हमेशा की खुशी नहीं दे सकता। उस हालत में, मेरा रब वही है जो मेरे दिल में होने वाली घटनाओं को सही और शुद्ध करता है, और जिस तरह वह एक घंटे में आसमान को बादलों से भर देता है और खाली कर देता है, उसी तरह वह इस दुनिया को आख़िरत से बदल देगा, जन्नत बनाएगा और मेरे लिए उसके दरवाज़े खोल देगा और मुझे अंदर आने के लिए कहेगा।

तो, मेरे बुजुर्ग भाईयों और बहनों, जो मेरी आत्मा की तरह कुछ दुर्भाग्यपूर्ण विचारों से गुमराह हो गए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का कुछ हिस्सा प्रकाशहीन भौतिकवादी दर्शन और वैज्ञानिकता पर बिताया है! कुरान द्वारा निरंतर घोषित किए गए इस पवित्र आदेश से समझें कि उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है , यह कितना शक्तिशाली और सच्चा, कितना अडिग और अभेद्य, कितना अपरिवर्तनीय और पवित्र विश्वास का स्तंभ है, और यह कैसे सभी आध्यात्मिक अंधकार को दूर करता है और सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक करता है!

किसी भी हालत में, मेरे बालों और दाढ़ी में दिखाई देने वाले सफेद बालों और एक पुराने दोस्त के विश्वासघात के कारण, मुझे इस्तांबुल के चमकदार और सुखद दिखने वाले सांसारिक जीवन के सुखों से घृणा होने लगी। मेरी आत्मा उन सुखों के स्थान पर आध्यात्मिक सुखों की खोज करती थी, जिनसे वह मोहित थी। यह इस बुढ़ापे में एक रोशनी, एक सांत्वना चाहती थी, जिसे असावधान लोग ठंडा, बोझिल और अप्रिय समझते हैं। और सारी प्रशंसा ईश्वर की हो और असंख्य धन्यवाद, जैसे कि मैंने इस विश्वास का सच्चा, स्थायी और मधुर सुख पाया कि उसके अलावा कोई देवता नहीं है और ईश्वरीय एकता के प्रकाश में उन सभी झूठे, अप्रिय, क्षणभंगुर और निष्फल सांसारिक सुखों के स्थान पर, वैसे ही ईश्वरीय एकता के प्रकाश के माध्यम से, मैंने बुढ़ापे को (जिसे असावधान लोग ठंडा और बोझिल समझते हैं) सबसे हल्का, गर्म और प्रकाशमान देखा।

और इसलिए, बुज़ुर्ग पुरुष और महिलाएँ! चूँकि आपके पास विश्वास है और चूँकि आप नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं और प्रार्थनाएँ करते हैं जो विश्वास को रोशन और मज़बूत करती हैं, इसलिए आप अपने बुढ़ापे को शाश्वत युवावस्था के रूप में देख सकते हैं। क्योंकि आप इसके ज़रिए शाश्वत युवावस्था प्राप्त कर सकते हैं। बुढ़ापा जो वास्तव में ठंडा, बोझिल, बदसूरत, अंधकारमय और दर्द से भरा होता है, वह गुमराह लोगों का बुढ़ापा होता है; वास्तव में, उनकी जवानी भी ऐसी ही होती है। उन्हें रोना चाहिए और आहें भरनी चाहिए और पछताना चाहिए। लेकिन आप, सम्मानित विश्वास करने वाले बुज़ुर्ग लोगों को भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए और यह कहते हुए खुश होना चाहिए, "हर स्थिति के लिए भगवान की सभी प्रशंसा और धन्यवाद!"

बारहवीं आशा

एक बार मुझे निर्वासन की आड़ में इस्पार्टा प्रांत के बारला जिले में कष्टदायक कैद में रखा गया था। मैं बहुत ही दयनीय स्थिति में था-

मैं बीमारी और बुढ़ापे से जूझ रहा था, घर से लगातार दूर था, और एक गांव में अकेला था, किसी से मिलना-जुलना या बातचीत करना मना था। फिर, अपनी पूर्ण दया से, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझ पर ज्ञानपूर्ण कुरान के सूक्ष्म बिंदुओं और रहस्यों के बारे में एक प्रकाश प्रदान किया, जो मेरे लिए सांत्वना का साधन था। इसके साथ, मैंने अपनी दयनीय, दुखद, दुखद स्थिति को भूलने की कोशिश की।

मैं अपनी जन्मभूमि, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भूल पाया, लेकिन अफ़सोस, एक व्यक्ति ऐसा था जिसे मैं नहीं भूल पाया। वह था अब्दुर्रहमान, जो मेरा भतीजा था, हालाँकि मेरे लिए बेटे जैसा था, और मेरा सबसे ज़्यादा त्याग करने वाला छात्र और सबसे साहसी दोस्त। वह छह या सात साल पहले मुझसे अलग हो गया था। वह नहीं जानता था कि मैं कहाँ हूँ और इसलिए वह मेरी मदद या सांत्वना देने के लिए जल्दी नहीं कर सकता था, न ही मैं उसकी स्थिति जानता था ताकि मैं उससे संपर्क कर सकूँ और उस पर भरोसा कर सकूँ। अपने उस बुढ़ापे में, मुझे उसके जैसे वफ़ादार और त्याग करने वाले व्यक्ति की ज़रूरत थी।

तभी अचानक किसी ने मुझे एक पत्र दिया। मैंने उसे खोला और देखा कि यह अब्दुर्रहमान का पत्र था; यह एक ऐसा पत्र था जो उसके असली स्वभाव को दर्शाता था।
चमत्कार के तीन प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, जिसका एक भाग सत्ताईसवें पत्र में शामिल किया गया है।
115 इसने मुझे बहुत रुलाया; वास्तव में, यह मुझे अभी भी रुलाता है। पत्र में, दिवंगत अब्दुर्रहमान ने गंभीरतापूर्वक और ईमानदारी से लिखा कि उन्हें दुनिया के सुखों से नफरत है और उनकी सबसे बड़ी इच्छा मेरे पास आकर मेरी सेवा करना है, जैसे मैंने बचपन में उनकी देखभाल की थी। वह कुरान की सच्चाइयों को प्रचारित करने में अपनी शक्तिशाली कलम से मेरी मदद करना चाहते थे, जो इस दुनिया में मेरा सच्चा कर्तव्य है। उन्होंने यहाँ तक लिखा, "मुझे बीस या तीस ग्रंथ भेजें और मैं प्रत्येक की बीस या तीस प्रतियाँ लिखूँगा और दूसरों से लिखवाऊँगा।"

उनके पत्र ने मुझे मेरे मामलों के संबंध में बड़ी आशा दी। यह सोचकर कि मुझे एक प्रतिभाशाली छात्र मिला है, जो एक सगे (जैविक) बेटे से भी अधिक निष्ठा और निकटता से मेरी सेवा करेगा, मैं अपनी दर्दनाक कैद, अकेलेपन, घर से अलगाव और बुढ़ापे को भूल गया।

उस पत्र को लिखने से पहले, उनके पास दसवें वचन की एक प्रति थी, जो परलोक में विश्वास के बारे में है। ऐसा लगता था कि यह ग्रंथ उनके लिए एक उपाय था, जिसने उन छह या उससे अधिक वर्षों के दौरान उन्हें मिले सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक कर दिया।

---

115 इसमें सैद नूरसी और रिसाले-ए-नूर के छात्रों के बीच के संवाद शामिल हैं और इसे बारला लाहिकासी (“बारला के पूरक”), कस्तमोनू लाहिकासी (“कस्तमोनू के पूरक”) और एमिरदाग के नाम से अलग-अलग पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया था ।

परिशिष्ट ("एमिरदाग के पूरक")। (ट्र.)

सात साल। फिर उसने मुझे पत्र लिखा जैसे कि वह अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी कर रहा हो और उसे वास्तव में दृढ़ और उज्ज्वल विश्वास हो। जब मैं एक बार फिर अब्दुर्रहमान के साथ एक खुशहाल जीवन बिताने के बारे में सोच रहा था, तो एक या दो महीने बाद मुझे अचानक उसकी मृत्यु की खबर मिली। मैं इतना हिल गया कि पाँच साल बाद भी मैं उसके प्रभाव में हूँ। इसने अलगाव, दु:ख और पीड़ा की एक बड़ी भावना पैदा की, जो उस समय की दर्दनाक कैद, अकेलेपन, अलगाव, बुढ़ापे और बीमारी से दस गुना अधिक थी। मैंने सोचा कि मेरी निजी दुनिया का आधा हिस्सा मेरी माँ की मृत्यु के साथ ही मर गया था, और अब अब्दुर्रहमान की मृत्यु के साथ, मुझे लगा कि बाकी आधा भी मर गया। दुनिया से मेरा नाता अब पूरी तरह से टूट चुका था। क्योंकि अगर वह जीवित होता, तो वह मेरे परलोक से जुड़े कर्तव्यों में एक शक्तिशाली मदद और मेरे बाद मेरी जगह भरने के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी, साथ ही इस दुनिया में एक आत्म-त्यागी दोस्त और सांत्वना का साधन हो सकता था। वह मेरा सबसे बुद्धिमान छात्र और साथी होता, और रिसाले-ए-नूर का सबसे भरोसेमंद संरक्षक और रक्षक होता।

इंसानियत के लिहाज से इस तरह की क्षति मेरे जैसे लोगों के लिए बेहद दर्दनाक और विनाशकारी है। यह सच है कि मैं बाहरी तौर पर इसे बर्दाश्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मेरी आत्मा में एक भयंकर तूफान चल रहा था। अगर समय-समय पर कुरान की रोशनी से मिलने वाली राहत मुझे सांत्वना नहीं दे पाती, तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता। उस समय मैं अकेले ही बरला के पहाड़ों और घाटियों में घूमने निकल जाता था। मैं बैठा रहता था।

एकांत स्थानों में और दुखों से घिरे होने के बावजूद, अब्दुर्रहमान जैसे अपने वफ़ादार शिष्यों के साथ मैंने जो खुशहाल जीवन बिताया था, उसकी तस्वीरें फ़िल्मी दृश्यों की तरह मेरी कल्पना में घूम रही थीं और बुढ़ापे और निर्वासन के कारण होने वाले दुख ने मेरा प्रतिरोध तोड़ दिया। अचानक, पवित्र आयत का अर्थ, सब कुछ नाशवान है (और इसलिए नाशवान है) सिवाय उसके "चेहरे" (उसकी शाश्वत आत्मा और उसकी अच्छी खुशी की तलाश में किए गए काम) के। केवल उसका ही न्याय और अधिकार है, और उसी की ओर तुम्हें वापस लाया जा रहा है (28: 88), मेरे सामने खुल गया। इसने मुझे बोलने पर मजबूर कर दिया, "हे सनातन, तू ही सनातन है! हे सनातन, तू ही सनातन है!" और मुझे सच्ची सांत्वना दी।

फिर, जैसा कि ग्रंथ में वर्णित है, सुन्नाह की सीढ़ी (
ग्यारहवीं किरण), उस उजाड़ घाटी में उस दु:खद स्थिति में, इस पवित्र श्लोक से प्रेरित होकर, मैंने स्वयं को तीन विशाल शवों के सिर पर देखा:

मैंने खुद को उन पचपन मृत सईदों की कब्र पर एक कब्र के पत्थर के रूप में देखा, जिन्होंने
मेरे जीवन के पचपन वर्षों के दौरान दफनाए गए।

दूसरी लाश मेरे उन सभी साथी इंसानों की विशाल लाश थी जो आदम (उन पर शांति हो) के समय से मर चुके थे और जिन्हें अतीत की कब्र में दफना दिया गया था। मैंने खुद को इस सदी के चेहरे पर एक चींटी की तरह एक छोटे से जीवित प्राणी के रूप में देखा, जो उस कब्र के शिलापट्ट की तरह है।

तीसरी लाश पूरी दुनिया थी जो, जैसा कि ऊपर की कविता में कहा गया है, एक दिन इंसानों और हर साल उससे गुज़रने वाले संसारों की तरह मर जाएगी। यह मेरी कल्पना में सन्निहित था।

फिर यह आयत, ' फिर भी, यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें, तो कह दो: "मेरे लिए ईश्वर काफ़ी है; उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया है, और वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी है' (9: 129), मेरी सहायता के लिए आई और अपनी सच्ची सांत्वना और अमिट रोशनी के साथ, इसने उस भयानक दृष्टि को पूरी तरह से दूर कर दिया जो अब्दुर्रहमान की मृत्यु पर मेरे दुःख से उत्पन्न हुई थी। इसने मुझे याद दिलाया: चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर मौजूद है, इसलिए वह बाकी सभी चीज़ों के स्थान पर पर्याप्त है। चूँकि वह शाश्वत है, इसलिए वह निश्चित रूप से पर्याप्त है। उसकी कृपा का एक ही उदाहरण पूरी दुनिया का विकल्प बन जाता है। और उसके प्रकाश की एक अभिव्यक्ति ऊपर वर्णित तीन विशाल लाशों को जीवन देती है, यह दिखाती है कि वे लाशें नहीं हैं, बल्कि उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है और दूसरी दुनियाओं के लिए निकल गए हैं। हे सनातन, आप सनातन हैं!” जो कि सब कुछ नाशवान है (और इसलिए नाशवान है) के अर्थ को इंगित करता है सिवाय उसके “चेहरे” (श्लोक के अंत तक) के, जिसने मुझे उस सबसे दर्दनाक, दुःखद स्थिति से बचाया। यह इस प्रकार था:

जब मैंने पहली बार कहा, "हे सनातन, आप सनातन हैं!", तो एक शल्यक्रिया की तरह इसने उन अंतहीन आध्यात्मिक घावों को ठीक करना शुरू कर दिया जो इस दुनिया के बीत जाने और इस दुनिया में मेरे असंख्य मित्रों से जुड़े होने तथा उनके साथ मेरे संबंधों के टूट जाने के कारण हुए थे।

"हे शाश्वत, आप शाश्वत हैं!" वाक्यांश का दूसरा उच्चारण उन सभी असंख्य घावों के लिए मरहम और औषधि दोनों था। इसने मुझे यह विचार दिया: "आप शाश्वत हैं। जो लोग चले जाते हैं, उन्हें जाने दो; आप मेरे लिए पर्याप्त हैं। चूँकि आप शाश्वत हैं, इसलिए आपकी दया का एक प्रकटीकरण सभी क्षयकारी चीजों के स्थान पर पर्याप्त है। चूँकि आप मौजूद हैं, इसलिए जो व्यक्ति आपके अस्तित्व में विश्वास के माध्यम से आपके साथ अपने संबंध के बारे में जानता है, और जो इस्लाम के पालन में उस संबंध के अनुसार कार्य करता है, उसके लिए सब कुछ मौजूद है। क्षणभंगुरता और क्षय, और मृत्यु और प्रस्थान एक पर्दा, एक नवीनीकरण हैं; वे विभिन्न क्षेत्रों से यात्रा करने जैसे हैं।"

यह सोचते हुए, मेरी जलती हुई, निर्वासित, उदास, दर्दनाक, अंधकारमय और भयावह मनोदशा एक खुश, हर्षित, सुखद, चमकदार, प्यारी, मिलनसार स्थिति में बदल गई। मेरी जीभ और दिल - वास्तव में, उनकी अव्यवस्था की जीभ के माध्यम से, मेरे अस्तित्व का प्रत्येक कण - चिल्लाया, "सभी प्रशंसा भगवान की है!"

उस दया की अभिव्यक्ति का एक हज़ारवाँ हिस्सा यह है: मैं उस घाटी से बरला लौटा जहाँ मैंने दुख झेले थे और जहाँ मैं मन की उदासी में डूबा हुआ था। मैंने देखा कि कुलेओनलू मुस्तफ़ा नाम का एक युवक मुझसे पाँचों समय की नमाज़ों और स्नान के बारे में कुछ सवाल पूछने आया था। हालाँकि मैं उस समय आगंतुकों को स्वीकार नहीं कर रहा था, जैसे कि किसी पूर्व-भावना के माध्यम से मेरी आत्मा ने उसकी आत्मा की ईमानदारी और रिसाले -ए-नूर के लिए उसके द्वारा की जाने वाली भविष्य की मूल्यवान सेवाओं को महसूस किया हो,

116 मैंने उसे ठुकराया नहीं और उसे स्वीकार कर लिया।117 बाद में यह स्पष्ट हो गया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझे अब्दुर्रहमान के स्थान पर (रिसाले-ए-नूर के भावी छात्रों के लिए) **एक उदाहरण के रूप में मुस्तफा को एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में भेजा था,** जो रिसाले-ए-नूर के काम में एक सच्चे उत्तराधिकारी के कर्तव्य को पूरी तरह से पूरा करेगा, जैसे कि कह रहा हो, "मैंने तुमसे एक अब्दुर्रहमान लिया, लेकिन बदले में मैं तुम्हें उस मुस्तफा जैसे तीस अब्दुर्रहमान दूंगा, जो तुम देख रहे हो, जो छात्र और भतीजे और बेटे जैसे साथी और भाई और धर्म के इस कर्तव्य में आत्म-त्यागी दोस्त होंगे।"

ईश्वर की स्तुति हो, उसने मुझे तीस अब्दुर्रहमान दिए। इसलिए मैंने खुद से कहा, "हे रोते हुए दिल! चूँकि तुमने यह उदाहरण देखा है और इसके ज़रिए उसने तुम्हारे सबसे गंभीर आध्यात्मिक घावों को ठीक किया है, इसलिए तुम्हें यकीन होना चाहिए कि वह तुम्हारे बाकी सभी घावों को भी ठीक कर देगा।"

और इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाई-बहनों, जिन्होंने मेरी तरह ही अपने बुढ़ापे में अपने किसी बच्चे या रिश्तेदार को खो दिया है, जिन्हें बुढ़ापे के बोझ के साथ-साथ बिछड़ने का गहरा दुख भी सहना पड़ता है! आप समझ गए होंगे कि जब मैं इससे कहीं ज़्यादा गंभीर स्थिति में था, तो मैं अपने बुढ़ापे में अपने किसी बच्चे या रिश्तेदार को खो देता हूँ।

आपकी बीमारी को कुरान की एक आयत ने ठीक कर दिया। इसलिए, बुद्धिमान कुरान की पवित्र फार्मेसी में निश्चित रूप से आपके सभी कष्टों को ठीक करने के उपाय मौजूद होंगे। यदि आप विश्वास के माध्यम से इसका सहारा लेते हैं और उन उपायों को लागू करते हैं

---

116 **अपनी उत्कृष्ट कलम से** रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों की सात सौ से अधिक प्रतियां लिपिबद्ध करके , मुस्तफा के छोटे भाई, कुकुक अली, न केवल अब्दुर्रहमान बने, बल्कि उन्होंने कई अन्य अब्दुर्रहमानों को भी प्रशिक्षित किया।

117 उसने सचमुच यह प्रदर्शित किया कि वह न केवल स्वीकार किए जाने के योग्य था, बल्कि भविष्य.

नियमित उपासना के माध्यम से, आपके बुढ़ापे का भारी बोझ और आपके दु:ख बहुत हद तक हल्के हो जायेंगे।

इस शांति को अपेक्षाकृत लंबा लिखने का कारण अब्दुर्रहमान के लिए अधिक प्रार्थनाएँ प्राप्त करना है; इससे आप थकें नहीं। साथ ही, मैं अपने सबसे दर्दनाक और घिनौने घाव को अत्यंत गंभीर और अप्रिय तरीके से दिखाने का प्रयास करता हूँ, ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि बुद्धिमान कुरान का पवित्र मारक कितना असाधारण उपाय और चमकदार प्रकाश है।

तेरहवीं आशा

यहाँ मैं अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण प्रसंग का वर्णन करूँगा। यह थोड़ा लम्बा होना चाहिए, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह उबाऊ नहीं होगा या आपके धैर्य पर भारी नहीं पड़ेगा।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस में कैद से बचाए जाने के बाद, दारुल-हिकमत में धर्म की सेवा ने मुझे दो या तीन साल तक इस्तांबुल में रखा। फिर, बुद्धिमान कुरान के मार्गदर्शन और ग़ौथ अल-आज़म अल-जिलानी की आध्यात्मिक सहायता और प्रभाव और बुढ़ापे की जागृति के माध्यम से, मैं इस्तांबुल के सभ्य जीवन से थक गया और इसके व्यस्त सामाजिक परिदृश्य से परेशान हो गया। अपनी जन्मभूमि की लालसा मुझे वहाँ ले गई। यह सोचकर कि, चूँकि मुझे मरना ही है, मुझे अपनी जन्मभूमि में मरना चाहिए, मैं वान चला गया।[118]

मैं सबसे पहले वैन में अपने मदरसे , होरहोर को देखने गया । मैंने देखा कि अर्मेनियाई लोगों ने रूसी कब्जे के दौरान इसे जला दिया था, वैन की अन्य सभी इमारतों की तरह। यह वैन के प्रसिद्ध किले के बगल में था, जो एक विशाल, पहाड़ जैसा मोनोलिथ है। मेरे सच्चे दोस्त, भाई और मदरसे के करीबी छात्र, जिन्हें मैंने सात या आठ साल पहले छोड़ दिया था, मेरी आँखों के सामने मूर्त हो गए। मेरे उन आत्म-बलिदान करने वाले दोस्तों में से कुछ वास्तव में शहीद हो गए थे, जबकि अन्य उस आपदा के कारण मर गए थे और डिफ़ॉल्ट रूप से शहीद हो गए थे।

मैं खुद को रोने से नहीं रोक पाया। मैं किले की चोटी पर चढ़ गया, जो मदरसे के ऊपर है, जो दो मीनारों की ऊंचाई पर है। मैं वहीं बैठ गया। मैं सात या आठ साल पीछे चला गया। एक शक्तिशाली कल्पना के साथ, मैं अपने मन में उस समय के चारों ओर घूमता रहा। अकेले होने के कारण, मुझे इन कल्पनाओं से विचलित करने या मुझे उस समय से वापस लाने वाला कोई नहीं था। मैंने सात या आठ वर्षों में इतने बदलाव देखे कि एक सदी भर के लिए काफी हैं।

[118] वान तुर्की का एक प्रांत है जो पूर्वी अनातोलिया में स्थित है और पश्चिमी ईरान की सीमा से सटा हुआ है। (ट्र.)

मैंने देखा कि किले के नीचे और मेरे मदरसे के आस-पास के शहर के हिस्से पूरी तरह जलकर नष्ट हो गए थे। यह देखकर मैं बहुत दुखी हुआ; ऐसा लगा जैसे तब से लेकर जब तक मैंने यह सब देखा था, तब तक दो सौ साल बीत गए हों। उन घरों में रहने वाले ज़्यादातर लोग मेरे दोस्त और परिचित थे। उनमें से ज़्यादातर लोग पलायन में मर गए थे, भगवान उन पर रहम करे; वे निर्वासन में बहुत दुखी हो गए थे। अर्मेनियाई क्वार्टर के अलावा, वान के सभी मुस्लिम घर ध्वस्त हो गए थे। मेरे दिल में बहुत तेज़ दर्द हुआ। मैं इतना दुखी था कि अगर मेरी हज़ारों आँखें होतीं, तो वे सब एक साथ रोतीं। मैं निर्वासन से अपने वतन लौट आया था और मुझे लगता था कि मैं निर्वासन से बच गया हूँ। लेकिन अफ़सोस! सबसे दुखद निर्वासन मैंने अपने वतन में झेला।

मैंने देखा कि मेरे सैकड़ों छात्र और मित्र, जिनके साथ मैं आत्मिक रूप से जुड़ा हुआ था, जैसे कि अब्दुर्रहमान, जिसका उल्लेख ऊपर बारहवीं आशा में किया गया है, कब्र में चले गए थे और उनके स्थान खंडहर में बदल गए थे।

एक कहावत थी जो मेरे दिमाग में बहुत दिनों से थी, लेकिन मैं उसे पूरी तरह से समझ नहीं पाया था। अब उस दुखद दृश्य के सामने मैं उसे पूरी तरह से समझ पाया। कहावत यह थी: "अगर दोस्तों से जुदा न हुआ होता, तो मौत हमारी आत्मा तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं खोज पाती।"119 यानी, दोस्तों से जुदा होना ही इंसान की सबसे ज़्यादा मौत का कारण बनता है। उस स्थिति से ज़्यादा दुख या पीड़ा मुझे किसी और चीज़ से नहीं हुई। अगर कुरान और ईमान से मदद न मिलती, तो मेरा दुख और पीड़ा मेरी आत्मा को लगभग उड़ा देती।

प्राचीन काल से ही कवि अपनी कविताओं में उन स्थानों पर समय द्वारा मचाई गई तबाही पर शोक व्यक्त करते रहे हैं, जहां वे अपने प्रियजनों के साथ थे।
अब मैंने इसे अपनी आँखों से सबसे दर्दनाक रूप में देखा। दो सौ साल बाद अपने प्रिय मित्रों के घरों से गुज़रने के दुख के साथ, मेरा दिल और आत्मा मेरी आँखों से जुड़ गए, और वे सभी एक साथ रो पड़े। फिर, एक-एक करके, मेरे प्रिय छात्रों के साथ काम करते हुए लगभग बीस साल तक बिताए गए जीवन के मनभावन दृश्य, जब मेरी आँखों के सामने अब खंडहर में पड़े हुए स्थान समृद्ध, हर्षित और खुश थे, मेरे सामने फिल्मों की तस्वीरों की तरह जीवंत हो गए, फिर मर गए और गायब हो गए। ये मूर्त दृश्य कुछ समय तक मेरी आँखों के सामने से गुजरते रहे।

---

[119] यह कथन अबू तैयब अल-मुतनब्बी (जिनके लिए ग्यारहवीं झलक के अंत में फुटनोट 59 देखें) से लिया गया है: अल-हमावी, हिज़ानात अल-अदब, 1:136. (ट्र.)

फिर मुझे सांसारिक लोगों पर बहुत आश्चर्य हुआ: वे खुद को कैसे धोखा दे सकते हैं? क्योंकि वर्णित दृश्य ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि दुनिया क्षणभंगुर है और मनुष्य इसमें मेहमान हैं। मैंने अपनी आँखों से देखा कि सत्य के लोगों के लगातार दोहराए गए शब्द कितने सत्य हैं: "दुनिया क्रूर, विश्वासघाती, बुरी है; इससे धोखा मत खाओ!" मैंने यह भी देखा कि जिस तरह मनुष्य अपने शरीर और घर से जुड़े होते हैं, उसी तरह वे अपने शहर, अपने देश, बल्कि पूरी दुनिया से भी जुड़े होते हैं। क्योंकि अपने अस्तित्व के बुढ़ापे के दु:ख में सिर्फ़ दो आँखों से रोते हुए, मैं न केवल अपने माता-पिता के बुढ़ापे पर, बल्कि उसकी मृत्यु पर भी दस आँखों से रोना चाहता था। और मुझे अपनी खूबसूरत मातृभूमि की आधी मृत्यु पर सौ आँखों से रोने की ज़रूरत महसूस हुई।

एक हदीस में है कि हर सुबह एक फ़रिश्ता पुकारता है, “तुम मरने के लिए पैदा हुए हो, और नष्ट होने के लिए इमारतें बनाते हो।”120 मैं अब इस सच्चाई को न केवल अपने कानों से सुन रहा था, बल्कि अपनी आँखों से देख भी रहा था।

दस साल बाद जब मैं अपनी उस स्थिति को याद करता हूँ, तो मैं अभी भी उसी तरह रोता हूँ जैसे उस समय रोया था। पुराने गढ़ के नीचे के घर, जो हज़ारों सालों से वहाँ खड़े थे, सभी खंडहर हो चुके थे, शहर आठ साल में आठ सौ साल पुराना हो गया था, और मेरा मदरसा, जो काफ़ी समृद्ध था और दोस्तों के जमावड़े का स्थान था, वैन के किले के विशाल मोनोलिथ के साथ मर गया था, जो उसके शव की आध्यात्मिक भव्यता को दर्शाता था; यह ओटोमन राज्य के सभी मदरसों की मृत्यु का संकेत था ।121 ऐसा लग रहा था जैसे मेरे छात्र, जो आठ साल पहले मेरे साथ मदरसा में थे , मेरे साथ अपनी कब्रों में रो रहे थे। वास्तव में, शहर की खंडहर दीवारें और उसके बिखरे हुए पत्थर मेरे साथ रो रहे थे। मैंने उन्हें रोते देखा।

तब मुझे समझ में आया कि मैं अपनी मातृभूमि में उस निर्वासन को सहन नहीं कर सकता। मैंने सोचा कि मुझे या तो उनके साथ कब्र में जाना होगा, या पहाड़ों की एक गुफा में जाकर अपनी मृत्यु का इंतजार करना होगा। मैंने खुद से कहा, "चूंकि दुनिया में असहनीय, जलती हुई जुदाई है जो धैर्य और प्रतिरोध को तोड़ देती है, इसलिए निश्चित रूप से मृत्यु जीवन से बेहतर है। जीवन का ऐसा गंभीर पहलू सहन नहीं किया जा सकता।"

120 अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, 7:396; अद-दयालामी, अल-मुस्नद, 4:51. (ट्र.)

121 1840 में रिपब्लिकन युग के शुरुआती वर्षों में सभी मेदरेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उन्हें समाप्त कर दिया गया। टर्की. (ट्र.)

फिर मैंने अपनी नज़रें छहों दिशाओं में घुमाईं और देखा कि चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा है। मेरे गहन दु:ख से उत्पन्न सत्य की अनभिज्ञता ने मुझे दुनिया को एक भयावह, शून्य, उजाड़ स्थान के रूप में दिखाया जो मेरे सिर पर गिरने वाला था। मेरी आत्मा अनगिनत शत्रुतापूर्ण आपदाओं के सामने एक सहारे की तलाश कर रही थी, और अनंत काल तक फैली अपनी अंतहीन इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए मदद का स्रोत, और अलगाव, तबाही और मृत्यु के अंतहीन उदाहरणों से उत्पन्न होने वाले दुख और शोक का सामना करने के लिए सांत्वना की प्रतीक्षा कर रही थी। अचानक, चमत्कारिक व्याख्या के कुरान की निम्नलिखित आयत द्वारा व्यक्त वास्तविकता स्वयं प्रकट हुई: जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी में है वह ईश्वर की स्तुति करता है; और वह अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, सर्वज्ञ है। आकाश और पृथ्वी की संप्रभुता उसी की है। वह जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है। उसके पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है (57: 1-2)।

इसने मुझे उस दयनीय, विरह-पीड़ित, भयानक, दुखद कल्पना से बचाया और मेरी आँखें खोल दीं। मैंने देखा कि फलदार वृक्षों के शीर्ष पर लगे फल मुझे मुस्कुराते हुए देख रहे थे। वे कह रहे थे, "हमें भी देखो; केवल खंडहरों को मत देखो!" श्लोकों द्वारा व्यक्त सत्य ने निम्नलिखित विचार मन में लाए:

> एक शहर के रूप में एक पत्र, जो उन लोगों के हाथों से लिखा गया था जो वैन के मैदान के पृष्ठ पर मेहमान थे, और अंततः रूसी आक्रमण नामक एक विनाशकारी बाढ़ में गिर गए और नष्ट हो गए, आपको इस हद तक दुखी क्यों करता है? इसके बजाय, शाश्वत लेखक, हर चीज के सच्चे मालिक और स्वामी पर विचार करें, और देखें कि वैन के इस पृष्ठ पर उनके संदेश उसी शानदार तरीके से लिखे गए हैं जैसे आप देखते थे। आपका रोना क्योंकि ये स्थान उजाड़ खंडहर बन गए हैं, उनके सच्चे मालिक को भूलने की गलती से उत्पन्न होता है, यह न सोचने से कि लोग मेहमान हैं, और उन्हें स्थायी कब्जे में रखने की कल्पना करने से।

उस भूल और उस जलते हुए दृश्य से सत्य का द्वार खुल गया और मेरी आत्मा उसे पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार हो गई। जिस तरह लोहे को आग में डाला जाता है ताकि वह लचीला हो जाए और उसे उपयोगी रूप दिया जा सके, उसी तरह उस दुखद स्थिति और भयानक परिस्थिति ने उस आग के रूप में काम किया जिसने मेरी आत्मा को आकार दिया। उपरोक्त आयतों की सच्चाई के माध्यम से, चमत्कारिक व्याख्या के कुरान ने मेरी आत्मा को विश्वास की सच्चाइयों का विकिरण दिखाया, जिससे वह उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित हुई।

सारी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर को है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के बीसवें पत्र जैसे भागों में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है ,

विश्वास, उक्त श्लोकों द्वारा व्यक्त सत्य ने आत्मा और हृदय को ऐसा सहारा दिया - ऐसा सहारा जो प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास की शक्ति के अनुपात में विकसित किया जा सकता है - कि इसने मुझे उस स्थिति से सौ गुना अधिक भयंकर विपत्तियों का सामना करने की शक्ति प्रदान की जिसका मैंने सामना किया था।

फिर अनुभव हुआ। इसने मुझे याद दिलाया: सब कुछ इस देश के सच्चे मालिक के आदेश के अधीन है, जो तुम्हारा निर्माता है। सभी चीजों की बागडोर उसके हाथों में है। उसके साथ तुम्हारा संबंध ही पर्याप्त है।

जब मैंने अपने रचयिता को पहचाना और उस पर भरोसा किया, तो जो चीज़ें मुझे दुश्मनी लगती थीं, वे सब दुश्मनी नहीं रहीं और जो दुख भरे हालात मुझे रुलाते थे, वे मुझे खुशी देने लगे। जैसा कि हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में पक्के सबूतों के साथ साबित किया है , आख़िरत पर ईमान से निकलने वाली रोशनी मेरी अनगिनत ख्वाहिशों के खिलाफ़ ऐसी मदद का ज़रिया बनी कि वह न सिर्फ़ इस तुच्छ, क्षणभंगुर और संक्षिप्त सांसारिक जीवन में मेरे दोस्तों से लगाव और उनसे जुड़ने के लिए काफ़ी थी, बल्कि स्थायित्व और शाश्वत सुख की दुनिया में मेरी अनगिनत दूरगामी ख्वाहिशों के लिए भी काफ़ी थी। क्योंकि अपनी दया के एक प्रकटन के ज़रिए, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय परमेश्वर हर बसंत में इस धरती पर, जो उसका अस्थायी अतिथिगृह और ब्रह्मांड में एक महल है, उस मौसम की मेज़ पर अपने मेहमानों को एक या दो घंटे के लिए खुश करने के लिए असंख्य रमणीय, कलात्मक उपहार रखता है। फिर वह उन्हें क्षुधावर्धक के रूप में प्रस्तुत करके अपने बन्दों के अनन्त जीवन के लिए आठ अनन्त स्वर्गों को असंख्य प्रकारों से भर देता है। अतः जो लोग ईमान के द्वारा ऐसे दयालु और कृपालु की दया पर भरोसा करते हैं और उसके साथ अपने सम्बन्ध को जानते हैं, उन्हें सहायता का ऐसा स्रोत अवश्य मिलता है, जिसकी थोड़ी सी मात्रा भी असंख्य अभिलाषाओं को अनंत काल तक विस्तारित करने में सहायक होती है, जिससे उनकी सिद्धि संभव हो जाती है।

इसके अलावा, ऊपर वर्णित श्लोकों में व्यक्त सत्य के माध्यम से, विश्वास के विकिरण से निकलने वाला प्रकाश इतना चमकीला दिखाई दिया कि उसने छह अंधेरी दिशाओं को दिन के उजाले की तरह प्रकाशित कर दिया। इसने मेरे छात्रों और दोस्तों की मृत्यु और मेरे मदरसे के विनाश से उत्पन्न मेरे दुःख को दूर कर दिया , और मुझे याद दिलाया, "वह दुनिया जहाँ तुम्हारे दोस्त चले गए हैं, वह अंधेरी नहीं है। उन्होंने केवल स्थान बदल लिया है; तुम उनसे फिर मिलोगे।"

इससे मेरे आंसू रुक गए और मुझे समझ में आ गया कि मुझे ऐसे लोग मिलेंगे जो उनके जैसे होंगे और जो इस दुनिया में उनका स्थान लेंगे।

सारी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर को है, क्योंकि इस्पार्टा के मेदरेस के साथ उन्होंने वान के मृत मेदरेस को जीवित कर दिया , और एक अर्थ में, उन्होंने वहां मेरे मित्रों को भी जीवित कर दिया।

यहाँ के अधिकाधिक और मूल्यवान छात्रों और मित्रों के साथ जीवन के लिए। इस प्रकार मुझे पता चला कि दुनिया शून्य या अर्थहीन नहीं है, और इसे एक बर्बाद बंजर भूमि के रूप में देखना गलत था। बल्कि, सच्चे गुरु की बुद्धि के अनुसार, दुनिया अपने दृश्यों को बदलती है जो लोगों द्वारा बनाए जाते हैं और उनके संदेशों को नवीनीकृत करती है। एक पेड़ के नए फलों की तरह जो काटे गए हैं, उनकी जगह लेते हैं, मानव जाति में मृत्यु और अलगाव वास्तव में नवीनीकरण और ताज़गी है। विश्वास के दृष्टिकोण से, वे एक नवीनीकरण हैं जो दोस्तों की कमी के कारण दर्दनाक दुःख का कारण नहीं बनना चाहिए, बल्कि एक मीठा दुःख है जो किसी अन्य, बेहतर जगह पर फिर से मिलने के लिए बिछड़ने से उत्पन्न होता है।

इन आयतों ने ब्रह्मांड में उन प्राणियों के चेहरे को भी रोशन कर दिया जो पहले की भयावह स्थिति के कारण अंधकारमय दिखाई दे रहे थे। इसलिए, मैं इसके लिए धन्यवाद देना चाहता था, और अरबी में निम्नलिखित पंक्तियाँ मेरे दिमाग में आईं; उन्होंने उसी वास्तविकता का वर्णन किया। मैंने कहा:

> विश्वास के प्रकाश के लिए परमेश्वर की स्तुति हो, जो यह दर्शाता है कि जिन्हें अजनबी, विरोधी, निर्जीव, डरावने और रोते हुए अनाथ समझा जाता था, वे वास्तव में प्यारे लोग, भाई और बहन, जीवित साथी, सार्थक परिणामों के लिए नियोजित, आनन्दित, परमेश्वर की स्तुति करने वाले और उसके नामों के जाप करने वाले हैं।

चूँकि मुझे अपने व्यक्तिगत संसार के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व के सभी प्राणियों को ईश्वर की स्तुति और महिमा में संलग्न मानने का अधिकार है, और उन सभी प्राणियों के साथ, जो अपने स्वभाव की भाषा के माध्यम से व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हैं, इन कर्तव्यों में उनका उपयोग करने के इरादे से, मैं कहता हूँ, "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर को सारी स्तुति और धन्यवाद हो।"

इसके अलावा, जीवन के सच्चे सुख, जो मेरी पिछली लापरवाह और भयावह मनःस्थिति के कारण शून्य हो गए थे, और मेरी आशाएँ जो पूरी तरह से मुरझा गई थीं, और मुझे दिए गए उपहार, जो संकुचित हो गए थे, जैसा कि रिसाले -ए-नूर के कई अन्य भागों में समझाया गया है, ने विश्वास के प्रकाश के माध्यम से मेरे दिल के चारों ओर उस संकीर्ण क्षेत्र को एक बार में इतना विस्तृत कर दिया कि उसमें पूरा ब्रह्मांड समा गया। होरहोर मेदरेस के बगीचे में जो उपहार सूख गए थे और जिनका स्वाद खो गया था, उनके स्थान पर उन्होंने इस दुनिया और परलोक को उपहारों की एक दयालु तालिका बना दिया। विश्वास के प्रकाश ने आंख, कान या हृदय जैसे दस या इतने ही मानव अंगों को नहीं दिखाया, बल्कि सौ अंगों में से प्रत्येक को ऐसी अत्यंत लंबी भुजा के रूप में दिखाया

ताकि ईमानवाले अपनी-अपनी मात्रा के अनुसार उन दोनों मेज़ों के चारों ओर से नेमतें बटोर सकें। इसलिए, इस महान सत्य को व्यक्त करने और इन असीम नेमतों के लिए धन्यवाद देने के लिए, मैंने निम्नलिखित शब्द कहे:

> ईमान की रोशनी की उदारता के लिए मेरे रचयिता को सारी प्रशंसा और धन्यवाद है, क्योंकि यह दुनिया और आखिरत के दो क्षेत्रों को उदारता और दया से भरपूर दिखाती है, जिससे प्रत्येक आस्तिक अपने रचयिता की अनुमति से विकसित होने वाली अपनी असंख्य इंद्रियों के साथ उचित रूप से लाभ उठा सकता है।

चूँकि इस संसार में विश्वास का इतना बड़ा प्रभाव है, इसलिए अनन्त काल के क्षेत्र में इसका निश्चित रूप से ऐसा फल और विकिरण होगा कि इस संसार में मन द्वारा उन्हें समझा या वर्णित नहीं किया जा सकता।

और इसलिए, आप बुज़ुर्ग लोग, जो मेरी तरह बुढ़ापे के कारण कई दोस्तों से जुदा होने का दर्द झेलते हैं! आप में से सबसे बड़ा व्यक्ति मुझसे उम्र में चाहे जितना बड़ा हो, असल में मैं उससे ज़्यादा बड़ा ही हूँ। क्योंकि मेरे स्वभाव में निहित अत्यधिक करुणा के कारण मुझे अपने साथियों पर बहुत दया आती है और उसी करुणा के कारण मैंने अपने अलावा अपने हज़ारों भाइयों के दर्द को भी झेला है, मुझे लगता है जैसे मैं सैकड़ों साल जी चुका हूँ। इसके अलावा, चाहे आपने जुदाई की विपत्ति को कितना भी झेला हो, आप उस विपत्ति से उस हद तक प्रभावित नहीं हो सकते हैं, जितना कि मैंने झेला है। क्योंकि मेरा कोई बच्चा नहीं है कि मैं सिर्फ़ उसके बारे में सोचूँ। दया और करुणा की मेरी गहरी जन्मजात भावना मुझे हज़ारों बच्चों और यहाँ तक कि मासूम जानवरों के दुखों के सामने दर्द और सहानुभूति महसूस कराती है। न ही मेरा अपना कोई घर है कि मैं सिर्फ़ उसकी देखभाल करूँ। बल्कि, एक मुसलमान होने के नाते, मैं इस देश और, वास्तव में, पूरे मुस्लिम जगत से इस तरह जुड़ा हुआ हूँ, जैसे कि हर कोई मेरा अपना घर हो। मुझे इन दो महान घरों में अपने साथी मुसलमानों की पीड़ा देखकर बहुत दुख हो रहा है, और मैं उनसे अलग होने पर दुखी हूं।

और इसलिए, बुढ़ापे से होने वाले मेरे इन सभी दुखों और जुदाई की विपत्ति के सामने, ईमान की रोशनी मेरे लिए काफी थी; इसने मुझे कभी न बुझने वाली उम्मीद, रोशनी और अंतहीन सांत्वना दी। इसलिए, बुढ़ापे से होने वाले अंधकार, असावधानी, दुख और पीड़ा के सामने यह तुम्हारे लिए निश्चित रूप से काफी से भी अधिक होगी। वास्तव में, बुढ़ापा जो पूरी तरह से अंधकारमय और प्रकाश और सांत्वना से रहित है, और सबसे दर्दनाक और भयानक जुदाई है, वह गुमराह लोगों और भटके हुए लोगों का बुढ़ापा और जुदाई है।

उस विश्वास का अनुभव करने के लिए जो ऐसी आशा, प्रकाश और सांत्वना देता है, और

इसके प्रभावों को समझने के लिए, हमें सचेत रूप से पूजा करने की भावना रखनी चाहिए जो बुढ़ापे के योग्य है और इस्लाम के लिए उपयुक्त है। हम युवाओं की नकल करने, अपने सिर को लापरवाही में डुबोने और बुढ़ापे को भूलने की कोशिश करके इसका अनुभव नहीं कर सकते।

हदीस पर गौर करें , जिसका अर्थ है, "तुम्हारे बीच सबसे अच्छे युवा वे हैं जो देखभाल और बुराइयों से बचने में बुज़ुर्गों के समान हैं, जबकि तुम्हारे बुज़ुर्गों में सबसे बुरे वे हैं जो बुराइयों और असावधानियों में युवाओं की नकल करते हैं।"122

मेरे बुज़ुर्ग भाइयों और बहनों! एक और हदीस है जिसमें कहा गया है, "ईश्वरीय दया साठ या सत्तर साल के बुज़ुर्ग मोमिन द्वारा ईश्वरीय दरबार में की गई प्रार्थनाओं को अनुत्तरित छोड़ने में शर्मिंदा है।"123 चूँकि ईश्वरीय दया आपको इस तरह का सम्मान देती है, इसलिए उसकी पूजा करके इस सम्मान के प्रति सम्मान रखें!

चौदहवीं आशा

चौथी किरण, कुरान के इस चमकदार कथन, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है (3: 173) की व्याख्या करते हुए, आरंभ में, संक्षेप में कहती है:

सांसारिक लोगों ने मुझे हर चीज़ से अलग कर दिया था, इसलिए मैं पाँच तरह के अलगाव से पीड़ित था। रिसाले-ए-नूर की सांत्वना और सहायता देने वाली रोशनी की ओर न देखते हुए, संकट से उत्पन्न असावधानी के कारण, मैंने अपने हृदय और आत्मा की ओर रुख किया। मैंने देखा कि एक असीम नपुंसकता और असीम ज़रूरत के साथ-साथ, एक अत्यंत शक्तिशाली स्थायित्व का प्रेम, अस्तित्व के प्रति एक गहन लगाव और जीवन के लिए एक महान तड़प मुझ पर हावी हो रही थी। लेकिन एक भयानक नश्वरता उस स्थायित्व को बुझा रही थी। उस मनोदशा में, मैंने उस कवि की तरह कहा जो अलगाव से पीड़ित है:

जबकि मेरा हृदय स्थायित्व चाहता था, सत्य परमेश्वर ने मेरे शरीर की नश्वरता
का न्याय किया;
मैं एक असाध्य बीमारी से पीड़ित हूँ; यह कितने अफ़सोस की बात है कि लुकमान
को इसका पता नहीं है!

मैंने निराशा में अपना सिर झुका लिया। अचानक आयत, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा रक्षक है! (3: 173), मेरी सहायता के लिए आई, और मुझे इसे ध्यान से पढ़ने के लिए कहा। इसलिए मैंने इसे हर दिन पाँच सौ बार पढ़ा। इसे पढ़ते समय, इसके असंख्य अमूल्य प्रकाशों में से, ईश्वर की पर्याप्तता के नौ पहलू सामने आए-

122 अत-तबरानी, अल-मुअज़म अल-कबीर, 22:83; अबू याला, अल-मुस्नद, 13:467. (ट्र.)

123 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, 5:270। (ट्र.)

मेरे सामने न केवल "ज्ञान से आने वाली निश्चितता" के स्तर पर बल्कि "अवलोकनसे आने वाली निश्चितता" के स्तर पर भी सीवाई124 का खुलासा हुआ।

परमेश्वर की पर्याप्तता का पहला प्रकाशमान पहलू

स्थायित्व के प्रति मेरा सहज प्रेम, जो अनिवार्य रूप से मेरे अस्तित्व में उस पूर्ण और महिमावान के नाम की अभिव्यक्ति से उत्पन्न होता है, जिसे उसकी पूर्ण पूर्णता के कारण स्वाभाविक रूप से प्यार किया जाता है, और जिसे इसलिए उस पूर्णतया पूर्ण के सार, पूर्णता और स्थायित्व की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए था, असावधानी के कारण अपना मार्ग खो चुका था और छाया से जुड़ गया था। यह सांसारिक जीवन की स्थायित्व की तलाश कर रहा था, जो कि मूलतः शाश्वत का एक क्षणभंगुर दर्पण से अधिक कुछ नहीं है। फिर कुरान का कथन, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, आया और पर्दा उठा दिया। मैंने "पूर्ण निश्चय" की डिग्री के साथ देखा और महसूस किया और अनुभव किया कि मेरे स्थायित्व का सच्चा आनंद और खुशी सटीक रूप से और अधिक पूर्ण रूप में पूर्णता के शाश्वत एक के स्थायित्व में और यह विश्वास करने और पुष्टि करने में निहित है कि वह मेरा भगवान और देवता है। इसके प्रमाणों को चौथी किरण (जो किरणों में सम्मिलित है) में, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, श्लोक पर आधारित ग्रंथ में , लगातार बारह अनुच्छेदों में, बहुत ही सुन्दर, गहन तरीके से समझाया गया है।

परमेश्ँवर की पर्याप्तता का दूसरा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब बुढ़ापा, निर्वासन, एकांत और एकांत मेरी प्रकृति में अंतहीन नपुंसकता में शामिल हो गए थे, जब "सांसारिक" अपनी योजनाओं और जासूसों के साथ मुझ पर हमला कर रहे थे, मैंने अपने दिल से कहा, "सेनाएँ एक ऐसे व्यक्ति पर हमला कर रही हैं जिसके हाथ बंधे हुए हैं, और जो बीमार और कमज़ोर है। क्या मेरे लिए कोई सहारा नहीं है?" मैंने इस आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा रक्षक है, और इसने मुझे निम्नलिखित बातों की जानकारी दी:

विश्वास के दस्तावेज़ के ज़रिए आप एक ऐसे परम शक्ति के शासक से जुड़ जाते हैं जो हर वसंत में धरती पर पौधों और जानवरों की सभी सेनाओं को सही क्रम में सुसज्जित करता है, जो सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग राष्ट्रों से बनी है। इसके अलावा, सर्व-दयालु के रूप में, वह सभी जानवरों और मनुष्यों के पोषण को सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों के अर्क के रूप में छोटे-छोटे सुरक्षात्मक बक्सों में रखता है, जिन्हें हम बीज और अनाज कहते हैं और जिनकी तुलना मांस, चीनी और अन्य खाद्य अर्क से की जा सकती है।

---

124 यहाँ परमेश्वर की पर्याप्तता के छः पहलुओं का उल्लेख किया गया है। (ट्र.)

हाल ही में, लेकिन उनसे सौ गुना अधिक परिपूर्ण। उन्होंने उन अंशों में उनके विकास और खाद्य पदार्थों में विकास के बारे में दिव्य नियति के निर्देश शामिल किए हैं। उन छोटे डिब्बों का निर्माण और भोजन की विस्तृत तालिकाओं में उनका विकास काफ़-नून के कारखाने में इतनी तेज़ी, आसानी और प्रचुरता के साथ होता है, जो "कुन!" का आदेश देता है ।

[हो!],” कुरान में कहा गया है कि निर्माता केवल आदेश देता है और वह अस्तित्व में आ जाता है।125 चूँकि आपके पास विश्वास के दस्तावेज़ द्वारा सक्षम उसके साथ संबंध के माध्यम से ऐसा समर्थन है, इसलिए आप एक अनंत शक्ति और ताकत पर भरोसा कर सकते हैं। जैसा कि मैंने इस आयत से यह सबक सीखा, मुझे ऐसी नैतिक ताकत मिली कि मुझे लगा कि मेरे पास न केवल अपने वर्तमान दुश्मनों, बल्कि पूरी दुनिया को चुनौती देने के लिए विश्वास की पर्याप्त शक्ति है। अपनी पूरी आत्मा के साथ मैंने घोषणा की, "भगवान हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है!"

परमेश्वर की पर्याप्तता का तीसरा प्रकाशमान पहलू

उन निर्वासनों और बीमारियों के उत्पीड़न को सहने के बाद जब मैंने पाया कि संसार से मेरा लगाव टूट गया है, तो मुझे विश्वास हुआ कि मैं एक शाश्वत दुनिया, एक शाश्वत क्षेत्र में निरंतर सुख के लिए नियत था। तब मैंने अफसोस के साथ आहें भरना छोड़ दिया, जिससे केवल और अधिक दुख और तड़प पैदा हुई, और मैं खुश और प्रसन्न हो गया। हालाँकि, आत्मा का यह आदर्श या लक्ष्य और मानव प्रकृति का अंतिम परिणाम केवल एक परम सर्वशक्तिमान की अनंत शक्ति के माध्यम से ही साकार हो सकता है, जो अपने सभी प्राणियों के क्रिया और विश्राम और आचरण और स्थितियों को वचन और कर्म में जानता और दर्ज करता है, और मनुष्यों पर असीम अनुग्रह और महत्व प्रदान करता है, जिन्हें वह अपना मित्र और संबोधित करता है, और जिन्हें उसने सभी प्राणियों की तुलना में उनकी पूर्ण नपुंसकता के बावजूद श्रेष्ठ दर्जा दिया है। इन दो बिंदुओं पर विचार करते हुए - अर्थात्, ऐसी शक्ति की गतिविधि और वास्तव में नपुंसक और तुच्छ मनुष्यों का महत्व - मैंने एक स्पष्टीकरण की तलाश की जो विश्वास को गहरा करे और दिल को संतुष्ट करे। पुनः मैंने इस श्लोक का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है, और इसने मुझे प्रत्यय "-ना" (" हमारे लिए") पर ध्यान देने और उन प्राणियों के प्रति चौकस रहने को कहा जो मेरे साथ मौखिक रूप से या अपने स्वभाव की वाणी के माध्यम से कह रहे हैं, "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है।"

---

१२५ लेखक इस श्लोक का उल्लेख करता है, जब परमेश्वर किसी चीज़ को होना चाहता है, तो वह बस उससे कहता है, “हो जा!” और वह हो जाती है (36:82) (ट्र.)

मैंने तुरन्त देखा कि असंख्य पक्षी और मक्खियाँ (जो कि छोटे पक्षी हैं) तथा असंख्य पशु, पौधे और वृक्ष, मेरी तरह, अपने स्वभाव की भाषा में यह कह रहे थे कि, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम रक्षक है! वे सभी को यह तथ्य याद दिलाते हैं कि, उनके पास ऐसा रक्षक है जो उनके जीवन की सभी आवश्यक आवश्यकताओं की गारंटी देता है, जिसे हमारी आँखों के सामने और विशेष रूप से वसंत ऋतु में, उसकी विशाल और सर्व-महान शक्ति अत्यधिक प्रचुरता से, बड़ी सहजता से, विशाल पैमाने पर, महानतम कला के साथ, संतुलित और सुव्यवस्थित ढंग से, तथा एक दूसरे से भिन्न रूपों में, बिना किसी दोष, दोष या भ्रम के, अण्डों, तरल पदार्थों की बूंदों, अनाजों और बीजों से, जो एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं और जिनके घटक तत्त्व एक जैसे हैं, पक्षियों की एक लाख प्रजातियाँ, लाखों पशु, लाखों प्रकार के पौधे और लाखों प्रकार के वृक्ष उत्पन्न करते हैं।

इन सभी प्राणियों में अनंत अंतर के बावजूद समानता और समानता हमें उनकी एकता और एकत्व का प्रदर्शन करती है, और हमें बताती है कि उनके प्रभुत्व और रचनात्मकता के उन कार्यों में कोई हस्तक्षेप या भागीदारी नहीं हो सकती। जो लोग एक आस्तिक व्यक्ति के रूप में मेरी व्यक्तिगत पहचान और मानव स्वभाव को समझना चाहते हैं, जो सभी आस्तिक लोगों की तरह है, उन्हें पहले व्यक्ति बहुवचन में शामिल 'मैं' के अर्थ को देखना चाहिए 'हम' ईश्वर में हमारे लिए पर्याप्त है। मेरा स्पष्ट रूप से तुच्छ, जरूरतमंद अस्तित्व या किसी भी आस्तिक का क्या है? जीवन क्या है? मानवता क्या है? इस्लाम क्या है?

निश्चित, सत्यापित विश्वास क्या है? ईश्वर का ज्ञान क्या है? प्रेम कैसा होना चाहिए? वे इन सभी सवालों के जवाब पा सकते हैं।

परमेश्वर की पर्याप्तता का चौथा प्रकाशमान पहलू

एक बार, जब मैं बुढ़ापे, निर्वासन, बीमारी और हार जैसी परिस्थितियों से अभिभूत महसूस कर रहा था, तो मैं अपने अस्तित्व के बारे में बहुत चिंतित था, जिससे मैं बहुत जुड़ा हुआ था और जिसके साथ मैं मोहित था। मैं चिंतित था कि मेरा अस्तित्व, साथ ही साथ अन्य सभी प्राणी, मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे, अस्तित्व से वंचित हो रहे थे। इसलिए, एक बार फिर, मैंने श्लोक का सहारा लिया। इसने मुझसे कहा, "मेरे अर्थ पर ध्यान दो; इसे विश्वास की दूरबीन से देखो!"

अतः मैंने विश्वास की दृष्टि से देखा और पाया कि अन्य सभी विश्वासियों की तरह, मेरा छोटा अस्तित्व भी एक असीमित अस्तित्व का दर्पण था, और अनंत विस्तार के माध्यम से असंख्य अस्तित्वों को प्राप्त करने का साधन था, तथा असंख्य स्थायी अस्तित्वों के फल देने वाला ज्ञान का वचन था।

खुद से ज़्यादा मूल्यवान। इसलिए, मैं ज्ञान की निश्चितता के साथ जानता था कि उस अस्तित्व के साथ जुड़ना, चाहे एक पल के लिए ही क्यों न हो, शाश्वत अस्तित्व जितना ही मूल्यवान है। क्योंकि मैंने विश्वास की चेतना के माध्यम से समझा कि मेरा अस्तित्व कला का एक काम है और अनिवार्य रूप से विद्यमान अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। इसलिए, अकेलेपन की अनिवार्य रूप से निराधार चिंताओं और असंख्य अलगावों और उनके दर्द से बचकर, मैंने उन प्राणियों के साथ भाईचारे के संबंध और बंधन बनाए जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, प्राणियों और विशेष रूप से जीवित प्राणियों के लिए जिम्मेदार दिव्य कृत्यों और नामों की संख्या तक, और मैं जानता था कि एक अस्थायी अलगाव के बाद उन सभी के साथ एक स्थायी मिलन था। और इसलिए, विश्वास के माध्यम से और निर्माता और उसके सभी प्राणियों के साथ विश्वास के माध्यम से संबंध बनाने के माध्यम से, सभी विश्वासियों की तरह, मेरे अस्तित्व ने अलगाव से अछूते असंख्य अस्तित्वों की रोशनी प्राप्त की। जब मेरा अस्तित्व चला जाता है, तब भी जब वे पीछे रह जाते हैं, तो यह उतना ही खुश होता है जितना कि यह भी रह गया था।

संक्षेप में, मृत्यु अलगाव नहीं है, यह मिलन है; यह स्थान परिवर्तन है; यह शाश्वत फल उत्पन्न करने वाली है।

परमेश्वर की पर्याप्तता का पाँचवाँ प्रकाशमान पहलू

एक बार फिर, मेरी ज़िंदगी बहुत ही कठोर परिस्थितियों से हिल गई और मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैंने देखा कि मेरी ज़िंदगी तेज़ी से गुज़र रही थी, आख़िरत के करीब पहुँच रही थी; यह कठोर परिस्थितियों में बुझने लगी थी। मैंने दुखी होकर सोचा कि, जैसा कि रिसाले-ए- नूर[126] में बताया गया है कि ईश्वरीय नाम, सर्व-जीवित , अपने महत्वपूर्ण कार्यों और महान गुणों और लाभों के साथ, जीवन इतनी तेज़ी से बुझने के लायक नहीं था, बल्कि इसे लंबे समय तक टिके रहना चाहिए। मैंने फिर से अपने शिक्षक, इस आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना बढ़िया संरक्षक है!

इस बार उसने मुझसे कहा, "जीवन को उस सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के दृष्टिकोण से देखो, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, जो तुम्हें जीवन देता है!"

मैंने ऐसा किया और देखा कि अगर मेरा जीवन एक पहलू में मेरी ओर देखता है, तो यह सौ पहलुओं में सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर की ओर देखता है। और अगर, इसके परिणामों में से एक ने मेरी ओर देखा, तो एक हजार मेरे निर्माता की ओर देखते हैं। इसलिए, ईश्वर की कृपा और स्वीकृति की सीमा के भीतर इसके टिकने का एक क्षण पर्याप्त है; लंबे समय की आवश्यकता नहीं है। इस सत्य को इस पुस्तक में तीसवीं झलक में पाँच संकेतों और चार मामलों में समझाया गया है। जो लोग मरे नहीं हैं या जो जीवित रहना चाहते हैं, उन्हें ईश्वर की तलाश करनी चाहिए।

[126] इस पुस्तक में तीसवीं झलक के पांचवें भाग में इसकी चर्चा की गई है। (ट्र.)

जीवन की प्रकृति और वास्तविकता तथा इन संकेतों और मामलों में इसके सच्चे अधिकारों को जानने के लिए, वे उन्हें पा लेंगे और जीवन में उठ खड़े होंगे!

सारांश इस प्रकार है: जितना अधिक जीवन को समझा जाता है, जिससे वह सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर की ओर देखने लगता है, और जितना अधिक विश्वास जीवन और जीवन की आत्मा बन जाता है, उतना ही वह शाश्वत हो जाता है और स्थायी फल देता है।

यह इतना ऊंचा हो जाता है कि इसमें अनंत काल की अभिव्यक्ति हो जाती है। अब यह विचारणीय नहीं रह जाता कि जीवन छोटा है या लंबा।

परमेश्वर की पर्याप्तता का छठा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब बुढ़ापा मुझे दुनिया से मेरे व्यक्तिगत प्रस्थान की याद दिला रहा था, समय के अंत की घटनाओं के बीच, जो दुनिया के समग्र विनाश का संकेत देती हैं - सामान्य बिछड़ने का समय, सुंदरता के प्रति मेरा सहज प्रेम और पूर्णता के प्रति लगाव असाधारण रूप से संवेदनशील तरीके से विकसित हो रहा था। असाधारण जागरूकता और दु:ख के साथ मैंने देखा कि क्षणभंगुरता और गिरावट, जो हमेशा विनाशकारी होती है, और मृत्यु, जो अलगाव का निरंतर कारण है, इस सुंदर दुनिया और इन प्यारे जीवों को भयानक तरीके से पीट रही थी और उनकी सुंदरता को नष्ट कर रही थी।

जब सृष्टि के प्रति मेरा सहज प्रेम उबल पड़ा और इस स्थिति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, तो एक बार फिर मैंने सांत्वना पाने के लिए इस श्लोक का सहारा लिया: ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम संरक्षक है! यह श्लोक मुझसे कहता है, "मुझे सुनाओ और मेरे अर्थ पर ध्यान से विचार करो!"

अतः **मैंने** सूरत अन-नूर की आयत 35 की वेधशाला में प्रवेश किया , ईश्वर आकाशों और धरती का प्रकाश है (आयत के अंत तक), और ईमान की दूरबीन से आयत के सबसे दूर के स्तरों को देखा, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम रक्षक है! और ईमान की अंतर्दृष्टि की सूक्ष्मदर्शी से इसके सबसे सूक्ष्म अर्थों को देखा। मैंने निम्नलिखित देखा:

दर्पण, कांच के टुकड़े, पारदर्शी चीजें और यहां तक कि बुलबुले भी सूर्य के प्रकाश की विभिन्न छिपी हुई सुंदरता और उसके प्रकाश में सात रंगों को प्रकट करते हैं; और उनके लुप्त होने, नवीनीकरण और नए रंगों और विभिन्न क्षमताओं और अपवर्तन के साथ प्रतिस्थापन के माध्यम से, वे इन सुंदरताओं के नवीनीकरण और पुनः प्रकटीकरण का कारण बनते हैं। उसी तरह, सर्व-कृपालु, सुंदर महामहिम, शाश्वत सूर्य की पवित्र सुंदरता और उनके सर्व-सुंदर नामों की स्थायी सुंदरता के लिए दर्पण के रूप में कार्य करने के लिए, और उनकी अभिव्यक्तियों के निरंतर नवीनीकरण का कारण बनने के लिए, ये सुंदर प्राणी, ये प्यारे प्राणी निरंतर प्रवाह में आते और जाते हैं। जैसा कि रिसाले-ए-नूर में शक्तिशाली सबूतों के साथ विस्तार से समझाया गया है, वे प्रदर्शित करते हैं कि सुंदरता-

उनके द्वारा प्रकट किए गए संबंध उनकी अपनी संपत्ति नहीं हैं, बल्कि एक शाश्वत, पारलौकिक, पवित्र सौंदर्य के संकेत, संकेत, झलकियाँ और अभिव्यक्तियाँ हैं जो प्रकट होना चाहती हैं। स्वस्थ मन और हृदय वाला कोई भी व्यक्ति जो उन्हें पढ़ता है, वह समझ जाएगा और पुष्टि करेगा कि उनका अस्तित्व, साथ ही साथ हर चीज का अस्तित्व, एक चमत्कार है, और वे इसे विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पंद्रहवीं आशा

127 जब मैं एक बार एमिरदाग में जबरन निवास कर रहा था,

एकांत कारावास में रहने के बाद, मैं असहनीय निगरानी और दबाव के कारण मुझे दी गई यातनाओं के कारण जीवन से ऊब गया था। मुझे जेल से रिहा होने का अफसोस था और मैं अपनी पूरी आत्मा से डेनिज़ली जेल के लिए तरस रहा था, यहाँ तक कि कब्र में जाने की भी इच्छा थी। लेकिन, जब मैं सोच रहा था कि इस तरह के जीवन से जेल या कब्र बेहतर है, तब ईश्वरीय कृपा मेरी सहायता के लिए आई और मुझे मेद्रेसेतुज़-ज़ेहरा के शिष्य प्रदान किए।

, जिनके कलम

ऐसे थे जैसे नकल करने वाली मशीनें अभी-अभी ईजाद हुई हों। रिसाले-ए-नूर के मूल्यवान संग्रहों में से प्रत्येक की एक साथ पाँच सौ प्रतियाँ छपीं; एक कलम पाँच सौ हो गई थी। इस तथ्य ने कि इस काम ने व्यापक पैमाने पर नए दिलों को जीता, मुझे उस कष्टदायक जीवन से प्यार हो गया, जिससे मैं अंतहीन आभार व्यक्त करने लगा।

कुछ समय बाद, रिसाले-ए-नूर के छिपे हुए दुश्मन इसकी जीत को बर्दाश्त नहीं कर पाए और उन्होंने सरकार को हमारे खिलाफ भड़का दिया। फिर से मेरे लिए जीवन कठिन होने लगा। फिर अचानक, ईश्वरीय कृपा प्रकट हुई: मामले से जुड़े अधिकारियों ने, जिन्हें वास्तव में रिसाले-ए-नूर की सबसे अधिक आवश्यकता थी, अपने कर्तव्यों के संबंध में इसकी जब्त की गई प्रतियों का बड़ी उत्सुकता और सावधानी से अध्ययन किया और उनके दिल इसके प्रति अनुकूल हो गए। जब उन्होंने इस काम की आलोचना करने के बजाय इसकी सराहना करना शुरू किया, तो रिसाले-ए-नूर के अध्ययन का दायरा बहुत बढ़ गया। इसने हमारे भौतिक नुकसानों की तुलना में सौ गुना अधिक आध्यात्मिक लाभ दिया, जिससे हमारी चिंता और परेशानी बिल्कुल कम हो गई।

फिर, गुप्त, पाखंडी दुश्मनों ने सरकार का ध्यान मेरी ओर आकर्षित किया। उन्होंने मेरे पुराने या पूर्व सैद के दिनों के दौरान मेरी राजनीतिक गतिविधियों का वर्णन किया। उन्होंने न्याय विभाग, और शिक्षा अधिकारियों, और पुलिस, और आंतरिक मामलों के मंत्रालय दोनों को मुझ पर संदेह करने के लिए प्रेरित किया। कुछ राजनीतिक रुझानों और कुछ कम्युनिस्टों के उकसावे के कारण, जो वास्तव में अराजकतावादी थे, संदेह और भी बढ़ गया

[127] एमिरदाग तुर्की के पश्चिम में स्थित अफ्योन प्रांत का एक जिला है। (ट्र.)

व्यापक रूप से फैला। उन्होंने हम पर दबाव डालना शुरू कर दिया और हमें गिरफ्तार कर लिया, और रिसाले-ए-नूर के उन हिस्सों को जब्त कर लिया जो उनके हाथ में आ गए। रिसाले-ए-नूर के छात्रों की गतिविधियाँ रुक गईं। लोगों की नज़रों में मुझे बदनाम करने के ख़याल से, कई अधिकारियों ने इतने बेतुके झूठे आरोप लगाए कि कोई भी उन पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं कर सकता था। उन्होंने सबसे अविश्वसनीय बदनामी फैलाने की कोशिश की, लेकिन वे किसी को भी उस पर विश्वास नहीं दिला सके।

फिर किसी बहुत ही मामूली बहाने से उन्होंने मुझे सर्दियों के बेहद ठंडे दिनों में गिरफ़्तार कर लिया और जेल में एकांत कारावास में रखा, एक बड़ी और बेहद ठंडी कोठरी में, जिसमें किसी भी तरह की हीटिंग नहीं थी। जब मैं अपने छोटे से कमरे में था, तो मैं दिन में कई बार अपना चूल्हा जलाने का आदी था, और अपनी कमज़ोरी और बीमारी की वजह से हमेशा अंगीठी में जलते कोयले रखता था। इसके बावजूद, मैं अपनी कमज़ोरी और बीमारी की वजह से बहुत मुश्किल से ठंड सहन कर पा रहा था। कोठरी में संघर्ष करते हुए, ठंड की वजह से होने वाले बुखार और भयंकर परेशानी और गुस्से से पीड़ित होते हुए, ईश्वरीय कृपा से मेरे दिल में एक सच्चाई उभरी। मेरी आत्मा में निम्नलिखित बातें घटित हुईं:

आपने जेल को "मदरसे-ए यूसुफिया" - पैगंबर जोसेफ का स्कूल कहा। और जब आप डेनिसली जेल में थे, तो आपके संकट से हज़ार गुना ज़्यादा परिस्थितियों ने ऐसी आध्यात्मिक फ़ायदा पहुँचाया कि दूसरे कैदियों को रिसाले -ए-नूर से फ़ायदा हुआ और इसकी फ़ायदे बड़े पैमाने पर हुए; इस वजह से आपने शिकायत करने के बजाय हज़ारों शुक्रिया अदा किए। उन्होंने आपकी कैद और सख़्ती के हर घंटे को इबादत के दस घंटों के बराबर बना दिया और वो क्षणभंगुर घंटे हमेशा के लिए बन गए। अगर अल्लाह की मर्ज़ी से आपके तीसरे स्कूल ऑफ़ जोसेफ़ में सज़ा भुगतने वाले लोग रिसाले -ए-नूर से फ़ायदा उठाएँगे और उसमें तसल्ली पाएँगे, तो आपकी इस सर्द, सख्त तकलीफ़ को गर्म कर देगा और इसे खुशी में बदल देगा। अगर वे लोग जिनसे आप नाराज़ हैं, धोखा खा गए हैं, तो वे अनजाने में आपके साथ बुरा व्यवहार कर रहे हैं। इसलिए, वे नाराज़ होने के लायक नहीं हैं। लेकिन अगर वे तुम्हें जानबूझ कर, द्वेष के कारण और गुमराही के कारण पीड़ा पहुँचा रहे हैं, तो वे जल्द ही मौत की अनंत सजा के माध्यम से कब्र के एकांत कारावास में प्रवेश करेंगे, जहाँ उन्हें निरंतर यातनाएँ सहनी पड़ेंगी। उनके उत्पीड़न के कारण, आप पुण्य और आध्यात्मिक सुख दोनों कमा रहे हैं और अपने क्षणभंगुर घंटों को शाश्वत बना रहे हैं और ईमानदारी के साथ विद्धत्तापूर्ण और धार्मिक कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं।

मैंने पूरी ताकत से कहा, “सारी स्तुति और धन्यवाद परमेश्वर को हो!”
एक इंसान होने के नाते, मुझे उन अत्याचारियों पर दया आई और मैंने प्रार्थना की, "हे मेरे प्रभु, उन्हें सुधारो!" जैसा कि मैंने आंतरिक मामलों के मंत्रालय को दिए गए अपने बयान में लिखा था, इस नई घटना के लिए जिम्मेदार लोग, जो कम से कम एक साल में पूरी तरह से गैरकानूनी था, को सजा मिलनी चाहिए।

दस मामलों में, वे खुद ही दोषी थे। उन अत्याचारियों ने मानवीय कानून की दृष्टि में भी गैरकानूनी काम किया था। सबसे अविश्वसनीय पूर्व-पाठों के माध्यम से उन्होंने ऐसी बदनामी और मनगढ़ंत बातें गढ़ी थीं कि उन्हें सुनने वाले हंस पड़े और सत्य के प्रेमी रो पड़े, जिससे निष्पक्ष लोगों को पता चल गया कि वे रिसाले -ए-नूर या उसके छात्रों पर कानून या न्याय के अनुसार हमला करने का कोई तरीका खोजने में पूरी तरह से असमर्थ थे, और इसलिए वे पागलपन की ओर चले गए थे।

उदाहरण के लिए, जिन अधिकारियों ने एक महीने तक हम पर जासूसी की थी, उन्हें हम पर आरोप लगाने के लिए कुछ नहीं मिला, इसलिए उन्होंने एक नोट लिखा, जिसमें लिखा था, "सैद के नौकर ने एक दुकान से राकी खरीदी और उसे उसके पास ले गया।" नोट पर हस्ताक्षर करने के लिए कोई नहीं मिलने पर, उन्होंने आखिरकार एक शराबी, असभ्य आदमी को उठाया और उसे उस पर हस्ताक्षर करने के लिए धमकाया। यहाँ तक कि उसने भी कहा, "भगवान हमें माफ करें! इस सबसे अविश्वसनीय झूठ पर कौन हस्ताक्षर करेगा?" इसलिए उन्हें इसे फाड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दूसरा उदाहरण: एक व्यक्ति जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था और अब भी नहीं जानता, उसने मुझे अपना घोड़ा उधार दिया ताकि मैं देश में भ्रमण कर सकूं।
अपनी बीमारी के कारण और हवा लेने के लिए मैं गर्मियों में ज़्यादातर दिन दो-चार घंटे बाहर निकल जाता था। अपने नियम का पालन करते हुए और किसी के प्रति ऋणी महसूस न करने के लिए मैंने घोड़े और गाड़ी (जो उसके साथ आई थी) के मालिक को पचास लीरा की किताबें देने का वादा किया था। क्या ऐसी चीज़ में कोई ख़तरा है?

लेकिन जैसे कि यह कोई महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना या सार्वजनिक सुरक्षा को प्रभावित करने वाली घटना थी, राज्यपाल, दरबारी अधिकारियों और पुलिस ने हमसे लगभग पचास बार पूछा कि घोड़ा किसका है। इस निरर्थक पूछताछ को समाप्त करने के लिए, मानवीय कोमलता के कारण, एक व्यक्ति ने कहा कि घोड़ा उसका है और दूसरे ने कहा कि गाड़ी उसकी है। वे दोनों मेरे साथ गिरफ्तार कर लिए गए। हमें इस तरह के कई बचकाने खेल देखने को मिले और कभी हम हंसे तो कभी रोए। हम समझ गए कि रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों पर हमला करने वाले लोग सिर्फ़ मूर्ख ही थे।

इन घटनाओं में से एक अजीबोगरीब बातचीत इस प्रकार है: मेरी गिरफ़्तारी को अधिकृत करने वाले कागज़ पर यह दर्ज था कि यह "सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने" के लिए था। दस्तावेज़ देखे बिना ही मैंने सरकारी वकील से कहा, "मैंने कल रात आपकी पीठ पीछे बात की। मैंने पुलिस अधिकारी से कहा जो पुलिस प्रमुख की ओर से मुझसे पूछताछ कर रहा था, 'अगर मैंने इस देश की सार्वजनिक सुरक्षा के लिए एक हज़ार सरकारी अभियोजकों और एक हज़ार पुलिस प्रमुखों के बराबर सेवा नहीं की है - मैंने इसे तीन बार दोहराया - भगवान मुझे धिक्कारें!'"

फिर उस समय, उन ठंडी परिस्थितियों में, मैं उन लोगों के प्रति क्रोध और झुंझलाहट से लगभग अभिभूत हो गया था जिनकी घृणा और बुरे इरादों ने मुझे वहां भेजा था।

इस असहनीय निर्वासन, एकांत, गिरफ्तारी और उत्पीड़न में उस समय जब मुझे आराम की सबसे अधिक आवश्यकता थी, सर्दी से बचने की और दुनिया के बारे में चिंतित होने की। ईश्वरीय कृपा मेरी सहायता के लिए आई, और मेरे दिल में यह विचार आया:

> ईश्वरीय नियति, जो कि शुद्ध न्याय है, उस अत्याचार में बहुत बड़ा हाथ रखती है जो ये लोग तुम पर कर रहे हैं। तुम्हें इस जेल में खाने को मिलता है, तुम्हारी इसी व्यवस्था ने तुम्हें यहाँ बुलाया है। तुम्हें संतोष और त्याग के साथ जवाब देना चाहिए। इस स्थिति में प्रभु की बुद्धि और दया का भी एक महत्वपूर्ण हाथ है: तुम्हें इस जेल में बंद लोगों को समझाने और उन्हें सांत्वना देने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि तुम्हें पुरस्कार मिल सके। तुम्हारा जवाब हज़ारों धन्यवाद और महान धैर्य होना चाहिए। इस स्थिति में तुम्हारी आत्मा का भी एक हिस्सा है क्योंकि कुछ ऐसे दोष हैं जिनके बारे में तुम शायद नहीं जानते। तुम्हारा जवाब पश्चाताप और क्षमा माँगना होना चाहिए, अपनी आत्मा को यह बताना चाहिए कि वह इस आघात के योग्य थी। इसके अलावा, तुम्हारे कुछ गुप्त शत्रुओं का भी इसमें हिस्सा है, जो अपनी धोखेबाज़ साज़िशों के ज़रिए कुछ भोले और संदिग्ध अधिकारियों को इस तरह के उत्पीड़न के लिए उकसाते हैं। इसके जवाब में, रिसाले-ए-नूर द्वारा उन पाखंडियों पर किए गए शक्तिशाली अमूर्त प्रहारों ने तुम्हारा पूरा बदला लेने की कोशिश की है। उनके लिए यही काफी है। अंत में, वे अधिकारी जो इस स्थिति को लाने के वास्तविक साधन थे, उनका भी इसमें हिस्सा है। आपकी प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि वे **ईमान के ज़रिए** रिसाले-ए-नूर **से फ़ायदा उठा सकें** , चाहे वे चाहें या न चाहें, और भले ही वे इसकी आलोचना करने के इरादे से इसमें आए हों, नियम के मुताबिक उन्हें माफ़ कर दें, ईश्वर पर श्रद्धा रखने वाले, नेक लोग- जो ... हमेशा अपने गुस्से को काबू में रखते हैं (भले ही वे भड़के हों और बदला लेने में सक्षम हों), और लोगों को माफ़ कर देते हैं
>
> (उनके अपराधों पर) (3:134); यह उदारता का कार्य होगा।

इस सच्ची चेतावनी के परिणामस्वरूप मुझे जो पूर्ण संतोष और कृतज्ञता महसूस हुई, उसके कारण मैंने इस नए "जोसेफ स्कूल" में बने रहने का निर्णय लिया, और यहां तक कि कुछ हानिरहित अपराध करने का भी निर्णय लिया, जिसके लिए मुझे कारावास की सजा मिल सके, ताकि मैं उन लोगों की भी मदद कर सकूं जो मेरे विरोधी थे।

इसके अलावा, मैं पचहत्तर साल का था, किसी भी सांसारिक मोह से रहित था, और जिन सत्तर लोगों से मैं प्यार करता था, उनमें से केवल पाँच जीवित बचे थे। इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर संग्रह की सत्तर हज़ार प्रतियाँ मुफ़्त में प्रचलन में थीं और मेरे कर्तव्यों का पालन करती थीं, और इसके अलावा, मेरे भाई-बहन और उत्तराधिकारी थे जो मेरी एक ज़बान के बदले हज़ारों ज़बानों से ईमान की सेवा करते थे। इसलिए, क़ब्र मेरे लिए इस जेल से सौ गुना बेहतर थी। और जेल बाहर की आज़ादी से सौ गुना ज़्यादा आरामदायक और ज़्यादा फ़ायदेमंद थी, जिसमें आज़ादी नहीं थी और जो अत्याचार और उत्पीड़न के अधीन थी। क्योंकि बाहर अकेले ही कष्ट सहने के बजाय

जेल में सैकड़ों अधिकारियों के उत्पीड़न के अलावा, सैकड़ों अन्य कैदियों के साथ, एक व्यक्ति को केवल जेल के गवर्नर और मुख्य वार्डर जैसे एक या दो लोगों के मामूली "औपचारिक" उत्पीड़न को सहना पड़ता है। लेकिन जेल में कई साथियों की भाईचारे वाली दया और सांत्वना मिलती है। इसके अलावा, इस्लामी करुणा और मानवीय सहज कोमलता ऐसी स्थिति में बुजुर्गों के साथ दयालु व्यवहार करने की ओर ले जाती है, जिससे जेल की कठिनाई दया में बदल जाती है। इन सब बातों पर विचार करते हुए, मैंने जेल के प्रति समर्पण कर दिया।

जब मैं इस तीसरे मुकदमे के लिए अदालत गया, तो कमजोरी, बुढ़ापे और बीमारी के कारण खड़े रहने में कठिनाई के कारण, मैं ट्रायल रूम के दरवाजे के बाहर एक कुर्सी पर बैठ गया। जज अचानक प्रकट हुए और गुस्से में द्वेषपूर्ण तरीके से पूछा, "वह खड़े होकर इंतजार क्यों नहीं कर रहा है?" बुढ़ापे के सामने इस निर्दयता पर मुझे गुस्सा आया। अचानक, मैंने देखा कि हमारे चारों ओर बड़ी संख्या में मुसलमान इकट्ठा हो गए थे और पूरी तरह से स्नेह और भाईचारे की करुणा के साथ देख रहे थे, और तितर-बितर नहीं हो रहे थे। निम्नलिखित दो सत्य मेरे सामने आए:

पहला: मेरे और रिसाले-ए-नूर के गुप्त शत्रुओं ने कुछ भोले-भाले अधिकारियों को धोखा दिया था, इस उम्मीद में कि इस तरह वे मेरे बारे में जनता की अच्छी राय को नष्ट करके और मेरी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाकर रिसाले-ए-नूर की विजय को रोक सकते हैं - कुछ ऐसा जो मैं किसी भी हालत में नहीं चाहता था।

उन्होंने उन अधिकारियों को मेरे प्रति इस प्रकार का तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने के लिए उकसाया था।
लेकिन उस एक आदमी के अपमान के बदले, इन सौ लोगों को रिसाले-ए-नूर की आस्था की सेवा के लिए ईश्वरीय कृपा के रूप में देखें! आपकी सेवा की सराहना करते हुए, वे आप पर दया करते हैं और अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हैं, और आपका स्वागत करते हैं और आपको विदा करते हैं। दरअसल, अगले दिन जब मैं सरकारी वकील के सवालों का जवाब दे रहा था, तो लगभग एक हज़ार लोग अदालत की खिड़कियों के बाहर आँगन में अपनी चिंता व्यक्त करते हुए इकट्ठा हुए। ऐसा लग रहा था जैसे वे अधिकारियों से कहना चाहते थे कि वे मुझ पर अत्याचार न करें। पुलिस उन्हें तितर-बितर करने में असमर्थ थी।

मुझे लगा कि इस खतरनाक युग में ये लोग सच्ची सांत्वना, कभी न बुझने वाली रोशनी, एक शक्तिशाली विश्वास और शाश्वत सुख के बारे में कुछ खुशखबरी चाहते हैं - अपने स्वभाव से ही, वे इन्हीं की तलाश में थे। उन्होंने सुना होगा कि वे जो खोज रहे थे वह रिसाले-ए-नूर में मौजूद है, और यही कारण था कि उन्होंने मेरे महत्वहीन व्यक्ति को मेरे द्वारा विश्वास के लिए की गई थोड़ी सी सेवा के लिए इतना ध्यान और सम्मान दिखाया - वह ध्यान और सम्मान जो मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था।

दूसरा सत्य: मेरे मन में यह विचार आया कि कुछ धोखेबाज व्यक्तियों द्वारा हमारे साथ किए गए अपमानजनक दुर्व्यवहार के बदले में

उनके निराधार संदेह कि हम सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ रहे हैं और हमारी आस्था की सेवा को रोकने तथा हमारे प्रति जनता की प्रशंसा और सम्मान को नष्ट करने के इरादे से ऐसा किया जा रहा है, को सत्य के असंख्य लोगों और आने वाली पीढ़ियों की प्रशंसा और सराहना मिली।

निश्चित, सत्यापित विश्वास की ताकत के माध्यम से, इस देश के हर हिस्से में रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों ने अराजकता के भयानक भ्रष्ट प्रयासों को रोक दिया है जो साम्यवाद के आवरण में आश्रय लेते हैं और जो सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। रिसाले-ए-नूर और उसके छात्र सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने के लिए काम करते हैं, और परिणामस्वरूप बीस वर्षों से अधिक समय में तीन या चार अदालतें और दस प्रांतों की पुलिस रिसाले-ए-नूर के छात्रों द्वारा सार्वजनिक व्यवस्था के उल्लंघन की कोई भी घटना नहीं ढूंढ पाई है या दर्ज नहीं कर पाई है, जो बहुत बड़ी संख्या में हैं और देश के हर हिस्से में पाए जाते हैं। और तीन प्रांतों के कुछ निष्पक्ष पुलिस अधिकारियों ने कहा है, "रिसाले -ए-नूर

छात्र नैतिक पुलिस हैं। वे सार्वजनिक व्यवस्था के संरक्षण में हमारी मदद करते हैं। निश्चित, सत्यापित विश्वास के माध्यम से, रिसाले-ए-नूर पढ़ने वाले हर व्यक्ति के दिमाग में कुछ ऐसा रह जाता है जो उन्हें कोई भी अपराध करने से रोकता है।

वे सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित रखने के लिए काम करते हैं।"

इसका एक उदाहरण डेनिज़ली जेल था। जब रिसाले-ए-नूर, जिसमें खास तौर पर मेवे रिसालेसी (विश्वास के फलों पर ग्रंथ) शामिल था, जो उस जेल में लिखा गया था, वहाँ दाखिल हुआ, तो तीन या चार महीने की अवधि में दो सौ से ज़्यादा कैदी इतने असाधारण रूप से आज्ञाकारी हो गए और ऐसे धार्मिक, धार्मिक आचरण को अपना लिया कि तीन या चार लोगों को मारने वाला व्यक्ति खटमल को भी मारने से पीछे हट गया। वे राष्ट्र के पूरी तरह से दयालु, हानिरहित और लाभकारी सदस्य बन गए। अधिकारियों ने इस बदलाव को आश्चर्य और प्रशंसा के साथ देखा। अपनी सज़ा पाने से पहले, कुछ युवाओं ने यहाँ तक कहा: "अगर रिसाले -ए-नूर के छात्र जेल में रहे, तो हम खुद को दोषी ठहराने की कोशिश करेंगे ताकि हम उनसे सीख सकें और उनके जैसे बन सकें।

हम उनकी शिक्षा के माध्यम से खुद को सुधारेंगे।"

इसलिए जो लोग रिसाले-ए-नूर के छात्रों पर, जो उस तरह के गुण वाले हैं, सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने का आरोप लगाते हैं, वे निश्चित रूप से गंभीर रूप से गलत हैं, या धोखा खा चुके हैं, या जाने-अनजाने में अराजकता के लिए सरकार को धोखा दे रहे हैं, और दमन के माध्यम से हमें कुचलने की कोशिश कर रहे हैं। हम उनसे निम्नलिखित कहते हैं:

> चूँकि मृत्यु को मारा नहीं जा सकता और कब्र को बंद नहीं किया जा सकता, और संसार के इस अतिथिगृह में यात्री, काफिले के बाद काफिले, बड़ी तेजी और हलचल के साथ पृथ्वी में प्रवेश करते हैं और गायब हो जाते हैं, तो निश्चय ही हम

> बहुत जल्द ही एक दूसरे से अलग हो जाएँगे। तुम्हें अपने अत्याचार की सज़ा बहुत भयानक तरीक़े से मिलेगी। तुम मौत की सज़ा पर चढ़ जाओगे, जो तुम्हारे लिए अनंत सज़ा का दरवाज़ा है लेकिन मज़हब के उत्पीड़ित लोगों के लिए रिहाई का कागज़ है। इस दुनिया में तुम्हें जो क्षणिक सुख मिले हैं, जिन्हें तुम स्थायी समझते हो, वे अनंत, गंभीर दर्द में बदल जाएँगे।

अफ़सोस की बात है कि हमारे छुपे हुए पाखंडी दुश्मन कभी-कभी इस्लाम की सच्चाई को "सूफी संप्रदाय" का नाम दे देते हैं, जिसे इस धार्मिक राष्ट्र के करोड़ों संतों और वीर दिग्गजों के प्रयासों से हासिल किया गया है और सुरक्षित रखा गया है। जबकि सूफी संप्रदायों का मार्ग इस्लाम के सूर्य की एक किरण मात्र है, वे इसे स्वयं सूर्य के रूप में दिखाने का प्रयास करते हैं और कुछ लापरवाह सरकारी अधिकारियों को धोखा देते हैं। रिसाले-ए-नूर के छात्रों को, जो वास्तव में कुरान और विश्वास की सच्चाई के लिए प्रभावी रूप से काम करते हैं, "सूफी संप्रदाय के अनुयायी" और "राजनीतिक समाज के सदस्य" के रूप में लेबल करके वे ऐसे अधिकारियों को हमारे खिलाफ भड़काना चाहते हैं। हम उनसे और उन लोगों से जो हमारे खिलाफ उनकी बात सुनते हैं, वही कहते हैं जो हमने डेनिज़ली की निष्पक्ष अदालत से कहा था:

> आइए हम भी उस पवित्र सत्य के लिए बलिदान हो जाएं, जिसके लिए करोड़ों-करोड़ों लोगों ने बलिदान दिया है! भले ही आप हमें जलाने के लिए दुनिया में आग लगा दें, हम जो कुरान की सच्चाई के लिए खुद को बलिदान करते हैं, पाखंड के सामने अपने "हथियार" नहीं डालेंगे; ईश्वर की इच्छा और मदद से, हम अपने पवित्र कर्तव्य को नहीं छोड़ेंगे!

और इसलिए, मेरे बुढ़ापे की पीड़ा और निराशाजनक स्थिति के लिए जो ईमान और कुरान से उत्पन्न होती है, पवित्र सांत्वना के कारण, मैं अपने बुढ़ापे के सबसे कष्टदायक वर्ष को भी अपनी जवानी के दस सबसे सुखद वर्षों के साथ नहीं बदल सकता। विशेष रूप से इसलिए, क्योंकि तौबा करने और अनिवार्य नमाज़ अदा करने वालों का जेल में बिताया गया प्रत्येक घंटा सामान्य परिस्थितियों में दस घंटों की इबादत के बराबर है, और बीमारी और उत्पीड़न में बिताया गया प्रत्येक क्षणिक दिन अनंत जीवन के दस दिनों का पुरस्कार प्राप्त करता है, मैं समझ गया हूँ कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए ये दिन कितने धन्यवाद के पात्र हैं जो क़ब्र के दरवाज़े पर अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा है। मैं कहता हूँ, "मेरे रब का अनंत धन्यवाद!" और अपने बुढ़ापे से संतुष्ट हूँ और अपनी कैद से प्रसन्न हूँ। क्योंकि जीवन समाप्त नहीं होता; यह तेज़ी से गुज़र जाता है। यदि यह सुख और आनंद में गुज़रता है, तो चूँकि सुख का लुप्त होना दुख है, यह खेद और शोक का कारण बनता है, और कृतज्ञता और असावधानी के कारण यह अपने पीछे पाप छोड़ जाता है।

जबकि, यदि यह कारावास या कठिनाई में गुजरता है, क्योंकि दर्द का गायब होना आत्मा में खुशी है, और चूंकि इसे एक प्रकार की पूजा माना जाता है, तो यह

एक तरह से यह शाश्वत हो जाता है, और अपने अच्छे फलों के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करता है। यह अतीत में किए गए पापों और उन गलतियों के लिए प्रायश्चित बन जाता है जो कारावास का कारण बनी थीं, उन्हें शुद्ध करता है। इस दृष्टिकोण से, कैदियों में से जो लोग अनिवार्य प्रार्थनाओं के कम से कम अनिवार्य भाग अदा करते हैं, उन्हें धैर्य के साथ धन्यवाद देना चाहिए।

सोलहवीं आशा

एक बार बुढ़ापे में मुझे एक साल की सजा काटने के बाद एस्कीशेहर जेल से रिहा कर दिया गया। उन्होंने मुझे कस्तमोनू (उत्तरी तुर्की में) निर्वासित कर दिया, जहाँ उन्होंने मुझे दो या तीन महीने तक पुलिस स्टेशन में मेहमान के रूप में रखा। यह समझा जा सकता है कि मेरे जैसे व्यक्ति को ऐसी जगह पर कितना कष्ट सहना पड़ा होगा; एकांत पसंद करने वाले, वफादार दोस्तों से मिलने से भी थक जाने वाले और अपने पारंपरिक, देशी पहनावे को बदलने से न सहने वाले के लिए यह कितना कठिन था। ऐसी पीड़ादायक परिस्थितियों में, अचानक ईश्वरीय कृपा मेरे बुढ़ापे में मदद के लिए आई। थाने में इंस्पेक्टर और पुलिस अधिकारी मेरे वफादार दोस्तों की तरह हो गए। उन्होंने एक बार भी मुझे इस बात के लिए नहीं चेताया कि मैं कैसे कपड़े पहनता हूँ, और, जैसे वे मेरे नौकर हों, वे मुझे पूरे शहर में घुमाने ले जाते थे।

फिर मैंने कस्तमोनू के " रिसाले-ए नूर मेदरेस" में निवास किया , जो पुलिस स्टेशन के सामने था, और रिसाले-ए नूर के बारे में और लिखना शुरू किया। फेज़ी, एमिन, हिल्मी, सादिक, नाज़िफ़ और सलाहद्दीन जैसे वीर रिसाले-ए नूर छात्र मेदरेस में शामिल हुए ताकि वे अपनी लिखावट में ग्रंथों की नकल कर सकें और उन्हें वितरित कर सकें। हमने अपने पूर्व छात्रों के साथ अपनी युवावस्था में की गई तुलना में कहीं अधिक गहन विद्वानों की बहस की।

फिर हमारे गुप्त शत्रुओं ने कुछ अधिकारियों और कुछ अहंकारी होजाओं और शेखों को हमारे बारे में संदेहास्पद बना दिया। उन्होंने हमें और पाँच-छह प्रांतों के रिसाले-ए-नूर के छात्रों को डेनिज़ली जेल के "जोसेफ के स्कूल" में इकट्ठा किया। इस सोलहवीं आशा का विवरण कस्तमोनू और मेरे द्वारा गुप्त रूप से भेजे गए छोटे-छोटे पत्रों में पाया जा सकता है-

डेनिज़ली जेल में रहते हुए मेरे भाइयों को भेजे गए पत्र, और अदालत में बचाव के लिए दिए गए भाषणों के संग्रह में। इसलिए उन पत्रों और अपने बचाव भाषण का विवरण देते हुए, मैं इसे यहाँ संक्षिप्त कर दूँगा:

मैंने कुछ गोपनीय और महत्वपूर्ण ग्रंथों को कोयले और लकड़ी के नीचे छिपा दिया ताकि वे मेरी मृत्यु के बाद या राजधानी शहर के शीर्ष अधिकारियों द्वारा सच्चाई सुनने और उनके सामने आने के बाद प्रकाशित हो सकें।

होश में। जब मैं इस बारे में निश्चिंत महसूस कर रहा था, कुछ जासूसों और सहायक सरकारी अभियोजक ने अचानक मेरे घर पर छापा मारा। उन्होंने लकड़ी के नीचे से उन गोपनीय और महत्वपूर्ण ग्रंथों को निकाला। इसके बाद, उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया और मुझे इस्पार्टा जेल भेज दिया, हालाँकि मेरी तबियत खराब थी।

जब मैं रिसाले-ए-नूर को हुए नुकसान से बहुत परेशान और बेहद दुखी था, तब ईश्वरीय कृपा हमारी मदद के लिए आई। अधिकारियों ने बड़ी सावधानी और जिज्ञासा के साथ इन महत्वपूर्ण ग्रंथों को पढ़ना शुरू किया, जिन्हें छिपाया गया था और जिनकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी, और सरकारी कार्यालय रिसाले-ए-नूर के अध्ययन केंद्र बन गए। आलोचना के इरादे से पढ़ना शुरू करने के बाद, वे उनकी सराहना करने लगे। यहां तक कि डेनिज़ली में भी, हालांकि हम इसके बारे में नहीं जानते थे, कई सरकारी और गैर-सरकारी लोगों ने आयतुल-कुबरा (सर्वोच्च संकेत) के गुप्त रूप से मुद्रित संस्करण को पढ़ा , और उनका विश्वास मजबूत हुआ। इससे जेल की आपदा जो हम भुगत रहे थे, वह कम हो गई।

बाद में वे हमें डेनिज़ली जेल ले गए, और मुझे एक बदबूदार, ठंडी, नम कोठरी में एकांत कारावास में डाल दिया। बुढ़ापे, बीमारी और मेरे कारण मेरे दोस्तों को होने वाली परेशानियों से उत्पन्न दुख से जूझते हुए, साथ ही रिसाले-ए- नूर के अंगों की जब्ती और इसकी गतिविधियों में रुकावट से होने वाले दुख और परेशानी से जूझते हुए, ईश्वरीय कृपा अचानक मेरी मदद के लिए आई। इसने उस विशाल जेल को रिसाले-ए-नूर मेदरेस में बदल दिया, जिससे यह साबित हुआ कि यह यूसुफ का स्कूल है। रिसाले-ए-नूर मेदरेसतुज़-ज़हरा के नायकों की हीरे की कलमों के माध्यम से फैलना शुरू हुआ।

उन कठोर परिस्थितियों में, उन वीरों में से एक, जो रिसाले-ए-नूर की सेवा में सबसे आगे है , ने तीन या चार महीनों के अंतराल में बीस से ज़्यादा ईमान के फल और बचाव भाषणों के संग्रह की प्रतियाँ तैयार कीं। उन्होंने जेल के अंदर और बाहर दोनों जगह लोगों के दिलों और दिमागों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया। इसने उस आपदा में हमारे नुकसान को बड़े लाभ में और हमारे दुख को खुशी में बदल दिया। इसने एक बार फिर आयत में सत्य को प्रदर्शित किया, हो सकता है कि आपको कोई चीज़ नापसंद हो लेकिन वह आपके लिए अच्छी है (2: 216)।

फिर पहली विशेषज्ञ समिति की गलत और सतही आधिकारिक रिपोर्टों पर आधारित कठोर आलोचनाओं और शिक्षा मंत्री द्वारा हमारे खिलाफ़ प्रकाशित बयान और साथ ही कुछ प्रेस विज्ञप्तियों के कारण, बात इतनी आगे बढ़ गई कि उन्होंने हममें से कुछ को फांसी पर चढ़ाने की भी कोशिश की। जबकि इन परिस्थितियों में, ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई। सबसे पहले, सभी उम्मीदों के विपरीत, अंकारा में विशेषज्ञ समिति से एक सराहनीय रिपोर्ट आई। इसके अलावा, हमने अदालत में साबित कर दिया

कि रिसाले-ए-नूर संग्रह में उन्होंने जो कुछ बिंदु त्रुटिपूर्ण बताए थे, वे पूरी तरह से सही थे, और वे स्वयं भी त्रुटिपूर्ण थे। साथ ही, हमने उनकी रिपोर्ट के पाँच पन्नों में लगभग दस त्रुटियाँ दिखाईं। फिर, जब हम सात सरकारी दफ़्तरों को भेजे गए विश्वास के फल और बचाव भाषणों के संग्रह संग्रह और न्याय मंत्रालय को भेजे गए पूरे रिसाले-ए-नूर के लिए और विशेष रूप से गोपनीय ग्रंथों में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के खिलाफ़ की गई कड़ी आलोचनाओं के बदले में गंभीर, धमकी भरे धिक्कार का इंतज़ार कर रहे थे, तो उन्होंने बहुत ही नरमी से जवाब दिया। प्रधानमंत्री द्वारा हमें भेजे गए आश्वस्त करने वाले पत्र की तरह ही, वे हम पर हमला करने से कोसों दूर, समझौतावादी थे। इन सब बातों से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो गया कि ईश्वरीय कृपा के चमत्कार के रूप में रिसाले-ए-नूर की सच्चाइयों ने उन्हें इसके ग्रंथों का एक मार्गदर्शक की तरह अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया था, तथा उन व्यापक मंडलियों को एक प्रकार का अध्ययन मंडल बना दिया था, जिससे असंख्य झिझकते या भ्रमित लोगों का विश्वास सुरक्षित हो गया था, तथा हमें हमारे कष्टों की तुलना में सौ गुना अधिक आध्यात्मिक आनन्द और लाभ प्राप्त हुआ था।

फिर हमारे गुप्त शत्रुओं ने मुझे ज़हर दे दिया और उसी समय रिसाले-ए-नूर के शहीद नायक स्वर्गीय हाफ़िज़ अली अस्पताल गए और वहाँ से मेरी जगह कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र में पहुँचे; हम निराशा में रो पड़े। इस आपदा से पहले, मैंने कस्तमोनू के पहाड़ पर बार-बार कहा था, "मेरे भाइयों, घोड़े को मांस और शेर को घास मत दो!"

अर्थात्, "सभी ग्रंथों को हर किसी को मत दो, कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें गलत समझ लें और उनका उपयोग हम पर हमला करने के लिए करें।" जिस समय मैंने ऐसा कहा था, मानो उन्होंने सात दिन की यात्रा की दूरी से अपने आध्यात्मिक टेलीफोन के माध्यम से सुना हो, हाफ़िज़ अली, भगवान उन पर दया करें, ने मुझे लिखा, "वास्तव में, मेरे गुरु, यह रिसाले-ए-नूर का एक आश्चर्य है कि यह घोड़ों को मांस और शेरों को घास नहीं देता है।

बल्कि, यह घोड़ों को घास और शेरों को मांस देता है ताकि यह शेर जैसी होजा दे सके
ईमानदारी पर ग्रंथ।" मुझे सात दिन बाद उसका पत्र मिला। हमने हिसाब लगाया और पाया कि जिस समय मैं पहाड़ पर चिल्ला रहा था, उसी समय वह उन्हें अपने पत्र में लिख रहा था।

इस प्रकार, ठीक उस समय जब हम रिसाले-ए-नूर के उस नायक की मृत्यु और हमारे पाखंडी दुश्मनों द्वारा हमारे विरुद्ध की गई साज़िशों से उदास थे ताकि हम पर संदेह किया जाए और हमें सज़ा दी जाए, और जब हम चिंतित थे कि ज़हर से बीमार होने के कारण मुझे सरकारी आदेश पर अस्पताल ले जाया जाएगा, तो ईश्वरीय कृपा अचानक हमारी सहायता के लिए आई। मेरे धन्य भाइयों की सच्ची प्रार्थनाओं के माध्यम से, ज़हर से मेरी मृत्यु का जोखिम गायब हो गया। शक्तिशाली संकेतों के अनुसार, हाफ़िज़ अली, वह धन्य शहीद,

वह अपनी कब्र में रिसाले-ए-नूर के साथ व्यस्त था, और रिसाले-ए-नूर के साथ सवाल करने वाले फ़रिश्तों को जवाब देता था; और डेनिज़ली नायक, हसन फ़ेज़ी, भगवान उस पर दया करे, जो उसकी जगह पर सेवा करेगा और उसकी प्रणाली के अनुसार काम करेगा, और उसके दोस्त, रिसाले-ए-नूर की प्रभावी रूप से सेवा कर रहे थे। चूँकि अन्य कैदियों को रिसाले-ए-नूर द्वारा सुधारा जा रहा था, यहाँ तक कि हमारे दुश्मनों ने भी हमें जेल से रिहा किए जाने का समर्थन किया। गुफा के साथियों की तरह,128 रिसाले -ए-नूर के छात्रों ने उस कठिन परीक्षा के स्थान को पुराने समय के तपस्वियों की गुफा में बदल दिया, और संतुष्ट हृदय से रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों को लिखने और प्रकाशित करने का प्रयास किया। इन सभी ने साबित कर दिया कि ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई थी।

मेरे दिल में यह भी आया कि जब इमाम आज़म अबू हनीफा129 जैसे कानून के प्रमुख विद्वानों को कारावास का सामना करना पड़ा था; जब इमाम अहमद इब्न हंबल130 जैसे इस्लाम के सर्वोच्च रक्षक को कुरान से संबंधित एक मुद्दे के लिए जेल में कठोर यातनाएं दी गई थीं, और उन्होंने इस मामले में चुप न रहकर पूर्ण धैर्य के साथ इसे सहन किया था; और जब कई धार्मिक नेताओं और विद्वानों ने बिना विचलित हुए पूर्ण धैर्य के साथ धन्यवाद दिया था, हालांकि उन्हें हमसे कहीं अधिक यातनाएं दी गई थीं, तो निश्चित रूप से हमें उन कुछ कष्टों के लिए अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए जो हमें कुरान के बदले में सहना पड़ा था।

कुरान की अनेक सच्चाइयों से हमें जो महान पुरस्कार मिला है, वह हमारे लिए बहुत बड़ा पुरस्कार है। मैं संक्षेप में मानव जाति के अन्यायपूर्ण अत्याचार के बीच ईश्वरीय कृपा की अभिव्यक्ति का वर्णन करना चाहूँगा:

जब मैं बीस साल का था, तो मैं बार-बार कहा करता था, "पुराने समय में गुफाओं में रहने वाले संन्यासियों की तरह, अपने जीवन के अंत में मैं सामाजिक जीवन से दूर होकर किसी गुफा या पहाड़ पर चला जाऊंगा।" इसके अलावा, जब मैं प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस के उत्तर-पूर्व में युद्ध बंदी था, तो मैंने फैसला किया-

---

128 गुफा के साथी सात युवा थे जिन्होंने देश के बहुदेववादी राजा की उपस्थिति में ईश्वर की एकता में अपने विश्वास की घोषणा की, और इसलिए उन्हें एक गुफा में शरण लेनी पड़ी। एक दिव्य चमत्कार के रूप में, वे तीन सौ वर्षों तक गुफा में सोए, और जब वे जागे तो पाया कि उनका विश्वास उनके राष्ट्र का आधिकारिक धर्म बन गया था। यह देखने के बाद, वे मर गए और गुफा में दफना दिए गए। कुरान, 18:9–26 देखें। उन्हें पश्चिम में सात स्लीपर के रूप में जाना जाता है। (ट्र.)

129 इमाम आज़म अबू हनीफ़ा, नुमान इब्न साबित (मृत्यु 768): हनफ़ी स्कूल ऑफ़ लॉ की स्थापना की और न्यायशास्त्र के सबसे महान मुस्लिम विद्वानों में से एक थे और कुरान और सुन्ना से नए कानूनों का निष्कर्ष निकालने वाले थे। वे धर्मशास्त्र में भी पारंगत थे। (ट्र.)

130 इमाम अहमद इब्न हंबल (मृत्यु, 855): इस्लाम में चार सुन्नी विधि-विद्यालयों में से एक के संस्थापक। उन्होंने अपने धार्मिक विश्वास के लिए वीरतापूर्वक उत्पीड़न सहा। उनका मुस-नद प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने लगभग 40,000 परंपराएँ एकत्र की हैं। (अनुवाद)

मैंने सोचा था कि मैं अपना शेष जीवन गुफाओं में बिताऊंगा। मैं राजनीतिक और सामाजिक जीवन से दूर रहूंगा। मैं उनसे तंग आ चुका था। अब मैं देखता हूं कि मेरे निर्णय और इच्छा से कहीं बेहतर तरीके से, मेरे बुढ़ापे के लिए दया के कारण, प्रभु की कृपा और दिव्य नियति के न्याय ने उन गुफाओं को, जिनमें मैं जाने के बारे में सोचता था, जेलों, शरणस्थलों और अकेलेपन और एकांत कारावास में कठिन परीक्षा के स्थानों में बदल दिया। इसने मुझे जोसेफ के स्कूल दिए जो तपस्वियों और एकांतवासियों की पहाड़ी गुफाओं और एकांत कारावास के स्थानों से कहीं बेहतर हैं ताकि मैं अपना समय बर्बाद न करूं। इसने मुझे गुफाओं में रहने से मिलने वाले परलोक के लाभ प्रदान किए और मुझे विश्वास की सच्चाईयों और कुरान की पवित्र सेवा करने में सक्षम बनाया, जो एक तरह का जिहाद है। मैंने अपने दोस्तों के बरी होने के बाद किसी अपराध का बहाना बनाकर जेल में रहने के बारे में भी सोचा था, जिसमें हुसैन और फेज़ी जैसे कुंवारे लोग शामिल थे। किसी बहाने से मैं लोगों से मिलने से बचने या बेकार की बातचीत या अहंकारी दिखावे में अपना समय बर्बाद न करने के लिए एकांत कारावास में ही रहता। लेकिन ईश्वरीय नियति ने हमें एक और कठिन परीक्षा की जगह पर भेज दिया। ईश्वरीय नियमों के अनुसार, "जो ईश्वर चुनता है वही अच्छा है," और यह अच्छी तरह से हो सकता है कि आप किसी चीज़ को नापसंद करते हों लेकिन यह आपके लिए अच्छा है (2: 216), मेरी बुढ़ापे के लिए दया से और इसलिए कि हम विश्वास की सेवा में और अधिक मेहनत करें, हमें जोसेफ के इस तीसरे स्कूल में हमारी इच्छा और शक्ति से परे कर्तव्यों का भार सौंपा गया।

रिसाले-ए-नूर की सेवा से तीन महत्वपूर्ण लाभ और बुद्धिमत्ता के उदाहरण मिलते हैं, जिसमें ईश्वरीय कृपा से वे गुफाएं, जिनमें मैं अपनी युवावस्था के दौरान छिपने के बारे में सोचता था, जब मेरा कोई शक्तिशाली, गुप्त शत्रु नहीं था, मेरे बुढ़ापे के लिए जेल की एकांत कोठरी में बदल गईं:

बुद्धिमता और लाभ का पहला उदाहरण: इस समय रिसाले-ए-नूर के छात्र बिना किसी नुकसान के सिर्फ़ यूसुफ़ के स्कूल में ही एकत्र हो सकते थे। उनका बाहर इकट्ठा होना न सिर्फ़ महंगा पड़ता बल्कि संदेह भी पैदा करता। ऐसी स्थिति में यह भी हो सकता था कि मुझसे मिलने आने वाले कुछ लोग चालीस या पचास लीरा खर्च करके सिर्फ़ बीस मिनट के लिए मुझसे मिलने या फिर बिना मिले ही वापस चले जाते। इसलिए मैं अपने कुछ भाइयों के करीब रहने के लिए जेल की सज़ा को खुशी-खुशी चुनता। इसका मतलब यह है कि जेल हमारे लिए एक एहसान और रहमत है।

बुद्धिमत्ता और लाभ का दूसरा उदाहरण: रिसाले-ए-नूर के माध्यम से इस समय ईमान की सेवा हर जगह इसका प्रचार करने और जरूरतमंदों का ध्यान आकर्षित करने के माध्यम से संभव है। इस प्रकार, हमारा कारावास-

यह पुस्तक रिसाले-ए-नूर की ओर ध्यान आकर्षित करती है और इसकी प्रसिद्धि में योगदान देती है।
जो लोग सबसे अधिक जिद्दी हैं और जिन्हें सबसे अधिक आवश्यकता है, वे इसे पा सकते हैं और अपने विश्वास को सुरक्षित रख सकते हैं; उनकी जिद पराजित हो जाती है और वे विश्वास के बिना दूसरी दुनिया में जाने के खतरे से बच जाते हैं, और इस प्रकार रिसाले-ए-नूर के अध्ययन का दायरा विस्तृत हो जाता है।

ज्ञान और लाभ का तीसरा उदाहरण: रिसाले -ए-नूर के छात्र जो कैद में हैं, वे एक-दूसरे के आचरण, चरित्र, ईमानदारी और आत्म-बलिदान से सीखते हैं, और वे रिसाले-ए-नूर के माध्यम से अपनी सेवा में सांसारिक लाभ की तलाश नहीं करते हैं। दरअसल, चूंकि यूसुफ के स्कूल में उन्होंने अपनी आँखों से हर कठिनाई और परेशानी के लिए दस या सौ आध्यात्मिक लाभ और अच्छे परिणाम देखे हैं, इसलिए अच्छे परिणामों और विश्वास के लिए व्यापक ईमानदार सेवा के माध्यम से, वे शुद्ध ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम हैं, और अब कम, व्यक्तिगत लाभ की तलाश में खुद को नीचा नहीं करते हैं।

हालाँकि, इनके बारे में एक दुखद लेकिन सहमत करने वाली बात है
यह एक ऐसी जगह है जहाँ पर मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। यह इस प्रकार है:

मैंने यहाँ वही स्थिति देखी है जो मैंने अपनी युवावस्था के दौरान अपने गृहनगर के पुराने मदरसों में देखी थी। क्योंकि पारंपरिक रूप से पूर्वी प्रांतों में, मदरसों के छात्रों की ज़रूरतों का एक हिस्सा मदरसों के बाहर से पूरा किया जाता था । कुछ मदरसों में, उनका भोजन मदरसों में ही तैयार किया जाता था।

खुद। और ऐसे कई अन्य तरीके हैं जिनसे मेड्रेस इस कठिन परीक्षा की जगह से मिलते जुलते हैं। जब मैं सुखद पछतावे और लालसा की भावना के साथ जेल को देखता हूं, तो मैं अपनी कल्पना में युवावस्था के उन मधुर दिनों की यात्रा करता हूं, और बुढ़ापे की कठिनाइयों को भूल जाता हूं।

सत्ताईसवीं झलक

T सत्ताईसवीं झलक में एस्कीशेहर मुकदमों के भाषण शामिल हैं। चूँकि वे तारिहचे-ए हयात ("सैद नूरसी का जीवन इतिहास") में प्रकाशित हो चुके हैं, इसलिए उन्हें यहाँ शामिल नहीं किया गया है।

अट्ठाईसवीं चमक

अट्ठाईसवीं चमक

पारिस्थितिकी तंत्र और संतुलन में मक्खियों का स्थान वायु तत्व के कुछ पहलू
दिव्य वाणी पर एक चर्चा
कुरान क्यों कहता है कि लोहा और मवेशी ऊपर से उतारे गए हैं अच्छे
कर्मों में तत्काल पुरस्कार है, और बुरे लोगों में तत्काल दंड स्पष्ट अर्थ के
नीचे छिपा हुआ इच्छित अर्थ सोने का समय भगवान के आशीर्वाद और
शांति को बुलाने पर

पैगम्बर मुहम्मद द्वारा पारलौकिक सत्य की व्याख्या
अस्तित्व या अस्तित्व की एकता हमें धार्मिक उत्सव के दिनों में क्या
करना चाहिए शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा और उसके कुछ प्रलोभनों
पर अल्प जीवन के दौरान अविश्वास के लिए अनन्त दंड न्याय कैसे हो सकता
है जासूसी जिन्न और बुरी आत्माओं और स्वर्ग से उनके प्रतिकर्षण पर

इसमें कुछ छोटी सांत्वना भरी रचनाएँ शामिल हैं जो मैंने अपने भाइयों के लिए लिखी थीं, जो एस्कीशेर जेल में मेरे सामने वाली कोठरी में थे, उस समय जब मुझे उनसे मिलने-जुलने या बात करने की मनाही थी।

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

सुलेमान रुसदु के साथ एक सुखद बातचीत, जो अपनी वफादारी और हृदय की पवित्रता के लिए जाने जाते हैं।

I यह लगभग वह समय था जब मक्खियाँ शरद ऋतु में अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाती हैं। उनके द्वारा दी जाने वाली मामूली सी परेशानी के कारण, कुछ स्वार्थी मनुष्यों ने उन्हें मारने के लिए हमारी जेल की कोठरी में कीटनाशक छिड़क दिए। इससे मेरे मन में गहरी दया उत्पन्न हुई। हालाँकि, मक्खियाँ,

उन मनुष्यों के प्रति प्रतिरोध और भी बढ़ गया। हमारे सेल में कपड़े सुखाने की रस्सी थी। शाम को उन छोटे पक्षियों को रस्सी पर व्यवस्थित तरीके से खड़ा किया जाता था। एक दिन सुलेमान रुसदु कपड़े टाँगने के लिए उठे, और मैंने उनसे कहा, "उन छोटे पक्षियों को परेशान मत करो; इसे कहीं और टाँग दो।" उन्होंने पूरी गंभीरता से जवाब दिया, "हमें रस्सी की ज़रूरत है; मक्खियों को अपने लिए कहीं और ढूँढ़ने दो।"

खैर, सुबह-सुबह इस छोटी सी घटना के सिलसिले में चर्चा शुरू हुई कि मक्खियाँ और चींटियाँ जैसे छोटे जीव, जो बहुत बड़ी संख्या में होते हैं, के बारे में। मैंने उनसे निम्नलिखित बातें कहीं:

जो प्रजातियाँ अस्तित्व में हैं और बड़ी संख्या में बढ़ रही हैं, उनके महत्वपूर्ण कर्तव्य और महान मूल्य हैं। एक महत्वपूर्ण पुस्तक की तरह जिसकी प्रतियाँ अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों के कारण कई गुना बढ़ जाती हैं, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ईश्वरीय नियति के इन छोटे-छोटे संदेशों, ईश्वरीय शक्ति के इन शब्दों को बहुत अधिक बढ़ा देता है। विवेकपूर्ण कुरान घोषणा करता है:

> ऐ लोगो! एक मिसाल पेश की गई है, तो उस पर ग़ौर करो कि जिन लोगों को तुम अल्लाह के सिवा पूज्य ठहराते हो और पुकारते हो, वे कभी एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब मिलकर भी ऐसा करें। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन भी ले तो वे उसे वापस नहीं पा सकते। बेशक खोजनेवाला और खोजनेवाला दोनों ही बेबस हैं! (22:73)

अर्थात् मक्खियों का निर्माण भगवान की सृजनात्मकता का ऐसा चमत्कार है कि यदि वे सभी चीजें और प्राणी, जिन्हें सृजनात्मकता का श्रेय दिया जाता है, एक साथ आ जाएं, तो वे एक मक्खी भी नहीं बना पाएंगे। वे भगवान के उस चमत्कार की नकल नहीं कर पाएंगे।

जब, उनके द्वारा उत्पन्न परेशानी का सामना करना पड़ता है , पैगंबर मूसा ने - शांति उस पर हो - इन प्राणियों के बारे में भगवान से शिकायत की, जो उपरोक्त आयत में एक महत्वपूर्ण विषय है, और जो निम्रोद की मृत्यु का कारण बना - कहा, "हे मेरे भगवान! आप इन परेशान करने वाले प्राणियों को इतना अधिक क्यों बढ़ाते हैं?" - निम्नलिखित उत्तर उसे प्रेरित किया गया था:

> आपने एक बार मक्खियों के बारे में आपत्ति की थी, लेकिन मक्खियाँ कई बार पूछती हैं: "हे हमारे प्रभु! ये बड़े-बड़े सिर वाले मनुष्य केवल एक ही जीभ से आपका उल्लेख और प्रशंसा करते हैं। और कभी-कभी वे ऐसा करने में भी चूक जाते हैं। यदि आपने हमें केवल उनके सिर से बनाया होता, तो ऐसे प्राणी होते जो हज़ारों जीभों से आपका उल्लेख और प्रशंसा करते!"

इस प्रकार, मक्खियों की प्रजाति ने पैगंबर मूसा की शिकायत के विरुद्ध अपनी रचना की बुद्धिमत्ता का बचाव हजार गुना अधिक शक्तिशाली ढंग से किया।

आपत्ति की तुलना में, अपने चेहरे, आँखों और पंखों को लगातार साफ करके स्वच्छता के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करना, जैसे कि स्नान करते समय, निश्चित रूप से महत्वपूर्ण कर्तव्य होने चाहिए। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण सृष्टि में ज्ञान के उदाहरणों को समझने में एक छोटी दूरी का दृष्टिकोण रखता है; यह उन कर्तव्यों को पूरी तरह से समझने में असमर्थ है।

दरअसल, हर दिन लाखों की संख्या में मरने वाले समुद्री जीवों की लाशों से समुद्र को प्रदूषित होने से बचाने के लिए , सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मांसाहारी प्राणियों की ऐसी प्रजातियाँ बनाई हैं जो सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों की तरह काम करती हैं। अगर समुद्र के ये सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से नियमित तरीके से पालन नहीं करते, तो समुद्र आईने की तरह चमक नहीं पाएगा; बल्कि यह एक दुखद और परेशान करने वाला मैलापन प्रदर्शित करेगा।

साथ ही, जिस तरह से चील और कुछ अन्य मांसाहारी पक्षी, ईश्वरीय कृपा से प्राप्त प्रेरणा के कारण, पाँच या छह घंटे की दूरी से शव की स्थिति को आश्चर्यजनक रूप से पहचान लेते हैं और उसे हटा देते हैं, उसी तरह सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अन्य जंगली जानवरों को भी बनाया है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों की तरह काम करते हुए, हर दिन लाखों मृत जानवरों को इकट्ठा करते हैं और इस तरह धरती की सतह को साफ करते हैं, सचेत प्राणियों को ऐसे कष्टदायक और दुखद दृश्यों से बचाते हैं। अगर देश के ये स्वास्थ्य अधिकारी, जो पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, न होते, तो धरती पर ऐसा नजारा होता कि हम सभी रो पड़ते।

ईश्वर के जीवन के नियमों ने मृत जानवरों के मांस को मांसाहारी और मैला ढोने वाले जानवरों का वैध भोजन नियुक्त किया है। एक हदीस में घोषणा की गई है कि "बिना सींग वाले (कमज़ोर और उत्पीड़ित) जानवरों के अधिकार पुनरुत्थान के दिन सींग वाले जानवरों से बहाल किए जाएँगे," यह इंगित करते हुए कि जानवरों की आत्माएँ उनके शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी जीवित रहती हैं, और उनके लिए शाश्वत क्षेत्र में उनके लिए उचित तरीके से पुरस्कार और दंड होगा।

इसके अलावा, चींटियों को सफाई और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के रूप में भी काम सौंपा गया है, जो छोटे जीवों के शवों और उनके भोजन के छोटे कणों और टुकड़ों को इकट्ठा करती हैं, जिससे इन खाद्य कणों और टुकड़ों को संरक्षित किया जा सके।

---

131 एक मछली हज़ारों अंडे और हज़ारों बच्चे पैदा करती है; अंडे में लगभग दस लाख अंडे होते हैं। इसलिए, समुद्र में संतुलन बनाए रखने के लिए, जन्मों की संख्या जितनी है, मृत्यु की भी उतनी ही घटनाएँ होनी चाहिए। यह ईश्वरीय करुणा का एक और प्रकटीकरण है कि चूँकि माँ मछली अपने बच्चों के छिपने के स्थानों में प्रवेश नहीं कर सकती और आकार में बहुत अंतर होने के कारण उनकी देखरेख नहीं कर सकती, इसलिए सर्वज्ञ और दयालु भगवान बच्चों में से एक को उनका पर्यवेक्षक चुनता है और उस छोटे जीव को माँ के कर्तव्यों में नियुक्त करता है।

बर्बादी से, या पैरों तले रौंदे जाने से, तिरस्कृत किये जाने से, या बेकार कर दिये जाने से।
इसी तरह मक्खियाँ भी बीमारी पैदा करने वाले हानिकारक पदार्थों या कीटाणुओं को साफ करने के मामले में कर्तव्यनिष्ठ होती हैं। हानिकारक कीटाणुओं को चूसकर और अवशोषित करके वे उन्हें नष्ट कर देती हैं, और वे हानिकारक या ज़हरीले पदार्थों को दूसरे हानिरहित रूपों में बदल देती हैं, जिससे कई संक्रामक बीमारियों का प्रसार रुक जाता है। इस बात का संकेत है कि वे स्वास्थ्य और सफ़ाई के लिए मज़दूर हैं और कई बुद्धिमानी के उदाहरण पेश करने वाले ऑपरेटिव और रसायनज्ञ हैं, यह तथ्य है कि वे बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। क्योंकि जो चीज़ें मूल्यवान और लाभकारी हैं, वे कई गुना बढ़ जाती हैं।132

ऐ अहंकारी मनुष्य! जीवन में ज्ञान के हजारों उदाहरणों के अलावा, केवल इस छोटे से लाभ पर विचार करें जो वे आपके लिए प्रदान करते हैं और उनके प्रति अपनी शत्रुता को त्याग दें: निर्वासन के दौरान आपकी तन्हाई और अकेलेपन में आपका साथ देने के अलावा, वे आपको असावधानी या विचारों की उलझन में पड़ने से रोकते हैं। आप देखते हैं कि कैसे वे अपने नाजुक व्यवहार और अपने चेहरे और आँखों को धोने के माध्यम से, जैसे कि वे स्नान कर रहे हों, आपको मानव कर्तव्यों, जैसे कि सफाई, नमाज़ अदा करना और स्नान करना सिखाते और याद दिलाते हैं।

इसके अलावा, आपको खाने के लिए शहद देने के अलावा, जो सबसे मीठा और सबसे सुखद उपहार है, मधुमक्खियों, जिन्हें कई मायनों में मक्खियों के समान माना जा सकता है, को कुरआन में चमत्कारिक व्याख्या के रूप में ईश्वरीय प्रेरणा से प्रतिष्ठित होने के रूप में वर्णित किया गया है। इसलिए, जैसा कि हमें उनसे प्यार करना चाहिए, मक्खियों या अन्य समान जानवरों से दुश्मनी करना जो हमेशा मित्रता में मानवता की सहायता के लिए आते हैं और जो उनकी सेवा में बहुत सी कठिनाइयों को सहन करते हैं, गलत और अन्यायपूर्ण है। हम हानिकारक जीवों से केवल इसलिए लड़ सकते हैं ताकि वे हमें नुकसान न पहुँचाएँ। उदाहरण के लिए, हम अपनी भेड़ों को हमले से बचाने के लिए भेड़ियों से लड़ सकते हैं। क्या यह संभव नहीं है कि मच्छर और पिस्सू प्राकृतिक उपचारक हैं, जो गर्मी के मौसम में शरीर के लिए ज़रूरत से ज़्यादा खून होने पर हमला करते हैं, उन वाहिकाओं में से पुराने थके हुए खून को चूसते हैं जिनमें कुछ हानिकारक पदार्थ हो सकते हैं? महिमावान है वह जिसकी कला पर मन चकित हो जाता है!

जब मैं एक बार अपनी शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा से संघर्ष कर रहा था, जो अपने अन्दर जो वरदान देखती थी, उसे अपनी सम्पत्ति समझ रही थी-

---

[132] प्रसिद्ध कवि यूनुस एमरे की निम्नलिखित पंक्तियाँ कितनी सुन्दर और सूक्ष्म हैं, जो दर्शाती हैं कि मक्खी के पंख और शरीर दैवी कला के कितने अद्भुत नमूने हैं:

मैंने एक मक्खी के पंख को चालीस बैलगाड़ियों पर लादा;
उनमें से चालीस लोग उसे खींच नहीं सके; वह वहीं फैला रहा जहां उसे रखा गया था।

मेरी आत्मा अहंकारी, घमंडी और शेखी बघारने वाली हो गई। मैंने उससे कहा, “यह संपत्ति तुम्हारी नहीं है; यह एक अमानत है।” तो फिर आत्मा ने अपना अहंकार और घमंड छोड़ दिया, लेकिन आलस्य दिखाना शुरू कर दिया, कहने लगी, “मैं किसी ऐसी चीज़ की परवाह क्यों करूँ जो मेरी नहीं है? इसे नष्ट होने दो!” अचानक मैंने देखा कि एक मक्खी मेरे हाथ पर बैठ गई थी और उसने अपनी आँखें, चेहरा और पंख, जो ईश्वर से उसकी अमानत थे, अच्छी तरह से साफ करना शुरू कर दिया था। मक्खी खुद को ऐसे साफ कर रही थी जैसे एक सैनिक अपनी राइफल और वर्दी को साफ करता है जो उसे राज्य द्वारा अमानत में दी गई है। मैंने अपनी आत्मा से कहा, “उस मक्खी को देखो!” उसने देखा और एक महत्वपूर्ण सबक सीखा। मक्खी मेरी अहंकारी और आलसी आत्मा के लिए एक शिक्षक बन गई।

ईश्वरीय बुद्धि से यह बात दूर नहीं है कि मक्खियाँ हज़ारों तरह के हानिकारक पदार्थों, कीटाणुओं और हानिकारक पदार्थों के रूपांतरण और शुद्धिकरण की मशीन हो सकती हैं। मधुमक्खियों के अलावा, उड़ने वाले कीटों की अन्य प्रजातियाँ[133] हैं जो विभिन्न सड़ने वाले पदार्थों को खाती हैं और फिर गंदगी की जगह सिरप प्रदान करती हैं। इन सड़े हुए, हानिकारक पदार्थों को मीठे और उपचारात्मक सिरप में बदलकर, जैसे कि पेड़ों की पत्तियों पर बटेर बरसते हैं (कुरान, 2:57; उत्पत्ति, 16:4–31), ये कीट प्रदर्शित करते हैं कि वे ऐसी मशीन हैं जो एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में बदल सकती हैं। वे प्रदर्शित करते हैं कि ये छोटे जीव किस शक्तिशाली राष्ट्र के हैं। अपने स्वभाव की भाषाओं के माध्यम से वे कहते हैं, "हमारी छोटीपन पर विचार न करें, इसके बजाय हमारी प्रजाति की विशालता पर विचार करें, और कहें, 'सर्व-महिमावान है वह!'"

* * *

---

133 उड़ने वाले कीटों की एक प्रजाति ऐसी होती है जो वसंत ऋतु में बादाम और जंगली खुबानी के पेड़ों की शाखाओं पर चिपके काले पदार्थ के रूप में पैदा होती है और वहीं रहती है। वे लगातार शहद जैसा कुछ बनाते रहते हैं और मक्खियों की दूसरी प्रजातियाँ उनके चारों ओर इकट्ठा होकर उसे चूसती रहती हैं।

कुछ पौधों और पेड़ों के फूलों के परागण में एक और प्रजाति का उपयोग किया जाता है, जैसे अंजीर। जिस तरह जुगनू, जो चमकता और चमकता है, देखने लायक है, उसी तरह कुछ और प्रजातियाँ भी हैं जो सोने की तरह चमकती हैं, जो ध्यान देने लायक हैं। हमें उन मक्खियों को नहीं भूलना चाहिए जो भालों से लैस हैं, और जंगली मधुमक्खियाँ, जो उनके बीच लुटेरों की तरह हैं। अगर दयालु निर्माता उन्हें नियंत्रित नहीं करता, बल्कि उन्हें पिस्सू की तरह इंसानों पर हमला करने की अनुमति देता, जैसे कि उन सशस्त्र प्रजातियों ने निम्रोद को मार डाला, तो ये कीड़े मानव जाति को गंभीर नुकसान पहुँचाएँगे। वे कुरान की घोषणा के निहित अर्थों में से एक को प्रदर्शित करेंगे, और यदि कोई मक्खी उनसे कुछ छीन लेती है, तो वे उससे उसे वापस नहीं ले सकते (22: 73)। इस प्रकार, यह तथ्य कि इस तरह की रचना की लगभग सौ ज्ञात प्रजातियाँ हैं, बहुत महत्वपूर्ण है, और निम्नलिखित शक्तिशाली आयत, जिसमें उपर्युक्त घोषणा शामिल है, उन्हें अपने विषय के रूप में लेती है:

> ऐ इंसानों! एक मिसाल पेश की गई है, तो उस पर ग़ौर करो कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूज्य ठहराते हो और पुकारते हो, वे कभी एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब मिलकर भी ऐसा करें। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन भी ले तो वे उसे वापस नहीं पा सकते। बेशक खोजनेवाला और खोजनेवाला दोनों ही बेबस हैं।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जब वह किसी चीज़ को होने की इच्छा करता है, तो उसका आदेश बस इतना है कि उससे कहो "हो जाओ!" और वह हो जाती है (36: 83).

यह आयत संकेत करती है कि सृष्टि एक आदेश के साथ होती है। ईश्वरीय शक्ति के खजाने कफ़ और नून में हैं, (ये अक्षर जो आदेश का निर्माण करते हैं, कुन! ("हो!")। इस सूक्ष्म वास्तविकता के कई पहलुओं में से कुछ का उल्लेख रिसाले-ए-नूर के विभिन्न स्थानों में किया गया है। यहाँ, **कुरान के अक्षरों के गुणों, गुणों और भौतिक प्रभावों के बारे में** हदीसों को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए , **विशेष रूप से "विघटित" या "अलग-थलग" अक्षर जो इस सदी के भौतिकवादी दृष्टिकोण के लिए कुछ** सूराओं की शुरुआत में पाए जाते हैं , हम इस बिंदु को एक भौतिक उदाहरण के साथ बनाएंगे।

सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च सिंहासन के स्वामी, के चार हैं
सिंहासन जिनके माध्यम से वह पृथ्वी पर प्राणियों को निर्देश देता है, ब्रह्मांड का केंद्र और उसका हृदय और क़िबला:

पहला सिंहासन संरक्षण और जीवन का सिंहासन है, जो पृथ्वी है।
यह दिव्य नामों का प्रकटीकरण है, जो सर्वरक्षक और जीवनदाता हैं।

दूसरा सिंहासन उदारता और दया का सिंहासन है, जो जल तत्व का है।

तीसरा है ज्ञान और बुद्धि का सिंहासन, जो प्रकाश का तत्व है।

चौथा ग्रह आदेश और इच्छा का सिंहासन है, जो वायु तत्व है।

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि साधारण मिट्टी से खनिज और असंख्य तथा विविध पौधे बनते हैं; इनसे पशुओं और मनुष्यों की असंख्य आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। इसका अर्थ यह है कि मिट्टी जैसा एक साधारण तत्व लगभग अनंत वस्तुओं और अनंत प्रकार की प्रजातियों के पूर्ण क्रम में निर्माण का साधन है; असंख्य और पूर्णतया व्यवस्थित कढ़ाई एक ही सादे पृष्ठ पर अंकित की जाती है। साथ ही, ईश्वरीय कला के असंख्य चमत्कार जल के माध्यम से, और विशेष रूप से पशु वीर्य के माध्यम से, जो जल जैसा एक सरल द्रव है, प्रकट होते हैं; इससे पता चलता है कि इन दो सिंहासनों की तरह, अपने सरल स्वभाव के बावजूद, प्रकाश और वायु भी ईश्वरीय ज्ञान की कलम, शाश्वत लेखक, सर्वज्ञ महामहिम की आज्ञा और इच्छा के अद्भुत चमत्कारों के प्रकटीकरण का साधन हैं।

प्रकाश के तत्व को अभी एक ओर रखते हुए, हम वायु तत्व में, जो पृथ्वी के लिए दिव्य आदेश और इच्छा का सिंहासन है, आदेश और इच्छा के चमत्कारों पर पड़े पर्दे को कुछ हद तक हटाने का प्रयास करेंगे।

हम अपने मुँह में हवा के साथ अक्षर और शब्द बोते हैं, और वे एक साथ अंकुरित होकर अंकुर भेजते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, एक पल में, कुछ ही समय में, एक शब्द हवा में बोया गया बीज बन जाता है और अंकुरित हो जाता है। यह आसपास की हवा में असंख्य प्रतियाँ पैदा करता है। हम वायु के तत्व पर विचार करते हैं और हम देखते हैं कि यह "हो जाओ!" की आज्ञा के प्रति कितना आज्ञाकारी और अधीन है और यह ऐसा है **जैसे यह एक सुव्यवस्थित सेना का एक सैनिक है, जिसका प्रत्येक कण कमांडर से आने वाले आदेशों को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार रहता है, और इस प्रकार** "हो जाओ!" की आज्ञा से जारी होने वाले आदेशों के प्रति अपनी पूर्ण अधीनता प्रदर्शित करता है।

उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि चाहे वह हवा में कहीं भी छोड़ा जाए, रेडियो ट्रांसमीटर या रिसीवर के माध्यम से पृथ्वी पर हर जगह एक ही समय में सुना जा सकता है, यह दर्शाता है कि हवा का प्रत्येक कण "हो!" की आज्ञा का कितनी अच्छी तरह से पालन करता है और यह है। इसलिए, इस पूर्ण आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप, एक पवित्र पाठ या भाषण के अक्षर, जिनका हवा में अस्थिर अस्तित्व है, कई भौतिक प्रभाव और भौतिक गुण प्रकट कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि उनमें ऐसे गुण हैं जिन्हें आध्यात्मिकता को भौतिकता और अदृश्यता को दृश्यता में बदलने के लिए कहा जा सकता है।

इस तरह के अनगिनत संकेत बताते हैं कि हवा में अक्षर मौजूद हैं, खास तौर पर पवित्र और कुरान के अक्षर, और खास तौर पर कुछ सूराओं की शुरुआत में अलग-अलग अक्षर, जो निश्चित रूप से ईश्वरीय संकेत हैं और असीम रूप से संवेदनशील हैं। ऐसा लगता है जैसे वे तात्कालिक आदेशों को सुन रहे हैं और उसके अनुसार काम कर रहे हैं; अपनी पवित्रता के कारण और क्योंकि वे ईश्वरीय इच्छा के आदेश हैं, और हवा के कणों द्वारा “हो!” के आदेश का पूरी तरह से पालन करने के कारण, ये अक्षर निश्चित रूप से भौतिक गुण और क्षणभंगुर, अद्भुत प्रभाव प्रकट करेंगे।

इसी रहस्य के कारण कुरान की चमत्कारिक व्याख्याओं में ईश्वरीय इच्छा और शक्ति के आदेश समाहित हैं, जो चीजों को तुरंत और पूरी तरह से वश में करते हैं और आदेश देते हैं, वे शक्ति और आदेश की तरह ही काम करते हैं। यानी सृजनात्मक आदेश से निकलने वाले अक्षर भौतिक शक्ति की तरह प्राणियों के अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं; वह सृजनात्मक आदेश स्वयं शक्ति और इच्छा के रूप में प्रकट होता है।

वास्तव में, वायु तत्व में इच्छा और आदेश के ये अत्यंत सूक्ष्म और भौतिक "अवतार" ऐसे प्रभाव डालते हैं जैसे कि वे स्वयं शक्ति हों जो अर्ध-भौतिक या अर्ध-अभौतिक अस्तित्व वाले प्राणियों में विद्यमान हैं। और उन प्राणियों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए जिनका अस्तित्व भौतिक और आध्यात्मिक के बीच में है, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान घोषित करता है, जब वह किसी चीज़ को होने की इच्छा करता है, तो उसका आदेश बस इतना है कि उसे कहो "हो जाओ!" और वह हो जाती है (36:83)।

इस प्रकार यह पूरी तरह से उचित है कि पवित्र पृथक अक्षर - वे दिव्य सिफर - जैसे हा मीम। ता सिन, और अलिफ लाम मीम, जो कुछ सूराओं की शुरुआत में मौजूद हैं , स्विच के रूप में कार्य करते हैं जो छिपे हुए, सूक्ष्म संबंधों के तारों को हवा के कणों के बीच कंपन करने का कारण बनते हैं और इस प्रकार पृथ्वी और ब्रह्मांड के बीच पवित्र "वायरलेस" संचार को सक्षम करते हैं।

दिव्य सिंहासन.

वायु के प्रत्येक कण के वायरलेस तथा दूरसंचार संबंधी कर्तव्यों या विद्युत जैसी सूक्ष्म शक्तियों के ग्रहण तथा संचालन के अतिरिक्त मैंने बादाम के वृक्षों के पुष्पों में एक और विशेष कर्तव्य देखा है। बादाम के वृक्षों के पुष्पों ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि वृक्ष, पृथ्वी पर एक सुव्यवस्थित सेना की तरह, वायु के कणों के माध्यम से "हो!" की आज्ञा ग्रहण करते हैं तथा उसका पालन करते हैं, जो वृक्षों के माध्यम से बहने वाली हवा के माध्यम से संचारक का कार्य करते हैं। इसका अर्थ है कि वायु सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय परमेश्वर की सेवक है, तथा यह सेवक सदैव उनकी आज्ञाओं का पालन करने तथा पृथ्वी पर उनके अतिथियों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती है; इसके अतिरिक्त, इसके सभी कण उस सर्व-दयालु परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं को पौधों तथा पशुओं तक पहुंचाते हैं। यह न केवल प्राणियों को पंखा झलकर तथा उनके श्वसन का साधन बनकर शीतलता प्रदान करती है, बल्कि यह उनके रक्त को शुद्ध करने तथा उनके शरीर की ऊष्मा, जीवन की अग्नि को प्रज्वलित करने का कार्य भी करती है; इसके अलावा, वायु तत्व मुख में शब्दों के निर्माण का साधन है, और भगवान के आदेश का पालन करते हुए कई अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करता है, जैसे कि चर्चा की गई है।

"कुन फाया कुन।

इस गुण के कारण ही हवा में विद्यमान होने पर पवित्रता प्राप्त करने वाले अक्षर, अर्थात् कुरान के अक्षर, विशेष रूप से कुछ सूराओं के आरंभ में पृथक किए गए अक्षर, ईश्वरीय आदेशों के प्राप्तकर्ता और संवाहक के रूप में कार्य करते हैं, या स्वयं आदेशों के रूप में भी कार्य करते हैं, और ईश्वरीय और मानवीय संबंधों के बीच गुप्त संबंधों के संवेदनशील स्विच की तरह बन जाते हैं।

सिंहासन और पृथ्वी। जिस प्रकार हवा में उनका अस्तित्व इस गुण से युक्त है, उसी प्रकार उनका

मन में या लिखित रूप में भी अस्तित्व एक समान गुण प्राप्त कर सकता है और समान कार्य कर सकता है। यानी, उन अक्षरों को पढ़ने या लिखने के माध्यम से दवा, उपचार या कुछ अन्य लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

नर्सी ने कहा

* * *

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> कह दो, "यदि सारा समुद्र मेरे रब के वचन लिखने के लिए स्याही हो जाए, तो भी समुद्र तो मेरे रब के वचन समाप्त होने से पहले ही समाप्त हो जाएगा, चाहे हम उसके बराबर और कोई चीज़ क्यों न ले आएं।" (18:109)

यह महान श्लोक एक विशाल, ऊंचा, विस्तृत महासागर है। इसके सभी रत्नों का वर्णन करने के लिए एक बड़ी पुस्तक लिखनी पड़ेगी। इन अनमोल रत्नों को किसी और समय के लिए सहेजते हुए, अभी मैं कुछ शब्दों में उस सूक्ष्म बिंदु की किरणों को समेटने की कोशिश करूंगा जो कुछ दिन पहले दैनिक प्रार्थना के बाद पाठ करते समय दूर से मुझे दिखाई दी थी।

पहला वचन: ज्ञान और शक्ति की तरह दिव्य गुण होने के कारण, दिव्य शाश्वत वाणी भी अनंत है। निश्चित रूप से, यदि समुद्र स्याही होते (जिससे लिखा जाता), तो वे अनंत उद्देश्य के लिए कभी पर्याप्त नहीं हो सकते थे ।

दूसरा वचन: किसी के अस्तित्व को बताने वाली सबसे स्पष्ट और सबसे शक्तिशाली चीज़ है उसकी वाणी। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि किसी की वाणी सुनना उसके अस्तित्व को हज़ारों प्रमाणों के बराबर, बल्कि उसे देखने जितना ही स्पष्ट रूप से साबित करता है, ऊपर उद्धृत श्लोक संकेत देता है:

> यदि समुद्र स्याही होते और पेड़ कलम, तो वे उस दिव्य वाणी को लिखने के लिए पर्याप्त नहीं होते, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व को प्रदर्शित करती है। जिस प्रकार कोई भी वाणी उस व्यक्ति के अस्तित्व की गवाही देती है जिसने उसे देखा है, उसी प्रकार दिव्य वाणी की अद्वितीय, सर्व-प्रार्थना के लिए गवाही भी असीम है।

तीसरा शब्द: चूँकि चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला कुरान सभी स्तरों की समझ के लिए विश्वास की सच्चाई सिखाता है, इसलिए इसमें स्पष्ट रूप से दोहराए गए कथन शामिल हैं जो सत्य को स्थापित करने और सत्यापित करने तथा दूसरों को उसी के बारे में समझाने के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, यह आयत यहूदी विद्वानों द्वारा किए गए पूरी तरह से अनुचित हमलों का एक सांकेतिक उत्तर भी है, जो कि यहूदी विद्वानों के सबसे बड़े अनुयायियों में से एक थे।

जब पवित्र क़ुरआन की आयतें पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) पर उतरीं, उस समय किताब के विद्वान लोगों ने इस बारे में क्या कहा था, जबकि वह अनपढ़ थे। इसका उत्तर इस प्रकार है:

> आयत कहती है: ज्ञान के कई उदाहरण, जैसे सत्यापन और अनुनय, एक सत्य की पुनरावृत्ति की मांग करते हैं जिसमें कई लाभ और परिणाम होते हैं ताकि यह सभी लोगों के दिलों में और विशेष रूप से उन लोगों के दिलों में स्थापित हो सके जो उनमें से साधारण हैं। इसलिए, विश्वास के स्तंभों की पुनरावृत्ति शब्दों की कमी या बौद्धिक कमी या आवश्यक पूंजी की कमी से उत्पन्न नहीं होती है; विश्वास के प्रत्येक मामले का मूल्य एक हजार अन्य मामलों के बराबर होता है और इसमें हजारों सत्य होते हैं, विभिन्न और चमत्कारी तरीकों से। वास्तव में, यदि समुद्र स्याही होते, यदि सचेत प्राणी लेखक होते, यदि पौधे कलम होते, और कण शाश्वत ईश्वरीय वाणी के शब्दों को गिनने के लिए कलम की नोक होते, जो कुरान का स्रोत है और जो अदृश्य दुनिया के कारण दृश्यमान दुनिया को संबोधित करता है और जो मनुष्यों और जिन्न, आत्माओं और फ़रिश्तों से बात करता है, प्रत्येक व्यक्ति के कानों में गूंजता है, तो अंत कभी नहीं आएगा। क्योंकि पूर्व सीमित हैं, जबकि ईश्वरीय वाणी अनंत है।

चौथा शब्द: **स्पष्ट रूप से, किसी अप्रत्याशित चीज़ से भाषण जारी होने** से भाषण का महत्व बढ़ जाता है, जिससे उस पर ध्यान दिया जाता है। विशेष रूप से, वायुमंडल या बादलों जैसे बड़े पिंडों से निकलने वाली भाषण जैसी आवाज़ें सभी को सुनने के लिए मजबूर कर देती हैं। पहाड़ के आकार के ग्रामोफोन से निकलने वाले गाने और भी अधिक कानों का ध्यान आकर्षित करेंगे। जहाँ तक भाषण की बात है

कुरान की स्वर्गीय आवाज़, जो आकाश को ग्रामोफोन के रूप में लेती है, यह ईश्वरीय वाणी से जारी की जाती है ताकि पूरी धरती इसे सुन सके और सुन सके। इसलिए, इसके अक्षरों के रिसीवर या ट्रांसमीटर के रूप में कार्य करते हुए, हवा के कण पवित्र कुरान के अक्षरों के लिए दर्पण, जीभ, सुई की नोक या कान की तरह बन जाते हैं। इसलिए, इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए और यह संकेत देते हुए कि ये अक्षर कितने महत्वपूर्ण, मूल्यवान, महत्वपूर्ण और जीवंत हैं, आयत का अर्थ है:

> कुरान, जो ईश्वरीय शब्द है, इतना जीवंत और मूल्यवान है कि यदि सभी समुद्र स्याही बन जाएं, और फ़रिश्ते लेखक बन जाएं, और अणु और शुक्राणु और पौधे और बाल कलम बन जाएं, तो भी वे उन कानों के अंत तक कभी नहीं पहुंच सकते जो इसे सुनते हैं या उन कानों में प्रवेश करने वाले पवित्र शब्दों के अंत तक कभी नहीं पहुंच सकते।

वास्तव में, वे कभी भी अपने अंत तक नहीं पहुंच सकते, क्योंकि, यह विचार करते हुए कि सर्वशक्तिमान ईश्वर मानव की कमजोर और बेजान वाणी को कैसे बढ़ाता है

यदि आकाश और पृथ्वी के अद्वितीय अधिपति की वाणी का प्रत्येक शब्द, जो आकाश और पृथ्वी के समस्त चेतन प्राणियों को संबोधित करता है, वायु के कणों की संख्या के बराबर होगा।

पाँचवाँ शब्द: यह दो अक्षरों से मिलकर बना है ।

पहला अक्षर: जिस तरह वाणी के दिव्य गुण में शब्द होते हैं, उसी तरह शक्ति में भी मूर्त शब्द होते हैं। इसी तरह, दिव्य ज्ञान में दिव्य नियति के बुद्धिमान शब्द होते हैं, जिसमें सभी चीजें और प्राणी शामिल होते हैं। जीवित प्राणी और विशेष रूप से छोटे जीव भगवान के प्रत्येक शब्द हैं जो शाश्वत वक्ता को भाषणों से अधिक शक्तिशाली तरीके से इंगित करते हैं। इसलिए यह श्लोक इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि यदि समुद्र स्याही होते, तो वे कभी समाप्त नहीं होते।

दूसरा पत्र: स्वर्गदूतों और मनुष्यों, यहाँ तक कि जानवरों को मिलने वाली सभी प्रेरणाएँ एक तरह की दिव्य वाणी हैं। इस वाणी के शब्द निश्चित रूप से अनंत हैं। यह श्लोक बताता है कि ईश्वरीय आदेश की प्रेरणाएँ और शब्द कितने असंख्य और वास्तव में अनंत हैं जिन्हें परम प्रभुता के असंख्य समूह निरंतर प्राप्त करते हैं।

सच है, हर चीज़ का सही ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है। अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता।

* * *

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हमने लोहा उतारा, जिसमें लोगों के लिए शक्ति और लाभ है। (57:25)

यह उपरोक्त श्लोक के बारे में एक महत्वपूर्ण प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर है, जिसके द्वारा एक विशिष्ट व्यक्ति, जिसे आधुनिक विज्ञान का ज्ञान था, अनेक होजों को चुप कराने में सक्षम हुआ।

प्रश्न: लोहा धरती से निकाला जाता है; यह ऊपर से नीचे नहीं आता। तो फिर इस आयत में यह क्यों कहा गया है कि हमने उतारा है, बजाय इसके कि “हमने निकाला है?” क्या यह प्रत्यक्ष वास्तविकता के विपरीत नहीं है?

उत्तर : यह कहकर कि हमने भेजा है, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि लोहा कितना महान और महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह केवल अपने लिए लोहे का उल्लेख नहीं करता है - यदि ऐसा होता, तो यह कहता कि "हमने निकाला है" - बल्कि, यह लोहे में मौजूद जबरदस्त ईश्वरीय उदारता और मानव जाति को इसकी कितनी आवश्यकता है, इस पर जोर देता है। कोई भी उदारता नीचे से ऊपर की ओर नहीं आती है, बल्कि दया के खजाने से नीचे भेजी जाती है।

दया का खजाना निश्चित रूप से उच्च स्तर का है, इसलिए यह उपकार “ऊपर” से उतरता है और मानव जाति, जो उपकारों की ज़रूरतमंद है, नीचे है। निश्चित रूप से, उपकार देने का दर्जा ज़रूरतमंदी से बेहतर है, इसलिए इस तथ्य को व्यक्त करने का सही तरीका कि मानव जाति की ज़रूरत की सहायता के लिए दया के खजाने से उपकार आता है, यह है कि हमने भेजा है, न कि “हमने निकाला है।”

इसके अलावा, निष्कर्षण एक क्रमिक प्रक्रिया है और यह मानव जाति द्वारा किया जाता है।
इस प्रकार, मानवता के लापरवाह दृष्टिकोण में यह धारणा नहीं है कि लोहा एक वरदान है। यह सच है कि जब इसके भौतिक अस्तित्व पर विचार किया जाता है, तो लोहा धरती से निकाला जाता है, लेकिन एक ईश्वरीय वरदान के रूप में इसे ऊपर से नीचे भेजा गया है। संबंधित आयत हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करती है कि लोहा एक ईश्वरीय वरदान है और इसलिए इसके अमूर्त मूल्य पर ध्यान केंद्रित करता है। दया के खजाने से निकलने वाला एक वरदान, जो कि दयालु के असीम उच्च पद का प्रकटीकरण है, निश्चित रूप से उच्चतम पद से निम्नतम स्तर तक भेजा जाता है। इस प्रकार, इस्तेमाल की जाने वाली सही अभिव्यक्ति है हमने भेजा है। इस अभिव्यक्ति के साथ, आयत मानव जाति को याद दिलाती है कि लोहा सर्वशक्तिमान ईश्वर के सबसे महान वरदानों में से एक है।

वास्तव में, मानवता के सभी उद्योगों, उसकी भौतिक प्रगति और उसकी शक्ति के साधनों का स्रोत लोहा ही है। इसलिए, लोहे के महत्व और महानता पर जोर देने के लिए, ईश्वर की कृपा और उदारता की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए और एक शानदार शैली में, कुरान घोषणा करता है,

> और हमने लोहा उतारा, जिसमें लोगों के लिए शक्ति और लाभ है। (57:25)

उसी तरह जैसे कुरान पैगम्बर दाऊद (उन पर शांति हो) को प्रदान किये गये एक बहुत ही महत्वपूर्ण चमत्कार के बारे में घोषणा करता है:

> और हमने उसके लिए लोहा भी लचीला बनाया। (34:10)

अर्थात्, यह घोषणा करता है कि ईश्वर ने एक महान पैगम्बर के लिए एक महान चमत्कार और इनाम के रूप में लोहे को नरम कर दिया।

दूसरा: "ऊपर" और "नीचे" सापेक्ष अवधारणाएँ हैं। हम कहते हैं कि कोई चीज़ पृथ्वी के केंद्र से संबंधित अपनी स्थिति के अनुसार ऊपर या नीचे है। वास्तव में, जो चीज़ हमारे संबंध में नीचे है, वह दूसरे महाद्वीपों के दृष्टिकोण से ऊपर है। इसका मतलब है कि पृथ्वी के केंद्र से इसकी सतह पर आने वाले पदार्थों की स्थिति सतह पर मौजूद लोगों की स्थिति के अनुसार बदलती है।

चमत्कारों की भाषा में, चमत्कारों की व्याख्या करने वाला कुरान कहता है:

> लोहे में इतने सारे लाभ और इतने व्यापक उपयोग हैं कि यह पृथ्वी के भंडार से निकाला जाने वाला कोई साधारण पदार्थ नहीं है, जो मानव जाति का घर है। न ही यह कोई प्राकृतिक पदार्थ है जिसे धरती से निकाला जा सकता है।
>
> किसी भी आकस्मिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए लोहे का उपयोग नहीं किया जा सकता। बल्कि, पृथ्वी के निवासियों की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, सृष्टिकर्ता के दया के खजाने से लोहा भेजा गया है और ब्रह्मांड की विशाल कार्यशाला में स्वयं सृष्टिकर्ता द्वारा तैयार किया गया है, जो आकाश और पृथ्वी का स्वामी है। आकाश से उतरने वाली वर्षा, गर्मी और प्रकाश की तरह, लोहे में इतने व्यापक लाभ हैं कि इसे ब्रह्मांड की कार्यशाला से भेजा जाता है, न कि पृथ्वी के संकीर्ण भंडार से। ब्रह्मांड के महल में दया के महान खजाने से तैयार और भेजा गया, और पृथ्वी के भंडार में स्थित होने के कारण, इसे सदियों से आवश्यकता के अनुपात में थोड़ा-थोड़ा करके निकाला जाता है।

क़ुरआन की महानता यह नहीं चाहती कि लोहे को इस छोटे से भंडार (पृथ्वी) में मौजूद एक साधारण चीज़ समझा जाए जिसे यहीं खाया जा सके; बल्कि यह बताने के लिए कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने पृथ्वी को सूर्य से अलग करते समय अपने सर्वोच्च ख़ज़ाने से मानव जाति की कई ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उस महान उपहार को पृथ्वी के साथ भेजा, यह कथन इस्तेमाल करता है, हमने भेजा है। पृथ्वी के घर के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ों में से एक लोहा है, और मानवता की कई ज़रूरतें लोहे से पूरी होती हैं। बुद्धिमानी से भरे क़ुरआन का एक चमत्कारी अर्थ भी है, "अपने कामों में लोहे का इस्तेमाल करो और इसे निकालने और इसका इस्तेमाल करने की कोशिश करो। "

यह कहते हुए कि, ... लोहा, जिसमें कठोर शक्ति है और मानव जाति के लिए लाभ है, आयत लोहे के दो महत्वपूर्ण उपयोगों का वर्णन करती है। अर्थात्, इसका उपयोग दुश्मनों को पीछे हटाने (युद्ध में) और अन्य लाभों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। कुरान के अवतरण से पहले भी लोहे का मानवता के लिए महत्वपूर्ण उपयोग किया जाता था, लेकिन वाक्यांश, जिसमें कठोर शक्ति है, के साथ यह चमत्कार की एक झलक प्रदान करता है, यह भविष्यवाणी करते हुए कि भविष्य में लोहे का एक अद्भुत तरीके से उपयोग किया जाएगा और दुनिया भर में एक कुचलने वाली शक्ति प्रदर्शित की जाएगी। हथियारों के निर्माण और समुद्र, हवा और जमीन के माध्यम से यात्रा करने के लिए इसका वर्तमान उपयोग कुरान की इस भविष्यवाणी को साबित करता है।

* * *

ऊपर दिए गए सूक्ष्म कुरानिक बिंदु पर चर्चा करते समय, पैगंबर सुलैमान के हुपु के विषय को चर्चा में शामिल किया गया। हमारे एक भाई जो लगातार सवाल पूछते हैं (लेकिन ग्रंथों, रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों को लिखने में आलस्य दिखाते हैं) ने पूछा, "ऐसा क्यों है कि एक चरम अवसर पर हुपु ने सर्वशक्तिमान ईश्वर को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जो आकाश और पृथ्वी में छिपी हुई चीज़ों को प्रकाश में लाता है (27: 25), जो कि अधिक महत्वपूर्ण दिव्य गुणों के बीच एक अपेक्षाकृत महत्वहीन विशेषता है?"

उत्तर : वाक्पटुता का एक गुण यह है कि यह उस कला का सुझाव देता है जिसमें वक्ता सबसे अधिक व्यस्त है। बेडौइन ज्योतिषियों की तरह जिन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि के माध्यम से अरब के रेगिस्तानों में पानी के स्थानों की आश्चर्यजनक रूप से खोज की, पक्षियों और अन्य जानवरों के बीच ज्योतिषी के रूप में, सुलैमान का हुपु एक धन्य पक्षी था जिसने एक ज्योतिषी के रूप में पैगंबर सुलैमान की सेवा की। इसने अपने स्वयं के शिल्प के दृष्टिकोण से ईश्वर को सर्वशक्तिमान माना, और कहा कि ईश्वर को पूजा और उसके सामने सजदा करने का विशेष अधिकार है क्योंकि वह आकाश और पृथ्वी में छिपी चीजों को प्रकट करता है।

वास्तव में, हूपो ने सच्चाई को अच्छी तरह से समझा, क्योंकि धरती के नीचे असंख्य बीजों और खनिजों की स्वाभाविक प्रवृत्ति नीचे से ऊपर की ओर उभरने की नहीं हो सकती। चूँकि जिन पिंडों का वजन तो निश्चित है, लेकिन उनमें आत्मा, इच्छाशक्ति या चेतना नहीं है, वे खुद ऊपर नहीं जा सकते, वे केवल नीचे की ओर जा सकते हैं या गिर सकते हैं। धरती के भार के नीचे दबे किसी पिंड के लिए अपने कंधों से भारी बोझ को खुद ही हिलाकर हवा में बाहर आना विशेष रूप से असंभव है। इसका मतलब है कि इतना छोटा बीज या खनिज नीचे से ऊपर की ओर नहीं जा सकता।

केवल एक असाधारण शक्ति के माध्यम से ही बाहर आ सकते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि हुपु ने अपनी भविष्यवाणी के माध्यम से, ईश्वर के इस सबसे गुप्त और महत्वपूर्ण प्रमाण को खोज लिया था कि वह एक है जिसकी पूजा की जानी चाहिए और जिसके समक्ष सजदा किया जाना चाहिए, इसलिए बुद्धिमान कुरान ने इसके बारे में अपने कथन में चमत्कार का एक उदाहरण जोड़ दिया।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

उसने तुम्हारे लिए आठ जोड़े चौपाये उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में, एक के बाद एक सृजन के कार्य और चरण के द्वारा, तीन अंधकारमय पर्दों में उत्पन्न करता है (39: 6)

इस आयत में वही सत्य निहित है जो हमने इस आयत के सम्बन्ध में स्पष्ट किया था, " और हमने लोहा उतारा, वह भी इसकी पुष्टि करता है और इससे प्रमाणित भी होता है।"

क़ुरान ने सूरत अज़-ज़ुमर में यह कह कर कि उसने तुम्हारे लिए आठ जोड़े गायें उतारी हैं , न कि उसने तुम्हारे लिए आठ जोड़े गायें पैदा की हैं , चमत्कारी अभिव्यक्ति का यह क़ुरआन कहता है कि अल्लाह ने अपनी रहमत के ख़ज़ाने से हमारे लिए आठ जोड़े मुबारक गायें उतारी हैं। गोया उसने उन्हें जन्नत से नेमत के तौर पर उतारा है। उनके ऊन या बाल का इस्तेमाल खानाबदोशों द्वारा तंबू और कपड़े बनाने के लिए किया जाता है, उनके मांस का इस्तेमाल खाने के लिए, उनके दूध का इस्तेमाल खाने के लिए, उनकी खाल से जूते और इसी तरह की दूसरी चीज़ें बनाने के लिए और उनके गोबर से ज़मीन को खाद और गर्मी मिलती है। गोया वे मुबारक जानवर शुद्ध नेमत और मूर्त दया हैं। इसी वजह से, जैसे बारिश को “रहमा” (रहमा) कहा जाता है, वैसे ही उन मुबारक जानवरों को “अनआम” (दान) कहा जाता है। यह ऐसा है जैसे कि मूर्त दया बारिश बन जाती है, और मूर्त नेमत बकरियों, भेड़ों, बैलों और गायों, भैंसों या ऊँटों का रूप ले लेती है। यद्यपि उनके भौतिक शरीर पृथ्वी पर बनाए गए हैं, किन्तु चूँकि उनका अनुग्रह और दया होना उनके भौतिक प्राणी होने से अधिक महत्वपूर्ण है, अतः जो वाक्य उसने नीचे भेजा है, वह यह व्यक्त करता है कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने इन धन्य पशुओं को अपनी दया के उच्च पद और अपने उच्च, अमूर्त स्वर्ग से सीधे पृथ्वी पर अपनी दया के भण्डार से उपहार के रूप में भेजा है।

वास्तव में, एक मक्खी की तरह, जो शरीर में छोटी होती है, लेकिन उसमें निहित भगवान की कला के संबंध में महान होती है, ऐसी वस्तुएं भी हो सकती हैं, जिनका भौतिक मूल्य लगभग कुछ भी नहीं होता, लेकिन उनमें उच्च मूल्य की कलाएं होती हैं, और इसलिए उनकी भौतिक कीमत को ध्यान में रखे बिना उनकी कला के संबंध में उनका बहुत महत्व होता है।
इसके विपरीत, ऐसी अन्य चीजें भी हो सकती हैं जो भौतिक रूप से मूल्यवान हैं लेकिन कला में उनका कोई मूल्य नहीं है, और इसलिए उनका मूल्य उनके भौतिक अस्तित्व तक ही सीमित है।

ठीक इसी तरह कुछ भौतिक चीज़ें ऐसी भी हैं जिनका फ़ायदा या रहमत होना उनके भौतिक होने से सौ गुना ज़्यादा अहम है। उन्हें फ़ायदा होने के नज़रिए से देखा जाता है, उनके भौतिक होने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इस तरह जिस तरह लोहे के बहुत ज़्यादा फ़ायदे और उससे मिलने वाली कई चीज़ें उसके भौतिक होने को छिपा देती हैं, उसी तरह इन मुबारक जानवरों का भौतिक होना, जो सिर से लेकर पैर तक फ़ायदेमंद हैं, फ़ायदे में बदल जाता है। यही वजह है कि उनके होने के अभौतिक पहलू उनके भौतिक होने को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, और इसीलिए क़ुरान ने उनके लिए 'उतरने' का इस्तेमाल किया है ।

इस सूक्ष्म वास्तविकता के साथ, चमत्कारिक ढंग से नीचे भेजने का उपयोग
वाक्पटुता के संबंध में एक महत्वपूर्ण अर्थ व्यक्त करता है। यह इस प्रकार है:

लोहा एक मजबूत खनिज है और इसे भूमिगत गहराई से निकाला जाता है। लेकिन इसका उपयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक है और इसे आसानी से नरम होने की गुणवत्ता से सुसज्जित किया गया है। इसलिए, लोहे में निहित ज्ञान के अन्य उदाहरणों के अलावा, यह व्यक्त करने के लिए कि लोहा आसानी से प्राप्त किया जाता है और हर किसी के द्वारा हर जगह इस्तेमाल किया जाता है, वाक्यांश, हमने नीचे भेजा है यह इंगित करता है कि यह ऐसा है जैसे कि लोहे के औजार किसी काम से नीचे भेजे गए हैं-

"प्राकृतिक" की तरह स्वर्गिक उपहारों की खरीदारी करें जो मनुष्यों के हाथों में सौंपे जाएँ। इसके अलावा, मच्छर से लेकर साँप, बिच्छू, भेड़िये और शेर जैसे जानवरों की कई प्रजातियों से आकार में बहुत बड़े होने के बावजूद, जो मनुष्यों के लिए हानिकारक हैं, बड़े जानवर जैसे भैंस, बैल और ऊँट जो सबसे महत्वपूर्ण जानवरों में से हैं, बेहद विनम्र और आज्ञाकारी हैं। वे इतने आज्ञाकारी हैं कि उन्हें एक बच्चा भी चला सकता है। उनकी आज्ञाकारिता के अर्थ को व्यक्त करने के लिए, उसने तुम्हारे लिए आठ जोड़े मवेशियों को भेजा है , यह बताता है कि यह ऐसा है जैसे कि ये धन्य जानवर सांसारिक जानवरों में से नहीं थे, क्योंकि वे न तो जंगली हैं और न ही खतरनाक। यह ऐसा है जैसे कि वे एक अमूर्त स्वर्ग के जानवर थे; वे लाभकारी और कोमल हैं; उन्हें ऊपर से, यानी दया के खजाने से भेजा गया है। यह इस कारण से हो सकता है कि कुछ कुरान के टीकाकार कहते हैं कि ये जानवर स्वर्ग से भेजे गए हैं।134

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम ज्ञानपूर्ण कुरान के एक अक्षर की व्याख्या करने के लिए एक पृष्ठ लिखकर बहुत अधिक लिख रहे हैं, क्योंकि यह ईश्वर का वचन है।
इसलिए, " हमने या उसने उतारा है" के बारे में दो या तीन पृष्ठ लिखना व्यर्थ नहीं है। कभी-कभी कुरान का एक अक्षर खजाने की कुंजी होता है।

* * *

---

134 यह कहते हुए कि, "इन जानवरों की उत्पत्ति आकाश है," कुछ कुरानिक टिप्पणीकार निम्नलिखित बातों का भी संकेत देते हैं: ये जानवर, जिन्हें "अन'आम" कहा जाता है, भोजन के ज़रिए जीवित रहते हैं, और उनका भोजन चारा है, जिसका अस्तित्व बारिश पर निर्भर करता है। वर्षा जीवन और दया का जल है; इसलिए, भोजन भी आकाश से आता है। आयत, " और आकाश में तुम्हारा भोजन है" (51: 22), इसी बात की ओर इशारा करती है। चूँकि इन जानवरों का निरंतर नवीनीकृत अस्तित्व आकाश से आने वाली वर्षा के ज़रिए संभव है, इसलिए वाक्यांश " उसने भेजा है", जो आकाश से नीचे भेजे जाने के अर्थ को व्यक्त करता है, उपयुक्त है।

एक बहुत ही मूल्यवान, महत्वपूर्ण बिंदु

अपनी संपूर्ण उदारता, दया और न्याय के कारण, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अच्छे कर्मों में तत्काल पुरस्कार और बुरे कर्मों में तत्काल दंड शामिल किया है। उसने अच्छे कर्मों में आध्यात्मिक सुख शामिल किया है जो परलोक के पुरस्कारों की याद दिलाता है, और बुरे कर्मों में आध्यात्मिक प्रतिफल शामिल किया है जो नरक की यातनाओं की याद दिलाता है।

उदाहरण के लिए, विश्वासियों के बीच प्रेम विश्वासियों के लिए एक अच्छा काम है। इस अच्छे काम में आध्यात्मिक आनंद, संतोष और उल्लास शामिल है जो परलोक के भौतिक पुरस्कारों की याद दिलाता है। जो कोई भी अपने दिल की ओर मुड़ता है, उसे यह आनंद महसूस होगा। जबकि दूसरी ओर, विश्वासियों के बीच दुश्मनी और शत्रुता बुरी है, जिससे नेक आत्माओं को विवेक की पीड़ा महसूस होती है जो दिल और आत्मा को घुटन देने के लिए काफी बड़ी होती है। मैंने खुद, शायद सौ से ज़्यादा बार, अनुभव किया है कि जब मैं किसी विश्वासी भाई के प्रति दुश्मनी महसूस करता हूँ, तो मुझे ऐसी पीड़ा हुई है कि इससे मुझे कोई संदेह नहीं रह गया है कि यह मेरे बुरे काम की तत्काल सजा थी।

दूसरा उदाहरण: जो योग्य हैं उनके प्रति सम्मान रखना और जो योग्य हैं उनके प्रति दया रखना और उनका सम्मान करना, ये अच्छे दया दिखाने कर्म हैं। इन अच्छे कर्मों में इतना आनंद और संतोष है कि परलोक के पुरस्कार महसूस होते हैं, जिससे व्यक्ति सम्मान और के लिए इस हद तक तैयार हो जाता है कि वे अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक माँ को अपने बच्चे के प्रति महसूस की गई करुणा से जो आनंद और पुरस्कार मिलता है, वह उसे अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रेरित कर सकता है। मुर्गी जो अपने बच्चे को बचाने के लिए शेर पर हमला करती है, वह एक मुर्गी है जो अपने बच्चे को बचाने के लिए शेर पर हमला करती है।

पशु जगत में इस सत्य का उदाहरण। इसका मतलब है कि करुणा और सम्मान में तत्काल पुरस्कार मिलता है। उदारता और प्रयास के महान लोग इसे महसूस करते हैं, और इस प्रकार उनका एक वीर चरित्र और रवैया होता है।

और उदाहरण के लिए, लालच और अपव्यय में एक सजा है -
लगातार शिकायतें, असंतोष, चिंता और दिल का दर्द लालची, बेकार लोगों को अपना होश खोने का कारण बनता है। और ईर्ष्या में एक तत्काल सजा होती है जो इसे महसूस करने वाले को झुलसा देती है। जबकि संतोष और ईश्वर पर भरोसा होने पर हमें एक तत्काल, सुखद इनाम मिलता है जो गरीबी और ज़रूरत के सभी क्लेशों और दर्द को दूर करता है।

एक और उदाहरण के तौर पर, घमंड और अहंकार इतने भारी बोझ हैं कि एक घमंडी व्यक्ति हर किसी से सम्मान की मांग करता है। चूँकि वे तिरस्कृत हैं

इस इच्छा के कारण, वे निरंतर पीड़ा सहते हैं। सम्मान दिया जाता है, इसे मांगा नहीं जाता।

एक अन्य उदाहरण: विनम्रता और अहंकार का परित्याग करने से मिलने वाला सुखद पुरस्कार, व्यक्ति को स्वयं को प्रिय बनाने के भारी, घृणित बोझ से बचाता है।

और उदाहरण के लिए, लोगों के शब्दों और कार्यों के बारे में बुरा सोचने या गलत व्याख्या करने पर तुरंत सज़ा मिलती है। "जो कोई भी मारता है, वह मारा जाता है" नियम के अनुसार, जो दूसरों के बारे में बुरा सोचते हैं, उनके बारे में भी बुरा सोचा जाता है। जो लोग अपने विश्वासी भाइयों और बहनों के कार्यों की गलत व्याख्या करते हैं, उनके कार्यों की भी गलत व्याख्या की जाती है, और इस प्रकार वे इस गलत व्याख्या के लिए सज़ा भुगतते हैं।

और यह सूची आगे बढ़ती जाती है; सभी अच्छे और बुरे कर्मों और अच्छे और बुरे नैतिक मूल्यों को इसी मानक के अनुसार माना जाना चाहिए। मैं ईश्वरीय दया से आशा और अपेक्षा करता हूँ कि जो लोग आध्यात्मिकता और नैतिकता में कुरान की चमत्कारिकता का अनुभव करते हैं या उसका स्वाद लेते हैं, जो इस समय रिसाले-ए-नूर के माध्यम से प्रकट होता है , वे भी इन आध्यात्मिक सुखों का अनुभव करते हैं, और मुझे आशा है कि वे बुरे नैतिक मूल्यों से पीड़ित नहीं होंगे, ईश्वर की इच्छा से।

एक और महत्वपूर्ण बात

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> मैंने जिन्न और मनुष्य को इसलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी ही इबादत करें। मैं उनसे न तो रोज़ी की माँग करता हूँ और न यह माँगता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ। निस्संदेह अल्लाह ही सर्वज्ञ, प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली और अत्यन्त प्रभावशाली है। (51:56-58)

मैं उपरोक्त श्लोकों के अत्यंत सुन्दर एवं उदात्त अर्थों के तीन पहलुओं को संक्षेप में समझाऊंगा।

पहला पहलू

अपने रसूल को सम्मान और महिमा देने के लिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर कभी-कभी स्वयं को कुछ ऐसी अवस्थाओं से परिचित कराता है जो रसूल से संबंधित हो सकती हैं।
उपरोक्त आयतों में यह कहते हुए कि, "मैंने तुम्हें अपनी उपासना करने के लिए पैदा किया है, न कि तुमसे भोजन की मांग करने के लिए", ईश्वर का वास्तव में मतलब है कि, "मेरा रसूल अपने रसूल होने के कर्तव्य और तुम तक उपासना के कर्तव्यों को पहुंचाने की सेवा के बदले में तुमसे कोई पारिश्रमिक या इनाम या तुमसे भोजन की मांग नहीं करता है।"

दूसरा पहलू

मानवता, जो अपने भरण-पोषण में इतनी अधिक व्यस्त है, यह न सोचे कि भरण-पोषण के लिए काम करना उसे उपासना के कर्तव्यों से वंचित करता है, न ही भरण-पोषण को उपासना की उपेक्षा करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल करे, इसलिए श्लोक में कहा गया है, "तुम उपासना के लिए बनाए गए हो। तुम्हारे निर्माण का मुख्य उद्देश्य अपने लिए, अपने परिवार के लिए या जानवरों के लिए भरण-पोषण प्राप्त करने के लिए काम करना नहीं है। दूसरे शब्दों में, तुम उस भरण-पोषण को प्राप्त करने के लिए नहीं बनाए गए हो, जिसे मैंने तुम्हारे लिए उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है। मैं सर्व-प्रदाता हूँ, और तुम्हारे और तुम्हारे आश्रितों, मेरे सेवकों के लिए जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें उपलब्ध कराता हूँ। इसलिए, यद्यपि तुम्हारे भरण-पोषण के लिए काम करना, जिसे मैंने बनाया है और तुम्हें देने का बीड़ा उठाया है, उपासना का एक रूप है, लेकिन इसे उपासना के आवश्यक कर्तव्यों की उपेक्षा करने का बहाना न बनाओ!"

वाक्पटुता का यह स्थापित नियम है कि यदि किसी शब्द का स्पष्ट अर्थ स्पष्ट और स्वतः स्पष्ट है, तो उस शब्द से अभिप्राय उस अर्थ से नहीं है, बल्कि उससे अपेक्षित अर्थ से है या उस पर निर्भर है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से कहते हैं, जिसके बारे में सभी जानते हैं कि उसने कुरान को कंठस्थ कर लिया है, "तुम हाफ़िज़ हो, " तो आप वही कह रहे हैं जो पहले से ही ज्ञात है। तो, अभिप्रेत अर्थ यह है: "मैं जानता हूँ कि तुम हाफ़िज़ हो। " आप उन्हें ऐसी बात बता रहे हैं जो वे नहीं जानते।

इस प्रकार, इस नियम के आधार पर, उस श्लोक का अर्थ जो यह बताता है कि ईश्वर को भोजन नहीं दिया जाना चाहिए, यह है: "तुम अपने लिए या मेरे अन्य प्राणियों के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए नहीं बनाए गए हो, जिनकी आपूर्ति का भार मैंने उठाया है। तुम्हारा आवश्यक कर्तव्य उपासना है। मेरे आदेशों के अनुसार अपना भोजन प्राप्त करने का प्रयास करना भी उपासना का एक रूप है, लेकिन शर्त यह है कि यह तुम्हें उपासना के आवश्यक कर्तव्यों से नहीं रोकना चाहिए।"

तीसरा पहलू

जैसा कि सूरत अल-इखलास में , न तो वह पैदा करता है, न ही वह पैदा हुआ है (112: 3) **का स्पष्ट अर्थ स्पष्ट** और स्व-स्पष्ट है, इसका अभिप्रेत अर्थ यह है: "जिनके माता-पिता और बच्चे हैं वे भगवान नहीं हो सकते।" इसलिए, यह घोषित करने के लिए कि न तो पैगंबर ईसा या पैगंबर उज़ैर (एज़्रा), उन पर शांति हो, न ही फ़रिश्ते, न ही आकाशीय पिंड, न ही किसी भी व्यक्ति द्वारा देवता माने जाने वाली कोई अन्य वस्तुएँ भगवान हो सकती हैं, आयत इस बात पर ज़ोर देती है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर समय और स्थान या सृष्टि के लिए विशेष रूप से किसी भी अन्य विशेषता की सीमाओं से पूरी तरह मुक्त है। इसी तरह, यह कहकर कि महामहिम के सभी-प्रदानकर्ता,

जो आपकी पूजा का एकमात्र उद्देश्य है, वह आपसे प्रावधान नहीं चाहता है, न ही आपको उसे खिलाने के लिए बनाया गया है, चर्चा के तहत श्लोक का अर्थ है, "जिन्हें प्रावधान की आवश्यकता है या भोजन प्रदान किया जाता है, वे देवता नहीं हो सकते हैं और पूजा के योग्य नहीं हैं।"

नर्सी ने कहा

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

... या जब वे दोपहर के समय आराम कर रहे थे (7: 4)।

यह राफ़त बे के उस प्रश्न के उत्तर में लिखा गया था, जिसका सम्बन्ध था ... या जब वे दोपहर के समय आराम कर रहे होते थे, तथा यह उनकी हीरे जैसी कलम को आलस्य से बचाने के लिए था, जो जेल में सुबह की प्रार्थना के बाद सोने के कारण उत्पन्न होती है, अन्य कैदियों की तरह जो रिसाले-ए-नूर के छात्र नहीं हैं।

झपकी के अर्थ में नींद तीन प्रकार की होती है:

पहला है ग़ालूला, जो भोर से लेकर सुबह की नमाज़ के समय से लेकर नमाज़ के निषेध समय के अंत तक की नींद है (सूर्योदय के लगभग पैंतालीस मिनट बाद)। एक हदीस **के अनुसार** इस तरह की नींद से रोज़गार में कमी और अनुत्पादकता आती है, और यह पैगंबर के आचरण के विपरीत है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। किसी के जीविका के लिए काम करने की तैयारी के लिए सबसे उपयुक्त समय वह है जब मौसम ठंडा हो, दिन के शुरुआती घंटे।135 जब यह समय बीत जाता है, तो सुस्ती छा जाती है। कई अनुभवों से यह स्थापित हो चुका है कि सुस्ती न केवल दैनिक काम और आजीविका कमाने के लिए प्रतिकूल है, बल्कि यह अनुत्पादकता का भी कारण बनती है।

दूसरी तरह की नींद फ़ायलूला है। यह दोपहर की नमाज़ से लेकर सूर्यास्त तक की होती है। इससे जीवन में कमी आती है। यानी, यह दिन को छोटा कर देती है और इसे अर्ध-नींद की अवस्था में गुजार देती है। साथ ही, चूँकि दिन के ज़्यादातर भौतिक और अभौतिक परिणाम दोपहर की नमाज़ के बाद प्राप्त होते हैं, इसलिए उस समय को नींद में बिताने से व्यक्ति इन परिणामों को प्राप्त करने से वंचित रह जाता है और ऐसा लगता है जैसे दिन जिया ही नहीं गया।

---

[135] एट-तिर्मिधि, "बुयू'" 6; अबू दाऊद, "जिहाद" 78. (ट्र.)

तीसरा है कय्युला। यह दोपहर के आसपास होता है और पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की प्रथा के अनुसार सराहनीय है , क्योंकि यह रात में प्रार्थना करने के लिए उठने में सहायक है। यह एक सराहनीय प्रथा के रूप में इस तथ्य से और मजबूत हो जाता है कि अरब प्रायद्वीप में यह "सिएस्ता" दोपहर के समय काम से अस्थायी आराम देता है, जब यह सबसे गर्म होता है। यह नींद जीवन और प्रावधान दोनों में वृद्धि का कारण है, आधे घंटे का कय्युला

रात में दो घंटे की नींद के बराबर है। इसका मतलब है कि यह हर दिन एक व्यक्ति के जीवन में डेढ़ घंटे जोड़ता है। यह मौत के भाई नींद की गिरफ्त से डेढ़ घंटे बचाता है और इसे अपनी आजीविका के लिए काम करने के समय में जोड़ता है।

नर्सी ने कहा

* * *

“यह भी अच्छा है”

सुबह की नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली आयतों में से एक, "हज़ारों-हज़ारों बरकतें और हज़ारों-हज़ार बार सलामती हो आप पर, ऐ रसूल-ए-खुदा!" पढ़ते समय, दूर से ही मेरे मन में एक सूक्ष्म अर्थ उभर आया। इसे पूरी तरह से समझ पाने में असमर्थ होने के कारण, मैं सिर्फ़ एक-दो वाक्यों का उल्लेख करके इसका संकेत दे रहा हूँ।

मैंने देखा कि रात का समय दुनिया के नए खुले हुए महल जैसा है। मैं देर शाम या सुबह की नमाज़ ('इशा') के दौरान उस महल में दाखिल हुआ।

कल्पना के असाधारण विस्तार और मनुष्य के संपूर्ण सृष्टि से सहज जुड़ाव के कारण, मैंने विशाल दुनिया को एक हवेली से ज़्यादा कुछ नहीं देखा। मनुष्य और दूसरे जीव-जंतु इतने छोटे हो गए कि वे अदृश्य हो गए। कल्पना से मैंने केवल मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सामूहिक व्यक्तित्व को देखा, जिसने उस हवेली को खुश, प्यारा और रोशन कर दिया। जिस तरह कोई व्यक्ति घर में प्रवेश करते समय उपस्थित लोगों का अभिवादन करता है,137 मैं

136 अल-बुखारी, "इस्तिदान" 16, 39; मुस्लिम, "फ़दा'इल" 84. (ट्र.)

137 अहमद (मुहम्मद) के व्यक्तित्व तक पहुँचने वाली दया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अनिवार्य रूप से अनंत काल तक उनके पूरे समुदाय की जरूरतों से संबंधित है। इस कारण से, अंतहीन बधाई की जगह है। इस पर विचार करें: यदि कोई ऐसे विशाल घर में प्रवेश करता है जो दुनिया की तरह उजाड़, खाली और लापरवाही के कारण अंधेरा है, तो वह कितना भयभीत, निराश और उत्तेजित होगा। फिर अचानक घर में रोशनी होती है और एक परिचित, मिलनसार, प्यारा, प्रिय और महान लेफ्टिनेंट प्रकट होता है। यदि वह घर की सभी फिटिंग और साज-सज्जा के माध्यम से उसके दयालु और उदार मालिक का वर्णन और परिचय देता है, तो आप अन-

मैं यह कहने की इच्छा से अभिभूत था कि, "ऐ रसूल अल्लाह, आप पर हज़ारों-हज़ार बार शांति हो!" यह ऐसा था मानो मैं उन्हें उतनी ही बार सलाम कर रहा हूँ जितने दुनिया में इंसान और जिन्न हैं। यानी मैंने सलाम किया। मैंने कहा: मैंने आपके प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत किया है, मैंने आपके मिशन को स्वीकार कर लिया है, मैं आपके द्वारा लाए गए कानूनों और आदेशों का पालन करता हूँ, और मैं इन अभिवादनों के माध्यम से बताता हूँ कि वे हमारे हमलों से सुरक्षित रहेंगे। सभी सदस्यों, यानी मेरी दुनिया के सभी चेतन प्राणियों - सभी जिन्न और इंसानों - को बोलने के लिए कहकर, मैंने प्रत्येक के नाम पर शांति की पेशकश की, जिसका अर्थ ऊपर वर्णित सभी अर्थों से है।

चूँकि जिस तरह पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - अपने द्वारा लाए गए प्रकाश और उपहारों के माध्यम से मेरी दुनिया को रोशन करते हैं, उसी तरह वे सभी की दुनिया को भी रोशन करते हैं और उन्हें नेमतों से भर देते हैं, मैंने कृतज्ञतापूर्वक उत्तर दिया, "हे ईश्वर के रसूल, आप पर हज़ारों-हज़ारों आशीर्वाद हों!" मेरा मतलब था, "हम आपकी इस अच्छाई का जवाब देने में असमर्थ हैं, इसलिए हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए प्रार्थना करते हैं कि हमारे निर्माता की दया के खजाने से स्वर्ग के निवासियों की संख्या के बराबर दया आप तक पहुँचे।"

अपनी इबादत और बंदगी के सिलसिले में और सृष्टि से सृष्टिकर्ता की ओर मुड़ने के कारण, अहमद (मुहम्मद) का व्यक्तित्व, उन पर शांति और बरकत हो, उन बरकतों की चाह रखता है, जिनका अर्थ दया है, जबकि उनके संदेशवाहक के सिलसिले में - सृष्टिकर्ता से सृष्टि की ओर संदेशवाहक होने के नाते - उन्हें शांति की चाह है। जिस तरह वह उतनी ही शांति के हकदार हैं, जितने जिन्न और इंसान हैं, और हम उसी हद तक अपनी निष्ठा का सामान्य नवीनीकरण पेश करते हैं, उसी तरह वह दया के खजाने से उतनी ही बरकतों के हकदार हैं, जितने आसमान में रहने वाले हैं और हर एक के नाम पर। क्योंकि उनके द्वारा लाए गए प्रकाश से सभी चीजों की पूर्णता स्पष्ट हो गई है, सभी मौजूदा चीजों और प्राणियों का मूल्य स्पष्ट हो गया है, भगवान द्वारा प्रत्येक प्राणी को सौंपे गए कर्तव्य को देखा जा सकता है, और प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व का दिव्य उद्देश्य ज्ञात हो गया है। इसलिए, चूंकि हर चीज का यह कहना निश्चित है, "हे ईश्वर के दूत, आप पर शांति और बरकत हो!" इसे उसके स्वभाव की भाषा में उच्चारण करते हुए, हम सभी के नाम पर कहते हैं, "हजारों-हजारों आशीर्वाद और शांति, हजारों-हजारों बार

समझिए कि इससे कितनी खुशी, अपनापन, प्रसन्नता, प्रकाश और उल्लास मिलेगा। आप इस बात से रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए बधाई के मूल्य और आनंद का अंदाजा लगा सकते हैं।

हे ईश्वर के रसूल, आप पर और जिन्नों और मनुष्यों और फ़रिश्तों और सितारों की संख्या पर कृपा हो!

> तुम्हारे लिए यही काफ़ी है कि ईश्वर स्वयं अपने रसूल को बरकत प्रदान करे और उसके फ़रिश्ते भी उसे बरकत और शांति प्रदान करें।

नर्सी ने कहा

* * *

पारलौकिक सिद्धांत के बारे में

अस्तित्व की एकता (वाहदत अल-वुजूद)

मेरे प्रिय भाई!

आप अस्तित्व की पारलौकिक एकता की व्याख्या चाहते हैं। आप मुहीद-दीन इब्न अल-अरबी138 के इस सिद्धांत के बारे में रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में पर्याप्त और ठोस व्याख्याएँ पा सकते हैं। अभी के लिए हम बस इतना ही कहते हैं:

वर्तमान समय में लोगों को एकता का सिद्धांत सिखाना गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। जैसे रूपक और उपमाएँ विद्वानों के हाथों से अशिक्षित अज्ञानी लोगों के हाथों में जाने पर अक्षरशः सत्य मानी जाती हैं,139 वैसे ही जब एकता जैसे गंभीर मामले को लापरवाह आम लोगों की चर्चाओं में शामिल किया जाता है, जो हर चीज़ को कार्य-कारण के नज़रिए से देखते हैं, तो वे इसे प्रकृतिवाद के साथ भ्रमित करते हैं, और नुकसान के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण उदाहरण सामने आते हैं:

पहला उदाहरण: जबकि सत्ता की एकता का सिद्धांत सर्वशक्तिमान ईश्वर के कारण ब्रह्माण्ड को नकारने पर आधारित है, जब इसे असावधान आम लोगों द्वारा अपना लिया जाता है और विशेष रूप से, जब यह भौतिकवादी विचारों से दूषित मन में प्रवेश करता है, तो यह ब्रह्माण्ड और भौतिकता के कारण ईश्वर को नकारने का एक रूप बन जाता है।

दूसरा उदाहरण: सत्ता की एकता का मार्ग ईश्वर के अलावा किसी भी अन्य चीज़ के प्रभुत्व को इतनी तीव्रता और शक्ति से अस्वीकार करता है कि वह हर चीज़ को नकार देता है-

---

[138] मुहीद-दीन इब्न अल-अरबी (1165-1240): सबसे महान और सबसे प्रसिद्ध सूफी गुरुओं में से एक। उनके अस्तित्व की पारलौकिक एकता के सिद्धांत, जिसे अधिकांश लोगों ने अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के रूप में गलत समझा है, ने उन्हें अंतहीन विवादों का लक्ष्य बना दिया। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं फुसुस अल-हिकम और अल-फुतुहात अल-मक्कियाह। (ट्र.)

139 गौर करें कि कैसे दो फ़रिश्ते, जिन्हें बैल और मछली कहा जाता है, जिनके ऊपर एक हदीस हमें बताती है कि धरती खड़ी है, आम लोगों द्वारा एक विशाल बैल और एक बहुत बड़ी मछली के रूप में माना जाने लगा। इस हदीस की व्याख्या के लिए , पंद्रहवीं चमक का पहला स्टेशन देखें।

द्वैत को दूर करते हुए ईश्वर के अलावा किसी और चीज़ को नहीं पहचानता। यह अनिवार्य रूप से किसी भी चीज़ के स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानने से इनकार करता है, शारीरिक, बुराई करने वाली आत्मा की तो बात ही छोड़िए। हालाँकि, वर्तमान में प्रकृति को रचनात्मकता का श्रेय देने के विचार की प्रधानता, और शारीरिक, बुराई करने वाली आत्माओं का गर्व और अहंकार से फूलना, और एक हद तक परलोक और सृष्टिकर्ता को भूल जाना, कुछ लोगों को अपनी बुराई करने वाली आत्माओं के नियंत्रण में आने और फिरौन जैसी स्थिति ग्रहण करने, खुद को पूजा की वस्तु के रूप में लेने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, ऐसे लोगों को अस्तित्व की एकता के सिद्धांत का सुझाव देना बुराई करने वाली आत्मा को इस हद तक फुला सकता है कि - ईश्वर हमें ऐसी चीज़ से बचाए - इसे अब और नियंत्रित नहीं किया जा सकता है।

तीसरा उदाहरण: सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी परिवर्तनों, फेरबदल, विभाजन और समय या स्थान में समझे जाने वाले अस्तित्व से पूर्णतः मुक्त और मुक्त है। अस्तित्व की एकता का सिद्धांत ऐसी अवधारणाओं को जन्म देता है जो उसके आवश्यक अस्तित्व, दिव्यता और इस तथ्य के लिए उपयुक्त नहीं हैं कि वह सभी दोषों से मुक्त है, और इस प्रकार झूठे सुझावों और संगति की ओर ले जाता है।

जो व्यक्ति सत्ता की एकता की बात करता है, उसके मन और आत्मा में इतनी महान गहराई होनी चाहिए कि वह मानसिक रूप से धरती से उठकर आकाश से परे जाकर, ब्रह्माण्ड को पीछे छोड़कर, ईश्वर के उत्कृष्ट सर्वोच्च सिंहासन पर अपनी दृष्टि जमा सके और सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व में इतना लीन हो जाए कि वह भौतिक ब्रह्माण्ड को देखने में असमर्थ हो जाए और विश्वास की दृढ़ता से वह सब कुछ को अद्वितीयता के एक में नष्ट होते हुए देखे। अन्यथा, यदि वह धरती पर खड़ा होकर, धरती से ब्रह्माण्ड को देखता है, प्रत्येक चीज और प्रत्येक घटना को कारण और प्रभाव के दृष्टिकोण से देखता है, तो संभव है कि वह प्रकृतिवाद के दलदल में गिर जाए और कार्य-कारण में डूब जाए। जो व्यक्ति अपने मन में सर्वोच्च सिंहासन जितना ऊंचा उठता है, वह जलालुद-दीन-अर-रूमी की तरह कह सकता है,140 “सुनो! तुम जो शब्द हर किसी के द्वारा बोले जा रहे हो, उसे तुम ऐसे सुन सकते हो जैसे कि वे सर्वशक्तिमान ईश्वर से आ रहे हैं (“प्राकृतिक” ग्रामो-फोन के माध्यम से)।” लेकिन जो जलालुद्दीन जितना ऊँचा नहीं उठ सकता, या जो यह नहीं देख सकता कि ज़मीन से लेकर सिंहासन तक के सभी प्राणी दर्पण के रूप में हैं, उससे अगर तुम कहो, "कान लगाओ! तुम्हें ईश्वरीय वाणी सुनाई देगी

[140] जलालुद-दीन अर-रूमी, मौलाना (मेवलाना) (1207-1273): इस्लामी सूफीवाद के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक। वे चक्करदार दरवेशों के मौलवी (मेवलवी) संप्रदाय के संस्थापक थे, और अपने मथनवी के लिए प्रसिद्ध थे, जो छह खंडों में धार्मिक जीवन का एक महाकाव्य है। पश्चिमी पाठकों के लिए, अर-रूमी सूफीवाद के कवियों में एक शक्तिशाली आवाज है। (अनुवाद)

हर चीज़ से दूर, वे झूठी धारणाओं में इतने उलझ जाएंगे कि ऐसा लगेगा मानो वे सर्वोच्च सिंहासन से ज़मीन पर गिर रहे हैं।

> कह दो, "ऐ अल्लाह!" फिर उन्हें उनके व्यर्थ कार्यों में लगे रहने दो (6:91)।

> यह कैसे संभव हो सकता है कि जो व्यक्ति पृथ्वी में अटका हुआ है वह ऊपर उठकर समस्त लोकों के स्वामी को जान सके?

> वह पवित्र है, जो अपने सार में पूर्णतः पवित्र है, तथा उससे किसी भी प्रकार की समानता से रहित है, तथा अपने गुणों में किसी भी समानता से परे है, तथा जिसकी प्रभुता की गवाही उसकी सभी निशानियाँ देती हैं, उसकी महिमा महान है, तथा उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है।

एक प्रश्न का उत्तर

मेरे पास मुस्तफा साबरी141 और मूसा बेकूफ142 के विचारों का मूल्यांकन या तुलना करने का समय नहीं है। मैं केवल इतना कहूंगा कि दोनों विपरीत दिशाओं में चरम पर चले गए। हालाँकि इस मामले में उन्होंने मुस्तफा साबरी का बचाव किया जो मूसा बेकूफ से ज़्यादा सही थे, लेकिन मुहीद-दीन इब्न अल-अरबी जैसे व्यक्ति को नीचा दिखाना सही नहीं है, जो इस्लामी विज्ञान का चमत्कार था।

बेशक मुहीद-दीन सही मार्ग पर चलने वाले और स्वीकार्य व्यक्ति थे, लेकिन यह संभव नहीं है कि वह अपने सभी कामों में एक सच्चे मार्गदर्शक या अच्छे शिक्षक हो सकें। चूँकि उन्होंने अक्सर सच्चाई सिखाने में संतुलन नहीं रखा, इसलिए कई बार उन्होंने अहले सुन्नत के नियमों का विरोध किया और उनके कुछ शब्द गुमराह करने वाले प्रतीत होते हैं, हालाँकि वह खुद गुमराही से मुक्त थे। कभी-कभी, एक शब्द कुफ्र लग सकता है, लेकिन जिसने इसे बोला वह कुफ्र नहीं है। मुस्तफा साबरी ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया; वह अहले सुन्नत के नियमों के प्रति अपनी अत्यधिक श्रद्धा के कारण कुछ बिंदुओं के बारे में अति पर चले गए।

जहाँ तक मूसा बेकूफ़ का सवाल है, उनके विचारों में नवाचारों (बिदत) का अत्यधिक समर्थन था, और उन्होंने आधुनिकता को जो रियायतें दीं, वे बहुत बड़ी ग़लती में थे। उन्होंने अपनी झूठी व्याख्याओं से इस्लाम की कुछ सच्चाइयों को भ्रष्ट कर दिया है।

---

141 मुस्तफा साबरी इफेंडी (1869-1954)। वह ओटोमन राज्य के अंतिम वर्षों में एक धार्मिक विद्वान और शेखुल-इस्लाम थे। 1922 में तुर्की छोड़ने के बाद, वह अपनी मृत्यु तक मिस्र में निर्वासन में रहे। (ट्र.)

142 मूसा जरुल्लाह बिगियेफ़ (बेकुफ़)। वे तुर्किस्तान के मूल निवासी थे और एक "सुधारवादी" मुस्लिम विद्वान थे। उन्हें 1904 में रूसियों द्वारा निर्वासन में भेज दिया गया था। उन्होंने कई रचनाएँ लिखीं।

चूँकि वह अबुल-अला अल-मारी143 को, जिसे (सत्यापन करने वाले मुस्लिम विद्वानों द्वारा) अस्वीकार कर दिया गया था, प्रामाणिक सत्यापन करने वाले विद्वानों से अधिक महत्व देता था, और मुहयिद-दीन के उन विचारों का अनुपातहीन रूप से समर्थन करता था जो अहल-उल-सुन्ना का विरोध करते थे, क्योंकि वे उसके अपने विचारों के अनुकूल थे, इसलिए वह अत्यधिक अति पर चला गया।

मुहीद-दीन ने कहा, "जो लोग हम में से नहीं हैं (जो हमारे पद को नहीं जानते) उन्हें हमारी किताबें नहीं पढ़नी चाहिए।" उनका मतलब यह था कि ये किताबें ऐसे लोगों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। वास्तव में, इस समय मुहीद-दीन की किताबें पढ़ना हानिकारक है, खासकर अस्तित्व की एकता से जुड़ी उनकी अवधारणाएँ।

नर्सी ने कहा

* * *

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

भविष्य और दुनिया में हमारे अंत के बारे में विचार के चश्मे से अपनी जेल की खिड़की से, जश्न की एक जगमगाती रात में, इंसानों की जय-जयकार, जिसके लिए वास्तव में रोना चाहिए, देखते हुए मेरी कल्पना के सामने एक दृश्य उभर आया। जिस तरह से कब्रिस्तान में मरे हुए लोगों को फिल्म के पर्दे पर जीवित दिखाया जाता है, वैसे ही मुझे लगा जैसे मैंने उन लोगों की चलती-फिरती लाशें देखी हैं जो निकट भविष्य में कब्रिस्तान के निवासी होंगे। मैं उन मौज-मस्ती करने वालों के लिए रोया। अचानक मेरे ऊपर एकाकीपन और दया की भावना छा गई। मैंने अपनी बुद्धि की ओर रुख किया और सत्य से पूछा, "इस कल्पना के बारे में क्या?" सत्य ने उत्तर दिया,

> पचास साल बाद, जो लोग आज बहुत खुश होकर मौज-मस्ती कर रहे हैं, उनमें से सौ में से पचपन बूढ़े हो जाएँगे, लगभग सत्तर साल की उम्र में, उनकी पीठ झुकी होगी, जबकि बाकी पैंतालीस कब्रिस्तान में सड़ रहे होंगे। वे सुंदर चेहरे और वह आनंदित हँसी अपने विपरीत में बदल चुके होंगे। चूँकि इस नियम के अनुसार कि "जो कुछ भी आ रहा है वह निकट है," यह एक हद तक वास्तविकता है कि हम निकट भविष्य में होने वाली चीजों को पहले से ही घटित होते हुए देख सकते हैं; इस प्रकार निश्चित रूप से आप जो देखते हैं वह कल्पना नहीं है।

143 अबुल-अला अल-मा'अरी (973-1057): कविताओं, टिप्पणियों, शोकगीतों और धार्मिक ग्रंथों के एक सीरियाई अरब लेखक। उनका जन्म और उनका अधिकांश जीवन सीरिया के मा'आरा में बीता। वे बचपन से ही अंधे थे। अपनी माँ की मृत्यु के बाद, वे एक गुफा में रहते थे और तपस्वी जीवन अपनाते थे। (ट्र.)

चूँकि इस दुनिया की असावधानी भरी हँसी कड़वी सच्चाइयों पर पर्दा है, जिसके लिए वास्तव में रोना चाहिए, और यह अस्थायी है और घटने के अधीन है, तो निश्चित रूप से यह केवल उस तरह का आनंद है जो धार्मिक रूप से अनुमेय, आभारी और निर्दोष है और जो ईश्वर की सर्वव्यापकता के बारे में जागरूकता की ओर ले जाता है और असावधानी को दूर करता है, और वे सुख जो उनके द्वारा लाए गए पुरस्कार के माध्यम से शाश्वत हैं - यह केवल इस तरह का आनंद और सुख है जो मनुष्यों के अनंत काल के लिए प्यार करने वाले दिलों को खुश करेगा और उनकी आत्माओं को स्थायित्व से मोहित करेगा। इस कारण से, ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो धार्मिक उत्सव के दिनों में ईश्वर को धन्यवाद देने और उसका स्मरण करने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित करती हैं ताकि असावधानी हावी न हो या धार्मिक रूप से निषिद्ध कार्यों की ओर न ले जाए। यह आशा की जाती है कि धन्यवाद और ईश्वर के स्मरण के माध्यम से, इन दिनों में खुशी और आनंद की उदारता को कृतज्ञता में बदल दिया जा सकता है, जो बदले में उस उदारता को जारी रखने और बढ़ाने का कारण बन सकता है। धन्यवाद देने से उदारता बढ़ती है और असावधानी दूर होती है।

नर्सी ने कहा

* * *

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यह आयत के अर्थों में से एक के बारे में है, निश्चित रूप से मानव की शारीरिक आत्मा हमेशा बुराई का आदेश देती है (12: 53), और हदीस, "आपके दुश्मनों में सबसे हानिकारक आपकी शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा है जो आपके सीने में है।"144

जो व्यक्ति अशिक्षित और अशुद्ध शारीरिक आत्मा वाला होता है और जो खुद से प्यार करता है और उसकी सराहना करता है, वह दूसरों से प्यार नहीं कर सकता। भले ही वे किसी से प्यार करते हों, लेकिन वे ईमानदारी से ऐसा नहीं कर सकते। वे केवल उन लाभों और फायदों से प्यार करते हैं जो उन्हें दूसरे से या उसके माध्यम से मिलते हैं। ऐसे लोग हमेशा खुद को पसंद करने की कोशिश करते हैं, और खुद पर दोष नहीं लगाते; बल्कि, वे एक वकील की तरह खुद का बचाव करते हैं और दावा करते हैं कि वे त्रुटिहीन हैं।

अतिशयोक्ति के माध्यम से अपनी प्रशंसा और महानता व्यक्त करने और यहां तक कि खुद को सही ठहराने के लिए झूठ बोलने से, वे खुद को आयत की सजा के अधीन करते हैं, जिसने अपनी वासनाओं और कल्पनाओं को अपना उपास्य बना लिया है (25: 43)।

इस तरह की आत्म-प्रशंसा और खुद को प्रिय बनाने की कोशिश का उल्टा असर होता है, और इससे व्यक्ति को तिरस्कृत किया जाता है और उसके साथ ठंडा व्यवहार किया जाता है। वे अपने कार्यों में ईमानदारी और इरादे की शुद्धता भी खो देते हैं जो कि उनके लिए महत्वपूर्ण है।

144 विज्ञापन-दयालमी, अल-मुस्नद, 3:408। (ट्र.)

परलोक में पाखण्ड से कलंकित होते हैं। जो परिणाम की ओर से अन्धे और परिणाम पर विचार न करने वाले भावों के वशीभूत होकर, सुखों के मोह में मग्न होकर और विषय-वासनाओं के वशीभूत होकर मार्ग से भटक जाते हैं, ऐसे मनुष्य एक घण्टे के सुख के कारण एक वर्ष की सजा भुगतते हैं। एक क्षण के अहंकार या प्रतिशोध की तृप्ति के बदले में वे दस वर्ष की सजा भुगतते हैं। जैसे कोई मूर्ख बालक अपनी भावनाओं की तृप्ति और अपनी इच्छाओं और क्षुधा की तृप्ति के लिए एक मिठाई खरीदने के लिए अपने अध्ययन किए हुए कुरान के अन्तिम भाग को बेच देता है, वैसे ही ऐसा मनुष्य अपने हीरे जैसे अच्छे कर्मों को काँच के तुच्छ टुकड़ों के समान अपने अहंकारी सुखों का साधन बना लेता है और इस प्रकार लाभदायक कार्यों में हानि उठाता है।

> हे ईश्वर! हमें शारीरिक, दुष्ट आत्मा और शैतान की बुराई से, और जिन्न और मनुष्यों की बुराई से बचा।

* * *

एक प्रश्न

अल्प अवधि के अविश्वास के बदले में नरक में अनंत काल तक यातनापूर्ण कारावास कैसे न्याय हो सकता है?

उत्तर : दुनिया में एक मिनट में की गई हत्या की सज़ा सात लाख, आठ सौ अस्सी-चार हज़ार मिनट की सज़ा है। एक मिनट का अविश्वास कम से कम एक हज़ार हत्याओं के बराबर है। इसलिए, मानवीय न्याय के नियम के अनुसार, जो व्यक्ति बीस साल तक जीवन जीता है और फिर अविश्वास में मर जाता है, उसे सत्तावन खरब, पाँच सौ तीन अरब, दो सौ मिलियन साल की सज़ा मिलनी चाहिए।

इससे यह समझा जा सकता है कि यह आयत ईश्वरीय न्याय के कितने अनुरूप है, (वे) उसमें सदैव रहेंगे (4:169; 33:65)।

इन दो संख्याओं के बीच बड़े अंतर का कारण - अविश्वास की अवधि और उसकी सज़ा - यह है: हत्या और अविश्वास जैसे अपराध दूसरों के अधिकारों के विरुद्ध विनाश और आक्रमण हैं। एक मिनट की हत्या औसतन पीड़ित के जीवन के कम से कम पंद्रह साल का नुकसान पहुंचाती है, इसलिए हत्यारे को उन वर्षों के बदले में कारावास भुगतना पड़ता है।

जहाँ तक अविश्वास का प्रश्न है, इसका अर्थ है एक हजार एक ईश्वरीय नामों का उनके सभी अभिलेखों सहित इन्कार, ब्रह्माण्ड के अधिकारों का उल्लंघन तथा उसकी पूर्णता का इन्कार, साथ ही ईश्वरीय एकता के असंख्य प्रमाणों का खंडन तथा उनकी गवाही का इन्कार। अतः एक मिनट-

अविश्वास का एक नियम अविश्वासी को एक हजार से अधिक वर्षों के लिए सबसे निचले स्तर पर डाल देता है, और एक पूरा जीवन उसे हमेशा के लिए कैद कर देता है।

नर्सी ने कहा

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

वे स्वर्गदूतों की उच्च सभा से कुछ भी नहीं सुन सकते हैं, और (जब भी वे सुनने का प्रयास करते हैं) सभी दिशाओं से मिसाइलों का लक्ष्य बन जाते हैं, पीछे हट जाते हैं; और उनके लिए एक शाश्वत दंड है - सिवाय उसके जो चुपके से कुछ छीन लेता है, और एक भेदने वाले उल्कापिंड द्वारा पीछा किया जाता है (और नष्ट हो जाता है) (37: 8-10)

और हमने नीचे के आकाश को चिरागों से सजाया और शैतानों को भगाने के लिए उनके तीर बनाए और उनके लिए हमने आग की यातना तैयार कर रखी है (67:5)

कुछ लोगों द्वारा गुमराही की आलोचना के सम्बन्ध में, ऊपर दी गई आयतों से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण बात स्पष्ट की जाएगी। वह इस प्रकार है:

हमारे पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के आगमन से पहले, जिन्न और शैतानों में से कुछ जासूस आकाश के निवासियों की बातचीत को चुपके से सुनते थे और उन्हें भविष्यवक्ताओं, माध्यमों और कुछ अध्यात्मवादियों को अदृश्य समाचार के रूप में फुसफुसाते थे। ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की सच्चाई पर संदेह पैदा करने वाली ऐसी रिपोर्टों को रोकने के लिए, जब कुरान का अवतरण शुरू हुआ तो उन पर तारे गिराकर जासूसी करने से रोका गया। ऊपर वर्णित आयतों के बारे में तीन प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर इस प्रकार है:

सवाल

जैसा कि ऊपर वर्णित आयतों से समझा जा सकता है (हमारे पैगंबर के आगमन से पहले, उन पर शांति और आशीर्वाद हो), जासूसी करने वाले शैतान अदृश्य से संबंधित कुछ छोटी और यहां तक कि व्यक्तिगत घटनाओं के बारे में सुनने के लिए स्वर्ग की अत्यंत दूर की भूमि तक पहुंच प्राप्त करते थे। हालांकि, यह तर्कसंगत या उचित नहीं लगता है कि इस अत्यंत विशाल क्षेत्र के सभी कोनों में एक छोटी सी घटना के बारे में बात की गई होगी, और किसी भी तरह से यह बात गलत साबित हो सकती है।

कोई भी शैतान जहां चाहे वहां घुस सकता था और किसी भी घटना के बारे में, यहां तक कि अस्पष्ट रूप से भी, सुन सकता था और उसे पृथ्वी पर ला सकता था।

दूसरा, जैसा कि कुरान (3:37) में बताया गया है और पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से बताया गया है, पैगम्बरों और संत लोगों में से कुछ लोग कभी-कभी जन्नत के फल प्राप्त करते थे - जन्नत आसमान से ऊपर स्थित है - जैसे कि उन्हें पास से तोड़कर, और जन्नत को पास से निहारना। यह बताता है कि अनंत दूरी अनंत निकटता में समाहित है, जो आधुनिक दिमाग के लिए अस्वीकार्य है।

तीसरी बात यह है कि यह बात ब्रह्माण्ड के पूर्णतः बुद्धिमानीपूर्ण प्रशासन की बुद्धि के अनुरूप नहीं लगती कि किसी व्यक्ति की किसी छोटी सी स्थिति के बारे में विश्वव्यापी, विशाल आकाश की उच्च सभा द्वारा चर्चा की जाए। फिर भी, ये तीनों बातें इस्लाम की सच्चाइयों में से मानी जाती हैं।

उत्तर : सबसे पहले: यह तथ्य कि जासूसी करने वाले शैतानों को आसमान से उल्कापिंडों द्वारा खदेड़ा जाता है, जिसे इस आयत में व्यक्त किया गया है, और, वास्तव में, हमने सबसे निचले आकाश (दुनिया के स्वर्ग) को दीपों (तारों) से सजाया है, और शैतानों को भगाने के लिए उनसे मिसाइलें बनाई हैं (67: 5), पंद्रहवें शब्द (शब्दों में शामिल) में सात चरणों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

दूसरा: हम ऊपर पूछे गए तीन सत्यों को, जो तर्क से बहुत दूर माने जाते हैं, तुलना के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे, जिससे संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों को समझने में मदद मिलेगी।

मान लीजिए कि किसी देश का सैन्य कार्यालय पूर्व में है, न्याय मंत्रालय पश्चिम में है, शिक्षा मंत्रालय उत्तर में है, धार्मिक मामलों का विभाग दक्षिण में है और सिविल सेवा केंद्र में है। जब ये कार्यालय या विभाग रेडियो, टेलीफोन और टेलीग्राफ के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े और संवाद करते हैं, और जब वे अपने कार्यों को सबसे नियमित और व्यवस्थित तरीके से करते हैं, तो पूरा देश एक ही समय में सेना का कार्यालय होगा, साथ ही न्याय मंत्रालय, धार्मिक मामलों और सिविल सेवा विभाग भी होगा।

एक और उदाहरण देते हुए, संघीय राज्यों या उपनिवेशों से बना एक देश व्यापार, औपनिवेशिक या संघीय संबंधों के माध्यम से अपने सभी आश्रित भागों पर अधिकार रखता है। प्रत्येक राज्य इन प्रकार के संबंधों के माध्यम से देश के लोगों से जुड़ा हुआ है। इन राज्यों के मामले, चाहे वे एक दूसरे से कितने भी दूर क्यों न हों, एक दूसरे को छूते हैं, और वे हर घर में, यहाँ तक कि देश के हर व्यक्ति में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

नागरिकों के छोटे-मोटे मामले छोटे विभाग में निपटाए जा सकते हैं

इस संपर्क के कारण उन्हें केन्द्र सरकार के पास नहीं भेजा जाता।
हालाँकि, चूंकि कानून और नियम सामान्य संविधान पर निर्भर हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि जो मामले छोटे विभागों में निपटाए जाते हैं, वे वास्तव में केंद्र सरकार द्वारा निपटाए जाते हैं।

तो, जैसा कि इन दो तुलनाओं में है, हालांकि स्वर्ग की भूमि
पृथ्वी से बहुत दूर, विशेष रूप से इसके "केंद्र" और "राजधानी" के संबंध में, इसके पास संचार का एक नेटवर्क है जो पृथ्वी पर लोगों के दिलों तक पहुँचनेमें सक्षम है। इसके अलावा, न केवल भौतिक प्राणियों की दुनिया के साथ संबंध हैं, बल्कि चूँकि स्वर्ग की भूमि में आत्माओं की दुनिया और चीजों के आंतरिक आयाम की दुनिया शामिल है, इसलिए एक तरह से यह पूरी प्रकट दुनिया को शामिल करती है।

इसके अलावा, लगभग अनंत दूरी के बावजूद, स्वर्ग, जो अनंत काल के दायरे में शामिल है, का अस्तित्व के सभी क्षेत्रों के साथ अमूर्त संबंध है जो प्रकट क्षेत्र के पर्दे के नीचे स्थित हैं। जिस तरह से मानव इंद्रियाँ पूरे शरीर को प्रभावित और नियंत्रित करने में सक्षम हैं, भले ही उनके केंद्र सिर में अलग-अलग स्थानों पर हों, सर्वज्ञ और सर्व-महान निर्माता की बुद्धि और शक्ति के माध्यम से, ब्रह्मांड, यह वृहद मानव, हजारों दुनियाओं से मिलकर बना है, एक दूसरे के भीतर संकेंद्रित वृत्तों की तरह। उनमें होने वाली घटनाओं को माना जाता है

और प्रत्येक की सार्वभौमिकता या विशिष्टता और महत्वहीनता या महत्व के अनुसार व्यवहार किया जाता है। यानी, छोटे या विशेष मुद्दों को छोटे विभागों में निपटाया जाता है, जबकि महत्वपूर्ण, सार्वभौमिक मुद्दों को सार्वभौमिक, विशाल केंद्रों या कार्यालयों में निपटाया जाता है।

हालांकि, कभी-कभी ऐसा होता है कि एक छोटी सी, खास घटना ब्रह्मांड के सभी कोनों में गूंजती है। और कभी-कभी दुश्मन की सेना के खिलाफ नहीं, बल्कि धूमधाम और भव्यता का प्रदर्शन करने के लिए कोई व्यापक लामबंदी की जाती है। उदाहरण के लिए, यह दोनों इस तथ्य के कारण था कि पैगंबर मुहम्मद का आगमन, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और कुरान का अवतरण पूरे स्वर्ग में सबसे महत्वपूर्ण, पवित्र घटनाएँ थीं, और कुरान के रहस्योद्घाटन की महिमा, शानदार संप्रभुता और निस्संदेह सत्य की अतुलनीय डिग्री के दिव्य संकेत के रूप में, विशाल आकाश के दूर, ऊंचे बुर्जों पर पहरेदार तैनात किए गए थे, और पहले से कहीं अधिक संख्या में उल्कापिंडों को दागा गया था। इसने जासूसी करने वाले शैतानों के प्रतिकार का भी संकेत दिया। चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान इन ब्रह्मांडीय घोषणाओं और स्वर्गीय संकेतों की व्याख्या करता है, उन्हें सुना और जाना जाता है।

वास्तव में, जासूसी करने वाले शैतानों को निश्चित रूप से एक फ़रिश्ते की साँस से उड़ाया जा सकता है। इसलिए, उनके खिलाफ़ फ़रिश्तों को जुटाना, एक ऐसी घटना जिसे एक ज़बरदस्त, स्वर्गीय संकेत के रूप में मंचित और घोषित किया गया था, निश्चित रूप से क़ुरान के रहस्योद्घाटन की संप्रभुता की महिमा को दिखाने के लिए था। साथ ही, क़ुरान की शानदार घोषणा और विशाल स्वर्गीय लामबंदी यह व्यक्त करने के लिए नहीं थी कि जिन्न और शैतानों में इतनी शक्ति है कि वे स्वर्ग के निवासियों को लड़ने और खुद का बचाव करने के लिए मजबूर कर सकें, बल्कि यह इंगित करने के लिए कि जिन्न और शैतान सर्वोच्च दिव्य सिंहासन और स्वर्ग की दुनिया से मुहम्मद के दिल तक के लंबे रास्ते में कहीं भी हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। चूँकि क़ुरान का रहस्योद्घाटन एक राजसी सत्य था जिसके बारे में स्वर्ग में सभी फ़रिश्तों ने बात की थी, इसलिए इसके थोड़ा करीब आने के लिए शैतानों को स्वर्ग में उठने के लिए मजबूर होना पड़ा; उन्हें उम्मीद थी कि वे कुछ हद तक इसमें हस्तक्षेप कर सकेंगे, लेकिन उन्हें तुरंत ही खदेड़ दिया गया और दागे गए "मिसाइलों" से मार दिया गया। इससे पता चलता है कि रहस्योद्घाटन जो दिल तक पहुंचा

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) और जिब्रील जो उनके पास आए, और अदृश्य की सच्चाई जो उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रकट हुई, वह पूरी तरह से सही और सभी संदेहों से मुक्त थी। चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान हमें इस वास्तविकता के बारे में चमत्कारिक तरीके से सूचित करता है।

जहाँ तक इस तथ्य का सवाल है कि इसकी बहुत दूरी के बावजूद और अनंत काल के क्षेत्रों में से एक होने के बावजूद, पैगम्बर या संत होने के कुछ लोग स्वर्ग को देख सकते हैं और कभी-कभी इसके कुछ फल भी ले सकते हैं, जैसा कि ऊपर की दो तुलनाओं से समझा जा सकता है, यह क्षणभंगुर, दृश्यमान दुनिया अदृश्य और शाश्वत क्षेत्र की दुनिया के लिए एक पर्दा है। हालाँकि अनंत काल के क्षेत्र के रूप में स्वर्ग का सर्वोच्च केंद्र हमसे बहुत दूर है, लेकिन इसे अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया के दर्पण के माध्यम से हर जगह देखा जा सकता है। साथ ही, पूर्ण निश्चितता की डिग्री पर विश्वास के माध्यम से और अनुभव के आधार पर, स्वर्ग में, इस क्षणभंगुर दुनिया में कुछ प्रकार की कॉलोनियाँ या मंत्रालय हो सकते हैं, और हृदय के केबल के माध्यम से इसके और कुछ उच्च आत्माओं के बीच किसी प्रकार का संचार हो सकता है, और इसके उपहार उन तक पहुँच सकते हैं।

जहाँ तक सार्वभौमिक क्षेत्र का प्रश्न है जो किसी विशेष व्यक्तिगत मामले से संबंधित है, अर्थात् वह वास्तविकता जिसे कुरान की टीकाओं में इस प्रकार वर्णित किया गया है कि शैतान आकाश की ओर उठते हैं और अदृश्य की जानकारी ज्योतिषियों तक पहुँचाने के लिए छिपकर बातें सुनते हैं, लेकिन फिर केवल झूठी, भ्रमित खबरें लाते हैं, यह इस प्रकार होना चाहिए: इसका अर्थ यह नहीं है कि शैतान इतनी दूर तक जाते हैं कि वे

स्वर्ग की भूमि की राजधानी और विशेष समाचार प्राप्त करें। बल्कि, स्वर्ग का देश, जो वायुमंडल को भी शामिल करता है, में कुछ स्थान हैं जैसे कि चौकियाँ - रूपक को वास्तविकता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए -

जिनका पृथ्वी से संबंध है। शैतान इन विशेष स्टेशनों पर विशेष घटनाओं पर नज़र रखते हैं। मानव हृदय भी इन स्टेशनों में से एक है जहाँ प्रेरणा के दूत और शैतान युद्ध करते हैं।

जहाँ तक ईमान की सच्चाईयों और कुरान तथा पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से जुड़ी घटनाओं का सवाल है, यहाँ तक कि उनमें से जो सबसे खास हैं, उनकी चर्चा सर्वोच्च सिंहासन और आकाश के हर कोने में सबसे महान और सबसे सार्वभौमिक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक के रूप में की जाती है। ऐसा लगता है कि वे - तुलना को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए - अमूर्त आधिकारिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे जो ब्रह्मांड से संबंधित निर्णयों और घटनाओं को प्रचारित करते हैं।

साथ ही, चूँकि शैतान किसी भी तरह से पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के दिल से कुरान के रहस्योद्घाटन को दिव्य सर्वोच्च सिंहासन के क्षेत्र में हस्तक्षेप करने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए वे स्वर्ग की बात सुनने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। इसलिए, यह सबसे शानदार ढंग से, वास्तव में, चमत्कारिक रूप से प्रदर्शित और घोषित किया जाना चाहिए कि कुरान का रहस्योद्घाटन और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगंबरी कितनी महान और महान सच्चाई है, और यह दोहराया जाना चाहिए कि उनमें कुछ भी गलत खोजना या उन्हें षडयंत्रों के साथ करीब लाना असंभव है।

नर्सी ने कहा

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

उनतीसवीं चमक

उनतीसवीं चमक

ईश्वर की असीम महानता पर विचार

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

परिचय देना

... ताकि तुम सोच-विचार करो (2: 219, 266); ...ताकि वे सोच-विचार करें (7: 176; 16: 44; 59: 21); क्या वे अपने बारे में (एक बार भी) नहीं सोचते? ईश्वर ने आकाशों और धरती और उनके बीच जो कुछ है, उसे सत्य के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए ही बनाया है? (30: 8); और ...सोच-विचार करने वालों के लिए निशानियाँ हैं (10: 24; 13: 3; 45: 13), चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान सोच-विचार करने का आदेश देता है और प्रोत्साहित करता है। साथ ही, हदीस , "एक घंटे का सोच-विचार (ईश्वर की निशानियों और ईश्वरीय सत्यों पर) एक साल की (अतिरिक्त) इबादत से बेहतर है,"145 यह स्पष्ट करता है कि कभी-कभी एक घंटे का सोच-विचार एक साल की इबादत के बराबर हो सकता है, और हमें सोच-विचार करने के लिए जोरदार तरीके से प्रेरित करता है। इसलिए, पिछले तेरह सालों से, इन कुरानिक और पैगंबरी आदेशों का अपने मन और दिल से पालन करते हुए, अपने मन और दिल में चिंतन के परिणामस्वरूप उभरने वाले व्यापक प्रकाश और व्यापक सत्य को अपने लिए सुरक्षित रखने के लिए, मैंने कई शब्दों और वाक्यांशों को रिकॉर्ड किया है, इन प्रकाशों और सत्यों को प्रदर्शित करने के लिए नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व को इंगित करने और चिंतन को सुविधाजनक बनाने के लिए, और इस प्रकार चिंतन में एक व्यवस्थित तरीके का पालन करना संभव बनाने के लिए। पहले, जब मैं लिखना शुरू करता था, तो मैं इन शब्दों और वाक्यांशों का उल्लेख विभिन्न अरबी शब्दों के साथ करता था।

[145] अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 4:423; अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली अहकाम अल- कुरान 4:314। (ट्र.)

चिंतन। इस लंबे समय में मैंने उन्हें हज़ारों बार दोहराया है, इससे मैं थका नहीं हूँ, न ही उनसे मिलने वाला आनंद कम हुआ है, न ही आत्मा की उनसे ज़रूरत गायब हुई है। चूँकि ये चिंतनशील शब्द और वाक्यांश कुरान की आयतों की झलकियाँ हैं, इसलिए कभी न थकने और उनकी ताज़गी और मिठास को बनाए रखने की गुणवत्ता, जो आयतों के गुणों में से हैं, उस प्रतिबिंब के दर्पण में एक हद तक दर्शाई गई हैं।

हाल ही में मुझे एहसास हुआ कि रिसाले-ए-नूर के हिस्सों में जीवन का स्रोत और उनकी रोशनी प्रतिबिंब के इन अनुक्रमों में है। यह सोचकर कि उनका दूसरों पर भी वैसा ही प्रभाव हो सकता है जैसा उन्होंने मुझ पर डाला है, भले ही उनमें से बहुत महत्वपूर्ण हिस्से पहले से ही रिसाले-ए-नूर में शामिल किए जा चुके हैं, मैंने अपने जीवन के अंत में उन सभी को लिखने का इरादा किया, क्योंकि जब उन्हें एक साथ रखा जाता है तो और अधिक शक्ति और मूल्य पाया जाता है।

चूँकि जीवन कब समाप्त होगा, यह निश्चित नहीं है, और चूँकि मेरे वर्तमान कारावास की परिस्थितियाँ मृत्यु से भी बदतर रूप ले चुकी हैं, इसलिए मेरे जीवन के समाप्त होने की प्रतीक्षा करने के बजाय, और मेरे भाइयों के आग्रह पर, इन चिंतनों के अनुक्रमों को सात अध्यायों के रूप में लिखा गया है। केवल तीसरा अध्याय, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर पर है, यहाँ शामिल किया गया है।

तीसरा अध्याय

यह अल्लाहु अकबर (ईश्वर महान है) के दर्जों के बारे में है ।

हम यहाँ तैंतीस में से सात पदों का उल्लेख करेंगे। बीसवें अक्षर के दूसरे पद में, बत्तीसवें पद के दूसरे पद के अंत में और उसके तीसरे पद के आरंभ में कुछ महत्वपूर्ण पदों की व्याख्या की गई है। जो लोग इन पदों की सच्चाई को समझना चाहते हैं, वे उन दो पदों का संदर्भ ले सकते हैं।

प्रथम रैंक

> और कह दो, "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपनी संतान बनाई, न राज्य में कोई साझीदार बनाया, और न निर्धनता और दुर्बलता से बचानेवाला कोई संरक्षक बनाया। और उसकी महानता का गुणगान करो।" (17:11)

हे प्रभु! हम आपकी आज्ञा पर हैं!

महान है उसकी महिमा! ईश्वर महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से बड़ा है,

क्योंकि वह सृष्टिकर्ता और निर्माता है जिसने अपनी शक्ति से मानवता को ब्रह्मांड की तरह बनाया है और ब्रह्मांड को अपनी नियति की “कलम” से अंकित किया है, जैसा कि उसने उसी कलम से मानवता को अंकित किया है। क्योंकि वह वृहद ब्रह्मांड (ब्रह्मांड), उस सूक्ष्म ब्रह्मांड (मानवता) की तरह, उसकी शक्ति की कलाकृति और उसकी नियति का शिलालेख है। उसने ब्रह्मांड को एक “मस्जिद” के रूप में बनाया है, और उसमें मनुष्यों को उपासक बनाया है। उसने पूर्व को एक निवास के रूप में अस्तित्व में लाया है, और बाद वाले को उसमें रहने वाले एक सेवक के रूप में अस्तित्व दिया है।

ब्रह्मांड में उनकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई है, जबकि मानवता को रंगने का उनका तरीका भाषण के रूप में विकसित हुआ है। ब्रह्मांड में उनकी शक्ति उनकी महिमा को प्रदर्शित करती है, जबकि मानवता के प्रति उनकी दया उनके प्रावधान की व्यवस्था करती है। ब्रह्मांड में उनकी महिमा इस बात की गवाही देती है कि वे एक हैं, जबकि मानवता के लिए उनका प्रावधान यह घोषणा करता है कि वे अद्वितीय हैं। ब्रह्मांड पर उनकी मुहर, पूरे ब्रह्मांड पर और उसके भागों पर, कभी न खत्म होने वाली गति में स्पष्ट शांति में खुद को दिखाती है, जबकि उनकी मुहर मानव शरीर के साथ-साथ उसके प्रत्येक भाग पर, प्रत्येक कोशिका और कण तक है।

उनके कामों को देखिए, जो स्थिर और सुव्यवस्थित हैं: आप दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से देखेंगे कि पूर्ण बहुतायत के बावजूद पूर्ण व्यवस्था, पूर्ण गति के बावजूद पूर्ण माप और संतुलन, पूर्ण सुविधा के बावजूद पूर्ण स्थिरता, पूर्ण विविधता के बावजूद कला की पूर्ण सुंदरता, पूर्ण दूरी के बावजूद पूर्ण सामंजस्य और सहसंबंध, पूर्ण संयोजन के बावजूद पूर्ण भेद, और अनंत अर्थव्यवस्था के बावजूद पूर्ण मूल्य और महत्व। अस्तित्व का यह स्पष्ट गुण एक समझदार व्यक्ति के लिए पर्याप्त साक्ष्य है, और एक मूर्ख पाखंडी को भी यह स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है कि यह कला और एकता वास्तव में परम शक्ति का काम है, और वह शक्ति रखने वाला व्यक्ति बिल्कुल सर्वज्ञ है।

अस्तित्व को बहुत आसानी से समझाया जा सकता है अगर इसे एक दिव्य सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए। अगर आप इसे विभिन्न स्रोतों के लिए जिम्मेदार ठहराकर समझाने की कोशिश करते हैं, तो दुर्गम बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अगर आप इसे एक दिव्य सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो पूरे ब्रह्मांड को बनाना एक ताड़ के पेड़ की तरह आसान होगा, और एक ताड़ के पेड़ को बनाना एक फल के टुकड़े की तरह आसान होगा। इसके विपरीत, अगर आप इसे कई स्रोतों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो एक ताड़ के पेड़ को बनाना ब्रह्मांड को बनाने जितना ही मुश्किल होगा, और एक फल का टुकड़ा बनाना ब्रह्मांड के सभी पेड़ों को बनाने जितना ही मुश्किल होगा।

ऐसा इसलिए है क्योंकि एक ही प्राणी, एक ही हरकत से, बिना किसी कठिनाई के एक प्रभाव पैदा कर सकता है और पूरे जीव से निपट सकता है। यदि वह प्रभाव या उपचार कई प्राणियों से अपेक्षित है, तो वह प्राप्त होगा, यदि होगा भी, तो बहुत कठिनाई से और बहुत विवाद के बाद। यह ऐसा होगा जैसे किसी अधिकारी का कर्तव्य सैनिकों को, या किसी कुशल बिल्डर का भवन के पत्थरों को, या पृथ्वी का अन्य सभी ग्रहों को, या पानी की धार का पानी की बूंदों को, या किसी वृत्त के केंद्र का उसकी परिधि पर स्थित बिंदुओं को सौंपना।

जब अस्तित्व को एक दिव्य सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो अस्तित्व और उस सत्ता के बीच का संबंध एक असीम शक्ति की तरह हो जाता है। इस संबंध के कारण, किसी एक कारण या साधन के पास किसी चीज़ के अस्तित्व या घटित होने के लिए आवश्यक सभी शक्तियाँ नहीं होती हैं, और उत्पादित कार्य उस सत्ता के अनुपात में मूल्यवान होता है जिसके लिए इसे जिम्मेदार ठहराया जाता है, और कारण का बहुत बड़ा प्रभाव हो सकता है। अन्यथा, किसी कारण या साधन को स्वयं ही सारी शक्तियाँ रखनी होंगी, और परिणामी प्रभाव केवल कारण के आकार और/या गुणवत्ता तक ही सीमित होगा। इसी वजह से एक चींटी और एक मक्खी अत्याचारियों को हरा सकती है, और एक छोटा सा बीज एक विशाल वृक्ष बन सकता है।

जब सभी चीजों को एक ईश्वरीय सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उन्हें पूर्ण गैर-अस्तित्व से निर्मित होने की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि सृजन का अर्थ है उन चीजों को बाहरी, भौतिक अस्तित्व देना जो पहले से ही ईश्वरीय ज्ञान में मौजूद हैं। यह कैमरे के पीछे दर्पण पर प्रतिबिंबित छवि को फोटोग्राफिक पेपर पर विकसित करने या कागज के टुकड़े पर एक विशेष पदार्थ को रगड़कर अदृश्य स्याही में लिखे शब्दों को प्रकट करने जैसा है। हालाँकि, अगर चीजों को कारणों या अस्तित्वगत बहुलता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उन्हें पूर्ण गैर-अस्तित्व से अस्तित्व में आना होगा, और यह सबसे कठिन चीज है, अगर अकल्पनीय नहीं है।

जिस सहजता से एक दिव्य सत्ता यह करती है, उससे वस्तुओं का अस्तित्व न केवल आसान हो जाता है, बल्कि अत्यंत आवश्यक भी हो जाता है; अनेक वस्तुओं या कारणों को अस्तित्व प्रदान करने में कठिनाई माप से परे है। कर्ता की एकता में विद्यमान बुद्धि, किसी वस्तु को अस्तित्वहीनता से तत्काल और बिना पदार्थ के बनाना या ज्ञान में विद्यमान साँचे में वस्तु बनाने के लिए कणों को डालना संभव बनाती है। सभी बुद्धिमान प्राणी इस बात पर सहमत हैं कि भौतिक कर्ता या कारणों की बहुलता के लिए गैर-अस्तित्व से कुछ बनाना असंभव है, क्योंकि किसी जीवित प्राणी के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसे बनाने वाले कण, जो मिट्टी, पानी और हवा में फैले हुए हैं, एक साथ आएँ। इसके अलावा, चूँकि ऐसे साँचे होने चाहिए जो शाश्वत, सर्वव्यापी ज्ञान में विद्यमान हों या उसके द्वारा बनाए गए हों, प्रत्येक

कण या परमाणु को सार्वभौमिक ज्ञान और पूर्ण इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी ताकि कण एक सुव्यवस्थित शरीर बना सकें या उसका रखरखाव सक्षम हो सके। इसके अलावा, इस तरह के ज्ञान और इच्छाशक्ति वाली कोई भी चीज़ या व्यक्ति अपनी पसंद की चीज़ों को पाने या उनकी ज़रूरत से स्वतंत्र होगा।

इसके अलावा, ब्रह्मांड में इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि ऐसी चीजें अस्तित्व में हैं।
इसलिए, एक परिपूर्ण, अनंत शक्ति (उस ज्ञान और इच्छाशक्ति से युक्त) होनी चाहिए ताकि आकाश और पृथ्वी का अस्तित्व संभव हो सके। यह शक्ति किसी भी भागीदार की आवश्यकता से पूरी तरह स्वतंत्र है। अन्यथा, इसे किसी अन्य शक्ति द्वारा सीमित करना होगा। एक अनंत शक्ति को भागीदारों की आवश्यकता नहीं होती है और उन्हें स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है, भले ही वे मौजूद हों (और वे मौजूद नहीं हैं)।

इस शक्ति का न केवल कोई साझीदार है, बल्कि इसका कोई सहायक या मंत्री भी नहीं है। भौतिक कारण इस शाश्वत शक्ति के संचालन के सामने केवल एक पतला पर्दा मात्र हैं, और उनका वस्तुओं के अस्तित्व पर कोई रचनात्मक प्रभाव नहीं है।

मनुष्य, जो सबसे महान कार्य है, तथा इच्छाशक्ति से सुसज्जित है, अपनी उन क्रियाओं में भी बहुत कम भाग लेता है जो स्वतंत्र इच्छा से की जाती हैं, जैसे कि खाना, बोलना, या सोचना। यह देखते हुए कि हमारी स्वतंत्र इच्छा के बावजूद हमारे पास खुद पर पूर्ण नियंत्रण नहीं है, जानवर, पौधे, तथा निर्जीव वस्तुएं (तथा वे नियम जो निर्जीव, अंधे, तथा बहरे हैं, तथा जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है) चीजों को बनाने तथा नियंत्रित करने में आकाश तथा पृथ्वी के रचयिता के साथ कैसे भागीदार हो सकते हैं?

जाहिर है, वह "लिफाफा" जिसमें राजा अपने उपहार रखता है, या वह "रूमाल" जिसमें वह अपनी भेंटें लपेटता है, या वह "सैनिक" जिसके द्वारा वह अपनी भेंटें भेजता है, उसके राज्य में उसके भागीदार नहीं हो सकते। उसी तरह, प्रकृति और कारण, जो "सैनिक" हैं जिनके माध्यम से परमप्रभु हमें अपनी भेंटें भेजते हैं, वे केवल लिफाफे या संदूक हैं जिनमें वह हमारे लिए अपनी भेंटें रखता है; वे रूमाल हैं जिनमें वह हमारे लिए अपनी भेंटें लपेटता है। ये उसके भागीदार या उसके आदेशों के निष्पादन में रचनात्मक प्रभाव का साधन नहीं हो सकते।

दूसरा रैंक

महान है उसकी महिमा! ईश्वर महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से बड़ा है,

क्योंकि वह सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, रचयिता, सर्वज्ञ, दयालु और दयावान है। सभी सांसारिक प्राणी और स्वर्गीय प्राणी

वस्तुएँ स्पष्टतः इस सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की शक्ति के चमत्कार हैं।
पृथ्वी के बगीचे में फैले हुए रंग-बिरंगे और सजे-धजे पौधे और सजे-धजे जानवरों की असंख्य प्रजातियाँ सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं। पृथ्वी के मुस्कुराते हुए फूल और सजे-धजे फल सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय की दया के उपहार हैं।

शक्ति के ये चमत्कार गवाही देते हैं, कला के ये चमत्कार घोषणा करते हैं, दया के ये उपहार घोषणा करते हैं कि उनका रचयिता, निर्माता और दाता सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, कि वह सब कुछ जानता है, और अपनी दया और ज्ञान में सभी चीज़ों को समाहित करता है। उसकी शक्ति के संबंध में, सूक्ष्म कण और तारे, और कुछ और प्रचुर, और छोटे और महान, और सीमित और असीमित सभी समान हैं। और अतीत की सभी घटनाएँ और उसके चमत्कार उस सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं, जो इस बात की गवाही देते हैं कि निर्माता भविष्य की सभी आकस्मिकताओं और चमत्कारों पर शक्तिशाली है और वह भविष्य में जो चाहे कर सकता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ निर्माता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

महिमावान है वह, जिसने पृथ्वी के बगीचे को अपनी कला का प्रदर्शन, अपनी सृजनात्मकता के उत्पादों का एकत्रीकरण स्थल, अपनी शक्ति और बुद्धि के प्रकटीकरण का स्थान, अपनी दया के पुष्पित होने का उद्यान, स्वर्ग के लिए बोई जाने वाली भूमि और ऐसा स्थान बनाया है, जहां प्राणी निश्चित मापदण्डों के अनुसार निरंतर प्रवाह में आते और जाते हैं।

सजे-धजे पशु, सजे-धजे पक्षी, फलदार वृक्ष, फूलदार पौधे- ये सब उसके ज्ञान के चमत्कार, उसकी कला के चमत्कार, उसकी उदारता के उपहार और उसकी कृपा के प्रमाण हैं। फलों की सजावट से मुस्कराते फूल, भोर में पक्षियों का गाना, फूलों के गालों पर बारिश की बूंदें, माताओं की अपने बच्चों के प्रति करुणा- ये सब एक सर्व-प्रेमी के अपने आपको प्रकट करने, एक सर्व-दयालु के अपने आपको प्रेम करने के उदाहरण हैं; ये सब एक दयालु की करुणा और जिन्न, मानवता, आध्यात्मिक प्राणियों, फ़रिश्तों और जानवरों के प्रति एक अत्यंत दयालु की दया के निशान हैं।

बीज, फल, अनाज और फूल बुद्धि के चमत्कार, कला के चमत्कार, दया के उपहार, (ईश्वरीय) एकता के प्रमाण और परलोक में उसकी दयालुता के गवाह हैं। वे सच्चे गवाह हैं जो गवाही देते हैं कि उनका निर्माता शक्तिशाली है और सभी चीजों को जानता है, और वह दया, ज्ञान, रचनात्मकता, पालन, निर्माण और फैशन में सभी चीजों को शामिल करता है।

सृष्टि, व्यवस्था, रख-रखाव, निर्माण और फैशन के संबंध में सूर्य बीज से, तारा फूल से, या धरती अनाज से भिन्न नहीं है - उनमें से कोई भी सृष्टि के निर्माण, रखरखाव और फैशन की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता है।

बीज और फल बहुलता के क्षेत्र में (दिव्य) एकता का दर्पण हैं और वे भाग्य के संकेत और शक्ति के संकेत हैं।

वे दिखाते हैं कि बहुलता (ब्रह्मांड और उसकी सामग्री) का स्रोत एकता का क्षेत्र है। बहुलता उत्पत्ति और निर्माण में निर्माता की एकता की गवाही देती है, और एकता में समाप्त होती है जो सृजन, पोषण और रखरखाव में निर्माता की बुद्धि को इंगित करती है। बीज और फल भी बुद्धि के संकेत हैं जो दर्शाते हैं कि हर चीज का निर्माता अपनी व्यापक दृष्टि से, विशेष और भागों दोनों को देखता है। (जैसा कि वह सभी पेड़ों पर विचार करता है) वह फलों पर भी विचार करता है, क्योंकि फल पेड़ के निर्माण का सबसे स्पष्ट उद्देश्य है। और मानवता ब्रह्मांड का फल है, इसलिए मानवता ब्रह्मांड के निर्माण में निर्माता का सबसे स्पष्ट उद्देश्य है।

हृदय एक बीज या नाभिक (व्यक्ति का) जैसा है, और यह सृष्टि के निर्माता का सबसे चमकीला दर्पण है। बुद्धि का यह उदाहरण दर्शाता है कि

मानवता - यह सूक्ष्म जगत् प्राणी - ब्रह्माण्ड की धुरी है जिस पर सृष्टि का चक्र घूमता है और जिसके लिए ब्रह्माण्ड है

लगातार नष्ट या परिवर्तित, रूपांतरित या नवीकृत।

हे महान! हे ईश्वर, आप ही वह हैं जिनके

महान बुद्धि वाले लोग महानता को नहीं समझ सकते।

सभी चीजें एक स्वर में घोषणा करती हैं: उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है;

अपने जीवन की आवश्यकताओं के लिए निरंतर प्रार्थना करते रहो,

हे सत्य! नित्य स्थिर! कहो, और सब मिलकर कहो, हे सजीव!

तीसरा रैंक

ईश्वर सर्व महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी वस्तुओं से बड़ा है,

क्योंकि वह सर्वशक्तिमान, सर्व-निर्धारक, सर्वज्ञ, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-निर्माण करने वाला, सर्व-उदार, सर्व-सूक्ष्म, सर्व-सजाने वाला, सर्व-कृपालु, सर्व-प्रेमी, वह है जो स्वयं को ज्ञात कराता है, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय, सर्व-दयावान, सर्व-कृपालु और सर्व-सुंदर, परम सौंदर्य और पूर्णता वाला, और शाश्वत निर्माता है। संसारों के सत्य—हर वह चीज जो अस्तित्व में है और घटित होती है—पूरी तरह से या भागों में, पूरी तरह से या भागों में सृष्टि की, या अस्तित्व में आने की, या इसकी स्थायित्व की सच्चाईयाँ कुछ और नहीं बल्कि उसके आदेश और नियति की “कलम” द्वारा एक निश्चित क्रम, निर्धारण, ज्ञान और बुद्धि के अनुसार खींची गई रेखाएँ हैं, और डिजाइन

उनके ज्ञान और बुद्धि के "कम्पास" द्वारा एक निश्चित कला और फैशन के अनुसार बनाए गए हैं। वे सभी उनकी कला के "उज्ज्वल हाथ" द्वारा बनाए गए सजावट के अलावा हैं, अनुग्रह और उदारता के साथ फैशन, सजावट और चित्रण; और उनकी कृपा, उनकी उदारता के फूल, खुद को दया और उदारता के साथ जाना और प्यार करना; और उनकी दया, उदारता, दया और स्नेह के बहते झरने के फल अनुग्रह और पूर्णता के साथ। वे सभी एक शाश्वत सौंदर्य और शाश्वत पूर्णता के विकिरण के अलावा हैं, जैसा कि इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि दर्पण (इन सत्यों को दर्शाते हुए - यानी, सभी प्राणी) नश्वर हैं और प्रतिबिंब गायब हो जाते हैं, जबकि सौंदर्य की अभिव्यक्तियाँ और उदारता का उपहार उनके प्राप्तकर्ताओं की नश्वरता के बावजूद दिनों, मौसमों, सदियों और युगों के माध्यम से उदारता प्रदान करना जारी रखता है।

दर्पणों की नश्वरता और प्राणियों का क्षय, (ईश्वरीय नामों, गुणों और कृत्यों का) अत्यधिक प्रचुरता में सतत प्रकटीकरण के बावजूद, एक स्पष्ट संकेत और ठोस तर्क है कि प्रकट सौंदर्य और पुष्पित पूर्णता उन लोगों की नहीं है जिन पर वे प्रकट होते हैं।

यह अनिवार्यतः विद्यमान, सर्वप्रेममय, स्थायी परमेश्वर के अमूर्त सौंदर्य तथा निरन्तर नवीन परोपकार की अत्यंत स्पष्ट व्याख्या और प्रमाण है।

वास्तव में, एक परिपूर्ण कार्य स्वतः-स्पष्ट रूप से एक परिपूर्ण कार्य को इंगित करता है। एक परिपूर्ण कार्य अनिवार्य रूप से एक परिपूर्ण नाम और एक परिपूर्ण कर्ता को इंगित करता है। एक परिपूर्ण नाम निस्संदेह एक परिपूर्ण गुण को दर्शाता है। एक परिपूर्ण गुण निश्चित रूप से एक आवश्यक क्षमता को दर्शाता है। एक अनिवार्य क्षमता निश्चित रूप से उस सत्ता की पूर्णता को प्रदर्शित करती है जो उस सत्ता के लिए उपयुक्त है, जो सबसे स्पष्ट सत्य है।

चौथा रैंक

महान है उसकी महिमा, ईश्वर महान है,

क्योंकि वह सर्व-न्यायकर्ता और न्याय का स्रोत है, सर्व-न्यायकर्ता, सर्व-शासक और सर्व-ज्ञानी है। उसने अपनी इच्छा और बुद्धि के सिद्धांतों के अनुसार "छह दिनों" में इस ब्रह्मांड के वृक्ष की स्थापना की, अपने आदेश और नियति के अनुसार इसे शाखाओं में विभाजित किया, अपने सामान्य कार्य करने के नियमों के अनुसार इसे व्यवस्थित किया, अपनी कृपा और दया के उपदेशों के अनुसार इसे सजाया, और अपने नामों और गुणों के प्रकटीकरण के माध्यम से इसे प्रकाशित किया। उसकी रचना की सुव्यवस्था और संतुलन;

उसकी रचनाओं की सजावट; समानता, सही अनुपात, उनके बीच पारस्परिक सहायता और प्रतिक्रिया; तथा सभी चीजों में दृढ़, सचेतन कलात्मकता, जिसे नियति ने प्रत्येक के लिए, उसकी क्षमता के अनुसार निर्धारित किया है, ये सभी इस बात को प्रमाणित करते हैं।

• रचनात्मक कार्यों के क्रम में व्यापक, सर्व-समावेशी ज्ञान

क्रिया;

• प्रत्येक वस्तु को आवश्यक भागों और अंगों से सुसज्जित करने में तथा उसे सुन्दर और सुडौल बनाने में पूर्ण अनुग्रह;

• दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सर्वव्यापी दया।

हर प्राणी;

• प्रत्येक प्राणी के पालन-पोषण और प्रजनन में सर्व-समावेशी प्रावधान; • प्रत्येक जीवित वस्तु या प्राणी को प्रदान किया गया अद्भुत जीवन, जो उसे सर्व-उत्पत्ति के आवश्यक गुणों का प्रदर्शन बनाता है;

• कुछ उद्देश्यों के लिए उसे प्रदान की गई सुन्दरता; • उसे प्राप्त करने वाले प्राणियों के क्षय के बावजूद उसकी कृपा की अभिव्यक्तियों की स्थायित्व; • अपने आराध्य के प्रति सृष्टि का सहज प्रेम; • सृष्टि द्वारा उसके प्रति महसूस किया जाने वाला आकर्षण जो उसके परमानंद में स्पष्ट होता है; • उसके सिद्ध, सचेतन सदस्यों की सर्वसम्मत सहमति

इसके निर्माता की एकता के बारे में; • इसके सभी भागों द्वारा प्राप्त लाभ; • सभी पौधों द्वारा प्रदर्शित बुद्धिमानीपूर्ण योजना;

• सभी सजीव प्राणियों का उदार पोषण;

• सृष्टि के मूल भागों में परिवर्तन का सही क्रम;

• समग्र रूप से इसके आदेश में अनुसरण किये जाने वाले व्यापक लक्ष्य;

• समय या पदार्थ की आवश्यकता के बिना, परिपूर्ण कला और सौंदर्य के साथ इसकी तात्कालिक रचना;

• असीम रूप से बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण वैयक्तिकरण के बावजूद असीमित संभावनाएं;

• प्रत्येक प्राणी की आवश्यकताओं की समय पर पूर्ति, जिसकी उसे आवश्यकता नहीं होती, सृष्टि की अनंत बहुलता और विविधता के बावजूद और प्राणियों की अपनी छोटी से छोटी मांग को भी पूरा करने में असमर्थता के बावजूद;

- अपनी कमजोरी में प्रकट पूर्ण शक्ति;
- अपनी असहायता में प्रकट पूर्ण शक्ति;
- जीवन अपनी निर्जीवता में स्पष्ट दिखाई देता है;
- अपने अज्ञान में अभिव्यक्त व्यापक चेतना;
- परिवर्तनों में पूर्ण क्रम और व्यवस्था जिसके लिए एक ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व की आवश्यकता होती है जो परिवर्तन का कारण बनता है लेकिन स्वयं नहीं बदलता;

- इसकी महिमा में एकरसता - संकेन्द्रित वृत्तों के समान - • इसकी प्रार्थनाओं की स्वीकृति यह क्षमता, अनिवार्य आवश्यकता, तथा पूर्ण विवशता और अभाव की भाषाओं में करता है;

- इसके द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाएँ और इसके सामने कुछ छुपे हुए सत्यों का उजागर होना और इसकी पूजा में इसे प्राप्त होने वाली किरणें;
- पूजा-अर्चना में माप और संतुलन;
- अपने ईश्वर के स्मरण से उसे जो शांति और संतुष्टि मिलती है
  प्रवर्तक;
- इसकी पूजा इसकी शुरुआत और अंत को जोड़ने वाली रेखा है; और
- इसकी पूर्णता का कारण सामने आना और इसके अस्तित्व के लिए इसके निर्माता के उद्देश्य साकार होना।

सृष्टि के ये सभी गुण और अवस्थाएँ तथा अन्य कई अवर्णित बातें इस बात की साक्षी हैं कि इस ब्रह्माण्ड का प्रबंधन एक ही सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा किया जाता है, जिसका पालन-पोषण और पालन-पोषण एक ही, सर्व-दयालु भगवान द्वारा किया जाता है, जो सभी का आराध्य है। सभी वस्तुएँ एक ही स्वामी की सेवा करती हैं और एक ही शासक के अधीन हैं। साथ ही, सृष्टि का उद्गम एक ही शक्ति है, जिसकी एकता के अनेक चिह्न उसके प्रत्येक “संदेश” पर दिखाई देते हैं, जो उसके प्राणियों के प्रत्येक “पृष्ठ” पर अंकित हैं।

प्रत्येक फूल और फल, प्रत्येक पौधा और वृक्ष, प्रत्येक पशु या चट्टान, प्रत्येक रेत का कण या पत्थर, सभी घाटियों और पर्वतों और रेगिस्तानों में एक स्पष्ट मुहर है जो किसी भी सावधानीपूर्वक जांच पर यह प्रदर्शित करती है कि जिसने इसे बनाया है वही इस स्थान का "लेखक" है जो सबकों से भरा है, और भूमि की सतह और समुद्र की तलहटी का "लेखक" है।

वह आकाश के उस पृष्ठ पर सूर्य और चंद्रमा का भी डिज़ाइनर है जो शिक्षाओं से भरा हुआ है। उस डिज़ाइनर की महिमा महान है। वह ईश्वर है,
सर्व महान.

इसलिए संसार एक स्वर में गाता है: उसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।

पांचवां रैंक

ईश्वर सर्व महान है,

क्योंकि वही रचयिता, सर्वशक्तिमान, रचयिता, सर्वज्ञ है।
सभी आकाशीय पिंड और मोती जैसे तारे उसकी दिव्यता और महानता के प्रमाण हैं; वे उसके प्रभुत्व और महानता के साक्षी हैं। वे उसके प्रभुत्व के राज्य की महिमा, उसके शासन और बुद्धि की विशालता और उसकी शक्ति की भव्यता और महानता की पुष्टि और घोषणा करते हैं।

अब इस आयत पर गौर करें, " लेकिन क्या वे कभी अपने ऊपर के आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसे बनाया और सजाया है?" (50:6) आकाश को देखो और उसकी शांत शांति, बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण गति, और उसकी शानदार चमकती मुस्कान को देखो, जो उसके व्यवस्थित निर्माण और सुडौल कला के साथ है। इसका "दीपक" ऋतुओं के परिवर्तन के लिए चमकता है; इसका "लालटेन" दुनिया को रोशन करने के लिए चमकता है; इसके तारे दुनिया को सजाने के लिए चमकते हैं।

प्रत्येक वस्तु सामान्य बुद्धि और विवेक वाले लोगों के लिए ब्रह्माण्ड के संगठन और रखरखाव में असीम प्रभुता की घोषणा करती है।

यह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता सभी चीज़ों को जानता है और उसकी इच्छाशक्ति इतनी व्यापक है कि जो कुछ भी वह चाहता है वह हो जाता है और जो कुछ भी वह नहीं चाहता है वह नहीं होता है। वह सभी चीज़ों पर एक निरपेक्ष, सर्वव्यापी शक्ति के द्वारा शक्तिशाली है जो उसके दिव्य अस्तित्व के लिए आवश्यक है। जिस तरह से सूर्य का प्रकाश या गर्मी के बिना अस्तित्व में होना अकल्पनीय है, उसी तरह यह भी अकल्पनीय है कि कोई ईश्वर, स्वर्ग का सृष्टिकर्ता हो जिसके पास कोई सर्वव्यापी ज्ञान या पूर्ण शक्ति न हो। वह सभी चीज़ों को एक सर्वव्यापी ज्ञान के द्वारा जानता है जो उसके दिव्य अस्तित्व के लिए आवश्यक है। सभी चीज़ों के साथ इसके संबंध और इसकी सर्वव्यापकता, भेदक क्षमता और व्यापकता के कारण, इस ज्ञान से कोई भी चीज़ बच नहीं सकती है।

संपूर्ण सृष्टि में जो कुछ भी देखा जाता है, जैसे कि व्यवस्थितता, संतुलन और सामंजस्य, सर्वव्यापी ज्ञान, पूर्ण पक्षपात, अच्छी तरह से स्थापित उपाय, सुव्यवस्थित व्यवस्था, फलदायी आदेश, नियुक्त अंतिम लक्ष्य, नियमित प्रावधान, बुद्धिमान सटीकता और दोषहीनता, मनभावन देखभाल (सभी चीजों को दी गई), साथ ही पूर्ण भेदभाव, माप, व्यवस्था और स्थिरता, और पूर्ण सहजता - ये सभी अदृश्य और सभी चीजों के ज्ञाता के सर्वव्यापी ज्ञान की गवाही देते हैं। आयत, क्या यह कल्पना की जा सकती है कि जिसने बनाया है उसे पता नहीं होना चाहिए? वह अत्यंत सूक्ष्म, सर्वज्ञ है (६७:१४), यह संकेत करता है कि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए उसके पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होती है; चीजों में अस्तित्व के प्रकाश के लिए उनके पूर्ण ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता होती है

किसी के कार्य में कला की उपस्थिति उसकी चेतना को उसी प्रकार इंगित करती है, जिस प्रकार घोर अँधेरी रात में जुगनू की अत्यल्प रोशनी; मानवता की रचना उसके रचयिता के ज्ञान को उसी प्रकार इंगित करती है, जिस प्रकार दोपहर के समय सूर्य की चमक।

चूँकि वह सब कुछ जानता है, इसलिए उसकी इच्छा सभी चीज़ों को शामिल करती है। उसकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता। शक्ति प्रभाव पैदा करती है, ज्ञान भेद करता है, और इच्छा विभाजित और व्यक्तिगत बनाती है। इस तरह से चीज़ें अस्तित्व में आती हैं। सर्वशक्तिमान की इच्छा के जितने गवाह हैं, उतनी ही चीज़ों की विशेषताएँ, गुण और अवस्थाएँ हैं।

प्रत्येक वस्तु को उसके विशिष्ट चरित्र और गुणों के साथ बनाना और गढ़ना, जो कि असंख्य विकल्पों और संभावनाओं में से उद्देश्यपूर्ण रूप से उसके लिए चुना जाता है, असीम रूप से विविध प्रवाह में, प्रत्येक को अत्यंत नाजुक ढंग से और अत्यंत संवेदनशील उपायों के साथ बनाना; और सरल, निर्जीव तत्वों से विविध, अच्छी तरह से निर्मित जीवों की रचना करना (उदाहरण के लिए, एक शुक्राणु और एक अंडे से मानवता की उसकी इंद्रियों और अन्य सभी प्रणालियों और भौतिक अंगों की रचना करना, एक अंडे से एक पक्षी और उसके भौतिक अस्तित्व की रचना करना, एक बीज से एक पेड़ के सभी अंगों की रचना करना) यह साक्ष्य देता है कि प्रत्येक चीज को सर्वशक्तिमान की इच्छा और पसंद द्वारा उसका व्यक्तिगत चरित्र और गुण दिए गए हैं। वह सर्व-महिमावान है।

किसी प्रजाति के सदस्यों के बीच शारीरिक संरचनाओं और बुनियादी प्रणालियों में समानता यह दर्शाती है कि उनका निर्माता एक और अद्वितीय है। हालाँकि, यह तथ्य कि प्रत्येक सदस्य दूसरों से अलग और अलग है, यह दर्शाता है कि एक और अद्वितीय निर्माता जो चाहता है वही करता है और जैसा चाहता है वैसा ही न्याय करता है। उसकी महिमा महान है।

जिस तरह सर्वज्ञ और सर्व-इच्छुक सृष्टिकर्ता के पास सर्वव्यापी ज्ञान और सर्वसमावेशी इच्छा है, उसी तरह उसके पास एक संपूर्ण शक्ति है जो उसके दिव्य अस्तित्व से निकलती है और उसके लिए आवश्यक है। उस शक्ति का कोई विपरीत नहीं है, क्योंकि इसके लिए दो विपरीतों के बीच सहमति या संयोजन की आवश्यकता होगी, जो सार्वभौमिक सहमति से अकल्पनीय है। उस शक्ति में कोई श्रेणी नहीं हो सकती, इसलिए उसके संबंध में कण और तारे, कुछ और बहुत, विशेष और सार्वभौमिक, मानवता और ब्रह्मांड, बीज और पेड़ सभी समान हैं।

अस्तित्व के अमूर्त आयाम की पारदर्शिता जिसके साथ वह शक्ति व्यवहार करती है, वस्तुओं के बीच अंतरसंबंध, सृजन में सटीक संतुलन, अस्तित्व का पूर्ण क्रम और उस शक्ति के प्रति अस्तित्व की सर्वोच्च आज्ञाकारिता इस बात की गवाही देती है। पूर्ण गति, सहजता, बहुलता और विविधता के बावजूद सृजन में पूर्ण व्यवस्था, सामंजस्य, संतुलन और भिन्नता या वैयक्तिकरण भी इस तथ्य की गवाही देते हैं।

जिसके पास वह शक्ति है वह बिना किसी अपवाद के, बड़ी आसानी से कुछ भी बना सकता है क्योंकि वह एकमात्र और अद्वितीय है जिसका समग्र रूप से हर चीज़ और व्यक्तियों पर पूर्ण नियंत्रण है; वह अकेला मौजूद है और बनाए गए से पूरी तरह अलग है; वह अप्रतिबंधित, अविभाज्य और स्थान से असंबद्ध है। उसे कुछ भी बाधित नहीं कर सकता; बल्कि, हमारे शरीर की नसों या धातु के तारों की तरह जो बिजली या अन्य सूक्ष्म शक्तियों का संचालन करते हैं, जो कुछ भी बाधा प्रतीत होता है वह आसानी का साधन बन जाता है, हालांकि उसे अपने आदेशों का संचालन या निष्पादन करने में किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है। वह जो कुछ भी बनाता है उसमें कला का एक ही गुण होता है - कण, भाग, विशेष, कुछ, छोटा, मानव और बीज किसी भी तरह से सितारों, सार्वभौमिकों, कई, महान, ब्रह्मांड और पेड़ों की तुलना में कम सुंदर या कला में कम नहीं हैं। जो बीज बनाता है, जो कि उस वृक्ष की एक छोटी सी प्रतिकृति है, जिसमें सृष्टिकर्ता ने अपने ज्ञान के सिद्धांतों द्वारा वृक्ष को शामिल किया है, वह निस्संदेह वृक्ष का सृष्टिकर्ता ही होगा। जो शक्ति विशेषों को अस्तित्व में लाती है, उसके लिए सर्वव्यापकों का निर्माण करना कठिन नहीं है।

जिस प्रकार "ज्ञान के कुरान" की प्रति जो ईथर कणों के साथ एक परमाणु में अंकित है, उसमें सुंदरता और कला का वही गुण है जो सितारों और सूरज की स्याही से आकाश के पन्नों पर लिखे गए "महान कुरान" की प्रति में पाया जाता है, उसी प्रकार एक मधुमक्खी या चींटी बनाने में खजूर या हाथी बनाने से कम कौशल या कलात्मकता की आवश्यकता नहीं होती है। गुलाब में निहित कला मोती जैसे सितारे में निहित कला से कम नहीं है। जबकि चीजों को बनाने की अत्यंत और पूर्ण आसानी गुमराह लोगों को सृजन को आत्म-निर्माण के साथ भ्रमित करने का कारण बनती है, जिसके लिए असंभवताओं और अंधविश्वासों को स्वीकार करने की आवश्यकता होती है जो उचित तर्क और निर्णय का खंडन करते हैं, यह सत्य के लोगों को इस निश्चितता की ओर ले जाता है कि ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में ग्रह और छोटे कण समान हैं।

उसकी महिमा महान है और उसका नाम महान है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।

छठा रैंक

> उसकी महिमा महान है और उसका नाम महान है। ईश्वर महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से बड़ा है।

क्योंकि वह सर्व-न्यायी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, एक, अद्वितीय और शाश्वत संप्रभु है। सभी दुनियाएँ अलग-अलग हैं।

व्यवस्था और संतुलन, व्यवस्था और माप, न्याय और बुद्धि, और ज्ञान और शक्ति के उनके “हाथों” का प्रदर्शन। वे स्पष्ट रूप से उनकी एकता को दर्शाते हैं - उनके नामों की समग्र अभिव्यक्तियाँ - और एकता - उनके कुछ नामों की अभिव्यक्तियों की एकाग्रता

व्यक्तिगत चीज़ों पर। ब्रह्मांड में कुछ भी उसके आदेश या संतुलन से, या उसके व्यवस्थित करने या मापने से बाहर नहीं है; ये प्रकट रिकॉर्ड और प्रकट पुस्तक के दो "अध्याय" हैं, जो बदले में सर्वज्ञ और सर्वज्ञ के ज्ञान और आदेश, और सर्वशक्तिमान और सर्व-दयालु की शक्ति और इच्छा के शीर्षक हैं। इस पुस्तक में व्यवस्था और संतुलन, उस रिकॉर्ड के साथ, किसी भी व्यक्ति के लिए दो सबूत हैं जिनके सिर या आँखों में तर्क है, ताकि वे देख सकें, यह समझ सकें कि अस्तित्व या समय में कुछ भी दयालु के आदेश, दया करने वाले के आदेश, दयालु के सजाने और शासक के मापने से बाहर नहीं है।

संक्षेप में: सृष्टि में दिव्य नाम “प्रथम” और “अंतिम” की अभिव्यक्तियाँ आरंभ और अंत, उत्पत्ति और परिणाम, भूत और भविष्य, आदेश और ज्ञान को संदर्भित करती हैं, और प्रकट अभिलेख को इंगित करती हैं। “बाहरी” और “आंतरिक” नामों की अभिव्यक्तियाँ

उन चीज़ों पर जो ईश्वर की सृष्टि के गुण से जुड़ी हैं, प्रकट पुस्तक की ओर संकेत करती हैं।

ब्रह्मांड एक विशाल वृक्ष की तरह है, और इसमें प्रत्येक दुनिया या क्षेत्र भी एक वृक्ष की तरह है। एक वृक्ष की एक उत्पत्ति (उसका बीज) और एक अंकुर होता है जो उसकी मृत्यु के बाद अपना कार्य करता है (फल में बीज)। इसकी शुरुआत और अंत दिव्य नामों "प्रथम" और "अंतिम" को प्रकट करते हैं। अपनी रचना और इसके उद्देश्यों के माध्यम से, मूल बीज वृक्ष के निर्माण के लिए एक सूचकांक या कोड है। इस प्रकार यह "प्रथम" को प्रकट करता है। वृक्ष के फलों में बीज प्रकट होते हैं

“ अंतिम।”

बीज ज्ञान के छोटे खजाने की तरह हैं जिनमें ज्ञान समाहित है।

पेन ऑफ़ डेस्टिनी की लिखी हुई सूची और कोड नए पेड़ बनाने के लिए जो बिल्कुल मूल पेड़ से मिलते जुलते होंगे। एक पेड़ का बाहरी हिस्सा "बाहरी" नाम को प्रकट करता है। अपनी परिपूर्ण, सुव्यवस्थित संरचना, सजावट और इसके द्वारा किए जाने वाले उद्देश्यों के माध्यम से, पेड़ एक पूरी तरह से सुंदर पोशाक की तरह है जो पेड़ के अनुरूप पूर्ण ज्ञान और अनुग्रह के साथ बनाई गई है। पेड़ का आंतरिक हिस्सा नाम को प्रकट करता है

"अंदर की ओर।" अपने उत्तम, अद्भुत संगठन और पेड़ के जीवन के लिए आवश्यक भोजन को उसके सभी भागों में उत्तम तरीके से पहुंचाने के माध्यम से

इसका आन्तरिक भाग एक असाधारण मशीन या कारखाने जैसा है जो पूर्णतया व्यवस्थित और संतुलित तरीके से काम कर रहा है।

वृक्ष की शुरुआत निर्देशों की एक अद्भुत सूची की तरह है, इसका अंत एक असाधारण सूचकांक है, और दोनों ही प्रकट रिकॉर्ड को इंगित करते हैं। इसके बाहरी भाग में कलात्मक रूप से बुनी गई पोशाक और इसके अंदरूनी भाग में एक अत्यंत सुव्यवस्थित मशीन की तरह, वृक्ष का शरीर प्रकट पुस्तक की ओर इशारा करता है। मानव स्मृति की तरह, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका को इंगित करती है, वृक्ष के सभी मूल बीज और फल प्रकट रिकॉर्ड को इंगित करते हैं, और उनके बाहरी और आंतरिक भाग प्रकट पुस्तक का प्रतीक हैं। उस विशेष वृक्ष के साथ पृथ्वी के "वृक्ष" की तुलना उसके अतीत और भविष्य से करें; ब्रह्मांड के "वृक्ष" की तुलना उसके आरंभ और भविष्य से करें, और किसी व्यक्ति के "वृक्ष" की तुलना उसके पूर्वजों और वंशजों से करें।

उनके रचयिता की महिमा महान है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। हे महानतम! आप ही वह हैं जिनकी महिमा का वर्णन मन से नहीं किया जा सकता, और जिनकी प्रभुता को कोई समझ नहीं सकता।

सातवीं रैंक

महान है उसकी महिमा। ईश्वर महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीज़ों से बड़ा है।

क्योंकि वह सृष्टिकर्ता, खोलने वाला, सर्वज्ञ, वरदान देने वाला, आशीर्वाद देने वाला और शाश्वत "सूर्य" है। सभी संसार और उनकी सामग्री उसकी रोशनी की छायाएँ हैं, उसके कर्मों के कार्य हैं, उसके नामों के मानवीकरण की कढ़ाई के रंग हैं, उसके भाग्य और निर्णय की "कलम" की रेखाएँ हैं, और उसके सौंदर्य, महिमा और पूर्णता के गुणों को प्रकट करने वाले दर्पण हैं। यह सब शाश्वत साक्षी - सर्वशक्तिमान स्वयं - अपनी सभी पुस्तकों, पृष्ठों या स्क्रॉल के साथ; सृष्टि के संकेतों और कुरान की आयतों की सर्वसम्मति से प्रमाणित है। पृथ्वी और उस पर मौजूद सभी प्राणियों की सर्वसम्मति से भी इसकी पुष्टि होती है, जिनमें से प्रत्येक की अनिवार्य विपन्नता और आवश्यकता के बावजूद, परम धन और संपदा की अभिव्यक्तियाँ हैं, तथा पैगम्बरों, संतों और शुद्ध, सटीक विद्वानों की सर्वसम्मति से भी इसकी पुष्टि होती है, जिनकी बुद्धि प्रकाशित हो चुकी है और हृदय प्रकाशित हो चुके हैं, उनके सत्यापनों, आध्यात्मिक खोजों और प्रार्थनाओं तथा उन पर कृपा की गई कृपाओं से।

उपरोक्त सभी, अपनी अंतहीन निश्चित गवाही के साथ और सृष्टि के संकेतों की गवाही की स्वीकृति, कुरान की आयतें, और स्वर्गीय पुस्तकों और पृष्ठों की वसीयतें जिनमें सृष्टि के संकेतों की गवाही है,

वह अनिवार्यतः विद्यमान है - ये सभी साक्षी, जिनमें पृथ्वी और अन्य सभी आकाशीय और पार्थिव पिंड शामिल हैं, सर्वसम्मति से सहमत हैं कि सभी प्राणी उसकी शक्ति के कार्य हैं, उसके भाग्य के शिलालेख हैं, उसके नामों के दर्पण हैं, और उसकी ज्योतियों की छवियाँ हैं।

महान है उसकी महिमा, और उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

तीसवीं झलक

तीसवीं झलक

भगवान के छः नामों के सर्वव्यापक स्वरूप के बारे में

एस्कीशेहिर जेल का फल होने के कारण, इस चमक में भगवान के छह नामों के बारे में छह भाग शामिल हैं जिनकी सर्वव्यापी अभिव्यक्तियाँ हैं।

मेवे रिसालेसी ("विश्वास के फल," शुअलार ["किरणें"] में शामिल) जोसेफ के डेनिज़ली स्कूल का महान पाठ था, और एल-हुसेतुज़-ज़ेहरा ("उज्ज्वल प्रमाण," किरणों में शामिल) जोसेफ के अफ़योन स्कूल का सबसे मूल्यवान पाठ था। यह चमक जोसेफ के एस्कीशेहर स्कूल का एक शक्तिशाली पाठ है। यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के छह नामों के बारे में है जिनकी सर्वव्यापी अभिव्यक्तियाँ हैं।

पहला भाग

दिव्य नाम का एक पहलू सर्व-पवित्र

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और धरती को भी हमने बिछौना की तरह फैला दिया है, और उसे फैलाने में हम कितने अच्छे हैं (51:48)

उपर्युक्त आयत के अर्थ का एक पहलू और ईश्वरीय नाम, सर्व-पवित्र का एक प्रकटीकरण, जो उन ईश्वरीय नामों में से एक है जिनके सर्वव्यापी प्रकटीकरण हैं, या ईश्वर के सर्वव्यापी नाम के छह प्रकाशों में से एक है, मेरे लिए शाबान माह के अंत में स्पष्ट हुआ।

एस्कीशेहिर जेल। इसने ईश्वर के अस्तित्व और उनकी एकता को सबसे स्पष्ट रूप से दर्शाया। मैंने इसे इस प्रकार देखा:

ब्रह्मांड एक विशाल, निरंतर चलने वाली फैक्ट्री है और पृथ्वी एक छात्रावास या गेस्टहाउस है जो लगातार भरता और खाली होता रहता है। आम तौर पर, ऐसी लगातार चलने वाली फैक्ट्रियाँ, छात्रावास और गेस्टहाउस गंदगी, मलबे और कचरे से बहुत गंदे हो जाते हैं और उनमें सड़ा हुआ पदार्थ जमा हो जाता है। अगर उन्हें पूरी तरह से संभाल कर न रखा जाए या साफ-सुथरा न किया जाए या झाड़-फूंक न की जाए, तो उनमें रहना असंभव है; मनुष्य वहाँ दम तोड़ देगा।

लेकिन ब्रह्माण्ड का कारखाना और धरती का अतिथिगृह इतना शुद्ध और स्वच्छ और इतना निष्कलंक और ताजा है कि दोनों में कोई बेकार, अनावश्यक चीज, यहां तक कि बेतरतीब गंदगी भी नहीं है। अगर कुछ दिखाई भी दे तो उसे तुरंत परिवर्तन मशीन में डालकर साफ कर दिया जाता है।

इसका मतलब यह है कि जो इस फैक्ट्री की देखभाल करता है, वह बहुत अच्छी तरह से करता है। कारखाने का मालिक ऐसा है कि वह इस विशाल कारखाने, इस विशाल महल को ऐसे साफ करता है, झाड़ू लगाता है और आदेश देता है, जैसे कि यह केवल एक छोटा सा कमरा हो।
यद्यपि इस विशाल कारखाने के आकार के अनुपात में इसमें गंदगी और कूड़ा-कचरा अवश्य होगा, फिर भी इसके आकार के अनुपात में इसकी साफ-सफाई और सुव्यवस्थितता का भी ध्यान रखा जाता है।

अगर कोई व्यक्ति लंबे समय तक नहाता नहीं है या अपना छोटा कमरा साफ नहीं करता है

महीने में, दोनों ही बहुत गंदे और मैले हो जाएंगे। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि दुनिया के इस महल में स्वच्छता, पवित्रता और चमक निरंतर, बुद्धिमान और संवेदनशील सफाई और शुद्धिकरण से उत्पन्न होती है। लेकिन इस सफाई, झाड़ू लगाने और सावधानी से देखभाल के बिना, एक वर्ष के भीतर पृथ्वी पर सैकड़ों हजारों जानवरों की प्रजातियाँ दम तोड़ देतीं। साथ ही, अंतरिक्ष और आकाश में ग्लोब, उपग्रह और सितारों का मलबा, जो मरने के लिए बाध्य है, न केवल हमारे और अन्य जानवरों के सिर पर, बल्कि हमारी दुनिया के सिर पर भी गिर गया होगा। वे हमारे सिर पर पहाड़ों के आकार के पत्थर बरसाएंगे और हमें हमारी सांसारिक मातृभूमि से दूर भगा देंगे। हालाँकि बहुत समय पहले विनाश और पुनर्निर्माण के परिणामस्वरूप कुछ उल्कापिंड गिरे थे, जैसे कि एक चेतावनी, उन ऊंचे क्षेत्रों में, उन्होंने किसी भी इंसान को नुकसान नहीं पहुँचाया।

इसके अलावा, जीवन और मृत्यु के बीच आदान-प्रदान और संघर्ष के कारण, लाखों जानवरों की लाशें और लाखों पौधों के मलबे ने भूमि और समुद्र के चेहरों को इतना गंदा कर दिया होगा कि सचेत प्राणियों ने उन चेहरों को प्यार करने के बजाय, ऐसी कुरूपता से घृणा महसूस की होगी और मृत्यु को प्राथमिकता दी होगी।

जिस प्रकार पक्षी अपने पंखों को तथा लेखक अपने पृष्ठों को सरलता से साफ कर लेता है, उसी प्रकार पृथ्वी के विमान के पंख, आकाश के पक्षी तथा ब्रह्माण्ड की पुस्तक के पृष्ठ भी इस प्रकार साफ तथा सुन्दर बना दिए जाते हैं कि जो लोग परलोक की असीम सुन्दरता को नहीं देखते या उस पर विश्वास नहीं करते, वे भी इस स्वच्छता तथा संसार की सुन्दरता के प्रेमी बन जाते हैं, इसकी पूजा करने लगते हैं।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, संसार का यह महल और ब्रह्माण्ड का वह कारखाना, उस सर्व-पवित्र ईश्वरीय नाम की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के विषय हैं। इसी तथ्य के कारण न केवल समुद्र के मांसाहारी सफाईकर्मी और भूमि के चील, बल्कि पृथ्वी के सफाईकर्मी, जैसे कीड़े और चींटियाँ, जो लाशों को इकट्ठा करते हैं, वे भी उस पवित्र नाम से निकलने वाले सफाई के आदेशों का पालन करते हैं। इसके अलावा, शरीर में बहने वाली लाल और सफेद रक्त कणिकाएँ और श्वसन तंत्र भी सफाई के इन पवित्र आदेशों का पालन करते हैं और शरीर की कोशिकाओं में सफाई करते हैं और रक्त को शुद्ध करते हैं।

और जिस तरह पलकें आँख को साफ करने की आज्ञा का पालन करती हैं और मक्खी अपने पंखों को ब्रश करने की आज्ञा का पालन करती है, उसी तरह विशाल वायुमंडल और बादल भी आज्ञा का पालन करते हैं। हवा धरती पर जमी धूल और मिट्टी के कणों को उड़ा देती है और उसे साफ कर देती है। बादलों के स्पंज धरती के बगीचे पर पानी छिड़कते हैं, धूल और गंदगी को नीचे गिरा देते हैं। फिर, आकाश को प्रदूषित न करने के लिए, हवा जल्दी से कचरा इकट्ठा करती है और उसे पूरी तरह व्यवस्थित तरीके से छिपा देती है। यह आसमान के खूबसूरत चेहरे और आंख को प्रदर्शित करता है जिसे साफ किया गया है और चमकाया गया है, सभी चमक रहे हैं।

साथ ही, जैसे तारे, तत्व, खनिज और पौधे सफाई करने के उस आदेश का पालन करते हैं, वैसे ही सभी कण और परमाणु भी इसका पालन करते हैं; वे परिवर्तन और रूपांतरण के आश्चर्यजनक कोलाहल के बीच सफाई के प्रति सावधान रहते हैं। वे कभी भी अनावश्यक रूप से कहीं भी एकत्र नहीं होते या रास्ते में नहीं आते। और अगर वे गंदे हो जाते हैं, तो वे तुरंत साफ हो जाते हैं। उन्हें बुद्धि के हाथ से चलाया जाता है ताकि वे सबसे साफ, सबसे साफ और सबसे चमकदार अवस्था और सबसे सुंदर, शुद्ध और मनभावन रूप प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार, यह एक ही कार्य और सत्य, अर्थात् शुद्धिकरण, ईश्वरीय नाम, परम पवित्र का एक व्यापक प्रकटीकरण है, जो पूरे ब्रह्मांड में खुद को प्रकट करता है। एक दूरबीन की तरह, यह सूर्य की तरह चमकते हुए हमारी आँखों के सामने ईश्वर के अस्तित्व को उनके सर्व-सुंदर नामों और उनकी एकता के साथ दिखाता है।

रिसाले-ए-इस्लाम के कई हिस्सों में यह बात निर्णायक प्रमाणों के साथ स्थापित हो चुकी है।

नूर कि चूंकि आदेश और व्यवस्था का कार्य, जो ज्ञान की दिव्य विशेषता और सर्व-ज्ञानी के दिव्य नाम का प्रकटीकरण है, और

संतुलित करने और संतुलन बनाने का कार्य, जो न्याय के गुण और सर्व-न्याय के नाम की अभिव्यक्ति है, और सुसज्जित करने और परोपकार करने का कार्य, जो सर्व-दयालु और सर्व-दयालु नामों की अभिव्यक्ति है, और पालन-पोषण, पोषण और दान का कार्य, जो भगवान और सर्व-दयालु नामों की अभिव्यक्ति है, प्रत्येक एक सत्य और एक ही कार्य है जो पूरे ब्रह्मांड में मनाया जाता है, वे एक ही अस्तित्व के आवश्यक अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करते हैं। ठीक उसी तरह, शुद्ध करने और स्वच्छ बनाने का कार्य, जो सर्व-पवित्र नाम की अभिव्यक्ति है, सूर्य की तरह अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व को और दिन के उजाले की तरह उसकी एकता को प्रदर्शित करता है।

और जैसा कि ऊपर वर्णित व्यवस्था, संतुलन, सुसज्जित, अलंकृत और स्वच्छ बनाने के बुद्धिमान कार्य एक दूसरे के पूरक होने के कारण एक ही निर्माता को इंगित करते हैं और साथ मिलकर अस्तित्व के अधिकतम क्षेत्र में एक ही व्यापक परिणाम उत्पन्न करते हैं, प्रत्येक सर्व-सुंदर नाम की भी अधिकतम क्षेत्र में ऐसी ही व्यापक अभिव्यक्ति है। और उस अभिव्यक्ति से आगे बढ़ने वाला कार्य अपने संबंध में स्पष्टता और निर्णायकता के साथ एकल अद्वितीय की ओर संकेत करता है।

व्यापकता.

स्पष्ट वास्तविकताएं और कार्य एक ऐसे एकमात्र स्रोत की ओर संकेत करते हैं जो ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है और उसे मुस्कुराता है, जैसे कि सार्वभौमिक ज्ञान जो सभी चीजों को उसके नियम और व्यवस्था का पालन करने के लिए प्रेरित करता है, व्यापक उदारता जो सभी चीजों को सुशोभित और संतुष्ट करती है, सर्वव्यापी दया जो सभी चीजों को प्रसन्न और सुखी बनाती है, जीविका की सार्वभौमिक व्यवस्था जो सभी चीजों का पोषण करती है और उन्हें आनंद देती है, और जीवन और जीवन देना जो सभी चीजों को जोड़ता है और उन्हें एक दूसरे से लाभान्वित करता है - ऐसी सभी स्पष्ट वास्तविकताएं और कार्य एक ऐसे एकमात्र स्रोत की ओर संकेत करते हैं जो एक सर्व-ज्ञानी, सर्व-उदार, सर्व-दयालु और सर्व-प्रदाता, और एक सर्व-जीवित जीवनदाता को स्पष्ट रूप से इंगित करता है जैसे प्रकाश सूर्य को इंगित करता है।

यदि इन सैकड़ों व्यापक कार्यों में से एक भी, जिनमें से प्रत्येक ईश्वर की एकता का स्पष्ट, गहरा प्रमाण है, उस एक अद्वितीय व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो प्रत्येक सैकड़ों मामलों में असंभव हो जाता है। उदाहरण के लिए, स्रोत की एकता के स्पष्ट वास्तविकताओं और प्रमाणों, जैसे कि ज्ञान, उदारता, दया, प्रावधान और जीवन देने की बात तो छोड़ ही दें, यदि केवल शुद्धिकरण के कार्य को ब्रह्मांड के निर्माता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो गुमराह लोगों द्वारा अपनाए गए अविश्वास के मार्ग के लिए निम्नलिखित की आवश्यकता होगी:

या तो सभी प्राणियों को सार्वभौमिक कार्य में हिस्सा मिलेगा

कणों और मक्खियों से लेकर सार्वभौमिक तत्वों और सितारों तक की सफाई; प्रत्येक को विशाल ब्रह्मांड की सजावट, संतुलन, व्यवस्था और सफाई को जानने और विचार करने की क्षमता होनी चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए; प्रत्येक को ब्रह्मांड के निर्माता के पवित्र गुणों को धारण करना होगा, या ब्रह्मांड के आकार की एक सलाहकार समिति होनी चाहिए ताकि उन सभी कार्यों को एक साथ तय और विनियमित किया जा सके, ब्रह्मांड के आने और जाने को संतुलित किया जा सके, और असंख्य कणों, मक्खियों और सितारों को उस समिति के सदस्य होना होगा। सुसज्जित करने, सजाने और सफाई करने के सार्वभौमिक, व्यापक और उत्कृष्ट कार्यों के अस्तित्व में आने के लिए सैकड़ों ऐसी अंधविश्वासी और निरर्थक असंभवताएँ घटित होनी चाहिए। यह केवल एक बार नहीं, बल्कि सैकड़ों और हज़ारों बार असंभव है।

यदि दिन का प्रकाश तथा पृथ्वी पर चमकने वाली सभी वस्तुओं में परावर्तित लघु सूर्यों को सूर्य के कारण नहीं माना जाता है तथा उन्हें सूर्य के प्रतिबिम्ब की अभिव्यक्ति नहीं माना जाता है, तो यह स्वीकार करना आवश्यक है कि कांच के सभी टुकड़ों में, पृथ्वी पर चमकने वाली पानी की सभी बूंदों तथा बर्फ के कणों में, यहां तक कि हवा के सभी कणों में भी सूर्य विद्यमान है, ताकि सर्वव्यापी प्रकाश विद्यमान रह सके।

इस प्रकार, बुद्धि भी एक प्रकाश है; सर्वव्यापी दया एक प्रकाश है; श्रृंगार, संतुलन, व्यवस्था और सफाई प्रत्येक एक व्यापक प्रकाश है - ये सभी अनन्त सूर्य की किरणें हैं। तो, देखो कि कैसे गुमराही और अविश्वास एक दलदल में घुस गए हैं जहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है! देखो कि गुमराही की अज्ञानता कितनी हास्यास्पद है! कहो, "इस्लाम धर्म और पूर्ण विश्वास के लिए ईश्वर की प्रशंसा है!"

निश्चय ही, यह महान, सार्वभौमिक शुद्धिकरण का कार्य, जो ब्रह्माण्ड के महल को स्वच्छ रखता है, परम पवित्र ईश्वरीय नाम की अभिव्यक्ति और आवश्यकता है। और जिस प्रकार सभी प्राणियों की महिमा भी परम पवित्र नाम से ही संबंधित है, उसी प्रकार परम पवित्र नाम भी उन सभी की स्वच्छता की अपेक्षा करता है।146

स्वच्छता का ईश्वरीय नाम से पवित्र संबंध होने के कारण ही कुछ हदीसों में स्वच्छता को ईमान से जोड़ा गया है।147

---

146 हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बुरे गुण, झूठे विश्वास, पाप और विधर्म सभी नैतिक और आध्यात्मिक गंदगी के उदाहरण हैं।

147 मुस्लिम, "ताहारा" 1; अत-तिर्मिधि, "दावत" 86. (ट्र.)

और यह आयत, “ निश्चय ही ईश्वर उन लोगों से प्रेम करता है जो सच्चे मन से पश्चाताप करते हुए उसकी ओर मुड़ते हैं और वह उन लोगों से प्रेम करता है जो स्वयं को शुद्ध रखते हैं” (2:222), यह दर्शाती है कि स्वच्छता ईश्वर के प्रेम को आकर्षित करने का एक साधन है।

दूसरा भाग

वह दिव्य नाम जो सर्व-न्यायमय है

> कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके भंडार हमारे पास न हों और हम उसे निश्चित मात्रा में ही उतारते हैं।
>
> (15:21)

उपर्युक्त श्लोक के अर्थ का एक पहलू और ईश्वरीय नाम सर्व-न्याय का एक प्रकटीकरण, जो ईश्वरीय नामों में से एक है, जो सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों में से एक है या ईश्वर के सर्वव्यापी नाम की छह ज्योतियों में से एक है, मुझे एस्कीशेहर जेल में दूर से दिखाई दिया। इसे समझने योग्य बनाने के लिए, फिर से तुलना के माध्यम से, हम निम्नलिखित कहते हैं:

ब्रह्माण्ड एक ऐसा महल है, जिसके अन्दर एक “नगर” है, जो निरन्तर विनाश और मरम्मत से हिल रहा है। और नगर में एक “देश” है, जो निरन्तर युद्ध और पलायन में बढ़ रहा है। और देश के अन्दर एक “विश्व” है, जो निरन्तर मृत्यु और जीवन के बीच घूम रहा है। लेकिन महल, नगर, देश और विश्व में ऐसा आश्चर्यजनक संतुलन, साम्य और व्यवस्था का कार्य व्याप्त है, जिससे स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि इन असंख्य प्राणियों में होने वाले सभी परिवर्तन, आगमन और प्रस्थान एक ही सत्ता के तराजू पर नापे और तौले जाते हैं, जो हर क्षण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को देखता और उसकी देखरेख करता है। उदाहरण के लिए, यदि एक मछली एक समय में एक हजार अंडे देती है और एक खसखस जैसा फूल बीस हजार बीज पैदा करता है, तो यदि कारण - सभी प्राणी - स्वतंत्र और अनियंत्रित होते, तो निरन्तर परिवर्तनों के आक्रमण और तत्वों की बाढ़ के माध्यम से संतुलन को नष्ट करने और सब कुछ नष्ट करने में सक्षम होते; या यदि वे लक्ष्यहीन, उद्देश्यहीन “संयोग”, अराजक अंधी शक्तियों, या अचेतन अंधकारमय प्रकृति के नियंत्रण में होते; तो प्राणियों में संतुलन या पूरे ब्रह्मांड का संतुलन इतना नष्ट हो जाता कि एक वर्ष के भीतर, वास्तव में एक दिन के भीतर, अराजकता हो जाती। समुद्र पूरी तरह से अव्यवस्थित और भ्रमित चीजों से भर जाते और सड़ांध बन जाते; वातावरण खराब हो जाता

हानिकारक गैसों से जहरीली पृथ्वी कूड़े के ढेर, बूचड़खाने या दलदल में बदल जाती। दुनिया का दम घुट जाता।

इस प्रकार, सजीव शरीर की कोशिकाओं से लेकर, रक्त में लाल और सफेद कणिकाओं, सूक्ष्म कणों के रूपान्तरण, शरीर के अंगों के बीच अनुपात और सम्बन्ध, समुद्रों से आने-जाने वाले पानी तक, पृथ्वी के नीचे झरनों की आय और व्यय, पशुओं और पौधों का जन्म और मृत्यु, शरद ऋतु का विनाश और बसंत का पुनर्निर्माण, सार्वभौमिक तत्वों और तारों के कर्तव्य और गति, और मृत्यु और जीवन, प्रकाश और अंधकार, और गर्मी और सर्दी के परिवर्तन, संघर्ष और टकराव, इतने संवेदनशील संतुलन, इतने महीन माप के साथ व्यवस्थित और तौले जाते हैं कि मानव मन कहीं भी कोई बर्बादी या निरर्थकता नहीं देख सकता है, ठीक वैसे ही जैसे मानव विज्ञान हर जगह सबसे उत्तम व्यवस्था और सुन्दर संतुलन को देखता और इंगित करता है। वास्तव में, मानव विज्ञान उस व्यवस्था और संतुलन की अभिव्यक्ति और व्याख्याकार है।

तो, आइए और सूर्य और उसके बारह ग्रहों के बीच संतुलित संबंध पर विचार करें। क्या यह सूर्य की तरह ही स्पष्ट रूप से उस सर्वशक्तिमान की ओर संकेत नहीं करता जो सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-शक्तिमान है? और विशेष रूप से हमारा यान, यानी पृथ्वी, जो ग्रहों में से एक है, एक वर्ष में मानव दूरी में लगभग अस्सी हज़ार वर्ष की परिक्रमा करता है। उस असाधारण गति के बावजूद, यह अपने चेहरे पर ढेर या व्यवस्थित चीजों को तितर-बितर या हिलाता नहीं है, न ही उन्हें अंतरिक्ष में फेंकता है। यदि इसकी गति एक निश्चित सीमा तक कम या अधिक होती, तो यह अपने निवासियों को अंतरिक्ष में फेंक देता और उन्हें तितर-बितर कर देता। और यदि इसकी गति और स्थिति में संतुलन एक मिनट या एक सेकंड के लिए भी नष्ट हो जाए, तो यह दुनिया को नष्ट कर देगा।

दरअसल, यह किसी अन्य पिंड से टकराएगा और समग्र विनाश का कारण बनेगा।

विशेष रूप से, पृथ्वी पर लाखों पौधों और पशु प्रजातियों के जन्म, मृत्यु, आजीविका और जीवन में करुणामय संतुलन एक सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-करुणामय ईश्वर को उसी स्पष्टता से दर्शाता है, जिस स्पष्टता से प्रकाश सूर्य को दर्शाता है।

और विशेष रूप से उन प्रजातियों के असंख्य सदस्यों में से केवल एक के अंग, क्षमताएं और इंद्रियां एक दूसरे से इतने संवेदनशील संतुलन में जुड़ी हुई हैं कि यह स्पष्ट रूप से एक सर्व-बुद्धिमान और सर्व-न्यायपूर्ण निर्माता को इंगित करता है।

और विशेष रूप से, पशुओं के शरीर में कोशिकाएं और रक्त वाहिकाएं, और रक्त में कणिकाएं, और कणिकाओं में कण इतने संवेदनशील रूप से संतुलित होते हैं और एक दूसरे के साथ इतने अच्छे संबंध रखते हैं

इससे स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि इनका पालन-पोषण और प्रशासन एक ही सर्व-न्यायी और सर्व-बुद्धिमान सृष्टिकर्ता के संतुलन, कानून और व्यवस्था के द्वारा किया जा रहा है, जिसके हाथों में सभी चीजों की लगाम और सभी चीजों की कुंजी है, और वह सभी चीजों को एक चीज के समान आसानी से निर्देशित करता है, बिना किसी एक चीज के निर्देश के अन्य चीजों के निर्देश में बाधा डाले।

यदि कोई व्यक्ति, जो इसे असंभव मानता है, यह विश्वास नहीं करता कि जिन्न और मनुष्य के कर्मों को अंतिम निर्णय के समय न्याय के सर्वोच्च तराजू पर तौला जाएगा, इस विशाल तराजू को ध्यान से देखता है, जिसे वे इस दुनिया में अपनी आँखों से देख सकते हैं, तो वे निश्चित रूप से इसे असंभव नहीं मानेंगे।

हे अपव्ययी, अन्यायी, गंदे, मितव्ययिता, न्याय और स्वच्छता का अनादर करने वाले! चूँकि तुम मितव्ययिता, स्वच्छता या न्याय का पालन न करके पूरे ब्रह्मांड का विरोध करते हो, जिन्हें पूरा ब्रह्मांड और सभी अन्य प्राणी अपने कार्यों में मूल सिद्धांत के रूप में मानते हैं, इसलिए तुम उनके क्रोध और घृणा के पात्र बन गए हो। तुम किस पर आधारित हो और किस पर भरोसा करते हो कि तुम अपने गलत कामों, असंतुलन, अपव्यय और अस्वच्छता के माध्यम से सभी प्राणियों को क्रोधित करते हो?

वास्तव में, ब्रह्मांड में सार्वभौमिक ज्ञान, जो ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति से आगे बढ़ता है, मितव्ययिता और अपव्यय की कमी को देखता है, और मितव्ययिता का आदेश देता है। और ब्रह्मांड में सर्वव्यापी न्याय जो सर्व-न्यायपूर्ण नाम की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति से निकलता है, सभी चीजों के संतुलन को प्रशासित करता है और मानवता को न्याय करने का आदेश देता है। सूरत अल-रहमान की निम्नलिखित आयतों में "संतुलन" शब्द का चार बार उल्लेख किया गया है:

> और आकाश को भी उसी ने ऊँचा बनाया है और तराजू को स्थिर किया है, अतः तुम तराजू से आगे न बढ़ो, और तराजू का पूरा ध्यान रखो और तराजू में कमी न करो। (55:7-9)

यह चार डिग्री और चार प्रकार के संतुलन को दर्शाता है, जो ब्रह्मांड में इसके सर्वोच्च महत्व को दर्शाता है। जिस तरह किसी भी चीज में कोई अपव्यय नहीं है, उसमें कोई विकार या असंतुलन भी नहीं है। इसी तरह, परम पावन नाम से निकलने वाली सफाई और स्वच्छता का कार्य ब्रह्मांड में सभी प्राणियों को साफ और सुंदर बनाता है। जब तक मानवता का प्रदूषणकारी हाथ हस्तक्षेप नहीं करता, तब तक दुनिया में किसी भी चीज में कोई गंदगी या कुरूपता नहीं है।

शब्द का सही अर्थ.

इसलिए आप इस बात से समझ सकते हैं कि न्याय, अर्थव्यवस्था और स्वच्छता के सिद्धांत मानव जीवन के लिए कितने मौलिक हैं; ये कुरान और इस्लामी सिद्धांतों के सत्य हैं। और जानें कि कुरान के आदेश ब्रह्मांड के साथ कितने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं; उन्होंने हर जगह अपनी मजबूत जड़ें फैलाई हैं और इसके सभी कोनों को घेर लिया है। जान लें कि इन सत्यों को नष्ट करना उसी तरह असंभव है जैसे ब्रह्मांड को नष्ट करना या उसका रूप बदलना असंभव है।

इसके अलावा, इन तीन सबसे व्यापक प्रकाशों की तरह, सैकड़ों अन्य व्यापक वास्तविकताएँ, जैसे कि दया, उदारता, और रिकॉर्ड करना और संरक्षित करना, पुनरुत्थान और परलोक की आवश्यकता होती है। इसलिए क्या यह संभव है कि पुनरुत्थान नहीं होगा और परलोक की स्थापना नहीं होगी, और इसलिए ये सभी शक्तिशाली और व्यापक वास्तविकताएँ, अर्थात् दया, उदारता, न्याय, ज्ञान, अर्थव्यवस्था और स्वच्छता, जो न केवल ब्रह्मांड में बल्कि सभी प्राणियों के साथ भी प्रबल हैं, निर्दयता, अन्याय, ज्ञान की कमी, अपव्यय, अशुद्धता और निरर्थकता में बदल जाती हैं?

भगवान न करे, एक लाख बार, भगवान न करे! क्या वह दया और बुद्धि जो एक मक्खी के जीवन के अधिकारों को दयालुतापूर्वक संरक्षित करती है, पुनरुत्थान न लाकर सभी सचेत प्राणियों के जीवन के अंतहीन अधिकारों या असंख्य अन्य प्राणियों के असीम अधिकारों का उल्लंघन करेगी? और यदि ऐसा कहना जायज़ है, तो क्या उस प्रभुत्व की महिमा और वैभव जो दया, करुणा, न्याय और बुद्धि के संबंध में असीम संवेदनशीलता और देखभाल दिखाती है, और उस देवता की संप्रभुता जो अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करने और खुद को ज्ञात और प्यार करने के लिए ब्रह्मांड को अपनी अनगिनत अद्भुत कलाओं और उपहारों से सुशोभित करती है, पुनरुत्थान की अनुपस्थिति की अनुमति देगी, जो इस ब्रह्मांड के सभी प्राणियों और पूर्णताओं को कम कर देगी, जिससे इन पूर्णताओं का खंडन होगा? भगवान न करे! ऐसा पूर्ण सौंदर्य और अनुग्रह स्पष्ट रूप से ऐसी पूर्ण कुरूपता की अनुमति नहीं देगा।

वास्तव में, जो व्यक्ति परलोक को नकारने का प्रयास करता है, उसे पहले पूरी दुनिया को उसकी सभी वास्तविकताओं के साथ नकारना चाहिए। अन्यथा, अपनी सभी वास्तविकताओं के साथ, दुनिया एक लाख आवाज़ों के साथ उनका खंडन करेगी, यह साबित करते हुए कि वे एक लाख बार झूठे हैं। दसवाँ वचन (शब्दों में शामिल) कुछ प्रमाणों के साथ साबित करता है कि परलोक का अस्तित्व उतना ही है जितना कि

इस संसार का अस्तित्व निश्चित एवं असंदिग्ध है।

तीसरा भाग
दिव्य नाम सर्वज्ञ

अपने रब के मार्ग की ओर बुद्धि से बुलाओ (16:125)।

उपर्युक्त आयत के अर्थ का एक पहलू और ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ का एक प्रकटीकरण, जो उन ईश्वरीय नामों में से एक है जिनके सर्वव्यापी प्रकटीकरण हैं या ईश्वर के सर्वव्यापी नाम के छह प्रकाशों में से एक है, मुझे रमजान के पवित्र महीने में दिखाई दिया।

इसे इंगित करने के लिए निम्नलिखित पांच बिंदु जल्दबाजी में लिखे गए हैं।

पहला बिंदु

जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, परमेश्वर की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति
परमात्मा के नाम ने ब्रह्माण्ड को एक ऐसी पुस्तक बना दिया है कि

इसके हर पन्ने पर सैकड़ों किताबें लिखी गई हैं, और इसकी हर पंक्ति में सैकड़ों पन्ने समाए हैं, और इसके हर शब्द में सैकड़ों पंक्तियाँ हैं, और इसके हर अक्षर में सैकड़ों शब्द हैं, और हर बिंदु पर किताब की एक छोटी सूची मिलती है। किताब के पन्ने और पंक्तियाँ, हर बिंदु तक, सैकड़ों मामलों में इसके लेखक और लेखक को इतनी स्पष्टता से प्रदर्शित करती हैं कि ब्रह्मांड की उस किताब का अवलोकन उसके लेखक के अस्तित्व और एकता को उस हद तक स्थापित करता है जो किताब के अपने अस्तित्व के प्रमाण से सैकड़ों गुना अधिक है। क्योंकि अगर एक अक्षर एक अक्षर की सीमा तक अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करता है, तो वही अक्षर एक पंक्ति की सीमा तक अपने लेखक को प्रदर्शित करता है।

इस मैक्रो-बुक का एक पन्ना धरती का चेहरा है। जितनी किताबें हैं, उतनी ही पौधे और पशु प्रजातियाँ इस पन्ने पर वसंत ऋतु में एक के अंदर एक लिखी हुई देखी जा सकती हैं, एक साथ, एक ही समय में, बिना किसी त्रुटि के, और सबसे उत्तम रूप में।

पृष्ठ की एक पंक्ति एक बगीचे की है। हम अपनी आँखों से देखते हैं कि इस पृष्ठ पर बगीचे में मौजूद फूलों, पेड़ों और जानवरों की संख्या के बारे में अच्छी तरह से रचित स्तुति-गीत एक साथ, एक के अंदर एक, और बिना किसी त्रुटि के लिखे गए हैं।

इस पंक्ति का एक शब्द है एक पेड़ जो खिल गया है और अपने पत्ते फैलाकर फल देने लगा है। इस शब्द में सार्थक अंश शामिल हैं जो अपने व्यवस्थित, सुडौल, सुशोभित पत्तों, फूलों और फलों की संख्या के अनुसार सर्वज्ञ महामहिम की प्रशंसा और स्तुति करते हैं। ऐसा लगता है जैसे, अन्य सभी पेड़ों की तरह, यह पेड़ भी एक अच्छी तरह से रचित स्तोत्र है, जो अपने लेखक की प्रशंसा गा रहा है।

यह भी ऐसा है मानो सर्वशक्तिमान परमेश्वर हजारों आँखों से अपने अद्भुत, पूजनीय कार्यों को देखना चाहता है, तथा उन्हें पृथ्वी की प्रदर्शनी में प्रदर्शित करना चाहता है।

और ऐसा लगता है जैसे उस शाश्वत सम्राट द्वारा वृक्ष को दिए गए रत्नजटित उपहार, सजावट और वेश-भूषाएं इस तरह से अविश्वसनीय रूप से अलंकृत, सुव्यवस्थित और अर्थपूर्ण रूपों में बनाई गई हैं कि उन्हें वसंत ऋतु में, वृक्ष के विशेष उत्सव और परेड के दौरान, उसके समक्ष प्रस्तुत किया जा सके, कि ये प्रत्येक उपहार, सजावट और वेश-भूषा - फूल, पत्तियां और फल - अनेक तरीकों से और अनेक प्रमाणों के साथ, एक के भीतर एक, लेखक के अस्तित्व और नामों की गवाही देते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक फूल या फल एक परिपूर्ण व्यवस्था और संतुलन प्रदर्शित करता है। संतुलन को निरंतर और हमेशा नवीनीकृत व्यवस्था के कार्य के माध्यम से बनाए रखा जाता है; व्यवस्था का कार्य परिपूर्ण कला और सजावट का अनुसरण करता है, और यह कला और सजावट असाधारण सुगंध और उद्देश्यपूर्ण स्वाद के साथ संयुक्त होती है। इस प्रकार, प्रत्येक फूल पेड़ पर फूलों की संख्या के लिए महामहिम के सर्व-बुद्धिमान व्यक्ति को इंगित करता है।

वृक्ष, जो स्वयं एक शब्द है, एक बीज से उगता है, जो एक अक्षर है। यह अक्षर एक छोटा-सा संदूक है जिसमें पूरे वृक्ष की भावी विषय-वस्तु और कार्यक्रम समाहित है। और इसी प्रकार आगे भी। इसी सादृश्य को जारी रखते हुए, सर्वज्ञ नाम का प्रकटीकरण न केवल ब्रह्माण्ड की पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ को बनाता है, बल्कि वह चमत्कार के रूप में इसकी रेखाओं, शब्दों, अक्षरों और बिंदुओं का भी निर्माण करता है; इस प्रकार यदि सभी कारण - सजीव या निर्जीव - एक साथ भी आ जाएं, तो वे एक बिंदु के समान नहीं बन पाएंगे, न ही वे उससे प्रतिस्पर्धा करने का साहस कर पाएंगे।

चूँकि इस ब्रह्मांड के शक्तिशाली कुरान के प्रत्येक सृजनात्मक चिह्न अपने अंकों और अक्षरों की संख्या के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित करते हैं, तो निश्चित रूप से, उद्देश्यहीन संयोग, अंध शक्ति, लक्ष्यहीन, अराजक, अचेतन प्रकृति किसी भी तरह से उस बुद्धिमान, अंतर्दृष्टिपूर्ण और विशेष संतुलन या सबसे संवेदनशील व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। यदि वे हस्तक्षेप करने में सक्षम होते, तो निश्चित रूप से भ्रम के कुछ निशान दिखाई देते। हालाँकि, कहीं भी अव्यवस्था का कोई निशान नहीं देखा जाना चाहिए।

दूसरा बिंदु

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहली बात: जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, यह “स्वाभाविक” और “अपरिहार्य” है कि एक असीम रूप से परिपूर्ण सौंदर्य और असीम रूप से सुंदर पूर्णता स्वयं को देखने और प्रकट करने की प्रवृत्ति रखती है। यह इस बुनियादी एकता के कारण है-

सार्वभौमिक नियम या प्रवृत्ति यह है कि ब्रह्माण्ड की महान पुस्तक का शाश्वत लेखक अपनी कृपा और पूर्णता के साथ स्वयं को ज्ञात करता है, तथा ब्रह्माण्ड के माध्यम से, इसके सभी पृष्ठों, पंक्तियों और यहां तक कि अक्षरों और पूर्ण विरामों के माध्यम से स्वयं को प्रेम करता है।

अतः हे असावधान मानव! जबकि महात्म्य और कृपा का स्वामी स्वयं को तुम्हारे समक्ष प्रकट करना चाहता है और अपने प्रत्येक प्राणी के माध्यम से तुम्हें प्रेम करना चाहता है, ऐसे उज्ज्वल और अनंत तरीकों से, यदि तुम उसके बदले में उसे विश्वास से नहीं पहचानते या अपनी पूजा से उसे प्रेम करने योग्य नहीं बनाते, तो तुम्हें जान लेना चाहिए कि यह कितना अथाह, जटिल अज्ञान है और इससे कितनी हानि होगी; अतः होश में आओ!

दूसरा मामला: ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ निर्माता के प्रभुत्व में भागीदारी के लिए कोई जगह नहीं है। क्योंकि, हर चीज में एक असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था कायम है, इसलिए इसमें भागीदार नहीं हो सकते। क्योंकि, अगर एक मामले में कई हाथ हस्तक्षेप करते हैं, तो वे इसे भ्रमित कर देंगे। अगर किसी देश में दो राजा हों, किसी शहर में दो राज्यपाल हों या किसी गांव में दो मुखिया हों, तो देश, शहर या गांव के सभी मामलों में अव्यवस्था का बोलबाला होगा। इसके अलावा, यह तथ्य कि सबसे छोटा अधिकारी भी अपने कर्तव्यों में दूसरों के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करता है, हमें दिखाता है कि प्रभुत्व और शासन की सबसे आवश्यक विशेषता

संप्रभुता स्वतंत्रता है। इसका मतलब है कि व्यवस्था के लिए एकता की आवश्यकता होती है, और संप्रभुता के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है।

यदि सहायता की आवश्यकता वाले शक्तिहीन मनुष्यों पर प्रकट संप्रभुता की ऐसी अस्थायी छाया हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, तो निश्चित रूप से संपूर्ण ब्रह्मांड पर आधिपत्य की डिग्री पर एक पूर्ण शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा प्राप्त पूर्ण संप्रभुता निश्चित रूप से अपनी पूरी शक्ति के साथ हस्तक्षेप को अस्वीकार कर देगी। यदि सबसे छोटा हस्तक्षेप भी हुआ, तो व्यवस्था बिगड़ जाएगी।

हालाँकि, ब्रह्मांड इस तरह से बनाया गया है कि एक बीज के निर्माण के लिए उतनी ही शक्ति की आवश्यकता होती है जितनी पूरे पेड़ को बनाने के लिए होती है। और एक पेड़ बनाने के लिए, पूरे ब्रह्मांड को बनाने के लिए जितनी शक्ति होनी चाहिए। और अगर कोई भागीदार होता जो ब्रह्मांड में हस्तक्षेप करता, तो उन्हें सबसे छोटे बीज के अस्तित्व में हिस्सा लेना पड़ता। क्योंकि बीज ब्रह्मांड का एक नमूना है। तो, दो अलग-अलग प्रभुताएँ, जिनके लिए इस विशाल ब्रह्मांड में थोड़ी सी भी जगह नहीं है, उन्हें एक बीज में या यहाँ तक कि एक छोटे कण में भी अपने लिए जगह ढूँढनी होगी। यह असंभवताओं और झूठी अवधारणाओं में सबसे अकल्पनीय और अर्थहीन है। अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार बनाने का मतलब है कि पूरी तरह से नपुंसकता को नपुंसकता का श्रेय देना

वह शक्तिशाली परमेश्वर, जो अपने न्याय के संतुलन और अपनी बुद्धि के क्रम में, यहाँ तक कि एक बीज के निर्माण तक, पूरे ब्रह्मांड को उसकी सभी अवस्थाओं और परिस्थितियों में धारण और बनाए रखता है। इससे जान लें कि सत्य के प्रति कितना असीम रूप से जटिल विरोध, (कितनी अक्षम्य) त्रुटि, और (कितना भयावह) झूठ है अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदार होना, और ईश्वरीय एकता और उसमें विश्वास कितना असीम रूप से जटिल सत्य और वास्तविकता है। इसे जानें और कहें, "विश्वास के लिए ईश्वर की सभी प्रशंसा और धन्यवाद!"

तीसरा बिंदु

अपने नाम के माध्यम से, सर्वशक्तिमान निर्माता ने इस दुनिया में हजारों सुव्यवस्थित दुनियाओं को शामिल किया है। उन दुनियाओं के बीच, उसने मानवता को एक केंद्र और धुरी के रूप में बनाया है जिसमें उसकी बुद्धि के उदाहरण और ब्रह्मांड के अस्तित्व के पीछे के उद्देश्य केंद्रित हैं।

बुद्धि और उद्देश्य के इन उदाहरणों में सबसे महत्वपूर्ण मानवता से संबंधित हैं; उसने प्रावधान को मानवीय क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु बनाया है।

मानव जगत में जिन उद्देश्यों का पालन किया जाता है और ज्ञान के उदाहरण हैं, उनमें से अधिकांश प्रावधान से संबंधित हैं और इसके माध्यम से प्रकट होते हैं। मानवता में चेतना और आनंद प्रावधान एक शानदार तरीके से सर्वज्ञ नाम की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है। और सैकड़ों विज्ञानों में से प्रत्येक-

मानव चेतना के माध्यम से आविष्कृत ज्ञान अस्तित्व के एक पहलू में सर्वज्ञ नाम की एक अभिव्यक्ति का वर्णन करता है।

उदाहरण के लिए, अगर चिकित्सा विज्ञान से पूछा जाए, "ब्रह्मांड क्या है?", तो वह निश्चित रूप से उत्तर देगा, "यह एक असाधारण रूप से व्यवस्थित और परिपूर्ण विशाल फार्मेसी है। सभी उपचार सबसे अच्छे और सबसे उचित तरीके से तैयार और संग्रहीत किए जाते हैं।"

और यदि रसायन विज्ञान से पूछा जाए कि, "पृथ्वी क्या है?"
जवाब होगा, “यह एक उत्तम, असाधारण रूप से व्यवस्थित दवा की दुकान है।”

और इंजीनियरिंग का विज्ञान जवाब देगा, “यह एक उत्तम कारखाना है, इसमें कोई दोष नहीं है।”

और कृषि विज्ञान उत्तर देगा, "यह एक असीम उत्पादक, सुव्यवस्थित क्षेत्र और उद्यान है जो समय पर सभी प्रकार की फसलें पैदा करता है।"

व्यापार का विज्ञान उत्तर देगा, "यह एक अत्यंत सुव्यवस्थित प्रणाली है।"
प्रदर्शनी, व्यवस्थित बाज़ार और सबसे कलात्मक सामानों से भरी दुकान।”

अर्थशास्त्र का उत्तर होगा, “यह एक अत्यंत सुव्यवस्थित गोदाम है जिसमें हर प्रकार का सामान मौजूद है।”

आहार विज्ञान का उत्तर होगा, "यह भगवान द्वारा निर्मित और तैयार किया गया रसोईघर है तथा सर्वदयालु द्वारा बनाया और भरा गया एक कड़ाहा है जिसमें लाखों प्रकार के सबसे स्वादिष्ट भोजन एक साथ सबसे व्यवस्थित ढंग से पकाए जाते हैं।"

सैन्य मामलों का विज्ञान उत्तर देगा, "पृथ्वी एक सैन्य शिविर है। यद्यपि हर वसंत में उस सेना में सैकड़ों-हजारों अलग-अलग राष्ट्र नए-नए हथियारों से लैस होकर धरती पर अपने तंबू गाड़ते हैं, उन्हें उनके राशन, वर्दी, हथियार, प्रशिक्षण और छुट्टी दी जाती है, जो प्रत्येक राष्ट्र के लिए अलग-अलग और विशेष होती है, एकदम सही क्रम में, बिना किसी भ्रम के और किसी को भी भुलाए बिना, एक ही सेनापति के आदेश, शक्ति और करुणा के माध्यम से, उसके खजाने से; ये सभी सबसे नियमित तरीके से प्रशासित होते हैं।"

और यदि बिजली के विज्ञान से पूछा जाए कि, “यह संसार क्या है?” तो वह निश्चित रूप से उत्तर देगा कि, “ब्रह्मांड के इस भव्य महल की छत को असंख्य, असाधारण रूप से अच्छी तरह से बनाए गए और व्यवस्थित बिजली के दीपों से सजाया गया है। उनकी रचना और व्यवस्था में ऐसा असाधारण क्रम और संतुलन है कि यद्यपि ये सभी स्वर्गीय दीप, मुख्य रूप से सूर्य, जो पृथ्वी से एक हजार गुना बड़ा है, निरंतर जलते रहते हैं, फिर भी वे अपना संतुलन नहीं बिगाड़ते, न ही फटते हैं और न ही आग लगाते हैं।

उनका खर्च असीमित है, तो उनकी आय या ईंधन कहाँ से आता है? वे अपने स्रोत का उपभोग क्यों नहीं करते? उनके जलने में संतुलन क्यों नहीं बिगड़ता? एक छोटा सा दीपक अगर नियमित रूप से न संभाला जाए तो बुझ जाता है।
उस महाप्रतापी सर्वज्ञ परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति पर विचार करो, जो सूर्य को, जिसके बारे में खगोलशास्त्र कहता है कि वह पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है और करोड़ों वर्ष पुराना है, बिना बुझे लगातार जलाता रहता है,148 और कहता है, ‘सर्व-महिमावान परमेश्वर है!’ सूर्य की आयु के सेकंडों की संख्या से कहो, ‘परमेश्वर क्या आश्चर्य चाहता है!

---

148 यह तो हिसाब लगाया ही जा सकता है कि सूर्य के चूल्हे या दीपक के लिए कितना ईंधन चाहिए होगा, जो दुनिया के महल को गर्म और रोशन करता है। खगोल विज्ञान के अनुसार, इसे जलाने के लिए हर दिन दस लाख धरती और हज़ारों महासागरों के तेल के बराबर लकड़ियों के ढेर की ज़रूरत होगी। अब सोचिए और कहिए, "परमेश्वर सर्व-महिमावान है! परमेश्वर क्या-क्या चमत्कार चाहता है!
जो कुछ और जिस तरह से वह चाहता है, वह होता है! ईश्वर इसे कितनी अच्छी तरह से करता है, और वह कितना धन्य और सर्वोच्च है! महामहिम, बुद्धि और सर्वशक्तिमान महामहिम की शक्ति के सामने सूर्य के कणों की संख्या के बराबर, जो इसे निरंतर प्रकाश देता है।

जो कुछ और जिस तरह से वह चाहता है! परमेश्वर इसे कितनी अच्छी तरह से करता है, और वह कितना धन्य और सर्वोच्च है! उसके अलावा कोई देवता नहीं है! ' और सोचें: ये स्वर्गीय दीप एक अद्भुत क्रम में हैं, और उनकी देखभाल बहुत सावधानी से की जाती है।

ऐसा लगता है जैसे इन विशाल, असंख्य अग्नि पिंडों, इन प्रकाश-प्रसारक दीपों का बॉयलर एक नरक है जिसकी गर्मी कभी समाप्त नहीं होती; यह उन्हें प्रकाशहीन गर्मी प्रदान करता है। जबकि उन विद्युत दीपों की मशीनरी और केंद्रीय कारखाना एक शाश्वत स्वर्ग है; यह उन्हें प्रकाश प्रदान करता है; और सर्वज्ञ नाम की व्यापक अभिव्यक्ति के माध्यम से वे व्यवस्थित रूप से जलते रहते हैं।"

और इसी प्रकार। जैसा कि इस प्रकार के सैकड़ों विज्ञान निश्चित रूप से प्रमाणित करते हैं, ब्रह्माण्ड ज्ञान और उपयोगी ज्ञान के असंख्य उदाहरणों से सुशोभित है।

एक दोषरहित, परिपूर्ण व्यवस्था के भीतर प्रकृति और उद्देश्यों को बनाए रखना। और अपनी सर्वव्यापी बुद्धि के माध्यम से, वह व्यवस्था और बुद्धि के उन्हीं उदाहरणों का अनुसरण करता है जैसा उसने पूरे ब्रह्मांड के लिए बीजों और सबसे छोटे जीवित प्राणियों के लिए छोटे-छोटे उपायों में किया है। यह स्पष्ट है कि कुछ लक्ष्यों, उद्देश्यों, ज्ञान के उदाहरणों या लाभों का पीछा करने में एक उद्देश्यपूर्ण विकल्प या इच्छा और इरादा होता है। इसलिए, ये इच्छित उद्देश्य, बुद्धि के उदाहरण और आशीर्वाद कभी भी अचेतन कारणों या प्रकृति का काम नहीं हो सकते, जिनमें इच्छा, विकल्प और उद्देश्य की कमी होती है; न ही वे उनमें हस्तक्षेप कर सकते हैं।

परिणामस्वरूप, यह वर्णन नहीं किया जा सकता कि यह कितना हास्यास्पद अज्ञानतापूर्ण है कि हम यह न पहचानें या यह अस्वीकार करें कि सर्वज्ञ निर्माता, परमेश्वर ...

वह जो चाहता है वही करता है, और जिसकी ब्रह्माण्ड को अपेक्षा है तथा जो व्यवस्था और बुद्धिमत्ता के सभी अनंत उदाहरणों के साथ प्रदर्शित करता है

सभी प्राणियों में जो उसमें समाहित हैं। वास्तव में, अगर कोई ऐसी चीज है जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि वह दुनिया की सबसे चौंकाने वाली चीज है, तो वह है ऐसा इनकार। जबकि ब्रह्मांड के सभी प्राणियों में सबसे उत्तम व्यवस्था और ज्ञान के अनंत उदाहरण उसके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, यहां तक कि अज्ञानता और अंधेपन में सबसे अनंत लोग भी समझते हैं कि उसे न देखना या पहचानना कैसा अंधापन और अज्ञान है। मैं यह भी कह सकता हूं कि अविश्वासियों में, सोफिस्ट, जिन्हें मूर्ख माना जाता है क्योंकि उन्होंने ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकार दिया, सबसे बुद्धिमान हैं। क्योंकि जब उन्होंने देखा कि ब्रह्मांड के निर्माता, ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास किए बिना ब्रह्मांड के अस्तित्व की व्याख्या करना संभव नहीं था, तो उन्होंने ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकार दिया। उन्होंने खुद को भी नकार दिया। यह दावा करते हुए कि, "ऐसा कुछ भी नहीं है जो अस्तित्व में हो," उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता को त्याग दिया, और खुद को इस भ्रम से बचा लिया कि ब्रह्मांड में कोई भी चीज मौजूद नहीं है।

अन्य इनकार करने वालों की - बुद्धिवाद की आड़ में - असीम तर्कहीनता; एक अर्थ में वे तर्कसंगतता के करीब पहुंच गए।

चौथा बिंदु

जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, कोई भी व्यक्ति जो चेतना से युक्त है, यह स्वीकार नहीं कर सकता कि एक बुद्धिमान मास्टर बिल्डर अपने द्वारा बनाए गए महल के प्रत्येक पत्थर में बुद्धि के सैकड़ों उदाहरणों का सावधानीपूर्वक अनुसरण करता है, लेकिन फिर वह महल की छत बनाने में विफल हो जाता है, जिससे यह खंडहर में गिर जाता है और इस प्रकार बुद्धि के सभी असंख्य उद्देश्य और उदाहरण खो जाते हैं। इसी तरह, एक असाधारण रूप से बुद्धिमान व्यक्ति के लिए एक छोटे से बीज में सैकड़ों लाभ और उद्देश्यों का अनुसरण करना और फिर पेड़ पर किए गए अपने सभी खर्चों को उससे एक फल प्राप्त करके बर्बाद होने देना संभव नहीं है, इस प्रकार एक पूरी तरह से बेकार रास्ता अपनाना जो बुद्धि के विपरीत है।

ठीक उसी तरह, सर्वज्ञ निर्माता ब्रह्मांड के महल में प्रत्येक प्राणी को सैकड़ों बुद्धिमानी के उदाहरण देता है, और उन्हें सैकड़ों कर्तव्यों से सुसज्जित करता है, प्रत्येक वृक्ष को उसके फलों और फूलों की संख्या के अनुसार बुद्धिमानी और कर्तव्यों के उदाहरण देता है। इसलिए, उसका पुनरुत्थान न करने का अर्थ होगा बुद्धि और कर्तव्यों के अनगिनत उदाहरणों को निरर्थक, बेकार या निष्फल मानना और उन सभी को बर्बाद होने देना, इस प्रकार उसकी पूर्ण, परिपूर्ण शक्ति को पूर्ण नपुंसकता, उसकी पूर्ण बुद्धि को अनंत निरर्थकता और उद्देश्यहीनता, उसकी पूर्ण और परिपूर्ण सुंदरता और कृपा को पूर्ण कुरूपता और उसके न्याय को असीम अन्याय मान लेना। यह उस बुद्धि, दया और न्याय को नकारने के बराबर होगा जिसे ब्रह्मांड में हर कोई देखता है। यह सबसे विचित्र अकल्पनीयता है, जिसमें अंतहीन भ्रांतियाँ हैं। तो गुमराह लोगों को चाहिए कि वे आकर देखें कि उनकी गुमराही में कितना भयानक अंधकार है और यह कैसा साँपों और बिच्छुओं का बसेरा है, ठीक वैसे ही जैसे उनकी कब्रें होंगी। तो उन्हें बता दें कि आख़िरत पर ईमान एक ऐसा रास्ता है जो जन्नत की तरह सुंदर और प्रकाशमान है, और इस तरह ईमान को अपना लें।

पांचवां बिंदु

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहली बात: अपने नाम के प्रकटीकरण के रूप में, सर्वशक्तिमान निर्माता, हर चीज में सबसे हल्का रास्ता, सबसे छोटा रास्ता, सबसे आसान तरीका, सबसे लाभदायक रूप अपनाता है। इससे पता चलता है कि कोई भी व्यर्थ नहीं है-

वस्तुओं की प्रकृति में लाभ की कमी, निरर्थकता या अनुपस्थिति। चूँकि अपव्यय, सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम के विपरीत है, इसलिए इस नाम के प्रकटीकरण के लिए मितव्ययिता की आवश्यकता होती है, जो इसके मूलभूत सिद्धांतों में से एक है।

हे फिजूलखर्च इंसान! जान लो कि तुम मितव्ययिता का पालन न करके सच्चाई के कितने विपरीत काम करते हो, जो कि ब्रह्मांड में सबसे बुनियादी सिद्धांतों में से एक है! और समझो कि आयत द्वारा सिखाया गया एक आवश्यक, व्यापक सिद्धांत क्या है, खाओ और पियो, लेकिन फिजूलखर्ची मत करो (7: 31)।

दूसरा विषय: 'अत्यंत बुद्धिमान्' का नाम स्पष्ट रूप से उस महानतम रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहक बनने की ओर संकेत करता है तथा उसे आवश्यक बनाता है।

वास्तव में, चूँकि एक सबसे सार्थक पुस्तक को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता होती है, और एक उत्कृष्ट सौंदर्य को देखने और खुद को प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण की आवश्यकता होती है, और एक सबसे उत्तम कला को इसकी घोषणा करने के लिए एक संदेशवाहक की आवश्यकता होती है, निश्चित रूप से मानव जाति के बीच एक पूर्ण मार्गदर्शक, एक सर्वोच्च शिक्षक होगा, जिसे ब्रह्मांड की शक्तिशाली पुस्तक द्वारा संबोधित किया जाता है, जिसके प्रत्येक अक्षर में सैकड़ों अर्थ और ज्ञान के उदाहरण हैं। यह शिक्षक पुस्तक में निहित पवित्र और सच्ची बुद्धि को दिखाएगा और सिखाएगा, और वह ब्रह्मांड के निर्माण के लिए भगवान के उद्देश्यों के प्रकट होने या यहां तक कि साकार होने का साधन होगा। वह सृष्टिकर्ता की उत्तम कला और उसके नामों की सुंदरता को भी प्रतिबिम्बित करेगा और प्रकट करेगा, जिसे वह विशेष रूप से पूरे ब्रह्मांड में प्रदर्शित करना चाहता है।

और चूँकि सृष्टिकर्ता अपने सभी प्राणियों के माध्यम से खुद को प्यार करना चाहता है और चाहता है कि उसके चेतन प्राणी प्रेम और उपासना के साथ जवाब दें, इसलिए उनमें से कोई एक निश्चित रूप से सभी के नाम पर व्यापक उपासना के साथ जवाब देगा, जो कि सर्वव्यापी प्रभुता के प्रकटीकरण के सामने होगा। एक शानदार तरीके से बताने और महिमामंडन के माध्यम से, जो भूमि और समुद्र को परमानंद में ले जाएगा और आकाश और पृथ्वी को गुंजायमान कर देगा, वह इन चेतन प्राणियों की निगाहों को इन सभी प्राणियों के निर्माता की ओर भी मोड़ देगा जो कला से भरे हुए हैं। फिर, वह एक पवित्र निर्देश और शिक्षा के माध्यम से सभी प्राणियों का ध्यान अपनी ओर मोड़ देगा। सबसे महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने यह सब शक्तिशाली कद के कुरान के माध्यम से किया, साथ ही उस सर्वज्ञ निर्माता (ब्रह्मांड और मानवता के अस्तित्व के लिए) के उद्देश्यों को सबसे अच्छे तरीके से प्रदर्शित किया। उन्होंने अपनी बुद्धि और अपनी कृपा और महिमा के सभी उदाहरणों की अभिव्यक्तियों के लिए सबसे सही तरीके से जवाब दिया। संक्षेप में, ऐसे व्यक्ति का अस्तित्व उतना ही आवश्यक है, जितना कि आवश्यक है-

ब्रह्मांड के लिए सूर्य का अस्तित्व उतना ही महत्वपूर्ण है। यह वास्तविकता है कि ब्रह्मांड में सभी ज्ञान के लिए मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का संदेशवाहक होना आवश्यक है, जितना कि सूर्य के लिए प्रकाश और प्रकाश के लिए दिन आवश्यक है।

जिस प्रकार अपने सबसे व्यापक रूपों के माध्यम से, सर्वज्ञ नाम मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की संदेशवाहकता को अधिकतम सीमा तक आवश्यक बनाता है, उसी प्रकार, ब्रह्मांड में देखे गए अपने सबसे व्यापक रूपों के माध्यम से, ईश्वर, अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान, अत्यंत प्रेम करने वाला, अनुदान देने वाला, अत्यंत उदार, अत्यंत कृपालु और प्रभु जैसे अनेक सर्वसुंदर नाम अधिकतम सीमा तक और पूर्ण निश्चितता के साथ मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की संदेशवाहकता को आवश्यक बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, सर्वव्यापी दया जो कि सर्वशक्तिमान दयालु नाम का प्रकटीकरण है, सबसे पहले, उस एक के माध्यम से प्रकट होती है जो सभी संसारों के लिए दया है, "उस पर शांति और आशीर्वाद हो।"
"
के रूप में भेजा गया था

और सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा कि वह स्वयं को सर्व-प्रेममय नाम के रूप में प्रकट करे और प्रेम करे, सभी संसारों के प्रभु के उस प्रियतम के माध्यम से फलित होती है, और उसमें प्रतिसाद पाती है। और सुंदरता के सभी उदाहरण, जो सर्व-सुंदर और दयालु नाम की अभिव्यक्ति हैं, अर्थात् दिव्य सार की सुंदरता, दिव्य नामों की सुंदरता, उनकी कला की सुंदरता, और प्राणियों की सुंदरता, मुहम्मद के दर्पण में देखी और प्रदर्शित की जाती है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। और प्रभुता और ईश्वरीयता की भव्यता के प्रकटीकरण ज्ञात होते हैं, दृश्यमान और समझे जाते हैं, और प्रभुत्व के प्रभुत्व के अग्रदूत मुहम्मद के संदेशवाहक के माध्यम से पुष्टि की जाती है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। और इसी तरह। इन उदाहरणों की तरह, बहुसंख्यक सर्व-सुंदर नामों में से प्रत्येक मुहम्मद के संदेशवाहक के लिए एक चमकदार सबूत है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

संक्षेप में: चूँकि ब्रह्मांड मौजूद है और उसे नकारा नहीं जा सकता, तो निश्चित रूप से, ज्ञान, उदारता, दया, सौंदर्य, व्यवस्था, संतुलन और अलंकरण जैसी अवलोकनीय वास्तविकताएँ, जो वास्तव में ब्रह्मांड के रंग, अलंकरण, प्रकाश, कला, जीवन और बंधन हैं, को किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता। चूँकि इन गुणों और कार्यों को नकारना संभव नहीं है, इसलिए निश्चित रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान, सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-सुंदर और दयालु, और सर्व-न्याय करने वाला, वह जो इन गुणों से दर्शाया गया है, और जो इन कार्यों का कर्ता है, और सूर्य

और इन प्रकाशों के स्रोत को किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता। और निश्चित रूप से मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहकता, जो सर्वोच्च मार्गदर्शक, सबसे पूर्ण शिक्षक, सबसे प्रतिष्ठित संदेशवाहक, अस्तित्व की पहेली को सुलझाने वाले, सभी के शाश्वत चाहने वाले के दर्पण, दयालु के प्रिय हैं, और इन गुणों और कार्यों के प्रकट होने के साधन, वास्तव में उनकी पूर्णता और यहां तक कि उनके साकार होने के साधन को किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता। वास्तविकता की दुनिया और ब्रह्मांड की वास्तविकता की रोशनी की तरह, उनकी संदेशवाहकता ब्रह्मांड की सबसे चमकदार रोशनी है।

उन पर, उनके परिवार और साथियों पर, दिन के सेकंडों की संख्या और प्राणियों के कणों तक आशीर्वाद और शांति हो।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

चौथा भाग
वह दिव्य नाम जो सर्व-स्वतंत्र, एकल है

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कह दो, "वह अल्लाह है, जो सर्वथा अद्वितीय है।" (112:1)

उपर्युक्त श्लोक के अर्थ का एक पहलू और ईश्वरीय नाम सर्व-स्वतंत्र, एकमेव का एक प्रकटीकरण, जिसमें एकत्व और परम अद्वितीय नाम भी शामिल हैं, और यह उन ईश्वरीय नामों में से एक है जिनकी अभिव्यक्तियाँ सर्वव्यापी हैं या ईश्वर के सर्व-समावेशी नाम की छह ज्योतियों में से एक है जो शव्वाल के महीने में इस्कीशेर जेल में मेरे सामने प्रकट हुई। रिसाले-ए- नूर के कुछ अन्य भागों में इसके प्रकटीकरण के विस्तृत अर्थों का संदर्भ देते हुए, हम यहाँ सात संक्षिप्त संकेतों में उस ईश्वरीय एकता का संक्षिप्त विवरण देंगे जो स्पष्ट और निर्विवाद रूप से प्रकट हुई थी, जिसे सर्व-स्वतंत्र, एकमेव नाम अपनी व्यापक अभिव्यक्ति के साथ प्रदर्शित करता है।

पहला संकेत

बाईसवें शब्द और तैंतीसवें अक्षर ने विस्तार से प्रदर्शित किया है कि व्यापकतम अभिव्यक्ति के माध्यम से, सर्वव्यापी नाम ही सर्वव्यापी है।

स्वतंत्र, एकल एक ने संपूर्ण ब्रह्मांड पर, उसमें रहने वाले प्रत्येक प्राणी पर, तथा प्रत्येक व्यक्ति पर दिव्य एकता की मुहर लगा दी है। यहाँ हम केवल तीन मुहरों का संकेत देंगे।

पहली मोहर: ईश्वरीय स्वतंत्रता और एकता की अभिव्यक्ति ने ब्रह्मांड के चेहरे पर एकता की ऐसी मुहर लगाई है कि इसने इसे एक अविभाज्य संपूर्ण बना दिया है। जिसके पास पूरे ब्रह्मांड पर नियंत्रण या निपटान की शक्ति नहीं है, वह इसके किसी भी हिस्से का सच्चा मालिक नहीं हो सकता। मोहर निम्नलिखित है:

किसी कारखाने के पूरी तरह से व्यवस्थित भागों की तरह, ब्रह्मांड में मौजूद प्राणियों के भाग और प्रजातियाँ एक दूसरे की मदद करते हैं, और एक दूसरे के कार्यों को पूरा करने के लिए काम करते हैं। अपनी एकजुटता और सहयोग के ज़रिए, और एक दूसरे की मदद के लिए तत्परता से, एक दूसरे को गले लगाकर और एक दूसरे के भीतर एक होने के ज़रिए, वे एक ऐसा एकजुट अस्तित्व बनाते हैं कि, मानव शरीर के अंगों की तरह, उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। जो व्यक्ति किसी एक भाग या तत्व की बागडोर अपने हाथ में ले लेता है, वह उस पर तब तक अपना नियंत्रण नहीं रख सकता जब तक कि वह पूरे ब्रह्मांड की बागडोर अपने हाथ में न ले ले।

इस प्रकार, यह सार्वभौमिक सहयोग, एकजुटता, पारस्परिक प्रतिक्रिया और आलिंगन- एक दूसरे के साथ मिलकर ईश्वरीय एकता की सबसे शानदार सर्वोच्च मुहर बनाते हैं।

दूसरी मोहर: उस सर्व-स्वतंत्र, एकमेव नाम के प्रकटीकरण के द्वारा, पृथ्वी के मुख पर तथा वसंत के मुख पर दिव्य एकत्व की ऐसी चमकीली मोहर तथा एकता की ऐसी छाप दिखाई देती है कि यह सिद्ध हो जाता है कि जो व्यक्ति पृथ्वी के सभी प्राणियों को, उनके सभी व्यक्तियों, स्थितियों तथा अवस्थाओं को नियंत्रित नहीं कर सकता, तथा जो उन सभी को एक साथ नहीं जानता या देख नहीं सकता, तथा उन्हें बना नहीं सकता, वह संभवतः सृष्टि में कोई भाग नहीं ले सकता। मोहर निम्नलिखित है:

खनिज पदार्थों, तत्वों और पृथ्वी के निर्जीव प्राणियों की सबसे व्यवस्थित, फिर भी छिपी हुई छापों को नज़रअंदाज़ करते हुए, निम्नलिखित छाप पर विचार करें जो सैकड़ों-हज़ारों पशु प्रजातियों और लाखों-हज़ारों वनस्पति प्रजातियों के धागों से बुनी गई है: हम अपनी आँखों से देखते हैं कि वसंत ऋतु में पृथ्वी पर, विभिन्न कर्तव्यों और विभिन्न रूपों के होने और एक दूसरे के भीतर एक होने और एक साथ मिश्रित होने के बावजूद, सभी चीज़ों को बिना किसी भ्रम या त्रुटि के, पूर्ण भेद और भिन्नता के साथ, अत्यंत संवेदनशील संतुलन के साथ, बिना किसी कठिनाई के, बिल्कुल सही समय पर, अप्रत्याशित से उनकी पोषण और उपकरण दिए जाते हैं।

यह स्थिति, यह योजना, यह प्रशासन ईश्वरीय एकता और एकता की ऐसी मुहर बनाता है कि जो इन सभी प्राणियों को एक साथ शून्य से नहीं बना सकता और उन सभी को एक साथ प्रशासित नहीं कर सकता, उसका आधिपत्य या सृजन में कोई हिस्सा नहीं हो सकता। अगर उनका कोई हिस्सा होता, तो प्रशासन का सर्वव्यापी संतुलन बिगड़ जाता।

हालाँकि, मनुष्य स्पष्टतः परमेश्वर की अनुमति और आदेश से प्रभुत्व के इन नियमों का उत्तम अनुप्रयोग करते हैं।

तीसरी मोहर: ईश्वरीय एकता की यह मोहर मानव चेहरे पर है।

बल्कि, मानव चेहरा अपने आप में ईश्वरीय एकता की ऐसी मुहर है कि जो व्यक्ति आदम के समय से लेकर दुनिया के अंत तक आए और आने वाले सभी मनुष्यों को अपनी नज़र में नहीं रखता, और जो हर चेहरे पर सैकड़ों अलग-अलग निशान नहीं लगा सकता, वास्तव में, जो हर चेहरे को हर एक इंसान के लिए एक अलग निशान नहीं बना सकता, वह किसी एक चेहरे के निर्माण में भी कोई भूमिका नहीं निभा सकता, जिसमें उसकी खास, अलग-अलग विशेषताएं हों। जो व्यक्ति प्रत्येक इंसान के चेहरे पर सवालिया निशान लगाता है, उसे निश्चित रूप से अपनी नज़र में रखना चाहिए और अपने ज्ञान से मानव प्रजाति के सभी सदस्यों को शामिल करना चाहिए। क्योंकि यद्यपि सभी चेहरे अपनी बुनियादी विशेषताओं जैसे कि आँख और कान के संबंध में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं (और सभी एक ही पदार्थ से बने हैं), वे सभी एक दूसरे से अलग और पहचाने जाने योग्य हैं। जबकि यह तथ्य कि सभी मनुष्यों के चेहरे अपनी बुनियादी विशेषताओं और उनकी संरचना या संयोजन के संबंध में एक जैसे हैं, एकता की मुहर है जो दर्शाती है कि मानव प्रजाति का निर्माता एक है, कई बुद्धिमान अंतर - अन्य प्रजातियों के विपरीत -

जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करते हैं ताकि वे भ्रमित न हों और प्रत्येक मनुष्य के अधिकारों को संरक्षित किया जाना चाहिए, निर्माता की पूरी तरह से स्वतंत्र पसंद या इच्छा को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा, ये अंतर प्रत्येक चेहरे को दिव्य एकता की एक सूक्ष्म मुहर बनाते हैं, जो दर्शाता है कि जो सभी मनुष्यों और जानवरों, वास्तव में, पूरे ब्रह्मांड को नहीं बना सकता, वह इस मुहर को प्रभावित नहीं कर सकता है।

दूसरा संकेत

ब्रह्मांड की दुनिया, प्रजातियाँ और तत्व एक दूसरे से इतने जुड़े हुए और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं कि जो व्यक्ति पूरे ब्रह्मांड पर कब्ज़ा नहीं रखता और उसे नियंत्रित नहीं कर सकता, वह इसके किसी भी तत्व पर नियंत्रण नहीं कर सकता। यह ऐसा है मानो ईश्वरीय नाम से निकलने वाली एकता की अभिव्यक्ति

सर्व-स्वतंत्र, एकल ने संपूर्ण ब्रह्मांड को एक एकल, एकात्मक इकाई बनाया है ताकि इसमें जो कुछ भी है वह अपने निर्माता की एकता को प्रदर्शित करे।

उदाहरण के लिए, जिस तरह से दुनिया एक ही दीपक, सूर्य से प्रकाशित होती है, उसी तरह हवा का तत्व जो जीवों की सहायता के लिए तत्पर रहता है, वह एक एकल, एकात्मक इकाई है। साथ ही, आग, जो जीवों के भोजन को पकाती है, एक एकल, एकात्मक इकाई है, जैसे बादलों के स्पंज जो धरती के बगीचे को सींचते हैं, और बारिश जो सभी जीवों की मदद के लिए आती है। इसके अलावा, अधिकांश पशु और वनस्पति प्रजातियाँ पूरी धरती पर स्वतंत्र रूप से फैली हुई हैं, और प्रत्येक प्रजाति एक एकता बनाती है, और प्रत्येक का एक ही निवास स्थान है। एकता के ये सभी और कई अन्य उदाहरण निर्णायक रूप से इस बात की गवाही देते हैं कि अपने निवास स्थान के साथ, सभी जीव एक ही सत्ता की संपत्ति हैं।

इस सादृश्य का पालन करते हुए, ब्रह्मांड के सभी भाग या तत्व जो आपस में इतने जुड़े हुए और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, उन्होंने ब्रह्मांड को इतना एकल, एकात्मक इकाई बना दिया है कि यह एक से अधिक निर्माता को स्वीकार नहीं कर सकता। एक एजेंट जो पूरे ब्रह्मांड पर हावी नहीं हो सकता, वह किसी भी तरह से एक भी चीज़ के निर्माण या प्रशासन में भाग नहीं ले सकता है और न ही एक भी कण को अपनी आज्ञा मानने के लिए मजबूर कर सकता है।

तीसरा संकेत

अपनी सर्व-समावेशी अभिव्यक्ति के माध्यम से, उस सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र नाम ने ब्रह्माण्ड को अनन्त रूप से सबके लिए प्रार्थना किये जाने वाले असंख्य संदेशों में बदल दिया है, जिनमें से प्रत्येक पर उसके शब्दों की संख्या के अनुसार ही दिव्य एकता की मुहरें और एकत्व के चिह्न लगे हैं और इन चिह्नों की संख्या के अनुसार ही वह अपने लेखक को इंगित करता है।

वास्तव में, हर फूल, हर फल, हर घास, और यहाँ तक कि हर जानवर और पेड़ ईश्वरीय एकता की मुहर है और यह दर्शाता है कि वह हमेशा सभी के लिए प्रार्थना करने वाला है; साथ ही वे स्थान जहाँ वे पाए जाते हैं, जो संदेश का रूप लेते हैं, वे सभी उस व्यक्ति के हस्ताक्षर हैं जिसने उस स्थान को अंकित किया है। उदाहरण के लिए, एक बगीचे में एक फूल वास्तव में बगीचे के लेखक की मुहर है। फूल की मुहर जिस किसी की भी है, धरती पर उस तरह के सभी फूल स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि वे भी उसके शब्द हैं और जिस भी बगीचे में वे पाए जाते हैं वह उसकी लेखनी का एक टुकड़ा है।

इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्तिगत वस्तु, सब कुछ उसी को समर्पित करती है जिसने उसे बनाया है, इस प्रकार वह सबसे व्यापक तरीके से ईश्वरीय एकता को इंगित करती है।

चौथा संकेत

सूर्य की तरह स्पष्ट होने के अलावा, ईश्वरीय एकता जो कि सर्व-स्वतंत्र, एकल नाम की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति द्वारा प्रदर्शित की जाती है, इतनी तर्कसंगत है कि इसे अनिवार्य रूप से अनंत आसानी से पुष्टि और स्वीकार किया जा सकता है। दूसरी ओर, ईश्वर के साथ साझेदारों की संगति, जो इस अभिव्यक्ति द्वारा असीम रूप से विरोधाभासी है, स्वीकार करना अंतहीन रूप से कठिन, अनुचित या यहां तक कि अकल्पनीय है। इस वास्तविकता को प्रदर्शित करने वाले कई प्रमाणों को रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में समझाया गया है।

फिलहाल, इन प्रमाणों के विवरण को उन भागों में संदर्भित करते हुए, हम यहां केवल तीन बिंदुओं की व्याख्या करेंगे।

पहली बात: हमने दसवें और उनतीसवें वचनों के अंत में संक्षेप में तथा बीसवें अक्षर के अंत में विस्तार से सबसे पक्के प्रमाणों के साथ स्पष्ट रूप से समझाया है कि सबसे बड़ी चीज का निर्माण करना भी सर्व-स्वतंत्र, एकल और अद्वितीय की शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि सबसे छोटी चीज का। वह पूरे वसंत को एक फूल की तरह आसानी से बनाता है। हर वसंत में, वह हमारी आंखों के सामने पुनरुत्थान के हजारों नमूने बनाता है। वह एक बड़े पेड़ को एक छोटे से फल के टुकड़े की तरह ही आराम से संचालित करता है। जबकि यदि कई कारणों या एजेंटों का उल्लेख किया जाए, तो प्रत्येक फल एक पेड़ की तरह जटिल और कठिन हो जाता है, और एक फूल वसंत की तरह कठिन और परेशानी भरा हो जाता है।

अगर सेना का सामान एक ही कारखाने में एक ही कमांडर के आदेश पर बनाया जाए तो उसे बनाना एक सैनिक के सामान जितना आसान हो जाता है, जबकि अगर सैनिकों के हर उपकरण को अलग-अलग कारखाने में बनाया जाए और सेना को एक ही समय में कई कमांडरों द्वारा संचालित किया जाए तो हर सैनिक को सुसज्जित करने के लिए सेना के सैनिकों की संख्या के बराबर कारखानों की आवश्यकता होगी। ठीक उसी तरह, जब सब कुछ सर्व-स्वतंत्र, एकल और अद्वितीय एक को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक पूरी प्रजाति के असंख्य सदस्यों का निर्माण और प्रशासन एक सदस्य जितना आसान हो जाता है। हालांकि, अगर कारणों या अलग-अलग उम्र के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक पूरी प्रजाति के समान कठिन हो जाता है।

वास्तव में, एकता और मिलन दोनों ही तब संभव हैं जब सब कुछ एकता के द्वारा निर्मित और संचालित हो, और जब वे उस पर निर्भर हों। यह संबंध और निर्भरता प्राणियों को असीम शक्ति और ताकत प्रदान करती है, जिसके माध्यम से एक छोटी सी चीज अपनी व्यक्तिगत शक्ति से हजारों गुना अधिक कार्य कर सकती है। हालाँकि, अपने आप में कुछ बहुत शक्तिशाली है जो सर्व-स्वतंत्र, एकल और अद्वितीय पर निर्भर नहीं है

कोई भी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत शक्ति के अनुसार केवल छोटे-छोटे कार्य ही कर सकता है, तथा परिणाम भी उसी के अनुसार कम होते जाते हैं।

उदाहरण के लिए, चाहे वह कितना भी साहसी और ताकतवर क्यों न हो, सेना के नियमों का पालन न करने वाले सैनिक को अपना गोला-बारूद और सुरक्षा-सामग्री खुद ही उठानी पड़ती है; वह अधिक से अधिक दस दुश्मन सैनिकों का अस्थायी रूप से प्रतिरोध कर सकता है। क्योंकि उसकी व्यक्तिगत शक्ति ही इसके लिए पर्याप्त हो सकती है। लेकिन एक सैनिक, जो सेना में नियमित सदस्यता के माध्यम से सेनापति से जुड़ा हुआ है और उसका समर्थन प्राप्त करता है, उसे अपनी शक्ति और रसद के स्रोत खुद नहीं उठाने पड़ते। उसका संबंध और समर्थन उसके लिए एक अक्षय शक्ति बन जाता है, एक खजाने की तरह, जिसके माध्यम से वह पराजित दुश्मन सेना के एक फील्ड मार्शल को, साथ ही हजारों अन्य लोगों को पकड़ सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वरीय एकता और ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति के रूप में और सर्व-स्वतंत्र, एकल के साथ संबंध की शक्ति के माध्यम से, एक चींटी फिरौन को और एक मक्खी निम्रोद को और एक सूक्ष्म जीव एक तानाशाह को हरा सकती है, और एक चने जितना छोटा बीज अपने कंधों पर एक पहाड़ जितना विशाल और प्रभावशाली चीड़ का पेड़ उठा सकता है। वास्तव में, जिस सेना का वह सदस्य है, उसमें जो शक्ति और नैतिक शक्ति उसे मिलती है, उसके आधार पर एक निजी सेना के कमांडर के नाम पर उल्लेखनीय चीजें हासिल कर सकता है। इसी तरह, भले ही शाश्वत सम्राट, जो सर्व-स्वतंत्र और एकल है, अपने सेवकों की सहायता के लिए किसी मध्यस्थ बल की आवश्यकता के बिना अकेले ही सब कुछ के लिए पर्याप्त है; यदि वह ऐसा करना चाहे, तो वह एक ही चीज़ की मदद के लिए ब्रह्मांड की पूरी सेना को जुटा सकता है। इसलिए, ब्रह्मांड में कोई भी चीज़ ब्रह्मांड जितनी ही महान शक्ति पर निर्भर हो सकती है, और, अगर ज़रूरत पड़े तो, हर चीज़ किसी भी एक चीज़ के सामने सर्व-स्वतंत्र, एकल कमांडर की शक्ति की तरह बन सकती है। लेकिन दिव्य सत्ता की एकता के बिना, हर चीज़ अपनी सारी शक्ति खो देगी और कुछ भी नहीं बन जाएगी, और उनके परिणाम भी शून्य हो जाएँगे।

इस प्रकार, सबसे तुच्छ चीजों से सभी अद्भुत परिणामों का उद्भव, जिसे हम हर समय अपनी आँखों से देखते हैं, स्पष्ट रूप से दिव्य एकता और दिव्य एकता को दर्शाता है। अगर ऐसा न होता, तो हर चीज के परिणाम या फल केवल अपने स्वयं के आकार और व्यक्तिगत शारीरिक शक्ति तक ही सीमित होते, और हमारे आस-पास मौजूद उन सभी चीजों में से कुछ भी नहीं बचता जो अत्यधिक प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं और जो अपने महान मूल्य के बावजूद बेहद सस्ती हैं। हम एक खरबूजा या अनार प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते, जिसे हम अब बहुत कम कीमत पर खरीदते हैं

एक राशि, एक भाग्य के लिए। वास्तव में, दुनिया में सभी सहजता, प्रचुरता और सस्तापन दिव्य एकता से उत्पन्न होते हैं और दिव्य एकता की गवाही देते हैं।

दूसरा बिंदु: प्राणियों को दो तरीकों से अस्तित्व दिया जाता है; एक है शून्य से सृजन के माध्यम से, जिसे "उत्पत्ति" या "आविष्कार" कहा जाता है, और दूसरा है अस्तित्व में मौजूद तत्वों और चीजों को एक साथ लाकर अस्तित्व देना, जिसे "संरचना" या "निर्माण" कहा जाता है। जो बनाता है उसकी एकता और एकरूपता अस्तित्व देने के कार्य को असीम रूप से आसान बनाती है - इतना आसान कि यह आवश्यक और अपरिहार्य हो जाता है। अगर यह अन्यथा होता, अगर एक से अधिक निर्माता होते, तो चीजों का अस्तित्व अकल्पनीय, असंभव और अनुचित होता। यह तथ्य कि ब्रह्मांड में चीजें और प्राणी असीम आसानी से और सही रूप में अस्तित्व में आते हैं, स्वयं-स्पष्ट रूप से दिव्य एकरूपता की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है और साबित करता है कि हर चीज सीधे तौर पर सर्व-स्वतंत्र, महामहिम की एकल कला है।

वास्तव में, सर्व-स्वतंत्र, एकता का एकमात्र ईश्वर प्रत्येक वस्तु के लिए अपने सर्वव्यापी ज्ञान के माध्यम से एक अमूर्त साँचे की तरह एक निश्चित माप निर्धारित करता है, और अपनी असीम शक्ति के माध्यम से सृजन करता है, जिसकी विशालता उसके कार्यों के माध्यम से देखी जाती है, जैसे कि एक माचिस जलाना। सभी चीजों के कण भाग्य द्वारा निर्धारित रूप के अनुसार, उनके ज्ञान के दर्पण में विद्यमान साँचे में आसानी से स्थित होते हैं, और वे अपनी स्थिति को अच्छे क्रम में बनाए रखते हैं। यहां तक कि अगर चारों ओर से कणों को इकट्ठा करने की आवश्यकता होती है, तो कण उस शक्ति के व्यापक सिद्धांतों के अनुसार चलते हैं जो उन्हें चलाने और नियंत्रित करने के लिए और ज्ञान के नियमों के अनुसार निर्धारित करती है। इसलिए, एक आज्ञाकारी सेना के सैनिकों की तरह, वे एक नियमित तरीके से आते हैं और उस साँचे में प्रवेश करते हैं जिसे दिव्य नियति ने उस चीज़ के लिए निर्धारित किया है जिसके लिए उन्हें पहले से ही नियुक्त किया गया है, उसका शरीर बनाते हैं। जैसे कैमरे के दर्पण में प्रतिबिम्ब कागज पर विकसित होकर बाह्य सत्ता में आ जाता है, या किसी विशेष पदार्थ के प्रयोग से अदृश्य अक्षरों में लिखा हुआ अक्षर प्रकट हो जाता है, वैसे ही शक्ति उन वस्तुओं की प्रकृति या रूपों को बाह्य सत्ता में आच्छादित कर देती है जो सर्व-स्वतंत्र, एकत्व के शाश्वत ज्ञान के दर्पण में विद्यमान हैं। उन्हें बाह्य सत्ता में आच्छादित करके शक्ति उन्हें अर्थ के जगत से उद्भव के जगत में स्थानांतरित कर देती है, और हमें दिखाती है।

यदि प्राणियों को सर्व-स्वतंत्र, एकल एक के रूप में नहीं माना जाता है
एकता, एक मक्खी का शरीर बनाने के लिए पृथ्वी के चारों ओर से और सार्वभौमिक तत्वों से सभी कणों को इकट्ठा करना आवश्यक होगा - काफी सरलता से, यह

कला से भरपूर अपने शरीर को बनाने के लिए सभी कणों को इकट्ठा करने के लिए पृथ्वी और तत्वों के चेहरे को छानना और उन्हें अपने शरीर के साँचे में उचित क्रम में रखना आवश्यक होगा। इसके लिए मक्खी के शरीर के सदस्यों की संख्या के अनुसार भौतिक साँचे के अस्तित्व की आवश्यकता होगी और आत्मा की तरह उसकी सूक्ष्म, सूक्ष्म, अमूर्त क्षमताओं को अमूर्त दुनिया से एक विशेष माप में खींचना होगा।

इस प्रकार, इस तरह से एक मक्खी का निर्माण करना ब्रह्मांड के निर्माण जितना ही कठिन होगा; बल्कि, पूरी तरह से असंभव और अकल्पनीय होगा। क्योंकि धर्म और विज्ञान के सभी लोग इस बात पर सहमत हैं कि सर्व-स्वतंत्र, एकल के अलावा कुछ भी शून्य से निर्माण नहीं कर सकता। जब कारणों और प्रकृति का उल्लेख किया जाता है, तो प्रत्येक व्यक्तिगत चीज़ के अस्तित्व के लिए पूरे ब्रह्मांड पर नियंत्रण या महारत की आवश्यकता होगी, इसके सभी भौतिक और अभौतिक क्षेत्रों के साथ।

तीसरा बिन्दु: हम दो या तीन तुलनाओं की संक्षेप में व्याख्या करेंगे, जिनका उल्लेख रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में किया गया है, ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि यदि किसी एक सर्व-स्वतंत्र, एकता वाले को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो सभी चीजें एक ही चीज के समान सरल हो जाती हैं, जबकि यदि किसी एक चीज को कारणों और प्रकृति को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो एक चीज का अस्तित्व सभी चीजों के समान कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी निजी सैनिक का प्रशासन दस अधिकारियों को सौंपा जाता है, तो यह बटालियन की कमान संभालने से दस गुना अधिक कठिन होगा। क्योंकि जो लोग उसे कमान देते हैं, वे एक-दूसरे के लिए बाधा बनेंगे, और इसके परिणामस्वरूप होने वाली अव्यवस्था के कारण सैनिक को शांति नहीं मिलेगी। हालाँकि, यदि बटालियन से अपेक्षित परिणाम और स्थिति को एक ही अधिकारी को सौंपा जाता है, तो वह परिणाम और स्थिति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। यदि वह परिणाम और स्थिति उन सैनिकों से अपेक्षित है जो बिना कमांडर के बटालियन बनाते हैं, तो वांछित परिणाम और स्थिति केवल बहुत विवाद और कठिनाई के साथ और बहुत अधिक अव्यवस्था में ही प्राप्त की जा सकती है।

दूसरी तुलना: उदाहरण के लिए, अगर किसी मास्टर बिल्डर को अयासोफ़िया (हागिया सोफिया) जैसी मस्जिद के गुंबद को बनाने के लिए नियुक्त किया जाता है, तो वह इसके पत्थरों को व्यवस्थित करके इसे आसानी से कर सकता है। लेकिन अगर पत्थरों की बात करें, तो उन्हें एक-दूसरे पर पूरी तरह से हावी होना होगा और साथ ही एक-दूसरे पर हावी होना होगा ताकि वे एक-दूसरे को सहारा दे सकें और एक निलंबित स्थिति में खड़े हो सकें। यह एक ऐसा काम होगा जो सौ मास्टर बिल्डरों द्वारा किए जाने वाले काम से सौ गुना बड़ा होगा।

तीसरी तुलना: उदाहरण के लिए, चूँकि पृथ्वी उस सर्व-स्वतंत्र, एकता के एकमात्र सत्ता का एक अधिकारी, एक सैनिक है, जो क्रांति की दो गतिविधियों के साथ बड़े आनन्द के साथ उस एक सत्ता की आज्ञा का पालन करती है, जैसे एक सत्ता,

आनंदित मावलवी (मेवलेवी) दरवेश, ऋतुओं के परिवर्तन, दिन और रात के परिवर्तन, तथा आकाश में होने वाली ऊंची, राजसी गतियों और फिल्म के दृश्य जैसे परिवर्तनों जैसे शानदार परिणाम सबसे आसानी से, नियमित रूप से और सबसे व्यवस्थित तरीके से प्राप्त होते हैं। ऐसा लगता है जैसे वह अकेला सैनिक ब्रह्मांड में शानदार युद्धाभ्यास का नेतृत्व कर रहा हो।

यदि इसे एक सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र ईश्वर के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता, जिसका देवत्व का शासन और प्रभुता की संप्रभुता पूरे ब्रह्मांड को घेरती है, और जिसका आदेश और शासन सभी प्राणियों पर हावी है, तो ये परिणाम - ये स्वर्गीय युद्धाभ्यास, सांसारिक मौसम और दैनिक परिवर्तन - केवल लाखों सितारों और पृथ्वी से हजार गुना बड़े गोले द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं, जो हर चौबीस घंटे और हर साल लाखों वर्षों की लंबी दूरी तय करते हैं।

इस प्रकार, एक ही अधिकारी - पृथ्वी - की अपनी धुरी और अपनी कक्षा में दो मौलवी-जैसी गतियों के माध्यम से इन शानदार परिणामों की प्राप्ति, एक ऐसा उदाहरण है जो ईश्वरीय एकता में असीम सहजता को दर्शाता है। यह यह भी दर्शाता है कि अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदारों की संगति से क्या झूठ और असंभवताएँ जुड़ी हैं, जिसके लिए समान परिणाम प्राप्त करने के लिए अंतहीन लंबे और लाखों गुना अधिक कठिन तरीकों की आवश्यकता होगी।

कारणों और प्रकृति को मानने वालों की अज्ञानता को देखने के लिए इस तुलना पर भी विचार करें: एक असाधारण रूप से कुशल व्यक्ति एक असाधारण कारखाने, या एक अद्भुत घड़ी, या एक शानदार महल, या एक बेहतरीन किताब के पुर्जे या मशीनरी को पूरी तरह से तैयार करता है। फिर, पुर्जों को आसानी से जोड़े बिना और उन्हें खुद से काम करने के लिए तैयार किए बिना, वह बहुत अधिक खर्च करता है और प्रत्येक पुर्जे, प्रत्येक तंत्र, और कागज़ और कलम की प्रत्येक शीट को असाधारण मशीनों में बदल देता है, केवल कारखाना, महल और घड़ी बनाने और किताब लिखने के लिए। इस प्रकार, वह उन्हें अपनी असाधारण कला, कौशल और महारत का हवाला देता है, जिसे प्रदर्शित करने की उसकी बहुत इच्छा है। आप समझ जाएंगे कि ऐसी धारणा कितनी अनुचित और कितनी अज्ञानतापूर्ण है।

ठीक उसी तरह, जो लोग सृष्टि को कारणों और प्रकृति के हवाले से मानते हैं, वे इस धारणा में दिखाए गए अज्ञान से कहीं ज़्यादा अज्ञान में पड़ जाते हैं। क्योंकि प्रकृति और कारण या प्रत्यक्ष कारक स्वयं, अन्य प्राणियों की तरह, कला के असाधारण रूप से सुव्यवस्थित कार्य हैं। जो उन्हें इस तरह बनाता है, वह उनके परिणाम भी उत्पन्न करता है, और उन्हें एक साथ प्रदर्शित करता है। जो बीज बनाता है, वह उस पर पेड़ भी बनाता है; और जो पेड़ बनाता है, वही उस पर फल भी बनाता है। अन्यथा, अन्य, भिन्न प्रकृति और कारण या प्रत्यक्ष कारक अस्तित्व में आने के लिए, और अधिक सुव्यवस्थित प्रकृति और कारण आवश्यक होंगे। और इसी तरह, अनंत तक। किसी को यह स्वीकार करना होगा

भ्रमपूर्ण कल्पनाओं की एक अनंत, अर्थहीन, असंभव श्रृंखला का वास्तविक अस्तित्व। यह अज्ञानता का सबसे विलक्षण प्रकार होगा।

पांचवां संकेत

हमने निर्णायक प्रमाणों के साथ रिसाले-ए-नूर के कई स्थानों पर प्रदर्शन किया है
संप्रभुता की सबसे ज़रूरी विशेषता स्वतंत्रता और भागीदारी की अस्वीकृति है। नपुंसक मनुष्यों द्वारा प्राप्त संप्रभुता की कमज़ोर छाया भी दूसरों के हस्तक्षेप को दृढ़ता से अस्वीकार करती है ताकि वह अपनी स्वतंत्रता को बनाए रख सके। हस्तक्षेप की इस अस्वीकृति ने कई राजाओं को अपने मासूम बच्चों और प्यारे भाइयों को बेरहमी से मौत के घाट उतारने के लिए प्रेरित किया है। इसका मतलब है कि संप्रभुता की सबसे बुनियादी, अपरिहार्य विशेषता स्वतंत्रता और दूसरों के हस्तक्षेप की अस्वीकृति है।

इस सबसे आधारभूत विशेषता के कारण ही ईश्वरीय संप्रभुता, जो सम्पूर्ण सृष्टि पर पूर्ण प्रभुत्व की सीमा तक है, दूसरों की भागीदारी और हस्तक्षेप को पूरी तरह से अस्वीकार करती है, और चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान आग्रहपूर्वक और कठोरता से ईश्वरीय एकता की पुष्टि की ओर संकेत करता है और इस पर बल देता है, तथा ईश्वर के साथ साझेदारी करने को गंभीर धमकियों के साथ अस्वीकार करता है।

इस प्रकार, आधिपत्य की दिव्य संप्रभुता के लिए न केवल दिव्य एकता की आवश्यकता होती है, बल्कि यह इसके लिए सबसे शक्तिशाली और आवश्यक कारण को भी स्पष्ट और निर्णायक रूप से स्पष्ट करती है। साथ ही, ब्रह्मांड में असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य, जो सबसे स्पष्ट रूप से स्पष्ट और अवलोकनीय है, इसकी समग्रता से लेकर सितारों, जानवरों और खनिजों तक, इनसे लेकर विशेष, व्यक्तियों और सूक्ष्म कणों तक, उस एकता और एकता का एक निर्विवाद रूप से सच्चा गवाह और स्पष्ट, गहरा सबूत है। क्योंकि, अगर दूसरों द्वारा हस्तक्षेप किया जाता, तो ब्रह्मांड का यह सबसे संवेदनशील संतुलन, व्यवस्था और नियमितता खराब हो जाती और अव्यवस्था के संकेत स्पष्ट हो जाते। जैसा कि श्लोक में कहा गया है,

> किन्तु वास्तविकता यह है कि यदि आकाशों और धरती में अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य होते तो दोनों ही नष्ट हो जाते (21:22)।

यदि ऐसा होता, तो ब्रह्मांड की अद्भुत, उत्तम व्यवस्था नष्ट हो जाती। जबकि जैसा कि श्लोक में कहा गया है,

> एक बार फिर देखिए: क्या आपको कोई दरार नज़र आती है? (67: 3),

सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, धरती से लेकर दिव्य सर्वोच्च सिंहासन तक, कहीं भी दोष, दोष या भ्रम का कोई चिह्न नहीं है। इस प्रकार, पूरे ब्रह्मांड में व्यवस्था, संतुलन, अनुपात और नियमितता, इसमें जो कुछ भी है, वह सबसे शानदार ढंग से उस सर्व-स्वतंत्र, एक नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है और दिव्य एकता की गवाही देता है।

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक प्राणी पर सर्व-स्वतंत्र, एकमेव के कुछ नामों के संकेन्द्रित प्रकटीकरण के कारण, सबसे छोटा जीव भी ब्रह्माण्ड का एक छोटा नमूना और उसका एक छोटा सूचकांक है। इसलिए, इसका स्वामी वही हो सकता है जिसकी शक्ति में सारा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। और चूँकि, सृष्टि के सम्बन्ध में, बीज वृक्ष से कम नहीं है, और वृक्ष एक छोटा ब्रह्माण्ड है, और सभी जीव भी छोटे ब्रह्माण्ड या छोटे संसार के समान हैं, इसलिए उपर्युक्त दिव्य प्रकटीकरण ने ईश्वर के साथ साझेदारी को असंभव बना दिया है। चूँकि इस प्रकटीकरण के माध्यम से ब्रह्माण्ड न केवल एक अविभाज्य संपूर्ण है, बल्कि अपनी प्रकृति के सम्बन्ध में, एक ऐसा संपूर्ण है जो एक से अधिक हाथों के हस्तक्षेप को अस्वीकार करता है, इसका प्रत्येक भाग संपूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है, और इसका संपूर्ण एक एकल इकाई है जो कई हाथों की भागीदारी को असंभव बनाता है। प्रत्येक प्राणी पर कुछ दिव्य नामों के इस संकेन्द्रित प्रकटीकरण के साथ, सर्व-स्वतंत्र, एकमेव नाम का सर्वव्यापी प्रकटीकरण स्वयं-सिद्ध रूप से दिव्य एकता को सिद्ध करता है।

वास्तव में, यह तथ्य कि ब्रह्मांड में प्राणियों के क्षेत्र और प्रजातियाँ आपस में गुंथी हुई हैं और एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, और प्रत्येक के कर्तव्य ब्रह्मांड के संपूर्ण कर्तव्य से संबंधित हैं, ब्रह्मांड को ईश्वरीय आधिपत्य और सृजन के संबंध में एक अविभाज्य संपूर्ण बनाता है। इसी तरह, ब्रह्मांड में सभी व्यापक ईश्वरीय कार्य एक दूसरे के भीतर संचालित होते हैं। उदाहरण के लिए, जीवन देने के कार्य के भीतर, प्रदान करने और बनाए रखने के कार्य एक ही पल में प्रकट होते हैं। और जीवित प्राणियों के शरीर को व्यवस्थित करने और सजाने के कार्य उसी पल देखे जाते हैं जब जीवन देने और प्रदान करने के कार्य स्वयं प्रकट होते हैं। और जीवन देने, प्रदान करने, आदेश देने और सजाने के इन कार्यों के साथ-साथ, रूप देने, पालने और देखभाल करने के कार्य भी आंखों को आकर्षित करते हैं। और इसी तरह। चूँकि इस तरह के सर्वव्यापी दिव्य कार्य आपस में गुंथे हुए और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो एक समग्र, एकीकृत अभिव्यक्ति प्रदर्शित करते हैं जो प्रिज्म के सात रंगों के समान है जो सफेद के रूप में प्रकट होते हैं, और इनमें से प्रत्येक कार्य अधिकांश चीजों और प्राणियों को एक तरह से घेरता है जो एक ही प्रकृति को प्रदर्शित करता है, और उनमें से प्रत्येक एक ही सत्ता से संबंधित है, और पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है और

उन्हें अन्य कृत्यों के साथ सहयोग में जोड़ता है - यह ईश्वरीय कृत्यों की इन विशेषताओं के कारण है कि ब्रह्मांड एक अविभाज्य संपूर्ण है, जिसमें प्रत्येक जीवित प्राणी एक बीज, सूचकांक या नमूने की तरह है, और ब्रह्मांड अपने ऊपर एक से अधिक प्रभुओं के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड एक ऐसी समग्रता है कि इसके एक हिस्से का स्वामी होना केवल संपूर्ण का स्वामी होने पर ही संभव है। यह एक ऐसी संपूर्ण इकाई है कि इसके किसी एक सदस्य को इसके ऊपर किसी भी आधिपत्य के अधीन करना केवल इसे समग्र रूप से अधीन करके ही संभव है।

छठा संकेत

जिस प्रकार प्रभुता की एकता और दिव्यता की एकता सभी पूर्णता का साधन और आधार हैं,149 तथा ब्रह्मांड के निर्माण में उद्देश्यों और बुद्धि का स्रोत और उद्गम हैं, उसी प्रकार वे सचेत प्राणियों और विशेष रूप से मनुष्यों के लिए अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं को प्राप्त करने का स्रोत और एकमात्र साधन हैं। लेकिन दिव्य प्रभुता की एकता के बिना, सभी मानवीय इच्छाएँ और अपेक्षाएँ समाप्त हो जातीं। साथ ही, ब्रह्मांड के निर्माण के परिणाम साकार नहीं होते और अधिकांश पूर्णताएँ जो या तो मौजूद हैं या निश्चित रूप से मौजूद हैं, नष्ट हो जातीं।

उदाहरण के लिए, मानवता में अनंत काल के लिए तीव्र, भावुक इच्छा है।
केवल वही, जो अपनी एकता के कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी मुट्ठी में रखता है और जो इस संसार को बंद कर सकता है तथा परलोक को उसी प्रकार खोल सकता है, जैसे एक घर को बंद करके दूसरा खोल दिया जाता है, वही इस इच्छा को पूरा कर सकता है।

और इस इच्छा की तरह, मानवता की हज़ारों अन्य इच्छाएँ जो अनंत काल तक फैली हुई हैं और पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं, दिव्य एकता और एकता की प्राप्ति पर निर्भर हैं। यदि वह सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र व्यक्ति न होता जिसका पूरे ब्रह्मांड पर पूर्ण नियंत्रण है, तो ये इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं। और मान भी लें कि वे पूरी हो भी जातीं, तो भी वे पर्याप्त रूप से पूरी नहीं होतीं।

149 वास्तव में, दिव्य एकता के परिणामस्वरूप सृष्टि की एकता अनंत दिव्य पूर्णता और सौंदर्य के प्रकट होने और ज्ञात होने का सबसे स्पष्ट, सबसे शक्तिशाली प्रमाण है। ब्रह्मांड के निर्माता को एकता के अद्वितीय के रूप में मान्यता देना ही ब्रह्मांड में सभी पूर्णता और सुंदरता को उसकी पवित्र पूर्णता और सौंदर्य की छाया, अभिव्यक्ति और संकेत के रूप में जानने का साधन है। अन्यथा, ब्रह्मांड की पूर्णता और सुंदरता को जीवों और कारणों के लिए ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा, और दिव्य पूर्णता का शाश्वत खजाना बिना खोजे जाने वाली कुंजी के होगा और इसलिए मानव मन के लिए अज्ञात रहेगा।

यह इस महान वास्तविकता के कारण है कि जिस प्रकार चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान ईश्वरीय एकता और स्वरूप की शिक्षा बार-बार, उत्साहपूर्वक और उच्च वाक्पटुता के साथ देता है, उसी प्रकार सभी पैगम्बर, पवित्र विद्वान और संत भी ईश्वर की एकता में अपना महानतम सुख और प्रसन्नता पाते हैं।

सातवां संकेत

चूँकि मुहम्मद साहब की पैगम्बरियत ने, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ईश्वरीय एकता की सभी डिग्री में सच्ची पुष्टि को सिखाया, साबित किया और पूरी तरह से घोषित किया, इसलिए उनकी पैगम्बरियत ईश्वरीय एकता की तरह ही निश्चित होनी चाहिए। ईश्वरीय एकता को साबित करने वाले सभी तर्क उनके पैगम्बरियत, उनके मिशन की प्रामाणिकता और उनके उद्देश्य की सत्यता को निर्णायक रूप से साबित करते हैं। वास्तव में, एक पैगम्बरियत जो हजारों महान सत्यों को समाहित करती है, और वास्तव में ईश्वरीय एकता और एकता की खोज करती है और सिखाती है, ऐसी एकता और एकता के लिए निश्चित रूप से आवश्यक है।

इस प्रकार, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सामूहिक व्यक्तित्व की अद्वितीय महत्ता और उदात्तता को स्थापित करने वाले तथा यह साबित करने वाले कि वह ब्रह्मांड के सूर्य हैं, असंख्य प्रमाणों में से हम निम्नलिखित तीन का उल्लेख करेंगे:

पहला: "कारण जैसा ही कर्ता" इस नियम के अनुसार, अब तक उनके समुदाय द्वारा किए गए और भविष्य में किए जाने वाले सभी अच्छे कर्म भी मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के अच्छे कर्मों की पुस्तक में दर्ज हैं। इसके अलावा, यह तथ्य कि चूंकि पैगंबर मुहम्मद पर उनके समुदाय द्वारा ईश्वर की कृपा और शांति का आह्वान, जो कि हर दिन किया जाता है, निश्चित रूप से स्वीकार किया जाता है, इन अंतहीन प्रार्थनाओं की स्थिति और डिग्री यह दर्शाती है कि ब्रह्मांड में मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का सामूहिक व्यक्तित्व किस तरह का सूर्य है।

दूसरा: मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सार की असाधारण क्षमता और संभावना पर विचार करें, जो इस्लाम की दुनिया के महान वृक्ष का मूल, बीज, जीवन और साधन है, और उनकी आध्यात्मिक प्रगति जो उनकी पवित्र पूजा, पाठ और महिमा के द्वारा योगदान दिया गया है, जिसे वह सबसे अच्छा करते हैं और जो इस्लाम की दुनिया का आध्यात्मिक पहलू बनाते हैं। इससे समझें कि मुहम्मद के सेवक की संतता अन्य संतों की तुलना में कितनी अधिक उन्नत थी-

भगवान के प्रति समर्पण, जिसके द्वारा वह भगवान के प्रिय होने की डिग्री तक बढ़ गया।

एक बार मेरी एक दुआ में एक ऐसी शान का वर्णन हुआ जो पैगम्बर के साथियों की समझ के करीब थी। यह मुझे एक महीने की इबादत के बराबर अहमियत वाला लगा। इससे मुझे साथियों की बड़ी अहमियत का एहसास हुआ। इसका मतलब यह है कि इस्लाम की शुरुआत में इबादत के पवित्र शब्दों से निकलने वाले आध्यात्मिक उपहार और रोशनी की एक अलग खूबी थी। उनकी ताज़गी की वजह से उनका एक अलग स्वाद, सूक्ष्मता और आनंद था, जो समय बीतने के साथ-साथ लापरवाही के पर्दे में छिप गया, कम हो गया और धुंधला हो गया।

क्योंकि पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने अपनी असाधारण क्षमता से उन्हें उनके मूल स्रोत, परम शुद्ध और पवित्र परमेश्वर से नए और ताजे रूप में ग्रहण किया, तथा उन्हें आत्मसात किया।

परिणामस्वरूप, वह एक ही महिमा-प्रदर्शन से उतना ही विकिरण प्राप्त कर सकता था जितना अन्य लोग पूरे वर्ष की उपासना से, उसके सभी कार्यों और आयामों से प्राप्त कर सकते थे।

इस प्रकार, इस दृष्टिकोण से कोई यह समझ सकता है कि पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने किस हद तक पूर्णता की असीम श्रेणियों में प्रगति की है।

तीसरा: सृष्टिकर्ता के ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए सभी उद्देश्यों की धुरी मानवजाति है, और सर्वशक्तिमान के भाषणों में सबसे बुद्धिमान श्रोता है। चूँकि अपनी उपलब्धियों और कार्यों के माध्यम से पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानवता के सबसे प्रसिद्ध, सबसे परिपूर्ण और सबसे शानदार सदस्य हैं, इसलिए सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान ने उन्हें पूरी मानवजाति, बल्कि पूरे ब्रह्मांड के नाम पर अपना संबोधनकर्ता बनाया, ताकि वे असीम पूर्णता के माध्यम से अपने अंतहीन उपहार और आध्यात्मिक विकिरण प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार, इन तीन बातों के समान और भी बहुत से बिंदु हैं जो निर्णायक रूप से सिद्ध करते हैं कि जिस प्रकार मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का सामूहिक व्यक्तित्व ब्रह्मांड का आध्यात्मिक सूर्य है, उसी प्रकार वे उस महान कुरान का सर्वोच्च चिह्न भी हैं जिसे ब्रह्मांड कहा जाता है, तथा सत्य और असत्य के बीच अंतर करने वाले उस सर्वोच्च नाम - कुरान - का सर्वोच्च चिह्न भी हैं और उस ईश्वरीय नाम की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति का दर्पण भी हैं जो सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र है। और हम उस सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र, अद्वितीय, शाश्वत रूप से प्रार्थित एक से प्रार्थना करते हैं कि वह ब्रह्मांड के सभी कणों की कुल संख्या को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जो कि सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र है।

सभी समय के सभी मिनटों के सभी सेकंडों से युक्त, पैगंबर मुहम्मद पर उतरें, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उनकी दया के असीम खजाने से।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

पांचवा भाग
वह दिव्य नाम जो सर्व-जीवित है

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अब देखो अल्लाह की दयालुता के निशान कि कैसे वह मुर्दा ज़मीन को उसके मरने के बाद जिलाता है। निश्चय ही वही मुर्दों को जिलाएगा। वह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है। (30:50)

उपर्युक्त महिमामय श्लोक के अर्थ का एक पहलू, साथ में निम्नलिखित महिमामय श्लोक का एक पहलू,

हे ईश्वर, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; वह सर्वज्ञ, स्वयंभू है, न उसे ऊंघ आती है, न नींद (2:255)

और ईश्वरीय नाम सर्व-जीवित की एक अभिव्यक्ति, जो ईश्वरीय नामों में से एक है, जो सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों में से एक है या ईश्वर के सर्वव्यापी नाम की छह ज्योतियों में से एक है, शव्वाल के महीने में एस्कीशेहर जेल में रहते हुए दूर से मेरे मन में प्रकट हुई। उस समय इसे दर्ज नहीं किया गया था; हम उस पवित्र पक्षी को पकड़ नहीं पाए। अब, जब वह दूर तक लुप्त हो चुका है, तो कई संकेतों के माध्यम से हम कम से कम उस परम सत्य और प्रकाश की कुछ किरणों को संक्षेप में इंगित करेंगे।

पहला संकेत

जीवन ईश्वरीय नामों का एक व्यापक प्रकटीकरण है, जो सर्व-जीवित और जीवनदाता हैं। आगे जो कुछ बताया गया है, वह “जीवन क्या है?” और “जीवन का वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य क्या है?” जैसे प्रश्नों का एक सूचकांक-जैसा उत्तर है।

जीवन है:

- ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य, और
- इसका सबसे बड़ा परिणाम, और
- इसकी सबसे शानदार रोशनी, और

- इसका सूक्ष्मतम और सबसे सुखद खमीर, और
- इससे आसवित शुद्ध अर्क, और
- इसका सबसे उत्तम फल, और
- इसकी सबसे ऊँची पूर्णता, और
- इसका सबसे सुंदर चेहरा, और
- इसकी सबसे सुंदर सजावट, और
- इसकी एकात्मक प्रकृति का रहस्य, और
- इसकी एकता का बंधन, और
- इसकी पूर्णता का स्रोत, और
- कुछ ऐसा जिसमें आत्मा हो और जो कला और प्रकृति के संबंध में सबसे असाधारण हो, और

- एक चमत्कारी वास्तविकता जो सबसे छोटे प्राणी को एक इकाई जैसा बनाती है- कविता, और
- ईश्वरीय शक्ति का एक चमत्कार जो मानो एक छोटे से जीवित प्राणी में स्थित होकर ब्रह्माण्ड के साधन के रूप में कार्य करता है, उस प्राणी में विशाल ब्रह्माण्ड का एक प्रकार का सूचक दिखाता है, तथा प्राणी को अन्य वस्तुओं और प्राणियों से जोड़ता है; तथा

- यह एक अद्भुत ईश्वरीय कला है जो एक छोटे से भाग को सम्पूर्ण के समान महान बना देती है तथा सम्पूर्ण का कुछ भाग स्वयं सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है, तथा यह दर्शाता है कि इसके ऊपर प्रभुत्व के संबंध में ब्रह्माण्ड एक अविभाज्य सम्पूर्ण या एक सार्वभौमिक इकाई है जो अपने सभी भागों के साथ अन्तर्सम्बद्ध है तथा जो किसी की भागीदारी की अनुमति नहीं देता है; तथा

- जीवन सबसे अधिक उज्ज्वल, सबसे अधिक निर्णायक, सबसे अधिक परिपूर्ण प्रमाण है जो सर्वव्यापी ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता को प्रमाणित करता है।
जीवित और आत्मनिर्भर; तथा
- दिव्य कलाकृतियों में जीवन सबसे गुप्त और सबसे प्रत्यक्ष है, सबसे मूल्यवान और सबसे सस्ता है, और यह भगवान की कला की सबसे शुद्ध, सबसे चमकदार और सबसे सार्थक कढ़ाई है; तथा

- जीवन ईश्वर की दया का एक सुंदर, परिष्कृत, नाजुक प्रकटीकरण है
वह परम दयालु है जो अन्य प्राणियों से अपनी सेवा कराता है; तथा
- यह उन आवश्यक गुणों का सबसे व्यापक दर्पण है जो उसके सार के लिए अपरिहार्य हैं; तथा

- यह भगवान की सृष्टि का एक आश्चर्य है जिसमें असंख्य सुन्दर नामों का प्रकटीकरण सम्मिलित है, जैसे कि सर्व-दयालु,

वह सर्वप्रदाता, अत्यन्त दयालु, सर्वदानी, सर्वविवेकशील है, तथा वह प्रावधान, बुद्धि, अनुग्रह और दया जैसी अनेक वास्तविकताओं को अपने अधीन करता है, तथा वह दृष्टि, श्रवण और स्पर्श जैसी सभी इन्द्रियों का स्रोत और मूल है; तथा

- जीवन ब्रह्मांड की विशाल कार्यशाला में एक ऐसी परिवर्तनकारी मशीन है जो निरंतर हर जगह सफाई और शुद्धिकरण करती है, जिससे प्रगति और प्रकाश होता है। और यह जीवित शरीर बनाता है, जो इसके आवास, अतिथिगृह, विद्यालय या परमाणुओं के कारवां के लिए बैरक हैं ताकि उन्हें परिष्कृत किया जा सके और उनके कर्तव्यों को पूरा करने के लिए तैयार किया जा सके। सीधे शब्दों में कहें तो, जीवन की मशीन के माध्यम से, सर्व-जीवित, जीवनदाता, इस अंधेरे, क्षणभंगुर, नीच दुनिया को सुशोभित, सुखद और प्रकाशित करता है, और इसे एक तरह की स्थायित्व देता है, इसे दूसरे, शाश्वत दुनिया में जाने के लिए तैयार करता है; और

- जीवन के दोनों चेहरे, यानी इसके बाहरी और भीतरी दोनों चेहरे, उज्ज्वल, उदात्त, निष्कलंक और दोष रहित हैं। यह एक असाधारण प्राणी है जिसके निर्माण में दैवी शक्ति के प्रत्यक्ष संचालन को भौतिक कारणों से छिपाया नहीं गया है, जिससे यह स्पष्ट रूप से दिखाया जा सकता है कि यह भगवान की शक्ति के हाथ से बिना किसी आवरण या साधन के सीधे उभरा है; तथा

- जीवन की वास्तविकता विश्वास के छह स्तंभों से संबंधित है, जो उन्हें अर्थपूर्ण और अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह एक चमकदार वास्तविकता है जो अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक, परलोक और शाश्वत जीवन, और स्वर्गदूतों और विश्वास के अन्य स्तंभों के अस्तित्व के बिल्कुल आवश्यक, शाश्वत अस्तित्व से संबंधित है और उसे साबित करती है;
- साथ ही, जिस प्रकार जीवन ब्रह्माण्ड का शुद्धतम सार है, जो इसकी सभी चीजों से निकला है, उसी प्रकार यह भी एक शक्तिशाली रहस्य है जो धन्यवाद, आराधना, स्तुति और प्रेम उत्पन्न करता है, जो ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के लिए सबसे महत्वपूर्ण दिव्य उद्देश्य और विश्व की रचना के सबसे महत्वपूर्ण परिणाम हैं।

अतः इन सभी महत्वपूर्ण, मूल्यवान गुणों और गुणों तथा जीवन के इन श्रेष्ठ, व्यापक कर्तव्यों पर विचार करो, और फिर जीवनदाता नाम के पीछे स्थित सर्वजीव नाम की महिमा को देखो।

और जीवन के इन असीम गुणों और फलों से समझो कि वह दिव्य नाम कितना व्यापक है, वह सर्वजीव नाम कितना व्यापक है।

यह भी समझ लीजिए कि चूँकि जीवन ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा परिणाम है, साथ ही इसका सबसे व्यापक उद्देश्य और सबसे मूल्यवान फल भी है, इसलिए इसका उद्देश्य और परिणाम ब्रह्माण्ड जितना ही विशाल होना चाहिए। क्योंकि जैसे वृक्ष का परिणाम उसका फल है, वैसे ही फल का परिणाम भी, बीज के माध्यम से, भविष्य का वृक्ष है। वास्तव में, जिस प्रकार इस जीवन का उद्देश्य और परिणाम अनन्त जीवन है, उसी प्रकार इसका एक फल एक सर्व-जीवित और जीवनदाता को धन्यवाद देना, उसकी पूजा और स्तुति करना और उसके प्रति प्रेम करना है। और जिस प्रकार यह धन्यवाद, प्रेम, स्तुति और पूजा जीवन के फल हैं, उसी प्रकार वे ब्रह्माण्ड के उद्देश्य भी हैं। इससे समझिए कि जो लोग कहते हैं कि जीवन का उद्देश्य आराम से रहना, बेपरवाह होकर भोग-विलास करना और भोग-विलास में लिप्त होना है, उनके दावे में कितना भद्दा अज्ञान और कितना निन्दात्मक ढंग छिपा है, जो जीवन के सबसे मूल्यवान उपहार, चेतना के उपहार और तर्क के उपहार को अपमानित और अपमानित करता है; वे कितनी भयानक कृतघ्नता प्रदर्शित करते हैं।

दूसरा संकेत

जीवन की सभी डिग्री, गुण और कर्तव्यों को समझाने के लिए, जीवन देने वाले और सर्व-जीवित नाम की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति, और जिसका उल्लेख प्रथम संकेत में किया गया है, उतने ही ग्रंथों की आवश्यकता होगी जितने कि वे गुण हैं। हालाँकि, चूँकि उनमें से कुछ को रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में समझाया गया है, इसलिए हम यहाँ केवल कुछ का ही संकेत देंगे।

जीवन के दोनों पहलू - भौतिक या दैहिक और आध्यात्मिक या आध्यात्मिक - पारदर्शी और गंदगी से मुक्त हैं, क्योंकि भगवान की शक्ति ने इसके निर्माण में भौतिक कारणों का उपयोग नहीं किया है। जीवन की इस संपत्ति का अर्थ इस प्रकार है:

वास्तव में, ब्रह्मांड में हर चीज में अच्छाई और सुंदरता है, जबकि बुराई और कुरूपता बहुत छोटी हैं और माप की इकाइयों के रूप में कार्य करती हैं जो अच्छाई और सुंदरता की डिग्री और उनमें निहित सत्य की विविधता को दर्शाती हैं। इस तरह, बुराई अच्छाई बन जाती है और कुरूपता, सुंदरता। लेकिन, ताकि जो कुछ भी चेतन प्राणियों के सतही दृष्टिकोण से कुरूप, बुरा या विनाशकारी लगता है, उससे उत्पन्न होने वाली शिकायतें और आक्रोश सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर एक के विरुद्ध निर्देशित न हों, और ताकि पवित्र, शुद्ध दिव्य शक्ति का प्रत्यक्ष रूप से नीच और गंदी चीजों के साथ सीधा संपर्क शक्ति की गरिमा को ठेस न पहुँचाए, स्पष्ट कारणों को शक्ति के इन कार्यों के लिए एक पर्दा बना दिया गया है। कारण बिल्कुल भी सृजन करने में असमर्थ हैं, लेकिन वे अनुचित शिकायतों के लिए लक्ष्य के रूप में काम करने के लिए मौजूद हैं

और आपत्तियाँ जो सचेत प्राणियों से उत्पन्न हो सकती हैं, और दिव्य शक्ति की गरिमा, पवित्रता और निष्कलंक प्रकृति को संरक्षित करती हैं।

जैसा कि बाईसवें वचन के दूसरे स्टेशन के परिचय में बताया गया है, महादूत अज़राएल, उन पर शांति हो, ने मरने वालों की आत्माओं को बाहर निकालने के अपने कर्तव्य के बारे में सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने कहा, "आपके सेवक मुझसे नाराज़ होंगे।" जवाब में उनसे कहा गया, "मैं आपके कर्तव्य और मरने वालों के बीच बीमारी और आपदा का पर्दा डाल दूँगा, और वे अपनी शिकायत और आपत्ति के तीर उन पर्दों पर फेंकेंगे, न कि आप पर।"

जिस तरह अज़राएल (उस पर शांति हो) का कर्तव्य है कि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर और मृत्यु के बीच एक पर्दा बनकर काम करे ताकि जो लोग विश्वास करने वालों के लिए मृत्यु में सुंदरता नहीं देखते और उसमें दया की अभिव्यक्ति को महसूस नहीं करते, उनकी नाराज़गी और शिकायतें सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर ईश्वर के विरुद्ध निर्देशित न हों, उसी तरह अन्य कारण भी पर्दों के रूप में कार्य करते हैं। वास्तव में, ईश्वर की गरिमा और महानता के लिए यह आवश्यक है कि स्पष्ट कारण मन की दृष्टि में शक्ति के हाथ के लिए पर्दा बनें, जबकि ईश्वरीय एकता और महिमा की मांग है कि कारण प्रभाव से अपने हाथ पीछे खींच लें।

हालाँकि, चूँकि जीवन के बाहरी और भीतरी दोनों ही पहलू गंदगी, दोष या दोष से मुक्त हैं, और चूँकि जीवन में न तो कोई शिकायत या आपत्ति को आमंत्रित करने वाली कोई चीज़ है, न ही कोई गंदगी या कुरूपता जो ईश्वरीय शक्ति की गरिमा और पवित्रता के विपरीत है, इसलिए इसे सीधे जीवन देने वाले और सभी जीवित और स्वयं-निर्भर को पुनर्जीवित करने वाले नामों के हाथों में सौंप दिया गया है। प्रकाश जीवन के समान ही है, और अस्तित्व और अस्तित्व का देना भी वैसा ही है।

इस कारण से, सृष्टि और अस्तित्व प्रदान करना सीधे-सीधे सर्वशक्तिमान की शक्ति पर निर्भर करता है। इसके अलावा, चूंकि वर्षा एक प्रकार का जीवन और दया है, इसलिए इसके उतरने का समय किसी नियमित नियम के अधीन नहीं बनाया गया है, ताकि जब भी आवश्यकता पड़े, तो ईश्वरीय न्यायालय में दया की याचना करने के लिए हाथ उठाए जा सकें। यदि, सूर्य के उदय होने की तरह, वर्षा भी किसी नियम के अधीन होती, तो आवश्यकता के समय प्रार्थना करके उस महत्वपूर्ण वरदान की मांग नहीं की जाती।

तीसरा संकेत

जीवन के अंतिम गुण में कहा गया कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड का परिणाम जीवन है, उसी प्रकार धन्यवाद और उपासना भी जीवन के परिणाम हैं, ब्रह्माण्ड की रचना का कारण और परम कारण हैं, तथा उसका वांछित परिणाम हैं।

वास्तव में, ब्रह्माण्ड का सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर निर्माता, अपने इस असीम वरदान के माध्यम से स्वयं को ज्ञात करने और प्रेम करने के बदले में जीवित प्राणियों से धन्यवाद और प्रेम चाहता है; वह अपनी बहुमूल्य कलाओं के बदले में उनकी प्रशंसा और स्तुति की मांग करता है और उनके प्रभु के रूप में उनके आदेशों के जवाब में उनकी पूजा और आज्ञाकारिता की मांग करता है।

और इसलिए, चूँकि ईश्वरीय प्रभुत्व के लिए अपेक्षित धन्यवाद और पूजा सभी प्रकार के जीवन और इसलिए पूरे ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है, इसलिए चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान उत्साह, तीव्रता और मिठास के साथ धन्यवाद और पूजा करने का आग्रह करता है। और यह बार-बार कहता है कि पूजा केवल ईश्वर के लिए है, और धन्यवाद और प्रशंसा केवल उसी के लिए है।

यह बताने के लिए कि यह धन्यवाद और प्रशंसा सीधे अपने सच्चे मालिक के पास जानी चाहिए, जैसे कि,

> वही है जो जीवन देता है और मारता है, और रात और दिन का आना-जाना भी करता है (23:80),
> वही है जो जीवन देता है और मारता है, और जब किसी चीज़ को होने का आदेश देता है तो उससे बस इतना कहता है, "हो जा!" और वह हो जाती है (40:68), और उसी से धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाता है (30:24),

स्पष्ट रूप से मध्यस्थों को अस्वीकार करें और जीवन को सीधे और विशेष रूप से सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर व्यक्ति की शक्ति के हाथ में दें। इसके अलावा, छंद,

> निस्संदेह अल्लाह ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली और सर्व शक्तिमान है।
> और वही है जो मुझे बीमार पड़ने पर शिफ़ा देता है (26:80) और वही है जो हर तरह से लाभदायक वर्षा बरसाता है, इसके पश्चात कि लोग पूरी तरह से निराश हो चुके होते हैं (42:28)

दिखाते हैं कि प्रावधान, उपचार और बारिश जैसी चीज़ें, जो जीवन के बाद धन्यवाद और कृतज्ञता के साधन हैं और जो प्रेम और प्रशंसा की भावना को उत्तेजित करती हैं, विशेष रूप से सर्व-प्रदाता, सर्व-उपचारकर्ता और सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर की शक्ति के लिए विशिष्ट हैं। प्रतिबंधात्मक अभिव्यक्तियों जैसे कि वह वह है, और वह वह है, के साथ वे बताते हैं कि प्रावधान, उपचार और बारिश बिना किसी परदे के सीधे उसी से आती हैं। यह सच्चा उपचारक ही है जो दवाओं को उनके गुण देता है और उनके प्रभाव पैदा करता है।

चौथा संकेत

जीवन के गुणों के बारे में यह भी कहा गया कि जीवन विश्वास के छह स्तंभों से संबंधित है और यह उनके लिए प्रमाण प्रस्तुत करता है।

वास्तव में, चूँकि ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम और फल तथा इसके निर्माण का उद्देश्य जीवन है, इसलिए निश्चित रूप से उस उच्च वास्तविकता को इस क्षणभंगुर, संक्षिप्त, अपूर्ण, पीड़ादायक सांसारिक जीवन तक सीमित नहीं किया जा सकता। जीवन के वृक्ष का उद्देश्य, जिसकी विशालता को वर्णित गुणों के माध्यम से समझा जाता है - इसका फल जो इसकी विशालता के योग्य है - बल्कि शाश्वत जीवन या परलोक का जीवन है; यह शाश्वत, पूर्ण सुख के क्षेत्र में जीवन है, जिसके पत्थर, पेड़ और धरती जीवित हैं। अन्यथा, जीवन का वृक्ष, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण अंग हैं, चेतन प्राणियों, विशेषकर मानवता सहित, के लिए फल, लाभ, उद्देश्य या किसी भी वास्तविकता के बिना होगा। मानवता, जो अपनी पूंजी और क्षमताओं के संबंध में, मान लीजिए, एक गौरैया से बीस गुना अधिक है, और जो ब्रह्मांड में सबसे ऊंचा और महत्वपूर्ण प्राणी है, जीवन के सुख के संबंध में गौरैया से बीस गुना नीचे गिर जाएगी, और सबसे दुखी, सबसे नीच बन जाएगी। इसके अलावा, अतीत के दुखों और भविष्य के डर से घिरे रहने के कारण, सबसे कीमती उपहार, तर्क, लगातार मानव हृदय को घायल कर देगा; क्योंकि यह एक सुख को नौ दुखों में मिला देता है, यह सबसे भयावह पीड़ा बन जाएगा। इसलिए, यह दावा कि कोई शाश्वत जीवन नहीं है, एक बहुविध झूठ है।

परिणामस्वरूप, इस दुनिया का जीवन, जो हर वसंत में हमारी आंखों के सामने पुनरुत्थान के लाखों उदाहरण प्रस्तुत करता है, निर्णायक रूप से परलोक में विश्वास का आधार सिद्ध होता है।

क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान कार्य-प्रबन्धक, जो आपके शरीर, बगीचे और देश में आपके जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों और अंगों को बुद्धि, अनुग्रह और दया के साथ तैयार करता है, और उन्हें ठीक समय पर आपके पास पहुंचाता है, जो आपके पेट द्वारा पोषण की इच्छा के माध्यम से किए गए भोजन के लिए विशेष प्रार्थना को भी जानता और सुनता है, और जो असंख्य स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों से उसे तृप्त करके दिखाता है कि वह उसकी प्रार्थना को स्वीकार करता है - क्या यह संभव है कि वह आपको देखता या जानता नहीं है, या वह मानव जाति के सबसे बड़े लक्ष्य, शाश्वत जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों को तैयार नहीं करता है, या वह परलोक का निर्माण और स्वर्ग की रचना न करके अनंत काल के लिए मानव जाति की सबसे जरूरी, महत्वपूर्ण, सामान्य और सबसे आवश्यक और उचित प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करता है, या वह पृथ्वी के शासक और परिणाम मानव जाति को पेट जितना महत्वपूर्ण नहीं मानता है, वह उसकी सबसे शक्तिशाली, सामान्य प्रार्थना को अनदेखा करता है, जो जमीन से लेकर दिव्य सिंहासन तक गूंजती है, जिससे उसकी पूर्ण बुद्धि और अंतहीन दया को अस्वीकार कर दिया जाता है? भगवान न करे, एक लाख बार, भगवान न करे!

और क्या यह संभव है कि वह सबसे छोटे जीवित प्राणी की सबसे गुप्त आवाज सुन ले, उसकी विनती पर ध्यान दे, उसकी ज़रूरत का जवाब दे, उसे पूर्ण देखभाल और चिंता के साथ पोषण दे, और अपने बड़े प्राणियों से भी उसकी सेवा करवाए, लेकिन सबसे महान, सबसे मूल्यवान, अमर और सबसे नाजुक "जीवन" की गड़गड़ाहट की आवाज़ न सुने? क्या यह संभव है कि वह अनंत काल के लिए इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण विनती और प्रार्थना पर विचार न करे? क्या यह संभव है कि वह एक शानदार, आज्ञाकारी सेना की उपेक्षा करते हुए एक साधारण सैनिक को अत्यंत सावधानी से सुसज्जित और बनाए रखे? क्या यह संभव है कि वह एक अणु को देखे और सूर्य को न देखे? क्या यह संभव है कि वह मच्छर की भिनभिनाहट सुने और गड़गड़ाहट की दहाड़ न सुने? भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

और क्या तर्क किसी भी तरह से यह स्वीकार कर सकता है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी जो असीम दयालु, प्रेममय और स्नेही है, और जो अपनी कला से बहुत प्रेम करता है और स्वयं को बहुत प्रेम करता है और जो उससे प्रेम करते हैं उनसे बहुत प्रेम करता है, वह उस जीवन को, जो उससे किसी भी चीज़ से अधिक प्रेम करता है और प्रेम करने योग्य है और स्वभाव से अपने निर्माता की पूजा करता है, और आत्मा, जीवन का सार और पदार्थ, दोनों को अनंत काल तक अस्तित्वहीन रहने की निंदा करेगा; इस प्रकार अपने उस प्रिय मित्र को अनंत काल के लिए अपने प्रति क्रोधित कर देगा, और उन्हें इस भयानक तरीके से घायल कर देगा कि वह अपनी दया के रहस्य और अपने प्रेम के प्रकाश को नकारता भी है और नकारने का कारण भी बनता है? एक लाख बार, भगवान न करे! वह परम कृपा और सौंदर्य जो अपने प्रकटीकरण से ब्रह्मांड को सुशोभित करता है और वह परम दया जो सभी प्राणियों को खुश करती है, निश्चित रूप से ऐसी अनंत कुरूपता से मुक्त

निष्कर्ष: चूँकि इस दुनिया में जीवन है, इसलिए जो लोग जीवन के रहस्य को समझते हैं और अपने जीवन का दुरुपयोग नहीं करते हैं, उन्हें अनंत स्थायित्व और अनंत स्वर्ग के निवास में अनंत जीवन मिलेगा। इस पर हमारा विश्वास है!

पृथ्वी पर पारदर्शी वस्तुएँ सूर्य के प्रतिबिंबों से चमकती हैं, और समुद्र और नदियों की सतह पर बुलबुले प्रकाश की चमक के साथ चमकते और बुझते हैं, जबकि उनके बाद आने वाले बुलबुले फिर से दर्पण के रूप में कार्य करते हैं जो छोटे सूर्य को प्रतिबिंबित करते हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे चमक, पारदर्शी वस्तुओं और बुलबुलों में परावर्तित सूर्य ऊपर एक ही सूर्य की परावर्तित छवियाँ हैं। वे असंख्य आवाज़ों के साथ सूर्य के अस्तित्व का गान करते हैं, और अपनी प्रकाश की उंगलियों से उसकी ओर इशारा करते हैं।

ठीक उसी प्रकार, जीवनदाता, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के नाम की सर्व-व्यापक अभिव्यक्ति के माध्यम से, जीवित प्राणी दिव्य शक्ति के माध्यम से पृथ्वी और समुद्र में चमकते हैं, और फिर उन लोगों के लिए रास्ता बनाने के लिए, "हे जीवित!" कहकर, अदृश्य के पर्दे के नीचे गायब हो जाते हैं, इस प्रकार शाश्वत सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के शाश्वत जीवन और आवश्यक अस्तित्व का संकेत और साक्ष्य देते हैं। इसी तरह, सभी प्रमाण जो ईश्वरीय ज्ञान की गवाही देते हैं जो ब्रह्मांड के क्रम को प्रकट करता है, और सभी प्रमाण जो ईश्वरीय शक्ति को प्रदर्शित करते हैं जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है, सभी वास्तविकताएँ जो ईश्वरीय इच्छा को स्थापित करती हैं जो ब्रह्मांड को निर्देशित करती है, सभी संकेत और चमत्कार जो ईश्वरीय वाणी और रहस्योद्घाटन के माध्यम के रूप में पैगंबरी मिशनों को साबित करते हैं, और सभी प्रमाण जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के सात गुणों की गवाही देते हैं - ये सभी एकमत से सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर व्यक्ति के जीवन का संकेत देते हैं और गवाही देते हैं। क्योंकि जिस चीज में दृष्टि है, उसमें जीवन होना निश्चित है, सुनना जीवन का संकेत है, बोलना जीवन के अस्तित्व को इंगित करता है, और इच्छा या स्वतंत्र विकल्प जीवन को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार सम्पूर्ण शक्ति, सर्वसमावेशी इच्छा और सर्वव्यापी ज्ञान जैसे गुणों को समाहित करते हुए, जिनका अस्तित्व ब्रह्माण्ड में उनके कार्य द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, तथा उनके अस्तित्व को स्थापित करने वाले सभी प्रमाणों के साथ, वे सब-जीवित, स्वयं-निर्भर के आवश्यक अस्तित्व के साक्षी हैं और उसके शाश्वत जीवन की गवाही देते हैं जो अपनी एक ही छाया से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है, तथा अपनी एक ही अभिव्यक्ति से सम्पूर्ण परलोक को उसके सभी कणों सहित जीवन प्रदान करता है।

, सभी-

जीवन स्वर्गदूतों में विश्वास से भी संबंधित है, और यह विश्वास अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होता है।
चूँकि ब्रह्माण्ड में सबसे महत्वपूर्ण परिणाम जीवन है, चूँकि जीवित प्राणी अपने मूल्य के कारण सबसे व्यापक रूप से फैले हुए और सबसे अधिक मात्रा में निर्मित प्राणी हैं, चूँकि वे अपने कारवाँ के साथ पृथ्वी के अतिथिगृह को खुश करते हैं जो एक के बाद एक आते और जाते हैं, चूँकि पृथ्वी इतने सारे प्रकार के जीवित प्राणियों से भरी हुई है और उनके निरंतर नवीकरण और गुणन के लिए दिव्य उद्देश्यों के कारण लगातार खाली और भरी जा रही है, चूँकि सड़ते और भ्रष्ट पदार्थ भी असंख्य प्रकार के प्राणियों के निर्माण का माध्यम बन जाते हैं, जिससे पृथ्वी एक ऐसा स्थान बन जाती है जहाँ असंख्य सूक्ष्मजीव झुंड में रहते हैं, और चूँकि चेतना और बुद्धि, जो जीवन से आसुत जीवन के शुद्धतम अर्क हैं, और आत्मा, इसका सबसे सूक्ष्म और स्थिर सार, पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में निर्मित होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी जीवन, बुद्धि के साथ पुनर्जीवित होती है,

चेतना और आत्माएँ - इन सब के कारण यह संभव नहीं है कि स्वर्ग, जो पृथ्वी से अधिक परिष्कृत और अधिक विशाल है, जीवन और चेतना के बिना रह जाए। यह जीवन के अर्थ और उद्देश्य के कारण है कि प्रत्येक के लिए विशेष रूप से स्वर्ग, सूर्य और सितारों में रहने वाले जीवित, सचेत प्राणी होने चाहिए। यह स्वर्ग के निर्माण का परिणाम प्रदर्शित करता है, उन्हें जीवित दिखाता है और दिव्य संबोधन प्राप्त करता है।

ये प्राणी देवदूत हैं।

जीवन की मूल प्रकृति पैगम्बरों में विश्वास के स्तंभ से भी संबंधित है, और इसे अप्रत्यक्ष रूप से साबित करती है। वास्तव में, चूँकि ब्रह्मांड को जीवन प्रदान करने के लिए बनाया गया है, और चूँकि जीवन शाश्वत सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर एक की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है, साथ ही साथ उनकी सबसे उत्तम कढ़ाई और उनकी कला का सबसे सुंदर कार्य है, और चूँकि शाश्वत जीवन स्वयं को प्रदर्शित करता है और पैगम्बरों के भेजने और ईश्वरीय शास्त्रों के रहस्योद्घाटन के माध्यम से जाना जाता है, और चूँकि वाणी दर्शाती है कि बोलने वाला जीवित है - ये सभी दर्शाते हैं कि यह पैगम्बर और ईश्वरीय शास्त्र हैं जो उनके माध्यम से भेजे गए थे जिन्होंने उस एक की वाणी को जाना है जो बोलता है, आदेश देता है, और निषिद्ध करता है जो भौतिक ब्रह्मांड द्वारा छिपे हुए अदृश्य के दायरे से परे है। जिस तरह ब्रह्मांड में जीवन निश्चित रूप से शाश्वत रूप से जीवित रहने वाले के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है, उसी तरह यह पैगम्बरों के भेजने और शास्त्रों के रहस्योद्घाटन के स्तंभों से भी संबंधित है, जो उस शाश्वत जीवन की किरणें, अभिव्यक्तियाँ और संचार हैं, और इसलिए यह उन्हें सांकेतिक रूप से साबित करता है। विशेष रूप से, मुहम्मद की पैगम्बरी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और कुरान का रहस्योद्घाटन - क्योंकि वे जीवन की "आत्मा" और बुद्धि की तरह हैं - को जीवन के अस्तित्व के रूप में निश्चित रूप से सत्य कहा जा सकता है।

वास्तव में, जिस तरह जीवन ब्रह्मांड से निकाला गया शुद्ध अर्क है, जिस तरह चेतना और इंद्रिय बोध जीवन से निकाला गया अर्क है, और बुद्धि चेतना और इंद्रिय बोध से निकाला गया अर्क है, और आत्मा जीवन का शुद्ध सार है - वास्तव में, यह स्वयं जीवन है, स्थिर और स्वायत्त - उसी तरह मुहम्मद का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन भी है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ब्रह्मांड के जीवन और आत्मा से निकाला गया सबसे परिष्कृत अर्क है। मुहम्मद का संदेशवाहक, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ब्रह्मांड की इंद्रिय बोध, चेतना और बुद्धि से निकाला गया सबसे शुद्ध अर्क है। वास्तव में, जैसा कि उनके कार्यों, उपलब्धियों और विरासत से प्रमाणित होता है, मुहम्मद का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ब्रह्मांड का जीवन है

जीवन और उसका संदेशवाहक होना ही ब्रह्माण्ड की चेतना का प्रकाश और चेतना है। और कुरान का अवतरण, जैसा कि इसके सत्यों द्वारा प्रमाणित है, जो सभी सदा जीवित हैं, ब्रह्माण्ड के जीवन की आत्मा और उसकी चेतना की बुद्धि है।

यदि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैगम्बरी का प्रकाश - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - एक दिन ब्रह्माण्ड से चला गया तो ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाएगा; और यदि कुरान (पवित्र कुरान) चला गया तो ब्रह्माण्ड पागल हो जाएगा और पृथ्वी अपनी विवेक शक्ति खो देगी तथा अपना अचेत सिर किसी ग्रह पर मार देगी, जिससे विश्व का विनाश हो जाएगा।

जीवन ईश्वरीय नियति में विश्वास के स्तंभ से भी संबंधित है और इसे सांकेतिक रूप से साबित करता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जीवन भौतिक, दृश्यमान दुनिया का प्रकाश है, जिसमें यह व्याप्त है, और चूंकि यह अस्तित्व के उद्देश्य का परिणाम है, और चूंकि यह ब्रह्मांड के निर्माता के लिए सबसे व्यापक दर्पण है और ईश्वरीय प्रभुत्व के कार्यों का सबसे सही सार और सूचकांक है, और - अगर हम ऐसा कह सकते हैं - इन कार्यों के लिए किसी तरह के कार्यक्रम की तरह है, तो निश्चित रूप से, जीवन यह आवश्यक बनाता है कि दृश्य और अदृश्य की दुनिया में, यानी अतीत और भविष्य में, जीवों को एक ज्ञात क्रम में पहचाना जाना चाहिए और ब्रह्मांड में सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना और संचालन के नियमों का पालन करने के लिए पूर्वनिर्धारित होना चाहिए।

पेड़ का मूल बीज और उसकी जड़ें, साथ ही उसके फल के बीज, सभी जीवित हैं, ठीक वैसे ही जैसे पेड़ खुद एक संपूर्ण इकाई है; वास्तव में, वे पेड़ की तुलना में जीवन के नियमों का अधिक सूक्ष्मता से पालन करते हैं। इसी तरह, पिछले पतझड़ द्वारा छोड़े गए बीज और जड़ें, साथ ही इस वसंत के समाप्त होने के बाद भविष्य के वसंत में छोड़े जाने वाले बीज और जड़ें - उन सभी में जीवन है, ठीक वैसे ही जैसे वसंत में होता है, और वे जीवन के नियमों के अधीन हैं। ठीक उसी तरह, ब्रह्मांड के पेड़ की शाखाओं और टहनियों में से प्रत्येक का एक अतीत और एक भविष्य है। उनके पास अस्तित्व की एक श्रृंखला है जिसमें उनकी पिछली और भविष्य की अवस्थाएँ और चरण शामिल हैं। प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक प्रजाति के प्रत्येक सदस्य के विभिन्न, कई अस्तित्व और अवस्थाएँ, जो दिव्य ज्ञान में निहित हैं, उस ज्ञान से संबंधित या उसमें दर्ज अस्तित्व की एक श्रृंखला बनाती हैं।

उनके बाह्य अस्तित्व की तरह ही, उनका अस्तित्व जो दिव्य ज्ञान में विद्यमान है, सार्वभौमिक, सर्वव्यापी जीवन से अमूर्त जीवन की किरण को वहन करता है। उनके भौतिक जीवन की सभी अवस्थाएँ और चरण दिव्य भाग्य की इन पट्टियों के अनुसार घटित होते हैं, जो सभी जीवित हैं।

तथ्य यह है कि आत्माओं की दुनिया, भगवान की दुनिया का एक रूप है
अदृश्य, आत्माओं से भरा है, जो स्वयं जीवन या सार या पदार्थ हैं

जीवन के लिए, निश्चित रूप से यह आवश्यक है कि अतीत और भविष्य - जो अदृश्य दुनिया और उसके दूसरे भाग का दूसरा रूप हैं - को भी शामिल किया जाना चाहिए

किसी तरह के जीवन से संपन्न। इसके अलावा, पूर्ण व्यवस्था, सार्थक व्यवस्था, और जीवित फल और चरण जो ईश्वर के ज्ञान में किसी चीज़ के अस्तित्व में निहित हैं, यह भी प्रदर्शित करते हैं कि उस चीज़ में ज्ञान में एक तरह का जीवन है। चूँकि ज्ञान में जीवन शाश्वत जीवन के सूर्य से एक प्रकाश है, इसलिए जीवन को दृश्यमान या भौतिक दुनिया, इस वर्तमान समय या देखे गए, बाहरी अस्तित्व तक सीमित नहीं किया जा सकता है।

बल्कि, प्रत्येक जगत अपनी क्षमता के अनुसार उस प्रकाश से अभिव्यक्ति प्राप्त करता है, और ब्रह्माण्ड अपने सभी जगतों के साथ उसी के माध्यम से जीवित और प्रकाशित होता है। अन्यथा, जैसा कि गुमराह लोग कल्पना करते हैं, इस प्रत्यक्ष, अस्थायी (भौतिक) जीवन को छोड़कर, प्रत्येक जगत एक विशाल और भयानक शव, एक अंधकारमय खंडहर होता।

इस प्रकार, "ईश्वरीय नियति और आदेश में विश्वास" का आधार जीवन के रहस्य के माध्यम से व्यापक अर्थों में समझा जाता है और इसके द्वारा स्थापित होता है। अर्थात, दृश्यमान दुनिया की व्यवस्था, उसमें जो कुछ भी है और उसके परिणाम

अपने जीवन और जीवन शक्ति को प्रकट करता है। इसी तरह, अदृश्य दुनिया से संबंधित, भूत और भविष्य दोनों के जीव (जो स्पष्ट रूप से दुनिया में आने और जाने और अपने सांसारिक जीवन के माध्यम से व्यवस्थितता का संकेत देते हैं) के पास सर्वशक्तिमान ईश्वर के ज्ञान में एक अमूर्त जीवित अस्तित्व और एक अमूर्त उपस्थिति है। इस जीवन और उपस्थिति का निशान भाग्य और निर्णय की पट्टिका के माध्यम से और उनके सांसारिक जीवन के सभी चरणों के माध्यम से प्रकट और देखा जाता है।

पांचवां संकेत

इसके अलावा, ऊपर प्रथम संकेत में वर्णित जीवन के सोलहवें गुण के विषय में यह कहा गया था कि जब जीवन किसी वस्तु में प्रवेश करता है, तो वह उसे एक संसार के समान बना देता है; यदि वह उसका एक भाग है, तो वह उसे एक पूरे के समान बना देता है, यदि वह किसी विशेष प्रकृति की वस्तु है जो एक अविभाज्य पूरे से संबंधित है, तो वह उसे उस पूरे की व्यापकता प्रदान करता है।

वास्तव में, जीवन की प्रकृति ऐसी है कि यह एक व्यापक दर्पण है जो ईश्वर की एकता को उसके अनेक नामों की संकेन्द्रित अभिव्यक्तियों में विशेष चीजों पर प्रतिबिंबित करता है। जब जीवन किसी शरीर में प्रवेश करता है, तो वह उसे एक छोटी दुनिया बना देता है; यह ब्रह्मांड के वृक्ष का एक प्रकार का बीज बन जाता है, जिसमें इसकी सघन सामग्री होती है, (पुस्तक के पृष्ठ की सामग्री की तरह)। इसलिए, जिस प्रकार एक बीज केवल एक शक्ति का कार्य हो सकता है जो उस वृक्ष को बनाने में सक्षम हो जो फल देता है

इसी प्रकार, जो सबसे छोटे जीव को बनाता है, वह निश्चित रूप से पूरे ब्रह्मांड का निर्माता है।

इस प्रकार, ऐसी व्यापकता के माध्यम से, जीवन अपने आप में दिव्य एकता के सबसे सूक्ष्म रहस्य को प्रदर्शित करता है। अर्थात्, जिस प्रकार विशाल सूर्य अपने प्रकाश, प्रतिबिंब और सात रंगों के माध्यम से पानी की हर बूंद और उसके सामने पड़े कांच के टुकड़े में मौजूद होता है, उसी प्रकार दिव्य नाम और गुण भी, जो ब्रह्मांड को घेरे हुए हैं, प्रत्येक जीवित प्राणी में एक साथ प्रकट होते हैं।

इस दृष्टिकोण से, सृष्टि और उस पर प्रभुत्व के संबंध में, जीवन ब्रह्माण्ड को एक अविभाज्य संपूर्ण बनाता है, वास्तव में, एक एकल, संपूर्ण इकाई, जिसके सभी भाग एक दूसरे के साथ और स्वयं ब्रह्माण्ड के साथ अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

वास्तव में, उसने आपके चेहरे पर जो मुहर लगाई है, वह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जिसने आपको बनाया है, वही सारी मानवजाति को भी बनाता है। क्योंकि पूरी मानवता एक ही मूल प्रकृति की है। साथ ही, जीवन के माध्यम से, ब्रह्मांड के हिस्से मानवजाति के अलग-अलग सदस्यों की तरह हैं, और ब्रह्मांड, खुद मानवजाति की तरह है। जैसे ब्रह्मांड अपने आप में ईश्वरीय एकता की मुहर प्रदर्शित करता है, वैसे ही यह अपने प्रत्येक व्यक्तिगत हिस्से पर ईश्वर की एकता और उनके शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना करने की मुहर भी दिखाता है, इस प्रकार सभी पहलुओं और प्रकारों में ईश्वर के साथ भागीदारों के जुड़ाव को नकारता और झूठा साबित करता है।

इसके अलावा, ईश्वरीय प्रभुत्व की कला में जीवन में ऐसे असाधारण चमत्कार हैं कि जो शक्ति पूरे ब्रह्मांड का निर्माण नहीं कर सकती, वह सबसे छोटे जीवित प्राणी का भी निर्माण नहीं कर सकती। वास्तव में, एक चने पर पूरा कुरान लिखने की तरह, केवल एक कलम जो एक छोटे से बीज में विशाल देवदार के पेड़ की संक्षिप्त और संक्षिप्त सामग्री और उसके सभी चरणों में उसके भविष्य के जीवन को अंकित करती है, निश्चित रूप से वह कलम हो सकती है जिसने आकाश और सितारों को अंकित किया है।

और केवल वही व्यक्ति जो मधुमक्खी के छोटे से सिर में ब्रह्माण्ड के बगीचे के फूलों को पहचानने की क्षमता और क्षमताएं डालता है, उसके अधिकांश तत्वों के साथ संबंध स्थापित करने की क्षमता और क्षमताएं डालता है, शहद की तरह दैवी दया का उपहार देने की क्षमता और क्षमताएं डालता है, तथा जिस दिन वह इस संसार में आता है, उस दिन जीवन की स्थितियों को जानने की क्षमता और क्षमताएं देता है, वही निश्चित रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माता हो सकता है।

संक्षेप में, जीवन ब्रह्मांड के चेहरे पर दिव्य एकता की एक चमकदार मुहर है और जीवन के संबंध में, प्रत्येक जीवित प्राणी दिव्य एकता की मुहर है; प्रत्येक जीवित प्राणी में कढ़ाई और कला सर्वशक्तिमान ईश्वर के सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रशंसनीय होने की मुहर बनाती है। सभी जीवित प्राणी अपने जीवन के साथ ब्रह्मांड के संदेश पर उस सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर एक के नाम पर अपने हस्ताक्षर करते हैं। ये दिव्य की मुहरें हैं

एकता और ईश्वरीय एकता की मुहरें और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रार्थना करने की मुहरें। इसी तरह, जिस तरह सभी जीवित प्राणी, जीवन की तरह, इस ब्रह्मांड की पुस्तक में ईश्वरीय एकता की मुहरें हैं, उसी तरह प्रत्येक के चेहरे और चेहरे पर भी ईश्वरीय एकता की मुहर लगाई गई है।

इसके अलावा, जिस तरह जीवन सभी जीवित प्राणियों और प्रत्येक के व्यक्तिगत सदस्यों की संख्या के लिए सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर एक की एकता की गवाही देने वाले हस्ताक्षर और मुहर बनाता है, उसी तरह जीवन को बढ़ाने और बहाल करने का कार्य भी प्राणियों की संख्या के लिए दिव्य एकता के हस्ताक्षर निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी को जीवन में लाना, जो एक एकल व्यक्ति है, सूर्य की तरह ही दिव्य एकता की गवाही देता है।

क्योंकि जब वसंत में धरती को जीवन के लिए तैयार किया जा रहा होता है, तो लाखों प्रजातियाँ और प्रत्येक प्रजाति के असंख्य व्यक्तिगत सदस्य, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी दोष या दोष के, पूर्ण, नियमित क्रम में जीवन में वापस आ जाते हैं। जो एक ही कार्य से असंख्य अन्य व्यवस्थित कार्य करता है, वह निश्चित रूप से सभी प्राणियों का निर्माता और सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर और एकता का एकमात्र व्यक्ति होना चाहिए, जिसके लिए उसके प्रभुत्व में कोई भी साझेदारी असंभव है।

अभी के लिए, जीवन के गुणों की इस छोटी संख्या का संक्षेप में वर्णन किया गया है, और अन्य गुणों की व्याख्या और विस्तृत चर्चा के लिए हम रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों और किसी अन्य समय का संदर्भ लेते हैं।

निष्कर्ष

ईश्वर का सबसे बड़ा नाम या ईश्वरीय नाम जिसकी अभिव्यक्ति सबसे व्यापक है, हर किसी के लिए एक जैसा नहीं है; यह व्यक्तियों के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए, इमाम अली के लिए, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो, ये छह नाम थे: सर्व-स्वतंत्र, एकमात्र, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर (जिससे सभी जीवित हैं), सर्व-ज्ञानी, सर्व-न्यायपूर्ण और सर्व-पवित्र। इमाम अल-आज़म अबू हनीफ़ा के लिए, ये दो नाम थे: सर्व-ज्ञानी और सर्व-न्यायपूर्ण। जबकि ग़ौथ अल-आज़म अब्दुल-क़ादिर अल-जिलानी के लिए, यह हे सर्व-जीवित था। इमाम रब्बानी के लिए, सबसे बड़ा नाम स्वयं-निर्भर था, और इसी तरह; कई अन्य लोग सबसे बड़े नाम को और भी मानते थे।

इस पांचवें भाग के संबंध में, जो कि सर्वजीव नाम के बारे में है, एक आशीर्वाद, एक साक्षी, प्रमाण, पवित्र प्रमाण और हमारे लिए एक प्रार्थना के रूप में, इस भाग के उचित निष्कर्ष के रूप में, हम निम्नलिखित को उद्धृत करते हैं, जो कि भगवान शिव द्वारा कहा गया है।

सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने अपनी सर्वोच्च प्रार्थना अल- जौशन अल-कबीर में की, जो ईश्वर के बारे में उनके ज्ञान की अत्यंत उन्नत और व्यापक डिग्री को दर्शाता है। हम कल्पना में उनके समय में यात्रा करेंगे, और सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने जो कहा, उस पर "आमीन" कहते हुए, मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो की आवाज़ के साथ उस प्रार्थना के निम्नलिखित भाग को पढ़ेंगे, जैसे कि हम खुद इसे पढ़ रहे हों:

हे सर्वजीव! आप सभी जीवों से पहले जीवित थे;
हे सर्वजीव! आप सभी जीवों के बाद भी जीवित रहेंगे;
हे सर्वजीव! आपके समान कुछ भी नहीं है;
हे सर्वजीव! जिनके समान कुछ भी नहीं है;
हे सर्वजीव! जिन्हें किसी अन्य जीव की आवश्यकता नहीं है;
हे सर्वजीव! कोई भी जीव आपका साझेदार नहीं हो सकता;
हे सर्वजीव! आप सभी जीवित प्राणियों को मरने का कारण बनते हैं;
हे सर्वजीव! आप सभी जीवों का भरण-पोषण करते हैं;
हे सर्वजीव! हे मृतकों को जीवन देने वाले!
हे सर्वजीव! जो कभी नहीं मरते;
तू महान है, तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं!
दया! दया! हमें आग से बचाओ! आमीन!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

छठा भाग

वह दिव्य नाम जो स्वयंभू है (जिससे सब जीवित हैं)

माफ़ी

चूँकि स्वयंभू नाम की गहन और व्यापक अभिव्यक्ति के बारे में निम्नलिखित बहुत महत्वपूर्ण बातें मुझे अलग-अलग झलकियों के रूप में मिलीं और बहुत जल्दबाजी में लिखी गईं, और चूँकि वे एक बहुत ही अव्यवस्थित, कच्ची प्रतिलिपि के रूप में रहीं, इसलिए वाक्यांश और अभिव्यक्ति के तरीके में कई कमियाँ और बहुत अधिक अव्यवस्था पाई जाती है। चर्चा की गई बातों की सुंदरता के लिए मेरे दोषों को क्षमा करें।

एक अनुस्मारक

चूँकि दिव्य नामों से सम्बन्धित विषय, जिनकी अभिव्यक्तियाँ सबसे व्यापक हैं, अत्यंत व्यापक हैं और अत्यंत गहन भी हैं, और विशेष रूप से स्वयंभू नाम से सम्बन्धित विषय, जिनमें प्रथम किरण के शीर्षक के अन्तर्गत चर्चित विषय भी शामिल हैं, बहुत गहराई से चर्चित किए गए हैं क्योंकि वे मुख्य रूप से भौतिकवादियों से सम्बन्धित हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक विषय को उसके सभी पहलुओं में नहीं समझ पाएगा। तथापि, प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक विषय में कुछ सीमा तक हिस्सा अवश्य होगा। इस नियम के अनुसार कि "यदि कोई वस्तु पूर्ण रूप से प्राप्त न भी हो, तो भी उसे पूर्ण रूप से त्यागना नहीं चाहिए", इस बहाने से उन्हें पढ़ना छोड़ देना उचित नहीं है कि, "मैं इस अमूर्त उद्यान के सभी फल नहीं तोड़ सकता।" कोई व्यक्ति जितने भी फल तोड़ सकेगा, उतना ही उसके लिए लाभदायक होगा।

जिस तरह से महानतम नाम से जुड़ी कुछ बातें इतनी व्यापक हैं कि उन्हें समझा नहीं जा सकता, उसी तरह कुछ ऐसी भी हैं जो इतनी सूक्ष्म हैं कि मन उन्हें पहचान नहीं सकता। सभी मन उन बातों को समझने में सक्षम नहीं हो सकते जो सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर नामों से संबंधित हैं, या, विशेष रूप से, जीवन द्वारा विश्वास के स्तंभों, विशेष रूप से ईश्वरीय नियति और आदेश के स्तंभों के बारे में दिए गए संकेत, जिनकी चर्चा ऊपर की गई है, या वे बातें जो नीचे प्रथम किरण के शीर्षक के तहत स्वयं-निर्भर नाम से संबंधित चर्चा की जाएंगी।

हालांकि, वे उनमें से कुछ के बिना नहीं रहेंगे और, किसी भी स्थिति में, ये मामले उनके विश्वास को मजबूत करेंगे। विश्वास को मजबूत करना, जो शाश्वत खुशी की कुंजी है, बहुत महत्वपूर्ण है।

ईमान में ज़रा सी भी बढ़ोत्तरी एक ख़ज़ाना है। इमाम रब्बानी अहमद अल-फ़र-

उकी ने कहा, "विश्वास की एक छोटी सी बात का खुलना और सरल शब्दों में जाना जाना, मेरे लिए सैकड़ों आध्यात्मिक सुखों का अनुभव करने या चमत्कार करने से बेहतर है।"

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अतः महिमावान है वह जिसके हाथ में सभी चीज़ों का सम्पूर्ण प्रभुत्व है
(36:83) आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं (39:63) कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके
भण्डार हमारे पास न हों (39:21) कोई प्राणी ऐसा नहीं है जिसके माथे पर बाल न हों और वह
उसे अपने वश में न रखे (11:56)

उपर्युक्त श्लोकों के अर्थ का एक पहलू, जो ईश्वर की पूर्ण आत्म-निर्वाह क्षमता का दावा करता है जिसके द्वारा सब कुछ जीवित रहता है, और

ईश्वरीय महान् नाम के दो प्रकाशों में से दूसरा, या ईश्वरीय स्वयंभू नाम का सबसे व्यापक प्रकटीकरण, जो ईश्वरीय नाम के प्रकाशों में से छठा है, जो सर्वव्यापी प्रकटीकरणों से युक्त है, मुझे जिल-कादा के महीने में दिखाई दिया।

एस्कीशेहर जेल की परिस्थितियों के कारण, मैं उस महानतम प्रकाश की पूरी तरह से व्याख्या नहीं कर पाऊँगा। हालाँकि, चूँकि इमाम अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, ने सकीना के नाम से अर्जुज़ा **की अपनी प्रार्थना में इन छह दिव्य नामों को सबसे अधिक महत्व दिया है**, साथ ही साथ जलजलुतिया की अपनी कविता में, सबसे व्यापक नामों के रूप में, और चूँकि मुझे उनके द्वारा उनके पाठ से बहुत सांत्वना मिलती है, इसलिए पाँच पूर्ववर्ती नामों की हमारी चर्चा के अलावा, हम पाँच किरणों वाले स्वयंभू नाम की संक्षिप्त व्याख्या करेंगे।

पहली किरण

ब्रह्मांड का महान रचयिता स्वयंभू है, अर्थात वह स्वयं ही जीवित है और हमेशा विद्यमान है। सभी चीजें उसी के द्वारा जीवित रहती हैं, जारी रहती हैं और उनमें स्थायित्व होता है। यदि ब्रह्मांड का उसके स्वयंभू होने से संबंध, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, एक सेकंड के एक अंश के लिए भी टूट जाए, तो ब्रह्मांड पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।

इसके अलावा, जैसा कि महान क़ुरआन ने कहा है, वह स्वयंभू है जिसके द्वारा सब कुछ चलता है, वह सर्वशक्तिमान भी है जिसके समान कोई चीज़ नहीं है (42:11)। यानी, न तो अपने सार में, न ही अपने गुणों में, न ही अपने कार्यों में वह किसी के समान, बराबर, समकक्ष या भागीदार है। वास्तव में, यह कल्पना से परे है कि उस परम पवित्र के लिए कोई समान, बराबर, भागीदार या समकक्ष हो, जो अपने प्रभुत्व के अधीन पूरे ब्रह्मांड को और उसमें जो कुछ भी है या होता है, उसे रखता है और जो इसे पूर्ण व्यवस्था के साथ संचालित, पोषित और पोषित करता है जैसे कि यह एक घर या महल हो।

वह ऐसा सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर महात्म्य है कि तारों की रचना उसके लिए कणों की तरह ही सरल है, और सबसे बड़ी चीज भी उसी तरह उसकी शक्ति के अधीन है जिस तरह सबसे सूक्ष्म चीज है, और उसका एक काम करना उसे किसी भी तरह से दूसरे काम को करने से नहीं रोक सकता, और असंख्य चीजें एक ही समय में उसकी दृष्टि के सामने मौजूद रहती हैं जैसे कि एक चीज, और वह सभी आवाजों को एक साथ सुनता है और सभी की असीमित जरूरतों को एक साथ पूरा करने में सक्षम है, और, जैसा कि ब्रह्मांड के सभी कोनों में व्यवस्था और संतुलन से प्रमाणित होता है, ऐसा कुछ भी नहीं है, कोई भी कार्य या स्थिति नहीं है जो उसकी इच्छा के क्षेत्र से बाहर हो, और

यद्यपि वह स्थान द्वारा पूर्णतः सीमित नहीं है, फिर भी वह अपनी शक्ति और ज्ञान के साथ सर्वव्यापी है, तथा यद्यपि सब कुछ उससे असीम रूप से दूर है, फिर भी वह सभी चीजों के असीम रूप से निकट है। निश्चय ही, ऐसे सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर महामहिम का किसी भी तरह से कोई समान, बराबर, भागीदार, प्रतिनिधि, विरोधी या समकक्ष नहीं हो सकता; यह असंभव होगा। हम केवल दृष्टांतों और रूपकों के माध्यम से ही उसके पवित्र आवश्यक गुणों और विशेषताओं पर विचार कर सकते हैं। रिसाले-ए-नूर में सभी तुलनाएँ और रूपक इसी प्रकार के दृष्टांत और रूपक हैं।

तथापि, यद्यपि वह अनिवार्यतः अस्तित्वमान है, जिसका कोई समान नहीं है, तथा जो पदार्थ और स्थान से पूर्णतया मुक्त है; यद्यपि वह एक है जिसके लिए हर प्रकार से विभाजन, किसी भी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर अकल्पनीय है; तथा यद्यपि वह अभाव और शक्तिहीनता से असीम रूप से ऊपर है; फिर भी गुमराह लोगों का एक समूह ब्रह्माण्ड के पृष्ठों पर तथा अपने प्राणियों के क्षेत्र में उस परम पवित्र के कुछ रूपों को स्वयं परम पवित्र मान लेता है, तथा कुछ प्राणियों को ईश्वरीय गुण और कार्य सौंप देता है, इस प्रकार परम पवित्र के कुछ कार्यों को प्रकृति का मान लेता है।

हालाँकि, इसे कई स्थानों पर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है
रिसाले-ए-नूर में कहा गया है कि प्रकृति एक ईश्वरीय कला है और यह कलाकार नहीं हो सकती। यह भगवान द्वारा अंकित की गई चीज़ है और यह लेखक नहीं हो सकती। यह एक डिज़ाइन है और यह डिज़ाइनर नहीं हो सकती। यह एक रजिस्टर है और यह रजिस्ट्रार नहीं हो सकता। यह एक कानून है और यह शक्ति नहीं हो सकती। यह एक पैटर्न है और यह स्रोत नहीं हो सकता। यह एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता है और यह लेखक नहीं हो सकता। यह एक आदेश है और यह आदेश देने वाला नहीं हो सकता। यह सृजन की एक प्रणाली है और यह प्रणाली का संस्थापक नहीं हो सकता।

यदि असंभव को मान लिया जाए, तो सबसे छोटे सजीव प्राणी को प्रकृति के हवाले कर दिया जाए और प्रकृति से कहा जाए, "इसे बनाओ", जैसा कि रिसाले-ए-नूर में कई स्थानों पर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है, उसके अचेतन, अज्ञानी और इच्छाशक्ति से रहित होने की अनदेखी करते हुए, तब प्रकृति के लिए यह आवश्यक होगा कि वह उस छोटे प्राणी के अंगों और शारीरिक प्रणालियों की संख्या के लिए सांचे, या बल्कि मशीनें प्रदान करे ताकि वह उस कार्य को पूरा कर सके।

इसके अलावा, भौतिकवादी कहलाने वाले गुमराह लोगों के एक समूह ने सूक्ष्म कणों या परमाणुओं की व्यवस्थित गति में ईश्वर की रचनात्मकता और प्रभुत्व की शक्ति की व्यापक अभिव्यक्ति को देखा है।

हालाँकि, चूँकि वे यह जानने में असमर्थ हैं कि अभिव्यक्ति कहाँ से आती है और यह नहीं समझ सकते हैं कि सार्वभौमिक बल कहाँ से आ रहा है

निर्देशित, जो कि शाश्वत रूप से सभी की प्रार्थना की गई शक्ति के प्रकटीकरण से उत्पन्न होता है, वे पदार्थ और बल को पूर्व-शाश्वत मानते हैं और दिव्य कार्यों को परमाणुओं और उनकी गति के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। ईश्वर की महिमा सर्वविदित है! मनुष्य इतने अज्ञानी कैसे हो सकते हैं कि वे उस एक के कार्यों और कार्यों का श्रेय देते हैं जो अंतरिक्ष से परे है, लेकिन हर जगह इस तरह से मौजूद है कि वह सभी चीजों के निर्माण में सभी चीजों को देखने, जानने और निर्देशित करने में सक्षम है, कणों या परमाणुओं या उनकी गति पर, जो बेजान, अंधे और अचेतन हैं, और जो लगातार और पूर्ण भ्रम में घूमते रहते हैं? थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति देख सकता है कि यह कितना अज्ञानी और अंधविश्वासी विचार है।

दरअसल, चूंकि ये लोग पूर्ण एकता को देखने और स्वीकार करने से पीछे हट जाते हैं, इसलिए वे असीम, निरपेक्ष बहुलता में गिर जाते हैं। यानी, चूंकि वे एक और एकल ईश्वर को स्वीकार नहीं करते, इसलिए उन्हें असंख्य देवताओं को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, चूंकि उनके भ्रष्ट दिमाग यह समझने में असमर्थ हैं कि एक एकल, सर्व-पवित्र एक कैसे पूर्व-शाश्वत और सभी चीजों का निर्माता हो सकता है - हालांकि पूर्व-शाश्वत और रचनात्मकता दिव्य सत्ता के लिए अपरिहार्य हैं - उनका दृष्टिकोण उन्हें उन असंख्य, निर्जीव कणों की पूर्व-शाश्वतता, वास्तव में दिव्यता को स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है। तो, आओ और अज्ञानता की इस असीम डिग्री पर विचार करें!

निश्चित रूप से, ईश्वर की रचनात्मकता और कणों या परमाणुओं पर प्रभुत्व की शक्ति की व्यापक अभिव्यक्ति ने कणों के उस समूह को एक व्यवस्थित और शानदार सेना में बदल दिया है। यदि कमांडर-इन-चीफ की कमान और शक्ति एक सेकंड के लिए भी वापस ले ली जाए, तो वह बिखरा हुआ, बेजान, बेहोश द्रव्यमान अनियमित सैनिकों की तरह हो जाएगा; इसका अस्तित्व पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा।

इसके अलावा, लोगों का एक और समूह और भी अधिक अज्ञानतापूर्वक गुमराह है। जैसे कि वे और भी आगे देख सकते हैं, वे ईथर के पदार्थ को सृष्टि का मूल और निर्माता मानते हैं। जबकि, सर्वशक्तिमान निर्माता के कार्यों के लिए एक अत्यंत सूक्ष्म, बढ़िया, आज्ञाकारी और अधीन पृष्ठ होने के नाते, उनके आदेशों के प्रसारण के लिए एक साधन होने के नाते, उनके आदेशों के निष्पादन के लिए एक अत्यंत नाजुक पर्दा होने के नाते, उनके लेखन के लिए परिष्कृत स्याही होने के नाते, उनके सृजन के कार्यों को पहनने के लिए एक बेहतरीन वस्त्र होने के नाते, उनकी कलाकृतियों में एक बुनियादी घटक होने के नाते और उनके बीज बोने के लिए एक क्षेत्र होने के नाते, ईथर ईश्वर की प्रभुता की अभिव्यक्तियों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है।

ईथर एक प्रकार का पदार्थ है जो निर्जीव, अचेतन और इच्छा से रहित है; यह उन सूक्ष्म कणों से भी अधिक सूक्ष्म और महीन है जिन्हें भौतिकवादी मानते हैं।

डूबे हुए हैं, लेकिन आदिम पदार्थ की तुलना में अधिक सघन हैं, जिस पर प्राचीन दार्शनिक तेजी से अटके हुए थे। इस पदार्थ को, जिसमें असीम विभाज्यता है और जो चालकता से सुसज्जित है और जिसमें ईश्वर के आदेशों को निष्पादित करने का माध्यम होने के गुण या कर्तव्य हैं, उसे जिम्मेदार ठहराना असीम रूप से गलत होगा - वास्तव में, इसके सूक्ष्म कणों को, जो अन्य पदार्थों के कणों की तुलना में कहीं अधिक सूक्ष्म हैं, उन कार्यों और कार्यों को जिम्मेदार ठहराना असीम रूप से गलत होगा जो केवल एक इच्छा और शक्ति के माध्यम से मौजूद हैं जो सभी चीजों को देख, जान और निर्देशित कर सकती है।

प्राणियों में देखा गया सृजन का कार्य ऐसा है कि यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यह एक शक्ति और इच्छा से आगे बढ़ता है जो सभी चीजों को एक साथ देखता और जानता है और प्रत्येक जीवित प्राणी के पूरे ब्रह्मांड के साथ संबंध को जानता और सुरक्षित करता है। इस प्रकार यह दर्शाता है कि यह किसी भी तरह से कारणों का कार्य नहीं हो सकता है, जो भौतिक हैं, और जो सर्वव्यापी नहीं हैं। यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के आत्म-निर्वाह के रहस्य के कारण है कि एक सबसे विशेष रचनात्मक कार्य भी सर्वोच्च गुण रखता है जो इंगित करता है कि यह सीधे पूरे ब्रह्मांड के निर्माता का कार्य है। उदाहरण के लिए, मधुमक्खी के निर्माण से संबंधित एक कार्य यह दर्शाता है कि यह दो मामलों में ब्रह्मांड के निर्माता के लिए विशिष्ट है।

पहला पहलू : यह तथ्य कि दुनिया भर में सभी अन्य मधुमक्खियाँ एक ही समय में एक ही कार्य करती हैं, यह दर्शाता है कि एक व्यक्तिगत मधुमक्खी और सभी मधुमक्खियों द्वारा किया गया विशेष कार्य एक व्यापक कार्य का सिरा है जो पूरी पृथ्वी को अपने में समाहित करता है। इसलिए, जो कोई भी उस व्यापक कार्य का लेखक है, वह उस विशेष कार्य का भी लेखक होना चाहिए।

दूसरा पहलू : मधुमक्खी के निर्माण से संबंधित किसी कार्य का लेखक होने के लिए, ऐसी शक्ति और इच्छाशक्ति होनी चाहिए जो मधुमक्खी और उसके सभी सदस्यों के जीवन और ब्रह्मांड के साथ उसके संबंधों के लिए परिस्थितियों को जानने और सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त हो। इसलिए, केवल वही व्यक्ति जो विशेष कार्य का लेखक है, वह पूरे ब्रह्मांड पर अधिकार रखते हुए इसे इतनी पूर्णता से निष्पादित करने में सक्षम होगा।

इस प्रकार, सबसे विशिष्ट और महत्वहीन कार्य भी दो पहलुओं में प्रदर्शित करता है कि यह सभी चीजों के निर्माता के लिए विशिष्ट है।

सबसे उल्लेखनीय और आश्चर्यजनक बात यह है: यह अनिवार्य रूप से विद्यमान एक है जिसका अस्तित्व पूर्णतः आवश्यक और अपरिहार्य है तथा जो अस्तित्व का सबसे दृढ़ स्तर बनाता है। पदार्थ से मुक्त होना अस्तित्व की सबसे स्थिर डिग्री का कारण है; अंतरिक्ष से पूर्ण स्वतंत्रता अस्तित्व की वह स्थिति है जो समाप्ति से सबसे दूर है; एकता अस्तित्व का सबसे ठोस गुण है

अस्तित्व और वह जो परिवर्तन या गैर-अस्तित्व से सर्वथा ऊपर है।
अनिवार्य रूप से विद्यमान एक में अस्तित्व के ये सभी गुण विद्यमान हैं और शाश्वतता उसका सबसे विशेष गुण है। फिर भी भौतिकवादी पदार्थ और ईथर तथा कणों जैसी चीज़ों को पूर्व-अनंतता और स्थायित्व का श्रेय देते हैं जो अस्तित्व का सबसे कमज़ोर और सबसे कम स्थिर स्तर बनाते हैं और जिनमें

सबसे कम मूर्त, सबसे अधिक परिवर्तनशील और सबसे अधिक परिवर्तनशील अस्तित्व की स्थिति, और जो अंतरिक्ष में सबसे अधिक फैली हुई है। पदार्थ और कणों या परमाणुओं जैसी चीज़ों को पूर्व-शाश्वत मानना और उन्हें कुछ दिव्य कार्यों का मूल मानना असीम रूप से अनुचित और सत्य और वास्तविकता के विपरीत है। रिसाले -ए-नूर में कई जगहों पर इसे पुख्ता तर्कों के ज़रिए प्रदर्शित किया गया है।

दूसरी किरण

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला

> उसे न ऊंघ आती है और न नींद (2:255) कोई चीज़ ऐसी नहीं जो हमारे पास न हो परन्तु उसके भण्डार (जीवन और जीविका के) हमारे पास हों (39:21) आकाश और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं (39:63)

इन श्लोकों द्वारा इंगित महान सत्य का एक पहलू, जो दिव्य नाम आत्मा की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति की ओर इशारा करता है,

उपधारा (1) इस प्रकार है:

ब्रह्माण्ड में सभी आकाशीय पिंड ईश्वर की स्वयं-सत्ता या उसके द्वारा उन्हें अस्तित्व में बनाए रखने के कारण विद्यमान हैं। यदि उस स्वयं-सत्ता की अभिव्यक्ति एक क्षण के लिए भी अपना मुख मोड़ ले, तो लाखों गोले, जिनमें से कुछ पृथ्वी से भी हज़ार गुना बड़े हैं, अंतरिक्ष के अंतहीन शून्य में बिखर जाएँगे, और एक-दूसरे से टकराकर, शून्य में जा गिरेंगे।

उदाहरण के लिए, एक ऐसी शक्ति की कल्पना करें जो हजारों आलीशान महलों को सही क्रम में रखती है और उन्हें अंतरिक्ष में विमानों की तरह यात्रा कराती है।
उन्हें जीवित रखने की इसकी क्षमता अंतरिक्ष में उन महलों के क्रम, नियमित गति और निरंतरता के माध्यम से मापी जाती है। इसी तरह, स्वयंभू महामहिम असंख्य स्वर्गीय पिंडों को ईथर पदार्थ के भीतर पूर्ण क्रम और स्थिरता में रखता है और यात्रा कराता है, जिससे वे सभी पिंड बिना किसी सहारे के अंतरिक्ष में जीवित रहते हैं या उन्हें थामे रखते हैं, जिनमें से कुछ

पृथ्वी से हज़ारों और कुछ तो दस लाख गुना बड़े हैं। वह उन सभी को कर्तव्य सौंपता है और उन्हें "हो जाओ" के आदेश से जारी होने वाले आदेशों के प्रति एक राजसी सेना की तरह पूर्ण आज्ञाकारिता में समर्पित करता है और ऐसा ही होता है। यह सब स्वयंभू नाम (जिससे सभी जीवित हैं) की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति को समझने का एक उपाय है, और यह दर्शाता है कि सभी प्राणियों के कण या परमाणु भी, सितारों की तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्वयं-निर्भरता के माध्यम से जीवित रहते हैं।

जीवधारी के शरीर में कण बिखरते नहीं हैं, बल्कि इकट्ठे होते हैं और प्रत्येक अंग के लिए विशिष्ट समूहों और प्रणालियों में बने रहते हैं, और बिना बिखरे हुए, तत्वों के तूफानों के बीच अपनी स्थिति बनाए रखते हैं, जो बाढ़ की तरह बहते हैं, व्यवस्थित रहते हैं। चूँकि ऐसी कोई घटना स्वयं-सिद्ध रूप से अपने आप नहीं होती है, बल्कि ईश्वर के स्वयं-निर्वाह द्वारा और उसके द्वारा सभी को जीवित रखने के कारण होती है, इसलिए परिणाम यह होता है कि प्रत्येक शरीर एक सुव्यवस्थित रेजिमेंट की तरह रहता है और प्रत्येक प्रजाति एक नियमित सेना की तरह रहती है, जिसमें सभी जीवित प्राणी पृथ्वी पर और अंतरिक्ष में तारों के बीच रहते हैं और चलते रहते हैं; इस प्रकार, ये कण या परमाणु असंख्य आवाज़ों में स्वयं-निर्वाह के रहस्य की घोषणा करते हैं।

दूसरा मामला

इस विषय में यह आवश्यक है कि ईश्वरीय आत्म-निर्वाह से जुड़ी चीजों में ज्ञान के कुछ लाभों और उदाहरणों का उल्लेख किया जाए।

सभी चीज़ों के सृजन और अस्तित्व के लिए ज्ञान और दिव्य उद्देश्यों के तीन व्यापक परिणाम हैं।

पहला परिणाम स्वयं वस्तु और मानवता से संबंधित है, साथ ही मानवता के लाभ से भी।

दूसरा परिणाम, जो अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि एक संकेत, एक संदेश, एक पुस्तक, तथा एक स्तुति के रूप में, जिसका अध्ययन सभी चेतन प्राणियों द्वारा किया जाना चाहिए, तथा जो सर्वशक्तिमान सृजक के नामों को ज्ञात कराता है, प्रत्येक वस्तु असंख्य पाठकों के लिए अनेक अर्थ व्यक्त करती है।

तीसरा परिणाम स्वयं सर्वशक्तिमान निर्माता से संबंधित है। यदि किसी वस्तु से संबंधित प्रत्येक वस्तु के लाभ और परिणाम एक हैं, तो सर्वशक्तिमान निर्माता से संबंधित लाभ और परिणाम सैकड़ों हैं। सर्वशक्तिमान निर्माता स्वयं अपनी कला के चमत्कारों को देखता है, और अपने द्वारा बनाए गए प्राणियों में अपने नामों की अभिव्यक्ति को देखता है। इस तीसरे, शक्तिशाली परिणाम को ध्यान में रखते हुए, कोई भी जीवित वस्तु, एक सेकंड के लिए भी, पर्याप्त है।

दिव्य आत्म-निर्वाह का एक और रहस्य है जिसके लिए अस्तित्व की आवश्यकता है- सभी चीजों का तनाव जो नीचे तीसरी किरण में समझाया जाएगा।

एक समय मैं ब्रह्माण्ड के ताबीज और सृष्टि की पहेली की जांच कर रहा था; मैंने सृष्टि में ज्ञान और लाभ के उदाहरणों पर ध्यान केंद्रित किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि ये चीजें कुछ समय के लिए क्यों दिखाई देती हैं और फिर तेजी से लुप्त हो जाती हैं। मैंने उनकी विशेषताओं पर ध्यान दिया: उन्हें व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण तरीके से सजाया और सजाया गया है और इस प्रदर्शनी में भेजा गया है। लेकिन फिर वे एक या दो दिनों के भीतर गायब हो जाते हैं, और उनमें से कुछ तो कुछ मिनटों के भीतर ही गायब हो जाते हैं; दिखने में, वे बिना किसी उद्देश्य के चले जाते हैं। उनके इतने कम समय के लिए हमारे सामने आने का क्या कारण है? मैं बहुत उत्सुक था। उस समय, ईश्वरीय कृपा से, मुझे इस सांसारिक विद्यालय में आने वाले प्राणियों, विशेष रूप से जीवित प्राणियों में ज्ञान का एक महत्वपूर्ण उदाहरण मिला। यह इस प्रकार था:

प्रत्येक प्राणी, और विशेषकर प्रत्येक जीवित प्राणी, एक अत्यंत अर्थपूर्ण शब्द, संदेश, ईश्वरीय प्रभुत्व का गान और ईश्वरीय घोषणा है।
जब सभी चेतन प्राणियों द्वारा इसका अध्ययन कर लिया जाता है तथा असंख्य पाठकों को इसका अर्थ बता दिया जाता है, तो इसका भौतिक रूप, जो इसे बनाने वाले अक्षरों के समान है, लुप्त हो जाता है।

लगभग एक साल तक यह ज्ञान का उदाहरण मेरे लिए पर्याप्त था। फिर जीवों और खास तौर पर सजीवों में पाए जाने वाले कला के कई अद्भुत और सूक्ष्म चमत्कार मेरे सामने प्रकट हुए। मुझे समझ में आया कि कला की ये अद्भुत सूक्ष्मताएँ सिर्फ़ चेतन प्राणियों के अध्ययन के लिए ही नहीं हैं।

यद्यपि असंख्य चेतन प्राणी प्रत्येक प्राणी का अध्ययन कर सकते हैं, फिर भी उनका अध्ययन सीमित है और उनमें से कोई भी उन जीवित प्राणियों में कला की सभी सूक्ष्मताओं का भेदन करने में सक्षम नहीं हो सकता है। अर्थात्, जीवित प्राणियों के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम और उनकी रचना का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि शाश्वत स्वयंभू परमेश्वर अपनी कला के चमत्कारों और अपने द्वारा प्रदान की जाने वाली दयालु उपहारों और उदारताओं को अपने सामने प्रस्तुत करता है।

मैं इस उद्देश्य से बहुत समय तक संतुष्ट रहा। मैंने समझ लिया था कि जीवित प्राणियों पर किया गया महान "खर्च" या प्राणियों में, विशेष रूप से सजीव प्राणियों में मौजूद कला की अनगिनत सूक्ष्मताएँ, शाश्वत रूप से स्वयंभू की कला को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से काम आती हैं।

कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि प्राणियों और उनके रूपों में कला की सूक्ष्मताएँ स्थिर नहीं हैं; वे बदलती रहती हैं और बहुत तेज़ी से नवीनीकृत होती रहती हैं; वे ईश्वरीय रचनात्मकता द्वारा अंतहीन गतिविधियों में रूपांतरित होती रहती हैं। मैंने इस रचनात्मकता और गतिविधि में निहित बुद्धिमत्ता पर विचार करना शुरू किया, और महसूस किया कि यह

यह आवश्यक है कि यह कार्यकलाप जितना ही व्यापक हो। फिर, ऊपर बताए गए ज्ञान के दो उदाहरण अपर्याप्त लगने लगे। बड़ी उत्सुकता के साथ मैंने ज्ञान के एक और उद्देश्य और उदाहरण की खोज शुरू की।

सारी प्रशंसा ईश्वर की है, क्योंकि चमत्कारपूर्ण व्याख्या वाले कुरान के प्रकाश के माध्यम से, कुछ समय बाद ईश्वरीय आत्म-निर्वाह से संबंधित एक विशाल और असीम ज्ञान और उद्देश्य प्रकट हुआ, जिसके माध्यम से सभी जीवित हैं।
और इसके माध्यम से, "ब्रह्मांड का ताबीज" और "सृष्टि की पहेली" नामक दिव्य रहस्य को समझा गया।
(चौबीसवें पत्र में इसकी विस्तृत व्याख्या का संदर्भ देते हुए, यहाँ हम अगली तीसरी किरण में दो या तीन बिंदुओं का संक्षेप में उल्लेख करेंगे।)

इस बिंदु से दिव्य आत्म-निर्भरता के रहस्य की अभिव्यक्ति को देखें: यह सभी प्राणियों को अस्तित्वहीनता से बाहर ले जाता है, और जैसा कि श्लोक में कहा गया है,

ईश्वर ही है जिसने बिना किसी खंभे के आकाश को ऊपर उठाया है (13: 2), प्रत्येक को अनंत अंतरिक्ष में रहने देता है, उन्हें स्थिरता और स्थायित्व प्रदान करता है। अगर यह सहारा न होता, तो कुछ भी अपने आप अस्तित्व में नहीं रह सकता था। सब कुछ अनंत शून्य में गिर जाता और क्षय में गिर जाता।

इसके अलावा, जिस तरह सभी प्राणी अपने अस्तित्व और निर्वाह के लिए सर्वशक्तिमान, स्वयंभू एक पर निर्भर हैं, उसी तरह हजारों जंजीरें या रेखाएँ हैं - जैसे टेलीफोन और टेलीग्राफ की लाइनें, अगर तुलना जायज़ हो - जो सभी प्राणियों के जीवन और निर्वाह में हर चीज़ के बीच संपर्क के लिए ज़िम्मेदार हैं; वे श्लोक में बताए गए परम सत्य में समाप्त होती हैं, और सिर्फ़ उसी को पूरा मामला संदर्भित किया जाता है (11: 123)। अगर वे उस प्रकाशमान आधार बिंदु पर निर्भर न होते, तो कारणों के हज़ारों क्रम होने चाहिए, या यूँ कहें कि जितने प्राणी हैं, उतने ही कारणों के क्रम होने चाहिए। विचारकों और विद्वानों के अनुसार, यह एक असंभव और गलत धारणा है। उदाहरण के लिए, एक चीज़ (उदाहरण के लिए संरक्षण या प्रकाश या अस्तित्व या प्रावधान) एक मामले में अगली चीज़ पर निर्भर करती है, और वह अगली पर, और वह अगली पर, जब तक कि अंततः, चूँकि यह अंतहीन रूप से जारी नहीं रह सकता, इसे एक मूल स्रोत में समाप्त होना चाहिए।

इस प्रकार, ऐसी सभी पंक्तियों और अनुक्रमों का अंत उस दिव्य आत्म-निर्वाह में निहित है जिसके द्वारा सभी जीवित हैं। जब दिव्य आत्म-निर्वाह को ठीक से समझ लिया जाता है, तो श्रृंखलाओं या अनुक्रमों की कल्पना करना आवश्यक नहीं है

प्राणियों के पूर्णतः नियमित और व्यवस्थित अस्तित्व को समझाने के लिए कारणों का वर्णन किया गया है। क्योंकि प्रत्येक वस्तु सीधे ईश्वरीय आत्म-निर्वाह पर निर्भर करती है, जिसके द्वारा सभी जीवित रहते हैं।

तीसरी किरण

> हर दिन (हर पल) वह एक नए रूप में प्रकट होता है (दिव्य सत्ता के रूप में अपने सभी गुणों और नामों के साथ) (55:29)। वह जो चाहे वह करता है (85:16)। वह जो चाहे वह बनाता है (30:54)।
>
> वह महिमावान है जिसके हाथ में हर चीज़ की सम्पूर्ण प्रभुता है (36:83) तो फिर, अल्लाह की दया के निशानों को देखो - कैसे वह मरी हुई धरती को उसके मरने के बाद फिर से जीवित कर देता है। (30:50)

कुछ परिचयात्मक बिंदुओं के माध्यम से, हम थोड़ी सी सीमा तक दिव्य आत्म-निर्वाह की अभिव्यक्ति को समझाने का प्रयास करेंगे जो दिव्य रचनात्मकता और दिव्य प्रभुत्व की गतिविधियों के साथ होती है।

पहला: जब हम ब्रह्मांड को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि कुछ जीव, जो समय की बाढ़ में निरंतर सक्रिय रहते हैं और एक के बाद एक, एक काफिले के बाद एक काफिले का अनुसरण करते हैं, एक पल के लिए आते हैं और फिर तुरंत गायब हो जाते हैं। एक और समूह एक मिनट के लिए आता है और फिर गायब हो जाता है। एक प्रजाति एक घंटे के लिए भौतिक दुनिया में रुकती है, और फिर अदृश्य दुनिया में प्रवेश करती है। उनमें से कुछ एक दिन के लिए भौतिक दुनिया में आते हैं और बस जाते हैं, उनमें से कुछ एक साल के लिए, कुछ एक सदी के लिए, और कुछ सैकड़ों सालों के लिए; वे अपना कर्तव्य निभाते हैं और फिर चले जाते हैं।

प्राणियों की यह विस्मयकारी यात्रा और प्रवाह या प्रवाह ऐसी व्यवस्था, संतुलन और बुद्धिमत्ता के साथ निर्देशित होता है, और जो इन काफिलों का संचालन करता है, वह ऐसा इतनी अंतर्दृष्टि, बुद्धिमत्ता और विचार-विमर्श के साथ करता है कि यदि सभी मन एकजुट हो जाएं और एक मन बन जाएं, तो भी वे इस बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देश के सार को समझने में असमर्थ होंगे; वे इसमें कोई दोष नहीं खोज पाएंगे और इसलिए इसकी आलोचना करने में सक्षम नहीं होंगे।

इस प्रकार, अपने प्रभुत्व की इस गतिविधि के माध्यम से, वह जो प्राणियों के प्रवाह को नियंत्रित करता है, अपने सभी प्यारे प्राणियों को, विशेष रूप से जीवित प्राणियों को, अपने पूर्ण नियंत्रण में रखता है, और उन्हें अदृश्य की दुनिया में भेजता है, लगातार दुनिया के अतिथिगृह को भरता है और मेहमानों की राय पूछे बिना इसे खाली करता है। पृथ्वी को लिखने और मिटाने के लिए एक बोर्ड की तरह बनाते हुए, नियति और निर्णय की कलम पृथ्वी पर अपने लेखन को निरंतर नवीनीकृत करती है, जीवन देती है और मरने का कारण बनती है (2: 258)। प्रभुत्व और दिव्य की यह गतिविधि

रचनात्मकता के तीन सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक उद्देश्य और बुद्धिमत्ता के उदाहरण हैं।

इनमें से पहला उद्देश्य यह है: हर प्रकार की गतिविधि, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, आनंद देती है। बल्कि, हर गतिविधि में आनंद है।

वस्तुतः, क्रियाकलाप शुद्ध आनन्द है; या अस्तित्व की अभिव्यक्ति है, जो कि शुद्ध आनन्द है, तथा अ-अस्तित्व से बचने की एक गतिविधि है, जो कि शुद्ध दुःख है, तथा अस्तित्व के दायरे की ओर उठना है।

वास्तव में, क्षमता रखने वाला हर व्यक्ति गतिविधि के माध्यम से अपनी क्षमताओं के विकास को खुशी के साथ आगे बढ़ाता है। गतिविधि के माध्यम से जन्मजात प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति एक आनंद से उत्पन्न होती है और आनंद में परिणत होती है। कुछ पूर्णता वाले हर व्यक्ति गतिविधियों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति और विकास को खुशी के साथ आगे बढ़ाता है।

चूँकि प्रत्येक क्रियाकलाप में पूर्णता और आनन्द है, जिसे इस प्रकार प्रेम किया जाता है और जिसकी खोज की जाती है, और चूँकि क्रियाकलाप स्वयं पूर्णता है; और चूँकि एक शाश्वत और सनातन जीवन से उत्पन्न होने वाले असीम प्रेम और अनंत करुणा की अभिव्यक्तियाँ जीवित प्राणियों की दुनिया में स्पष्ट हैं, ये अभिव्यक्तियाँ दर्शाती हैं कि शाश्वत जीवन के एक अपरिहार्य गुण के रूप में, परम पावन, जो इस प्रकार प्रेम करता है और करुणामय है और अपने आप को प्रेम करने योग्य बनाता है, में दिव्य तीव्र, पवित्र प्रेम और पवित्र शुद्ध आनन्द जैसे पवित्र, आवश्यक गुण हैं जो उसकी पवित्रता और उसके अस्तित्व की परम आवश्यकता के अनुरूप हैं। और ये आवश्यक गुण ही हैं जो उस अंतहीन क्रियाकलाप और अनंत रचनात्मकता के माध्यम से ब्रह्मांड को निरंतर नवीनीकृत करते हैं, निरंतर गतिमान करते हैं और बदलते हैं।

ईश्वरीय आत्म-निर्वाह से जुड़ी असीम ईश्वरीय गतिविधि में ज्ञान का दूसरा उदाहरण ईश्वरीय नामों से संबंधित है। यह एक तथ्य है कि

प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास पूर्ण सौंदर्य है, वह अपनी सुंदरता को देखना और प्रदर्शित करना चाहता है; प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास कुछ कौशल हैं, वह अपने कौशल का प्रदर्शन करके लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है और उसे पसंद भी करता है; और एक सुंदर सत्य और अर्थ जो अप्रकट या अनदेखा रह गया है, वह अभिव्यक्त होना चाहता है और उसे अपने "ग्राहक" मिलना पसंद है।

ये मूलभूत नियम सभी चीज़ों में उनकी तीव्रता के अनुसार लागू होते हैं। निश्चित रूप से, जैसा कि ब्रह्मांड द्वारा प्रमाणित किया गया है और उनकी अभिव्यक्तियों और कढ़ाई द्वारा प्रदर्शित किया गया है, सर्व-महिमावान, स्वयं-निर्भर सत्ता के एक हज़ार एक सर्व-सुंदर नामों में से प्रत्येक में अभिव्यक्ति की हर डिग्री में पूर्ण, सच्ची सुंदरता, पूर्णता, अनुग्रह और सच्चाई है। वास्तव में, प्रत्येक नाम की अभिव्यक्ति की हर डिग्री में सुंदरता की अनंत किस्में और असंख्य सुंदर सत्य हैं।

यह ब्रह्माण्ड और उसमें जो कुछ भी है, वह इन नामों के पवित्र सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण का काम करता है, और वह उन दृश्यों का निर्माण करता है जो उनकी सुन्दर कढ़ाई को प्रदर्शित करते हैं और उन पृष्ठों का निर्माण करता है जो उनके सुन्दर सत्यों को प्रदर्शित करते हैं। अतः, उनकी असीम अभिव्यक्तियों और अनन्त, अर्थपूर्ण कढ़ाईयों और पुस्तकों को उस सर्वशक्तिमान, स्वयंभू की साक्षी दृष्टि के समक्ष, जिसका वे प्रतीक हैं, और असंख्य, चेतन, जीवित प्राणियों की परीक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए, और एक सीमित और सीमित वस्तु से असंख्य दृश्यों को, एक व्यक्ति से अनेक व्यक्तियों को, और एक सत्य से अनेक सत्यों को प्रदर्शित करने के लिए, ये स्थायी और शाश्वत नाम उस पवित्र दिव्य प्रेम के परिणामस्वरूप और दिव्य आत्म-निर्भरता के रहस्य के कारण अपनी अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्माण्ड को पूरी तरह से और निरंतर नवीनीकृत और परिवर्तित करते हैं।

चौथी किरण

ब्रह्माण्ड में निरंतर और आश्चर्यजनक गतिविधि में बुद्धिमत्ता का तीसरा उदाहरण निम्नलिखित है:

प्रत्येक व्यक्ति जो दयालु है, वह दूसरों को प्रसन्न करके प्रसन्न होता है; प्रत्येक व्यक्ति जो दयालु है, वह दूसरों को प्रसन्न करके प्रसन्न होता है; प्रत्येक व्यक्ति जो प्रेम करता है, वह उन लोगों को प्रसन्न करके प्रसन्न होता है जो प्रसन्न होने के योग्य हैं; प्रत्येक व्यक्ति जो नेकदिल है, वह दूसरों को प्रसन्न करके प्रसन्न होता है; प्रत्येक व्यक्ति जो न्यायप्रिय है, वह न्याय को कायम रखने और उन लोगों का आभार प्राप्त करने में प्रसन्न होता है जिनके अधिकारों की रक्षा की गई है, तथा जो इसके पात्र हैं उन्हें दण्डित करता है; और प्रत्येक कुशल कलाकार अपने कार्य को प्रदर्शित करने में, तथा उसके अपनी कल्पना और योजना के अनुसार कार्य करने में, तथा उसके वांछित परिणाम देने में गर्व महसूस करता है।

इस प्रकार, इनमें से प्रत्येक सिद्धांत एक मौलिक नियम है जो पूरे ब्रह्मांड और मानव जाति की दुनिया में काम करता है। तीन उदाहरण जो इन नियमों को प्रदर्शित करते हैं, उनके दिव्य नामों में भी कार्य हैं।

बत्तीसवें वचन के तीसरे चरण में समझाया गया है। चूँकि यहाँ उनका सारांश देना उचित है, इसलिए हम निम्नलिखित कहेंगे:

उदाहरण के लिए, अपने जन्मजात उच्च गुणों से प्रेरित होकर, एक अत्यंत दयालु, उदार, दानशील, नेकदिल व्यक्ति गरीब और जरूरतमंद लोगों को एक बड़े जहाज पर चढ़ाता है, उन्हें बड़े-बड़े भोज और उपहारों से संतुष्ट करता है, और उनके साथ दुनिया भर के समुद्रों में यात्रा करता है। यह परोपकारी व्यक्ति ऊपर की स्थिति से अपने मेहमानों को खुशी से देखता है, इन जरूरतमंद लोगों की संतुष्टि और कृतज्ञता से प्रसन्न होता है, और गर्व महसूस करता है।

यदि कोई मनुष्य, जो कि मात्र वितरण अधिकारी के समान है, किसी विशेष भोज के आयोजन में इतना आनंद और प्रसन्नता महसूस करता है, तो निम्नलिखित बातों पर विचार करें: सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर ईश्वर ने सभी जानवरों और मनुष्यों और असंख्य जिन्नों, फ़रिश्तों और अन्य प्रकार के आध्यात्मिक प्राणियों को पृथ्वी के जहाज़ पर चढ़ाया है, जो उसकी व्यापक दया का एक जहाज़ है; वह पृथ्वी को उनके सामने अपने प्रभु की मेज़ के रूप में फैलाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के भोजन और ऐसी चीज़ें लदी हुई हैं जो उनकी सभी इंद्रियों को तृप्त करेंगी; वह इन ज़रूरतमंद, आभारी, कृतज्ञ और प्रसन्न प्राणियों को ब्रह्मांड के क्षेत्रों में ले जाता है। उन्हें केवल इन नेमतों से इस दुनिया में खुश करने से संतुष्ट नहीं होकर, वह अपनी जन्नत के प्रत्येक शाश्वत बाग़ को शाश्वत राज्य में अनंत भोजों की मेज़ भी बनाता है। इस प्रकार, यह उनके प्रभुत्व या उनके आवश्यक दिव्य गुणों की अभिव्यक्तियाँ हैं, जिन्हें "पवित्र खुशी", "पवित्र गर्व" और "पवित्र आनंद" जैसे पदनामों के माध्यम से इंगित किया जाता है - वे अभिव्यक्तियाँ जो उन प्राणियों के धन्यवाद, कृतज्ञता, खुशी और प्रसन्नता से उत्पन्न होती हैं, और हम वास्तव में उनका वर्णन करने में असमर्थ हैं - जो ब्रह्मांड में निरंतर गतिविधि और अविराम रचनात्मकता को आवश्यक बनाती हैं।

एक और उदाहरण: यदि एक कुशल कारीगर एक ग्रामोफोन बनाए, जिसके लिए किसी रिकॉर्ड की आवश्यकता न हो और वह ठीक वैसे ही बजे जैसा वह चाहता है, तो उसे कितना गर्व और प्रसन्नता होगी, और वह अपने आप से कहेगा, "क्या आश्चर्य है भगवान की इच्छा; जो कुछ और जिस तरह से वह चाहता है वह अस्तित्व में आता है!" यदि कला का एक तुच्छ कार्य, जो बिना किसी सृजन के बनाया गया है, कारीगर की आत्मा में इस तरह के गर्व और खुशी की भावना पैदा करता है, तो निम्नलिखित पर विचार करें:

सभी प्राणियों के सर्वज्ञ निर्माता ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक दिव्य ऑर्केस्ट्रा तथा एक अद्भुत, अद्भुत कार्यशाला की तरह बनाया है जो असंख्य गीत तथा स्तुति, महिमा का सृजन करती है; वह सभी प्रजातियों, सभी लोकों का प्रदर्शन करता है; यह ब्रह्माण्ड में कला के विभिन्न चमत्कारों तथा शिल्पकला की विभिन्न शैलियों के माध्यम से होता है। वह न केवल सजीव प्राणियों के मस्तिष्क में, जिसमें सबसे छोटा भी शामिल है, ग्रामोफोन, कैमरा या टेलीग्राफ की तरह काम करने वाली मशीनों का एक सेट बनाता है, बल्कि वह सभी मनुष्यों के मस्तिष्क में न केवल एक ग्रामोफोन बनाता है जो बिना रिकार्ड के बजता है, एक कैमरा बिना लेंस के, एक टेलीग्राफ बिना तार के, बल्कि एक ऐसी मशीन बनाता है जो कई गुना अधिक अद्भुत है। इसलिए यह उसकी प्रभुता या उसके आवश्यक गुणों की वही अभिव्यक्तियाँ हैं जिन्हें "पवित्र अभिमान" और "पवित्र आनंद" नामों से पुकारा जाता है जो उसके द्वारा ऐसी मशीनों के निर्माण तथा उनके संचालन से उत्पन्न होती हैं।

जिस तरह से वह चाहता है, उसी तरह कार्य करना, जो परिणाम वह चाहता है, उसे उत्पन्न करना, जिसके लिए यह निरंतर क्रियाशीलता आवश्यक है।

एक और उदाहरण: यह तथ्य कि एक न्यायप्रिय शासक न्याय को बनाए रखने के लिए उत्पीड़कों से उत्पीड़ितों के अधिकारों को बहाल करने, शक्तिशाली लोगों के गलत कामों से गरीबों की रक्षा करने और सभी को उनका हक दिलाने में प्रसन्नता और संतुष्टि महसूस करता है, शासन और न्याय का एक मौलिक नियम है। इसलिए, निम्नलिखित पर विचार करें:

वह जो सर्वज्ञ शासक है और पूर्ण न्यायी है, वह अपने सभी प्राणियों को, विशेषकर जीवित प्राणियों को, जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ प्रदान करता है, जिन्हें "जीवन के अधिकार" के रूप में जाना जाता है; वह उन्हें उनके जीवन के संरक्षण के लिए आवश्यक क्षमताएँ और अंग प्रदान करता है; वह शक्तिशाली लोगों की बुराई से कमज़ोरों की दयापूर्वक रक्षा करता है; अपने न्याय की आवश्यकता के अनुसार, वह अपने प्रत्येक प्राणी को उसका हक देता है और गलत काम करने वालों को दण्ड देता है। इसके अलावा, उसका पूर्ण न्याय परलोक में सर्वोच्च न्यायाधिकरण में पूरी तरह से साकार होगा।

अतः, यह उनके प्रभुत्व के सभी निष्पादन और उनके आवश्यक गुणों की अभिव्यक्तियाँ हैं, जैसा कि उल्लेख किया गया है, जो ब्रह्मांड में निरंतर गतिविधि को आवश्यक बनाते हैं।

इस प्रकार, जैसा कि इन तीन उदाहरणों से पता चलता है, सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रत्येक सर्व-सुंदर नाम इस निरंतर क्रियाकलाप में कुछ पवित्र दिव्य आवश्यक गुणों की अभिव्यक्ति के लिए साधन हैं और वे निरंतर रचनात्मकता की मांग करते हैं। और प्रत्येक योग्यता और क्षमता विकास, उत्कर्ष और परिणामों की प्राप्ति के माध्यम से आनंद, सुख और उल्लास प्रदान करती है; प्रत्येक व्यक्ति जिसे कोई कर्तव्य सौंपा गया है, जब कर्तव्य पूरा हो जाता है और वे उससे मुक्त हो जाते हैं, तो उसे राहत और खुशी की बड़ी अनुभूति होती है।

एक बीज से अनेक फल प्राप्त करना तथा एक वस्तु से सौ गुना लाभ प्राप्त करना सबसे अधिक आनन्ददायक व्यापार है। इसी प्रकार, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर परमेश्वर सभी प्राणियों की असंख्य क्षमताओं का विकास करता है, तथा सभी प्राणियों को मूल्यवान कार्यों में नियोजित करके उन्हें मुक्त करता है। बल्कि, वह उन्हें उच्चतर पदों पर पहुंचाता है, तत्वों को खनिजों के स्तर तक, खनिजों को वनस्पति जीवन के स्तर तक, पौधों को उनकी आवश्यकता बनाकर पशु जीवन के स्तर तक तथा पशुओं को मानव चेतना जीवन के उच्च स्तर तक पहुंचाता है।

जब कोई जीवित प्राणी अपने बाह्य या भौतिक अस्तित्व के साथ संसार से विदा लेता है (जैसा कि चौबीसवें पत्र में बताया गया है), तो वह अपने अस्तित्व के अन्य प्रकारों को पीछे छोड़ जाता है, जैसे उसकी आत्मा, प्रकृति, रूप, उसके जीवन के सभी उदाहरण जो आदर्श रूपों की दुनिया में सन्निहित हैं, उसका अस्तित्व

मन और दिव्य ज्ञान, उसके सूक्ष्म शरीर और उसकी आत्मा के आवरण में। इस प्रकार, दिव्य प्रभुता द्वारा रचनात्मकता और दिव्यता के इन सभी कार्यों से यह समझा जा सकता है कि दिव्य प्रभुता के पवित्र अर्थ कितने महत्वपूर्ण हैं जो उसके कार्यों से उत्पन्न होते हैं।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

गुमराह लोगों का एक समूह कहता है कि जो निरंतर क्रियाशीलता से ब्रह्माण्ड को बदलता और रूपान्तरित करता है, वह स्वयं भी परिवर्तनशील होगा।

उत्तर : भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे! यह तथ्य कि पृथ्वी पर सूर्य को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण बदलते हैं, यह नहीं दर्शाता है कि आकाश में सूर्य भी बदलता है, बल्कि, इसके विपरीत, यह दर्शाता है कि उसके मानव-रूपों का नवीनीकरण हो रहा है। इसके अलावा, परिवर्तन और परिवर्तन सर्व-पवित्र दिव्य सत्ता के लिए अकल्पनीय हैं, जो शाश्वत, स्थायी, पूर्ण रूप से परिपूर्ण, आत्मनिर्भर और हर चीज में पूरी तरह से स्वतंत्र हैं, जो समय या स्थान में निहित होने के कारण सम्मान की तरह पदार्थ, प्रतिबंध और आकस्मिकता से पूरी तरह मुक्त हैं। ब्रह्मांड में परिवर्तन उनके बदलने को नहीं बल्कि उनके परिवर्तन या परिवर्तन से पूरी तरह मुक्त होने को दर्शाता है। क्योंकि, जो निरंतर असंख्य चीजों को सही क्रम में चलाता या बदलता है, उसे स्वयं भी अपरिवर्तित होना चाहिए और हिलना नहीं चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप बड़ी संख्या में आप एक गेंदों को घुमाते हैं जो एक दूसरे से धागे के टुकड़ों से बंधी हुई हैं और उन्हें एक क्रम में लगातार घुमाते हैं, तो यह आवश्यक है कि स्थान पर रहें और हिलें नहीं, अन्यथा आप क्रम को नष्ट कर देते हैं। यह स्पष्ट है कि जो व्यक्ति वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से चलाता है, उसे स्वयं नहीं चलाना चाहिए, और जो व्यक्ति वस्तुओं को बिना रुके बदलता रहता है, उसे स्वयं भी अपरिवर्तित रहना चाहिए, ताकि ये क्रियाएं व्यवस्थित रूप से जारी रह सकें।

दूसरा: परिवर्तन और बदलाव सृजन से, और पूर्णता प्राप्त करने के लिए नवीनीकरण की आवश्यकता से, आवश्यकता से, और भौतिक और आकस्मिक होने से उत्पन्न होते हैं। चूँकि सर्व-पवित्र सत्ता शाश्वत है, और हर दृष्टि से पूर्णतया परिपूर्ण और पूर्णतया आत्मनिर्भर और स्वतंत्र है, साथ ही वह पदार्थ से पूरी तरह मुक्त है, और अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, इसलिए निश्चित रूप से परिवर्तन और बदलाव उसके लिए अकल्पनीय हैं।

पांचवी किरण

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला

यदि हम स्वयंभू नाम (जिससे सब कुछ चलता है) की सर्वव्यापक अभिव्यक्ति देखना चाहते हैं, तो हम अपनी कल्पना को दो दूरबीनों में बदल सकते हैं जो पूरे ब्रह्मांड का निरीक्षण कर सकती हैं। इन दो दूरबीनों में से एक दूरबीन सबसे दूर की वस्तुओं को दिखाएगी, जबकि दूसरी दूरबीन सबसे सूक्ष्म कणों को। हम पहली दूरबीन से देखते हैं और पाते हैं कि स्वयंभू नाम (जिससे सब चलता है) की अभिव्यक्ति से, पृथ्वी से हजारों गुना बड़े लाखों गोले या तारों में से कुछ को ईथर नामक पदार्थ में स्पष्ट रूप से स्थिर बना दिया गया है, जो हवा से भी सूक्ष्म है, जबकि अन्य को स्पष्ट रूप से उनके कर्तव्य के रूप में यात्रा करने के लिए बनाया गया है।

इसके बाद हम दूसरी दूरबीन से देखते हैं, जो कल्पना की सूक्ष्मदर्शी है, ताकि हम सूक्ष्म कणों को देख सकें। यह फिर से ईश्वरीय नाम से ही है जो स्वयंभू है (जिसके द्वारा सभी जीवित हैं) कि सांसारिक प्राणियों के शरीर बनाने वाले कण या परमाणु सितारों की तरह एक व्यवस्थित स्थिति लेते हैं, चलते हैं और महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। हम देखते हैं कि विशेष रूप से रक्त में लाल कणिकाएँ और सफ़ेद कणिकाएँ कहलाती हैं, जो सूक्ष्म कणों से बनी होती हैं, ग्रहों की तरह, मावलवी (मेवलेवी) दरवेशों की तरह दो सुव्यवस्थित गतियों के साथ चलती हैं।

सारांश: छः दिव्य नामों से निर्मित पवित्र प्रकाश को देखने के लिए, जिसकी सर्वव्यापक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो प्रकाश के सात रंगों की तरह सामंजस्यपूर्ण संयोजन बनाते हैं, उपरोक्त सभी व्याख्याओं का सारांश बनाना उचित है। यह इस प्रकार है:

स्वयंभू ईश्वरीय नाम की सर्वव्यापक अभिव्यक्ति से परे देखो, जो ब्रह्मांड में सभी प्राणियों को धारण करता है और उन्हें स्थायित्व और निरन्तरता प्रदान करता है: सर्वजीव नाम की सर्वव्यापक अभिव्यक्ति ने सभी जीवों को प्रज्वलित किया है और ब्रह्मांड को प्रकाशित किया है। यह नाम अपनी अभिव्यक्ति से सभी जीवों को चमका देता है।

अब फिर से देखो: सर्व-जीवित नाम से परे, सर्व-स्वतंत्र, एक नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति में संपूर्ण ब्रह्मांड अपने सभी तत्वों और भागों के साथ एकता में शामिल है। यह प्रत्येक प्राणी के माथे पर एकता की मुहर लगाता है। यह प्रत्येक प्राणी के चेहरे पर एकता की मुहर लगाता है। इस नाम की अभिव्यक्ति अनगिनत भाषाओं द्वारा घोषित की गई है।

और अब उस सर्वज्ञ नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति पर विचार करें जो उस सर्व-स्वतंत्र, एकल नाम से परे है: इसमें वे सभी प्राणी सम्मिलित हैं जिन्हें हम परमेश्वर की दो दूरबीनों के माध्यम से देखते हैं।

कल्पना, सितारों से लेकर कणों तक, चाहे सार्वभौमिक हो या विशेष प्रकृति की, सबसे बड़े क्षेत्र से लेकर सबसे सूक्ष्म तक, एक फलदायी क्रम, बुद्धिमान नियमितता और प्रत्येक के लिए उपयुक्त उद्देश्यपूर्ण सामंजस्य में। यह सभी प्राणियों को सुशोभित और चमकाता है।

फिर सर्वज्ञ नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति से परे देखें: अपनी सर्वव्यापी अभिव्यक्ति के माध्यम से, जिसे दूसरे भाग में समझाया गया था, सर्व-न्यायकर्ता नाम संपूर्ण ब्रह्मांड को उसके सभी प्राणियों के साथ निरंतर क्रियाशील रखता है, ऐसे संतुलन, साम्य और माप के साथ कि यदि आकाशीय पिंडों में से कोई एक भी क्षण के लिए अपना संतुलन खो दे, अर्थात यदि वह सर्व-न्यायकर्ता नाम की अभिव्यक्ति से मुक्त हो जाए, तो यह तारों में अराजकता पैदा कर देगा और यह प्रलय के दिन जैसा होगा। इस प्रकार, इस अभिव्यक्ति से घिरे और शासित, सभी प्राणी और प्राणियों के सभी विभिन्न क्षेत्र, तारों की सेना से लेकर सूक्ष्म कणों की सेना तक, आकाशगंगा के रूप में जानी जाने वाली सबसे बड़ी आकाशगंगा से लेकर रक्त में लाल और सफेद कणिकाओं की गति के क्षेत्र तक, जो बेहतरीन संतुलन और माप के साथ नियुक्त और स्थापित तरीके से खड़े और चलते हैं, यह प्रदर्शित करते हैं कि वे सभी "हो!" से जारी आदेशों का पालन करते हैं और यह पूरी तरह से अधीनता के साथ होता है ।

अब, सर्व-न्यायमय नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर सर्व-पवित्र नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति पर ध्यान दें, जिसकी व्याख्या प्रथम भाग में की गई थी: यह नाम ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को इतना स्वच्छ, शुद्ध, स्पष्ट, सुन्दर, अलंकृत और प्रकाशमान बना देता है कि इसने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उसमें विद्यमान सभी प्राणियों को सुन्दर दर्पणों का रूप दे दिया है, जो परम सुन्दरतम के अनन्त सारभूत सौन्दर्य और उसके सर्व-सुन्दर नामों के योग्य और उपयुक्त हैं।

संक्षेप में, इन छह महानतम नामों या दिव्य महानतम नाम के छह प्रकाशों या सर्वव्यापी अभिव्यक्ति वाले नाम ने ब्रह्मांड और सभी प्राणियों को हमेशा अलग-अलग और विभिन्न रंगों, कढ़ाई और अलंकरण के साथ चमकदार आवरणों में लपेटा है।

दूसरा मामला

जिस प्रकार स्वयंभू ईश्वरीय नाम (जिससे सभी जीवित हैं) का सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक भव्य प्रकटीकरण है, उसी प्रकार इसका मानव पर भी एक अनुग्रहपूर्ण, विशिष्ट प्रकटीकरण है, जो ब्रह्माण्ड का केन्द्र, धुरी और चेतन फल है। इस प्रकार मनुष्य एक ईश्वर बन जाता है।

वह दर्पण जिसमें ईश्वरीय नाम की समग्र अभिव्यक्ति पूरे ब्रह्मांड में प्रतिबिंबित होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह से ईश्वर के स्वयंभू होने के प्रकटीकरण से ब्रह्मांड अस्तित्व में है, जिसके द्वारा सभी अस्तित्व में हैं, उसी तरह से यह भी एक तरह से अस्तित्व में है क्योंकि मनुष्य स्वयंभू नाम की अभिव्यक्ति के लिए एक आदर्श माध्यम है। चूँकि ब्रह्मांड के अस्तित्व में अधिकांश ज्ञान, लक्ष्य, उद्देश्य और लाभ मानवता से संबंधित हैं, ऐसा लगता है जैसे कि पूरे ब्रह्मांड में ईश्वरीय स्वयंभू की अभिव्यक्ति ब्रह्मांड के लिए एक आधार है।

वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर ईश्वर ने मानवता के लिए ब्रह्मांड के अस्तित्व की इच्छा की और इसलिए इसे मानवता के लिए बनाया। क्योंकि, अपनी प्रकृति की व्यापकता के कारण, मानवता दिव्य नामों को समझ सकती है और उनके प्रकटीकरण का अनुभव कर सकती है। विशेष रूप से, यह प्रावधान में मिलने वाले आनंद के माध्यम से असंख्य दिव्य नामों को समझ सकता है। लेकिन फ़रिश्ते उस आनंद के माध्यम से उन्हें नहीं जान सकते।

मानव प्रकृति की इस महत्वपूर्ण व्यापकता के परिणामस्वरूप, मानवता को अपने सभी नामों के प्रकटीकरण का अनुभव कराने और उसकी सभी प्रकार की कृपाओं का स्वाद चखाने के लिए, सर्व-जीवित और स्वयंभू ईश्वर ने मनुष्य को भूख वाला पेट दिया है, जिसके लिए उसने पृथ्वी की मेज को अपने असंख्य प्रकार के भोजन से भरपूर कर दिया है। उसने जीवन को भी जैविक पेट की तरह एक पेट बनाया है, और उसके लिए कृपाओं की एक विशाल मेज बिछा दी है। अपनी इन्द्रियों के माध्यम से, जीवन उस मेज से अनेक प्रकार के लाभ उठाता है और सभी प्रकार से धन्यवाद देता है।

जीवन के पेट के अलावा उसने मनुष्य को मानवता का पेट भी दिया है, जो जीवन से भी व्यापक क्षेत्र में प्रावधान और उदारता की मांग करता है। मानो इस पेट, बुद्धि, मन और कल्पना के हाथ दया की मेज से लाभ उठाते हैं, जो आकाश और पृथ्वी के समान व्यापक है, और धन्यवाद देते हैं।

और जीवन के पेट के अलावा, एक और असीम रूप से विशाल मेज़बान को फैलाने के लिए, उसने इस्लामी विश्वास के सिद्धांतों और इस्लामी जीवन के सिद्धांतों को एक अमूर्त पेट की तरह बनाया है, जिसे बहुत ज़्यादा भोजन की ज़रूरत होती है। उसने इसकी मेज़ को आकस्मिकता के दायरे से परे फैलाया है और इसमें ईश्वरीय नामों को शामिल किया है। इस प्रकार, इस पेट के माध्यम से, मानवता दयालु और सर्वज्ञ नामों को भोजन की सबसे बड़ी खुशी के रूप में देखती है और कहती है, "सभी प्रशंसा ईश्वर की है क्योंकि वह दयालु और सर्वज्ञ है!" और इसी तरह। मनुष्य लाभ उठा सकते हैं

इस विशाल अमूर्त पेट के माध्यम से असीम दिव्य उपहारों से। और इस पेट द्वारा प्रदान किए गए दिव्य प्रेम का आनंद एक और क्षेत्र है।

इस प्रकार, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर ने मानवता को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का केन्द्र और धुरी बनाया है; उसके सामने ब्रह्माण्ड के समान व्यापक वरदानों की एक तालिका बिछा दी है, और ब्रह्माण्ड को उसके अधीन कर दिया है। इसका कारण और ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का कारण-

इस श्लोक को एक दृष्टि से इस बात पर निर्भर बनाया गया है कि मानवता ईश्वरीय आत्म-निर्भरता की अभिव्यक्ति का दर्पण है, तथा मानवता के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं:

पहला है मानवता के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई सभी कृपाओं की व्यवस्था। सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर परमेश्वर उन्हें मानवता के लाभ की डोरी पर ऐसे व्यवस्थित करता है जैसे प्रार्थना की माला एक धागे पर होती है; कृपाओं की डोरी के सिरे हमारे सिर से बंधे होते हैं, इस प्रकार मानवता को उसकी दया के सभी प्रकार के खजानों की सूची की तरह बनाते हैं।

मानवता का दूसरा महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि, अपनी व्यापक प्रकृति के कारण, मानवता को सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर का सबसे उत्तम संबोधनकर्ता बनना चाहिए; उसकी अद्भुत कलाओं की सराहना के साथ, मानवता को उसकी कलाओं का सबसे जोरदार उद्घोषक बनना चाहिए; सभी प्रकार के सचेतन धन्यवाद के माध्यम से, मानवता को उसकी स्तुति करनी चाहिए और उसकी सभी प्रकार की कृपाओं और उसके उपहारों के असीम प्रकारों के लिए धन्यवाद देना चाहिए।

मानवता का तीसरा कर्तव्य यह है कि वह अपने जीवन के माध्यम से तीन मामलों में अपने आवश्यक गुणों और सर्वव्यापी विशेषताओं के साथ सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर एक के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करे।

पहला पहलू : अपनी स्वयं की मौलिक नपुंसकता के माध्यम से, मानवता अपने सृजनकर्ता की पूर्ण शक्ति को समझती है, और अपनी नपुंसकता की डिग्री के माध्यम से, मानवता उसकी शक्ति की अभिव्यक्ति की डिग्री को समझती है।

मानवता अपनी स्वयं की पूर्ण गरीबी के माध्यम से, उसकी अभिव्यक्ति की डिग्री के साथ उसकी दया को समझती है, और मानवता की अपनी कमजोरी के माध्यम से, उसकी शक्ति, इत्यादि को समझती है। संक्षेप में, अपने स्वयं के दोषपूर्ण गुणों के माध्यम से, मानवता एक दर्पण है जो निर्माता के गुणों के लिए माप की एक इकाई की तरह है।

पूर्णता। जिस तरह से रात में प्रकाश अधिक चमकीला दिखाई देता है और रात का अंधेरा बिजली के प्रकाश को प्रदर्शित करने के लिए एक आदर्श दर्पण है, उसी तरह मानवता भी अपने स्वयं के दोषपूर्ण गुणों के माध्यम से दिव्य पूर्णता के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करती है।

दूसरा पहलू : मानवता अपनी आंशिक इच्छा, अल्प ज्ञान, अल्प शक्ति और प्रत्यक्ष स्वामित्व के माध्यम से अपना घर बनाती है और उसका स्वामित्व रखती है। यह इससे निष्कर्ष निकालती है और ब्रह्मांड की विशालता के अनुपात में प्रतिबिंबित करती है।

तथ्य यह है कि ब्रह्मांड के मास्टर बिल्डर के पास कला, इच्छा, शक्ति और ज्ञान है।

तीसरा पहलू: इस संबंध में मानवता के दर्पण के रूप में कार्य करने के दो पहलू हैं:

पहला: यह अपने आप में दिव्य नामों की हमेशा अलग-अलग कढ़ाई को प्रदर्शित करना है। इसे और सरल शब्दों में कहें तो, अपनी व्यापक प्रकृति के कारण, मानवता ब्रह्मांड की एक छोटी सी अनुक्रमणिका और लघु नमूने की तरह है और इस प्रकार सभी दिव्य नामों की कढ़ाई को प्रदर्शित करती है।

दूसरा पहलू: मानवता दैवी गुणों के दर्पण के रूप में कार्य करती है।
अर्थात्, जिस प्रकार मानवता अपने जीवन के माध्यम से सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर के जीवन को इंगित करती है, उसी प्रकार, अपनी स्वयं की इंद्रियों के माध्यम से, जैसे कि श्रवण और दृष्टि, जो उसके जीवन के दौरान विकसित होती हैं, मानवता सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर के श्रवण और दृष्टि जैसे गुणों को ज्ञात करने के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करती है।

इसके अलावा, जीवन के दौरान खुद को प्रदर्शित करने वाली असंख्य इंद्रियों, भावनाओं और भावनाओं के माध्यम से, जो विकसित नहीं होती हैं, बल्कि संवेदनशीलता के रूप में उबलती हैं, मानवता भी सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर व्यक्ति के पवित्र आवश्यक गुणों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करती है। उदाहरण के लिए, प्यार या गर्व, प्रसन्नता, खुशी और उल्लास जैसी भावनाओं के माध्यम से, मानवता इस तरह के सर्व-पवित्र व्यक्ति के गुणों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करती है, जो उनकी पवित्रता और उनकी पूर्ण स्वतंत्र आत्मनिर्भरता के लिए उपयुक्त और योग्य हैं।

इसके अलावा, अपने व्यापक जीवन के माध्यम से सर्वशक्तिमान के गुणों और आवश्यक गुणों को पहचानने के लिए माप की इकाई होने के साथ-साथ उनके नामों के प्रकटीकरण का एक सूचकांक और एक सचेत दर्पण होने के अलावा, मनुष्य ब्रह्मांड की सच्चाइयों के लिए माप की एक इकाई, एक सूचकांक, एक पैमाना और एक संतुलन भी है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति की स्मृति ब्रह्मांड में सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के अस्तित्व का अत्यंत निर्णायक प्रमाण है और उसका एक नमूना है; कल्पना की मानवीय क्षमता अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण है।[150] और सूक्ष्म

---

[150] दरअसल, मनुष्यों में मौजूद तत्व ब्रह्मांड के तत्वों को दर्शाते हैं, और उनकी हड्डियाँ उसके पत्थर और चट्टानें, उनके बाल उसके पौधे और पेड़, और उनके शरीर में बहने वाला रक्त और उनकी आँखों, कानों, नाक और मुँह से निकलने वाले तरल पदार्थ पृथ्वी के झरने और खनिज जल आदि को दर्शाते हैं। इसी तरह, मनुष्य की आत्मा आत्माओं की दुनिया की ओर इशारा करती है, उनकी स्मृति की क्षमताएँ सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका की ओर, और उनकी कल्पना की क्षमताएँ-

मानवता की शक्तियाँ और क्षमताएँ ब्रह्मांड में आध्यात्मिक प्राणियों के अस्तित्व का प्रमाण हैं और उनका एक उदाहरण हैं। और इसी तरह। एक छोटे से माप में और अवलोकन पर आधारित निश्चितता की डिग्री तक, मानवता ब्रह्मांड में प्रदर्शित विश्वास की सच्चाइयों को इंगित कर सकती है।

इस प्रकार, मानवता बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करती है, जैसे कि ऊपर बताए गए कर्तव्य। मानवता स्थायी दिव्य सौंदर्य का दर्पण है और यह शाश्वत दिव्य पूर्णता की अभिव्यक्ति का माध्यम है और इसका अग्रदूत है। मानवता शाश्वत दिव्य दया के लिए जरूरतमंद और आभारी है।

चूँकि सौंदर्य, पूर्णता और दया शाश्वत और शाश्वत हैं, तो निश्चित रूप से मानवता, जो उस स्थायी सौंदर्य का प्रेमपूर्ण और उत्सुक दर्पण है, उस शाश्वत पूर्णता का प्रेमपूर्ण संदेशवाहक है, और जो उस शाश्वत दया के लिए आभारी और जरूरतमंद है, अंततः एक शाश्वत क्षेत्र में जाएगी ताकि वहाँ स्थायी रूप से रहे और उस शाश्वत सौंदर्य, शाश्वत पूर्णता और शाश्वत दया के साथ अनंत काल तक रहे। क्योंकि एक शाश्वत सौंदर्य एक अस्थायी प्रेमी या नश्वर मित्र से संतुष्ट नहीं हो सकता। चूँकि सौंदर्य खुद से प्यार करता है, इसलिए वह इस प्यार के बदले में प्यार चाहता है।

क्षणभंगुरता और अस्तित्वहीनता में चले जाना ऐसे प्रेम को शत्रुता में बदल देता है। यदि मनुष्य अनंत काल में स्थायी रूप से रहने के लिए नहीं जा रहे होते, तो शाश्वत सौंदर्य के प्रति उनका सहज प्रेम शत्रुता में बदल जाता।

जैसा कि दसवें वचन में एक फुटनोट में वर्णित है, एक खूबसूरत महिला, जिसकी पूरी दुनिया में प्रशंसा की जाती थी, ने अपने प्रेमी को अपने सामने से निकाल दिया। इससे उसका प्यार दुश्मनी में बदल गया और खुद को सांत्वना देने के लिए उसने कहा, “उफ़! वह कितनी बदसूरत है!”, इस तरह उसने उसका अपमान किया और उसकी सुंदरता को नकार दिया।

वास्तव में, जिस तरह मनुष्य उन चीज़ों के प्रति शत्रुतापूर्ण होते हैं जिन्हें वे नहीं जानते, उसी तरह वे शत्रुता में उन चीज़ों में भी दोष खोजने की कोशिश करते हैं जिन्हें वे प्राप्त नहीं कर सकते या जिनके वे स्वामी नहीं हैं। चूँकि, जैसा कि पूरा ब्रह्मांड गवाही देता है, सच्चा प्रियतम और परम सुन्दर परमेश्वर अपने सर्व-सुन्दर नामों के माध्यम से मानवता को स्वयं से प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है और चाहता है कि मनुष्य उससे प्रेम करें, तो निश्चित रूप से वह मानवता में अपने प्रति शत्रुता नहीं पैदा करेगा, जिसे वह प्यार करता है और जिसे वह प्यार करता है, जिससे वे उसके प्रति कटु रूप से नाराज़ हो जाते हैं। वह मानवता की भावना में छिपी हुई शत्रुता भी नहीं पैदा करेगा, क्योंकि यह मानवता की प्रकृति के बिल्कुल विपरीत होगा, जिसे उसने अपने असाधारण, सबसे प्यारे प्राणी के रूप में बनाया है और जिसे उसने उससे प्रेम करने के लिए बनाया है। मानव के लिए-

---

आदर्श रूपों की दुनिया में प्रवेश, इत्यादि। प्रत्येक मानव अंग और क्षमता एक अलग दुनिया को इंगित करती है और उसी के अस्तित्व का निर्णायक साक्ष्य देती है।

यह केवल उन गहरे घावों को ठीक करने में सक्षम होगा जो उस परम सौंदर्य से अनंत काल तक अलग होने से उत्पन्न हो सकते हैं जिसे वे शत्रुता के माध्यम से प्यार करते हैं और सराहना करते हैं, इसके प्रति नाराजगी रखते हैं और इसे अस्वीकार करते हैं। यह इस वजह से है कि अविश्वासी ईश्वर के दुश्मन हैं। इसलिए, मानवता के साथ संगति रखने के लिए, जो अनंत काल के रास्ते पर उसका प्यारा दर्पण है, वह शाश्वत सौंदर्य निश्चित रूप से मानवता को एक स्थायी निवास में एक स्थायी जीवन के साथ अनुग्रहित करेगा।

चूँकि मानव को स्थायी सौन्दर्य से प्रेम करने तथा उसकी गहरी अभिलाषा करने की प्रकृति के साथ सृजित किया गया है; और चूँकि स्थायी सौन्दर्य एक अस्थायी प्रेमी से संतुष्ट नहीं हो सकता; और चूँकि, किसी ऐसे लक्ष्य से उत्पन्न होने वाले दु:ख और पीड़ा से सांत्वना पाने के लिए, जिसे वे नहीं जानते या जिसे प्राप्त नहीं कर सकते या जिसे अपना नहीं सकते, मानवता उस लक्ष्य में दोष ढूंढ़ कर या उसके प्रति गुप्त शत्रुता का पोषण करके स्वयं को आश्वस्त करती है; और चूँकि ब्रह्माण्ड मानवता के लिए सृजित किया गया है तथा मानवता ईश्वर को जानने और उससे प्रेम करने के लिए सृजित की गई है; और चूँकि ब्रह्माण्ड का रचयिता, अपने नामों सहित, शाश्वत है; और चूँकि उसके नामों की अभिव्यक्तियाँ शाश्वत रहेंगी, तो सबसे अधिक निश्चित रूप से मानवता स्थायित्व के एक ऐसे क्षेत्र में जाएगी जहाँ उसे स्थायी जीवन का वरदान प्राप्त होगा।

पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो सर्वोच्च मार्गदर्शक और पूर्ण, सार्वभौमिक मानव हैं, ने अपने और अपने धर्म में मानवता के मूल्य और सभी पूर्णता और कर्तव्यों को सबसे पूर्ण रूप में जाना और प्रदर्शित किया है, जिन्हें हमने ऊपर समझाया है। यह दर्शाता है कि जिस तरह ब्रह्मांड मानवता के लिए बनाया गया है, उसी तरह मानवता और मानवता के सबसे अच्छे और सबसे मूल्यवान सदस्य के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा लक्ष्य और उद्देश्य और एकमात्र और हमेशा के लिए सभी के लिए इसका सबसे शानदार दर्पण अहमद मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

उन पर और उनके परिवार पर कृपा हो तथा उनके समुदाय के सभी अच्छे कर्मों पर शांति हो।

हे ईश्वर! हे दयालु! हे दयालू! हे सर्व-निर्भर, अद्वितीय! हे सर्व-जीवित! हे स्वयं-निर्भर जिससे सब जीवित हैं! हे सर्वज्ञ! हे सर्व-न्यायप्रिय! हे सर्व-पवित्र! हम तुझसे सत्य और असत्य की बुद्धिमतापूर्ण कसौटी, कुरान के लिए, और तेरे परमप्रिय के प्रति आदर के लिए, और तेरे सुन्दर नामों के लिए, और तेरे सर्वव्यापी नाम के प्रति आदर के लिए प्रार्थना करते हैं-

हमें शारीरिक, दुष्ट आत्मा की बुराई से, शैतान से, और शैतानी जिन्न और मनुष्यों की बुराई से बचाने के लिए, प्रकट होने के लिए प्रेरित करें। आमीन।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

एक प्रार्थना

O हे मेरे प्रभु!
मैं ईमान की आँखों से, और कुरान की शिक्षा और प्रकाश से, और ईश्वर के सबसे महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षा से देखता हूँ, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और मार्गदर्शन हो।

उस सर्वज्ञ दिव्य नाम का उपदेश है कि:

आकाश में ऐसी एक भी हलचल नहीं है जो यह संकेत न देती हो कि आपका अस्तित्व अपनी व्यवस्थितता के माध्यम से;

ऐसा एक भी खगोलीय पिंड नहीं है जो बिना शोर के अपने कर्तव्यों का पालन करके और बिना सहारे के खड़े होकर आपके प्रभुत्व और एकता का संकेत या गवाही नहीं देता है;

ऐसा एक भी तारा नहीं है जो अपनी सर्वाधिक आनुपातिक संरचना, सुस्पष्ट क्रमबद्ध स्थिति, उज्ज्वल मुखाकृति, या अन्य सभी तारों से समानता के माध्यम से आपकी एकता और आपकी दिव्यता की भव्यता को इंगित या प्रमाणित न करता हो;

बारह ग्रहों में से एक भी ऐसा नहीं है जो आपकी परम आवश्यक सत्ता की गवाही न देता हो, न ही अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण गति, आपके नियमों के प्रति आज्ञाकारी अधीनता, व्यवस्थित कर्तव्यों और महत्वपूर्ण उपग्रहों के माध्यम से आपकी दिव्यता के प्रभुत्व का संकेत देता हो।

वास्तव में, जैसे सभी निवासियों के साथ स्वर्ग में से प्रत्येक आपके पूर्णतः आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है, वैसे ही हे स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता, वे भी अपनी समग्रता के साथ आपके अस्तित्व की पूर्णतः आवश्यकता की गवाही देते हैं, और हे वह जो सभी कणों या परमाणुओं को उनके द्वारा निर्मित यौगिकों के साथ नियंत्रित करता है, और जिसने सभी ग्रहों को अपने अधीन कर लिया है।

वे उसकी आज्ञा से, अपने उपग्रहों के साथ परिक्रमा करते हुए, आपकी एकता और एकरूपता की इतनी शक्तिशाली गवाही देते हैं कि आकाश में जितने तारे हैं, उतने ही प्रकाशमान प्रमाण उनकी गवाही की पुष्टि करते हैं।

अपने असाधारण विशाल शरीरों के साथ, जो असाधारण गति से चलते हैं, ये शुद्ध आकाश एक सुव्यवस्थित सेना और बिजली के दीपों से प्रकाशित आतिशबाजी के उत्सव का दृश्य प्रदर्शित करते हैं। वे स्पष्ट रूप से आपके प्रभुत्व की महिमा और आपकी शक्ति की भव्यता को इंगित करते हैं, जो सब कुछ आविष्कार करते हैं; वे आपके प्रभुत्व के असीम विस्तार को इंगित करते हैं, जो सभी स्वर्गों पर शासन करता है, और आपकी दया को, जो सभी जीवित प्राणियों को गले लगाती है; वे निश्चित रूप से आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति की गवाही देते हैं, जो स्वर्गीय प्राणियों के सभी कार्यों और स्थितियों में प्रवेश करती है और उन्हें नियंत्रित करती है, और आपकी बुद्धि की व्यापकता की गवाही देते हैं। यह गवाही और संकेत इतना स्पष्ट है कि ऐसा लगता है जैसे तारे स्वर्ग की गवाही के शब्द और उनके मूर्त प्रकाशमान प्रमाण हैं।

जहाँ तक सितारों का सवाल है, जो आज्ञाकारी सैनिकों, सुव्यवस्थित जहाजों, असाधारण विमानों और आश्चर्यजनक दीपों का आभास देते हैं, वे आपकी दिव्यता के प्रभुत्व की महिमा को प्रदर्शित करते हैं। जैसा कि सूर्य, जो सितारों की सेना का एक सदस्य है, हमारे ग्रह और उसके अन्य उपग्रहों में जो कर्तव्य निभाता है, उससे पता चलता है कि सूर्य के कुछ मित्र तारे परलोक की दुनियाओं से संबंध रखते हैं, और वे उन दुनियाओं के सूर्य हो सकते हैं जो स्थायी हैं।

हे अनिवार्यतः अस्तित्ववान, हे एकल, अद्वितीय!

वे अद्भुत तारे, वे लुभावने सूर्य और चंद्रमा आपके आदेश, शक्ति, नियम और प्रबंधन के माध्यम से आपके स्वर्ग में आपके अधीन, आदेशित और विभिन्न कर्तव्यों के साथ सौंपे गए हैं। वे सभी खगोलीय पिंड उस एकमात्र निर्माता की महिमा करते हैं जिसने उन्हें बनाया है, जो उनका प्रशासन करता है, और उन्हें घुमाता है; वे उसकी महिमा करते हैं, और अपने स्वभाव की जीभ से कहते हैं, "आप सर्व-महिमावान हैं," "ईश्वर सर्व-महान है।" मैं भी उनकी महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करता हूँ।

हे सर्वशक्तिमान महात्म्य, जो इरादे के कारण छिपे हुए हैं-
वह अपनी अभिव्यक्ति के कारण अदृश्य है और अपनी महानता के कारण गुप्त है!

मैंने कुरान की शिक्षा और निर्देशों के माध्यम से यह समझा है कि
ईश्वर के सबसे महान् रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - का कथन है कि:

जिस प्रकार आकाश अपने सभी तारों के साथ मिलकर आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देता है, उसी प्रकार वायुमंडल भी आपकी पूर्णता की गवाही देता है।

बादलों, बिजली, गड़गड़ाहट, हवा और बारिश के माध्यम से अस्तित्व और एकता को प्रकट करना इस प्रकार है:

वास्तव में, यह केवल आपकी दया और बुद्धि से ही संभव है कि निर्जीव और अचेतन बादल, जरूरतमंद प्राणियों की सहायता के लिए, वर्षा, जो कि जीवन का जल है, भेजता है; इसमें संयोग का तनिक भी योगदान नहीं है।

इसके अलावा, बिजली सबसे चमकदार और सबसे शक्तिशाली होने के कारण, हमें इसके प्रकाश देने के गुण के कारण इससे लाभ उठाने का आग्रह करती है, बिजली स्वर्ग में आपकी शक्ति पर प्रकाश डालती है।

इसके अतिरिक्त, वर्षा के आगमन का शुभ समाचार देने वाली गड़गड़ाहट विशाल आकाश को बोलने के लिए विवश कर देती है, तथा उसकी महिमा का गरजता हुआ स्वर आकाश में गूंज उठता है, तथा अपनी स्वभावगत जिह्वा से आपको सर्व-पवित्र घोषित करता है, तथा आपके समस्त सृष्टि के स्वामी होने की गवाही देता है।

फिर, जीवों को उनकी सबसे ज़रूरी खुराक पहुँचाने और उन्हें साँस लेने और तरोताज़ा करने जैसे कई काम सौंपे जाने पर, हवाएँ वातावरण को कुछ दिव्य उद्देश्यों के कारण मिटाने और पुष्टि करने वाली एक तरह की पट्टिका में बदल देती हैं। जिस तरह वे आपकी शक्ति की गतिविधियों को इंगित करती हैं और आपके अस्तित्व की गवाही देती हैं, उसी तरह बारिश भी, जो दया की मूर्त है और आपकी दया के माध्यम से जीवों पर भेजी जाती है, अपनी व्यवस्थित बूंदों के माध्यम से आपकी दया और स्नेह की व्यापकता की गवाही देती है।

हे सर्वदा सक्रिय रहने वाले, जो सब कुछ नियंत्रित करते हैं, और हे सर्वोपरि, प्रचुर वरदानों के दाता!

जैसे बादल, गरज, हवा और बारिश प्रत्येक स्वतंत्र रूप से आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं, वैसे ही वे एक-दूसरे की सहायता करके और अपनी प्रकृति के अंतरों के बावजूद एक साथ मौजूद रहकर, आपकी एकता और एकरूपता को शक्तिशाली रूप से इंगित करते हैं। वे आपके प्रभुत्व की महिमा की भी गवाही देते हैं, जो विशाल आकाश को असाधारणता का प्रदर्शन बनाती है और कुछ दिनों में इसे कई बार भरती और खाली करती है, और आपकी शक्ति की महानता और व्यापकता की भी, जो वायुमंडल का उपयोग पुष्टि के मिटाने की पटिया और एक स्पंज के रूप में करती है जिसके माध्यम से आप पृथ्वी के बगीचे को सींचते हैं, और आपकी दया और प्रभुत्व की असीम विशालता और सर्वव्यापी प्रकृति की, जो सभी प्राणियों को गले लगाती है और उनका पालन-पोषण करती है।

वायु का उपयोग ऐसे बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों में तथा बादलों और वर्षा का उपयोग ऐसे ज्ञान-आधारित लाभों के लिए किया जाना चाहिए, जिनके लिए सर्वांगीण सहयोग की आवश्यकता होती है।

आपकी बुद्धि और सर्वव्यापी ज्ञान से यह प्रदर्शित होता है कि यह रोजगार आपकी बुद्धि या ज्ञान के बिना किसी भी तरह से संभव नहीं है।

हे वह जो सदैव अपनी इच्छा से कार्य करता है!

आपकी शक्ति, जो पुनरुत्थान के नमूनों को लगातार वातावरण में प्रदर्शित करने, ग्रीष्म को शीत में बदलने तथा ग्रीष्म को शीत में बदलने, तथा एक नये संसार को उत्पन्न करने तथा एक अन्य को अदृश्य लोक में भेजने जैसे कार्य एक घंटे के भीतर ही करती है, संसार को परलोक में बदलने तथा उसमें आपकी अनंत क्रियाशीलता को प्रदर्शित करने के संकेत देती है।

हे सर्वशक्तिमान महामहिम!

वायु, बादल, वर्षा और वायुमंडल में गड़गड़ाहट आपके आदेश और आपकी शक्ति के द्वारा आपके अधीन और कर्तव्यपरायण हैं।

वे वायुमण्डलीय प्राणी, जो स्वभाव में भिन्न हैं, तुझे परम पवित्र, सेनापति और प्रभु घोषित करते हैं, जो उन्हें तुरन्त और शीघ्र आज्ञाओं का पालन करवाता है, और वे तेरी दया की प्रशंसा करते हैं।

हे आकाशों और धरती के सर्वशक्तिमान रचयिता!

तेरे ज्ञानपूर्ण क़ुरआन की शिक्षा और परम आदरणीय रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शिक्षा से, मैं ईमान लाया हूँ और जानता हूँ कि आगे क्या है:

जिस प्रकार आकाश अपने तारों के माध्यम से, तथा वायुमंडल अपने तत्वों के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की परम आवश्यकता की गवाही देता है, उसी प्रकार पृथ्वी भी अपने सभी प्राणियों और परिस्थितियों के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देती है।

पृथ्वी पर कोई भी परिवर्तन नहीं है, न ही कोई परिवर्तन - चाहे सार्वभौमिक या विशेष प्रकृति का - इसके पेड़-पौधों और जानवरों में, जैसे कि हर साल उनके वस्त्र बदलना, आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देता है।

ऐसा एक भी प्राणी नहीं है जो आपकी सत्ता और एकता की गवाही नहीं देता, क्योंकि उसे दयापूर्वक, उसकी आवश्यकता और कमजोरी के अनुपात में पोषण दिया जाता है, तथा उसे जीवन के लिए आवश्यक अंगों से बुद्धिमानीपूर्वक सुसज्जित किया जाता है।

भी , ऐसा एक भी पौधा या पशु नहीं है जो हर बसंत में हमारी आंखों के सामने पुनर्जीवित या उत्पन्न होता है, जो अपनी उल्लेखनीय कला, उत्कृष्ट अंगों, विशिष्ट विशेषताओं तथा अपनी संरचना और जीवन में उत्तम क्रम और अनुपात के माध्यम से आपको ज्ञात नहीं कराता।

ये सभी पौधे और जानवर जो आपकी शक्ति के चमत्कार के रूप में पृथ्वी पर छाये हुए हैं, पूर्ण विभेदन और समृद्ध अलंकरण के साथ बनाए गए हैं, और इनमें कोई दोष या खामी नहीं है, ये अंडे या बीज एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और लगभग एक ही पदार्थ से बने हैं। उनके सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व, एकता, बुद्धि और असीम शक्ति के प्रति उनकी गवाही ऐसी है कि यह सूर्य के प्रति प्रकाश की गवाही से भी अधिक शक्तिशाली और चमकदार है।

इसके अलावा, कोई भी तत्व, जैसे कि वायु, जल, प्रकाश, अग्नि या मिट्टी, ऐसा नहीं है जो आपकी सत्ता और एकता की गवाही नहीं देता है, क्योंकि वह अपनी अचेतनता के बावजूद पूर्ण चेतना की आवश्यकता वाले कर्तव्यों का पालन करता है, या अदृश्य के खजाने से सभी प्रकार के पूर्ण रूप से विकसित फलों और फसलों को लाता है, भले ही वे एक विशाल क्षेत्र में फैले हों या उस पर आक्रमण कर रहे हों।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, हे सर्वज्ञ, सर्व खोलने वाले, हे सर्वकार्य करने वाले, सर्वसृजक!

जिस प्रकार पृथ्वी अपने सभी निवासियों के साथ यह साक्ष्य देती है कि उसका रचयिता अनिवार्यतः अस्तित्वमान है, उसी प्रकार हे एकमेव एवं अद्वितीय, हे सर्वदयालु एवं सर्वकल्याणकारी, हे सर्वदाता एवं सर्वप्रदाता, अपने मुख पर अंकित छाप के माध्यम से तथा अपने निवासियों के मुख पर अंकित छापों के माध्यम से, तथा उनके स्वामी के रूप में आपके नामों के संकेन्द्रित प्रकटीकरणों के माध्यम से, जो विशाल वितरण के बावजूद उनके सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व एवं पारस्परिक सहायता का कारण बनते हैं, पृथ्वी भी इस पर उपस्थित प्राणियों की संख्या के प्रति आपकी एकता एवं एकरूपता की साक्ष्य स्वयं-स्पष्ट रूप से देती है।

साथ ही, यह तथ्य कि लाखों पौधे और पशु विभाग जो वैश्विक सेना का निर्माण करते हैं जो पृथ्वी पर डेरा डाले हुए हैं और अभ्यास कर रहे हैं, उन्हें प्रत्येक के लिए आवश्यक सटीक सदस्यों या उपकरणों के साथ सही क्रम में प्रदान किया जाता है, आपके आधिपत्य की भव्यता को दर्शाता है और यह दर्शाता है कि आपकी शक्ति एक ही समय में सभी को नियंत्रित करती है। इसी तरह, यह आपकी दया और प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है कि असंख्य जीवित प्राणियों को दयालुता और उदारता से सरल मिट्टी से समय पर उनका पोषण प्रदान किया जाता है, और वे सभी आपके आधिपत्य के आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हैं।

इसके अलावा, यह केवल सर्वव्यापी ज्ञान और सर्व-प्रशासक बुद्धि के माध्यम से ही संभव है कि प्राणियों के सभी समूह और मृत्यु और जीवन के सभी उदाहरण पृथ्वी पर एक-दूसरे के पीछे पूर्ण सुव्यवस्था के साथ चलते रहें, और सभी पौधे, पेड़ और जानवर एक-दूसरे के अधीन रहें।

इतनी पूर्णता से और नियमित रूप से। यह स्पष्ट रूप से आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति को इंगित करता है।

इसके अलावा, यद्यपि मनुष्यों को असीमित कर्तव्य सौंपे गए हैं और उन्हें ऐसी क्षमता और उपकरण प्रदान किए गए हैं मानो वे पृथ्वी पर अनंत काल तक रहने वाले हैं, और यद्यपि उन्हें सांसारिक प्राणियों को आदेश देने और नियंत्रित करने की अनुमति है, वे पृथ्वी पर बहुत ही कम समय तक रहते हैं। इसलिए, उन्हें दिया गया इतना बड़ा महत्व, और उनके लिए किया गया इतना असीमित व्यय, और उन पर देखी गई दिव्य प्रभुता की ऐसी असीम अभिव्यक्तियाँ, और सर्व-महिमावान के ऐसे अंतहीन संबोधन, और उन्हें प्रदान की गई ऐसी अनंत दिव्य कृपाएँ निश्चित रूप से इस दुनिया के इस क्षणभंगुर बैरक पर इस संक्षिप्त, क्षणभंगुर, दर्दनाक और विपत्तिग्रस्त जीवन या वैश्विक सेना के इस अस्थायी शिविर के लिए नहीं हो सकती हैं। बल्कि, चूँकि वे अनिवार्य रूप से एक और शाश्वत जीवन और दूसरे, शाश्वत क्षेत्र में स्थायी खुशी के लिए हो सकते हैं, वे संकेत देते हैं, वास्तव में, अनंत काल के क्षेत्र में दूसरी दुनिया की कृपाओं की गवाही देते हैं।

हे सभी चीज़ों के निर्माता!

पृथ्वी के सभी प्राणी आपकी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान, इच्छा और बुद्धि के अधीन हैं और आपके द्वारा शासित हैं, जो आपकी संपत्ति है। और आपकी प्रभुता - सृजन, रखरखाव, प्रावधान, पालन और प्रशासन - जिसकी गतिविधियाँ पृथ्वी पर देखी जाती हैं, ऐसी विशालता और व्यापकता प्रदर्शित करती हैं, और इस प्रभुता का प्रशासन, प्रावधान और पालन-पोषण इतना परिपूर्ण और संवेदनशील है, और इसके कार्य और संचालन ऐसी एकता, समानता और समन्वय प्रदर्शित करते हैं, कि यह स्पष्ट रूप से एक अविभाज्य और सार्वभौमिक प्रभुता है। इसके अलावा, अपने सभी निवासियों के साथ और अनगिनत भाषाओं के माध्यम से जो मानव मौखिक भाषणों से अधिक स्पष्ट हैं, पृथ्वी अपने निर्माता की महिमा करती है और उसे सर्व-पवित्र घोषित करती है, और उसकी असीम कृपाओं की जीभ के माध्यम से, यह अपने सर्व-प्रदाता महामहिम की प्रशंसा करती है।

हे परम पवित्र, जो अपने पुरुषार्थ की तीव्रता के कारण छिपे हुए हैं-
उसकी महानता के कारण यह सब छिपा हुआ है!

पृथ्वी द्वारा की गई आपकी महिमा और आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के साथ, मैं घोषणा करता हूँ कि आप किसी भी दोष, नपुंसकता या साझेदार से सर्वथा ऊपर हैं, और मैं आपकी स्तुति करता हूँ तथा उनकी सभी स्तुतियों के साथ आपको धन्यवाद देता हूँ।

हे भूमि और समुद्र के स्वामी!

मैंने कुरान की शिक्षा और महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा के माध्यम से यह समझा है कि जिस तरह आकाश, वायुमंडल और पृथ्वी आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, उसी तरह नदियाँ, झरने और जलधाराएँ भी आपके अस्तित्व और आपकी एकता की पूर्ण आवश्यकता की स्पष्ट रूप से गवाही देती हैं।

वास्तव में, ऐसा एक भी प्राणी नहीं है, यहाँ तक कि समुद्रों में पानी की एक भी बूँद नहीं है, जो आश्चर्यों का स्रोत है और भाप के बॉयलरों के समान है, जो अपने अस्तित्व, व्यवस्था, स्थिति और अपने द्वारा होने वाले लाभों के माध्यम से अपने निर्माता को ज्ञात नहीं कराती है।

अद्भुत प्राणियों में से, जिनका पोषण साधारण रेत या साधारण जल द्वारा होता है, या समुद्री जीव जो अत्यंत व्यवस्थित ढंग से सृजित होते हैं, या विशेष रूप से, मछलियाँ जो समुद्र में निवास करती हैं और जिनमें से प्रत्येक दस लाख अंडे देती है, ऐसा एक भी सदस्य नहीं है जो अपने सृजनकर्ता का संकेत न देता हो या अपनी रचना, कर्तव्यों, प्रशासन, रखरखाव और प्रावधान के माध्यम से अपने प्रदाता की गवाही न देता हो।

इसके अतिरिक्त, समुद्र में एक भी ऐसा बहुमूल्य या अलंकृत पदार्थ नहीं है, जिसकी विशिष्ट विशेषताएँ हों, जो अपनी सुन्दर और आकर्षक रचना या अपने लाभकारी गुण के माध्यम से आपको ज्ञात न कराता हो।

ऊपर बताए गए सभी जीव आपकी व्यक्तिगत रूप से गवाही देते हैं। साथ ही, यद्यपि वे बहुत ही विविधतापूर्ण और बड़ी संख्या में मौजूद हैं और सभी एक दूसरे के साथ मिश्रित हैं, फिर भी उनकी सहज रचना और उनकी रचना द्वारा प्रदर्शित एकता की छाप आपकी एकता की गवाही देती है। इसके अलावा, पृथ्वी अंतरिक्ष में लटकी हुई है और सूर्य के चारों ओर बहुत तेज गति से चक्कर लगाती है, बिना इसकी भूमि या समुद्र एक दूसरे से मिले या इसके समुद्र भूमि पर आक्रमण करें।

इसके अलावा, इसके सभी खनिज, पदार्थ, और समुद्री और स्थलीय जीवन अच्छी तरह से निर्मित और अत्यंत विविध हैं; ये साधारण पानी या मिट्टी से बनाए गए हैं और उन सभी प्राणियों का प्रशासन और पालन-पोषण पूरी तरह से और पूर्ण व्यवस्था में किया जाता है। इसके अलावा, उनके अत्यधिक प्रचुर अस्तित्व और इस तथ्य के बावजूद कि हर दिन अनगिनत संख्या में लोग मरते हैं, उनमें से कोई भी शव लंबे समय तक पृथ्वी या समुद्र में नहीं रहता है, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी और समुद्र दोनों का चेहरा हमेशा साफ और शुद्ध रहता है। तो, इन सभी स्पष्ट तथ्यों के माध्यम से, पृथ्वी अपने प्राणियों की संख्या आपके अस्तित्व और इस बात की गवाही देती है कि आप

अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी हैं। जिस तरह से ये सभी प्राणी स्पष्ट रूप से आपके प्रभुत्व के वैभव और आपकी शक्ति की विशालता को इंगित करते हैं, जो सभी चीजों को शामिल करती है, वे आपकी दया और प्रभुत्व की असीम व्यापकता को भी इंगित करते हैं, जो

ऊपर आकाश में अत्यंत विशाल तारों से लेकर समुद्र की तलहटी में छोटी मछलियों तक सब कुछ अपने में समाहित कर लेते हैं। साथ ही, अपने उत्तम संगठन और व्यवस्थित अस्तित्व और जीवन के माध्यम से, तथा उनके द्वारा दिए जाने वाले लाभों और उनके द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धिमत्ता के उदाहरणों के माध्यम से, और उनकी सुसंगठित संरचना और संयोजन के माध्यम से, वे आपके सर्वव्यापी ज्ञान और सर्वव्यापी बुद्धि का संकेत देते हैं।

इस संसार रूपी अतिथिगृह में यात्रियों के लिए आपकी दया के ऐसे-ऐसे कुंड हैं और आपने इन कुंडों को उनके लाभ के लिए तथा उन्हें जहाजों पर यात्रा करने के लिए वश में कर लिया है। इससे यह संकेत मिलता है कि ये कुंड, समुद्र, उस ईश्वर के उपहारों के बहुत छोटे और क्षणभंगुर नमूने मात्र हैं, जो अपने अतिथियों को, जो अनंत काल के मार्ग पर स्थित उस अतिथिगृह में केवल एक रात ठहरते हैं, ऐसे असंख्य समुद्री उपहार प्रदान करते हैं - वह निश्चित रूप से अपने प्रभुसत्ता के शाश्वत क्षेत्र में समुद्रों के ऐसे शाश्वत खजाने रखते हैं। इस प्रकार, भूमि के चारों ओर समुद्रों को इस असाधारण ढंग से रखना और प्राणियों का अद्भुत रखरखाव स्वतः-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वे आपकी आज्ञा के अधीन हैं और वे विशेष रूप से आपके क्षेत्र में हैं और केवल आपकी इच्छा, शक्ति और शासन के माध्यम से नियंत्रित होते हैं।

इन सभी तथ्यों की भाषा के माध्यम से, वे आपको अपने निर्माता के रूप में सर्व-पवित्र घोषित करते हैं और कहते हैं, "ईश्वर सर्व-महान है।"

हे सर्वशक्तिमान महामहिम! आपने पृथ्वी के जहाज के लिए पर्वतों को खजाने से भरे मस्तूलों के समान बनाया है!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) की शिक्षा और कुरान की शिक्षाओं से यह समझा है कि जिस तरह समुद्र आपको पहचानते हैं और अपने चमत्कारों के माध्यम से आपको पहचानते हैं, उसी तरह पहाड़ भी आपको पहचानते हैं और अपने अस्तित्व में बुद्धिमत्ता के उदाहरणों और अपनी सेवाओं के माध्यम से आपको पहचानते हैं। उदाहरण के लिए, वे धरती की सेवा करते हैं, इसे ठोस बनाए रखते हैं और इसके भीतर तूफानी हलचलों के बावजूद इसकी स्थिरता को बनाए रखते हैं और समुद्र के आक्रमण से भी वे विचलित नहीं होते। वे हानिकारक गैसों से हवा को शुद्ध करते हैं, पानी को संग्रहीत और संरक्षित करने का काम करते हैं और जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक खनिजों और धातुओं के भंडार के रूप में कार्य करते हैं।

वास्तव में, पहाड़ों में पाए जाने वाले चट्टानों या कीमती पत्थरों में से एक भी वहां नहीं है, या उन असंख्य प्रकार के पदार्थों में से एक भी नहीं है जो औषधि या औषधि के घटक के रूप में उपयोग किए जाते हैं, या उन अत्यंत विविध प्रकार के खनिजों या धातुओं में से एक भी नहीं है जो जीवित प्राणियों के लिए, विशेष रूप से मानवता के लिए, या उन पौधों और पेड़ों की किस्मों में से एक भी नहीं है जो पहाड़ों को सुशोभित करते हैं-

मैदान, मैदान और खेत अपने फूलों से, अपने फलों से समृद्ध बनाते हैं - इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो स्पष्ट रूप से एक असीम रूप से शक्तिशाली, दयालु और उदार निर्माता के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता की गवाही नहीं देता है, उनके ज्ञान, बढ़िया व्यवस्था और संरचना, बढ़िया सृजन, लाभ और फलों के स्वाद की अत्यधिक विविधता या नमक, साइट्रिक एसिड, कुनैन सल्फेट या फिटकरी जैसे खनिजों के उदाहरणों के माध्यम से, उनकी स्पष्ट समानता के बावजूद। इसके अलावा, अपनी अत्यधिक विविधता और बहुविध फूलों और फलों के माध्यम से निर्माता की गवाही देने के अलावा, सरल, एकसमान मिट्टी में उगने और एक ही, साधारण पानी से पोषित होने के बावजूद, पेड़ और फूल भी अपने प्रशासन, रखरखाव, उत्पत्ति, आवास, सृजन और कला की एकता के माध्यम से, और उनके महान मूल्य के बावजूद उनकी प्रचुरता और सस्तेपन के माध्यम से, और उनके निर्माण की आसानी और गति के माध्यम से, प्रत्येक कला का एक चमत्कार होने के बावजूद उनकी एकता और एकरूपता की गवाही देते हैं।

इसके अलावा, यह तथ्य कि दुनिया भर के पहाड़ों की संरचना लगभग एक जैसी है, और यह कि सभी प्रकार और प्रजातियों के प्राणी एकदम सही ढंग से, बिना किसी दोष के, एक ही तरह से, थोड़े समय में, किसी अन्य प्रकार या प्राणियों के साथ किसी भी भ्रम के बिना या एक काम के दूसरे काम में बाधा डाले बिना बनाए गए हैं, आपकी महिमा और आपकी शक्ति की विशालता को इंगित करते हैं, जिसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। इसके अलावा, पहाड़ पौधों, पेड़ों और खनिजों की विशाल किस्मों से भरे हुए हैं जो असंख्य प्रकार के जीवित प्राणियों की अंतहीन जरूरतों और उनके विभिन्न स्वाद और भूख को संतुष्ट करते हैं, और उनकी असंख्य बीमारियों के लिए आवश्यक दवाओं की व्यवस्था करते हैं, आपकी दया की असीम व्यापकता और आपके प्रभुत्व की अनंत विशालता को इंगित करते हैं। यद्यपि इन सभी पौधों और पेड़ों और सभी खनिजों के बीज अंधेरे में जमीन के नीचे छिपे हुए हैं और सभी एक दूसरे के साथ मिश्रित हैं, वे पूर्ण क्रमबद्धता और विशाल ज्ञान और सर्वव्यापी दृष्टि के आधार पर उगाए और तैयार किए गए हैं। ये सभी तथ्य आपके ज्ञान की व्यापकता को दर्शाते हैं, जो सब कुछ को अपने में समाहित करता है, और आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाते हैं, जो सब कुछ को पूरी तरह से व्यवस्थित करती है। इसके अलावा, औषधियों की तैयारी और उनमें खनिजों और धातुओं के जमाव के माध्यम से, पहाड़ स्पष्ट रूप से आपके प्रभु के दयालु और उदार कार्यों की सुंदरता और आपकी परोपकारिता की सावधानीपूर्ण सूक्ष्मताओं को दर्शाते हैं।

पुनः, आपने इन विशाल पर्वतों को इस अतिथिगृह में अपने आगन्तुक अतिथियों की भावी आवश्यकताओं के लिए आपूर्ति का भली-भाँति निर्मित गोदाम बना दिया है।

दुनिया और मेहमानों के जीवन के लिए महत्वपूर्ण कई खजानों का पूरी तरह से व्यवस्थित भंडार, वास्तव में, इस तथ्य की गवाही देता है कि एक निर्माता इतना उदार और मेहमाननवाज़, इतना बुद्धिमान और देखभाल करने वाला, और इतना शक्तिशाली और पालन-पोषण करने वाला निश्चित रूप से इन मेहमानों के लिए अनन्त उपहारों का अनन्त खजाना रखता है, जिन्हें वह एक शाश्वत दुनिया में बहुत प्यार करता है। वहाँ के तारे यहाँ दुनिया में पहाड़ों के कर्तव्यों का पालन करेंगे।

हे सब कुछ पर शक्तिशाली!

पहाड़ आपकी शक्ति, ज्ञान और बुद्धि के द्वारा आपके राज्य में मानवता की सेवा में समर्पित हैं, और इसी प्रकार उनमें रहने वाले प्राणी भी। वे अपने रचयिता की महिमा करते हैं और उसे परम पवित्र बताते हैं, जिसने उन्हें इस प्रकार समर्पित और कर्तव्यपरायण बनाया है।

हे सर्वदयालु सृष्टिकर्ता एवं दयावान प्रभु!

मैंने ईश्वर के महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से यह समझा है कि जिस प्रकार आकाश, पृथ्वी, समुद्र और पर्वत अपने प्राणियों और पदार्थों के माध्यम से आपको पहचानते हैं और आपका परिचय कराते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी पर सभी पेड़-पौधे भी अपने पत्तों, फूलों और फलों के माध्यम से आपको जानते हैं और आपका परिचय कराते हैं।

सभी पौधों और वृक्षों के पत्ते, जो अपने रचयिता को याद करने के लिए आनंदित होकर क्रिया करते हैं, और उनके फूल, जो अपने श्रृंगार के माध्यम से अपने रचयिता के नामों का वर्णन और परिभाषा करते हैं, और उनके फल, जो उसकी दया के प्रकटीकरण के कारण आकर्षक ढंग से मुस्कुराते हैं - इनमें से प्रत्येक पत्ता, फूल और फल अपने उत्तम, असाधारण कलात्मक निर्माण के माध्यम से, और अपने निर्माण में पूर्ण संतुलन और अनुपात के माध्यम से, और उस संतुलन और अनुपात के साथ होने वाले अलंकरण के माध्यम से, और उस अलंकरण में योगदान देने वाली कढ़ाई के माध्यम से, और अलंकरणों में जोड़े गए उत्तम और विभिन्न सुगंधों के माध्यम से, और फलों के विविध स्वादों के साथ-साथ उनकी सुगंधों के माध्यम से, एक असीम दयालु और उदार रचयिता के अस्तित्व की परम आवश्यकता को स्वयं-स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं। इसके अतिरिक्त, उनकी समग्रता में, उनकी रचना में समानता के माध्यम से, और उनके विकास और प्रावधान के बीच संबंध, और उनके अस्तित्व और रखरखाव से संबंधित दिव्य कृत्यों और नामों के बीच संकेन्द्रता, और उनके सैकड़ों हजारों किस्मों के असंख्य व्यक्तिगत सदस्यों के प्रशासन के माध्यम से

किसी भी भ्रम के बावजूद, वे स्पष्ट रूप से उस अनिवार्यतः विद्यमान निर्माता की एकता और एकरूपता के साक्षी हैं।

जिस तरह ये आपके अस्तित्व और आपकी एकता की परम आवश्यकता को प्रमाणित करते हैं, उसी तरह पृथ्वी पर लाखों राष्ट्रों से बने जीवों के समूह के असंख्य सदस्यों का उत्तम और विशिष्ट रखरखाव आपके प्रभुत्व की महिमा और विशिष्टता, और आपकी शक्ति की विशालता को इंगित करता है, जो हर चीज को घेर लेती है और एक फूल की तरह आसानी से वसंत का निर्माण करती है। इसके अलावा, पृथ्वी भर में फैले असंख्य जानवरों और मनुष्यों के लिए उनके भोजन की असंख्य किस्मों के असंख्य पदार्थों की तैयारी आपकी दया की असीम व्यापकता को इंगित करती है; प्रदान करने, प्रशासन करने और बनाए रखने के उन सभी कार्यों के प्रदर्शन में पूर्ण क्रम, और इन कार्यों और उनकी पूर्ति से संबंधित आदेशों के लिए हर चीज, वास्तव में, सभी कणों या परमाणुओं की अधीनता और आज्ञाकारिता निश्चित रूप से आपके प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति को प्रमाणित करती है।

इसी प्रकार, यह तथ्य कि प्रत्येक पत्ते, फूल, फल, जड़, शाखा और टहनियों के अस्तित्व, विकास और रखरखाव से संबंधित जो कुछ भी किया जाता है, वह निश्चित ज्ञान और अंतर्दृष्टि के आधार पर और कई बुद्धिमान उद्देश्यों और लाभों के लिए किया जाता है, स्पष्ट रूप से आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति को इंगित करता है। और ये सभी, उनसे संबंधित कार्यों के साथ, आपकी असीम रूप से परिपूर्ण कला की सुंदरता और आपकी असीम सुंदर उदारता की पूर्णता की प्रशंसा करते हैं।

इसके अलावा, इस अस्थायी अतिथिगृह में पेड़ों और पौधों के हाथों से बहुत ही कम समय में इतने अमूल्य उपहार और उपहार, इतने असाधारण खर्च और इतनी अद्भुत उदारता का प्रदर्शन, वास्तव में इस बात का प्रमाण है कि सर्व-दयालु, शक्तिशाली, उदार ने निश्चित रूप से अपने उन सेवकों के लिए दया के अपने शाश्वत खजाने से अनन्त स्वर्ग के शाश्वत उद्यानों के लिए उपयुक्त फलदार वृक्ष और फूलदार पौधे तैयार किए हैं, जिन पर वह अनन्त राज्य में अनन्त काल तक अनुग्रह करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह कभी नहीं चाहता कि, किसी ऐसे तरीके से जो उसकी इच्छा के विपरीत हो कि वह अपने सभी उपहारों के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करे, उसके प्यारे दोस्तों को यह शिकायत करने का कारण बने कि, "उसने हमें उनका स्वाद चखाया है लेकिन फिर हमें बिना किसी के अनन्त अस्तित्व में भेज दिया है

हमें उनसे भरपूर मात्रा में खाने की अनुमति देता है।" न ही वह अपनी दिव्यता के प्रभुत्व के अनंत मूल्य को कम करना चाहता है या अपने प्यारे दोस्तों को उसकी अंतहीन दया से इनकार करने के लिए मजबूर करना चाहता है, जिससे उनका प्यार दुश्मनी में बदल जाए। दुनिया के सभी फलदार पेड़ और फूलदार पौधे अपने ग्राहकों को दिखाने के लिए अपने शाश्वत समकक्षों के उदाहरण मात्र हैं।

जिस प्रकार पेड़-पौधे आपकी महिमा करते हैं और आपकी स्तुति करते हैं तथा अपने सभी पत्तों, फूलों और फलों के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र बताते हैं, उसी प्रकार ये सभी "शब्द" आपकी परम पवित्रता की घोषणा करते हैं। फल अपनी स्वभावगत भाषा के माध्यम से जो महिमा करते हैं - अर्थात् अपने आकर्षक आकार के माध्यम से, अपने अनेक भिन्न-भिन्न और मनमोहक रंगों के माध्यम से, अपने अनेक प्रकार के खाद्य भागों के माध्यम से, अपने अद्भुत बीजों के माध्यम से तथा पेड़ों या पौधों के हाथों से इस संसार के अतिथिगृह के अतिथियों को अर्पित किए जाने के माध्यम से - वे स्वयं को मौखिक रूप से प्रकट करते हैं।

वे सभी आपकी शक्ति, इच्छा, परोपकार, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र के अधीन हैं, और आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

हे सर्वज्ञ रचयिता, हे दयालु रचयिता, जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण गुप्त हैं तथा अपनी महिमा के कारण गुप्त हैं!

मैं आपको समस्त दोषों, दुर्बलताओं और साझीदारों से सर्वथा ऊपर घोषित करता हूँ, और सभी वृक्षों, वनस्पतियों, उनके पत्तों, फूलों और फलों की आवाजों से आपकी स्तुति करता हूँ; मैं उन सब की संख्या से आपकी स्तुति करता हूँ।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, सर्वज्ञ प्रशासक, सर्व-
दयालु राज्यपाल!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शिक्षा और बुद्धिमान कुरान की शिक्षा से समझा है और विश्वास करता हूँ कि जिस तरह से पौधे और पेड़ आपको पहचानते हैं और आपके सभी पवित्र गुणों और सभी सुंदर नामों को जानते हैं, उसी तरह एक भी जानवर या इंसान नहीं है जो आपके अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता और आपके गुणों की गवाही अपने पूरी तरह से और कलात्मक रूप से बनाए गए शरीरों या उनके उपकरणों के माध्यम से नहीं देता है जो बहुत ही नाजुक और अच्छी तरह से काम करने वाले "उपकरणों" के साथ हैं जिनमें बेहतरीन क्रम और संतुलन है, और उनके सभी आंतरिक और बाहरी अंगों के माध्यम से, जो पूर्ण संवेदनशीलता और व्यवस्थित रूप से काम करने के लिए बनाए गए हैं, और उनके अंग और इंद्रियाँ जो उनके शरीर में पूर्ण संतुलन और व्यवस्था के साथ और अत्यंत महत्वपूर्ण लाभों के लिए स्थापित हैं। क्योंकि यह बिल्कुल असंभव है कि कोई अंधी शक्ति या अचेतन "प्रकृति" या यादृच्छिक संयोग उस कला में भाग ले जो इस हद तक नाजुक और बुद्धिमान है, या उस ज्ञान में जिसके लिए इतनी हद तक देखभाल और चेतना की आवश्यकता है, या उस पूर्ण संतुलन में जो इस हद तक संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण है। जहाँ तक उनके आत्म-निर्माण की बात है, तो यह सौ गुना अधिक असंभव और अकल्पनीय है। क्योंकि उनका आत्म-निर्माण

आवश्यकता है कि उनका प्रत्येक कण या परमाणु एक देवता के समान ज्ञानवान और शक्तिशाली हो, ताकि प्रत्येक कण या परमाणु स्वयं को तथा अन्य सभी परमाणुओं को उनके एक-दूसरे के साथ संबंधों के साथ पूर्णतः जान सके और उनकी रचना कर सके, तथा सभी ब्रह्मांडीय तत्त्व उनके अस्तित्व और संचालन में भागीदार हो सकें।

और उनके प्रशासन और रखरखाव में समग्र रूप से देखी जा सकने वाली एकता, और प्रत्येक प्रजाति के सदस्यों के बीच, साथ ही साथ प्रजातियों के बीच सटीक समानताएं, और उनके निर्माण और पोषण में देखी जाने वाली एकता की छाप, और इस तथ्य में कि उनमें से प्रत्येक के पास आंखें, कान, मुंह, इत्यादि हैं, और प्रत्येक समान लक्ष्यों की ओर निर्देशित है - इनमें से प्रत्येक और एकता के अन्य समान उदाहरण निर्णायक रूप से आपकी पूर्ण एकता की गवाही देते हैं। जिस तरह से आपके सभी नाम ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं, इस प्रकार आपकी एकता को दर्शाते हैं, वे उनमें से प्रत्येक में भी प्रकट होते हैं, आपकी एकता को प्रदर्शित करते हैं।

साथ ही, मानवता की तरह, दुनिया भर में फैली लाखों पशु प्रजातियाँ एक सुव्यवस्थित सेना की तरह सुसज्जित, प्रशिक्षित, आज्ञाकारी और अधीन हैं, और आपके प्रभु की आज्ञाएँ उनके राज्य में पूर्ण सुव्यवस्था में काम करती हैं। जबकि यह दर्शाता है कि आप कितने शानदार हैं, उनकी प्रचुरता के बावजूद उनका अत्यधिक मूल्य, उनकी त्वरित उत्पत्ति के बावजूद उनका उत्तम संयोजन और संगठन, और उनकी आसान रचना के बावजूद उनमें निहित उत्तम, अद्वितीय कला आपकी शक्ति की भव्यता को दर्शाती है। जैसे सूक्ष्म जीव, जो हर जगह मौजूद हैं - पूर्व से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर तक - गैंडे तक, और सबसे छोटी मक्खी से लेकर सबसे बड़े पक्षी तक, उनका सही प्रावधान या पोषण निर्णायक रूप से आपकी दया की अंतहीन व्यापकता को इंगित करता है, वैसे ही उनमें से प्रत्येक बिना किसी दोष के अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करता है; पृथ्वी, वसंत में उनके एकत्रीकरण और पतझड़ और सर्दियों में उनके वियोजन के लिए एक भूमि की तरह काम करती है, आपके प्रभुत्व की असीम विशालता को इंगित करती है।

इसके अलावा, प्रत्येक जानवर को अत्यंत गहन ज्ञान और उत्तम बुद्धि के माध्यम से ब्रह्मांड के एक लघु नमूने की तरह बनाया गया है और इसके किसी भी परमाणु, यौगिक, सदस्य या अंग की नियुक्ति या स्थान निर्धारण में किसी भी भ्रम की अनुमति नहीं दी गई है, एक दूसरे के भीतर और एक दूसरे के साथ जटिल संबंधों में। फिर से, प्रत्येक जानवर को एक अलग शरीर और विशिष्ट विशेषताएं दी गई हैं जिनमें कोई दोष, भ्रम या दोष नहीं है। जैसा कि ये तथ्य जानवरों की संख्या के लिए आपके सर्वव्यापी ज्ञान और आपकी सर्वव्यापी बुद्धि को इंगित करते हैं, वैसे ही प्रत्येक का निर्माण भी इतना कलात्मक और बुद्धिमान है कि यह एक चमत्कार के रूप में उभर सकता है।

कला और ज्ञान का चमत्कार, आपके आधिपत्य की कला की संपूर्ण सुंदरता को दर्शाता है, जिसे आप बहुत प्यार करते हैं और जिसे प्रदर्शित करना चाहते हैं। इसके अलावा, उनके नाजुक पोषण और उनकी जरूरतों और इच्छाओं की संतुष्टि के माध्यम से, वे सभी, विशेष रूप से उनमें से युवा, अंतहीन रूप से आपकी परोपकारिता की चरम सुंदरता को इंगित करते हैं।

हे सर्वदयालु, सर्वकरुणामय, हे सर्वसत्यनिष्ठ!
हे न्याय के दिन के स्वामी!

मैंने आपके महानतम रसूल - जिन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और आपके विवेकपूर्ण कुरान की शिक्षा से निम्नलिखित बातें समझीं:

चूँकि ब्रह्माण्ड का अंतिम परिणाम जीवन है, और जीवन का अंतिम परिणाम आत्मा है, और आत्मा वाले प्राणियों में से अंतिम विकल्प चेतन हैं, और चेतनों में सबसे व्यापक मानवता है; और चूँकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जीवन की सेवा करता है, और जीवित प्राणियों को उनके बीच आत्मा वाले प्राणियों की सेवा करने के लिए संसार में भेजा जाता है और आत्मा वाले प्राणियों को उनके बीच मानवता की सेवा में लगाया जाता है और वे मनुष्यों की सहायता करते हैं; और चूँकि मनुष्य स्वभाव से ही अपने रचयिता से बहुत गम्भीरता से प्रेम करते हैं और उनका रचयिता उनसे प्रेम करता है और हर तरह से उनसे प्रेम करवाता है; और चूँकि मानवता को दी गई क्षमताएँ और अमूर्त क्षमताएँ मुख्य रूप से शाश्वत जीवन की ओर निर्देशित हैं, और उनके हृदय और चेतना अपनी पूरी शक्ति से शाश्वतता की इच्छा करते हैं, और उनकी ज़ुबानें अपने रचयिता से अनंत काल के लिए अंतहीन प्रार्थनाएँ करती हैं; तो निश्चय ही वह जो प्रेम करता है और जिसे बहुत प्रेम किया जाता है, वह उन मनुष्यों को, जिन्हें वह प्रेम करता है और जिनसे वह प्रेम करता है और जिन्हें उसने शाश्वत प्रेम के लिए बनाया है, कभी भी दु:ख नहीं पहुँचाएगा, उन्हें बिना पुनर्जीवन के शाश्वत रूप से मरवाकर, इस प्रकार उनके प्रेम को शाश्वत शत्रुता में परिवर्तित करके। बल्कि, मनुष्य को इस दुनिया में दूसरे लोक में अनंत सुखी जीवन के लिए प्रयास करने और उसे अर्जित करने के लिए भेजा गया है। उन्हें दिव्य नामों की अनंत अभिव्यक्तियाँ प्राप्त होंगी, जिन्हें वे इस क्षणभंगुर, छोटे जीवन में प्रतिबिम्बित करते हैं।

वास्तव में, शाश्वत का वफादार दोस्त शाश्वत होगा, और
शाश्वत का चेतन दर्पण शाश्वत होना चाहिए।

जैसा कि प्रामाणिक पैगंबर परंपराओं से और वास्तविकता और दिव्य बुद्धि, दया और प्रभुत्व की आवश्यकता के अनुसार समझा जा सकता है, जानवरों की आत्माएं भी स्थायी रूप से रहेंगी और उनमें से ऐसे विशेष सदस्य जैसे पैगंबर सुलैमान के हुपु और चींटी, और पैगंबर सालेह की ऊंटनी, उन पर शांति हो, और पैगंबर सालेह के कुत्ते।

गुफा के लोग अपने शरीर और आत्मा के साथ अनन्त दुनिया में जाएंगे,

और प्रत्येक पशु प्रजाति कभी-कभार रोजगार के लिए एकल, प्रतिनिधि निकाय के रूप में अस्तित्व में रहेगी।151

हे सर्वशक्तिमान एवं स्वयंभू!

सभी जीवित प्राणियों, आत्मा-युक्त प्राणियों और चेतन प्राणियों को आपके प्रभु की आज्ञाओं के अधीन बनाया गया है और आपकी शक्ति, इच्छा, प्रशासन, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र में प्रत्येक की प्रकृति के अनुसार कर्तव्य सौंपे गए हैं। उनमें से कुछ को मानवता की सेवा में मानवता की शक्ति और प्रभुत्व के कारण नहीं, बल्कि उनकी कमजोरी और नपुंसकता के कारण रखा गया है। अपने निर्माता की महिमा करके और उसे किसी भी दोष, दोष या साझेदार से ऊपर घोषित करके, उसकी प्रशंसा करके और मौखिक रूप से और अपने स्वभाव की जीभ के माध्यम से उसकी उदारता के लिए उसे धन्यवाद देकर, प्रत्येक अपनी विशेष पूजा करता है।

हे सर्वपवित्र, आप अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण गुप्त हैं और अपनी महिमा के कारण आवृत हैं!

समस्त आत्माधारी प्राणियों की महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के इरादे से मैं कहता हूँ: हे आप, जिन्होंने प्रत्येक जीवित वस्तु को तरल पदार्थ से बनाया है, आप सर्व-महिमावान हैं!

हे समस्त लोकों के स्वामी! हे उन सब के देवता जो आए हैं और जो आने वाले हैं! हे आकाश और लोकों के स्वामी!

मैंने ईश्वर की महानतम शिक्षा को समझा है और उस पर विश्वास करता हूँ

रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर शांति और आशीर्वाद हो, और बुद्धिमान कुरान की शिक्षा इस प्रकार है: जिस प्रकार उनके सभी अंग, भाग और परमाणु, आकाश,

वायुमंडल, पृथ्वी, भूमि और समुद्र, पेड़, पौधे और जानवर आपको पहचानते हैं और आपके अस्तित्व और एकता को इंगित और प्रमाणित करते हैं, उसी प्रकार जीवित प्राणी, जो ब्रह्मांड का सार हैं, और मानव जाति, जो जीवित प्राणियों का सार है, और संत, शुद्ध और पवित्र विद्वान, और पैगंबर आपके अस्तित्व और आपकी एकता और एकता की पूर्ण आवश्यकता के बारे में बताते हैं और उनकी बुद्धि और दिलों के अवलोकन और अनावरण के माध्यम से और उनकी प्रेरणाओं और आध्यात्मिक खोजों के माध्यम से गवाही देते हैं। उनकी गवाही में सैकड़ों अलग-अलग विशेषज्ञ समूहों की सर्वसम्मति की निश्चितता है, जिनके पास बिल्कुल सच्चा, विशेषज्ञ ज्ञान है, और ज्ञान के सैकड़ों प्रसारकों की श्रृंखला है जिन्होंने कभी झूठ नहीं बोला

151 अल-बघावी, मालिम एट-तंज़िल, 3:154; अल-अलुसी, रूह अल-मानी, 15:226। (ट्र.)

वे अपने चमत्कारों, आश्चर्यों और निर्णायक प्रमाणों से जो जानकारी देते हैं, उसे सिद्ध भी करते हैं।

एक बार भी ऐसा नहीं होता कि स्वस्थ हृदयों में ऐसी घटना घटित हो जिसका स्रोत या संबंध उससे हो जो अदृश्य के पर्दे के माध्यम से उन्हें अनुस्मारक प्रदान करता हो जो आपके अस्तित्व, सर्व-पवित्र गुणों, एकता और एकरूपता की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या प्रमाणित न करता हो; एक बार भी ऐसी कोई सच्ची प्रेरणा नहीं है जो उस एक पर ध्यान केंद्रित करती है जो प्रेरणा देता है, एक बार भी ऐसा प्रमाणित पंथ नहीं है जो अनुभव के आधार पर निश्चितता के साथ सभी पवित्र दिव्य गुणों और सभी सुंदर दिव्य नामों की खोज करता है, एक बार भी ऐसा शुद्ध, प्रबुद्ध हृदय नहीं है, जो पैगंबरों और संतों के लिए विशिष्ट है, जो दृष्टि की स्पष्टता के साथ आवश्यक रूप से विद्यमान सत्ता के प्रकाशों को देखता है, एक बार भी ऐसी प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है, जो सत्यनिष्ठ, शुद्ध और संत विद्वानों के लिए विशिष्ट है, जो ज्ञान की निश्चितता के आधार पर, सभी चीजों के निर्माता के आवश्यक अस्तित्व के संकेतों और उनकी एकता के प्रमाणों की पुष्टि करती है - एक बार भी एक भी घटना, एक सच्ची प्रेरणा, एक प्रमाणित पंथ, एक शुद्ध और प्रबुद्ध हृदय या एक प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है जो आपके अस्तित्व, सभी पवित्र गुणों, एकता और एकरूपता की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या प्रमाणित नहीं करती है।

और विशेष रूप से, एक भी ऐसा स्पष्ट चमत्कार नहीं है जो उस महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की ख़बरों की पुष्टि करता हो, जो सभी पैगम्बरों, संतों, पुण्यात्मा और शुद्ध विद्वानों और उन लोगों का नेता, मुखिया और सार है जो सत्यनिष्ठा में सबसे आगे हैं; एक भी ऐसा महान सत्य नहीं है जो उनकी पूर्ण सत्यता को दर्शाता हो; चमत्कारिक व्याख्या की एक भी ईश्वरीय-एकता को प्रदर्शित करने वाली कुरान की एक भी आयत नहीं है, जो सभी पवित्र शास्त्रों और सत्य की पुस्तकों का सार है; और इसमें एक भी पवित्र बात और विश्वास की सच्चाई नहीं है - इन चमत्कारों, सत्यों, आयतों या मामलों में से एक भी ऐसा नहीं है जो आपके अस्तित्व, आपके पवित्र गुणों, नामों, एकता और एकत्व की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या प्रमाणित न करता हो।

साथ ही, जिस तरह से लाखों सत्यवादी लोग हैं जो अपने चमत्कारों के आधार पर आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं-

वे आपके महान् रहस्यों, चमत्कारों और प्रमाणों का भी एक स्वर से उद्घोषणा करते हैं और प्रमाणित करते हैं, जो आपके सर्वोच्च सिंहासन से सम्बन्धित सार्वभौमिक मामलों से लेकर हृदय की सबसे गुप्त घटनाओं और उसकी सबसे गुप्त इच्छाओं और प्रार्थनाओं तक, हर छोटी या बड़ी चीज का पूर्ण ज्ञान और नियंत्रण रखता है; वे आपकी शक्ति की महानता का उद्घोषणा करते हैं,

जो हमारी आंखों के सामने एक साथ और तुरन्त अनगिनत चीजों का आविष्कार करता है, और सबसे बड़ी चीज को भी उतनी ही आसानी से पूरा कर देता है जितनी कि सबसे छोटी चीज को, वह भी एक चीज के दूसरे में बाधा डाले बिना।

अपने चमत्कारों और अन्य प्रमाणों के साथ, ये सभी सत्यवादी आपकी दया की असीम व्यापकता को भी दर्शाते और प्रदर्शित करते हैं, जिसने इस ब्रह्मांड को आत्मा-सम्पन्न प्राणियों और विशेष रूप से मानवता के लिए एक आदर्श महल बनाया है, और जिन्न और मनुष्यों के लिए स्वर्ग और शाश्वत सुख तैयार किया है, और सबसे छोटे प्राणी को भी नहीं भूलता है, और सबसे कमजोर दिल को संतुष्ट करता है। वे आपके प्रभुत्व की असीम विशालता को भी प्रदर्शित करते हैं, जिसने कणों से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्रकार के प्राणियों को अपने अधीन कर लिया है, और उन्हें कुछ कर्तव्य सौंपे हैं, जिससे वे आपकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। इसके अलावा, ये एकमत से आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति को इंगित और प्रमाणित करते हैं, जिसने ब्रह्मांड को एक ब्रह्मांडीय पुस्तक बना दिया है जिसमें ब्रह्मांड में जितने कण और यौगिक हैं, उतनी ही पुस्तकें हैं, और सभी प्राणियों के जीवन के सभी उदाहरणों को प्रकट रिकॉर्ड और प्रकट पुस्तक में दर्ज किया है, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के रजिस्टर हैं; और जो सभी वृक्षों के बीज में उनकी अंतर्वस्तु और कार्यक्रम अंकित करता है, तथा चेतन प्राणियों के संपूर्ण जीवन इतिहास को उनकी स्मृतियों में अंकित करता है। वे निर्णायक रूप से आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति की ओर संकेत करते हैं और उसकी गवाही देते हैं, जो प्रत्येक प्राणी को बुद्धि के अनेक उदाहरण प्रदान करती है, जैसे कि प्रत्येक वृक्ष को उसके फलों की संख्या के अनुसार फल प्रदान करना, और प्रत्येक जीव में उसके अंगों, वास्तव में, उसके यौगिकों और कोशिकाओं के समान ही अनेक लाभ प्रदान करना, और मानव जीभ को स्वादों की संख्या के अनुसार उपकरणों से सुसज्जित करना तथा उसे अनेक कर्तव्य सौंपना। इसके अलावा, वे सर्वसम्मति से संकेत करते हैं और इस तथ्य की गवाही देते हैं कि आपके महिमा और अनुग्रह के नाम, जिनकी अनुकरणीय अभिव्यक्तियाँ इस दुनिया में देखी जाती हैं, अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल ढंग से स्वयं को प्रकट करना जारी रखेंगे; वे इस बात के प्रमाण हैं कि आपके वरदान, जिनके नमूने इस क्षणभंगुर संसार में अनुभव किये जाते हैं, सुख के शाश्वत क्षेत्र में और भी अधिक चमक-दमक के साथ टिके रहेंगे, और इन वरदानों के प्रेमी, जो उन्हें इस संसार में अनुभव करेंगे, वे अनंत काल तक उनके साथ रहेंगे।

साथ ही, आपके वादों और धमकियों के आधार पर, जिन्हें आप बार-बार अपने द्वारा उतारे गए सभी धर्मग्रंथों में दोहराते हैं, जिनमें मुख्य रूप से ज्ञानपूर्ण कुरान भी शामिल है, और आपकी महिमा की गरिमा और आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व पर, और आपकी सभी पवित्र विशेषताओं और शक्ति जैसे आवश्यक गुणों पर भरोसा करते हुए,

दया, अनुग्रह, बुद्धि, महिमा और अनुग्रह, तथा आध्यात्मिक अनावरणों और निरीक्षणों के द्वारा, तथा निश्चित ज्ञान से उत्पन्न विश्वासों के द्वारा, सभी प्रकाशमान आत्माओं वाले पैगम्बर, जिनमें सबसे पहले ईश्वर के सबसे महानतम रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) शामिल हैं, तथा प्रकाशित हृदय वाले संत, तथा प्रबुद्ध बुद्धि वाले शुद्ध, संत विद्वान, सभी जिन्नों और मानव जाति को शाश्वत सुख की खुशखबरी देते हैं, तथा चेतावनी देते हैं कि गुमराह लोगों के लिए नरक है, जबकि वे स्वयं सबसे पहले उस पर विश्वास करते हैं।

हे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, हे दयालु, सर्वकृपालु, हे सर्वदयालु, अपने वचनों में पूर्णतया सत्यनिष्ठ! हे गरिमा, भव्यता और ऐश्वर्य से युक्त सर्वव्यापक!

आप पुनरुत्थान न लाने से असीम रूप से मुक्त और उच्च हैं, जिसका अर्थ होगा आपके इतने सारे सच्चे मित्रों का खंडन करना, आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, आपके पवित्र गुणों और आवश्यक गुणों को नकारना, आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व की निर्णायक आवश्यकताओं को रद्द करना और आपके असंख्य सेवकों की प्रार्थनाओं को अस्वीकार करना जिन्हें आप प्यार करते हैं और जो खुद को आपके लिए बनाते हैं।

आपकी पुष्टि और आज्ञापालन करके आपसे प्रेम किया जाता है। आप पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में अविश्वास और गुमराह करने वाले लोगों की पुष्टि करने से भी असीम रूप से मुक्त और उच्च हैं, जो अविश्वास और अवज्ञा के माध्यम से और आपके वादों में आपका विरोध करके आपकी महानता का अपमान करते हैं, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला करते हैं, आपकी दिव्यता के सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं और आपके आधिपत्य की करुणा का अपमान करते हैं। मैं आपके असीम न्याय, अनुग्रह और दया को ऐसी असीम कुरूपता और गलत से पूरी तरह मुक्त घोषित करता हूँ। मैं इस आयत को पढ़ना चाहता हूँ, वह सर्व-महिमावान है, और पूरी तरह से उच्च है, जो कुछ वे कहते हैं उससे कहीं अधिक ऊँचा है (17: 43), जितनी बार मेरे शरीर में कण हैं। ये आपके सत्यवादी संदेशवाहक और आपके राज्य के संदेशवाहक आपकी दया और कृपा के भण्डार की ओर संकेत करते हैं और स्थायी जगत में आपके सुन्दर नामों के असाधारण सुन्दर प्रकटीकरण की गवाही देते हैं, जिसमें अनुभव की निश्चितता, अवलोकन की निश्चितता और ज्ञान की निश्चितता दोनों शामिल हैं। वे यह भी मानते हैं और दूसरों को भी सिखाते हैं कि आपके नाम की सबसे बड़ी किरण, परम सत्य और नित्य, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और रक्षक है, यह महान है-

पुनरुत्थान का सबसे बड़ा सत्य.

ऐ नबियों के रब और नबियों के बाद सत्यनिष्ठा में सबसे आगे रहने वालों!

आपके ये सभी प्रिय मित्र आपकी आज्ञा, शक्ति, इच्छा, प्रशासन, ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से आपके अधीन और कर्तव्यनिष्ठ हैं। आपकी महिमा, प्रशंसा और आपकी एकता की घोषणाओं और कि आप किसी भी दोष, दोष या साझेदार से ऊपर हैं, के माध्यम से उन्होंने इस दुनिया को स्मरण के सबसे विशाल घर और ब्रह्मांड को पूजा के सबसे विशाल स्थान के रूप में प्रदर्शित किया है।

ऐ मेरे रब, ऐ आसमानों और जहानों के रब! ऐ मेरे पैदा करनेवाले और हर चीज़ के पैदा करनेवाले!

अपनी शक्ति, इच्छा, बुद्धि, प्रभुता और दया के लिए, जो आकाश को उसके तारों समेत और धरती को उसकी सारी सामग्री समेत और सभी प्राणियों को उनकी सारी अवस्थाओं समेत वश में करती है, मेरी शारीरिक आत्मा को मेरे अधीन कर दे और मेरी इच्छाओं को मेरे अधीन कर दे। लोगों के दिलों को केवल कुरान और ईमान की सेवा के लिए रिसाले-ए-नूर के अधीन कर दे। और मुझे और मेरे भाइयों और बहनों को पूर्ण ईमान और एक अच्छा अंत (पूर्ण ईमान के साथ दूसरी दुनिया में जाना) प्रदान कर। दिलों और बुद्धि को रिसाले-ए-नूर के अधीन कर दे, जिस तरह तूने समुद्र को पैगम्बर मूसा के अधीन किया, उन पर शांति हो, जिस तरह तूने आग को पैगम्बर इब्राहीम के अधीन किया, उन पर शांति हो, पहाड़ों और लोहे को पैगम्बर दाऊद के अधीन किया, जिन्न और मनुष्यों को पैगम्बर सुलैमान के अधीन किया, उन पर शांति हो, और सूर्य और चंद्रमा को पैगम्बर मुहम्मद के अधीन किया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

और मुझे और रिसाले नूर के छात्रों को शारीरिक आत्मा और शैतान की बुराई से और कब्र और जहन्नम की यातनाओं से सुरक्षित रख और हमें जन्नतुल फ़िरदौस (स्वर्ग का सर्वोच्च स्तर) में खुशियाँ प्रदान कर! आमीन! आमीन!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

और उनका आह्वान इस प्रकार समाप्त होगा, "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है!"

यदि मैंने यह शिक्षा, जो मैंने जवशनुल कबीर (महान ढाल) से ली है , जो ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की प्रार्थना है, अपने दयालु प्रभु के दरबार में एक चिंतनशील पूजा के रूप में पेश करके गलती की है, तो हे मेरे प्रभु, मैं आपकी दया से प्रार्थना करता हूं कि कुरान और जवशनुल कबीर के लिए मुझे क्षमा करें।

अनुक्रमणिका

ए

'अब्दुल्ला इब्न' उमर, 201-202

'अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, 35, 166, 197-
198, 472

अब्दुर्रहमान, 333-334, 340-345

शांति और खुशी का निवास, 227, 296

अब्राहम (पैगम्बर), 150, 515; परिवार, 36

अबू अली इब्न सीना, 205

अबू बकर सिद्दीक अल-अकबर, 38, 41, 50, 56; पैगम्बर के सबसे करीबी दोस्त, 50

अबू हनीफ़ा (इमाम आज़म), 202 , 367

अबुल-अला अल-मारी, 398

बहुतायत, 268-269; अस्तित्व में, 269

संगत, 184

एडम (पैगंबर), 36, 264, 342, 447

जन्मजात शक्तिहीनता और गरीबी की स्वीकृति, 243 कष्ट, 3, 11, 18, 326, 465

खुशी की उम्र, 35

सहमति, 209; कमी, 216; बिंदु, 212; सांसारिक लोगों का, 210

अहल अल-सुन्ना वल-जमा, 38, 40-42

अहमद इब्न हनबल, 367

अहमद अल-फ़ारूक़ी (इमाम रब्बानी), 64-
65, 73, 333, 472, 474

वायु, 87-88, 91, 113, 173, 176-177, 187, 214, 258, 359, 373, 378, 382-383, 385-386, 412, 429, 431, 448, 489, 499, 501, 504; कण, 379-380

अहमद, हाफ़िज़, 14, 143

'आइशा बिन्त अबी बक्र, 77

'अलाविस, 43-44

सिकंदर महान, 150; सिकंदर मकदूनियाई, 150

अली इब्न अबी तालिब, 35, 38-43, 50-51, 56, 130-131, 166, 205, 472, 475; पैगंबर के परिवार के सामूहिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हुए, 39; शेर

ईश्वर, 43; संतत्व का राजा, 38, 43

अली, हाफ़िज़, 143, 152, 366

रूपक, 127, 130, 148, 476

गठबंधन, 211, 216

भिक्षादान, 144

परोपकारिता, 201, 210; साथियों का, 210

'अम्र इब्न अल-'अस, 41, 48

अराजकता; साम्यवाद के आवरण में शरण लेना, 362; अराजकतावादी, 357

स्वर्गदूत, 12, 28, 36, 71, 88, 97, 110, 112, 127-128, 190, 214, 302, 321, 367, 382-383, 391, 395, 401, 404, 414,

461, 467-468, 486, 491; हाई अस-सभा, 401-402; अज़राएल (मृत्यु का दूत), 112; इसराफ़िल, 190; थंडर का दूत, 190; दिव्य सिंहासन और स्वर्ग के वाहक, 128;

ईगल (नासिर), १२८; फिश (हट), 127-128; बैल (थावर), 127-128; दो महान स्वर्गदूत, 127

पशु; प्रेरणा से संपन्न मधुमक्खी की तरह, 174; आत्मा, 375, 510; सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों की तरह काम करना, 375

अंकारा, xi, 321, 365
विनाश, 229, 233, 271; भाइयों और बहनों में, 229; मार्गदर्शक में, 229; संदेशवाहक में, 229; आपसी, 229

अरब प्रायद्वीप, 49, 386, 393
अरबी, 44, 90, 149, 159-160, 178, 216, 318, 349, 409
अरस्तू, 150
आर्मेनियाई, 216, 344-345
अहंकार, 185, 266
कला; ब्रह्मांड के निर्माता की कृतियाँ, 87, 230, 291, 453, 460; 257; उत्तम कलात्मकता, 269

तप, 50, 197, 308
उदगम, 28
अविश्वासियों और धर्मत्यागियों द्वारा हमले, 145

ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ना, 119, 270, 438-439; गुप्त संगति, 185, 233

खगोल विज्ञान, 83, 86, 92, 127, 129, 440
अटलांटिक महासागर, 50, 148-149; गर्म पानी के झरने जैसा प्रतीत होना, 148-149
सृष्टि जिस आकर्षण का अनुभव करती है भगवान, 417
सुलेमान की चाची, बरला की 299
तपस्या, ix, 308
ऑस्ट्रिया, 329
हागिया सोफिया (हागिया सोफिया), 261, 452
अयेतुल-कुब्रा, 365

बी

शेष, 78, 174, 247, 256, 337, 373, 375, 397, 411, 416, 418-420, 422-423, 430, 432-434, 437, 439-440, 444, 446-447, 454-455, 475, 483, 490, 493, 506, 508; असंतुलन, 434; के प्रकार, 434

बारला, xii, 102, 239, 299-300, 320, 339-341, 343; झील, 102
बरला लाहिका, 340
बासमला, 125, 132-134, 136
बायज़िद मस्जिद, 325-326
बेदिउज्जमां ने नर्सी से कहा; न्यू सेड, xv, 160-161, 178, 240, 246, 321, 331;
ओल्ड सईद, xv, 161, 178, 321;
मधुमक्खी, 174-175, 478
बेकिर बे, 143
बेकिर, हाफ़िज़, 148
विश्वास, ix-x, xiii-xviii, 6, 12, 17, 33, 37, 38, 54, 64, 66, 75, 92, 97-98, 101-102, 106, 108, 113, 115-118, 120, 138, 145-146, 159, 168, 175, 216-217, 225-226, 228-230, 234-235, 240-243, 245-246, 251, 265-266, 272, 275, 277, 281, 285, 295-296, 298-300, 309-310, 314-315, 318, 320, 322-324, 328, 333, 339-343, 345, 347-350, 352-356, 360-363, 365-366, 368-369, 381, 396, 404-405, 429, 431, 438-439, 442, 463, 465, 491, 494, 497, 512, 515; सत्य का संचार, 234; ईश्वर में और ईश्वर के प्रति समर्पण, 308; ईश्वरीय नियति में, 469-470; स्वर्गदूतों में, 467; भविष्यद्वक्ताओं में, 468;

ईश्वरीय नियति और आदेश, 104; अभाव, 100, 103-104; स्तंभ, 104, 382, 461, 464, 474; पंख, 92; अविश्वास, 268

पशुता, 163, 168
धन्य लबादा, 130
बोल्शेविज्म, 241
ब्रह्मांड की पुस्तक; सिद्धांत और कानून, 174

बोस्फोरस, 318, 333
बाउंटी, xvi, 16, 153, 183-185, 195, 197, 200, 304, 350, 375, 383-385, 387, 399, 462-463

पूंजीपति वर्ग, 242; पूंजीपति सरकार, 241

बोज़ोर्गमाहर, 203
ब्रिटिश, xi, 145, 246; पादरी, 246
भाईचारा, 233
बौद्ध धर्म, 49
बर्दुर, xii, 198, 299

सी

विपत्ति, युद्ध, 146
खिलाफत, 38-43, 50, 56, 131, 321;
मार्गदर्शित खलीफा, 38
पूंजी, 163, 183, 218, 277, 290-291, 315, 317, 364, 382, 403, 405,
465; जीवन, 291, 317

कैद, 243, 324, 331, 333-334, 339-
341, 344
मांसाहारी प्राणी; प्रजातियाँ, 375; मांसाहारी पक्षी, 375

काकेशिया, 151
कारण, xiii, 13-14, 37, 52, 54-55, 59, 70, 78, 90, 96-99, 102, 104-106,
109-110, 113-115, 132, 136, 1 14.7 162, 169-170, 177, 180,
183-185, 188, 190, 195-197, 199, 203, 205, 210-

211, 213-217, 219-220, 222, 227-
228, 230, 232, 240-241, 243, 254, 261, 263, 265-266, 277, 279,
285, 291, 295, 298, 301, 304, 306, 308, 316, 324, 335, 349, 356,
364, 374-

377, 380, 387, 389, 393, 395-396, 399, 412-413,
418, 433, 440, 443, 452, 454, 457, 463, 466, 484,
488, 490, 501, 507; कारण-और-प्रभाव संबंध, 263, 396;
ईश्वर द्वारा कारणों और उनके प्रभावों दोनों की रचना-

मिलकर, 264; स्पष्ट, 190, 263; भौतिक, 154, 184, 252,
336; कारण, 395-396

गुफा, 346, 367-368, 398; तपस्वियों की, 367

आकाशीय पिंड, 6, 89-90, 149, 391, 419, 479, 490, 498;
गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण, 89

निश्चय, xvi, 4-5, 49, 51, 101-102, 178, 282, 285, 295, 319,
323, 336, 352, 355, 404, 421, 444, 494, 511-512,
514; विश्वास, xvi, 102; निरपेक्ष, 178, 352, 404, 444;
ज्ञान से आने वाली, 352; अवलोकन से आने वाली, 352

चरित्र, ix, 77-78, 116, 153-154, 278, 369, 389, 420, 503

प्रसव, 301
इस्राएल की सन्तान, 37, 126; भविष्यद्वक्ताओं, 37
चीन, 49, 150-151, 186
ईसाई धर्म, xiv, 49
सभ्यता (आधुनिक), 276, 333; बुराइयाँ, 162, 284

स्वच्छता, 375-376, 428-429, 431-432, 434-435

जलवायु, 87
संयोग, 271
रक्षा भाषणों का संग्रह , 365
सामूहिक बल, 212
सामूहिक व्यक्तित्व; यूरोप का, 162; कमज़ोर का, 216

समितियां, 216, 231, 283, 285; भ्रष्टाचार फैलाना, 283, 285

मुहम्मद समुदाय, 227
साथी; जीवन का, 283; अनन्त, 277; अनन्त जीवन में संगति, 277,
283

साथी, 48-56, 92, 131-132, 140, 147, 201, 210, 310, 367, 445, 458

गुफा के साथी, 367
तुलना, 19, 42, 88, 120, 127, 138, 168, 174, 260, 262, 278, 280, 319,
402, 405, 432, 452-453, 482

करुणा; मातृत्व, 282;
माताएं, 183

प्रतिस्पर्धा; प्रशंसनीय रूप, 219; सद्गुण में, 242; व्यक्तिगत पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा, 234

शिकायत, 16, 112, 202, 204, 283, 297, 305, 389, 462-463; बीमारी को बदतर बनाना, 304

सद्भाव और प्रेम, 212; मतभेद, 147, 209-210, 212-213, 218

संघर्ष, xiv, xviii, 109, 116, 147, 164, 209-210, 220, 254

अर्थ, 86

चेतना, 26, 106, 164, 183, 190, 243, 252-253, 255, 257, 262, 327, 355, 386, 418, 420, 439, 442, 462, 467-469, 501, 508, 510; चेतन प्राणी, 68, 70, 74, 87-88, 214, 265, 375, 382-383, 394, 428, 435, 456, 462-463, 465, 468, 480-481, 511, 513; अमूर्त क्षमताएँ, 257

अंतरात्मा; पीड़ा, 199

सांत्वना, बारहवीं, 245, 289, 302, 306, 314, 317, 320-322, 325-326, 335, 340-
341, 347, 356, 358, 361, 475, 495; का दौरा, 302

नक्षत्र, 129-130; मछली (Pi-sces), 130; बैल (Taurus), 130

संतोष, 119, 195, 197-198, 202-
204, 211, 285, 294, 297, 321, 331, 360, 389, 418

महाद्वीप, 87, 384

बातचीत; निवासियों की
स्वर्ग, 401

ब्रह्माण्ड विज्ञान, 91-92; ब्रह्माण्ड विज्ञानी, 91

अपील न्यायालय, 275

सृष्टि; परदे, 152; अंतिम परिणाम, 242; मक्खियों, 374; शैतानों, 103; कुरूपता, 104; वस्तुओं के निर्माण में असीम सहजता, 268; उत्पत्ति, 418; चरण, 386; पहेली, 481, 482; ईश्वर द्वारा सृष्टि के प्रकार, 272; वृक्ष, 136, 161

रचनात्मकता; एक ही सृष्टिकर्ता को श्रेय देना, 270; प्रकृति को श्रेय देना, 263, 271; भौतिक कारणों को श्रेय देना, 271; स्वयं वस्तुओं को श्रेय देना, 258; सब कुछ एक ही सृष्टिकर्ता को श्रेय देने में असीम सहजता

स्रोत, 270

प्राणियों की पूर्णता, 267; पूर्ण व्यवस्था और ज्ञान के अनंत उदाहरण, 441; पूजा और महिमा, 267

अपराध; अविश्वास और गुमराही, 114

इलाज, दुःख के भीतर, 326

चक्र, संयोजन और अपघटन, 271

पाइन माउंटेन, 320

Ç̦amlıca, पहाड़ी, 333

कैपराज़ादे अब्दुल्ला, 143

डी

दज्जाल (ईसा-विरोधी), 148, 151

दमिश्क, xi, 241

दरबंद, 151

दारुल-हिकमत अल-इस्लामिया, 334

मृत्यु, xiii, 6, 25-26, 50, 65-67, 84-85, 96, 107-108, 112, 117, 144, 163, 165, 167, 172, 178, 228, 230, 244-245, 281, 290-291, 293, 295-296, 298-

301, 308, 310, 320, 325-326, 332-
333, 341-342, 345-349, 354-356, 358, 362-364, 366, 374-375, 393, 397-398, 410, 422, 428, 432-433, 454, 459, 463-464, 483, 501; चिंतन, 230, 308, 326; भय, 108, 172, 296; इनकार, 245

डेविड (पैगंबर), 384, 515

वाद-विवाद; कला, 221

धोखा, 203; शैतान का, 100, 111

देवता, 3-7, 33, 44, 63, 66, 179, 189, 257, 335, 339, 342, 397, 399, 415, 418, 421, 423-424, 441, 459, 473, 509

उद्धार, 146, 218

इनकार, xiii-xiv, 71, 168-169, 266-268, 320, 400, 435, 441

डेनिज़ली, xiii, 357-358, 362-365, 367, 427; कारागार, 357

इच्छाएँ; व्यापकता, 104; छिपी हुई, 247; स्वार्थी, 247

निराशा, xi, 40, 101, 103, 166, 204, 267, 298, 317-318, 322, 326, 329, 351, 366

निरंकुशता; उन्मूलन, 241; अभिजात वर्ग का, 242

भाग्य, xiv, 13, 17, 27, 28, 103-104, 144, 150, 173, 180, 240, 246-247, 253, 255, 259, 261, 269-271, 317, 353, 360, 368, 374, 383, 411, 415-

417, 422-424, 451, 469-470, 474,

४८३; कलम, २५५, ४८३; काम, २५९; आलोचना, १७; ईश्वरीय नियति या निर्धारण और

डिक्री, 253

धुल-क़रनायन, 143, 148-151; का बैरियर, 148-149

गरिमा, xiii, 163, 166, 200-201, 203-

204, 211-212, 218, 245, 462-463, 513-514; सीखने का, 245

दिरहम, 200-202

असहमति, 210, 213, 215-219; सत्य के लोगों के, 210, 217 बीमारियाँ और दुर्भाग्य, 14; आपदाएँ और बीमारियाँ, 13;

आध्यात्मिक बीमारियाँ और घाव, 12, 17, 26, 71, 103, 233, 267, 295, 339-340, 342-343

अपव्यय, 19, 78, 167, 277-278, 283, 285, 299, 305-306, 310, 333

दिव्य सिफर, 379-380

ईश्वरीय आदेश; त्यागपत्र, 18

भविष्यवक्ता, 386

श्रम विभाजन, 210, 232

तलाक, 285

प्रलय दिवस, 490

पोशाक, अभद्र, 278-279

द्वैत, 396

कर्तव्य, xv, xvii, 6, 11, 13, 19, 25, 28, 33-34, 36, 67-68, 76, 98, 114, 130, 149, 172, 196-197, 202, 214-215, 218, 225-

227, 241, 244-245, 267-268, 291-

292, 304, 340, 343, 363, 380, 390-

391, 394, 412, 455, 463, 487, 489, 492; ईमान और कुरान की सेवा की पूर्ति, 67, 212, 259; 225-

226; मानवता का, 492, 495

और

पृथ्वी, 5-6, 27, 36, 53, 66, 71, 83-84, 86-

88, 92, 97-98, 113, 117, 125-130, 132, 135-138, 148-149, 151, 166, 168, 175-177, 187, 190-191, 199, 242, 251, 258, 262-263, 271, 275, 306, 309, 314, 317, 319, 325, 330, 332-333, 337, 347-348, 352, 356, 362, 375, 378-380, 382-387, 395-

397, 402-403, 405, 409, 412-414, 423-424, 427-429, 431, 433-434, 436-437, 439-440, 443, 446, 448, 451-454, 459, 464-469, 472, 474, 478-480, 483, 486, 488-489, 491, 493, 497, 499-504, 506-507, 509, 511, 515; ब्रह्मांड के केंद्र और उसके दिल और क़िबला के रूप में, 378; प्रदर्शनी स्थल और अनगिनत दिव्य कलाकृतियों का केंद्र, 87; बैल और मछली पर खड़े, 125-126, 128-129; वार्षिक परिक्रमा, 129

अर्थव्यवस्था, 198-199, 201-202, 204, 411, 434-435, 443

शिक्षा मंत्री, 365

समतावाद, 241-242; सिद्धांत, 241

अहंकार, 185, 233; चापलूसी, 233

अहंकार, 119, 211-215, 226, 245-247, 390, 396; विद्वान लोगों का, 213

तत्व, 34, 64, 87, 113, 187, 253-255, 258, 272, 337-338, 354, 420, 429,
431-433, 446-448, 451-452, 471, 480, 487, 489, 493, 500, 509

वाक्पटुता, 97-98, 149, 178, 268, 386, 388, 391, 457; अभिव्यक्ति, 178

भ्रूण; लिंग, 152

एमिन, 364

एमिरदाग, 340, 357

अमीरदाग लाहिका, 340

आनंद और सुख, 399

समानता, 242, 244-245

इस्कीसिर, xii, 275, 364, 369, 373, 427-428, 432, 445, 459, 475

इस्कीसिर जेल, 364, 373, 427-428, 432,
445, 459, 475

विलुप्ति, 67, 75, 96, 107-108, 178, 271, 295, 326, 333; शाश्वत, 75,
107-108, 295, 333 ईथर, 89-91, 421, 477, 479, 489

यूरोप, xi, xiv, 87, 162-164, 167, 170, 258, 276, 279, 281

बुराई; निर्माण, 103-104; कई अच्छे परिणामों के लिए प्रारंभिक रूप से बुराई का
अस्तित्व, 103; मुताज़िला द्वारा ईश्वर को बुराई का श्रेय न देना, 103

दुष्ट आत्माएँ, viii, 111-112, 373

अतिशयता, 202

अत्यधिक प्रेम, 40; यीशु के लिए, 41; अली के लिए, 40-41

भ्रमण, 4, 220, 247, 359

निर्वासन, xii-xiii, 308-309, 317, 320-321, 328-330, 332, 339, 341, 343,
345-
346, 352, 354, 360, 376, 397

अस्तित्व, xiii, 12-13, 16, 25-26, 28, 53, 67, 71, 75, 89-91, 96-99, 102-103,
106-115, 118-120, 135, 152, 154-
155, 168-169, 171, 184-185, 189, 227, 251-252, 254, 258-266,
268-
272, 297, 304-306, 310, 319-323,
335-338, 351, 354-355, 357, 379-
381, 384, 388, 394, 396, 403, 409, 411-413, 415, 418-422,
428-430, 435-436, 438-439, 441, 443-446, 451-454, 456, 458,
461, 463, 466-
470, 478-482, 484, 487, 491, 493-
495, 501, 503-504, 506-507, 509; सृष्टि में विपरीतता, 109;
किसी व्यक्ति के अस्तित्व का अंतिम कारण, 268; गैर-अस्तित्व,
12-13, 67, 75, 98-99, 106-108, 120, 168-
169, 184, 272, 297, 305-306, 320, 322-323, 337, 412, 466, 479,
482, 484, 494, 507

अपेक्षाएं, 182, 231, 365, 456

विशेषज्ञ समिति, 365

आईयूप सुल्तान कब्रिस्तान, 331

आईयूप सुल्तान मस्जिद, 331

एफ

वफ़ादारी, 54, 284

प्रसिद्धि और सार्वजनिक सम्मान, 210

दूरदर्शिता, 215

फातिमा, 35, 38, 130-132

दोष, 53, 98, 104, 119, 182, 218, 227, 245, 284, 360, 399, 439,
494-495, 501-502, 505, 509, 511, 515; प्रवेश, 119

फ़ायलुला, 392

भय और लोभ, 234

स्त्रीत्व, 216

भ्रूण, 153-155

फेज़ी, 364, 367-368

अंतिम विनाश (दुनिया का), 151

मक्खियाँ, परिवर्तन और शुद्धिकरण की मशीन के रूप में, 377

बाढ़, 113

विदेशी सेना, 145

स्वार्थों को भूल जाना, 217

क्षमा, 12, 17, 47, 53, 97, 99, 101, 119-120, 179, 245, 310, 329, 360

आज़ादी, पर्दा, 243; उम्र, 241

स्वतंत्र इच्छा, 99, 103-104, 114-115, 164, 178, 181, 183, 199, 413; निरस्तीकरण, 104

शुक्रवार सामूहिक प्रार्थना, 261

दोस्ती, 229, 245-246

मितव्ययिता, xviii, 195, 197-201, 205, 285; संतुष्टि और मितव्ययिता, 200

विश्वास के फल, 362, 365-366, 427

फ़ुतुहुएल-ग़ायब, 330, 333

बगदाद का फ़ुज़ुली, 318

जी

गार्डन, 159, 220, 318

उदारता, 51, 200-201, 279

भूगोल, 83, 86, 92, 126

घौथ अल-आज़म शाह जिलानी, 35, 330

घायलुला, 392

गोग और मागोग, 143, 149-151

गोल्डन हॉर्न, 331

अच्छा आचरण, 68-71, 73, 283

अच्छे कर्म; सार, 220

सुसमाचार, 47, 51-52

सरकार, 40, 128, 145-146, 163, 180, 203, 240-241, 243-244, 269, 278, 357, 362-363, 365-366, 403; तलवार और कलम पर खड़े होकर, 128-

129; अधिकारी, 239-240

कब्र, मध्यवर्ती क्षेत्र, 160, 316, 317, 320, 366; लोग, 300

चीन की महान दीवार, 150-151

लालच, 165, 168, 170, 202-204, 219, 234, 389; दुनिया के लिए, 219

युवाओं के लिए गाइड, 280, 285-286

मार्गदर्शन, xiv, 3, 6, 47, 49, 54, 55, 79, 92, 96, 98, 100, 105-106, 108-110, 116-117, 150, 166-167, 209-210, 213-215, 217, 270, 316, 332, 344,

497; अनिवार्य बातें, 109; लोग, 108; गुमराह लोग, 234; कुरान, 6, 166

गाइडबुक, 174

एच

हाफ़िज़, 391

पैगम्बर की दाढ़ी के बाल, 146

हसन (पैगंबर के पोते), 35-

36, 130

हसन फ़ेज़ी, 367

स्वास्थ्य, निराधार चिंता, 307

हृदय, अनंत काल के लिए बनाया गया, 24; विश्वास का स्थान, 12, 104; ईश्वरीय नामों का केन्द्र बिन्दु, 136; शैतानी केन्द्र, 112; हृदय और जीभ ईश्वर के ज्ञान और स्मरण का स्थान, 11

असावधानी, 5, 17-18, 27, 53, 67, 100, 108-109, 121, 167, 177-178, 184-

186, 188-189, 197, 211, 216, 218-

219, 241, 243, 267, 290-292, 295, 298-299, 308, 310, 315-316, 325-

326, 328, 331, 350-352, 354, 363, 376, 393, 399, 458; नींद, 109 आयु, 18 असहायता, आवाज़ के ज़रिए परमेश्वर से विनती करना, 309

नरक, x, 12, 103, 108, 113-114, 117, 128, 168, 266, 281, 285, 389, 400, 441, 514; क्रोध और गुस्सा, 113

इसके बाद, 5, 14, 18-19, 54, 91, 108, 128, 160, 170, 179, 181, 187, 204, 213-

215, 217, 220-222, 225, 228, 231-

233, 280-284, 291-292, 294-295, 298-299, 303, 309, 318-320, 323, 325, 327-328, 338-341, 348-350, 355, 368, 389, 396, 400-401, 414, 429, 435, 442, 456, 461, 465, 467, 487, 498, 500; 233 से संबंधित कार्यों में प्रयासों को जोड़ना

विधर्मी, 43, 146, 149, 152, 213; विधर्मी आंदोलन, 44

वीरता, xi, 43, 281-282, 284; करुणा के नायक, 281

हिल्मी, 364

साबरी शीट, 143, 152

मातृभूमि, सच, 296

सम्मान, xiii, 49, 97, 105-106, 131, 140, 163, 171, 185, 195, 199-200, 202, 204, 210, 212, 229, 2303, 2, 2, 3, 24 334, 390 , 514

हुपु, पैगंबर सुलैमान का, 386

होरहोर मेद्रेसे, 344, 349

हुक्सेतुज़-ज़हरा, 427

हुदैबिया, संधि, 48, 53, 54

मानव; शरीर, 96, 196, 411, 446; मुखाकृति, 264; व्यापक प्रकृति, 23; क्षमताएँ, 110; जन्मजात क्षमता के साथ, 96, 154-155; जन्मजात नपुंसकता के साथ, 19, 290, 294-295, 298, 301, 303; दिव्य महल के रूप में, 187; ब्रह्मांड के सबसे उत्तम फल के रूप में, 319; ब्रह्मांड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में, 267; सृष्टि के वृक्ष के सबसे व्यापक फल के रूप में, 109, 161; ब्रह्मांड के सूचकांक के रूप में, 270; अनिवार्य रूप से विद्यमान के साक्ष्य के स्थान

एक, 138; सूक्ष्म-ब्रह्मांड, 112; माइक्रो-क्रोकोसम (मानवता), 112, 411; जैसा
पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि, 168; जीवित प्राणियों के सम्राट के रूप में, 242

विनम्रता, 166, 179, 201, 243, 245, 303, 331, 390

हुनैन, युद्ध, 48-49, 54, 110

हुसैन (पैगंबर के पोते), 35-36, 41, 51, 130-131, 183; की शहादत, 131

हुस्रेव, 143, 185, 203, 234, 368

हुसेन, हाफ़िज़, 148

पाखंड, 69, 145, 185, 204, 209, 211, 326, 400

मैं

इब्न अब्बास, 126

इब्राहीम, 148

अज्ञानी भक्त, २२०

इलेमा, गांव, 298

बीमारी, 14, 18-19, 84-85, 163, 197, 267, 289-304, 306-310, 316, 333, 340-
341, 354, 358-359, 361, 363, 365, 463; धैर्य और कृतज्ञता में स्थिर रहना, 14; असावधानी दूर करना, 298; प्रार्थना के लिए अवसर या कारण के रूप में, 303; परदा, 292, 463

रोशनी, 51, 100, 171, 186, 319, 419

इमाम शफ़ीई, 136

इमामत और खिलाफत का मामला, 33

अभिव्यक्तियों की अमूर्त दुनिया
ईश्वरीय आदेश, 128

अमरता, गहन प्रेम, 25

धर्म में नवाचार, 63-64, 68-69, 225, 333; स्वीकार्य, 73, 147; हटाया जाना, 145

इन्सान अल-कामिल (पूर्ण या सार्वभौमिक मानव), 227

इरादा, 54, 72, 75, 176, 181, 184-186, 204, 209, 214, 225, 231, 243, 246, 305, 349, 360, 362, 365, 399, 441, 511; शुद्धता, 54, 204, 209, 214, 225, 246, 399

लोहा, 52, 173, 232, 256, 264, 293, 347, 373, 383-385, 387-388, 515; लाभ-लाभ, 387; परमेश्वर का भेजा जाना, 177, 387-388

इशरत अल-इजाज़, 89

इस्लामी शिक्षा, 281-282, 285

इस्लामकोय, 298

पृथक पत्र, 379-380

इस्पार्टा, xii-xiii, xviii, 200, 239-241, 280, 320, 339, 348, 365

इस्राएली; विद्वान, 126, 381; स्रोत, 126

इस्तांबुल, x-xi, xiii, 168, 228, 246, 318, 324-325, 329-334, 339, 344

इटालियन, 145

जे

जाफ़र अस-सादिक, 35

जलालु'द-दीन अर-रूमी, 396

जलालूद-दीन ख़्वारज़्मशाह, 180

जन्नत अल-फिरदौस, 515

(अल-)जौशन अल-कबीर (महान ढाल), 181, 473, 515

ईर्ष्या, 53, 219, 220-221, 276-277

यीशु (पैगंबर), 41, 52, 148, 151, 162-163, 180, 213, 391 जिहाद, 52, 218, 234, 368; शारीरिक, 145-146; आध्यात्मिक, 218

जिन्न और शैतान, 401, 404

अय्यूब (पैगम्बर), 11-12, 17, 300; धैर्य का नायक, 11

संयुक्त उद्यम, 232

योना (पैगम्बर), 3-5

यूसुफ (पैगंबर), 119, 226, 358

यात्रा, 230

यहूदी धर्म, 49; यहूदी विद्वान, 381

जज, 104, 120, 263, 361

न्याय; कारण का, 104; दिव्य न्याय, 144

न्याय दिवस, 120, 161, 235, 510

न्याय, आठवीं, सोलहवीं, 35, 50, 97, 114, 120, 129, 162, 212, 242, 247, 275, 357, 359-360, 368, 373, 389, 400, 402, 416, 434-435, 442, 485, 487; अन्याय की जन्मजात प्रवृत्ति, 120; पूर्ण न्याय, 120, 242; दैवी न्याय, 120, 400; तराजू, 434

न्याय और सुरक्षा विभाग, 239

क

काबा, 49, 54, 176

कस्तमोनु, xii, 340, 364, 366

कस्तमोनु लाहिका, 340

ख़ाद्र, 150

खालिद इब्न वालिद, 48

Kharijites, 40, 43, 131

Khatam at-Tayi, 200

रिश्तेदारी, 278

अदबु'-दीन वा'द-दुनिया की पुस्तक, 180

परमेश्वर का ज्ञान, xv-xvi, 134, 177, 189, 354, 473

कोस्तुरमा, 328, 332, 334

लिटिल अली, 343

कुलेओनलु मुस्तफ़ा, 343

एल

अंतिम निर्णय, 235, 434

कानून; दूसरों की भागीदारी की रोकथाम, 265; हस्तक्षेप की अस्वीकृति, 265; पारस्परिक सहायता का सार्वभौमिक कानून, 164

कानून; (ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए) की विधानसभा, 264; पर्दे, 154; सार्वभौमिक संतुलन के रखरखाव में सक्रिय

174

परतें; पृथ्वी और आकाश की, 86-88, 321, 325

जीवन; अनंत, 12, 26-27, 108, 468; का वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य, 459; की उत्पत्ति, 257; का मूल्य, 305; का अधिकार, 164; सहजता और स्वास्थ्य जीवन को कड़वा बनाते हैं, 305; हृदय और आत्मा के जीवन का स्तर, 189, 324

आजीविका; साधन, 128-129; कमी, 198

प्रकाश, 4, 6, 12, 35-36, 48, 50, 69-70, 73, 88-89, 105, 107, 118, 126, 132-134, 136-139, 145-146, 152, 154,

159, 164, 171, 176-177, 186-187, 189, 199, 225, 230, 232, 235, 245, 258, 265, 271, 294-296, 299-301, 306, 310, 314-318, 320-321, 323-

324, 326-328, 332-333, 335-336, 339-342, 344, 348-350, 356, 358, 361, 378-379, 385-386, 394, 419-

420, 430-431, 433, 440-441, 444-
445, 458-459, 466, 469-471, 482, 489, 492, 497, 499, 501; दिव्य
करुणा और दया, 137

लंदन, 84

आधिपत्य, 118, 164, 456; भव्यता, 444

प्रेम, ix, xi, xvi, xviii, 6, 15, 23-26, 33, 35-37, 40-44, 63, 67-68, 73-76, 107, 117, 120, 134, 147, 163, 165, 170, 178, 181, 183, 187, 210, 212-

213, 218, 266, 276-278, 283, 293, 301, 307, 310, 319-320, 327-328, 332-333, 343, 351-352, 354-357, 375-376, 389, 399, 417, 432, 443, 461-462, 464, 466, 484-485, 492, 494-495, 507, 510, 514; असीमित क्षमता, 23-24; स्वच्छता की, 375; अनंत काल की, 319; स्थायित्व का, 25, 187, 351-352; स्थिति का, 213; संसार का, 301; पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रेम और रुचि

महिलाएं, 277; सत्य के प्रेमी, 359

ईश्वर से प्रेम, 68, 76; सृष्टि का अपनी आराधना की वस्तु के प्रति सहज प्रेम, 417; ब्रह्माण्ड के रचयिता के प्रति असीम, सहज प्रेम, 74; कृपापात्र होना, 74; ईश्वर के लिए प्रेम करना, 215

चंद्रग्रहण, 127

लुकमान, 152, 315, 351

लुत्फ़ु, 143

विलासिता, 305

एम

मदीना, 48-49, 54, 56, 109-110

उदारता, 202, 219, 229, 360, 389

महदी जैसे व्यक्ति, 35-36

मक्का, विजय, 48-49

ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्तियाँ, 19, 114, 135, 182, 422, 510; प्रत्येक वस्तु और प्राणी के लिए विशेष, 4; समस्त सृष्टि पर सर्वोच्च शासन करना, 4; ईश्वरीय अभिव्यक्तियों को प्राप्त करने और प्रतिबिंबित करने से आनंद लेना

नाम, 172

मैनिफेस्ट बुक, 174, 189, 422-423, 513

मैनिफेस्ट रिकॉर्ड, 422-423, 513

मैनिपुलेटर, 231

शहीद, 63, 78, 235, 301, 344, 363

मैरी की माँ, 132

परिपक्वता; आयु, 314, 318

(अल-)मथनावी अल-नूरी, 159

मावलावी (मेवलेवी), 173, 396, 453, 489; दरवेश, 453; पृथ्वी की मावलावी जैसी गतियाँ, 453

चिकित्सा, xvii, 70, 205, 252-253, 267, 289, 306, 310, 322, 439; विश्वास, 310

मेड्रेसे, 344-346, 348, 369; या वैन, 348

मदरसे-ए यूसुफिया (पैगंबर का स्कूल) जोसेफ), 358, 360, 364-365, 368-369, 427; अफ्योन स्कूल ऑफ जोसेफ, 427; जोसेफ़ का डेनिज़ली स्कूल, 427; एस्कीशेहर स्कूल ऑफ जोसेफ, 427; इस-पार्टा स्कूल ऑफ जोसेफ, 348, 365

रिसाले-ए नूर के मेदरेस, 364-365

मेड्रेसेतुज़-ज़हरा, 280, 357, 365

पत्र, 333

दया; उपहार, 292; आवश्यकताओं की संतुष्टि में, 417; दिव्य स्तर

दया, 137; परमेश्वर पर भरोसा
दया, 299

मेसुत, 143

रूपक, 126-127, 149, 405, 476

सूक्ष्मजीव, 467
मिल्की वे, 90, 490
आंतरिक मामलों के मंत्रालय, 357-358;
न्याय, 366
चमत्कार, 85; बुद्धि, 260, 414
दुर्भाग्य; धर्म के मामलों में, 16
गुमराह करना, 5, 15, 27, 66-69, 77, 95-
104, 106-107, 109-111, 113-114, 116-117, 131, 145, 162-163, 167-
168, 175, 188, 211-212, 215-217, 225, 234, 245, 247, 270-272,
281, 285, 296, 301, 316, 333, 335, 338-
339, 350, 358, 397, 401, 430-431, 442, 476, 488, 514; के नेता, 109
मिसाइलें, 401-402, 404; लक्ष्य, 401
विनम्रता, ix, 166, 201, 327
चंद्रमा, 5-6, 92, 126-127, 168-169, 171,
182, 418, 515
नैतिकता, xv, 279, 390; नैतिक शक्ति, 145, 228, 307, 353; नैतिक और धार्मिक कर्तव्य, 245
मूसा (पैगंबर), 150, 374, 515
मच्छर और पिस्सू, 376
माउंट अराफात, 176
मुफ़्ती, 42, 205
मुहाजिर हाफ़िज़ अहमद, 14
मुहम्मद (पैगंबर), xviii, 28, 35, 39, 49, 76-77, 106, 139, 181, 200, 373, 394, 403, 405, 457-459, 495, 515;
अहमद, 37, 40-41, 77, 85-86, 89, 166, 183, 198, 290, 298, 319, 367,
393-394, 474, 495; मुहम्मदन
सत्य, 39, 42; संदेशवाहक, 444-445, 457, 468-469; सारे संसारों के लिए दया, 179, 444; दयालु का प्रिय, 445; सारे संसारों के पालनहार का प्रिय,
48, 110, 444; परमेश्वर का प्रिय, 65,
68, 73-74, 76, 316; परमेश्वर का सबसे उत्तम
मैसेंजर, 34, 40, 71, 73, 129-131, 147, 181, 497-498, 504, 506, 508,
511, 514; सामूहिक व्यक्तित्व
मुहम्मद, 393, 457-458; आकर्षण की महानतम शक्ति, 110; शाश्वत रूप से प्रार्थित परमेश्वर का दर्पण
सभी, 445; सबसे चमकीला सूर्य, 110; सबसे उत्तम शिक्षक, 445; सबसे महान
मैसेंजर, 68, 70, 78, 110, 443;
सृष्टि का गौरव, 48, 108; ब्रह्माण्ड का सूर्य, 457-458; अस्तित्व की पहेली का समाधानकर्ता, 445;
भविष्यद्वक्ताओं की मुहर, 109; सर्वोच्च मार्गदर्शक, 445, 495
मुहयिद-दीन इब्न अल-अरबी, 395, 397
मूसा बेकुफ़, 397
मुस्तफा, 143, 298, 343, 397
मुस्तफ़ा साबरी, 397
मुताज़िली, 100; अधिकारी, 103; मानवता को बुरे कर्मों का निर्माता मानना, 103

एन

राष्ट्रवाद, xii, 246
प्राकृतिक उपचारक, 376
प्रकृति (ईश्वरीय भाग्य के बोर्ड के रूप में या
आकस्मिकता के क्षेत्र में निर्धारण करना), 261; ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन को, 262 के नियमों के लिए जिम्मेदार ठहराना; 256; अस्तित्व का श्रेय, 258; प्राकृतिक शक्तियों को, 252, 257; प्राकृतिक कारणों को, 253; अचेतन प्रकृति को, 257, 437; "प्राकृतिक" विज्ञानों को, 335
प्रकृतिवाद, 261, 266, 268, 272, 395-396; दलदल, 261, 396; प्रकृतिवादी ईश्वर का इनकार, 251, 258, 262; प्रकृतिवादी नास्तिकता, 251; प्रकृतिवादी दार्शनिक, 251
नाज़िफ़, 364
आवश्यकता, 199
भाग्य और शक्ति की रात, 27-28, 317
निम्रोद, 259, 338, 374, 377, 450

नियाज़ी मिस्र, 315, 317, 329
कुलीनता, 200, 219

महासागर, 87, 113, 257-258, 440
अर्जुज़ा का ओड, 475
जलजलुटिया की स्तुति, 475
वृद्ध लोग, 178, 277, 300, 314-316, 318, 320-321, 324-325, 327-328, 330-
331, 333-334, 339-344, 346, 350-
352, 354, 356, 361, 363-365, 368-
369; परिवार की समृद्धि का स्रोत बुजुर्ग, 330

पुराना नियम, 52
ईश्वर की एकता, 4, 251, 457; प्रमाण, 414
उत्पीड़न, 15, 242-243, 282, 353, 358, 360-363

व्यवस्था (एकता आवश्यक), 438
दिखावा, 69, 185, 204, 210, 213, 217-218, 220, 228, 230-231, 233, 247, 282 शुतुरमुर्ग, 107-108

ओटोमन राज्य, xi-xii, 321, 346, 397
स्वामित्व, 115, 164, 232, 337, 410, 492

पी

प्रशांत महासागर, 50
दृष्टांत, xv, 127, 148, 476
स्वर्ग, x, 6, 24-25, 35, 54, 76, 100, 114-115, 117, 165-166, 220, 269, 283, 285, 296, 300, 309, 317, 320, 323, 332, 339, 387-388, 402-404, 414, 441-442, 465-466, 486, 507, 513, 515; लोगों का, 220; सर्वोच्च लाभ, 165

संसद; सदस्य, 240
पार्टी; भगवान का, 109; शैतान का, 109
धैर्य, 11, 14-16, 291-292, 297-298, 300-
301, 304, 344, 346, 360, 364, 367
देशभक्ति, 165, 168, 170, 246

किताब के लोग, 382
लबादा के लोग, 125, 130-131; पैगंबर के परिवार के लोग, 37-38

नूह के लोग, 113
स्वीकृत निष्ठा के लोग, 54
हॉल के लोग, 54
बद्र की जनता, 54
उहुद के लोग, 54
हुनैन के लोग, 54
समूद और आद के लोग, 113
नबियों सालेह और हूद की क़ौमें, 113
स्थायित्व, 25, 28, 108, 187, 255, 315, 319, 348, 351-352, 364, 399, 415, 417, 461, 466, 475, 479, 482, 489, 495, 514; महत्वाकांक्षा, 319; जन्मजात प्रेम, 352

दृढ़ता, 290; कृतज्ञता के साथ दृढ़ता दिखाना, 290

फारस, 49; फारसी राष्ट्रीय गौरव, 40
फिरौन, 113, 245, 259, 271, 338, 396, 450; लोग, 113; महल, 259; फिरौन, 165

फार्मेसी, 252-253, 306, 343, 439
दर्शन, भौतिकवादी, xiv, xviii, 339; विज्ञान, 335

दार्शनिक, 89, 91, 205, 246, 251, 270-
271, 335, 478; अधार्मिक पश्चिमी, 246; प्रकृतिवादी, 251

धर्मपरायणता, 299
सर्वोच्च सभा का स्थान, 35, 316
प्लेटो, 255
आनन्द; ईश्वर का, 181, 486; कर्तव्यों के पालन में, 172; श्रम में, 171; अनन्त संसार का, 105; आध्यात्मिक सुख, 307, 339, 358, 389-

390, 474; इस क्षणभंगुर संसार का, 105; अवैध, 277, 293

ज़हर, 111, 170, 366
पुलिस, 240, 276, 357, 359, 361-362, 364

राजनीति; गदा, 145; राजनीतिज्ञ, 231; राजनीतिक समाज, xiii, 363; राजनीतिक रुझान, 357

संभावना, 27, 85, 101-102, 264, 277; साधारण संभावना, 85; व्यवहार से, 85; तर्क से, 85

शक्ति; सच्चाई और ईमानदारी से झूठ बोलना, 228; असहायता में प्रकट पूर्ण शक्ति, 418; सहमति, 217; धैर्य, 15-16; तर्क, 78, 242; जन्मजात शक्तिहीनता, 217, 243, 245

भगवान का अभ्यास, 161

प्रार्थनाएँ, स्वीकार्यता, 302; स्वीकार-418 का अनुपात

एहतियात, 146-147

भविष्यवाणियाँ, 47-48, 54, 143-144; कुरान, 385; आध्यात्मिक खोजों पर आधारित, 144

दूसरों को स्वयं से अधिक प्राथमिकता देना, 210, 233

दिखावा, 217-218, 326

गर्व, 40, 65, 116, 172, 182, 222, 229, 278, 377, 389, 396, 400, 485-486

प्रधानमंत्री, 366

युद्ध बंदी, 324, 328, 367

संभावना; स्थायित्व की, १०८; शाश्वत जीवन के अस्तित्व न होने की, १०८; असीमित संभावनाएँ, २५४

प्रगति, 104, 109; असीमित रैंक, 242

पैगम्बरत्व, xv-xvi, 34-36, 40-42, 53, 92, 109, 127, 130-131, 175, 214, 404-405; संदेशवाहक का मिशन, 35-36, 130-131

संरक्षण, 97, 108, 111, 132, 172, 276

प्रावधान; प्रत्येक प्राणी के पालन-पोषण में, 417

जनता का ध्यान आकर्षित करना, 210; लोगों की नज़रों में रुतबा हासिल करना, 233

सरकारी वकील, 359, 361, 365

सार्वजनिक प्रतीक, इस्लाम के, 69, 145

दण्ड, शाश्वत 103, 114, 363; (क्षमा के कारण) का अभाव, 53

क्यू

शोर, 393

कोरह, 113

कुरान, ix-x, xiii, xv-xvii, 6, 27-28, 33, 48, 50, 53, 55-57, 66, 70, 73, 76, 77, 83, 86, 89-92, 97-98, 100-101, 103, 105-110, 113-114, 117, 121, 127, 133-134, 136-137, 139, 146, 148-153, 159, 163, 165-166, 177-178, 185, 189, 202, 210-211, 213-214, 216, 225-230, 233-234, 243, 245-246, 251, 261, 266-268, 271, 275-276, 281, 296, 300, 308, 313- 314, 317-318, 320, 322-323, 325-330, 332-333, 335-336, 339-341, 343-345, 347, 353, 363, 367-368, 373-374, 376-388, 391, 400-405, 409, 421, 423, 435, 437, 443, 454, 457-458, 464, 468-469, 471, 475, 482, 495, 497-498, 500, 503-504, 506, 508, 510-513, 515; स्वर्ग के पन्नों पर लिखी हुई महानता, 421; अणु में अंकित ज्ञान, 421; चमत्कारपूर्ण व्याख्या, 55, 90, 106, 121, 166, 177, 229, 347, 376, 379-380, 383, 385, 403-404, 409, 454, 457, 464, 482, 512; व्याख्या का चमत्कार, 133; महान राजमार्ग, 229; अपरिवर्तनीय, मौलिक सिद्धांत, 103; के छात्र, 165-166; की धमकियाँ, 267; के टिप्पणीकार, 151, 388

कुरैश, 40, 48, 49

आर

राफेट बे, 83, 125, 143, 146-147, 185, 234, 392

बारिश (नीचे भेजी गई), 373, 383-388

रमजान, 28, 144, 168, 200-201, 234, 247, 325, 436

बुद्धिवाद, xiv, 442

क्षेत्र; अनंत काल का, 118, 220, 328, 350, 403-404, 502; परलोक का, 91; अदृश्य का, 91, 500; अमूर्त प्रतिनिधित्व या आदर्श रूप का, 19, 88, 91, 128, 186-187, 404, 493; स्थायित्व का, 28, 348, 514;

चीजों का आंतरिक आयाम, 403; भौतिक, 88, 91; मध्यवर्ती, 88, 316-317, 320, 332, 366

रज्जब, हाफ़िज़, 148

पाठ, 12, 73, 92, 166, 175-176, 182, 381, 393, 457

एकान्त जीवन, 240

चिंतन; ईश्वर के संकेतों और दिव्य सत्यों पर, 17, 44, 88, 96, 102, 139, 161, 189, 218, 257, 409-410, 431, 451, 471; ईश्वर की असीम महानता पर, 409; ईश्वर की कलाकृतियों पर विश्वास-निर्देशित चिंतनशील विचार, 230

परमेश्वर पर भरोसा, 18, 298-299; धीरज दिखाना, 298

धार्मिक शिक्षा और ज्ञान, 234

धार्मिक सलाह और निर्देश, 282

धार्मिक उत्सव के दिन, 373, 399

पश्चाताप, 178, 310, 360, 432

गणतंत्रवाद, xii, 246; नया गणतंत्र युग, 241

प्रतिरोध, 212

सम्मान, xvi, 26, 37, 42, 76, 87, 92, 117, 120, 130, 132, 152, 154, 162-163, 172, 188-189, 195-197, 204, 210-

211, 221, 228, 231-232, 234, 244-

247, 255, 262, 265, 270, 277-279, 283-284, 299, 301-302, 305, 331, 333, 336, 340, 351, 355, 364, 387-

389, 394, 397, 403, 414, 434, 447, 455, 460, 465, 471, 476, 478, 482, 488, 491-493, 495

पुनरुत्थान, xv-xvi, 6, 34, 66, 161, 190-191, 268, 278, 319, 337, 375, 435, 442, 449, 465, 500, 514; पुनरुत्थान और परलोक, 435

पुनरुत्थान दिवस, 278, 375

पुनर्मिलन, 296, 332

इनाम; अनंत की आकांक्षा, 213; प्रेम की आकांक्षा, 183

प्रकाशितवाक्य, 319, 401

श्रद्धा, 135; उन लोगों के लिए जो सत्य और परलोक के लिए प्रयास करते हैं, 231

जीवन के अधिकार, 487; समानता का सिद्धांत, 242

रिसाले-ए नूर, xv, xviii-xix, 72, 95, 101, 106-107, 113, 125, 146, 160, 181, 185, 227, 230-231, 233-235, 240, 241, 251, 259 -260, 265, 267, 269, 280-286, 296, 298, 304, 306, 310, 313, 326, 328, 335-336, 338, 340-

341, 343, 347-349, 351, 355-369, 378, 386, 390, 392, 395, 410, 429, 445, 449, 452, 454, 462, 472, 476, 479, 515; के छात्र, 185, 358, 362-364, 367-369, 392; के अध्ययन केन्द्र, 365

प्रतिद्वंद्विता, 209-210, 212-213, 219-221, 227, 231-234; भौतिक लाभ में, 231-232

रोम, 49

(एआर-) रुफाई, 166

ग्रामीण, 280

रूस, xi, 283, 324, 328, 331-332, 344, 367

रुश्दी, 143

एस

साबरी, 143, 152, 298, 397

सादिक, 364

संत, 28, 34, 38-39, 43, 51, 64, 85-88, 98, 143, 166, 182, 290, 300, 308,

316, 319, 363, 423, 457, 511-512, 514; संतत्व की डिग्री, 301; स्टेशन, 182; आध्यात्मिक ध्रुव, 36

सकीना, 475

सलादीन, 364

मोक्ष, xiv, 4-6, 37, 106, 160, 183, 213, 227

सरयेर, 333

शैतान, ९५-१०६, १०९, १११-११२, ११७-१२१, १३२, १६५, १७०, १८०, २४७, ३३५, ३३८, ४००, ४०५, ४९६, ५१५; के केबल, १०२; के अस्तित्व में बुराइयाँ, ९६; मानव-शैतान, १११; जिन्न-शैतान, १११; मानव रूप में शैतान, १११; मनुष्यों के बीच शैतान की तरह काम करने वाली भौतिक बुरी आत्माएँ, १११; मानव और शैतानी षड्यंत्र, १०५-१०६, २३४; के दल की कमज़ोर, घिनौनी चालें, १००; छल, १००; शैतानी युक्तियाँ, ११६; शैतानी षडयंत्र, ११९; शैतानी कुतर्क, 107-108; शैतानी सुझाव, 102; योजनाएँ, 103; षडयंत्र, 101, 118; चाल, 111; शरण माँगना

भगवान से, 95

सैय्यद अहमद बदावी, 85-86

वैज्ञानिकता, xiv, 339

एकांत, 244, 283, 320, 333

दूसरा संविधान, 246

सुरक्षा और व्यवस्था, 362

बीज; नरक का, 285; स्वर्ग का, 285

शरण मांगते हुए; ईश्वर की सुरक्षा में, 97; ईश्वरीय दरबार में आंसू बहाते हुए, 16; दयालु, सर्वशक्तिमान की दया में

दयालु प्रभु, 16

आत्म-प्रशंसा, 326; आत्म-प्रशंसा, 399

आत्म-केंद्रितता, 211-212, 215, 217, 233; त्याग, 217

आत्मसम्मान, 212

आत्म-बलिदान, 135, 165, 217, 281, 316, 369

सेनिर्केंट, 148

जुदाई; दर्द, 24, 343, 350; वेदना, 24

ईश्वर की सेवा, 175; कर्तव्य, 13

कुरान की सेवा, 146, 225-226, 228, 230, 515

सत्य की सेवा करना, 221

सात स्वर्ग, 83, 86-91, 175; स्वर्ग और पृथ्वी के सात स्तर, 83, 86

शाबान, 200-201, 234, 427

(ash-)Shadhili, 166

Shah Anushirvan, 203

शाह नक्शबंद, 181

शरीयत, 35, 64, 66, 68-69, 72-73, 78, 89, 96, 114, 261, 278

शेख, 186, 233, 315; प्रस्तुतीकरण, 233

शेख अल-इस्लाम, पद, 38; कार्यालय, 246

शायखायन अल-मुकर्रमायन, 42

शेख़ मुस्तफ़ा, 143

शिया, 38-44, 131; खिलाफत, 39-40, 42; संत होने का दावा, 39-41; दावा, 38

उल्का, 6, 401

लघु शब्द, 286

अदूरदर्शिता, 215

साइबेरिया, 186

बीमारी, 11, 63, 289, 294, 304

सायस्टा, 393

उपमाएँ, 127, 148, 395

ईमानदारी, xvii-xviii, 182-183, 186, 204, 209-215, 217-222, 225-231, 233-234, 247, 281-282, 284, 298, 303, 343, 358, 369, 399; प्राप्ति के साधन, 230

पाप, 12, 17, 63, 71, 97, 99-100, 103-104, 113-114, 160, 170, 178-179, 294, 295, 299, 302, 306, 309-310, 317, 333, 363-364, 431; बड़े पाप करना, 103; प्रायश्चित करना, 294, 302; परमेश्वर से क्षमा मांगना, 310

संशयवाद, 107-108; संशयात्मक अविश्वास, 108
सामाजिक जीवन, 77, 119-121, 162, 170, 203, 210, 217, 231, 242-243, 275, 283, 301, 329, 333, 367-368

समाजवाद; सिद्धांत, 241
सौर मंडल, 90-91
एकजुटता, xi, 37, 175, 212, 227-228, 232, 446; एकजुटता, सहयोग और एकता, 227-228, 232, 446

एकांत, 245, 318, 328-329, 352, 364, 376
सुलैमान (पैगंबर), 132, 386, 510, 515
भविष्यवक्ता, 401, 404
कुतर्क; 254 के लोग
आत्मा (शारीरिक, दुष्टता का आदेश देने वाली) 5, 65, 97, 110, 115, 119, 162, 226, 233, 247, 267, 301, 308, 335, 338, 373, 376, 396, 399-400, 496; उपासक, 215

संप्रभुता; हस्तक्षेप को अस्वीकार करना, 265; स्वतंत्रता, 265, 438; ईश्वरत्व की, 444

स्पेन, 186
आत्मा; परिवर्तन, 178
आध्यात्मिक प्राणी, 112
वसंत, वार्षिक पुनरुत्थान के क्षेत्र के रूप में खंड, 190
जासूसी शैतान, 401-404
स्टाम्प, 24, 51, 134-137, 154, 411, 446-448, 471, 489, 501, 503, 509; का
दिव्य एकता, 137, 447, 471;
दिव्य एकता, 446-447, 471
भुखमरी, 199
कंजूसी, 201-202
सीधा रास्ता, 55, 100, 109, 168, 215
सीधापन, 215
स्तब्धता, 326
सफलता, 42, 95, 143-144, 146, 212-214, 334
नबी के कर्तव्यों का उत्तराधिकार, 42
परमेश्वर की पर्याप्तता, 351-356

सूफ़ी; मार्गदर्शक, 229; आदेश, 166, 363; आदेशों के अनुयायी, 230, 363; नक्श-बंदिया का आदेश, 23; परमानंद सूफ़ी, 138

सुक्रू, 148
सुलेमान रुश्दी, 373-374
सुन्ना (पैगंबर का रास्ता) 63; नमाज़, 44; डिग्री, 69; अच्छे व्यवहार, 70; राजमार्ग, 33 स्रोत और संरक्षक, 37; सीढ़ी, 63

अंधविश्वास, 127
प्रार्थना; पैगंबर योना, 3-4; पाप-निष्ठ और निस्वार्थ, 11, 290;

शाह नक्शबंद, 23; पैगम्बर मुहम्मद
अय्यूब, 12
समर्थन; बिंदु, 116, 145, 165, 216, 228, 259, 347-348, 352, 482

सुप्रीम प्रिजर्व्ड टैबलेट, 112, 144, 187, 423, 493, 513

सुप्रीम ट्रस्ट, 191
सूरत अल-फतह, 47-48, 51-54, 56
सूरह अल-फ़ातिहा, 137
निगरानी, नियंत्रण में रखना, 240
संदेह, 176-178, 279, 368
जीविका, 85

टी

ताबियुन, 55
भाग्य और निर्णय की पट्टिका, 470
मिटाने और पुष्टि की गोली-
144
जीवन का इतिहास, x, 369
स्वाद; अनुभूति, 196-197, 220
तातार, 328
तौवुस अल-यमनी, 51
शिक्षक, 185-186, 234-235, 241, 244, 282, 316, 333, 355, 366, 377, 397, 443, 445

तेवफिक, हाफ़िज़, 148

आभार, 14, 16, 152, 154, 184, 195, 197-198, 202, 204, 243, 246-247, 266, 290, 297, 399

धन्यवाद, 152, 184, 197, 399, 461-464, 492

तीन महीने, रजब, शाबान, और रमज़ान, 234

आधिपत्य के तीन टिकट, 132

सिंहासन; दिव्य सर्वोच्च, 3, 33, 44, 63, 66-67, 72, 89, 128, 133, 149, 166, 182, 342, 378, 380, 396-397, 404-

405, 455, 465, 512; आदेश और इच्छा के बारे में, 378; उदारता और दया के बारे में, 378; ज्ञान और बुद्धि के बारे में, 378; संरक्षण और जीवन के बारे में, 378

समय; विस्तार, 28; समय, बीमारी का, 297; वर्षा का, 152-153

टोरा, 47, 51

लक्षण; चेहरे की विशेषताएं, 154-155

अस्तित्व की पारलौकिक एकता, (वहदत अल-वुजूद) का सिद्धांत , 395; ब्रह्मांड को नकारना

सर्वशक्तिमान ईश्वर, 395

पारदर्शी वस्तुएँ, 466

ख़ज़ाने का बक्सा, 175

महिलाओं के लिए इस्लामी पोशाक पर ग्रंथ, , 286

उपचार, 239, 243, 245-246, 306, 309, 324, 361, 412

परीक्षण; अखाड़ा 296; आत्मा का, 308

विश्वसनीयता, xi, 201

सत्य, 6, 37, 40, 47, 52, 56, 65, 72-73, 79, 95, 103, 106, 110, 116, 138, 160, 190-191, 205, 209-212, 214-215, 219, 221-222, 225, 230-231, 245, 272, 310, 320, 328, 347-348, 363-

365, 386, 398, 401, 410, 439, 443; आस्था, 103; विश्वास, xiv, 17, 102, 118, 120, 168, 226, 234-235, 245, 347, 368, 381, 405, 494

टर्की, iv; तुर्की, xii, 159-160, 318

अत्याचार, 109, 242-243, 360, 367; अत्याचारी, 165, 247, 358-359, 412

में

उहुद, युद्ध, 48-49, 54, 110

अंतिम कारण, 114, 184-185

'उमर अल-फ़ारूक़ अल-आज़म, 39-43, 50, 56, 131, 201-202

'उमर इब्न साद, 41

उमय्यद, 40, 131

एकता, 44, 131, 136-137, 212, 215-216, 218-219, 227-228, 231-233, 411, 417, 430, 438, 447-449, 456, 460, 477-478, 489, 502-503, 505, 509; बहुलता के भीतर, 137; असंख्य प्राणियों की बहुलता के पीछे, 137; बंधन, 212

ब्रह्मांड (स्थूल जगत), 411; प्रकट पुस्तक, 174; सृष्टि के निर्माण और संचालन के दिव्य नियम, 111, 242; सृष्टि का अंतिम उद्देश्य, 176; व्यवस्था, 174, 336, 467; सार्वभौमिक व्यवस्था और संतुलन, 174; ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड की रचना (ताकि उसे जाना और प्यार किया जा सके), 266; वृहद मानव के रूप में, 112, 403; क्रोधित होना, 113

अल-अजहर विश्वविद्यालय, 241

अदृश्य, 35, 51-53, 57, 59, 91, 131, 143, 152-155, 167, 176, 247, 315, 330, 333, 382-383, 401, 404, 419, 467-470, 483, 500-501, 512; पाँच बातें, 152-153

शहरी लोग, 280

सूदखोरी, 203

'उथमान धू'न-नूरैन, 41

उज़ैर (पैगंबर), 391

वी

वैन, xi, xii, 280, 344-348

वज़ीरज़ादे मुस्तफ़ा, 298

सद्गुण; विश्वास से उत्पन्न, 243; लोग, 243; सद्गुण और नैतिकता, 285

वोल्गा नदी, 328

में

मजदूरी; सांसारिक, 210; अभौतिक, 210
चेतावनियाँ; आवर्ती, 105
वारसॉ, 329
अपव्यय, 78, 98, 195-196, 202, 204-
205, 389, 434-435, 442-443
जल (दिव्य कला के चमत्कार प्रकट हुए), 378

कमज़ोरी (पूर्ण शक्ति प्रकट), 418

पश्चिमी लोग, 167, 171
कानाफूसी, 102; शैतान की कानाफूसी, 102
इच्छाशक्ति, 324
बुद्धि; मानवता के निर्माण में, 242, 298; सृष्टि के क्रम में, 417; दिव्य बुद्धि के नियम, 111

गर्भ, 153, 155
महिलाएँ; पर्दा, 275, 277; महिलाओं की प्रकृति, 276

आश्चर्यजनक, 85, 247, 340
काम, उत्साह, 202, 204, 227
सांसारिक मामले, 217, 233, 240
सांसारिक महत्वाकांक्षाएँ, 230, 305
संसार; उद्भव, 451; अमूर्त अभ्यावेदन या आदर्श रूपों का,
19, 88, 128, 186-187, 404, 493;
अर्थ, 451; आत्माओं का, 187, 403, 493; आदर्श रूपों का, 487;
अदृश्य, 404, 469-470
प्रथम विश्व युद्ध, 324, 328, 344
पूजा; प्रकार, 14; सकारात्मक, 14; नकारात्मक, 14; चिंतनशील विचार के रूप में, 234; कई आध्यात्मिक घावों के इलाज के रूप में, 267; शुद्ध रूप, 14; अतिरिक्त कार्य, 69-70, 72, 234

और

यमन, 150, 186; राजा, 150
युवा लोग, 167, 280, 292, 299
युवावस्था; पूजा-पाठ में बिताया गया समय, 327; नशे में, 292, 324

यूनुस एम्रे, 376
जोशुआ हिल (माउंट जोशुआ), 318

साथ

ज़कात, 144, 198, 205, 211; देना
ईश्वर का नाम, 183
ज़ैन अल-अबिदीन, 35, 51
पारसी धर्म, 49; पारसी, 99; अह-रिमन (बुराई का निर्माता), 99; यज़दान (अच्छाई का निर्माता), 99

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

ए

ऑल-एक्टिंग, 423, 501

सर्व-स्नेही, 179

सर्व-जागरूक, 419

बी

सर्वसुन्दर, 96, 304-305, 415, 430, 444, 487

सौंदर्य, स्थायी 494

सर्व-उदार एक, 179

दाता; उपहार देने वाला, 183-184; उपहार देने वाला, 423

सी

कारणों का कारक, 4-5

स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता, 5, 317, 497

सर्व-करुणामय, 3-4, 11, 23, 33, 47, 63, 67, 71, 95, 101, 121, 132-140, 159, 195, 209, 225, 230, 275, 292, 296-297, 300, 308, 314, 333, 373, 375, 378, 381, 383, 386-387, 390, 392, 398-399, 401, 409, 413-415, 427, 430, 444-445, 459, 461, 474, 507-508, 510; दयालुओं में सबसे दयालु, 179, 234

डी

डिज़ाइनर, शाश्वत, 178, 261, 263, 415;
आवश्यक गुण, 178

ऑल-डेकोरेटिंग, 70, 415

आशीर्वाद वितरक, 423

दिव्यता, 118, 133, 164, 265, 317, 396, 419, 435, 444, 453, 456, 476-477, 488, 497-498, 507, 514

और

सदा सर्वदा प्रार्थना, 258, 263, 267, 304-305, 323, 445, 448, 471-472, 477, 495

उपासना की शाश्वत वस्तु, 175

अनन्त एक, 3, 23-29, 155, 187-188, 286, 334, 341-342, 352, 510; महामहिम, 25-26, 187

एफ

ऑल-फ़ैशनिंग, 415

सर्व-हितैषी, 415

सबसे पहले, 15, 140, 151, 324, 328, 344, 395, 422, 462, 470, 474, 490

सर्व-शक्तिशाली, 84, 199, 390, 464

सर्व-क्षमाशील, 71, 101

जी

परम उदार अनुग्रह वाला, 68

जीवनदाता, 378, 430, 459, 461-463, 467

सर्व-महिमावान, 3-7, 19, 26, 29, 54, 57, 79, 83, 92, 111, 114, 121, 125, 130, 140, 143, 148, 151, 155, 191, 202, 205, 222, 234, 239, 247, 272, 280, 310, 376-377, 397, 405, 445, 459, 473-474, 483, 496, 498, 502, 511, 514-515

ईश्वर की कृपा, 75, 159, 225, 233, 331,
357, 358, 360, 364-368, 375
सर्व-दयालु, 68, 70-71, 304, 356, 415,
422, 430, 444
परम दयालु, 96; पूर्णता, 68
ऑल-ग्रेट, 118, 176, 410-411, 413, 415-
416, 418-419, 421, 423, 498, 504 (छह) महानतम नाम, 490

गार्जियन, 3, 44, 351-356

एच

सर्व-चिकित्सा, xvii, 13, 292, 464
ऑल-हाई, 3
सर्व-पवित्र, 427, 429-431, 434, 472, 475, 490, 498

मैं

सभी स्वतंत्र, एकल, 445-452, 455-456, 458, 472, 489

सर्व-स्वतंत्र शासक, 266
लेखक और डिजाइनर, शाश्वत, 263
सर्व-अंतरंग, 321
अंदर की ओर, 422

जे

ऑल-जस्ट, 67, 416, 421, 430, 432-434,
444, 472, 490

क

सर्वज्ञ, 7, 29, 54, 57, 79, 84, 92, 121, 130, 140, 153-155, 191, 205, 222,
234, 247, 272, 310, 336, 378, 405, 411, 413-415, 420-422,
445, 459, 473, 496, 515

अदृश्य का ज्ञाता, सर्वव्यापी ज्ञान, 419

सभी चीजों का ज्ञाता, 336
ज्ञान, 269-271, 378, 383, 412, 467, 469, 488; अनंत, 253

एल

ऑल-लिविंग, 355-356, 459-464, 467, 471-
472, 474, 486-487, 489, 491-493
वह सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर है, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, 355

अंतिम, 152, 235, 422, 434
सर्व-जीवित जीवनदाता, 430
प्रभु; सर्वोच्च सिंहासन का, 3, 33, 44, 63, 66, 342; सर्वशक्ति का, 84, 199,
390, 464

आधिपत्य, 113, 135, 304, 455-456, 464, 469, 471, 481, 483, 488,
502; अधिपति, 444

सर्व-प्रेमी, 321, 415-416, 444

एम

सर्व-महान सृष्टिकर्ता, 74-75, 96, 112, 317, 385, 500; ब्रह्माण्ड का, 109

ऑल-मैजेस्टिक मेकर, 70, 292, 328, 442, 477, 480

सर्व-महान्, 36, 67, 71, 135, 171, 174, 176, 265, 378, 396, 433, 463,
476, 493

निर्माता, महिमा का, 261, 264, 317
निर्माता; अमर, 88; शाश्वत, 261
दयालु, 3, 11, 17, 23, 26, 33, 47, 63, 95, 101, 115, 117, 121, 132-
140, 149, 159, 191, 195, 209, 225, 275, 300, 314-315, 323, 348,
350, 352, 373, 377-378, 380-381, 383-
384, 386, 390, 392, 398-399, 401, 409, 413-415, 422, 427, 440,
444-
445, 459-460, 474, 491, 506, 510,
514; दयालुओं में सबसे दयालु, 3, 11

दया, 97, 115, 132, 134-137, 139, 184-
185, 197, 232, 297, 313-314, 316, 323, 328, 330, 351,
390, 494; रहस्य, 137; मुहर, 136; खजाना, 152-153, 173,
383-384, 388,

394; दया और उदारता, 232;
दयालुता, 133; अनन्त दया और शाश्वत अनुग्रह, 319

सर्वशक्तिमान, 3, 414, 422
सम्राट, शाश्वत, 98, 134, 437, 450
सर्व-उदारवादी, 71, 112, 164, 167, 172, 178-179, 321, 333, 415, 418, 430, 444, 461, 514

एन

अनिवार्यतः विद्यमान एक, 5, 138, 256, 260, 424, 430, 444, 461, 476, 478, 501
भगवान के नाम, दो प्रकार के, १०९; महामहिम से संबंधित दिव्य नाम, १०९; महामहिम से संबंधित दिव्य नाम, १०९; महामहिम से संबंधित दिव्य नाम, १०९; महामहिम से संबंधित दिव्य नाम, १०९; महामहिम से संबंधित दिव्य नाम, १०९;
उनकी कृपा और सौंदर्य, 109; ईश्वरीय कृपा की अभिव्यक्तियों की स्थायित्व, 417; ईश्वरीय महानतम

नाम, 475, 490

ईश्वर की एकता, 134-137, 186, 189, 252, 400, 439, 446-448, 450, 455,
457, 471-472; दिव्य एकता, 450-451, 456; मुहर, 134-136, 446, 448, 472; दिव्य एकता के भीतर दिव्य एकता की मुहर, 134; दिव्य निरपेक्षता की अभिव्यक्ति

एकता के भीतर एकता, 133; पूर्ण एकता में से एक, 137

ओपनर, 423
आकाश और पृथ्वी का सृजनहार, 251, 262

बाहर, 422

पी

सभी रोगी एक, 297
उत्तम, पूर्णतः, 352;
ईश्वर की पूर्णता और सुंदरता, 456; परम सौंदर्य और पूर्णता वाला एक, 415

शाश्वत दिव्य पूर्णता, 494
सर्व-दया, 415, 422
शक्ति, शाश्वत, 152, 319
शक्तिशाली, बिल्कुल, 263
सर्वशक्तिमान मामलों का निपटानकर्ता, 465
सर्वशक्तिमान, 67, 84, 146, 174, 253, 258, 264, 270, 415, 419, 421, 438-440, 465, 498, 500, 504, 508, 511, 514; महामहिम, 84, 90, 253, 258, 270, 440, 498, 500, 504;

महिमा, 88
सर्व-प्रशंसनीय, 36
सर्वरक्षक और जीवनदाता, 378
ऑल-प्रोवाइडिंग, 13, 84-85, 199, 272, 390-391, 461, 464; मुनिफ़िसेंस, 85
शाश्वत सूर्य की शक्ति, 257
शुद्ध और पवित्र, 136-137, 139, 458

आर

सभी रिकॉर्डिंग और संरक्षण, 189-191
अच्छाई और बुराई का बदला चुकाने वाला, 179
सर्व-निर्णय, 416, 422
पूर्ण शक्ति का शासक, 352

एस

अनंत काल का प्रभु, 13; राजसी, 139
संप्रभु, निरपेक्ष, 266-267, 413
उद्धारकर्ता, 187
ब्रह्माण्ड का आत्मनिर्भर निर्माता, 460, 462-464, 467-468, 471-472, 475-476, 479, 481-482, 485-487, 491-493, 495, 511

स्व-निर्वाह, 355-356, 459
एकता और विशिष्टता का एकल, 256
सिंगल यूनिक वन, 430
स्पीकर, अनन्त, 383
वाणी, दिव्य गुण, xvi, 381, 383
सर्वोत्कृष्ट, 36
सर्व-सूक्ष्म, 70-71, 415, 419
सर्वोच्च आसन/सिंहासन, 89, 182, 405, 455

टी

सत्य; परम, 90, 115, 171, 176, 180,
514; सबसे स्पष्ट, 416
उपासना की सच्ची वस्तु, 137, 179, 266

में

ईश्वर की एकता, 133-134, 136, 159, 270, 335-
336, 339, 445-451, 453-457, 463, 471-472; पुष्टि, 454, 457

एक ही प्राणी की एकता, 430

वी

ऑल-वीलिंग, 71

में

धनवान और आत्मनिर्भर, पूर्णतः, 139

सर्व-इच्छुक सृष्टिकर्ता, 420
सर्वदा सर्वदा चाहने वाला, 118
ऑल-वाइज, xvii, 7, 29, 54, 57, 67-68, 70-
71, 79, 84, 88, 92, 110, 112, 121, 130, 138, 140, 155, 160-161,
175,
190-191, 205, 222, 234, 242, 247, 272, 294, 303, 306, 310, 313,
319, 331, 347, 374-375, 403, 405, 413-

416, 421, 429, 434, 436-445, 459, 461, 472-473, 487, 489-491,
496-
497, 508, 515
ब्रह्माण्ड का सर्वज्ञ रचयिता, 265
ऑल-वाइज इंस्क्राइबर, 214
ऑल-वाइज मेकर, 306, 319, 414, 441-
442, 508
सर्वज्ञ पूर्णता, 88
महामहिम सर्वज्ञ, 68, 84, 175,
436-438, 440
ऑल-वाइज ओरिजिनेटर, 160-161, 190, 242, 294

इच्छा; पूर्ण, 152; सर्वज्ञ, पूर्णता वाले, 110; सर्वव्यापी, 253

साक्षी, शाश्वत, 423
बुद्धि; ईश्वरीय गुण, 429; सच्चे गुरु का, 349; सर्वव्यापक और असीम,
253